

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान-राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यतः अखिलभारतीय तथा विशेषतः राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी आदि भाषानिवृद्ध
विविधवाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट-ग्रन्थावली

प्रधान सम्पादक

फतहसिंह, एम.ए., डी.लिट्.

निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

ग्रन्थाङ्क ६६

गजगुणरूपक-बन्ध

प्रकाशक

राजस्थान-राज्याज्ञानुसार

निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

१९६८ ई०

वि० सं० २०२५

भारतराष्ट्रीय शकाब्द १८९०

प्रधान - सम्पादकीय

श्री सीतारामजी लालस द्वारा सम्पादित प्रस्तुत ग्रन्थ का मुद्रण सन् १९६५ में प्रारंभ हो गया था, परन्तु संभवतः इस ग्रन्थ को अधिकाधिक उपयोगी एवं महत्त्वपूर्ण बनाने की लालसा से निरन्तर नये परिशिष्टों को जोड़ने का कार्य चलता रहा और साथ ही हमारे विद्वान् सम्पादक को 'राजस्थानी सबद कोस' के विराट् प्रयत्न में भी लगा रहना पड़ा; इसीलिये ग्रन्थ के प्रकाशन में विलम्ब हो गया है।

कवि केशवदास के इतिहास-प्रसिद्ध चरित-नायक महाराजा गजसिंह उन अमर वीरों में से एक जगमगाते रत्न हैं जिनके अलौकिक शौर्य पर भारत माता गर्व कर सकती है। परन्तु इन वीरों के शौर्य का लाभ भारत भूमि को न मिल कर दूसरों को मिला यह जान कर विहारी के दोहे के उस बाज की याद आती है जो दूसरों के लिये ही अपनों का संहार करता रहा। फिर भी महाराजा गजसिंह पर लिखित यह प्रशस्ति-काव्य उनके अनुपम वीरता का अत्यन्त हृदय-आहो चित्रण करने के कारण हमारे सैनिकों के लिये स्फूर्ति और प्रेरणा का स्रोत बन सकता है।

अपने वर्तमान रूप में यह ग्रन्थ केवल 'गजगुणरूपक-बन्ध' काव्य ही नहीं है, अपितु इसके चार बहुमूल्य परिशिष्टों में उन अनेक वीरों की अमर प्रशस्तियाँ भी हैं जिनका उल्लेख गजगुणरूपक-बन्ध में हुआ है। ये प्रशस्तियाँ राजस्थानी-साहित्य की अमरनिधि हैं जो सहस्रों की संख्या में हमारे प्रतिष्ठान में तथा अन्यत्र संगृहीत हुई हैं और जिन में से कुछ का प्रकाशन श्री सीभाग्यसिंहजी शेखावत के सम्पादन में पृथक् रूप से हमारे द्वारा हो रहा है। यदि सम्पादक महोदय के शब्दों में 'इन गीतों ने इतिहास की उन महान् विभूतियों की स्मृति को अपने अंचल में आश्रय देकर जीवित रखा है जिनको कि इतिहास तक ने भुला दिया। स्यात् ही ऐसा कोई वीर योद्धा इन गीतों द्वारा प्रशंसित तथा सम्मानित होने से बचा हो।' इन गीतों का सम्पादन करते हुए प्रत्येक गीत के साथ विस्तृत शब्दार्थ तथा बहुमूल्य टिप्पणियाँ दी गई हैं और गीतों को सुबोध बनाने का स्तुत्य प्रयास किया गया है।

गजगुणरूपक-बन्ध नामक मुख्य ग्रन्थ का सम्पादन चार प्रतियों के आधार पर किया गया है और पाद-टिप्पणी में विस्तारपूर्वक पाठान्तर दिये गये हैं। राजस्थानी सबद कोस के सुयोग्य निर्माता द्वारा निर्धारित पाठ निःसंदेह अत्यन्त प्रामाणिक होगा और विद्वत्समुदाय में प्रशंसा प्राप्त करेगा। ग्रन्थ के प्रारंभ में जो शोधपूर्ण भूमिका दी गई है, उसमें कवि के जीवन तथा ग्रन्थ-सम्बन्धों महत्वपूर्ण विषयों का समावेश हो गया है। कवि के विषय में लिखते हुए सम्पादक सहोदय ने कुछ नये तथ्यों के आधार पर अपने उस मत को भी बदल दिया है जो उन्होंने राजस्थानी सबद कोस की प्रस्तावना में पृ. १४२ पर कवि की जन्म-भूमि के विषय में व्यक्त किया था। उदयपुर की शोध-पत्रिका (वर्ष १८, अंक १) में श्री सीभाग्यसिंह शेखावत ने संभवतः सर्वप्रथम कवि के पिता सदमल की छत्री पर उत्कीर्ण लेख के आधार पर कवि की जन्मभूमि छींड़िया-नामक ग्राम में बतलाई थी, श्री लालसजी ने इस लेख के अतिरिक्त उस ताम्रपत्र का भी उल्लेख किया है जो जोधपुर के तत्कालीन महाराजा शूरसिंह ने सदमल को उक्त ग्राम प्रदान करते हुए जारी किया था। भूमिका और परिशिष्ट में और भी बहुत सी उपादेय सामग्री दी जा सकती थी, परन्तु ग्रन्थ का कलेवर बढने के भय से तथा ग्रन्थ के प्रकाशन में और अधिक विलम्ब होने की आशंका से उसका देना संभव नहीं हो सका है।

ग्रन्थ के सुन्दर सम्पादन के लिये विद्वान् सम्पादक को मैं हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। साधना प्रेस के व्यवस्थापक श्री हरिप्रसादजी पारीक भी ग्रन्थ के सुन्दर मुद्रण के लिये बधाई के पात्र हैं।

माघ शुक्लापूर्णिमा सं. २०२४

जोधपुर

—फतहसिंह

विषय - सूची

		पृष्ठांक
	भूमिका	१ - ६४
	मूल ग्रंथ	१ - २४३
१	पंचदेव मंगलाचरणम्	१
२	पूरववंस वरणण	२
३	राव सीहा री द्वारका जात्रा और लाखा फूलांणी नें मारणी	३
४	राव सीहा री पुत्रा री वरणण-गजसिध तक माडवाड़ री राठीड़	३ - ४
	राजाओं री वंसावली	४
५	महाराजकुमार गजसिध री जन्म	५ - १०
६	महाराजकुमार गजसिध री वरणण	१०
७	सवाई महाराजा सूरसिध तथा महाराजकुमार गजसिध री वरणण	११ - १४
८	राज्यवैभवादि वरणण	१५
९	महाराजकुमार गजसिध री बड़ा महाराजा री अनुपस्थिति में राज्य भार सम्हालणी	१५
१०	महाराजा सवाई सूरसिध री दक्षिण में गमन	१५ - १८
११	महाराजकुमार गजसिध री नाडुल पर अधिकार करणी	१८ - १८
१२	महाराजा री पराजय	१८ - १८
१३	महाराजकुमार गजसिध री सिरोही पर आक्रमण	१८ - १८
१४	महाराजकुमार री सिरोही पर विजय	१८
१५	बादशाह जहांगीर री अजमेर आगमन और राजा सूरसिध री बुलाणी	२० - २१
१६	सवाई राजा सूरसिध री विजय	२१
१७	सवाई राजा सूरसिध री महाराज कुमार गजसिध नें पत्र लिखने बुलाणी	२१
१८	महाराजा सवाई सूरसिध री महाराजा नें समझाने बादशाह सँ सुलह करानी	२१ - २२
१९	साहजादा खुरम री विजयी होने बादशाह री पास महाराजकुमार करण री लेने अजमेर में आगमन	२२ - २३
२०	बादशाह जहांगीर री कुमार करणसिध री सनमान करणी	२३
२१	राठीड़ा री बढती सँ बादशाह री संकित होणी	२३ - २४
२२	बादशाह री किसनसिध नें भड़काणी	२४
२३	महाराजकुमार गजसिध री किसनसिध नें पडुतर	२५ - २६
२४	किसनसिध री आपरी परजे सँ परामरस	२६ - २७

२५	सामंतां री तैयारी	२७
२६	प्रभात री गोंदं पर आक्रमण तथा गोंदं री जुद्ध वरणण	२८ - २९
२७	महाराजा सवाईसिध री युद्धार्थ तैयार होणी	२९
२८	महाराजकुमार गजसिध री आगमण और जुद्ध वरणण	२९ - ३०
२९	किसनसिध री साथियां सहित वीरगति प्राप्त होणी	३१ - ३२
३०	महाराजा सूरसिध री जोधपुर आगमण	३२ - ३३
३१	महाराजा सूरसिध री दखण में जाणी तथा महाराजकुमार गजसिध री सासण भार सम्हालणी	३३ - ३४
३२	बादशाह री जालीर रा सासक पहाड़ खां सून नाराज होणी तथा जालीर री प्रदेश महाराजा सूरसिध नै मिलणी	३४
३३	महाराजकुमार गजसिध री जालीर विजय करण री तैयारी	३५ - ३६
३४	सामंतां री और सेना री वरणण	३६ - ४२
३५	महाराजकुमार गजसिध री वरणण	४२
३६	जीघारां री नामावली तथा वरणण	४२ - ४५
३७	महाराजकुमार री स-सेना जालीर पहुँचणी	४६
३८	जुघ और महाराजकुमार री विजय	४६ - ५०
३९	वीरगति प्राप्त खास खास पठाण जीघाआं री नामावली	५० - ५१
४०	जालीर विजय कर महाराजकुमार री जोधपुर पहुँचणी	५१ - ५३
४१	महाराजा सवाई सूरसिध री सुरगवास	५४ - ५५
४२	गजसिध री वरणण और राजतिलक	५५ - ६१
४३	दिल्ली-मण्डल में दरोल	६२
४४	महाराजा गजसिध री दखणाघ में दरोल सेटण सारू गमन	६३ - ६५
४५	मलिक अंबर	६५ - ६६
४६	आकूत खां री बीड़ी उठाणी	६६
४७	सेना री वरणण और फीज री कूच	६६ - ६८
४८	दखणी सेना री वरणण	६८
४९	खानखाना री महाराज गजसिध नै विरुवाणी	६८
५०	महाराजा गजसिध री जोस में आणी	७० - ७४
५१	राठीड़ां री जुघी जुघी साखाआं री और भाटियां री साखाआं री नामावली	७३ - ७५
५२	दोन तरफां री सेना री वरणण	७५ - ७७
५३	महाराजा गजसिध री जुघ और विजय	७७ - ८०
५४	पुनः अंबर री आक्रमण	८०
५५	बादशाही सेना में गजसिध री हरावल में होणी	८१ - ८२
५६	दखणी सेना री पराजय	८३ - ८७

५७	दखणी सेना री फेर आक्रमण महाराजा गजसिंघ री विजय	८७ - ८९
५८	विजय प्राप्त कर महाराजा गजसिंघ री बुरहानपुर में आगमन और बुरहानपुर पर घेरी	८९ - ९०
५९	खानखाना री महाराजा गजसिंघ नूँ विरुदाणी	९० - ९१
६०	महाराजा गजसिंघ री जोस में आणों	९१
६१	सेना री जुध वरणण और गजसिंघ री विजय	९१ - ९२
६२	धीरगति प्राप्त प्रमुख घोरों री नामावली	९३
६३	बादशाह नूँ खान-खान री जुध री विजय री पत्र । महाराजा गजसिंघ नै दलथंभण री पदवी मिलणी	९३ - ९४
६४	दखण में फेर दरोल साहजादा खुरम नै सेनापति बणाय भेजणों	९४
६५	बादशाह सूँ खुरम री सेर खां री मांग करणी	९४
६६	दखणी दळ री पलायन	९५ - ९७
६७	जुध में विजय प्राप्त, बादशाह री खुस होणों, महाराजा गजसिंघ नूँ पचहजारी री पद तथा जालोर, सांचोर रा परगना मिलणा	९७
६८	सेना री वरणण	९७ - ९९
६९	खिड़की गढध्वंस और ध्वस्त नगर री वरणण	९९ - १०१
७०	दखणी दळ री फेर हल्लो	१०१
७१	सेना री कूच, जुध और महाराजा गजसिंघ री विजय	१०१ - १०६
७२	खुरम री सांडव आगमन	१०७ - १०९
७३	महाराजा गजसिंघ री जोधपुर आगमन और सुबागत	१०८ - १०९
७४	महाराजा री जोधपुर में निवास	११० - ११२
७५	खुरम री विद्रोह	११२
७६	खुरम रा विद्रोही री खबर फैलणी	११२ - ११३
७७	बादशाह री खुरम रै विरुध आदेस	११३ - ११४
७८	साही सेना री कूच और सेना री पड़ाव	११४ - १२१
७९	खुरम री सेना री कूच	१२१ - १२४
८०	भीम सीसोदिया री सेना री वरणण	१२४ - १२६
८१	सादूलसिंघ री पलायन	१२६ - १२८
८२	खुरम री सेना री दिल्ली री और कूच	१२८ - १२९
८३	फौज री पड़ाव	१३० - १३२
८४	सीसोदिया भीम री तैयारी और जुध वरणण	१३२ - १४२
८५	कवि-वाच	१४२ - १४४
८६	बादशाह री विचार में पड़णी	१४४ - १४५
८७	बादशाह री महाराजा गजसिंघ नै सहायता सार बुलावणी	१४५ - १४६
८८	महाराजा गजसिंघ रा सांमतां री सभा	१४६ - १५७

८६	कवि-वाच	१५७
९०	महाराजा गजसिंघ री सामंतां री और अंतेपुर री धरणण	१५७ - १६४
९१	महाराजा गजसिंघ री पुत्रां री धरणण	१६६ - १६८
९२	महाराजा गजसिंघ री दरबार में पधारणी जोसियां स मूहरत पूछणी	१६८ - १६९
९३	इस्टदेव पूजा	१६९ - १७०
९४	महाराजा री घुड़सवार होणी	१७० - १७१
९५	महाराजा गजसिंघ रा दल री धरणण और कूच	१७१ - १७६
९६	महाराजा री बादशाह सँ मिळाप	१७६ - १७७
९७	महाराजा री खुरम सँ जुध करण री बीड़ी उठाणी	१७८ - १७९
९८	घोड़ा नै देसांस नाम	१७९ - १८३
९९	साही सेना री कूच	१८३ - १८६
१००	अब्दुररहीम खानखाना री कैद होणी	१८६ - १८७
१०१	साही दल री धरणण	१८७ - १९०
१०२	महाराजा गजसिंघ री चढाई करणी	१९० - १९१
१०३	खुरम री भीम सीसोदिया नै विरुदाणी	१९१ - १९३
१०४	भीम सीसोदिया री धरणण	१९३ - १९५
१०५	खुरम री धरणण	१९५ - २००
१०६	भीम री हरोल में होणी	२०० - २०५
१०७	साहुजादा री महाराजा गजसिंघ नै विरुदाणी	२०५ - २०७
१०८	महाराजा गजसिंघ री और सेना री धरणण	२०७ - २१३
१०९	साही अमीरां री नामावली	२१३ - २१५
११०	जुधप्रिय देवां री धरणण	२१५ - २१६
१११	जुध धरणण	२१६ - २१९
११२	भीम सीसोदिया री जुध धरणण	२१९ - २२३
११३	भीम सीसोदिया अने गजसिंघ री जुध परिशिष्ट	२२३ - २४३
	१. जोधपुर राज-वंश के गीत	२४४ - ३०४
	२. अन्य राठोड़ धीरों के गीत	३०५ - ३३३
	३. सीसोदिया के गीत	३३४ - ३४०
	४. अन्य में धणित अन्य धीरों के गीत	३४१ - ३४४

भूमिका

ग्रन्थ-परिचय

राजस्थानी भाषा को समृद्ध बनाने वालों में केसोदास गाडण का प्रमुख स्थान है। तत्कालीन सामाजिक एवं राजनैतिक परिस्थितियों के बीच राजस्थानी में वीर-काव्य-परम्परा में आपने भी अपने आश्रयदाता जोधपुर-नरेश महाराजा गजसिंह के अद्भुत पराक्रम, रण-कौशल एवं गुण-गरिमा के चित्रण के लिए 'गज-गुण-रूपक-बन्ध' वीर-काव्य की रचना की। इसमें महाराजा गजसिंह द्वारा किये गये सभी युद्धों का (विशेष रूप से सम्राट् जहांगीर के विद्रोही शाहजादा खुर्रम के विरुद्ध संवत् १६८१ में हाजीपुर पाटन के पास टोंस नदी के किनारे उसके वीर सेनापति भोम सीसोदिया के साथ किए गए युद्ध का) सांगो-पांग वर्णन है। वीररस-निरूपण में कवि को पूर्ण सफलता प्राप्त हुई है। रण-सज्जा, फौज की चढ़ाई, सैनिकों का वर्णन, घोड़ों का वर्णन एवं योद्धाओं के पारस्परिक युद्ध का वर्णन विस्तृत एवं विविध स्थानों पर होने के कारण ग्रंथ का कलेवर अवश्य बढ़ गया है, परन्तु भाषा की प्रौढता एवं ओजस्विता के कारण यह वर्णन भार नहीं प्रतीत होता। युद्धों के अंगों एवं उपांगों का वर्णन करते हुए कवि ने तत्कालीन सामाजिक जीवन एवं राजनीतिक स्थितियों का भी चित्रण किया है और प्रसिद्ध ऐतिहासिक घटनाओं का उल्लेख होने से, यह ग्रंथ इतिहास के लिये भी महत्त्वपूर्ण हो गया है।

ग्रंथसार

ग्रंथारम्भ में पंचदेव—सरस्वती, गणेश, महादेव, विष्णु और सूर्य की वन्दना की गई है तथा राठौड़-वंश का सम्बन्ध रघुवंश से मान कर कवि ने राव सीहा के पुत्रों का वर्णन किया है। कन्नोज-नरेश जयचन्द राठौड़ के पौत्र राव सीहा के पुत्र—आसथान, अज और सोनग थे। आसथान ने मारवाड़ में खेड़ पर, अज ने शंखोद्वार (द्वारिका के निकट) पर तथा सोनग ने ईडर (गुजरात) पर अधिकार करके अपने-अपने राज्य स्थापित किए। इसका उल्लेख करने के पश्चात् कवि ने महाराजा गजसिंह तक राठौड़ों की संक्षिप्त वंशावलि भी दे दी है।

उक्त प्रस्तावना के पश्चात् कवि ने बलिष्ठ ग्रहों के योग में कुंअर गजसिंह के जन्म का वर्णन किया है और साथ ही उनकी बाल्यकाल की सुन्दरता का

संकेत करते हुए, उनकी तरुणावस्था, पुरुषार्थ, दानवीरता, विद्वत्ता, संगीत-प्रियता आदि गुणों का उल्लेख किया है।

सवाई राजा शूरसिंह तथा कुंअर गजसिंह के राज्य-वैभव के भव्य वर्णन के साथ कवि ने राज-प्रसादों, बाजारों, तालाबों, उपवनों आदि का भी सुन्दर वर्णन किया है। तत्पश्चात् ग्रंथ में सवाई राजा शूरसिंह के, बादशाही राज्य के रक्षार्थ, दक्षिण में जाने^१ तथा उनकी अनुपस्थिति में उनके राज्य का कार्य-भार कुंअर गजसिंह द्वारा संभाले जाने का उल्लेख है।

शाही अफसर अब्दुल्ला खाँ के आग्रह पर महाराज-कुमार गजसिंह ने मेवाड़-राज्यान्तर्गत नाडोल-प्रान्त पर अधिकार करके उसकी रक्षा का कार्य-भार सम्हाला^२। राजकुमार ने इस अवसर पर नाडोल, जोजावर, चामळीद (चाणोद) खोड, सादड़ी, कुम्भलमेर आदि में विजय प्राप्त कर सोलंको, वालेसा, सींधल, सीसोदिया आदि राजपूतों का दमन किया।

महाराणा अमरसिंह के पुत्र राजकुमार कर्णसिंह ने अपने साथियों सहित अहमदाबाद से ऊँटों पर शाही खजाने को लेकर आगरे जाने वाली व्यापारियों की एक कतार का मारवाड़ के गाँव दूनाड़े तक पीछा किया। दैवयोग से कतार पहले निकल गई और ये निराश होकर वापिस लौट रहे थे। इसकी खबर भाटी गोविंददास को लगी जो उस समय नाडोल के थाने पर था। उसने मालगढ़ और भाद्राजून के पास इनका सामना किया। कुछ समय तक लड़ाई हुई; दोनों ओर के कई योद्धा काम आये। अन्त में कुंअर कर्णसिंह को भागना पड़ा^३।

१—तुजुक जहांगीरी (पृ० ७४, अनुवादक-नजरत्नदास) में शूरसिंह का वि० सं० १६६५ (ई० सन् १६०८) में खानखाना अब्दुर्रहीम के साथ दक्षिण की तरफ जाना लिखा है। इसकी पुष्टि वीर-विनोद भाग २, पृ० २६६ तथा डॉ० गोरीशकर हीराचन्द श्रीभा कृत “जोधपुर राज्य का इतिहास” खण्ड १, पृ० ३७१ में भी होती है।

२—तुजुक जहांगीरी, पृ० ७५ के अनुसार मेवाड़ के लिए वि० सं० १६६६ की आषाढ़ वदि ५ (ई० सन् १६०९ के जून में) को महावत खाँ के स्थान पर अब्दुल्ला खाँ नियुक्त हुआ। इसी अब्दुल्ला खाँ ने उससेन के पुत्र कर्मसेन से सोजत छुड़ाकर इस शर्त पर राजकुमार गजसिंह को दे दिया कि वे नाडोल के थाने का प्रबन्ध करें। डॉ० श्रीभा कृत “जोधपुर राज्य का इतिहास” भाग १, पृ० ३७२ से भी इसकी पुष्टि होती है।

३—(अ) वीर विनोद; भाग २, पृ० २२६

(ब) पं० रामकृष्ण आसोपा का “मारवाड़ का संक्षिप्त इतिहास” पृ० ३३६

(स) पं० विश्वेश्वर नाथ रेड्डी का “मारवाड़ का इतिहास” भाग १, पृ० ११८

(द) डॉ० गोरीशकर हीराचन्द श्रीभा कृत “जोधपुर राज्य का इतिहास”

भाग १, पृ० ३७३,

“गोइंद पेखि जैसळगिरी, बाघ वीसमो वीरवर ।

रिणवार राण “अमरेस” रा, कुरंगं जेम गया कुंअर” । (पृ० १८)

महाराज-कुमार ने पुराना (सिरोही के राव सुरताण द्वारा रायसिंह को मारने का) बदला लेने के लिए सिरोही पर आक्रमण किया और विजय प्राप्त की^१ ।

महाराणा अमरसिंह को अधीन करने के उद्देश्य से बादशाह जहांगीर स्वयं एक बड़ी सेना लेकर अजमेर आया^२ । महाराणा ने शाही सेना का बहादुरी से मुकाबिला किया । तब बादशाह ने फरमान भेज कर राजा शूरसिंह को मेवाड़-विजय करने के लिए बुलाया । शूरसिंह ने शाही फौज के साथ मिल कर मेवाड़ वालों को पहाड़ों में भगा दिया । इसी बीच राजा शूरसिंह के बुलाने पर राज-कुमार गजसिंह भी भाटी गोविंददास को लेकर उदयपुर पहुँच गये जिससे उसका बल और भी बढ़ गया । पिता ने राजकुमार गजसिंह को बादशाह से मिलाने के उद्देश्य से ही बुलाया था । महाराज ने महाराणा को संधि करने के लिए तैयार किया तथा संधि की बातें तय करवा कर गोगूँदे में शाहजादे खुर्रम व महाराणा को मिलाया । तत्पश्चात् महाराणा के ज्येष्ठ पुत्र राजकुमार कर्ण-सिंह को साथ लेकर शाहजादा खुर्रम बादशाह के पास अजमेर पहुँचा । बादशाह ने राजकुमार कर्णसिंह का यथोचित सत्कार किया^३ ।

मेवाड़-विजय के उपरान्त बादशाह राठीड़ वीरों—महाराजा शूरसिंह, राजकुमार गजसिंह, केहरि (राजा कृष्णसिंह जो महाराजा शूरसिंह के भ्राता, करमैत या कर्मसेन करन राजा कृष्णसिंह का भतीजा) और भाटी गोविंददास आदि की उत्तरोत्तर बढ़ती हुई शक्ति से सशंकित हुआ । उसने उनको परस्पर लड़ाकर निर्बल करने का विचार किया और एक दिन, जब राजकुमार गजसिंह बादशाह के दरबार में मुजरा करने आये, तब बादशाह ने उनके सामने ही

१—दूसरे ग्रन्थों में यह घटना इस प्रकार मिलती है कि सिरोही के राव की छोर से ऐसा प्रस्ताव हुआ कि पुराने वेंर को समाप्त कर दिया जाय—

(अ) पं० रामकर्ण आसोपा “मारवाड़ का संक्षिप्त इतिहास” पृ० ३३७

(ब) पं० विश्वेश्वरनाथ रेऊ का “मारवाड़ का इतिहास” भाग १, पृ० १८६.

२—मेरे निजी संग्रह में संगृहीत ग्रंथ (कवि हेम सांमीर कृत) “भाखा चरित्र” में बाहशाह का उस समय ज्यारत के बहाने से अजमेर आना लिखा है—

३—डॉ० गोरीशंकर हीराचन्द ओझा कृत “जोधपुर राज्य का इतिहास” भाग १, पृ० ३७८, वीर विनोद भाग २, पृ० २३७, २३८;—

केहरि (कृष्णसिंह) को भाटी गोविन्ददास को मारने के लिए उकसाया। यह देख कर राजकुमार गजसिंह ने क्रोधित होकर कहा कि भाटी गोविन्ददास को मारने का प्रयत्न करने वाला स्वयं अपने काल को बुलायेगा। अंत में बहुत कहान-सुनी के बाद दोनों अपने-अपने निवास-स्थान को चले गये। तत्पश्चात् कृष्णसिंह ने एक दिन अपने सामन्तों से सलाह करके भतीजे करन तथा चुने हुए साथियों-सहित पिछली रात को गोविन्ददास के मकान पर आक्रमण कर किया। गोविन्ददास ने जाग कर शत्रुओं का मुकाबिला किया और कई योद्धाओं को मारकर स्वयं वीरगति को प्राप्त हुआ। पास के ही मकान में सोये हुए महाराजा शूरसिंह भी हल्ला सुन कर जाग गये और तलवार लेकर बाहर आ गये। उसी समय महाराजकुमार गजसिंह भी अपने साथियों सहित पहुँच गये। युद्ध हुआ; केहरि (कृष्णसिंह) और करन मारे गये, किन्तु कर्मसेन भाग गया। इस युद्ध में दोनों ओर के कई योद्धा काम आये^१।

बादशाह ने सम्मानपूर्वक सवाई राजा शूरसिंह को अपनी राजधानी जोधपुर जाने के लिए विदा किया। फिर बादशाह ने महाराजा शूरसिंह को कुछ ही समय पश्चात् घोड़ा व शिरोपाव देकर दक्षिण में उपद्रवों को दबाने के लिए भेज दिया^२। जहां पर उन्हें बराबर सफलता मिलती रही।

जालोर के शासक पहाड़ खां पर बादशाह नाराज हो गया और उसे मरवा डाला तथा जालोर का प्रान्त राजा शूरसिंह को दे दिया^३। सवाई राजा शूरसिंह

१—वीर विनोद भाग २, पृ० ५२३

डॉ० श्रीभा कृत 'जोधपुर राज्य का इतिहास' भाग १, पृ० ३७६

पं० रामकण आसोपा कृत 'मारवाड़ का संक्षिप्त इतिहास' पृ० ३४१-३४२

पं० विश्वेश्वरनाथ रेऊ कृत 'मारवाड़ का इतिहास' भाग १, पृ० १६२-१६३ के अनुसार वि० सं० १६७०, ज्येष्ठ सुदी ६ (ई० सन् १६१५ की २६ मई) की रात्रि के पिछले प्रहर में यह घटना हुई।

२—डॉ० श्रीभा कृत 'जोधपुर राज्य का इतिहास' भाग १, पृ० ३८२ के अनुसार शूरसिंह ने वि० सं० १६७२ मार्गशीर्ष वदी ३ (ई० सन् १६१५ की अक्टोबर) को दक्षिण जाने की आज्ञा प्राप्त की; शूरसिंह के दक्षिण में जाने की पुष्टि पं० रेऊ के मारवाड़ इतिहास पृ० १६३ व आसोपा के 'मारवाड़ का संक्षिप्त इतिहास' पृष्ठ ३४४ से भी होती है।

३—'तारीख पालनपुर' सैयद गुलाब मियाँ-कृत; पृ० १५०-१६०, नवाबसर ताले मुहम्मद खां, पालनपुर राज्य नो इतिहास (गुजराती) भाग १, पृ० ५४-६२

डॉ० श्रीभा कृत 'जोधपुर राज्य का इतिहास' पृ० ३७३; पं० रेऊ कृत मारवाड़ का इतिहास-पृ० १६४-१६५; पं० आसोपा कृत 'मारवाड़ का संक्षिप्त इतिहास'—पृ० ३४५;

उन दिनों दक्षिण में थे और शासन का कार्य-भार राजकुमार सम्हाल रहे थे । उन्होंने राजकुमार को जालोर पर अधिकार कर लेने के लिए सूचित किया । जालोर पर उस समय बिहारी पठानों का अधिकार था । गजसिंह ने अपने सामन्तों को बुलाकर सेना इकट्ठी की और जालोर पर आक्रमण कर दिया । बिहारियों की ओर के नारायणदास काबा और कुछ अन्य राजपूत महाराज-कुमार गजसिंह की ओर मिल गये और उन्होंने उस जालोर गढ़ को कुछ ही दिनों में फतह कर लिया जिसके लिये अलाउद्दीन को १२ वर्ष लगे थे । एक प्राचीन दोहा प्रचलित है;—

“बारै बरस अलाउदी, खंप छूटी पड (फीटी) पतसाह ।

चढियां घोड़ां सोनगढ़, तैं जीनी गजसाह ।”

जालोर-विजय के बाद गजसिंह ने उग्रसेन के पुत्र कर्मसेन पर जो लाडनू में था, चढ़ाई कर दी । कर्मसेन निर्जल प्रदेशों में भटकता हुआ अरावली पर्वत की ओर चला गया । गजसिंह उसके पीछे लगे हुए थे; वे सोजत पहुँचे । वहाँ विजय-दशमी के दिन देवी का पूजन करके उन्होंने कर्मसेन पर चढ़ाई कर दी । वह भाग कर मेरों की शरण में चला गया । गजसिंह पहाड़ों में उसके पीछे लगे रहे और उन्होंने मेरों को दण्ड देना शुरू किया । इस पर कर्मसेन अपने प्राण लेकर हाड़ीती में चला गया ।

सवाई राजा शूरसिंह अपनी अन्तिम अवस्था में दक्षिण में ही थे और वहीं महकर के थाने पर वि० सं० १६७६ की भाद्रपद शुक्ला नवमी (ई०सन् १६१६ की १६ तिम्बर) को उनका देहान्त हुआ^१ ।

पिता के देहावसान पर गजसिंह आसोप-ठाकुर कूपावत राजसिंह पर राज्य की रक्षा का भार डालकर स्वयं दक्षिण में बुरहारनपुर चले गये और वहीं पर विजयदशमी को उनका राजतिलक हुआ^२ ।

“भाभा झुळ सुभट्टां पासै ।

बंठी बाप तणै आं भासै ॥

ब्राह्मपुर दसरावी थप्पै ।

जोसी तिलक मुहूरत अप्पै ॥

१—वीर विनोद भाग २, पृ० ८१८ ।

२—पं० रामकृष्ण आसोपा कृत ‘मारवाड़ का संक्षिप्त इतिहास’ तथा पं० विश्वेश्वरनाथ रेऊ-कृत ‘मारवाड़ का इतिहास’ के अनुसार वि० सं० १६७६ की आश्विन शुक्ला १० (ई० सन् १६१६ की ८ अक्टूबर) राज्याभिषेक हुआ ।

विजै दसम्मी होम करावै ।

विप्रां कन्ता वेद वचावे ॥

निष नूप तिलक दियण खत्र - घौडै ।

मिल संगलीक किया राठीडे ॥१॥”

महाराजा गजसिंह ने अपने पिता के समान दक्षिण के उपद्रवों को दबाने में बहुत सफलता प्राप्त की । अहमदनगर के बादशाह का मंत्री तथा दक्षिणी फौज का संचालक ‘अंबर’ बड़ा वीर और चालाक पुरुष था । इसने अस्सी हजार सवारों की फौज को शाही सेना के सामने भेजा । इसी फौज में याकूत खान नामक एक वीर ने बादशाह जहाँगीर की सेना को परास्त करने का बीड़ा उठाया था । इसके साथ महाराष्ट्र, बंगाल, कर्णाटक, खान-देश, गोलकुण्डा, बीजापुर तथा कन्नड के हब्सी योद्धा भी थे ।

महाराजा गजसिंह को बादशाह ने खानखानान् अब्दुर्रहीम के साथ दक्षिण के उपद्रव को दबाने के लिए नियुक्त किया था । महाराजा ने सेना के अग्रभाग (हरावळ) में स्थान-ग्रहण करके उक्त प्रचण्ड दक्षिणी सेना का बड़ी बहादुरी से मुकाबिला किया । खानखानान् समय-समय पर मुक्त-कण्ठ से इनकी प्रशंसा करके इन्हें उत्साहित करता रहता था ।

यद्यपि वरसिंह बुंदेला रतनसिंह हाड़ा, चांदा सीसोदिया तथा खानखानान् के पुत्र दाराब खान ने महकर के थाने पर मलिक अंबर की विशाल और शक्तिशाली सेना का मुकाबिला करने से मुंह फेर लिया^१ किन्तु जोधपुर-नरेश महाराजा गजसिंह ने दो प्रहर तक उससे युद्ध किया और उसके ५०० योद्धाओं को मार कर विजयश्री प्राप्त की ।

मलिक अंबर का बार-बार आक्रमण होता रहता था । कवि ने ठीक ही

१— मेरे निजी संग्रह में संगृहीत कवि हेम सांभोर कृत ग्रंथ ‘भाखा चरित्र’ से भी इस बात की पुष्टि होती है :—

‘साह तणा ऊंमरा, काटि पैठा ले कांता ।

आवै दळ आवरत, तणा दखिणाघ दिवांता ॥

कुहुक वांण जंवूर, हुए हथनाळि हवाई ।

घर गिरवर यरहरं, करै दिनमान लड़ाई ॥

तिण धार तहुं हींदू तुरक, राजासाहि जिहंगीर रा ।

राखिही तुझ ओल रहा, जैतखंभ जोधपुर ॥१॥

लिखा है कि आषाढ़-मास में जिस प्रकार वर्षा के बादल (ओमें) समय-समय पर उठते रहते हैं, उसी प्रकार दक्षिणी सेना बार-बार आक्रमण करती रहती थी और हर बार महाराजा गजसिंह हरावळ में स्थान-ग्रहण करके उसे परास्त करते थे^१। एक बार मलिक अंबर ने अचानक शाही सेना को घेर लिया। रसद, ईंधन आदि सब वस्तुओं की कमी पड़ गई।

ऐसे अवसर पर महाराजा गजसिंह ने हरावळ में ऐसी वीरता का परिचय दिया कि दक्षिणियों को घेरा उठाने पर मजबूर होना पड़ा।

महकर के थाने पर यह घेरा^२ इस ग्रंथ के अनुसार चार मास तक रहा तथा प्रत्येक ओर के सात-सात सौ सुभट मारे गये। दूसरा घेरा तीन माह तक रहा। मेहकर के उपद्रवों की समाप्त कर महाराजा गजसिंह बुरहानपुर गये। यहाँ भी काली घटाओं के समान दक्षिणी सेना इन पर छा गई। बुरहानपुर घिर गया। खान्खांनान् आदि ने पुनः महाराजा गजसिंह की ओर आशा-भरी नजरों से देखा और उन्हीं की वीरता द्वारा रक्षा हुई।

अब्दुर्रहीम खान्खांनान् ने अपनी ओर से बादशाह जहाँगीर को एक प्रशंसा-युक्त पत्र लिखा कि राठौड़ वीर महाराजा गजसिंह ने हर स्थान पर दक्षिणी सेना को रोका है और विजय प्राप्त की है। इस पर महाराजा गजसिंह को बादशाह की ओर से “दल-थंभण” (दल - सेना को रोकने वाला) की उपाधि मिली^३।

१—मेरे निजी संग्रह में संगृहीत—कवि हेम सामोर कृत ग्रंथ ‘भाखा चरित्र’ के अनुसार भी शाही सेना को जरा भी चैन नहीं मिलती थी :

‘नित जरद पैहरिजं, नित पाखरोजं हैमर।

नित राग सिषवौ, नित निसाण तणा सुर॥

नित ढोवा ढूकड़ा, दळे हुवै देठाळा।

नित घोर नारद चिरत, मंडूर सचाळा॥

आवाज हुवै गाजै अनड़ बहै नाळि, गोळा बहै।

राजा हजूरि राजा तणां, रावत निरछरिया रहै। ४॥ (पृ० १५ B)

२—पं० विश्वेश्वरनाथ रेऊ के अनुसार भी घेरा तीन माह तक रहा :—

(आरघाड़ का इतिहास, पृ० २००)

३—ओझा कृत “जोधपुर राज्य का इतिहास” भाग १, पृष्ठ ३६०; रेऊ, पृ० २०० तथा २०१ के अनुसार महाराजा गजसिंह ने युद्ध में मलिक अंबर (चंपू) का लाल झंडा छीन लिया था। इस घटना की यादगार के उपलक्ष में तब से जोधपुर के राजकीय झंडे में लाल रंग की पट्टी लगाई जाने लगी, वि० सं० १६७८ में “दलथंभण” की उपाधि मिली।

“साह दिस्स मेलिया, खानखानां लिख कागल ।
 ऐ अजीत रटुवड, किता जै जीता कदल ॥
 सबळा सन्न संघरे, छले सबले पडि-गिरिया ।
 जेथ भिडे दलि पडे, तेथ आडा भुज घरिया ॥
 कळि मूळ निर्भभण, कलि मथण, ऊभी सिरि “अंबर” डहें ।
 पतिसाह परीछें ए प्रसिध, ‘दल थंभण’ राजा कहै ॥४॥”
 रट्टोड रूप राए दीनी, सुरताण नाम दलथंभण ।
 हिंदुवै मुसलमाणी, विरदावियै जोध विरदेता ॥३॥

यद्यपि खानखानान् महाराजा गजसिंह आदि की सहायता से दक्षिणी सेनाओं की दाल नहीं गलने दे रहा था, किन्तु वह फिर भी बार-बार विभिन्न स्थानों पर उपद्रव करती रहती थी। अतः बादशाह ने शाहजादे खुर्रम को उक्त बहुत बड़ी सेना का सेनापति बना कर दक्षिण में जाने का हुक्म दिया जिससे वहाँ के उपद्रव हमेशा के लिए समाप्त हो जायँ।^१

शाहजादा खुर्रम ने जो उन दिनों बागी होने की सोच रहा था, बनावटीपन से बादशाह के प्रति बहुत भक्ति-भाव दिखा कर उससे शेर सुलतान को मांग लिया और दक्षिण फतह करने का वादा किया। खुर्रम अपनी विशाल सेना के साथ बुरहानपुर पहुँचा। उसने महाराजा गजसिंह को सेनापति बनाया; दक्षिणी सेना भाग गई:—

“तावीन दीन हिंदु तुरक, अउव पेख आतम सकति ।

‘दलथंभ’ दळा विच थप्पियी, जंतखंभ सेनाधपति ॥”

इस सफलता पर महाराजा गजसिंह का मंसव ५००० जात का कर दिया साथ ही उन्हें नक्कारा, तोग, सुनहरी साज के घोड़े तथा जालोर तथा साँचोर के परगने दिये:—

१—वीर विनोद, भाग २, पृष्ठ ८१६; डॉ० ओझा—“जोधपुर राज्य का इतिहास” भाग १, पृ० ३६० तथा आसोपा पृ० ३५२ के अनुसार वि० स० १६७६ (ई० सन् १६२२) में बादशाह ने खुर्रम को भेजा।

२—तुजुक जहांगीरी, जहांगीरनामा, वीर विनोद तथा अन्य ग्रंथों में इस अवसर पर गजसिंह का मंसव ४००० सवार का किया जाना लिखा है।

३—वीर-विनोद भाग २, पृ० ३०५। डॉ० ओझा—जोधपुर राज्य—भाग १, पृ० ३६०, रेऊ—“मारवाड़ का इतिहास” पृ० २०१ के अनुसार बादशाह ने महाराज की दक्षिण की इन धीरताओं से प्रसन्न हो कर वि० स० १६७६ की चैत्र सुदि ६ (ई० सन् १६२२ की ११ मार्च) को इन्हें नक्कारा उपहार में दिया।

“महण-रम्म मत्थियो, तेग तुडि दक्खण मारी ।
पातिसाह हुइ प्रसन, हुकम किय पंच हजारो ॥
मंडोवर नर-समंद, सीस मनसप वध्वारे ।
दे नग्गारा तोग, तुरो साकति सिंगारे ॥
फुरमास सुपारसि मोकली, दिइ राजा “दलथंभ” तूं ।
जागीर दीध जोगणि-पुरे, कणिया-गिर सांचोर सूं ॥”

तत्पश्चात् महाराजा गजसिंह ने मलिकापुर, रोहिण-खेड़ा, बालापुर महकर, निरोह, खिड़की, दौलताबाद, मुग्गीपट्टन, खानदेश, महाराष्ट्र, बराड़, अहमदनगर तथा सेतुबंध रामेश्वर तक सब स्थानों पर दक्षिणी सेना को परास्त कर दिया । इस पर सम्पूर्ण दक्षिणी सेना ने संगठित होकर पुनः महाराजा पर आक्रमण किया । इन्होंने बड़े जोश के साथ अपनी सेना को तैयार कर के प्रत्याक्रमण किया जिससे दक्षिणी सेना भाग गई ।

महाराजा गजसिंह ने वैसे तो दक्षिण में कई स्थानों पर विजय प्राप्त की किन्तु उनमें निम्न पाँच स्थान अतिमहत्त्वपूर्ण थे— १ महकर, २ मेल्हाना, ३ बालापुर, ४ बुरहानपुर तथा ५ दक्षिण के शेष प्रान्त । जब साल भर तक दक्षिणी सेनाएँ महाराजा से लगातार परास्त होती रहीं, तो “अंबर” ने सभा कर के कहा कि उत्तरी सेना के सामने अपना पुरुषार्थ नहीं चलेगा और उसने बादशाह की अधीनता स्वीकार कर के संधि करली ।

इस प्रकार महाराजा गजसिंह के सेनापतित्व में शाहजादे खुर्रम ने लगभग ढाई-तीन मास में ही दक्षिणियों को अपने अधीन कर लिया और उसने भीम सीसोदिया^१ को भी विदा कर दिया । बादशाह का तूरजहाँ के बहकावे में आकर खुर्रम को बादशाहत से वञ्चित करने के प्रयत्न करने के कारण शाहजादे खुर्रम के दिल में बादशाह के प्रति विद्रोह की अग्नि जल रही थी, अतः जिस “शेर सुलतान” (शाहजादे खुसरो) को बादशाह से मांग कर अपने साथ लाया था, उसे उसने मरवा डालाः—

“आणियो द्रोह अंतहकरण, पाडी खुरमह पंतरण ।

ततकाल “शेर” सुरताण री, कीधी अज्जुगती मरण ॥२॥ (पृ० १०७)

१—‘रेऊ’ ने “मारवाड़ के इतिहास” पृ० २०३ में लिखा हैः—

“भीम मेवाड़ की उस सेना का सेनापति था, जो उस समय महाराणा कर्णसिंह की तरफ से बादशाही सेना में रहा करती थी । जहाँगीर ने भीम को राजा की पदवी तथा ढोडे की जागीर दी थी । कुछ समय बाद ही वह बादशाह की कृपा से पाँच हजारी मंसब तक पहुँच गया था ।”

‘शेर सुलतान’ (शाहजादे खुररो) का वध करवा कर शाहजादा खुर्रम खानखानान् के साथ बुरहानपुर से मांडव आया। खुर्रम के साथ एक कुशाग्र-बुद्धि ब्राह्मण मंत्री था। इसका नाम सुन्दर था। बाद में इसकी वीरता से प्रसन्न होकर बादशाह ने इसे राजा विक्रमाजीत रायरायान की उपाधि दी थी। शाहजादे खुररो (शेर सुरताण) को मरवाने में इसका भी हाथ था।

मांडव पहुँच कर खुर्रम ने महाराजा गजसिंह को अपने पास बुलाया तथा उनकी वीरता की प्रशंसा करते हुये इन से गले मिला। फिर इन्हें जोधपुर जाने के लिए विदा कर दिया। महाराजा अपनी राजधानी लौटे। जहाँ प्रजा ने उनका हृदय से स्वागत किया।

महाराजा गजसिंह लगभग छः मास तक अपनी राजधानी जोधपुर में बड़े ठाट-बाट से रहे। उन्हीं दिनों खबर मिली कि शाहजादा खुर्रम बागी हो गया जिससे शाही-क्षेत्रों में बड़ी उथल-पुथल हो रही है तथा खुर्रम के इस व्यवहार पर बहुत दुःखी व क्रोधित होकर बादशाह ने उसे पकड़ने की आज्ञा दे दी:—

१—डॉ० ओझा ‘जोधपुर राज०’ भाग १, पृ० ३६०; पं० रामकरण आसोपा ‘मारवाड़ का संक्षिप्त इतिहास’ पृ० ३५२ के अनुसार महाराजा गजसिंह खुर्रम से विदाई लेकर बादशाह के पास गये और बादशाह से आज्ञा लेकर वि० सं० १६७६ (ई० सन् १६२२) के भाद्रपद शुक्ला १० को जोधपुर लौटे।

२—धीर विनोद, भाग २, पृ० २८१, २८२ के अनुसार—बादशाह खास अपनी तुजुक जहाँगीरी नामक किताब में निहायत रंज से लिखता है:—

“वह पर्वरिशों और मिहर्बानियों, जो उस (खुर्रम) के हक में मुझ से जुहर में आई हैं, मैं कह सकता हूँ कि अब तक किसी बादशाह ने अपने घेरे पर न की होनी; जो कुछ मेरे बाप ने मेरे भाइयों को उहदे दिये थे, मैंने उसके नौकरों को इनायत किये, और खिताब व नेजा और नक़्क़ारा उनको दिया गया, जैसा मैं सिलसिलेवार इस किताब में पहले लिख आया हूँ, पढ़ने वालों से पोशीदा न रहेगा; जिस कदर तवज्जुह और मिहर्बानी उस पर की गई, कलम को उसके लिखने की ताकत नहीं है, जियादा रज के सज्जव नहीं लिखा जा सकता, इस वक़्त में जब कि सफ़र की यक़ीन और मिजाज की कमजोरी और आवहदा की ना मुआफ़क़त मौजूद है, मुझको सवार होकर ऐसे नालायक देहे की तरफ़ चलना पड़ता है, बहुत से नौकर जिनको बहुत वर्षों तक मैंने पाला था, और अमीरी के दरजे पर पहुँचाया था और वह आज के दिन उज़बक या फ़जलवाश काम की लड़ाई में काम आते, वे वेदीलत (खुर्रम के लिए बादशाह द्वारा कुपित होकर रखा हुआ नाम) की बदवस्ती से बेफायदा राजा को पहुँचे, और मेरे हाथ से ख़राब हुए; लेकिन मे खुदा का शुक्र करता हूँ कि उस जुजुम और पाक ने इस कदर हिम्मत और बुदबारी मुझको बख़शी है कि इन तमाम तकलीफ़ों को उठा लूँगा, और

हठ-वादा हजरति, कोपि हटियो काळंनल ।
 प्रळ-काळ उतपात, जाण वंधी वड मंडळ ॥
 आप मुख कियो हुकम, चोट हुई नगारां ।
 चडे मीच चंचळे, कूच कीयो दळकारां ॥

जिहगीर कहे जमरूप हुई. खुरम कहां जाइ वप्पडो ।
 पैसै पयाळ अंवर चडे, जिहां जाइ तहां पक्कडो ॥३॥

एक विशाल शाही-सेना खुरंम के विरुद्ध रवाना हुई । खुरंम भी मांडव से दल-बल सहित रवाना हुआ । वह अजमेर से सांभर होता हुआ रणथम्भोर आया ।

खुरंम ने भीम सीसोदिया^२ के पास भेड़ते^३ हुक्म भेजा कि तुम सादूल को हराकर अजमेर पर कब्जा कर लो । खुरंम की आज्ञानुसार भीम ने अजमेर पर चढ़ाई कर दी । सादूल कायर की तरह पहाड़ों में भाग गया किन्तु भीम उसे पकड़ कर खुरंम के पास ले गया :—

उतारै अजमेर सँ, खुरम सनमुख आण ।
 कर साहे 'सादूल' नुं, खेलायो खूमाण ॥३॥

खुरंम अपनी सेना के साथ सीकरी पहुंचा । वहाँ के जूझारों ने खुरंम से युद्ध करने के लिए तलवार चलाने के स्थान पर अपने आपको गढ़ में छुपा लिया ।

अपनी उन्न के दूसरे अहवाल की तरह पर पूरा करके आसान कर लूंगा, लेकिन जो बात मेरे दिल पर भारी गुजरती है, और मेरे गौरवदार मिजाज को परेशानी में डालती है, वह यह है कि ऐसे वक्त में मुनासिब था कि मेरे नेकवख्त लड़के और साफ़ दिल सदाँर आपस में एक इरादा होकर कन्धार और खुरासान की कारगुजारी को, जो हिन्दुस्तान की बादशाहत के लिये इज्जत है, इस्तिवार करते, इस बे-नसीब ने अपने पांव पर कुल्हाड़ी मार कर, इस इरादे को रोक दिया और कन्धार के मुआमले की गिरह मेरे दिल में पड़ी रह गई, जिसका सुलझना देर में होगा, मैं उम्मेद रखता हूँ कि बुजुर्ग खुदा इन फिकों को मेरे दिल से दूर करेगा ।”

१—जहाँगीर का आत्मचरित—जहाँगीरनामा (तुजुक जहाँगीरी) पृ० ७६२, अनुवादक—
 जजरस्तदास । प्रकाशक-नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, प्रथम संस्करण, संवत् २०१४—
 देवीप्रसाद ऐतिहासिक पुस्तक माला २१ के अन्तर्गत ।

२—भीम सीसोदिया महाराणा अमरसिंह का छोटा पुत्र था । शाहजादे खुरंम के वागी होने पर यह बादशाह की सेवा से हटकर खुरंम की ओर मिल गया ।

३—सुहणोत नैणसी री ख्यात भाग १, पृ० ३०-३१ के अनुसार उस समय भेड़ता बादशाह की ओर से भीम को जागीर में दिया हुआ था ।

खुरम पीहती सीकरी, है खडिऐ इळकार ।

भुभारे गढ भल्लिया, नह भल्ली तरवार ॥१॥ पृ० १२७

खुरम ने खानखानान् अब्दुरहीम तथा अपनी विशाल सेना के साथ दिल्ली की ओर कूच किया । जब बादशाह से तीन योजन दूर रहा तब उसने अपनी सेना के तीन भाग किये—१. भीम सीसोदिया के सेनापतित्व में, २. सुन्दर ब्राह्मण (राजा विक्रमाजीत रायरायान) के सेनापतित्व में और ३. अब्दुरहीम खान-खानान् के पुत्र दाराब खाँ के सेनापतित्व में । घमासान लड़ाई हुई^१ । दोनों ओर के कई योद्धा काम आये । भीम सीसोदिया ने शाही सेना का बहुत संहार किया । उसी समय खुरम का सेनापति सुन्दर ब्राह्मण (राजा विक्रमाजीत रायरायान) मारा गया^२ ।

यद्यपि अब्दुल्ला खाँ का खुरम की फौज में मिल जाने के कारण शाही फौज की पराजय निश्चित थी, किन्तु खुरम के मंत्री सुन्दर ब्राह्मण के गोली लगते ही उसकी सेना में खलवली मच गई और उसकी विजय पराजय में परिणत हो गई । दोनों ओर से युद्ध बन्द हो गया । यद्यपि बादशाह की विजय^३ हुई किन्तु वह विजय किन परिस्थितियों में हुई इसके लिए बादशाह विचार में पड़ गया । अब्दुल्ला खाँ जैसा विश्वस्त सेनाध्यक्ष भी शाही सेवा को छोड़ कर खुरम की ओर मिल गया तो दूसरों द्वारा भी उसका अनुकरण करने की सम्भावना थी:—

१—वीरचिनोद भाग २, पृ० २८३ ।

२—जहाँगीर का आत्मचरितः—जहाँगीरनामा (तुजुक जहाँगीरी)—अनुवादक-वज्ररत्नदास, पृष्ठ ७६६ से ७७३ तक में सम्पूर्ण घटना चक्र का सविस्तार वर्णन है । तथा:—मुगल दरबार भाग १—सम्राट्तिस्ल उमरा (मुगल दरबार के हिन्दू सरदारों की जीव-नियाँ) अनुवादक-वज्ररत्नदास, प्रकाशक-नागरी प्रचारिणी सभा काशी, देवीप्रसाद ऐतिहासिक पुस्तकमाला ६ के अन्तर्गत, प्रथम संस्करण संवत् १९८८ वि०, पृष्ठ ३८३ से ३९५ तक के अनुसार जहाँगीर के अठारवें जलूसी वर्ष हि० सं० १०३२ में परगना कोटला में शाही सेना और शाहजादे खुरम की सेना में मुठभेड़ हुई जिसमें शाही सेना के हरावल में नियुक्त अब्दुल्ला खाँ दस सहल फौज के साथ सुन्दर ब्राह्मण (राजा विक्रमाजीत रायरायान) के साथ बनाई हुई पूर्व योजना के अनुसार शाही सेना को छोड़ कर शाहजादे की सेना में मिलने के लिए बोड़ा । सुन्दर ब्राह्मण भी उसकी तरफ बढ़ रहा था कि एकाएक एक गुप्त गोली आकर उसके शिर में लगी जिससे उसका काम तमाम हो गया ।

वीर चिनोद भाग २, पृ० ३०६ से भी इसकी पुष्टि होती है ।

३—जहाँगीर का आत्मचरितः—जहाँगीर नामा (तुजुक जहाँगीरी) अनुवादक वज्ररत्नदास, पृ० ७६६ से ७७३ तक ।

घर फूटी घर कारणों, घर में लगी लाहि ।

जे जीतो तो हारियौ, दिल्लीवै पतिसाह ॥२॥ (पृ० १४२)

बादशाह का खुर्रम के उपद्रव से दुःखी व चिंतित रहने के कारण, उसके वजीरों ने सलाह दी कि विश्वासपात्र राठीड नरेश महाराजा गजसिंह को बुलाया जाय तो कभी पराजय का मुँह नहीं देखना पड़ेगा:—

बड़े वजीरे मंत्रिए, कहियौ वयण विचार ।

जो आवै राठीड नृप, ती नह आवै हार ॥३॥

बादशाह ने इस सलाह से पूर्ण सहमत होते हुए महाराजा गजसिंह को अपने पास बुलाने के लिए फरमान भेजा जिसमें महाराजा से अपनी लज्जा रखने की प्रार्थना की:—

आप कहै पतसाह अचनगल । 'गाजीसाह' कमणा तो जांमल ।

तूँ खुरसाण हिंदुवाँ आगल । किलवाँ-राइं लिखे इम कागल ॥१॥

खांडै-राव सिरै नव खंडाँ । मारु ती सिर भारथ मंडाँ ।

भारथ भलायो तो भूअ डंडाँ । मांडे तूँ थांभाँ ब्रह्मंडाँ ॥२॥

तूँ राजा दलथंभ कहायो । ए भर भार भुजै ती आयी ।

इल साईजादै दुप उठायी । पातसाह फुरमाण पठायी ॥३॥

हुकम लिखे मोकलियो हजरति । ताँय पहुँती जोधां तख्खति ।

कमध बडी तो पासि करामति । पति मो रखी कहै दिल्लीपति ॥४॥

महाराजा गजसिंह, अपने राज्य का प्रबन्ध करके वि० सं० १६८० के चैत्र मास की शुक्ल पक्ष की एकादसी को रवाना होकर, वि० सं० १६८० वैसाख सुदि १२, ई० सन् १६२३ ता० १ मई को बादशाह के पास पहुँचे:—

दे नीसाणां घाऊ, चैत सुदी एकादसी ।

चढे कमधां-राऊ, दिल्लीवै सुरताण दिस ॥३॥ (पृ० १७१)

महाराजा गजसिंह अपने साथ निम्न सुभटों को लेकर जोधपुर से रवाना हुए । जब महाराजा गजसिंह बादशाह के पास पहुँचे तो वह भुजायें पसार कर इतसे गले मिला और कुशल-मंगल पूछ कर इनकी बहुत प्रशंसा की । बादशाह

१—“जोधपुर राज्य का इतिहास” डॉ० गौरीशंकर हीराचंद ओझा, पृ० ३६१

२—पं० गौरीशंकर हीराचंद ओझा ने अपने ‘जोधपुर राज्य के इतिहास’ पृ० ३६२ में जोधपुर राज्य की ख्यात के आधार पर लिखा है कि बादशाह जहांगीर उन दिनों अजमेर में था । उसने शाहजादे परवेज को खुर्रम पर भेजने का निश्चय कर आगरे की तरफ प्रस्थान किया और गजसिंह को भी बुलवाया जो चांडसू (चाटसू) नामक स्थान पर जाकर उससे मिल गया ।

ने महाराजा गजसिंह को शाहजादे खुर्रम से युद्ध करने का बीड़ा देकर, शाहजादे परवेज के साथ जाने का हुक्म दिया^१ :—

‘परवेज’ साह सत्ये, दे कमधज लज भूडंडे ।

सुरतांण खुर्रम मत्ये, दे बीड़ी कीध फुरमाण ॥७॥ (पृ० १७८)

शाहजादे परवेज और महाबत खां की फौज के साथ महाराजा गजसिंह आगे बढ़े । बराड़ के पास युद्ध हुआ जिसमें खानखानान् अब्दुरहीम को कैद किया गया^२ ।

१—वीर विनोद भाग २ पृ० ३०६ तथा भाग २ के ही पृ० ८१६ के अनुसार बादशाह से शाहजादा खुर्रम वागी हुआ, उसके मुकाबले के लिए शाहजादा परवेज और महाबत खां के साथ विक्रमी १६८० ज्येष्ठ कृष्ण ५ (हि० १०३२ ता० १६ रजब = ई० १६२३ ता० १६ मई) को यह (राजा गजसिंह) पांच हजारी जात व चार ‘हजार सवार का संसब पाकर मुकर्रर हुए, और इनको पहली तरक्की के साथ जालौर और दूसरी तरक्की के साथ फलींदी का पगानह मिला, इसी वर्ष में मेड़ता भी मिल गया । जहाँगीर का आत्म चरित—जहाँगीरनामा (तुजफ जहाँगीरी), पृ० ७७७ में बादशाह जहाँगीर ने वागी खुर्रम का पीछा करने के लिए शाहजादे परवेज के साथ भेजे जाने वा सुभटों में गजसिंह को ‘महाराजा गजसिंह लिखा है । अतः इन्हें महाराज की उपाधि पहले मिल चुकी थी या उस समय दी गई होगी ।

२—वीर विनोद पृ० २८४, २८५, २८६ में खानखानान् अब्दुरहीम के कैद होने की घटनाओं का वर्णन निम्न है :—

‘शाहजादा परवेज दंगले से शाही खिदमत में हाजिर हुआ । बादशाह जहाँगीर ने उसको शाही फौज का अफसर बनाकर शाहजादे खुर्रम के पीछे रवाना किया और परवेज का मददगार महाबतखां हुआ । शाही फौज जब मालवे में पहुँची तो शाहजादे शाहजहाँ ने भी अपनी फौज उसके मुकाबले को रवाना की, लेकिन रुस्तमखां (जिसको शाहजादे शाहजहाँ ने अदना दरजे से पच हजारी संसब देकर गुजरात का सूबेदार बनाया था) भाग कर महाबतखां व परवेज की फौज से गए अपने साथियों से जा मिला, जिससे शाहजहाँ की फौज का इत्तिजाम बिल्कुल बिगड़ गया और कुछ अपने साथी सरदारों से शाहजादे का एतिवार उठ गया, तो जो अपनी फौज थी उसको बुलाकर किले साड़ू से नर्मदा के पार होकर वैरमवेग वल्ली को छोड़ी फौज के साथ नर्मदा के किनारे छोड़कर आप किले आसिरगढ़ व बुरहनिपुर की तरफ चला गया, किसी कदर नर्मदा पार जो किशियां थीं वे वैरमवेग ने अपने कब्जे में कर ली । इस वक्त मुहम्मद तकी वल्ली ने एक चिट्ठी पकड़कर शाहजादे खुर्रम को नज़ की, जो खानखानान् अब्दुरहीम की तरफ से महाबतखां के नाम लिखी गई थी, उसमें शिअर दर्ज था—

सद् कस्ब नजर निगाह मेदारन्दम् ।

घरना विपरीदमे जि द आरामी ॥

आमा किरि गजदल उपडिया । खूंदालम कट्टक इम खडिया ॥

राडि बरारी भुंके पडिया । खानखान जंजीरे जडिया ॥१॥'

(पृष्ठ १८६)

शाहजादा खुर्रम वहाँ से भागकर किले आसैरगढ़ व बुरहानपुर होता हुआ उड़ीसा, ढाका (बंगाल) में आया और वहाँ से वह इलाहाबाद व जौनपुर की ओर बढ़ा । इधर महाराजा गजसिंह भी शाही सेना के साथ हरावल (अग्रभाग)

अर्थ :—मुझको सैकड़ों आदमी निगाह रखते हैं, नहीं तो बेकरारी से निकल भागता ।

जब यह चिट्ठी खानखानान् को मय उसके लड़के के तलब करके शाहजादे ने दिखलाई तो उससे कुछ जवाब न दिया गया, इसलिए कैद किया गया ।

शाहजहाँ किले आसैर में बहुतसा खटला मय लोण्डी बंदियों के छोड़ कर गोपालदास राजपूत को वहाँ का हाकिम बनाने के बाद आप बुरहानपुर की-तरफ चला गया ।

पीछे से शाहजादा पवज मय महाबतखाँ के शाही फौज को लेकर नर्मदा नदी पर आया लेकिन बैरमबेग शाहजादे खुर्रम का मुलाजिम पैदल से ही किश्तियों को अपने कब्जे में कर लेने से दक्षिणी किनारे को तोपखाने व अपने बहादुर सिपाहियों से मजबूत करके लड़ाई को तय्यार था । महाबतखाँ ने नदी उतरना मुश्किल जान कर खानखानान् अब्दुरहीम को पोशीदा लिखावट से अपनी तरफ मिलाया । उस बूढ़े ने भी महाबतखाँ के दाव में आकर शाहजादे को फरेब से कहा कि अब सुलह इस्तिथार करना बिहतर है, मैं आपका खैरखवाह हूँ, अगला कुसूर मुआफ कर दीजिए अब हरिज खिदमत गुजारी में फर्क न आवेगा । शाहजादा खुर्रम उसके कहने को सच मान गया और कुरआन की सौगन्द दिलाने पर उसको महाबतखाँ की तरफ रवाना किया, और उसके बेटों को अपने कब्जे में रखवा, उसको चलते वक़्त लाचारी से यह भी कहा कि हर तरह इज्जत हाथ से न देना चाहिए । खानखाना दक्षिणी किनारे से हुयम के मुवाफिक सुलह के लिए तहरीरी शर्तें कर रहा था जिससे जंगी लोग मय बैरमबेग के सुस्त हो गये । रात के वक़्त शाही फौज के मुलाजिम नदी उतर आये और खानखाना उनसे मिल गया । बैरमबेग ने भाग कर शाहजादे को इस हाल की खबर दी, शाही फौज ने बुरहानपुर तक पीछा किया और शाहजादा खुर्रम गोलकुण्डा धर्मरह गैर अमल्दारी में होता हुआ उड़ीसा की तरफ पहुँचा ।

बादशाह जहांगीर ने शाहजादे पवज मय शाही लश्कर व बड़े अमीरों के बुरहानपुर की तरफ से इलाहाबाद जाने का हुयम दिया और पवज को यह भी लिखा है कि— 'खानखानान् अब्दुरहीम नज़रबन्द रखवा जावे क्योंकि उसका बेटा दाराबखाँ शाहजहाँ के पास है, पवज ने वैसा ही किया ।

जहांगीर का आत्मचरित—जहांगीरनामा (तुजूक-जहांगीरी) पृ० ७७७, ७७८, ७८१ से ८०१ तक में भी इसका उल्लेख है ।

में रहकर खुर्रम का सामना (मुकाबिला) करने इलाहाबाद, काशी, गया की यात्रा करते हुए टोंस नदी के किनारे कोरटा में पहुँच कर ठहर गये। उस समय खुर्रम का पड़ाव खैरगढ़ में था। इससे दोनों की सेनाओं के बीच केवल दो कोस का फासला रह गया। खुर्रम की सेना के अग्रभाग में महाराणा अमरसिंह का पुत्र सीसोदिया भीम अपने चुने हुए साथियों सहित नियत हुआ। इसके अतिरिक्त अब्दुलाखाँ, दरियाखाँ, पहाड़खाँ, कल्याणसिंह का पुत्र भीमसिंह राठीड़, बलु का पुत्र पृथ्वीसिंह, रामा का पुत्र हरदास तथा खुर्रम की सेना के अनेक योद्धा थे। शाहजादे खुर्रम ने बड़े जोश के साथ विशाल शाही सेना का सामना करने की तैयारी की।

शाहजादे खुर्रम ने अपनी सेना के सेनापति भीम सीसोदिया की वीरता का बखान करते हुए उसे उत्साहित किया और युद्ध का सारा उत्तरदायित्व उस पर डाला :—

‘तांम रांण सीसोद, खुरम सुरतांण पडिगगर ।
 मुभ सैन दळ - थंभ, आज कुंण तूभ बरावर ॥
 दित्ती दावा-मुदी, तूं हिज आगळ है रांणां ।
 तो दादी ‘संग्राम’, ग्रहण मोखण सुरतांणां ॥
 खूंमांण दळे सुरसांण सू, कमण जुद्ध मंडे वियो ।
 ‘भीमेण’ ऊठि ‘अमरेस’ रा, तो सिरि नेत परट्टियो ॥५॥

भीम सीसोदिया ने भी बड़े उत्साह के साथ क्षत्रियोचित शौर्य का परिचय दिया।

शाही सेना के अग्रभाग में शाहजादे परवेज और महावत खाँ की सलाह से महाराजा गजसिंह रखे गये।

अघपत्ति चढ़े देव मैं अंस । रजपूत चढ़े छत्तीस वंस ॥
 मंडोवर राजा मुहरि मंड । डार्व ली जोगणि भुजाडंड ॥४७॥
 राठीड़ वधे मेळसी राड । मुहरावत सिगळ मारवाड़ ।
 गयणाग लागि ऊसस गात । हूओ हरीळ हिदुवां छात ॥४८॥

महाराजा गजसिंह के साथ आंबेर के राजा जयसिंह, बीकानेर के राजा सूरजसिंह, बुंदेला वरसिंघ देव, सारंगदेव, बहलोल खान, आलम खान आदि सुभट थे। अन्त में घमासान युद्ध प्रारम्भ हुआ। सीसोदिया भीम और महाराजा गजसिंह का मुकाबिला हुआ। सीसोदिया भीम ने बड़ी वीरता

दिखलाई । उसने जटाजूट (जोताजोत) नामक एक भयंकर हाथी का भी काम तमाम कर दिया । सीसोदिया भीम और महाराजा गजसिंह में परस्पर भयंकर युद्ध हुआ । भीम का शरीर छलनी होगया । उसकी वीरता की जितनी प्रशंसा की जाय, कम है । अन्तिम समय तक लड़ता हुआ वीरगति को प्राप्त हुआ । भीम के साथ मानसिंघ सीसोदिया (शक्तावत)^१ कल्याणसिंह सीसोदिया, हरिदास राठीड़, कचरा कूपावत, हरिसिंह भाटी आदि सुभट भी वीरगति को प्राप्त हुए:—

मानसिंघ सीसोद, भिडे रहिघी भांणावत ।
गोकळ^२ जीवत-संभ, विढ़े हुआ वड रावत ॥
सीसोदी, 'कल्याण' रहे रावत निभंभयण ।
हरीदास रट्टववड, रहे 'कचरी' रिण डोहण ॥
हरिसिंघ हेक भाटी रहे, दुल्लह सुरतांणी घडा ।
'भीमेण' रहतै 'अमर' रे, रहिया रावत अतडा ॥१०॥ (पृ० २४०)

भीम के मरते ही पहाड़खान, दरियावखान, अब्दुलाखां, हृदयनारायण हाडा, सादूळसिंह प्रमार^३, गयासबीर खोजा आदि भी खुर्रम के साथ कायरों की भांति भाग गये । यह युद्ध वि० सं० १६८१ की कार्तिक की पूर्णिमा बनिवार को हुआ था :—

सोळह से संमंत, हुआ जोगणपुर चाळै ।
सम्मै एकासियं, मास काती वडाळै ॥
पूनम थावरवार, सरद रित है पाळट्टी ।
वीर खेत पूरब्ब रित हेमंत प्रघट्टी ॥
सुरतांण खुरम भागी भिडे, चाडि चकथां चक्कवै ।
गजसिंघ प्रवाडी खट्टियो, वहे भीम चीतीडवै ॥२०॥

कोपि ताम कमधज पछै उरि कूंत पहारै ।

पयोधरा खडहडै हंस आया बळ हारै ॥

—भाखा चरित्र पृ० २२A ।

१—धीर विनोद, भाग २, पृ० २८६ ।

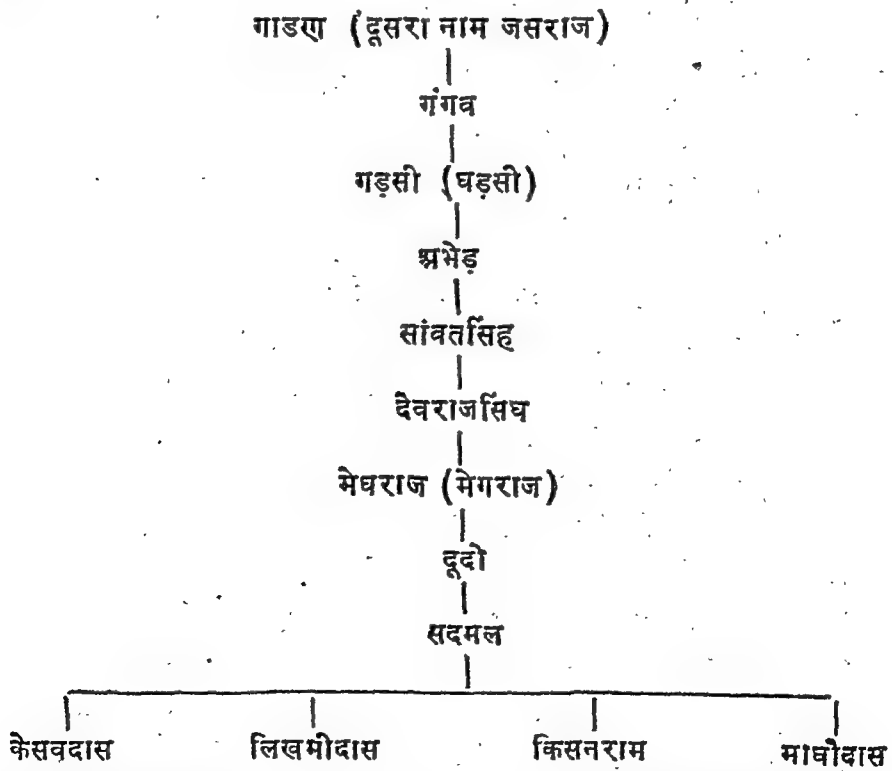
२—यह गोकळदास उक्त मानसिंह शक्तावत का भाई था । भीम के साथ बादशाह की सेना से मुकाबिला करते हुए यह भी पूर्ण घायल हो गया था । महाराजा गजसिंह द्वारा घायल अवस्था में युद्धस्थल से हटा लिया गया, जिससे बच गया । यह महाराजा गजसिंह के भूवा का लड़का भाई था । बाद में महाराजा ने इसे अपने राज्य में जागीर दी ।

—मुहणोत नैणसी री ख्यात भाग १, पृ० २६

३—धीर विनोद भाग २ पृ० २८७ ।

कवि केसोदास गाडण—एक परिचय

‘गाडण’ चारण-जाति के अन्तर्गत एक शाखा है। इस शाखा के चारणों एवं उनके निजी गांव ‘गाडणां’ के सम्बन्ध में कवि बांकीदास ने अपनी ख्यात^१ में लिखा है—‘पसायत (फरसारांम) गाडण री बेटी नाम मेळी (महली) आढा नूं परणायी—मेळी री सावकी बेटी हो जिण नूं मारने पसायत (फरसारांम) रा बेटा आढां री जमी अपणाय गाडणां नामक नगरी बसायी वाप कनै (जयसलमेर में)।’ गाडण शाखा के सभी चारण इसी गाडणां गांव से निकले माने जाते हैं। यह भी सत्य है कि इस गांव पर अद्यावधि गाडण-शाखा के चारणों का ही अधिकार रहा है। पुष्कर (अजमेर) में करणी-मंदिर के पुजारी और चारणों के गुरु महाराज श्री रामदासजी पाराशर ब्राह्मण की वही पृष्ठ २४५ पर गाडणों की वंशावली^२ दी है जो यहाँ उद्धृत की जाती है :—



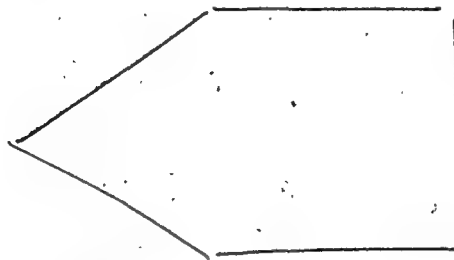
उपर्युक्त वंशावली के आधार पर गाडण की नवमी पीढ़ी में सदमल हुआ। वह बड़ा ही योग्य व्यक्ति था। इसकी योग्यता और कुशाग्रबुद्धि से प्रभावित

१—बांकीदास ख्यात-घात संख्या २१८७, पृ० १८०।

२—इसी प्रकार की वंशावली चारणों के राव (भाट) हीरदांजजी रामासणी वालों की वही में बताई गई है।

तत्कालीन लवेरा के ठाकुर गोविंददास भाटी ने उसे अपने पास रख लिया। गोविंददास भाटी उस समय मारवाड़ राज्य का प्रधान था। वह सदमल को अपने साथ जोधपुर-नरेश के पास ले आया। यहां आकर सदमल ने अपनी काव्य-रचना एवं विद्वत्ता के आधार पर जोधपुर-महाराजा शूरसिंहजी से विशिष्ट सम्मान प्राप्त किया। सदमल को दरबारी कवियों के मध्य स्थान मिलने के साथ-साथ संवत् १६५३ में महाराजा द्वारा लवेरा के निकट छींडिया-नामक ग्राम जागीर में प्राप्त हुआ जो अद्यावधि सदमल के वंशजों के अधिकार में है। छींडिया-ग्राम की जागीर के प्रमाण में महाराजा शूरसिंहजी ने ताम्रपत्र बनवा कर दिया जिसकी नकल निम्न है :—

श्री परमेश्वरजी



श्रीकृष्णजी

सही

सिधश्री महाराजाधिराज श्री सुरजसिंहजी बचनातु चारण सद्ग (सदमल) गांडण नू मया करै गांव १ छींडीया उदकी प्रवा रै पत्र लिखी दियो। पेत्र २ वी सोयलामां है। पेत्र २ वी चाराळिया मां है छींडीया भेळा घाती देसी संवत् १६५३ वृषे वदि १२ दुवे श्रीमुख

गांडण-वंशावली से स्पष्ट है कि कवि केसोदास गांडण प्रसिद्ध कवि सदमल गांडण का सब से बड़ा पुत्र था। लिखमीदास, किसनदास और माधोदास इनके तीन और छोटे भाई थे। प्रारम्भ में कवि केसोदास अपने पिता को जागीर में प्राप्त ग्राम छींडिया में ही रहे। उनके पिता सदमल गांडण का देहावसान संवत् १६६६ में हो गया। गांव छींडिया की इमशान-भूमि में सदमल गांडण की स्मृति में छतरी बनी हुई है जिसके शिला-लेख को यहां उद्धृत करना उपयुक्त ही होगा—

“स्वस्ति श्री आईनाथ सत्य संवत् १६६६ पोह सुदी १३ सोमवार दिन छत्रड़ी गांडण सद्गजी सिर केसव लिखमीदास किसना माधवदास काम करायोदेवलोक”

पिता की भांति कवि केसोदास ने भी अपने काव्य-चातुर्य एवं व्यक्तित्व के प्रभाव से जोधपुर-नरेश महाराजा गजसिंह जी का राज्याश्रय प्राप्त किया।

महाराजा गजसिंहजी को अपने जीवन-काल में अनेक युद्ध लड़ने पड़े । कवि केसोदास ने इन युद्धों में प्रायः महाराजा के साथ ही रहे और उन्होंने महाराजा के रण-कौशल एवं उनकी शूरवीरता की प्रशंसा की । कवि केसोदास गाडण स्वामिभक्त तो थे ही परन्तु इसके साथ-साथ ईश्वरभक्त भी थे । ईश्वर में इनकी अटूट आस्था एवं अनुपम श्रद्धा थी । इनके समकालीन कवि महात्मा ईसरदास ने जिस प्रकार 'हरिरस' की रचना की है उसी प्रकार केसोदास गाडण ने भक्ति-विषयक 'विवेकवारता' ग्रंथ की रचना की । 'हरिरास' के सम्बन्ध में कवि केसोदास ने महात्मा ईसरदास की प्रशंसा करते हुए निम्न सोरठा कहा है—

जग प्राजळ ती जाण अक दावानळ ऊपरा ।

राचियी रोहड राण समंद हरि सूर वत ॥

इसके प्रत्युत्तर में महात्मा ईसरदास ने कवि केसोदास की कविता से प्रभावित होकर कहा कि १२० शाखाओं के चारण-कवियों ने अपने परमार्थ के लिए ही 'विवेकवारता' (नीसांणी छंद) की रचना की है । इसके सम्बन्ध में महात्मा ईसरदास का निम्न सोरठा प्रसिद्ध है :—

नीसांणंद नीसांण केसव परमारथ कियो ।

पोह स्वार्थ परमाण, सी बीसोतर वरण सिर ॥

महात्मा केसोदास के सम्बन्ध में यह प्रसिद्ध है कि वे गेरुवे वस्त्र ही धारण करते थे और अपने आप को गोरखनाथ की शिष्य-परम्परा में मानते थे ।^१

१—इतिहास-प्रसिद्ध नेता मुंहता नैणसी अपनी संगृहीत गांवों की तवारीख में छोड़िया ग्राम के विषय से निम्न प्रकार से लिखा है—

छोड़ीयो राजा श्री सूरसिंहजी री दत्त गाडण ।

सद्दू दूदावत नूं हमें माधोदास वेढो सद्दू रो चारण ॥

इसी पृ० १—यह किवंदती प्रचलित है कि वाल्यकाल में खेलते हुए एक स्थान पर कवि केसोदास को भेंट एक साधु से हुई । चारण-जाति का जान कर साधु ने बालक केसोदास से कुछ कविता कहने के लिए कहा, तब उसने अपने पिता द्वारा रचित महाराजा गजसिंहजी की प्रशंसा का एक गीत सुनाया । इस पर साधु के यह पृष्ठने पर कि वह किसी साधु के बारे में भी कुछ जानता है तब केसोदास ने निम्न दोहा सुनाया—

सोहे मुदा सोवनी मुकुट जटा सिर माथ ।

धमर हूँ श्री घर ऊपर रंग हो गोरखनाथ ॥

इस सम्बन्ध में यह बात प्रचलित है कि एक समय राव रतन हाडा के निमन्त्रण पर वे बूंदी गए। इस समय उनके साथ एक अन्य कवि भी था। केसोदास साधु के समान ही गेरुवे वस्त्र धारण किए हुए थे और साथ वाला व्यक्ति सुन्दर वेश-भूषा में था। इसलिए राव रतन ने इसे ही प्रसिद्ध केसोदास समझकर उसका अत्यधिक मान-सम्मान किया और कवि केसोदास खड़े ही रह गए। केसोदास वहां से शीघ्र लौट पड़े। लौटते समय महल की सीढ़ियों से उतरते हुए, उन्होंने राव रतन के सम्बन्ध में अनेक दोहे कहे जिनमें से बहुत से अप्राप्य हैं। एक दो दोहे यहाँ द्रष्टव्य हैं—

गीतां दूहां कवतडां मूळ न राचै मन्त ।

कपडौ नूर खुदाय रो रीके राव 'रतन' ॥

कवि के जन्म-संवत् पर विचार—

पर्याप्त खोज के अनुसार आज भी प्रसिद्ध कवि केसोदास गाडण के जन्म-संवत् के विषय में प्रामाणिक रूप से कुछ भी नहीं कहा जा सकता, केवल अनुमान ही लगाया जा सकता है। ईश्वर-काव्य-गुम्फिका प्रथम भाग के अन्तर्गत प्रकाशित हरिरस की भूमिका में सम्पादक ठा० किशोरसिंहजी बार्हस्पत्य ने यह प्रमाणित किया है कि ईसरदासजी का जन्म-संवत् १५६५ में हुआ था। जैसा कि पूर्व के पृष्ठों में कहा जा चुका है, कवि केसोदास ने महात्मा ईसरदास के हरिरस की प्रशंसा की और ईसरदास ने कवि केसोदास-कृत विवेकवारता की प्रशंसा की।

केसोदास ने अपने 'गजगुण-रूपक-बंध' की रचना 'विवेक-वारता' के बाद ही की, क्योंकि कवि गज-गुण-रूपक-बंध में मेंवाड़ के राणा भीम सीसोदिया की मृत्यु-संवत् १६८१ लिखता है जो प्रामाणिक है, जब कि विवेक-वारता की प्रशंसा करने वाले महात्मा ईसरदास की मृत्यु के पश्चात् भी केसोदास अनेक वर्षों तक जीवित रहे। इस सम्बन्ध में एक यह भी प्रमाण है कि संवत् १६८३ में जोधपुर-नरेश गजसिंह ने केसोदास को सोबड़ास-नामक गांव जागीर में दिया था। अतः यहाँ यह स्पष्ट हो जाता है कि केसोदास महात्मा ईसरदास के समकालीन होते हुए भी आयु में उनसे छोटे थे। ईसरदास की मृत्यु-संवत् १६७५ के आस-पास माना जाती है और इस समय उनकी आयु ८० वर्ष के लगभग थी

यह दोहा सुनकर साधु बड़ा प्रसन्न हुआ। कहते हैं कि यही साधु के आशीर्वाद से केसोदास को बाबा गोरखनाथ के दर्शन हुए। उन्होंने मन ही मन समझ लिया कि यही साधु गोरखनाथ हैं।

तो यह स्वाभाविक ही है कि संवत् १६८३ में महाराजा गजसिंहजी से ग्राम प्राप्त करने वाले कवि केसोदास का जन्म ईसरदास के जन्म-संवत् १५६५ के बाद ही हुआ होगा।

कवि केसोदास गाडण के पिता की मृत्यु-संवत् १६६६ के पूर्व ही हो चुकी थी, जैसा कि उनकी छतरी (स्मारक चिन्ह) के शिलालेख से प्रकट है और ईसरदास की मृत्यु-संवत् १६७५ के आस-पास मानी जाती है। दोनों ही के मृत्यु संवत् में कोई विशेष अन्तर नहीं है। कवि ईसरदास और केसोदास के पिता सदमल गाडण भी समकालीन ही थे। स्व० श्री किशोरसिंहजी बार्हस्पत्य ने हरिरस की भूमिका में महात्मा ईसरदास का जन्म-संवत् १५६५ सिद्ध किया है। इसके आधार पर सदमल गाडण का जन्म-संवत् अनुमानतः १५८५ और १५९० के मध्य ही ठहरता है। केसोदास सदमल के सब से बड़े पुत्र थे और यदि २५ वर्ष की आयु में सदमल के प्रथम पुत्र का जन्म माना जाय, तो कवि केसोदास का जन्म संवत् १६१० से १६१५ के बीच ही माना जा सकता है।

कवि केसोदास के जन्म-संवत् के निर्णयार्थ एक अन्य घटना भी विचारणीय है। केसोदास के समसामयिक कवि पृथ्वीराज राठौड़ द्वारा प्रसिद्ध ग्रंथ 'वेलि किसन रुकमणी री' की रचना-संवत् १६३७ में की गई। ग्रंथ की उच्चता एवं उसमें प्रकट अद्भुत कवित्व-शक्ति ने तत्कालीन कवि-समाज में उक्त रचना को पृथ्वीराज राठौड़ द्वारा रुचि होने में सन्देह उत्पन्न कर दिया। यह शंका की जाने लगी कि इस प्रकार की रचना किसी चारण कवि द्वारा ही की जा सकती है। इस पर महाकवि पृथ्वीराज राठौड़ ने इस शंका के निवारणार्थ कवियों का सम्मेलन किया जिसमें मारवाड़ के चार प्रसिद्ध चारणों को आमन्त्रित किया। ये चार कवि माधोदास दधवाड़िया, केसोदास गाडण, माला सांडू तथा दुरसा आढा थे। चूँकि वेलि की रचना-संवत् १६३७ में हुई और १६५७ में इस ग्रंथ के ग्रंथकार पृथ्वीराज राठौड़ का स्वर्गवास हो गया। अतः यह सम्मेलन निश्चय ही संवत् १६४५ के आस-पास ही हुआ होगा; क्योंकि जब ग्रंथ की रचना संवत् १६३७ में हुई तो इसके पश्चात् कुछ समय इसकी प्रतियाँ लिखने में लगा होगा और फिर इसकी प्रसिद्धि फैलने में ८-१० वर्ष का समय तो अवश्य ही लगा होगा।

१—'वेलि किसन रुकमणी री' राठौड़ महाराज पृथ्वीराज-कृत, सम्पादक—ठा० रामसिंह व पं० सूर्यकरणा पारीक, प्रकाशक हिन्दुस्तानी एकेडमी प्रयाग सन् १९३१ प्रथम संस्करण भूमिका पृ० ४६, ४७, ४८।

कार राठीड पृथ्वीराज का जन्म संवत् १६०६ में हुआ था और वेलि की रचना उन्होंने ३१ वर्ष की आयु में संवत् १६३७ में की थी। यदि चारण-कवियों के सम्मेलन को संवत् १६४५ के आस पास होना तथा उसमें कवि केसोदास की आयु ३०-३५ वर्ष के मध्य मानी जाय, तो उनका जन्म संवत् १६१० व १६१५ के मध्य ही ठहरता है। कवि केसोदास वेलि से बहुत प्रभावित हुए और इन्होंने इसकी प्रशंसा की।^१ इस पर महाकवि पृथ्वीराज राठीड ने गाडण की प्रशंसा उन्हें गोरखनाथ का अनुयायी मान कर की—

केसो गोरखनाथ कवि, चेलो कियो चकार।

सिध-रूपी रहता सबद, 'गाडण' गुण-भंडार ॥

कवि केसोदास गाडण की मृत्यु कब हुई इसके सम्बन्ध में भी कोई प्रामाणिक जानकारी उपलब्ध नहीं हुई है। इतना अवश्य कहा जा सकता है कि कवि लगभग १०० वर्ष तक जीवित अवश्य रहा है, क्योंकि वि० सं० १७०१ में आगरे में अमरसिंह राठीड अपनी कटार का जौहर दिखाकर वीरगति को प्राप्त हुआ तब कवि ने अमरसिंह राठीड तथा उसके लिए लड़कर वीरगति प्राप्त करने वाले बलू चांपावत आदि के लिए गीत कहे हैं^२। इससे यह तो स्पष्ट ही है कि संवत् १७०१ तक तो कवि के जीवित होने के ठोस प्रमाण-प्राप्त हैं।

साहित्यिक विवेचना

गाडण केसोदास-कृत 'गज-गुण-रूपक-बंध' में तत्कालीन जोधपुर महाराजा शूरसिंह के पराक्रमी युवराज गजसिंहजी के शौर्य-वर्णन द्वारा वीर-भाव-निरूपण का ही मुख्य लक्ष्य रहा है। महाराजा गजसिंहजी अद्वितीय वीर पुरुष थे। कवि को ऐसे पराक्रमी वीर के आश्रय में रहने का अनुपम सौभाग्य प्राप्त हुआ।

१—कवि केसोदास गाडण द्वारा 'वेलि किसन रुकमणी री' की प्रशंसा में कहा हुआ छप्पय यहाँ उद्धृत है—

वेव बीज जळ विमल सकति जिण रोपि सद्वर।

पत्र दोहा गुणपुहुप, वास लोभो लखमोवर ॥

पसरी दीप प्रदीप, अधिक गहरी आडंबर।

जिके सुद्ध मन जय तेउ फल पामे अम्बर ॥

विस्तार कीध जुग जुग विमळ धन्य किरण करणहार धन।

अन्नत वेलि पोथळ अचळ, ते' रोपो कल्याण तन ॥

२—अमरसिंह राठीड व बलू चांपावत की मृत्यु पर केसोदास गाडण द्वारा रचित गीत इस ग्रन्थ के परिशिष्ट में दिए गए हैं।

काव्य के प्रारम्भ में कवि-कर्म-परम्परानुसार मंगलाचरण-हेतु पंचदेव की स्तुति की गई है। तत्पश्चात् वीर-काव्य के नायक महाराजा गजसिंहजी की वंशावली का वर्णन है। मरुधर-नरेश शूरसिंहजी के कुल में उत्पन्न गजसिंहजी के बाल्य-काल का मनोहर वर्णन किया गया है। धीर-वीर गजसिंहजी में वीरता के लक्षण बाल्य-काल में ही प्रकट होने लगते हैं—

गात मेर गज भीम, महाजोधा ऊतली बल ।

भुजा-डंड परचंड, जेम गंगाजळ ऊजळ ॥

किरणा कळकळ कमळ सकळ भाळाहळ निम्मल ।

तेज-पूज राजान, धीर कांधोधर धम्मळ ॥

महाराजा शूरसिंहजी बादशाही साम्राज्य के विरोधी शत्रुओं के दमन के लिए जब दक्षिण में चले गए तो उनकी अनुपस्थिति में कुंअर गजसिंहजी राज्य-कार्य-भार स्वयं सम्हालते हैं और अपनी इस प्रारम्भिक अवस्था में ही बालेसा, सींधल, सीसोदिया आदि राजपूतों को परास्त कर अपने राज्य का विस्तार कर लेते हैं—

सोलंकी सारे मछर मारे ढंडोळै पहाड ।

वालीसा बोए फीजां ढीए मळवट्टे मेवाड ॥

सींधळ संधारे वील उतारे, मेले दळ कळि मूल ।

खाने खूमाणां रेहलि रांणा निज थांणा नाडूळ ॥

इसी बीच अवसर निकाल कर कवि नगर, बाजार, तालाब व उपवन-वर्णन द्वारा वस्तु-वर्णन का चमत्कार भी प्रस्तुत करता है।

काव्य का समस्त कथानक युद्धमय वातावरण से ही परिपूर्ण है। उदात्त नायक गजसिंहजी के शौर्य का वर्णन कर कवि ने उनका चरित्र पूर्णरूप से उभारा है। बादशाह जहाँगीर स्वयं युवराज गजसिंहजी के अद्भुत शौर्य-प्रदर्शन से प्रभावित थे। उन्होंने शाही दरबार में युवराज का सम्मान किया। बादशाह जालोर के शासक से नाराज थे अतः उन्होंने जालोर का प्रांत शूरसिंहजी को दे दिया। राजकुमार गजसिंहजी ने जालोर को अपने अधिकार में करने के लिए चढ़ाई की और वहाँ विहारी पठानों के साथ घमासान युद्ध कर अनेक पठानों को खेत रखा और विजय प्राप्त की—

भिळ कोट खग चोट बडा कमघां वरियांभां ।

पडै राडि पट्टाण, चंद रवि चाडे नांमां ॥

जाळंधर पलटियो, बडी रिण जंग भारथ करि ।

बोहारी बिड दियो, कियो साको किणियागिरि ॥

महाराजा शूरसिंहजी के निधन पर वि० सं० १६७६ में गजसिंहजी राज्य गद्दी पर आसीन हुए। महाराजा शूरसिंहजी अपनी अन्तिम अवस्था में दक्षिण के उपद्रवियों का दमन करने गए हुए थे अतः पिताजी के कार्य को पूरा करने के उद्देश्य से गजसिंहजी भी अपने राज्य का कार्यभार आसोप ठाकुर राजसिंह को सौंप दक्षिण में बुरहानपुर चले गए। वहाँ रहते हुए आप बादशाही-विद्रोहियों को दबाने में पूर्ण सफल हुए। अत्येक युद्ध में महाराजा गजसिंहजी की हरावळ (सेना के अग्रभाग) में स्थिति उनके अद्भुत पराक्रम का ही परिचायक है—

खान बरावा खड़कियो, ले मर्त्य भर भार ।
'गजरा' कटक्कां हुई मुहिर, कळि मथ्यरा जोघार ॥

× × ×

महम्मद चढे बहलो लखां, अँ वँ पिढांण अणी ।
चालिया चढे चतुरंग दळ, मुहि दे मंडोवर धणी ॥

× × ×

सुहड़ साखेत सगळी सम्रोधा ।
हुआ हरबल्ल 'रिणमल्ल' 'जोधा' ॥

× × ×

गज-गुरा-रूपक-बंध महाराजा गजसिंहजी के दक्षिण के युद्धों के वर्णन का ही काव्य है। युद्धों में महाराजा की रणसज्जा, उनका हरावल में स्थान, रण-कौशल और अरि-दल का संहार ही कवि का मुख्य लक्ष्य रहा है—

दळ भंजे दिखणाघरा, की गज बंध हटक्क ।
गा नर सिंघ संपेखियो भूतां तरण कटक्क ॥
दल भंजे डेरा फरळि गमि दखणीं दहवाट ।
गज केसरी घांसाडियो दौइणां वाळे दाट ॥

× × ×

पक्खणी सेन आया अवांहं, पक्खरे सुरी पहिरें सनाहं ॥
फावि चतुरंग फीजां अचाळं, छप्पन कोढी किरें मेघमाळं ॥

राजस्थानी साहित्य के वीर-काव्यों में सेना-वर्णन के लिए विशेष रूप से जोगियों की जमात से उपमा दी जाती है। यह मौलिक सूक्त कवि केसोदास गाडण की है। कवि ने इसी वीर-काव्य में—

असरंग विभूत सनाह उपावै, लोह छत्तीस सिंघार लियं ।
 सिंघ बारह पंथक तेरह साखा, 'केहरि' गोरखरूप कियं ॥
 कमधज्ज तजे मनमोह कायाची, वीर तिसीह विसतयरियं ।
 ततले निरबांण क राजतियाग, गोपीचंद भरतयरियं ॥

जोगियों की जमात के साथ रूपक बांध योद्धाओं का सिद्ध-पुरुषों के अनुकूल वर्णन कर सेना का सजीव चित्र ही प्रस्तुत नहीं किया है, अपितु सैनिकों की अन्तर्भावनाओं को भी मुखरित कर दिया है। साधु-समाज के सिद्ध-पुरुषों को जिस प्रकार संसार के प्रति कोई मोह नहीं रह जाता और वे सांसारिक वृत्तियों से निर्लिप्त होकर ईश-आराधना में लवलीन हो जाते हैं उसी प्रकार युद्ध की श्रेष्ठ कूच करने वाले सैनिक भी सांसारिक मोह माया से पूर्ण विमुख हो जाते हैं। स्थूल संसार के प्रति विमुख होने की यह भावना ही उन्हें विजयश्री प्राप्त करने में सफल करती है—

बड रावत ऊससिया तिण वेळा, एम सुणे भुज आंमळता ।
 ललकार हुवी भड आवे लासां, छोडे तेज तुरी छिलता ॥
 वरियांम लगाण पलांण वणावी, असे उपाई ऊकडता ।
 परचंड हुसंड किया तहि पक्खर, अंवर सांमा ऊछलता ॥

कवि ने काव्य की निरन्तरता में देश-काल की परिस्थितियों को भी प्रकट किया है। बादशाही साम्राज्य का जहाँ तहाँ विद्रोह हो ही जाता था। जालोर के पठानों का उपद्रव, दक्षिण के अफगान सरदारों का विरोध बादशाही साम्राज्य के प्रति असंतोष ही प्रकट करता है। शासक-वर्ग में वीरों के प्रति सम्मान की भावना भी विद्यमान थी। स्वयं बादशाह जहाँगीर ने गजसिंह की सफलता पर प्रसन्न हो पुरस्कार प्रदान किया था—

महण रंभ मस्थियाँ, तेग तुडि दक्खन मारी ।
 पातिसाह हुइ प्रसन, हुकम किय पंच हजारो ॥

× × ×

मंडोवर नर — समंद सीस मनसप वढारे ।
 दे नगारा तोग तुरी साकति सिगारे ॥
 फुरमास सुपारसि मोकळी दिढ रामा दळयंभ तूं ।
 जागीर दीघ जोगिणपुरै कणियागिर सांचोर सूं ॥

सेना के कूच के वर्णन के साथ-साथ कवि ने रण में उत्तम वाजि-सेना का भी जो ओजस्वी वर्णन किया है वह भी द्रष्टव्य है—

चढ़िवा काज चंचळ । बाळि छूट वेंगांगळ ।
हरड किहाडा हीर । मांणके बोर हंमीर ।
गुरड सीहा गुलाल । चीतला चोरंगी चाल ।
कविला काला केकाण । कमेत पंच किल्याण ।

×

×

×

चौरंग दंत गयंदा चडंत, पाखाण भीत आठूं पडंत ।
धूनी विसाल चौड़ी घडेय, आंणां गुण घाते आपड़ेय ॥

सेनावर्णन, युद्धवर्णन आदि से कवि को अवकाश ही नहीं मिलता । अना-
यास ही जोधपुर में महाराजा के स्वागत के समय कवि शृङ्गार रस को भी छू
लेता है—

गजबंधी गढ़ आवियौ, मेरी घाड बळ्यौ ।
जोवै मांही जाळियां, गोरी गोख चढ्यौ ।
गजबंधी बाधा विजै, मोती उच्छाळ्यौ ।
लूण उतारै राइ-घी, चडियै अट्टाळ्यौ ।

इसमें, मिलन की सहज स्वाभाविक प्रफुल्लता को प्रकट किया गया है । इसी
समय कवि ने नख-शिख वर्णन कर उचित-चातुर्य का परिचय भी दिया है—

के बाळा राइ-कुंआरि, केय भुग्धा कुळवंती ।
के मध्या मांणणी, जिसे सूरज कायंती ॥
पूगळभा पदमणी, कठिण असतन गज कुंभह ।
चंपकवरनी तरणि, जंघ विपरीतक रंभह ॥

पिक बांण जांण वैणी पनंग, हिरणाखी हंसा - गयणि ।
रंगमहल सिध राजांन सुर, रमति राज - पुत्री रमणि ॥

महाराजा गजसिंहजी जिस थोड़े से काल के लिए जोधपुर में आकर निवास
करते हैं तभी तक के लिए कवि युद्ध से अवकाश पाकर शृंगार रस में रम
जाता है । लेकिन शृंगार वर्णन के लिए कवि को अधिक समय नहीं मिलता ।
बादशाह जहाँगीर के पुत्र खुर्रम का विद्रोह पुनः महाराजा को रण के लिए
आमन्त्रित कर देता है । कवि पुनः वीर रस का सहारा लेकर अपने काव्य को
आगे बढ़ाता है ।

विद्रोही खुर्रम अपने दल-बल सहित सीकरी पहुँच कर अपनी सेना सुनियो-
जित करता है और वहाँ से दिल्ली की ओर कूच करता है । महाराजा गजसिंहजी
के नेतृत्व में एक विशाल सेना खुर्रम को मार्ग में ही रोक लेती है । यहीं दोनों
सेनाओं में घमासान युद्ध होता है । युद्धवर्णन में कवि सिद्ध-हस्त है । कवि ने

शब्द-चित्रों द्वारा युद्ध को पाठकों के समक्ष सजीव बना दिया है। वर्ण-संयोजन एवं शब्द-सीष्ठव से ऐसा प्रतीत होता है मानो पाठक स्वयं युद्ध देखते हुए शस्त्रों की भनकार और रक्तधारा के बहाव को सुन रहे हैं—

खलहले रक्त परनाळ खाळ, डोलियां पडै घड जूह डाळ ।

फरड के कंध संधाण घट्ट, फरडकै फीफरां आळ फट्ट ॥

×

×

×

है तूट तुंड रळि रुंड मुंड ।

भाजै भुसुंड गै हाड गुंड ॥

घोर-धमासान युद्ध में अनेक यशस्वी योद्धा खेत रह जाते हैं। अन्त में खुर्रम की फौज में खलबली मच जाती है और बागी शाहजादे की फौज भाग छूटती है। महाराजा गजसिंहजी को युद्ध में विजयश्री प्राप्त होती है।

समस्त काव्य में कवि गाडण ने जहाँ एक ओर सजीव युद्ध-चित्रण करते हुए काव्य के प्रमुख नायक महाराजा गजसिंहजी के अद्भुत रण-कौशल एवं अपूर्व पराक्रम का दिग्दर्शन कराया है वहाँ इतिहासप्रसिद्ध घटनाओं का वर्णन-नियोजन भी उचित रीति से किया है। घटनाओं से सम्बन्धित स्थलों एवं व्यक्तियों के नाम के साथ-साथ जहाँ तिथियों का वर्णन हुआ है उससे इतिहास-निर्माण में भी सहयोग प्राप्त होता है—

सोलह सै समंत हूअ्री जोगणपुर चाळै ।

सम्मे एकासिये मासा कातो वढाळै ॥

पूनम धावर वार सरद रित है पालट्टी ।

वीर खेत पूरव्व रित्त हेमंत प्रघट्टी ॥

सुरताण खुरम भागी भिडै, चाडि चकथी चककवै ।

गजसिंघ प्रवाड़ी खट्टियो, वहे भीम चीतोडवै ॥

रसास्वादन

‘गज-गुण-रूपक-बन्ध’ के वस्तु-विवेचन के आधार पर यह स्पष्ट है कि प्रस्तुत वीर-काव्य के कथानक का मूल आधार जोधपुर महाराज गजसिंहजी की दक्षिण फतह एवं शाहजादा खुर्रम के साथ युद्ध की घटनायें हैं। समस्त कथानक आदि से अन्त तक युद्ध के वातावरण से ही आवेष्टित है। अतः यह स्वीकार्य ही है कि इस वीर-काव्य का प्रमुख रस वीररस है। रीतिकालीन कवियों की परम्परा रही है कि वे अपने स्वरचित ग्रन्थों में प्रायः सभी रसों का समावेश करने के लिए प्रयत्नशील रहे हैं। राजस्थानी में रचित साहित्य भी इस

परम्परा से अछूता नहीं रह सकता। राजस्थान में अभी तक अधिकांश साहित्य राज्याश्रय में ही विकसित हो रहा था। कविगण वीर-रस की भूमिका पर ही साहित्य-सृजन कर रहे थे, फिर भी नवों रसों को अपने एक ही कथानक में एकत्रित करने से चूकते नहीं थे। कवि केसोदास गाडण ने भी अपने वीर काव्य 'गज-गुण-रूपक-बंध' के कथा-सूत्र में नवों रसों का नामोल्लेख कर इस परम्परा को निभाया है। यह तो मान्य है कि मात्र रस-नामोल्लेख से रस की निष्पत्ति सम्भव नहीं, काव्य-मर्मज्ञों के अनुसार तो यह ग्रंथ में दोष ही हो सकता है, अतः गज-गुण-रूपक-बंध में काव्य के प्रमुख वीर-रस के अतिरिक्त जिन अन्य रसों की परिगणना हो गई है उनकी विवेचना आगे की पंक्तियों में की जायेगी।

वीर रस—

गज-गुण-रूपक-बंध वीर-रस-प्रधान काव्य है। भरत मुनि ने वीर-रस की गणना शृंगार, रौद्र तथा बीभत्स आदि मूल रसों के साथ ही की है। वीर-रस का सम्बन्ध उत्तम प्रकृति वालों के साथ है। इसका स्थायी भाव उत्साह है—

‘अथ वीरो नाम उत्तमप्रकृतिरुत्साहात्मकः।’

—ना० शा० ६ : ६६ ग

स्थायीभाव उत्साह का उदय, वीर आश्रय के हृदय में प्रतिनायक, शत्रु आदि आलम्बन विभावों के दर्शन से उत्पन्न होता है और उद्दीप्त होकर अनुभवों द्वारा प्रकट होकर एवं अनेकानेक संचारियों द्वारा पुष्ट होकर रस निष्पन्न होता है। यद्यपि वीर चार प्रकार के माने गए हैं—युद्धवीर, दयावीर, दानवीर और धर्म-वीर, तथापि युद्धवीर की परिस्थितियाँ अन्य सभी से भिन्न हैं। यह होते हुए भी स्थायी भावउत्साह सभी का एक ही है।

गज-गुण-रूपक-बंध महाराजा गजसिंहजी के युद्धों के वर्णन का ग्रंथ है। इसका प्रमुख नायक उदात्तधीर, उत्तम-प्रकृति-पुरुष वीरवर गजसिंहजी हैं। ग्रंथ में गजसिंह तथा इनके प्रतिनायक केहरि (कृष्णसिंह) करन, कर्मसेन, खुर्रम, सीसोदिया भीम, पहाड़खां, कल्याणसिंह सीसोदिया, हरिदास राठौड़, हरिसिंह भाटी आदि के युद्धोत्साह का सांगोपांग वर्णन हुआ है।

उठियौ तिगुवार वडौ उतळी बळ सूरजसिंघ सह बळ ।

कोपनळ काळ भुजाळ कमंघज दोमजि भंजण सत्रदळ ॥

किरणावळि सूरजि जेम कळकळ धूण घजव्वड खेड़ घणी ।

चख लाल कियां मुखचोळ वरनह मेळै भूहां मूँछ अणी ॥

तथा

ऊठियी 'गजण' वरजागि आगि । जुडिवा जडागि गयणागि लागि ॥
 नीमभै भुज्ज नव सहस नाद । सादूळ सुणे किरि मेघ-साद ॥
 वीरत्ति विदेवा विळकुळेय । मुख राग मूछ भ्रूहां मिळेह ॥
 चख लाल कीध मुख कीध चोळ । कळकळ तेज विकस कपोळ ॥

आदि छन्दों से स्पष्ट है कि वीरनायकों के हृदय वीरोत्साह से किस प्रकार-
 परिपूरित हैं । योद्धा युद्धातुर प्रतीत हो रहे हैं । हो भी क्यों नहीं, स्थायीभाव
 के आलम्बन प्रतिनायक शत्रु के विभाव समक्ष है—

“केहरि” कहियो सांभली ए खत्रीपण राह ।
 बोल न जाये सूरिमां काया जाइ त जाह ॥

× × ×

ऊठियी राउ भाटी लागे, अंवरि दोमजि वासिग खांड डहे ।
 जुष सूती कुंभकरन्न जगायी, “गोइंददास” वार्जास ग्रहे ॥

× × ×

तवे 'भीम' वांका 'वचन' तिपारं ।
 खुमाणै आहु जुड सू खूंदकारं ॥
 हुवे 'भाण' रा भीच आगै दुभल्लं ।
 'मनी' गोकळाणंद आखाड मल्लं ॥

अर्थात् शत्रु युद्ध के लिए ललकार रहा हो, सेना गज-वाजि सुसज्जित है—

गरजंत गजदल जूह सव्वळ करै मंगल सारसी ।
 वंधंत चम्मर कसै हेमर पुट्टि पक्खर आरसी ॥
 पक्खरां रोल जला बोल किरि हिलोल सिध ए ।
 चतुरंग फवजा चीध घज्जां पुठि गज्जां वंध ए ॥

और धींसा बज रहा हो—

वे घुरति नीवत्ति, तूर दम्माण त्रिघाई ।
 तवल् ताल कंसाळ, भरे वरघू सहनाई ॥

+ + +

गडि गडि निसाण मेघ मंडाण अंवर भाण रज छाया ।

+ + +

गड गडे अंवर गोडि, रिणतूर कज्जे रोडि ।
 अंवर रोडि खडे रिण तूरह, कायर कंपति रस्से सूरह ॥

और साथ ही युद्धभूमि में—

गरजंति धनख गुण बाँण वणण घण खांडा ।

खडि खडि खाट खडै खडाखड् भाट भडाभड खग... ॥

शस्त्रों की खनखनाहट और भनभनाहट हृदय को रोमांचित कर रही हो तो वीरों के हृदय में उत्साह क्यों नहीं जागृत होगा । वीर-हृदयों में उमड़ा हुआ उत्साह शीघ्र ही वीरोचितकृत्यरूपी अनुभवों से प्रकट होता है—

गज हैमर पक्खरै, सिलह सुहडां पहरावै ।

आप कवच आपवै, सत्रे संग्राम रचावै ॥

डाव लोह खटत्रीस, आभ उपाड़ै ऊंडल ।

ताणि निलै तिस्सली, भाग तीजै ग्रहि साबल ॥

आरूढ हुए 'जै' नाम असि, रवि उणमाणि परगडै ।

गजसिंघ दमांमा गजतां, चडि आयौ तब चापडै ॥

इसी प्रकार—

खीजिया जोष बाहै खडग ।

वहै विपरीत वेला करारो, गजबंघी ऊठियौ तेग भूडंड उभारै ।

कटे कड़ियाल वहै करमाल, जुटत बहादर बाहु अ जुद्ध..... ।

आदि-अनुभाव वीरों के हृदय में उमड़े उत्साह को प्रकट करने के लिए पर्याप्त हैं । इस प्रकार अनेकानेक अनुभावों के द्वारा युद्ध के लिए परम उत्साह प्रकट करते हुए योद्धा रणोन्मत्त हो युद्ध में जुट जाते हैं—

जोधपुरो राजा जम्म जाल । केवियां कूंत बाहै कराल ॥

है घाट पडै पाघरी हीच । भारत्य भिडै गजसिंघ भीच ॥

और युद्ध भयंकर रूप धारण कर लेता है—

रिण ताल खाल रगत । आराण हू आब्रत ॥

जम जाल जूटै काल । करि-माल काल कराल ॥

×

×

×

खाल रत्त खलहल, जाण वरसाल नदी जल ।

गज तुरंग गुडिया, गुडै भड हूवा गूँछल ॥

रंडमुंड रोलिया, भीम पाडियो भुजाली ।

भारथ कुर-खेत रे, हुआ जुध लंका वाली ॥

×

×

×

सीसोदा कमघजां, जुद्ध मातो जोधारां ।

छाई घोर अंधार, घमस घारा अंगारां ॥

पक्खरिया है पडे, ढहे ढंचाल धैधगर ।
जीरा साल ऊजडे, पडे सुहड़ा पंचाहर ॥

× × ×

गज गाह 'भीम' 'गाजी' व्याहक लाडी लाडलै ॥

और दुर्दान्त युद्ध की विकरालता को देख कवि को विवश होकर निम्न उदाहरणों का सहारा लेना पड़ता है—

जिम अरजण जुध करण, जेम भीम दूसासण ।
जिम हणवंत जुध अखै, रामचदह जिमि रावण ॥

+ + +

लखमण इंद्र जितह कियौ, साखि ससि सूरज ।
'सूर' उत कियौ जिम 'अमर' सुत जुड गजपती भीम जुध ।

इस प्रकार आलम्बनों से उद्दीप्त और अनुभवों से प्रकट वीरोत्साह 'धन पराक्रम सूरतन' सुनने की चाह और 'वरे बड़ा वर अच्छरा' आदि संचारियों द्वारा पूर्ण पुष्ट हो जाता है। इस प्रकार प्रस्तुत काव्य में वीर-रस निष्पत्ति को प्राप्त होकर पूर्णोत्कर्ष को पहुँचा है।

महाराजा गजसिंहजी के सभी युद्धों का वर्णन कवि की वीररस वर्णन की निपुणता तो प्रकट करता ही है परन्तु काव्य ग्रंथ के अन्तिम भाग में महाराजा गजसिंह और मेवाड़ के राणा अमरसिंह के पुत्र भीम सीसोदिया के बीच युद्ध का वर्णन सर्वोच्च है—

सीसोदा कमधजां जुड माती जोधारां
.....लाडी लाडलै ॥

युद्धोन्मत्त गजसिंह जी को अर्जुन और भीम की उपमायें उस युद्ध-वर्णन को और सत्य बना देती हैं—

जिम अरजण जुध करण जेम भीम दूसासण
.....गजपती भीमजुध ॥

रौद्र रस—

सांगोपांग वीर-रस-वर्णन के बीच रौद्र को पहिचानना कठिन सा हो जाता है। कारण भी स्पष्ट ही है कि वीर-रस के स्थायीभाव क्रोध के लिए आलम्बन शत्रु अथवा प्रतिनायक एवं उद्दीपन उनकी चेष्टायें हैं। दोनों के अनुभावों में भी सादृश्य है। कभी कभी रौद्रता में वीरत्व और वीरत्व में रौद्रता का आभास मिलता है। इतना होते हुए भी स्थायीभावों में अन्तर होता है।

इसी कारण से इसकी गणना प्रधान रसों में की गई है। राजस्थानी वीर-रस-काव्यों में वीर-रस के साथ रौद्र-रस के प्रचुर उदाहरण मिलते हैं। प्रस्तुत काव्य में युद्ध की विशेष परिस्थितियों में युद्ध-नायकों में उत्पन्न होने वाली खीझ एवं उनमें उत्पन्न कुपित भाव को कवि ने यथास्थान पर प्रकट किया है।

शाही दरबार में जब स्वयं बादशाह गोविन्ददास को मारने के लिए सरदार केहरि को उकसाता है तो केहरि उत्तेजित होकर गोविन्ददास को ललकारता है—

“केहरि” कहियौ पैज करि, ग्रहिए चंद-पहास ।

‘गोइंद’ गिणिया मारियौ, पख एकणि काइ मास ।

तो गजसिंह का कृपित होना स्वाभाविक ही है—

“गज बंधी” इस आखिरी करि घूरी करमाल ।

“गोइंद” माथे आवसी त्यां सिर आयी काल ॥

जहांगीर बादशाह को अपने पुत्र खुर्रम के बागी होने की सूचना मिलने पर उसे क्रोध उत्पन्न हुआ है उसका चित्रण कवि ने अनूठा किया है—

जले पट्ट जहांगीर, दुख लगी दावानल ।

घड़ हड़ि पौरसि धिखै, ध्रित आहज का मंगल ॥

और

हठ वादा हजरति, कोपि हठियी कालुल ।

प्रलूकाल उतपात, जाण बंधी बड मंडल ॥

आप मुख कियौ हुकम, चोट हुइ नगारां ।

चडै भीच चंचलै, कूच कियौ दलकारां ॥

जिहगीर कहै जमरूप हुई, खुरम कहों जाइ बप्पड़ी ।

पैसे पयाल अंबर चडै, जिहां जाइ तहां पक्कड़ी ॥

बीभत्स रस—

युद्ध-वर्णन में जहाँ वीर-कर्म प्रकट करने के भाव से कवि नाना प्रकार के आलम्बनों, उद्दीपनों के द्वारा वीर-नायकों में उत्पन्न उत्साह को विभिन्न अनुभावों से प्रकट कराता हुआ विविध संचारियों से पुष्ट कराता है तब प्रसंगवश बीभत्स के दृश्यों का उपस्थित होना स्वाभाविक हो जाता है। गज-गुण-रूपक-बंध का अधिकांश भाग युद्ध-वर्णन का ही है। रणक्षेत्र में जहां वीर-नायक वीर-रस के स्थायीभाव उत्साह से परिपूरित हो ‘भ्रूहां मूछ अणी कर चख लाल’ और ‘मुख चोल’ कर स्वयं काल का विकराल-रूप धारण कर परस्पर बल तोलते हैं—

खग हुए खंडा खंड करि डंडी हड, रिण भुइ रींहड रत रिड ।
 वीहारी वडि वडि तूट घडि घडि अणियां चडि चहि अठ्ठ अड ।
 भलरि करि भणिहण दिसि गेणंगणि तीमछ छणमण तेग तण ।
 असमान अथर वण रचै रांमाइण रांम रांवण उभै रिण ॥

वहाँ—

रिण ताल खाल रगत, आरांण हूं आवत ।
 खल कंत सोणी खाल पावस्स करि परनाल ॥
 वैताल वीर मिलिया विहह ।
 सीकौतरि सांकिण महा सह ॥

और

हेकठा हुआ बलि तण हेत, पलहारि वंतर भूत प्रेत ।
 खेचरा भूचरा खेतपाल, कालिका पुत्र भैरव कंकाल ।

का दृश्य उपस्थित होता ही है ।

जालोर के पठारों से युवराज गजसिंह के हुए युद्ध का बीभत्स दृश्य यहां देखिये:—

हसि जोगणि हड हड, गोलीरत गड गड, मंडे खफर पत्र मिल ।
 तिल तिल हुइ टूकड, वेल तुर भड, मच्छक तडफड तुच्छ जल ।
 जंबक जख प्रघल मिलिया सम्मल होळ हूकलरत हिल ।
 डाइणि भख डल डल चूपे चल वल पल भैरववल वल भूत मिल ।

बागी खुर्रम की सेना के साथ महाराजा गजसिंह ने घोर घमासान युद्ध किया । अनेक शूरवीर घराशायी हुए । रक्त की नदियां प्रवाहित हो गई । ऐसे स्थल पर कवि द्वारा वर्णित बीभत्स दृश्य दृष्टव्य है:—

नव कोडि कतियोंण छप्पन कोडी चौमंडा ।
 चौसठ्ठी जोगणी, बीस चहै भुज डंडा ॥
 रगत पिद्ध बलि लिद्ध, जपे जैकार सकती ।
 कियो संकर सिंगार संडमाला गल घत्ती ॥
 कौतगि दीठ भासंकरह वरे वडा वर अछरा ।
 राठोड दीघ रण चाचरहि घूहड घवड पलच्चरां ॥

भयानक रस—

काव्य का कथानक जब युद्ध की घटनाओं से पूर्ण आवेष्टित है और जहां घनघोर युद्ध के दृश्य उपस्थित हैं वहां भयानक रस की सृष्टि होना संभव ही है । वीर नायक युद्धातुर हो रण के लिए एक दूसरे को ललकारते हैं, धीसों और तुरही से गगन गूंज उठता है तो प्रस्तुत काव्य का कवि युद्ध में उत्पन्न भयानक स्थितियों के साथ हमारे सम्मुख आ ही जाता है ।

गुहे जूह मद-गोध सेन अनमंघ सुभट्टह ।
घड वेहड करड कटै को पट्ट अक्रुट्टह ॥
रगत खाल परिनाल लगे पग्गां पायाहल ।
नवे कुली नागिद्र हुआ स्त्रीणी बंवाहल ॥

ऊजल हंत हूओ अरण सेसनाग सेहस - फुणी ।
तिण वार डरै तिण कारणै, पेख पदमण नागणी ॥

फौज के कूच के समय नगाड़ों की घोर गड़गड़ाहट—

वे घुरति तीवति, तूर दम्मांम त्रिघाई ।
तबल ताल कंसाल भरे बरधू सहनाई ॥

समुद्र की तरह फौज उमड़ना, आकाश में धूल के बवंडर छा जाना है—

खुर रज ऊछली, रजी लगो रिब मंडल ।
चडो सेस सिरहत्य पुहवि गाहट पग्गांतल ॥
कमठ भार कसमस्स दाढ बाराह खडक्के ।
मंडल मेर मेखला घमस धूली खि ढक्के ॥

श्रीर सेना का पर्वताकार एवं विशाल मेघकाय होना—

फावि चतुरंग फौजां अचाल ।
छपन कोडी किरं मेघमाल ॥

निश्चय ही भयानक स्थिति प्रकट करते हैं ।

बागी खुर्रम के विरुद्ध महाराजा गजसिंह के नेतृत्व में शाही सेना का कूच देखिये—

गोधूल गयण लगंग, साहण उलट्टि सेन समूह ।
है-पाइ गाहि बंका, सर पधरी कीष पहाडह ॥
सरपां नष कुलाणिय, महि मंडल मेर मेखला ।
परबत अस्ट-कुलीस, घरणी-धर धूजिया त्रिण ऐ ॥

शृंगार रस—

युद्धभूमि में अपूर्व रण-कौशल दिखा विजयश्री वरण कर और शाही दरबार में सम्मान प्राप्त कर वीरनायक का गर्व से अपने रनिवास में प्रवेश करना और वहाँ अपनी लावण्यमयी रानियों से स्वागत में प्रेम-पुष्प एवं प्रेमालिंगन प्राप्त करना अप्रासांगिक नहीं हुआ है । वीर काव्य गज-गुण-रूपक-बंध के प्रणेता कवि गाडण ने अपने काव्य में वीर रस का अजस स्रोत बहाते हुए यहीं शृंगार रस-वर्णन का अवसर प्राप्त कर ही लिया । यद्यपि महाराजा गजसिंह के शौर्य-

वर्णन के साथ शृंगार-वर्णन का कवि का उद्देश्य नहीं रहा है फिर भी स्थिति उपस्थित होने पर कवि ने काव्य-खण्ड में सरसता लाने के लिए स्थिति का लाभ लेते हुए शृंगार-रस का वर्णन कर ही दिया है। प्रारम्भ में कवि ने अन्तःपुर की सुकुमारियों के रूप-सौन्दर्य का वर्णन किया है—

वप सोलह सिरागार वनित्ता । लखण बतीस संजुगत ललित्ता ।
सोभा सारिख किरण सवित्ता । दीर्घ मंदर राज - दुहित्ता ।
कनक-लता पत्र वसन्नक कामणि । भूँहा भमर विराजै भांमिणि ।
चपल-नयण प्रफुलत चंदाणण । किरि पेखे हिं-अगो कमोदणि ।

काव्य के नायक महाराज गजसिंह के रनिवास का वर्णन करते हुए कवि वीर-नायक की वीर-रमणी के नख-शिख-वर्णन का अवसर निकाल ही लेता है। यह नख-शिख वर्णन समीचीन एवं प्रसंगानुकूल ही प्रतीत होता है। अनावश्यक ठेल-पेल नहीं हुई है—

चपल नेत्र सारंग, रेख अहाँ मकरंद ।
दीपक नासा दिपंत, सरदरेणी मुख-इंदह ।
डंसण बीज दाडंम, वेणि-वासंग-भुयंगम ।
भटियाणी वर कमध-समद गगानदि संगम ॥

“कलियाण” सधू मोटै कुलहि सुवत महातम सुरपुरी ।
इधकार सील अधिक वडे, जमलि कंत जैसल गिरि ॥

कवि ने रूप-सौन्दर्य एवं नख-शिख वर्णन के लिए जहाँ विविध उत्प्रेक्षाओं एवं उपमाओं का सहारा लिया वहाँ वीरोचित नायक के कुल की मर्यादा का भी पूरा पूरा ध्यान रखा है—

लोयण चंचल चपल, अचल धू जिम मन धारण ।
कडि मयंद मुख इंद दीरघ वेणी अहि दारण ॥
मद गयंद गतिमंद, काया जाणै अभ कदलि ।
वपि चंपक दल-वरण सीस गुंजार करै अलि ॥

सत्र साल पठोजै वीरभद्र प्रघट जाँम है मह प्रथी ।
जाईथीज 'जसवंत' जाँम धु जिसी गंगा भागोरथी ॥

महाराजा गजसिंहजी के अन्तःपुर में आगमन के समय कवि ने वीर-नायक की वीर-रमणियों के रूप-वर्णन के साथ मिलन-सुख का भी मनहारी वर्णन किया है। संयोग की कल्पना में अपार सुख को अनुभूति स्वाभाविक ही है—

आज हुआ किल्लाण सह, आज हसंदा मुख ।
आप पघारे आंगणै साहिब दीना सुख ॥

राजा भूलरि राणियां सोहे ईहीं भंति ।

किरि वेघाणै किरितियां चंदौ पूनम रति ॥

प्रियतम के पाते ही प्रिया के सभी मनोरथ पूर्ण हो गए और मन-कमल खिल उठा—

सबै मनोरथ पूरिया, सबै पूरी आस ।

जाण कमोदणि सिस उदै, तन मन हुआ विकास ॥

इस प्रकार कवि ने अपने वीर काव्य में शृंगार की परम्परा को निभाते हुए तत्कालीन सामंती-परम्परा एवं राजमहलों के जीवन की झलक भी प्रस्तुत की है—

एक खड़ी मुख-रूप निहाल । एक खड़ी सिर चम्मर ढाल ।

कामलता पिण कणक वरनी । पास खड़ी सुख रास पतनी ।

+

+

+

दे सोतां धूहड़ भूलवकी । चंपक वरन कली किरि पक्की ।

साम सनमुख आवी सक्की । सह बैठी सिणगार चवक्की ॥

अलंकार

काव्य में चित्ताकर्षक रमणीयता के उत्पादक अलंकार ही हैं, यह निर्विवाद मान्य है । कविता-कामिनी सभी अंगों-उपांगों से परिपूर्ण होने पर भी अलंकारों के अभाव में सौभाग्यशालिनी हो ही नहीं सकती । गज-गुण-रूपक-बंध में यद्यपि कवि का कर्म अलंकार-निरूपण नहीं रहा है फिर भी वर्णनानुकूल काव्य में अलंकारों का समावेश हो ही गया है । प्रस्तुत रूपकबंध आद्योपान्त पढ़ने से यह तो स्पष्ट हो ही जाता है कि अलंकारों के प्रति ग्रंथकार की न तो उत्सुकता ही रही है और न उदासीनता ही । ग्रंथ के मूल चरित्र महाराजा गजसिंह की वीरता का वर्णन ही कवि का लक्ष्य रहा है । अतः वर्ण्य विषय के साथ अलंकारों का प्रयोग स्वाभाविक रूप से हो गया है । समूचे काव्य में वस्तुवर्णन की धारा अबाध गति से प्रवाहित हुई है । उसी में नाना प्रकार के अलंकारों की उपस्थिति से कविता सौन्दर्याभिमुख हो गई है ।

राजस्थानी काव्य-परम्परा का शब्दालंकार वयण-सगाई तो सर्वत्र छाया हुआ है । प्रायः प्रत्येक छंद में, यहाँ तक कि छन्द के हर चरण में वयण-सगाई का पालन हुआ है । ऐसा प्रतीत होता है मानो वयण-सगाई का पालन कवि-कर्म का प्रमुख अंग बन गया है । काव्य में यमक और श्लेष के भी पर्याप्त

उदाहरण प्रस्तुत हुए हैं। इनके अतिरिक्त शब्दालंकार में पुनरुक्तवदाभास तथा वीप्सा के उदाहरण प्राप्य हैं।

काव्य-ग्रंथ में अर्थालंकारों का प्रयोग भी प्रचुर मात्रा में हुआ है। उपमाओं, उत्प्रेक्षाओं तथा रूपक की बहुलता रही है। यथास्थान एवं अवसरानुकूल कवि ने अपने उक्ति चातुर्य का भी परिचय दिया है। काव्य में उक्तियों का प्रयोग प्रसंगानुकूल एवं स्वाभाविक हुआ है। काव्य में अलंकार कहीं भी बोझ-स्वरूप नहीं हुए हैं और न ही उनके प्रयोग से वर्णन में कहीं अवरोध ही उपस्थित हुआ है। अनेकानेक स्थलों पर स्वाभाविक रूप से प्रयुक्त अलंकारों के मध्य काव्य-प्रवाह अनवरतरूप से प्रवाहित होता रहा है। रूपक-बन्ध में प्रयुक्त अलंकारों के कतिपय उदाहरण यहां समीचीन ही होंगे—

अनुप्रास—

‘गज-गुण-रूपक-बन्ध’ समस्त काव्य ही अनुप्रास की छटा से आच्छादित है। दोहे और छन्दों आदि के प्रत्येक चरण में अनुप्रास अलंकार किसी न किसी रूप में मिल ही जाता है—

कटै कडियाल वहै करमाल । कुटक्के कोपर कंध कपाल ॥

+

+

+

विप्पलाई पलाई आवलाई वाढ़ । ग्रीधलाई खलाई साबलाई गाढ़ ॥

साबलाई हुलाई मैंगलाई सल्ल । डैचलाई डलाई तूलाईह डल्ल ॥

वयण सगाई—

राजस्थानी काव्य-साहित्य का यह अनिवार्य शब्दालंकार है। कवि ने मुक्त भाव से इसका प्रयोग अपने काव्य में किया है—

हेम में जडित हीर । जूझल मीजा जंजीर ।

दूसरे गंगा द्वाढ़ । जडी कडी जमदाढ़ ॥

+

+

+

कुंजरां दूहरी ढाल कुंभा - थले ।

वादला जाण फावत वीजा-चाल ॥

धम्मल्ली पीयली लाल नीली धज ।

गाजता जाण गोरंम दीसै गज ॥

वीप्सा—

घडहडि घक धोम वलिक खग घडि घडि ।
 रावत वडि वडि रोस चडे ।
 गडि गडि नीसाण गयण किरि गडि-ग्रड ।
 खांडा खडि खडि खाट खडे ॥

यमक—

अणुहार अखाडी इंद्र रौ जोषहपुरी इंद्रपुरी ।
 'गजसिध' इंद्र राजंद्र गति सरब इंद्र सांमगरी ॥

उपमा—

कवि ने काव्य-ग्रंथ में वस्तु-वर्णन के लिए अनेक उपमाओं का सुसंयोजन किया है—

जिम धायो जोगेस, नसहु दिख जयाग विधूसण ।
 जिम धायो ग्रह बाण पत्य गी ग्रह छाडावण ॥
 जिम धायो हणमंत द्रोण - पब्बै उप्पाडण ।
 जिम धायो भीमेण दैत लंक मोर विभाडण ॥

पित वंरक धायो फरस - घर संधारण सहसा - रजण ।
 धायो कमहघ दिल्ली दलां, जिम अनंत गज - उग्रहण ॥

+

+

+

चख चंचल मन अचल कमल चख भुहां अलीअल ।
 तन ऊजल पति रत्ता रूप भरता रुचि मंभल ॥
 केहरी जिम कडि क्रिस्स लगति चालंती गजिद्रह ।
 सोभति बैणी सरप हरै धीरज्ज खगिद्रह ॥
 कुल मोटे बह्वर्वा कुल धुबां मान महातम निरवहै ।
 कण सूप जिहीं श्रीगण तजै, गुण मोताहल जिम ग्रहे ॥

रूपक—

करिमरि कंकण सुकरि नेत्र वाघो सिखरालह ।
 वोर रस्स वरसोह कंठ लज्जी वरमालह ॥
 विकट रूप वीदणी, खुरम घड़ कीध आडंबर ।
 लगन प्रब्ब रणताल घमल मंगल सिधु-सूर ॥
 अधपती बहुतरि ऊमरा सतरि - खान सुरताण रा ।
 दलधंभ 'गजण' दुल्लह हुआ जान सैन जोगणपुर ॥

+

+

+

चपल नेत्र सारंग, रेख भूहाँ - मकरंद ।
 दीपक - नासा दिपंत, सरद वेणी मुख इंद्रह ॥
 डंसण - बीज दाडंम वेणि - वासंग - भुयंगम ।
 भटियाणी वर कमध समद गंगा-नदि संगम ॥

उत्प्रेक्षा—

प्रचंडे गोलै नाल प्रचंड । वहंते है कंपियी ब्रह्मंड ।
 जुडंत खुरंम अने जिहगीर । तिडां किरि अंवर उडुं तीर ॥

+

त्रिज्जडां त्रिजड वार्ज नित्रीठ । डंडे हड गेहरि जांण दीठ ॥
 उडुं तिभच्छ खागां अघात । आकास जांण उल्लका-पात ॥

छंद—

मध्यकालीन साहित्य में छंद-वैविध्य का प्रचुर प्रयोग रहा । हिन्दी-साहित्य के रीतिकाल में लाक्षणिक ग्रंथों की रचना एवं पांडित्य-प्रदर्शन की प्रतिस्पर्धा के कारण तत्कालीन कवियों ने संस्कृत और हिन्दी के अनेकानेक छंदों में काव्य-ग्रन्थों की रचना की । इसका प्रभाव राजस्थानी-साहित्य पर भी पड़ा । यद्यपि राजस्थानी-साहित्य में संस्कृत एवं प्राकृत के छंदों का प्रयोग पूर्वकाल से ही चला आ रहा था परन्तु मध्यकाल में राजस्थानी एवं हिन्दी के अनेकानेक छंदों का प्रचुरता से प्रयोग किया जाने लगा । “गज-गुण-रूपक-बंध” में भी कवि ने पचास से अधिक छंदों का प्रयोग किया है । संस्कृत, प्राकृत, राजस्थानी एवं हिन्दी के अनेक छंदों के प्रयोग से यह तो स्पष्ट ही है कि कवि छंदशास्त्र के पूर्ण ज्ञाता थे । विभिन्न छंदों की शैली में वीरकाव्य की रचना करने के पीछे कवि द्वारा आचार्यत्व प्रकट करने की भावना नहीं है । कवि का मूल लक्ष्य अपने आश्रयदाता का वीरवैभव एवं पराक्रमपूर्ण उज्ज्वल चरित्र ही चित्रित करने का रहा है ।

अपने ग्रन्थ में कवि ने संस्कृत के त्रोटक, काड्व (काव्य) विद्युतमाला, भुजंगी, मोतीदाम, संयुक्ता छंदों का प्रयोग किया है । विदून्माला, विज्जूमाला, विदूमाला, विद्युतमाला के ही रूपभेद हैं । हिन्दी के वेअखरी, वंताल, पढ़ड़ी, अमरावली, अडिल, अर्द्धनाराच, ऊधोर, चांद्रायण, चौपाई, त्रिभंगी, नाराच, मोदिक, रूपक गति, लीलावती, विराज, हणूफाल छंदों का प्रयोग अधिकार-पूर्ण ढंग से हुआ है । डिगल के छंदों की रचना में कवि सिद्धहस्त थे । अपने रूपक-बंध में गाथा, गाहा, भूपताली, डंडीयल, तवत, दुपड़, दुमला, पोमावती,

मथाण, मेहांणी, रंगिका, रैडकी, रसाउला, सिहावलोकण, सारसी, हाकुटिया छंदों का सफल प्रयोग किया है। विषयानुकूल छंदचयन कवि की विशेषता रही है।

पुस्तक के आकार में अवांछनीय वृद्धि के भय के कारण ग्रंथ में प्रयुक्त छंदों का मात्र नामोल्लेख ही हो पाया है। छंदों की परिभाषा एवं लक्षण के अभाव में जिज्ञासु पाठकों को छंद-परिचय में कठिनाई अवश्य होगी परन्तु सुविधा की दृष्टि से छंदों की जानकारी के लिए आवश्यकतानुसार छंदग्रंथों का सहारा लिया जा सकता है। पाठकगण मेरी विवशता के लिए क्षमा करेंगे।

भाषा - शैली

'गज-गुण-रूपक-बंध' युद्धों में प्रदर्शित नायक गजसिंह के अद्भुत पराक्रम एवं रण-कौशल के वर्णन का वीरकाव्य है। सम्पूर्ण काव्य में वस्तु-वर्णन की ही प्रधानता रही है इसलिए ग्रंथ में वर्णनात्मक-शैली का ही प्रयोग हुआ है। ग्रंथ में विविध परिस्थितियों के बीच भिन्न-भिन्न प्रकार के प्रसंग उपस्थित हुए हैं। वहाँ कवि ने बड़ी चतुराई के साथ अपना भाषाधिकार प्रगट किया है। वीररस-प्रधान काव्य में जिस उत्तम-शैली की अपेक्षा की जाती है उसके दर्शन निश्चय ही हमें प्रस्तुत ग्रंथ में होते हैं। शत्रु को रण की चुनौती, संघर्ष की विकट स्थिति, वीरों की रणोन्मत्त दशा एवं भयंकर रण-स्थल का जिस प्रसंगोचित भाषा में वर्णन हुआ है उससे कवि की रस-निष्पादन की अपूर्व क्षमता स्वीकार करनी ही पड़ती है। संघर्ष-रत वीरों का वर्णन तदनुरूप शब्दावलि में देखिये—

भट्टकै भोर फाटै भराड । भीकी पडंत आसुरां भराड ।
मरगडां जूह मुरडंत माड । चुनौ हुइत चौसट्टि हाड ॥
त्रिज्जंडा त्रिजड बाजै तित्रीठ । डांडे-हड गेहरि जणि दीठ ।
उड्डु तिमच्छ खागां अघात । आकाश जाँण उल्लकापात ॥

प्रसंगानुकूल कोमल-कान्त पदावलि भी द्रष्टव्य है :—

कमल सयण विलकुलै, मज्झि उर कमल विकासै ।
कमलि कमलि सुभ वइण, कमलि दुरिजणं निकासै ॥
कमल पेख उणहार, कमलवदनी - मुख मोहै ।
कमल - नाभ धिय क्रिया, छाभा परि कमल सोहै ॥

(५८-१)

पिक - बाँण जाँण वंणी पनंग, हिरणाखी हंसा - गमणि ।
रंग - महल सिध राजान सुर, रमति राज - पुत्री रमणि ॥

(१११-४)

प्रायः चारण कवियों के ग्रंथों में द्वित्व वर्णों की अधिकता का दोषारोपण किया जाता है परन्तु वास्तव में यह बात नहीं है। ध्वनिविशेष के ज्ञानाभाव एवं ग्रंथों का गहन अध्ययन न कर पाने के कारण यह मात्र अनुमान सा ही प्रतीत होता है। रूपक-बंध इस बात के लिए प्रमाण है। विविध प्रसंगों में शब्द-वैविध्य अवश्य है परन्तु द्वित्व-दोष नहीं आया है। कतिपय उदाहरण प्रस्तुत हैं :—

वर तुरंग उत्तंग, कणै साकति विराजित ।

मदोमत्त मातंग जाँण, जल वादल गरजित ॥

पहरावै सपिया, पटासन पैरावत्ता ।

मीड बंधाँ ठाकुराँ बडा सोहडी सामंताँ ॥

दे गांम तुरी द्रव लाख दे, हसत बंध कीया सुकवि ।

कुरियंद 'गजैसी' कापियो, गयी समंद पैली पहवि ॥

(५ - ६)

स्रोण भील कमकमै, कियै करिमराँ चडाए ।

रचे सेज रिण-भोम, कुसम अरि कमल बिछाए ॥

नखस तिवख सरकूँत, सहै अत-मंघ अचगल ।

पाँण पयोहर कठण, भथै मैगल कुंभा-थल ॥

(१४१-५)

सपत दीप नवखेड, सपत दधि जल थल महिअल ।

एक भाग हज रत्त, मारि लीयी महि मंडल ॥

पछिम देस पारंभ, लियो लोहां उप्पाड ।

पूरब दिसि पतिसाह, लियो लखदल विव्भाड ॥

उतराघ खंड असपति लियो, दखण राज जोगणपुरै ।

अकबर जलाल खाटी इला, जिती साह जिहगीर रै ॥

(६२-२)

सम्पूर्ण ग्रंथ में कवि ने शुद्ध साहित्यिक राजस्थानी भाषा का प्रयोग किया है। ग्रंथ वीररस-प्रधान होने के कारण भाषा ओजपूर्ण तो है ही, फिर भी प्रसादगुण ने भाषा को पूर्ण प्रवाहमयी बना दिया है। बोल-चाल के सामान्य शब्दों के अधिकाधिक प्रयोग के कारण भाव-दुरुहता बिल्कुल नहीं रह गई है। प्रसाद-गुण-युक्त भाषा-प्रवाह का उदाहरण देखिए—

राजा राणा मेलिया, कीध उकीलाँ वत्त ।

वाद वडाँ सूँ छंडियै, एहस आहु मत्त ॥१॥

राणै राजा नूँ कह्यो, मेल्ले परधानाँह ।

साह पगै धुन मोकलूँ, जोथे अप्पो बाँह ॥२॥

(२१-१-२)

देशी भाषाओं पर राजनैतिक प्रभाव के कारण अरबी-फारसी का प्रभाव पड़ चुका था। कवि की भाषा इस प्रभाव से वंचित न रह सकी। रूपक-बंध की शुद्ध राजस्थानी में कहीं-कहीं अरबी-फारसी के शब्द प्रयुक्त हो गये हैं, परन्तु उन सभी का प्रयोग जन-साधारण की बोल-चाल की भाषा में सामान्य प्रयोग होने के प्रभाव से अनायास ही हुआ है जान-बूझ कर विदेशी शब्दों को भरने की वृत्ति कवि की नहीं रही है। जरद, असमाण, स्याह, सबज, जोरदार, लसकर, हसम, हजरत, कूच, दरकूच, उकील, खिजमती, मुकाम, रहमान, खुरसाण, खबरदार, दरबार, हुकम, सरहद, फौज, मीर, बहादर, फजर, सुल्तान आदि जिन अरबी-फारसी शब्दों का प्रयोग हुआ है, वे जन-भाषा में व्यवहृत हो रहे थे।

काव्य-रचना में पाद-पूति की प्रथा प्रचलित है। संस्कृत-साहित्य में भी इसके उदाहरण विद्यमान हैं। अमरकोश-कार ने, तु, हि, च, स्म, ह, वै, पादपूरणे— कह कर तु, हि, च, स्म, ह, वै को पादपूरक अव्यय शब्द ही बतलाया है। प्रस्तुत ग्रन्थ में यद्यपि पादपूति की बहुलता नहीं है, फिर भी यत्र-तत्र, क, ह, स वर्ण पाद-पूति के लिए प्रयुक्त हुए हैं। यथा:—

गुजर मांडव खंधार, प्रगट गढ परबत भाल्ह ।
रोहितास उड्डीस, गोलकूडो बंगाल्ह ॥

(६२-३)

गाइति एक आप गेह, मांणसीस मंगल ।
चमीर हीर हार चीर कान हेम कुडल ॥

(१३-१०)

डोहंत सूंडा डंड ए । सीखंड सरपक हिंड ए ।
गज-वाग मस्थे मंगला । बलकत्त बीजक वडला ॥

(७२-४)

प्राचीन राजस्थानी कवियों की यह परम्परा रही है कि वे व्यक्ति एवं स्थानविशेष के नामों को तोड़-मोड़ कर नाना रूप में प्रकट कर देते थे। इस रूप-भेद के पीछे प्रायः शब्द का संहत्ववाची अर्थ एवं अल्पार्थ का ही आधार था। प्रस्तुत ग्रंथ में जो नामविशेष के रूप-भेद प्रयुक्त हुए हैं वे इस प्रकार हैं—

राव गांगा के लिए निम्न रूपभेदों का प्रयोग किया गया है—

गंग, गंगा, गंगे गंगेब, गांगे, गांगी ।

महाराजा गजसिंह के लिए निम्न प्रयोग किये गये हैं—

गज, गजणं, गजण, गजपति, गजपत्ती, गजबन्ध, गजबन्धी, गजमल्ल, गज-साह, गजसिंघ, गजसींघ, गजसींह, गजसीह, गजेसो, गजैसी, गज्जण, गज्जणवै, गाजो, गाजीसाह ।

इसी प्रकार खुरम के लिए निम्न हैं—

खुरम, खुरमि, खुरम्म, खूरम, खूरम ।

उपर्युक्त रूपभेद की सूची से स्पष्ट हो जाता है कि ऐसे शब्दों या स्थानों को राजस्थानी भाषा-विज्ञान, व्याकरण, राजस्थानी संस्कृति आदि के पूर्ण ज्ञान के बिना समझना दुरूह हो जाता है ।

काव्य-ग्रंथ में प्रयुक्त मुहावरों एवं लोकोक्तियों ने जहाँ भाषा की सरलता एवं प्रवाह को बढ़ाया है वहाँ उसे प्रौढ़ एवं प्रांजल बनाने में भी सहयोग दिया है । स्थान-स्थान पर भावानुकूल मुहावरों के प्रयोग से कवि-कर्म चमत्कृत हुआ है—

आदीत अमूंभी छीं क व्यूं, जांणीजै जोषहपुरा ।

अरभार आज थारै भुजै, सहू काज सुरतांण रा ॥

(६१-५)

यहाँ पर रेखांकित पंक्ति में मुहावरे का प्रयोग हुआ है ।

त्रिकाल-दरस्सी जोइसी, कहे एम आगम-कहा ।

असमान उपद्रह थाइसै, उठी आग पांणी महां ॥

(११३-२)

यहाँ पर भी रेखांकित स्थान मुहावरेयुक्त भाषा में है ।

मूल न भावै मारका, दोय खंडा इक म्यांन ।

यहाँ पर एक म्यांन में दो तलवारों के न समा सकने का मुहावरा है ।

ग्रंथ की भाषा-शैली के विश्लेषण के आधार पर अधिकारपूर्वक कहा जा सकता है कि कवि केसोदास गाडणकृत 'गज-गुण-रूपक-बन्ध' निश्चय ही सहज, सरल, स्वाभाविक, ओज-यिश्चित प्रसादगुणपूर्ण प्रांजल राजस्थानी भाषा का ग्रंथ है जिसमें सशक्त भावों को छन्द-वैविध्य द्वारा अवसरानुकूल शब्दावली में प्रकट किया गया है । शब्द-लालित्य एवं रस-निष्पादन ग्रंथ की अपनी विशेषता है ।

ऐतिहासिक मूल्यांकन

कवि केसोदास गाडण जोधपुर नरेश महाराजा शूरसिंह और उनके ज्येष्ठ पुत्र महाराजा गजसिंह का समकालीन था । कवि युद्ध में प्रायः महाराजा के साथ

१. ऐतिहासिक मूल्यांकन में हमने ग्रंथ की प्रायः उन्हीं घटनाओं पर अधिक प्रकाश डाला है जिनके सम्बन्ध में इतिहासकार या तो मौन रहे हैं या पूर्ण स्पष्टीकरण नहीं दे सके हैं । अतः किसी पाठक को प्रारम्भ से अन्त तक सभी घटनाओं की जानकारी करना हो तो उन्हें ग्रंथसार देखना चाहिए ।

रहता था और उसने प्रायः आँखों-देखा हाल ही लिखा है, जब कि ख्यातों आदि की रचना सुनी-सुनाई बातों के आधार पर ही हुई है। वि० सं० १६८१, ई० सन् १६२४ में महाराजा गजसिंह द्वारा भीम सीसोदिया के मारे जाने की घटना के साथ ही ग्रंथ की भी समाप्ति हो जाती है, जब कि इस घटना के बाद भी स्वयं कवि, महाराजा गजसिंह, बादशाह जहाँगीर और बाद में बादशाह शाह-जहाँ आदि सभी जीवित थे और महाराजा गजसिंह ने महत्वपूर्ण लड़ाइयाँ भी लड़ी थीं। अतः इससे यह प्रकट होता है कि ग्रंथ की रचना भी कवि ने संवत् १६८१-८२ में करली थी और ग्रंथ की समाप्ति के बाद उसने इसमें किसी भी घटना को जोड़ना उचित नहीं समझा। ग्रंथ में कवि ने कई ऐसे ऐतिहासिक तथ्यों की ओर संकेत किया है जो अभी तक गुप्त थे तथा जिनके बारे में गलत धारणाएँ बन गई थीं। अतः ऐतिहासिक दृष्टि से ग्रंथ की महत्ता में शंका करने की कोई गुंजायश नहीं रहती।

सर्वप्रथम कवि ने राठीड़-वंश का सम्बन्ध रघुवंश से जोड़ा है जिसका आधार पौराणिक है, इसके साथ ही इतिहास-प्रसिद्ध जयचन्द राठीड़ (सम्राट् पृथ्वीराज चौहान का समकालीन) के पौत्र सीहा के नाम का उल्लेख है और फिर सीहा के तीन पुत्र—आसथान, अज और सोनग का वर्णन है; जिन्होंने क्रमशः मारवाड़ में खेड़ द्वारका के पास में शंखोद्वार तथा गुजरात में ईडर-नामक स्थानों पर अपने राज्य स्थापित किए। इसके बाद महाराजा गजसिंह तक मारवाड़ नरेशों की वंशावली दी है। यह सब वर्णन इतिहास-सम्मत है।

वंशावली आदि के वर्णन के पश्चात् घटनाओं के उल्लेख के अन्तर्गत कवि ने सर्वप्रथम महाराजा शूरसिंह की गुजरात पर विजय का संकेत दिया है—

सूरसिंघ दिगपाल, एक पक्खर लख पक्खर।

गुजरवै अरबद्द, कीध वंकासुर पधर॥

ऐतिहासिक दृष्टि से यह बात पूर्ण सत्य है। संवत् १६५२, ई० सन् १५९५ में बादशाह अकबर ने महाराज को गुजरात की सूबेदारी दी थी क्योंकि वहाँ का सूबेदार मुजफ्फर शाही आज्ञाओं का उल्लंघन करने लग गया था। अतः महाराजा शूरसिंह शाही सेना को लेकर पहले जोधपुर आये और वहाँ से अपनी सेना लेकर गुजरात की ओर रवाना हुए। चूँकि सिरौही के महाराव सुलतान ने महाराजा शूरसिंह के चाचा जोधपुर-नरेश राव चन्द्रसेन के पुत्र रायसिंह को जो दत्ताणी में रात को सोये हुए थे, आक्रमण करके धोखे से मार दिया था। अतः मार्ग में महाराजा शूरसिंह को सिरौही वालों से बदला लेने का स्मरण हुआ और इन्होंने (जैसा कि कवि ने उक्त पंक्तियों में गुजरवै गुजरात के साथ सिरौही

के लिए अरबद्द=आबू=सिरोही) वहाँ लूटमार करने की आज्ञा दे दी। वहाँ के महाराज राजसिंह ने बहुत-सा धन देकर उस समय के लिए तो अपने ऊपर आई हुई भयंकर आपत्ति को टाला। वहाँ से महाराजा शूरसिंह अपनी सेना लेकर गुजरात पहुँचे। मुजफ्फर भी बड़ा बहादुर व्यक्ति था। उससे घोर युद्ध करना पड़ा। अन्त में इनकी विजय हुई। फिर इन्होंने मुजफ्फर के बेटे बागी बहादुर को भी जो उस इलाके में लूटमार कर रहा था, भगा दिया^१।

तत्पश्चात् ग्रंथ में कवि ने, बादशाह द्वारा महाराजा शूरसिंह को दक्षिण में भेजे जाने का संकेत दिया है:—

पछिम पुरव उत्तराध, इला दखणाधह आगल ।
हिंदुवाँण खुरसाँण, दुहँ भुज्जे दुहँ छल ।
सूरसिध दिगपाल, एक पक्खर लख पक्खर ।
गुजरवं अरबद्द, कीध वंका सूर पधर ।
दळयंभ देखि दिल्ली-घणी, दखण दोध आडो दळां ।
तिणवार भलावे नियतणी, 'गाजीसाह' भुअव्वलां ॥

पृ० १५, १६

यह बात भी इतिहास-सम्मत है। वि० सं० १६५६ ई०, सन् १५९९ में सुलतान मुराद की मृत्यु हो गई। तब शाहजादे दानयाल को दक्षिण की सूवेदारी दी गई और राजा शूरसिंह उसके साथ भेजे गये^२।

ग्रंथ में महाराजकुमार गजसिंह द्वारा मेवाड़-राज्यान्तर्गत नाडोल थाने पर अधिकार करने का वर्णन है।

“वळो जूह विम्भाड, डसण नाडूलउ पट्टे ।
जोजावर चाँमलोद, खोड आमिख गल घट्टे ॥
गिलं गूँद सादड़ी, सयल साव्ज मन रजं ।
क्रोलर तोडि करंक, गूह गरजी खत भजं ॥

१. पं० रामकरण आसोपाकृत 'मारवाड़ का संक्षिप्त इतिहास' पृ० ३२५, ३२६;
डॉ० गौरीशंकर हीराचन्द ओझाकृत 'जोधपुर राज्य का इतिहास' भाग १, पृ० ३६४, ३६५;
- पं० विश्वेश्वरनाथ रेउकृत 'मारवाड़ का इतिहास' भाग १, पृ० १८१-१८२।
२. मन्नासिंह उमरा, भा २, पृ० १८२;
पं० विश्वेश्वरनाथ रेउकृत 'मारवाड़ का इतिहास' भाग १, पृ० १८३-१८४;
डॉ० गौरीशंकर हीराचन्द ओझाकृत 'जोधपुर राज्य का इतिहास' भाग १, पृ० ३६६

गोढवाड़ बरड़ संधाँण सह, कूँभ अंजि कूँभेण गिरि ।

गजसिंघ कियौ गजकेसरी, सिंघनाद मेवाड़ सिरि ।

इतिहास से यह वर्णन मेल खाता है । वि० सं० १६६५, ई० सन् १६०८ में महाबतखाँ को मेवाड़ पर भेजा गया । उसने राणा के परिवार का सोजत में होने की शंका से सोजत को राजा शूरसिंह से हटवा कर राव चन्द्रसेन के पौत्र व उग्रसेन के पुत्र करमसेन को दिलवा दी । किन्तु महाबतखाँ के मेवाड़ में असफल होने के कारण उसके स्थान पर अब्दुल्लाखाँ को भेजा गया । उसने सोजत राजकुमार गजसिंह को इस शर्त पर लौटा दिया कि वे नाडोल के थाने की रक्षा का प्रबन्ध करें । महाराजकुमार गजसिंह ने ऐसा ही किया ।

जिस समय राठौड़ नाडोल के थाने पर तैनात थे, उन्हीं दिनों व्यापारियों द्वारा अहमदाबाद से शाही खजाने को लेकर मारवाड़ होते हुए आगरा जाने वाली ऊँटों की कतार को लूटने के लिए महाराणा अमरसिंह के पुत्रों (ज्येष्ठ कुमार कर्णसिंह आदि) ने अपने चुने हुए साथियों सहित मारवाड़ के गाँव दूनाड़े तक पीछा किया—

कमधज्जाँ नाडूल लसकर । लौहोडी खुरसाँण मंडोबर ॥

हेरि कतार नयर दूनाड़े । माँडि डाँण राँण मेवाड़ ॥—पृ० १७

जब नाडोल के थाने पर महाराजकुमार गजसिंह द्वारा नियुक्त भाटी गोविन्ददास को इसकी सूचना मिली तो उसने खाली हाथ लौटते हुए (क्योंकि खजाना तो पहले ही आगे निकल चुका था) महाराणा अमरसिंह के पुत्रों एवं सरदारों पर अचानक धावा बोल दिया । इस अचानक धावे से कुछ समय के संघर्ष के पश्चात् महाराणा अमरसिंह के पुत्र तथा सरदारों ने अपनी कुशल रण-नीति के अनुसार युद्धस्थल छोड़ना उचित समझा तथा वे वहाँ से पहाड़ों में चले गये—

भाटी राउ गज भीम, जुडे जाँमलि रट्टौडाँ ।

जीता जोधपुराह, हारि हई चीतीडाँ ॥

देसपत्ती राउत्ता, अमुह केतौ ऊजाँणाँ ।

ईसर साँमलदास, खेत रहिया खूमाँणाँ ॥

‘गोइंद’ पेखि जैसलगिरी, बाघ वीसमो बीरवर ।

रिणवार राँण ‘अमरेस’ रा, कुरंगा जेम गया कुंअर ॥—पृ० १८

१. डॉ० गौरीशंकर हीराचन्द ओझाकृत ‘जोधपुर राज्य का इतिहास’ भा० १, पृ० २७२; पं० विश्वेश्वरनाथ रेडकृत ‘मारवाड़ का इतिहास’ भा० १, पृ० १८७-१८८; ‘वीर विनोद’ भा० २, पृ० २२५-२२६ ।

यह घटना भी पूर्ण सत्य है। महाराणा अमरसिंह मग अपने परिवार के पहाड़ों में भटक रहे थे। अब्दुल्लाखाँ एक बहुत बड़े शाही लश्कर के साथ मेवाड़ में घूम रहा था। राणा के पास लूट-खसौट के अलावा कोई चारा नहीं था। यह लड़ाई वि० सं १६६८, ई० सन् १६११ में मारवाड़ के भाद्राजून और मालगढ़ इलाके के पास हुई^१।

जब महाराजकुमार गजसिंह और भाटी गोविन्ददास नाडील के थाने पर थे, तब महाराजकुमार ने सिरोही पर चढ़ाई कर दी। जैसा कि पहले उल्लेख किया जा चुका है कि महाराजकुमार गजसिंह के पितामह के छोटे भाई (जो जोधपुर के शासक राय चंद्रसेन थे) के पुत्र रायसिंह को सिरोही के शासक महाराव सुरताण ने दत्ताणी में रात को घोखे से आक्रमण करके मार डाला था। अतः महाराजकुमार गजसिंह द्वारा यह चढ़ाई सिरोही वालों से पुराना बदला लेने के लिए की गई। सिरोही वालों ने आधीनता स्वीकार कर ली। कवि ने इस घटना का उल्लेख संक्षेप में किया है—

"मछरीकां सिर मछरियो, राइजादी राठीड़ ।
 वीर पुराणा वाळिवा, करे नवल्लो दीड ॥
 गजवंधी दळ मेल्हिया, पहरे जोध जरह ।
 मारि मनांठ देवडा, हव गंजूं अरवद् ॥२॥
 सेन मेल मिवपुरी, फौज घेर घांसोहर ।
 जैतहत्थ कळिमत्थ, साधि भाटी रिण घोयर ॥
 कटि इम पढिगी रें(ण) घणी अड्डार गिरंदर ।
 लाया पाह रकेव, कीध मछरीक रैहवर ॥

राठीड़ कुंअर पयखर खंद, कवण(क) समवड करे ।
 जमदाड छोड विज्जे लई, फना राउ अरवद् रे ॥१॥

(पृ० १६-२०)

यह घटना सही मानी जाती है, किन्तु इसके बारे में विद्वानों के अलग-अलग मत हैं। डॉ० गौरीशंकर हीराचंद ओझा के अनुसार सिरोही के महाराज राजसिंह का छोटा भाई शूरसिंह देवड़ा सिरोही की गद्दी हासिल करना चाहता था; इसलिए उसने जोधपुर के राजा शूरसिंह को अपने पक्ष में लेने के लिए यह प्रपंच रचा। पं० विवेकेश्वर नाथ रेड तथा पं० रामकर्ण आसोपा के अनुसार

१. 'वीर विनोद' भा० २, पृ० २२६।

सिरोही के महाराज राजसिंह ने पुरानी शत्रुता को समाप्त करने के लिए जोधपुर नरेश महाराजा शूरसिंह से भाटी गोविंददास के द्वारा प्रार्थना की थी ।

तीनों इतिहासज्ञों के मतों का अध्ययन करने के बाद जब कवि के विचारों पर दृष्टि डाली जाती है, तो स्पष्ट प्रकट होता है कि महाराजकुमार गजसिंह द्वारा चढाई करने पर सिरोही का महाराज राजसिंह घबरा गया और उसने संधि कर ली । जो अहदनामा (तहरीर) वि० सं० १६६८, ई० सन् १६११ में सिरोही के महाराज राजसिंह तथा जोधपुर नरेश महाराजा शूरसिंह के बीच लिखा गया था उस पर राजसिंह के हस्ताक्षर भी मौजूद हैं । यद्यपि इस तहरीर पर बाद में अमल नहीं हुआ, किन्तु यह लिखा-पढी सिरोही के महाराज राजसिंह की इच्छा से ही की गई थी ।

इसके बाद ग्रंथ में बादशाह द्वारा महाराणा अमरसिंह को अधीन करने के उद्देश्य से अजमेर आने का वर्णन है तथा शाहजादे खुर्रम के साथ महाराजा शूरसिंह को राणा पर चढाई करने के लिए भेजने का उल्लेख है —

ताम साह जिहगीर, लिखै मुकयी परमांणी ।

पल खूटी खुरसाण, सब्बला अजुं खूमांणी ॥

मेर मेर सारिखी, हुआ इक इक्क पहाडह ।

तो पक्खै कमघज्ज, कमठ गंजै मेवाडह ॥

सूरजमल्ल सुरताण बलि, ग्रहे खाग लागी अरस ।

आयी अभंग नव साहसी, खडि तुरंग सिरिदस सहस ॥३॥

महाराजा शूरसिंह ने चिट्ठी लिखकर अपने पुत्र गजसिंह को भी गोविंददास मंत्री के साथ मेवाड़ में बुला लिया —

राजा कागळ लिखै कुंअर, तेडे निय कन्हाळि ।

मिलण मनोरथ करै, साह जाहगीर तराँ छळि ॥

चडै ताम गजपती, करे लसकर आडंबर ।

भडवंका वर तुरी, लिया मदमत्ता कुंजर ॥

जूहार उदंपुर जाइ किय, साथि मोच 'गोइ'द सगल ।

इके रास हुआ किरौ एकठा, सूरज थावर विनै ग्रह ॥५॥

१. पं० रामकर्ण आसोपा कृत 'मारवाड़ का संक्षिप्त इतिहास' पृ० ३३७, ३३८, ३३९ ।

पं० विश्वेश्वरनाथ रेड कृत 'मारवाड़ का इतिहास' भाग १, पृ० १८८, १८९, १९० ।

डॉ० गोरीशंकर हीराचन्द ओझा कृत 'जोधपुर राज्य का इतिहास' भाग १, पृ० ३७३, ३७४ ।

महाराजा शूरसिंह ने राणा को संधि के लिए तैयार करके गो गूदे में शाहजादे खुर्रम और राणा की भेंट करवाई । तत्पश्चात् महाराणा के ज्येष्ठ पुत्र कर्ण को लेकर खुर्रम अजमेर आया और बादशाह के दरबार में हाजिर हुआ, जहां बादशाह ने उसका अच्छा स्वागत किया ।^१ —

राजा बोल समझियो, कहियो राण प्रमाण ।
वे घीघूँदें मेलिया, खूँदालम खूमांण ॥
खिजमति करण कबूला की, बळ छंडे समसेर ।
खरम फतै कर हल्लियो, साह पेगे अजमेर ॥४॥ (—पृ० २२)

साहिजादी अजमेर. 'करन' हजरत पै लाए ।
जर है गै सिर पाउ, वगसि खिजमति फुरमाए ॥
कहै साह जिहगीर, खुर्रम सुरतांण (सुणे रहंत) ।
तम सूर हम खुदाई, पीर पक्कंवर मुद्दत ॥१॥

उक्त घटनाओं में प्रथम बादशाह के अजमेर आने की घटना के बारे में बादशाह जहाँगीर स्वयं लिखता है— “इस (अजमेर) यात्रा में हमें दो कार्य विशेष रूप से करने थे, प्रथम तो मुहनुद्दीन चिश्ती के विशाल मकबरे का दर्शन करना था जिसकी प्रसिद्ध आत्मा की दुआ से इस प्रभावशाली परिवार को बहुत लाभ पहुंचा था और जिनकी दरगाह की हमने अपनी राजगद्दी के बाद जियारत नहीं की थी । दूसरा कार्य विद्रोही राजा अमरसिंह को परास्त कर भगाना था जो हिन्दुस्तान के राजाओं तथा जमींदारों में सबसे बड़ा था और जिसके नेतृत्व एवं प्राधान्य को उस प्रान्त के सभी राजाओं ने अंगीकार कर लिया था ।”

महाराणा अमरसिंह पर चढ़ाई करने के लिए खुर्रम के साथ महाराजा शूरसिंह को भी भेजा जाना इतिहास-सम्मत है । ब्रजरत्नदास रचित “मन्नासिरुल उमरा” पृ० ४५५ में जहाँगीर के दसवें राज्य वर्ष में शूरसिंह का खुर्रम के साथ महाराणा अमरसिंह पर जाना लिखा है । वीर विनोद, भाग २, पृ० २२६ से इसकी पुष्टि होती है ।

१. पं० रामकृष्ण आसोपा कृत ‘मारवाड़ का संक्षिप्त इतिहास’ पृ० ३३६, ३४० ।

पं० विश्वेश्वरनाथ रेड कृत ‘मारवाड़ का इतिहास’ भाग १, पृ० १६० ।

२. (अ) जहाँगीर का आत्म चरित्र (जहाँगीरनामा) अनुवादक—ब्रजरत्नदास, पृ० ३१७. १८.

(ब) गोरीशंकर हीराचन्द ओझा ने जोधपुर राज्य के इतिहास भाग १, पृ० ३७५ में लिखा है कि बादशाह वि०सं० १६७० के आश्विन सुदि ३, ई० सन् १६१३ ता० ७ सितम्बर को आगरे से रवाना होकर मार्गशीर्ष सुदि ७, ता० ८ नवम्बर को अजमेर पहुंचा ।

महाराजा शूरसिंह द्वारा चिट्ठी लिखकर महाराजकुमारे गजसिंह को बुलाया जाना इस बात से प्रमाणित करता है कि शाहजादे खुर्रम ने महाराणा को परास्त करने के लिए पहाड़ी प्रदेश में जगह-जगह शाही थाने बैठा दिये थे। सादड़ी के थाने पर (जो बहुत विकट था) महाराजा शूरसिंह को नियत किया गया^१। शाही सेना उन पहाड़ी स्थानों से अपरिचित थी। अतः स्पष्ट है कि वहां पर महाराजा को अपने अनुभवी वीरों की आवश्यकता थी, इसीलिए उन्होंने चिट्ठी लिख कर कुंअर गजसिंह को बुला लिया जो गोविन्ददास आदि चुने हुए साथियों सहित वहाँ पहुँच गया। गजसिंह को बुलाने का दूसरा उद्देश्य, जैसा कि कवि ने संकेत किया है, यह था कि इस बहाने ज्येष्ठ कुंअर की बादशाह से भेंट करवा दी जायेगी।

“राजा कागल लिखें कुंअर तेडे निय कहलि।

मिलन मनोरथ करै, साह जहाँगीर एँ छलि॥

संधि की बातें तय करवाने में राजा शूरसिंह का कितना हाथ था इसके सम्बन्ध में यद्यपि विस्तृत वर्णन नहीं मिलता है किन्तु गोमूंदे में महाराणा को सम्मानपूर्वक खुर्रम के पास लाना,^२ संधि के समय महाराणा शूरसिंह का उनके पास मौजूद रहना^३ आदि बातें इस बात की द्योतक हैं कि मामले को तय करवाने में महाराज का सक्रिय योग रहा होगा।

संधि की शर्त के अनुसार खुर्रम द्वारा महाराणा के ज्येष्ठ कुंअर कर्ण को अजमेर लेजाया गया तथा बादशाह की सेवा में उपस्थित करने पर बादशाह ने उसको इनाम इकरार खिल्लअत आदि दी और सहर्ष अपनी सेवा में लिया^४।

१. डॉ० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा कृत ‘जोधपुर राज्य का इतिहास’ भाग १

—पृ० ३७३ (फुट नोट ५)

२. डॉ० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा कृत ‘जोधपुर राज्य का इतिहास’ भाग १, पृ० ३७८ साथ ही यहाँ डॉ० ओझा ने संधि की तिथि वि०सं० १६७१ फाल्गुन वदि २, ई० सन् १६१५ ता० ५ फरवरी दी है। तथा कर्ण को साथ लेकर खुर्रम के अजमेर पहुँचने की तिथि रविवार वि०सं० १६७१ फाल्गुन सुदि २, ई० सन् १६१५ ता० १६ फरवरी दी है।

३. राजस्थान पुरातन ग्रंथमाला, ग्रंथाङ्क २१, पं० नरोत्तमदासजी स्वामी द्वारा संपादित “बांकीदास री ख्यात” पृ० ६५ पर “अमरसिंघ प्रतापसिंघोत” शीर्षक के अन्तर्गत संख्या १०६७, १०६८ व १०६९ देखिए। संख्या १०६८ में जो संवत् १६७४ दिया है उसके स्थान पर १६७१ होना चाहिए।

४. जहाँगीर का आत्मचरित (जहाँगीरनामा) अनुवादक—बजरत्नदास, पृ० ३४० ३४१, ३४३-३४६, ३४९, ३५३, ३५७, एवं ३६१।

तत्पश्चात् कवि ने राठीड़ों की बढ़ती हुई शक्ति से बादशाह जहाँगीर के शंकित होने का संकेत दिया है। महाराजा शूरसिंह, कुंअर गजसिंह, भाटी गोविंददास, शूरसिंह के अनुज कृष्णसिंह, करमसेन उग्रसेनोत (जो जोधपुर नरेश राव चन्द्रसेन का पौत्र था) राव कर्णसिंह शक्तिसिंहोत (जो जोधपुर नरेश मोटा राजा उदयसिंह का पौत्र था और शूरसिंह व कृष्णसिंह का भतीजा था) तथा अन्य सामंत बड़े प्रबल थे। बादशाह किसी भी उपाय से इन्हें निर्बल बना देना चाहता था। वह यह जानता था कि जहाँ ये शाही साम्राज्य के स्तम्भ हैं वहाँ ये पुराना बैर भी नहीं भूलते हैं और बदला लेना अपनी शान समझते हैं। अतः बादशाह जहाँगीर ने इनके इसी स्वभाव (बदला लेने का) से फायदा उठाने के लिए मन ही मन योजना बनाई—

हठियो सिर हिंदुवां माड मेले खूमाणां ।

आदि बैर संभरै सरस दिल्ली सुरताणां ॥

राजा सूरजसिंघ जोध गजसिंघ जमज्जड ।

किसनसिंघ करमैत 'करन' संपेख महाभड ॥

गुण दोस गिणै इक सारिखा घडै घाट मन भंज घड ।

असपति तराँ सह एकठा, हियै न मावै रहुवड ॥२॥—पृ० २३

यद्यपि बादशाह की इस शंका का संकेत किसी भी इतिहासकार ने नहीं दिया है, किन्तु इस ग्रंथ का रचयिता उन दिनों मौजूद था और इसकी पैनी नजर, कुशाग्र बुद्धि और चतुराई ने बादशाह के घुरे इरादों और राठीड़ों के प्रति शंका को भाँप लिया। दूसरे, राजपूत जाति एक लड़ाकू, खूंखार और अपनी आन पर मर मिटने वाली जाति थी। मेवाड़ को अधीन करने में बादशाह अकबर और बादशाह जहाँगीर को लाहे के चने चवाने पड़े थे। महाराजा शूरसिंह के चाचा और मोटाराजा उदयसिंह के छोटे भाई जोधपुर नरेश राव चन्द्रसेन ने भी राणा प्रताप की तरह ही मुगल साम्राज्य से बराबर लोहा लिया था^१। अतः राठीड़ों के पुनः शक्तिशाली हो जाने पर बादशाह का शंकित होना स्वाभाविक ही था। इस ग्रंथ के प्रकाशन से इतिहास का यह गुप्त तथ्य प्रकट हुआ है। अतः इस दृष्टि से ग्रंथ की महत्ता और भी बढ़ जाती है।

१. जोधपुर नरेश राव चन्द्रसेन ने जीवन भर बादशाह अकबर से टक्कर ली थी।

२. पं० विश्वेश्वरनाथ रेड कृत 'मारवाड़ का इतिहास' भाग १, पृ० १६०।

इस सम्बन्ध में किसी कवि ने क्या ही यथार्थ कहा है—

अगरगिया तुरी ऊजला असमर, चाकर रहण न डिगियो चीत ।

सारै हिंदुस्तान तराँ सिर, पातळ नै चंद्रसेन प्रवीत ॥

यद्यपि जहांगीरनामा में बादशाह ने इस घटना को अनजान बनकर लिखा है, किन्तु कोई भी मनुष्य स्वयं रचित षड्यंत्र को कैसे प्रकट कर सकता है।

चूँकि महाराजा शूरसिंह के वीर और चतुर मंत्री गोविन्ददास भाटी ने पहले कृष्णसिंह के भतीजे गोपालदास को अपने भाई के मार देने के कारण मार डाला था^१। अतः बादशाह ने दरबार में कुंअर गजसिंह के सामने ही इसलिए उकसाया कि वह भाटी गोविन्ददास को मार कर अपने भतीजे का बदला ले।

“साह लगाडै रटुवड दोही दिल्ली डग।

बाढ़ चढ़े खुरसांण सूं, करि खुरसांणी खग ॥१॥

‘गाजीसाह’ पधारियो, चढ़ि मुजरै दरबार।

दिल्लीपति दोनो हुकम, केहरि गोइंद’ मार ॥२॥—पृ० २४

गोविन्ददास को १५ दिन या एक महिने में मार देने का आश्वासन जब कृष्णसिंह द्वारा बादशाह को दिया गया, तब अपने क्षत्रियोचित स्वभाव के अनुसार राजकुमार गजसिंह अपने चाचा पर उबल पड़े और चेतावनी दे दी कि गोपालदास को मारने में भाटी गोविन्ददास के साथ मैं भी था, अतः गोविन्ददास

१. डॉ० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा ने “जोधपुर राज्य का इतिहास” भाग १, पृ० ३७६ के फुटनोट में जोधपुर राज्य की ख्यात के अनुसार गोपालदास के मारे जाने का वृत्तांत नीचे लिखे अनुसार दिया है—

वि०सं० १६६६ (चैत्रादि १६७०) ज्येष्ठ सुदि ७, ई० सन् १६१३ ताः १६ मई को भाटी गोविन्ददास के भाई सुरतांण पर राठीड सुन्दरदास, सूरसिंह (रामसिंहोत), राठीड नरसिंहदास (कल्याणदासोत) तथा गोपालदास* (भगवानदासोत) ने आक्रमण किया। सुरतांण मारा गया और गोपालदास घायल होकर निकल गया। इस पर कुंअर गजसिंह (और) तथा गोविन्ददास ने उसका पीछा किया और मेड़ते के पास गांव खाखड़की में उसे मार डाला।

*पं० विश्वेश्वरनाथ रेड ने “मारवाड़ के इतिहास” भाग १, पृ० १६२ के फुटनोट में लिखा है कि गोपालदास पर आक्रमण होने पर सुरतांण ने उसका पक्ष लिया। जब सुरतांण मारा गया तो गोपालदास जख्मी होकर भाग गया। यह बात भाटी गोविदास को अच्छी नहीं लगी क्योंकि उसके भाई ने तो उसके लिए प्राण दिये और वह प्राणों के मोह से भाग गया। अतः उसने कुंअर गजसिंह को साथ लेकर, गोपालदास का पीछा करके उसे मार डाला। गोपालदास राजा सूरसिंह व कृष्णसिंह का भतीजा था किन्तु भाटी गोविन्ददास राजा शूरसिंह का प्रधानामात्य था। अतः उन्होंने उसका बदला नहीं लिया किन्तु उसके अनुज कृष्णसिंह ने गोविन्ददास को मार कर भतीजा गोपालदास का बदला लिया किन्तु कृष्णसिंह को भी अपने प्राण खोने पड़े।

को मारने के लिए आने वाला पहले मुझसे लड़कर अपनी मृत्यु को निमंत्रित करेगा। इस प्रकार बादशाह ने अपनी नारद-बुद्धि से दरबार में अपने ही सामने चाचा (कृष्णसिंह) और भतीजे (कुंअर गजसिंह) के बीच एक खाई उपस्थित कर दी—

“सनमुख साह निविद्धियो कीधी नारद कांम।

कळि लग्गी रठौड़ हर, मरसी के वरियांम ॥६॥

पृ० २५

जब कृष्णसिंह ने भतीजे कर्ण, कर्मसेन उग्रसेनोत तथा अपने कुछ चुने हुए साथियों सहित रात्रि को ऊषाकाल से पूर्व अजमेर में ही भाटी गोविन्ददास के डेरे (मकान) पर हमला कर दिया। गोविन्ददास भाटी नींद से जग गया और कई शत्रुओं का काम तमाम कर देने के बाद वीरगति को प्राप्त हुआ^१। पास ही के महल में सोये हुए राजा सूरसिंह भी युद्ध के शोर-गुल से जग गये और तंगी तलवार लेकर बाहर आ गये और उसी समय राजकुमार गजसिंह भी वहां पहुँच गये। भयंकर युद्ध हुआ। कृष्णसिंह उसका भतीजा कर्णसिंह तथा अन्य कई योद्धा मारे गये किन्तु, जोधपुर नरेश राव चन्द्रसेन का पौत्र और उग्रसेन का पुत्र कर्मसेन युद्धस्थल छोड़कर भाग गया। दोनों ओर के कई वीर काम आये^२ —

किसनसिध कमधज्ज, मुअ्री गोअरधन मारे।

कमरसेन नीकळं कूंत गज कूंम पहारे।

सकतसिध अंगरूह 'करन' रहियो पग मंडे।

सूर धीर नेठाहै, गया काइर बल छंडे।

आन्नत हुआ एक घड़ी, हुआ सुभट्टां सत्यरा।

संग्राम चक्रवृहा सत्रां, सूरसिध चक्रवत्तरा ॥७॥

— पृ० ३१

बादशाह द्वारा राजा सूरसिंह को जालोर का हाकिम नियुक्त करना और गजसिंह का बिहारी पठानों से जालोर छीनना इतिहाससम्मत है^३।

१. डॉ० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा ने “जोधपुर राज्य के इतिहास” भाग १, पृ० ३७६ में तुजक-इ-जहांगिरी के आधार पर इस घटना की तिथि ता० १५ खुरदाग (वि०सं० १६७२ ज्येष्ठ सुदि ६, ई. सन् १६१५ ता० २६ मई) दी है।

२. जहांगीर का आत्मचरित (जहांगीरनामा) अनुवादक—ब्रजरत्नदास, पृ० ३६० के अनुसार बादशाह जहांगीर लिखता है कि ‘कुल मिलाकर इस लड़ाई में छःसठ आदमी मारे गये, जिसमें राजा की ओर के तीस तथा कृष्णसिंह के छत्तीस मनुष्य थे।

३. “तारीख पालनपुर” सैयद गुलाम मियां कृत, पृ० १५०-१६०; नवाब सर ताले मुहम्मद खां, पालनपुर राज्य नो इतिहास (गुजराती) भाग १ पृ० ५४-६२।

डॉ० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा कृत “मारवाड़ का इतिहास” भाग १, पृ० १६४, १६५ पृ० रामकण्ठ आसोपा कृत “मारवाड़ का इतिहास” पृ० ३४५

तत्पश्चात् कवि ने राजकुमार गजसिंह द्वारा राव चन्द्रसेन के पौत्र और उग्रसेन के पुत्र कर्मसेन का पीछा करना लिखा है। इस घटना का वर्णन मारवाड़-जोधपुर राज्य का इतिहास लिखने वाले किसी लेखक ने नहीं दिया है। कर्मसेन लाडनू से भाग कर थली (निर्जल प्रदेशों) में भटकता हुआ अरावली की ओर गया। वहाँ से वह मेवों की शरण में गया। जब गजसिंह ने वहाँ भी उसका पीछा नहीं छोड़ा तो उसने हाड़ौती में जाकर अपने प्राण बचाये।

घटना की सत्यता के बारे में प्रथम तो इतना ही कहा जा सकता है कि कर्मसेन का पीछा करने के समय में ग्रंथ का रचयिता जीवित था। अब पीछा करने का कारण मुख्यतया यही हो सकता है कि कर्मसेन राजपूतों के नियम के अनुसार राज्य का असली हकदार था। जोधपुर के स्वामी राव चन्द्रसेन के तीन पुत्र थे, रायसिंह, उग्रसेन तथा आसकरण, जैसा कि पहले उल्लेख किया जा चुका है। रायसिंह को सिरोही के महाराव सुरतांग ने दताणी में रात को आक्रमण करके धोखे से मार डाला था। दूसरे दो भाई उग्रसेन और आसकरण चौसर खेलते हुए किसी बात पर क्रुद्ध होकर मारे गये। रायसिंह के कोई पुत्र नहीं था अतः उग्रसेन का बड़ा पुत्र व राव चन्द्रसेन का पौत्र कर्मसेन की गद्दी का असली हकदार था। किन्तु कर्मसेन को गद्दी न देकर बादशाह अकबर ने राव चन्द्रसेन के भाई (मोटा राजा) उदयसिंह को जोधपुर की गद्दी दी जिसके पुत्र शूरसिंह व पौत्र गजसिंह थे। राव चन्द्रसेन का पौत्र कर्मसेन भी कुमार गजसिंह का समकालीन था। अतः राज्य के लिए आपसो अनबन होना स्वाभाविक है। इसके अतिरिक्त शाही दरबार में कर्मसेन अपने असली हकदार होने का रोना रो चुका था। उसी के अनुसार कर्मसेन को शाही मंसब और मारवाड़ का सोजत इलाका मिल चुका था जो बाद में महाराजकुमार गजसिंह को नाडोल के थाने की रक्षा करने पर पुनः मिल गया था। इसके अतिरिक्त भाटी गोविंददास को मारने में भी कर्मसेन ने कृष्णसिंह का साथ दिया था और बाद में रण-स्थल से बचकर भाग गया। चूँकि महाराजा शूरसिंह का पुत्र महाराजकुमार गजसिंह जोधपुर का स्वामी बनने वाला था, अतः उसके पास अधिक दलबल होने से उसको वहाँ से आगे भागकर अपनी जान बचानी पड़ी।

सवाई राजा शूरसिंह की मृत्यु, गजसिंह का राज्याभिषेक दक्षिण में होना, महाराजा गजसिंह द्वारा दक्षिण में निरन्तर शाही सेना के अग्रभाग (हरावल) में स्थान-ग्रहण करके वीरता दिखाना तथा दक्षिणियों को हर स्थान पर पराजित करके पीछे खदेड़ना, खुर्रम का दक्षिण में आना, शाही सेना की विजय

होना, गजसिंह का खुर्रम के पास से विदा होकर बादशाह के पास आना और वहां से विदा होकर अपनी राजधानी जोधपुर लौटना, खुर्रम का बागी होना आदि घटनाएँ सभी इतिहास-सम्मत हैं ।

इस सम्बन्ध में इतना अवश्य कहा जा सकता है कि महाराजा गजसिंह अपने राठीड़ वीरों के साथ, शाही अफसरों खानखानान् अब्दुर्रहीम, उसके पुत्र दाराबखाँ आदि के साथ थे । यद्यपि राठीड़ों ने सेना के अग्रभाग में लड़ कर हर स्थान पर दक्षिणियों को पीछे खदेड़ा, किन्तु शाही अफसरों ने सारा यश स्वयं लिया । इसी कारण फारसी-तवारीखों में इनकी वीरता का अधिक उल्लेख नहीं मिलता है ।

बागी होने पर खुर्रम मांडव से अजमेर, साँभर, रणथम्भौर, सीकरी होता हुआ आगरे और दिल्ली की ओर जाने का प्रयत्न करने लगा । इसी बीच खुर्रम ने महाराणा अमरसिंह के पुत्र भीम सीसोदिया को (जो उसके पक्ष में था और उस समय मेड़ते में था) यह हुकम भेजा कि तुम सादूल को हरा कर अजमेर को अपने अधिकार में करलो ।

“भूवयो खुर्रम हुकम मेड़तै । रांगे भीम दिसा रिण रत्तै ।

वपि वांकम “सादूल” वहतै । तू अजमेर करै गढ फतै ।

—पृ० १२४

उक्त सादूल कौन था ? उसका अजमेर की रक्षा से क्या सम्बन्ध था ? इसके लिए इतिहासकार मौन हैं । यद्यपि वीरविनोद भाग २, पृ० २८७ में शार्दूलसिंह परमार का जिक्र है किन्तु वहाँ पर प्रसंग दूसरा है । वहाँ पर शार्दूलसिंह भीम सीसोदिया के साथ होता है और टोंस नदी के किनारे जब सेनापति महाबतखाँ और शाहजादे पर्वेज की अध्यक्षता में शाही सेना बागी शाहजादे खुर्रम की सेना से (जिसके हरावल में भीम सीसोदिया था) भिड़ती है तो यह शार्दूलसिंह युद्ध-स्थल से भीम का साथ छोड़ कर भाग जाता है । साथ ही वीरविनोद में यह भी लिखा है कि यह भीम सीसोदिया का साला था । यह सब वृत्तान्त ठीक हो सकता है किन्तु किसी भी इतिहासकार ने यह स्पष्टीकरण नहीं दिया कि अजमेर की रक्षा करने वाला ‘सादूल’ कौन था ? जो खुर्रम के हुकम से भीम सीसोदिया द्वारा मेड़ता से चढ़ाई करके हराया गया और पकड़ कर सीकरी में खुर्रम के सामने पेश किया गया । हमारी खोज के अनुसार इसके सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी निम्नलिखित है :—

इसका शुद्ध नाम शार्दूलसिंह परमार था और श्रीनगर (अजमेर) के स्वामी कर्मचन्द परमार का वंशज था । इसके पिता का नाम मालदेव था जो राणा

उदयसिंह की सेवा में था और उसको राणा की ओर से जागीर मिली हुई थी। किसी कारण से यह राणा को छोड़कर अकबर के पास चला गया। अकबर ने इसका सम्मान किया और जागीर दी, किन्तु जब अकबर ने चित्तौड़ पर आक्रमण करना चाहा, तब उसने अपने कर्तव्य की समझा और राणा के पास पुनः आ गया। राणा ने इसका सम्मान किया और पहले से भी अच्छी जागीर दी। फिर यह महाराणा की ओर से शाही सेना का सामना करता हुआ वीरगति को प्राप्त हुआ।

इसी मालदेव के छः पुत्र थे जिनमें शार्दूलसिंह भी एक था। इसके एक भाई का नाम सांगा था। यह अपने उसी भाई के साथ महाराणा को छोड़कर बादशाह के पास चला गया। बादशाह ने उन्हें बदनोर (मेवाड़) की सनद जागीर में दी। अतः वे सकुटुम्ब आकर मसूदे में रहने लगे। बदनोर में पहले से ही राठौड़ रहते थे, अतः परमारों ने उन पर चढ़ाई की और विजय प्राप्त की।

ये श्रीनगर (अजमेर) के कर्मचन्द के वंशज थे और उन दिनों बादशाह उन पर महाराणा की सेवा छोड़ देने के कारण खुश था, अतः अजमेर की रक्षा का भार बादशाह द्वारा या उसके शाहजादे पर्वज जिसकी जागीर में उन दिनों अजमेर था) द्वारा शार्दूलसिंह को दिया गया। चूँकि शाहजादा खुर्रम बागी हो चुका था, अतः वह शाही इलाकों पर अधिकार कर लेना चाहता था। इसीलिए उसने अपने पक्ष के भीम सीसोदिया को हुक्म भेजा कि तुम 'सादूल' (शार्दूलसिंह परमार) को हराकर अजमेर पर कब्जा करलो। भीम उस समय मेड़ते में था, क्योंकि मुहणोत नैणसी की ख्यात, भाग १, पृ० ३०-३१ के अनुसार प्रकट होता है कि मेड़ता उन दिनों भीम सीसोदिया को जागीर में दिया हुआ था, अतः उसने बागी शाहजादे खुर्रम को आज्ञानुसार अजमेर पर चढ़ाई करके शार्दूलसिंह को परास्त किया और पहाड़ों में भागते हुए शार्दूलसिंह को पकड़ कर सीकरी में खुर्रम के सामने पेश किया। वीरविनोद के अनुसार चूँकि यह भीम सीसोदिया का साला था, अतः संभव है सीकरी में साला-बहनोई में मेल हो गया हो और यह शार्दूलसिंह परमार भी भीम सीसोदिया के साथ बागी शाहजादे खुर्रम का पक्षपाती हो गया होगा। वीर-विनोद के संदर्भ से जैसा कि ऊपर उल्लेख किया जा चुका है जब वि० सं० १६८१, ई० सन् १६२४ में भीम सीसोदिया का युद्ध टोंस नदी के किनारे शाही सेना से हुआ, तो वह अपने बहनोई भीम का साथ छोड़कर कायर की तरह भाग गया।

कवि ने ग्रंथ के अन्त में भीम सीसोदिया और महाराजा गजसिंह के युद्ध का

वर्णन किया है। भीम बागी शाहजादे खुर्रम की सेना के अग्रभाग (हरावल) में था और महाराजा गजसिंह शाहजादे परवेज़ और महाबतख़ाँ की सेना में थे।

अब प्रश्न यह है कि युद्ध में भीम सीसोदिया की मृत्यु किसके हाथ से हुई। इस ग्रंथ के प्रकाशन से पूर्व इस सम्बन्ध में इतिहासकारों ने पूर्ण स्पष्टीकरण नहीं किया था। हमारी खोज के अनुसार भीम सीसोदिया को महाराजा गजसिंह ने ही मारा था; निम्न प्रमाणों से यह बात पूर्ण स्पष्ट हो जायगी—

प्रथम प्रमाण तो यही है कि वि० सं० १६८१ ई० सन् १६२४ में जब टोंस नदी के किनारे यह इतिहास-प्रसिद्ध महायुद्ध हुआ तब इस ग्रन्थ का रचयिता जीवित था। अतः उससे अधिक जानकारी दूसरा कौन दे सकता है ?

कवि के निम्न छप्पयों पर दृष्टिपात कीजिये—

चीतोड़ी चालणी अंग हुआ आरखह ।
 कुरख दल अंतरै, जाण भीखम पितामह ।
 आरुहता भगदैत आसी रागां चाडंती ।
 गै जूहा गोड तो, खग भूबलि भाडंती ।
 भूडंड वधे ब्रह्मंड लग, घन पराक्रम सूरतन ।
 पाडियो जोध आउट्टमी, दौड़ी रावत कुंभकन ॥८॥

—पृ० २३९

खाल रत खलहल, जाण वरसाल नदी जल ।
 गज तुरंग गुडिया, गुडै भड हूवा गूँछल ।
 रुंडमुंड रोलिया, "भीम" पाडियो भुजाली ।
 भारत कुरखेत रै, हुआ जुष लंका वालो ।
 गजसिंघ गिरंदां कमघजां, माहि मेर माभी खडो ।
 पतसाह दुहं गजसाह प्रब, हुइ नीमडियो हेकडो ॥१२॥

—पृ० २४१

रामायण रामचंद, वहे कुंभकन रामण ।
 हणमंत खोडो हुआ, मरै जीवियो लखंमण ॥
 अरजण भारत कियो, लियण हथणपुर दूकी ।
 जै-दसरथ अहि-वन्न करन मरियो घडूकी ॥
 गजसिंघ कियो गजगाहणी, "भीम" मारि भागी खुरम ।
 कमघज्ज पखै जीती कमण, सार्ज नाद संग्राम हम ॥१७॥

—पृ० २४२

जिसी पत्य मारत्य, राम जीती रामायण ।
 जिसी लखण इंद्रजीत, भीम भगै दुजोअण ।
 जिसी जोध बलिभद्र, पलंव दाणव संहारिय ।
 जिसी वीर नरसिंघ, हरिणकस्सिप वंहारिय ।

साभिये त्रिपुर संकर जिसी, वामण चंपि पयाल वलि ।

गजसिंघ 'भीम' गोडवियी, तिसी दीठ रवि चक्र तलि ॥१८॥

—पृ० २४३

'सोलह सै संमस, हूओ जोगणपुर चाल ।

सम्मै एकासिये मास कांती वडाल ।

पूनम थावर वार, सरद रित है पालट्टी ।

वीर खेत पूरव रित हेमन्त प्रघट्टी ।

सुरताण खुरम भागी भिडै, चाडि चकयां चक्कवै ।

गजसिंघ प्रवाडौ खट्टियो, वहे भीम चीतौडवै ॥२०॥

—पृ० २४३

उपर्युक्त छप्पयों के अनुसार यही सिद्ध होता है कि भीम सीसोदिया महा-राजा गजसिंह द्वारा ही मारा गया । यहाँ पर यह शंका पैदा हो सकती है कि कवि महाराजा का आश्रित था, यद्यपि अभी तक किसी भी इतिहासकार ने इस ग्रंथ का संदर्भ देकर शंका प्रकट नहीं की है, तथापि ख्यातों और फारसी तवारीखों में मेल नहीं होने के कारण वीरविनोदकार तथा डॉ० गीरीशंकर हीराचन्द ओझा ने गजसिंह द्वारा भीम का मारा जाना नहीं लिखा है और ख्यातों के आधार पर इस घटना को एकांगी और पक्षपातपूर्ण बतलाया गया है । इसके जवाब में यह कहा जा सकता है कि स्थान-विशेष के एक या दो राज्याश्रित कवि तो पक्षपातपूर्ण तथा झूठ लिख सकते हैं, किन्तु गजसिंह द्वारा भीम को मारे जाने के विभिन्न स्थानों के कवियों के विभिन्न गीत मिलते हैं, क्या उन सभी ने (जो गजसिंह के आश्रित नहीं थे) पक्षपातपूर्ण तथा झूठ लिखा है ? प्रमाण के लिए उनमें से कुछ गीतों को (परिशिष्ट में न देकर) यहां उद्धृत किया जाता है ।

गीत वडौ सांणोर

मथै ज्याग रिण महण असुरां सुरां मारकां,

वाधियो मंडोवर खाग वाहै ।

पियाली जहर री "अमर" री विरद-पत,

"सुर" री महाखर लियो सांहे ॥१॥

जुष समंद विरोल देव दांगव जिहीं,

दूसरां नरां नह भाग दीघी ।

"सुर" तण सगह विख हुतो सीसोदियो,

कमघ त्रय नयण गरकाव कीघी ॥२॥

१. डॉ० गीरीशंकर हीराचन्द ओझाकृत जोधपुर राज्य का इतिहास भाग १, पृ० ३६४;
वीरविनोद भाग २, पृ० २८८

हीलोल ससर समदर गहर हेकठा,
 दरसियो आहाडी हलाहल दाय ।
 जटाघर जेम गजसाह राजा जुई,
 घूट कीघी भली हेकणी छाप ॥३॥
 अखाडी महोदध डोहते ऊकठी,
 पंथ अन सुपह विमुहा पघारै ।
 "भीम" सिरखा कहर "माल" हर भयंकर,
 जहर "गाजी" संकर तू हीज जारै ॥४॥
 (किसनी आढी)

बेलियो सांणोर

गजवंधी हंस अभिनमै "मांगे,"
 सुज निज हेत खेध कर साथ ।
 जल जिम खल मूके साहिजादो,
 "भीम" दूध भखियो भाराथ ॥१॥
 मलप मुणाल जिहीं जुध माथे,
 दाखें दुनी वदें देसोत ।
 चगतां वार मार चालवियो,
 गिलियो पै मिलियो गहलोत ॥२॥
 सावक सूरजसिध समोभ्रम,
 पै म वेर जांणी सप्रमाण ।
 नीर टाल जहांगोर सुनंदण,
 खोर जिहीं भखियो "खूमांण ॥३॥
 भाल हरै वध सुछल महारिण
 आखें सह मानव सुर-ईस ।
 पांणी असुर विरील पीधो,
 भारी दूध तणी पर भीम ॥४॥
 (कल्याणदास महङ्ग)

गीत-बेलियो सांणोर

कुर-खेत अनै वाणा-रस कलहरा,
 घारां मार उडाई घींग ।
 खाधा "भीम" अढ़ारै खोयण,
 सोईज 'भीम' खाद्यी गजसींग ॥१॥
 जुजठल अनै दुजोयण जुड़िया,
 दाव खुरमं जांहगीर दियो ।
 मंडोवरै वोकोदर नांमी,
 कर तंडल आचमन कियो ॥२॥

बंधवां वेष खेध चढ़ बैठे,

खेटे घरती तरणे खरे ।

“सांगा” हरी सालियो समहर,

हुवां वेढ़ रिडमाल हरे ॥३॥

पोरस प्रभत निमी जोषपुरा,

वडा प्रवाडा भुजां वणे ।

अमरावत भलियो आखाडे,

तिजडां मुहडे “सूर” तज ॥४॥

(चतरी-मोतीसर)

पं० रामकर्ण आसोपा ने अपने ‘मारवाड़ के संक्षिप्त इतिहास’ में पृ० ३५४-५५ के अनुसार सीसोदिया भीम हाथी पर सवार था। महाराजा ने उसी को लक्ष्य बनाया। उस समय महाराजा के साथ तीन सामंत वीर थे। कूपावत गोरधन, खींची शंकरदास और गोविंददास जो हाथी से कुछ दूर रह गया और शत्रुओं से लड़ता मारा गया। कूपावत गोरधन तलवार चलाता हुआ महाराजा के आगे बढ़ा। खींची शंकरदास दोनों हाथों में दो तलवार रखता और दोनों तलवारों से काम लेता था। कूपावत गोरधन शंकरदास से हमेशा मजाक किया करता कि यह दुगना लोहे का भार क्यों उठाते हो? वह उत्तर में हंस कर कहता कि कभी काम पड़े तब देख लेना। यहां तलवार चलाते-चलाते महाराजा की तलवार टूट गई तब शंकरदास ने अपने बांये हाथ की तलवार महाराजा को दे दी। यद्यपि सिलहखाने (शस्त्रागार) का दरोगा लवेरा ठाकुर साथ में था, परन्तु वह उस मारामारी में पीछे रह गया था। महाराज ने भीम को पीछे से हाथी पर से गिरा कर उसी खींची की तलवार से भीम का काम तमाम किया। बाहशाह की विजय हुई। खुर्रम भाग गया। महाराजा ने उस सेवा से प्रसन्न होकर खींचियों के अधिकार में सिलहखाना (शस्त्रागार) दिया। वह अब तक खींचियों के अधिकार में रहा।

प्रसिद्ध इतिहासकार पं० आसोपा साहब के उक्त लेख को भी यदि कोई शंका की दृष्टि से देखे, तो उक्त लेख में वर्णित दो तथ्यों के अन्य प्रमाण दिये जाते हैं जिनमें से पहला तथ्य है—भीम सीसोदिया का युद्ध में हाथी पर सवार होना (महाराजा गजसिंह ने भाला फेंक कर भीम को हाथी पर से गिराया और फिर मारा), इसकी पुष्टि उदयपुर के बाबू रामनारायण दूगड़ के “महाराजा-भीम सीसोदिया” निबंध से (जो नागरी प्रचारिणी पत्रिका, भाग १, संवत् १९७७ के पृ० १८२ से १९० पर छपा है) होती है। इस लेख में यह भी लिखा गया

है कि महाराजा गजसिंह ने ही युद्ध के परिणाम को पलट दिया और शाही हार को जीत में परिणति कर दिया तथा भीम को मार कर बागी शाहजादे खुर्रम को भगा दिया ।

भीम को महाराजा गजसिंह द्वारा हाथी पर से गिराये जाने का प्रमाण एक अन्य ग्रंथ (जो मेरे निजी संग्रह में संगृहीत है) में मिलता है । यह ग्रंथ कवि हेम सांमीरकृत 'भाखा-चरित्र' है । इसके अनुसार:—

कोपि तांम कमधज पछे उरि कूंत प्रहारै ।

पयोधरा खडहडै हंस आया बल हारै ॥

—पृ० २२ (A)

अर्थात् कमधज (राठौड़ गजसिंह) ने तब कोप करके कूंत (भाले) से सीने पर प्रहार किया, तो बादल जैसे काले रंग के समान हाथी पर से भीम नीचे गिरा और गिरते समय उसका प्राण (हंस) बलहीन हो गया ।

दूसरा तथ्य जो पं० आसोपा के उक्त लेख में है, वह है भीम से लड़ते हुए महाराजा गजसिंह की तलवार टूटना और खीची शंकरदास द्वारा अपनी दूसरी तलवार देना, जिससे भीम का काम तमाम हुआ था । इस तलवार के टूटने का उल्लेख मेरे निजी संग्रह में संगृहीत जोधपुर के स्व० किशोरदानजी बारहठ के संग्रह का एक गीत (जिसकी रचना भीम सीसोदिया के अग्रज महाराणा कर्णसिंह के कहने पर उनके दरबारी कवि सीदा बारहठ खेमराज खेमपुरा (मेवाड़) वाला ने की थी) होती है । यह गीत नीचे उद्धृत किया जाता है:—

अंग लागे वांण जूजवा उडै, गै गजै वाजै गुरज ।

भाजै नहीं दिली-दल भिडंता, भीमड़ा हड़मत तरा भुज ॥१॥

वरंगलु भड्डै ऊधडै बगतर, चौघारां घारां खग चोट ।

ओट होय मंडियी अमरावत, काली पडै न मैमत कोट ॥२॥

गोला तीर आछटै गोला, दोला आलमतणा दल ।

पड दडयड चडयड चहुँ पासै, खूमांण लू बिया खल ॥३॥

'पासल' हरा ऊपरा पड भव, खल सूटा तूटा खडग ।

'पांडवनामो' नीठ पडियी, लग ऊगमण आथमण लग ॥४॥

उदयपुर-राज्य के इस कवि ने अपने उक्त गीत में तलवार टूटने का उल्लेख किया है । जैसा कि गीत के अन्तिम द्वाले से स्पष्ट संकेत मिलता है—तलवार टूटी (टूटा खडग), पांडवनामो (पांडव भीमसेन के नाम वाले) भीम सीसोदिया को मारा (पांडयो) । उक्त गीत उदयपुर वाले बाबू रामनारायण जी दूगड़ के निबन्ध के अन्तर्गत 'नागरी प्रचारणी पत्रिका' में भी छप चुका है ।

तीसरा राजस्थान पुरातन ग्रंथमाला जयपुर, द्वारा प्रकाशित ग्रंथ (ग्रंथांक २१—‘बांकीदास री ख्यात’ पं० नरोत्तमदासजी स्वामी द्वारा संपादित) के पृ० २७ पर मुद्रित बात संख्या २८७ उद्धृत की जाती है—“संवत् १६८१ रा काती सुद १५ महाराज गजसिंघजी सीसोदिया भीम अमरसिंघोत नू जंग में मारियो ।”

चौथे राजगढ़ के शासक ठाकुर अर्जुन गौड़ का दरबारी कवि महेसदास रावकृत “राव अमरसिंघजी को साकी” में महाराजा गजसिंह द्वारा भीम सीसोदिया को मारे जाने का उल्लेख है, यथा—

“राजा “सूर” रं पाटि गजसिंघ राजे ।

बसु उपरां जेणि रा ब्रब बाजे ।

भडे तेणि गंगा - तटे भीम भंजे ।

बल साहि जिहांन अपांन बंजे ॥”

मेरे विचार में उपर्युक्त प्रमाणों के होते हुए भीम सीसोदिया का महाराज गजसिंह द्वारा मारे जाने में संदेह करने का कोई स्थान नहीं रहता है ।

प्रति परिचय

गज-गुरा-रूपक बंध के सम्पादन में उपयोग में लाई गई प्रमुख हस्तलिखित प्रतियां निम्न हैं :—

(अ) यह प्रति मेरे लघु भ्राता जैतदान के संग्रहालय की है । इस प्रति में प्रतिलिपिकार ने नाम, काल व स्थान का कोई उल्लेख नहीं किया है । मूल प्रकाशित भाग इसी प्रति पर आधारित है ।

(आ) यह प्रति राजस्थान-प्राच्य-विद्या-प्रतिष्ठान जोधपुर के भूतपूर्व संचालक पद्मश्री मुनिजी महाराज श्रीजिनविजयजी से प्राप्त हुई । इस प्रति में भी प्रतिलिपिकार का नाम, काल और स्थान प्राप्त नहीं हुआ । पाठान्तर प्रायः इसी प्रति से उद्धृत किए गये हैं ।

(इ) यह प्रति भी प्राच्य-विद्या-प्रतिष्ठान से प्राप्त हुई । आवश्यक पाठान्तर देने के निमित्त इसका सहयोग भी लिया गया है ।

इनके अतिरिक्त एक और प्रति (जो मेरे निजी संग्रहालय की है) का भी उपयोग ग्रंथ के अर्ध-भाग के प्रकाशन के पश्चात् हो सका है क्योंकि यह प्रति मुझे ग्रंथ के अर्ध-भाग-प्रकाशन के पश्चात् ही दृष्टिगत हुई । यह प्रति जोधपुर के पुरोहित श्रीमोतीलाल द्वारा लिखित है तथा इसका पाठ मूल ‘अ’ प्रति के पाठ से अधिक समता रखता है ।

ग्रंथ का शीर्षक जो मुख्य-पृष्ठ पर दिया गया है, प्रति ‘अ’ के अनुसार ही, अधिक उपयुक्त एवं ग्रंथपरिचयात्मक मान कर, लिया गया है ।

राजस्थानी में दो अक्षरों वाले शब्दों में जिनका पहला अक्षर आ स्वर से युक्त हो तथा दूसरा अक्षर अनुनासिक हो-अनुनासिक वर्ण के पूर्वाक्षर पर प्रायः अनुस्वार लगता है। सम्पादन में मैंने इस अनुस्वार को स्वीकार करके मूल पाठ सर्वत्र अपनाया है।

इसी प्रकार प्राचीन राजस्थानी में 'ड' का उच्चारण नहीं था अतः प्राचीन प्रतियों के अनुसार ही मूल पाठ में सर्वत्र ड को ङ न करके ज्यों का त्यों 'ड' ही रहने दिया है। किन्तु ल और ल की ध्वनि का ध्यान रखकर यथास्थान ल या ल कर दिया है यद्यपि हस्तलिखित प्रतियों में प्रायः ल की ही बहुलता है।

आभार प्रदर्शन

प्रस्तुत काव्य-ग्रंथ के सम्पादन में प्राच्य-विद्या-प्रतिष्ठान के उप निदेशक श्री गोपालनारायणजी बहुरा द्वारा पर्याप्त सहयोग प्राप्त हुआ है। मैं आपके प्रति हृदय से आभारी हूँ। साथ ही डॉ० पुरुषोत्तमलालजी मेनारिया को भी, जिन्होंने समय-समय पर प्रूफ-संशोधन में मुझे सहयोग प्रदान किया, हृदय से धन्यवाद अर्पित करता हूँ। साथ ही कवि केशवदास के जीवन-सम्बन्धी अमूल्य एवं महत्वपूर्ण सामग्री प्रदान करने के लिए श्री देवकरणजी वारहट, इंदोकली का भी हृदय से आभार प्रकट करता हूँ। ग्रंथ के शुद्ध एवं सुव्यवस्थित प्रकाशन के लिए श्री हरिप्रसादजी पारीक, व्यवस्थापक साधना प्रेस, जोधपुर भी धन्यवाद के पात्र हैं।

शरद पूर्णिमा, सं० २०२४ }
दि० १७ अक्टूबर, १९६७ }

सीताराम लाळस

गाडण केसोदास कृत

गज गुण रूपक-बंध

॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री मद्विस्टाय नमः ॥ स्त्री सद्गुरुभ्यो नमः ॥

। “गुण रूपक-बंध” महाराजा श्री गजसिंघजी नू गाडण केसोदास कृत लिख्यते ।*

पंचदेव मंगळाचरणम्

गाहा

देवी सुमंति^१ - दायाः, वीणा^२ - करेणि हंस - वाहणयाः ।

जग - जिणणी^३ जोगमायाः तस्यै सारदाय नमो^४ ॥१॥

सूडा^५ - डंड प्रचंडीः, मूसा आरुढ मेक मय^६ दंतीः ।

ईस्वर^७ उमया^८ पुत्रीः^९, तस्मै गुणेशाय^{१०} नमो^{११} ॥२॥

अरधंगि हेम - पुत्रीः, सरपी कंठेणि वाहणी सांडी ।

सिखा^{१२} - नेत भाल चंदीः, तस्मै^{१३} रुद्राय नमो^{१४} ॥३॥

धारणी गदा चक्रौः^{१५}, संखी^{१६} पदम पाणि^{१७} सारंगी ।

कमळा - कंत^{१८} कनीः, तस्मै नारायण नमो^{१९} ॥४॥

अंतरिख^{२०} वोम मगोः, खैडण^{२१} सपतास मेकरथ-चक्रौ^{२२} ।

सारथि^{२३} पंग अरुणीः, तस्मै^{२४} सूरज्याइ नमो^{२५} ॥५॥

आ - * श्री गणेशायनमः ॥ श्री मद्विष्टादेवाय नमः ॥ श्री सद्गुरुभ्यो नमः ॥ गुण रूपक-बंध
महाराजा श्री गजसिंघजी नू गाडण केसोदास कृत लिख्यते ।

इ - * श्री गणेशायनमः ॥ अथ गुण रूपक बंध महाराजा श्री गजसिंघजी रो गाडण केसो-
दास कृत लिख्यते ।

१ आ.इ. सुमंति । २ वाणा । ३ आ. जिणजी । ४ भिणणी । ५ आ.इ. नमः ।

६ आ. शूडा । ७ इ. मय । ८ आ. ईस्वर । ९ आ.इ. उमया । १० आ. पुत्री ।

११ आ.इ. गुणेशाई । १२ आ.इ. नमः । १३ आ.इ. सिष । १४ आ. तसमै । १५

आ.इ. नमः । १६ आ.इ. चक्रौ । १७ आ. संघो । इ. संपी । १८ आ. पदमयाणि । इ.

पदमयाणि । १९ आ.इ. कमलाकंत । २० आ. नमः । इ. नमः । २१ आ.इ. अंत-

रिष । २२ आ.इ. खैडण । २३ आ.इ. चक्रौ । २४ आ. सारथि । २५ आ. तसमै ।

२६ आ.इ. नमः ।

दूहा

आदि सकत्ति^१ गुणाधिपति^२, हो हर हरि ग्रह - राउ^३ ।
 पंचइ^४ देव प्रसन्न^५ हुइ^६, आपी^७ बुद्धि^८ पसाउ^९ ॥१॥
 बांणि अनादह फुड^{१०} वयण^{११}, सुभ भाखा सरजित्त^{१२} ।
 गाहा करई^{१३} वर^{१४} रसाउला^{१५}, दूहा छंद कवित्त^{१६} ॥२॥

पूरव वंस वरणण

रुघवंसी राठौड हर^{१७}, तेरह साख^{१८} कमंध ।
 विमर सकत्ती^{१९} वरणवां^{२०}, बंधे रूपक बंध ॥३॥
 सतजुग त्रेता^{२१} द्वापुरहि, कलि-जुगे^{२२} खत्र^{२३} घौड^{२४} ।
 सिर नवखंडां^{२५} मेदनी, चिहूं^{२६} जुगे राठौड^{२७} ॥४॥
 अवसर दांन ज अप्पही^{२८}, रिण भज्जै^{२९} मुंह^{३०} मोड^{३१} ।
 राठौडां^{३२} कुळ मेहणी, ते खत्री^{३३} पण खौड^{३४} ॥५॥

कवित

प्रिथमी^{३५} आदि जुगादि वीर वसुधा वर खत्ती^{३६} ।
 वलि^{३७} राजा चकवै^{३८} मांनधाता चकवत्ती^{३९} ॥
 भारथही^{४०} कुरुखेत^{४१} करन गौ कत्थ^{४२} रहावै^{४३} ।
 मेछा बाण भळावि, क्रीत^{४४} कमधजां भळावै^{४५} ॥

१ आ.इ. सकति । २ आ. गुणाधिपतिः । ३ आ. ग्रहराऊ । इ ग्रहराव । ४ आ. पंचइ । इ. पंचई । ५ आ.इ. प्रसन्न । ६ आ. हुई । ७ इ. आयौ । ८ आ.इ. बुधि । ९ इ. पसाऊ । १० आ.इ. फुड । ११ आ. चयण । १२ आ. सरजित्तः । इ. सरभित्त । १३ आ. कर । इ. काई । १४ आ. वर । १५ इ. साऊला । १६ आ.इ. कवित । १७ आ. हरः । १८ आ.इ. साष । १९ आ.इ. सकती । २० आ. वरणवां । इ. वरणवा । २१ आ.इ. त्रेता । २२ आ.इ. जुगे । २३ आ. पत । इ. पत्रू । २४ इ. घौड । २५ आ. नवपेडां । इ. नवपंडा । २६ आ.इ. चिहु । २७ आ. रठौड । २८ आ.इ. अपही । २९ आ. भजै । इ. भजै । ३० आ.इ. मुह । ३१ आ. मोड । इ. मोड । ३२ आ. रठौडां । इ. राठौडां । ३३ आ. पत्ती । इ. पत्री । ३४ आ.इ. पोड । ३५ आ. प्रिथमा । इ. प्रथम । ३६ आ.वरपत्ती । इ. वरपत्री । ३७ इ. वलि । ३८ आ.इ. चकवै । ३९ इ. चकवती । ४० आ.इ. हि । ४१ आ. कुरुखेत । ४२ आ.इ. कथ । ४३ आ. रहावै । ४४ आ.इ. क्रीत । ४५ आ. भलावै ।

जैचंद हुआ दल^१ पांगुली^२, असी लख^३ साहण सधर ।
छत्तीस^४ वंस राजा^५ कुली^६, वडी वंस राठीड^७ हर ॥१॥

राव सीहा री द्वारका जात्रा और लाखा फूलांणी नै मारणी

सेतरांम संभ्रमी^८, इला^९ ऊठियै^{१०} कनूजा^{११} ।
जगत जात रिणछोड, कीध वेदो-गति पूजा^{१२} ।
चाओडी परचाड वहै लाखी^{१३} फूलांणी ।
धारां धड ऊतारि चाडि राठीडां^{१४} पांणी ।

पड गाहै^{१५} पट्टण^{१६} आप बल^{१७}, दोमभि^{१८} भंजै कच्छ^{१९} दल ।
पूरव^{२०} हुंत^{२१} आवै^{२२} पछिम, सीह प्रवाडी^{२३} किय^{२४} सबल ॥२॥

सीहै जाइ^{२५} सेंदेस् कथन कहियो^{२६} कमधज्जां^{२७} ।
मारि लियो^{२८} मारकां, किसान पुरदीप सकज्जां^{२९} ।
सीह वयण समधरे, खडग^{३०} उपाडे^{३१} हथल^{३२} ।
सीहैरा सीधली^{३३} सीह^{३४} ऊठिया^{३५} सहस बल ।

परभोम लई^{३६} समदां^{३७} लगै, राठीडां^{३८} साका रहै^{३९} ।
गलहथ^{४०} वंस गोहिलां तणी, वेड^{४१} खडग^{४२} गहि^{४३} संग्रहै^{४४} ॥३॥

राव सीहा रा पुत्रां री वरणण-गजसींध तक मारवाड रा राठीड राजाआं री वंसावली
सीहै^{४५} आप सीरखा^{४६}, जोध जाया कांधोधर ।
आसथान अणभंग, अज्ज^{४७} सोनंग^{४८} दुनै कर ।

१ आ.इ. दल । २ आ.इ. फंगुली । ३ आ.इ. लख । ४ इ. छत्तीस । ५ इ. राजा । ६ आ.इ. कुली । ७ आ. राठीड । ८ आ.इ. संभ्रमी । ९ इ. ईला । १० आ.इ. ऊठियै । ११ इ. कनूजा । १२ इ. पूजा । १३ आ. लख । १४ आ. राठीडां । १५ आ.इ. गाहे । १६ आ.इ. पट्टण । १७ आ. बः । १८ आ. दोमजि । १९ आ.इ. कच्छ । २० आ.इ. पूरव । २१ आ. हुत । इ. हुंत । २२ आ. आवै । २३ आ. प्रवाडी । २४ आ.इ. किय । २५ आ.इ. जाई । २६ आ. कहियो । इ. कहियो । २७ आ.इ. कमधजां । २८ इ. लियो । २९ आ.इ. सकजां । ३० आ.इ. खडग । ३१ इ. उपाडे । ३२ आ.इ. हथल । ३३ आ. सीधला । इ. सीधली । ३४ आ.इ. सीह । ३५ आ.इ. उठिया । ३६ आ.इ. लई । ३७ आ.इ. समदां । ३८ आ. राठीडा । इ. राठीडां । ३९ आ.इ. रहे । ४० आ.इ. गलहथ । ४१ आ. वेड । इ. पेड । ४२ आ. खडग । ४३ इ. हि । ४४ आ.इ. संग्रहै । ४५ इ. सीहे । ४६ आ. सीरिषा । इ. सारिषा । ४७ आ. अज । इ. अम् । ४८ आ.इ. सोनिंग ।

मुरधर संखौ^१ धार, लियौ^२ लोहां बळि^३ ईडर ।

वसू^४ लाख^५ छत्तीस^६ पूठि कनौज^७ वडौ घर ।

आसथानं तणी^८ धूहड हुआ^९, राईपाल^{१०} धूहड तणै ।

राठौड^{११} सदा लगे आदि हर, समवड दिल्ली^{१२} गंजणै^{१३} ॥४॥

कन्हराव कुळ^{१४} तिलक, जोध^{१५} जग^{१६} जेठी^{१७} 'जाल्हण'^{१८} ।

छाडी तीडी सलख^{१९}, वीर वैरी विभाडण ।

चूंडराव^{२०} रिणमल्ल^{२१}, राऊ^{२२} 'जोधौ'^{२३} रठ^{२४} रामण ।

'सूजी'^{२५} 'वाघौ'^{२६} 'गंगेव', 'माल' गढ^{२७} कोट पलटण^{२८} ।

उदैसिघ गई वालण^{२९} इला^{३०}, सूरसिघ सांमुद्र^{३१} भणि ।

गजसिघ^{३२} हुआ उतपन्न^{३३} ग्रहि, जाणि^{३४} बियो^{३५} सिसिहर गयणि ॥५॥

महाराजकुमार गजसिघ री जनम

घड़ी मंडि^{३६} घडियाळ^{३७}, जोइ जोतिक^{३८} जोईसी^{३९} ।

जनम-जोग^{४०} लिख^{४१} लिखौ^{४२}, ताम^{४३} त्रीकाळ^{४४} दरस्सी^{४५} ।

ब्रह्मसपती^{४६} वुध^{४७} सुक्र^{४८} केत केयद^{४९} महावळ^{५०} ।

राह छनीछर छठै^{५१}, छठै थिय^{५२} सूरज^{५३} मंगळ^{५४} ।

उडपती^{५५} भवण इग्यारमै^{५६}, आगम^{५७} कंध अनम्मियौ^{५८} ।

'गजबंध' इता^{५९} बळिवंत^{६०} ग्रह, ले जस^{६१}-राति जनम्मियौ^{६२} ॥६॥

१ आ.इ. संघोधार । २ इ. लीयौ । ३ आ.इ. बलि । ४ आ. वसुं । इ. वसू ।

५ आ.इ. लाख । ६ आ.इ. छत्तीस । ७ आ. कनौज । इ. कनौक । ८ इ. तणी ।

९ आ.इ. हुआ । १० आ. राईपाल । इ. रायपाल । ११ इ. राठौड । १२ इ.

दिली । १३ इ. गंजणै । १४ आ.इ. कुल । १५ इ. भोध । १६ इ. भग । १७ इ.

जेठी । १८ इ. जाल्हण । १९ आ.इ. सलख । २० आ.इ. चूंडराव । २१ आ.इ.

रिणमल । २२ इ. राऊ । २३ आ. जोधौ । इ. भोधौ । २४ आ. रठ रामण । इ.

रठ रामण । २५ आ.इ. सूजी । २६ आ. वाघ । २७ आ. मालगट । २८ आ.इ.

पलटण । २९ आ.इ. वालण । ३० आ.इ. ईला । ३१ आ.इ. समुद्र । ३२ इ.

गभसिघ । ३३ आ.इ. उतपन । ३४ इ. भांणि । ३५ आ. वीयौ । इ. वीयो । ३६

आ. मंड । ३७ इ. घडियाळ । ३८ इ. भोतिक । ३९ इ. भोइसी । ४० इ. भोग ।

४१ आ.इ. लिख । ४२ आ. लीयौ । इ. लीण्यौ । ४३ आ. ताम । ४४ आ. त्रिकाल ।

इ. त्रिकाल । ४५ आ.इ. दरसी । ४६ आ. ब्रह्मसपति । इ. ब्रह्मसपति । ४७ आ.इ. वुध ।

४८ आ. श्रुक्र । इ. श्रुक्र । ४९ आ. केयद । इ. कदये । ५० आ.इ. महावल । ५१

आ.इ. छठै । ५२ आ.इ. थियौ । ५३ आ. सूरज । इ. सूरभि । ५४ आ.इ. मंगल ।

५५ आ. उडपति । इ. उडमति । ५६ आ.इ. इग्यारमै । ५७ आ. आगम । ५८ आ.

अनमीयौ । इ. अनमीयौ । ५९ आ.इ. इता । ६० आ.इ. बलिवंत । ६१ इ. भस ।

६२ आ. जनमीयौ । इ. जनमीयौ ।

महाराज कुमार गजसीध री धरण

कमळ^१ वीय ससि-कळा^२, कळा^३ वडती^४ जग^५ वदै ।
 कळाहीण^६ खळ^७ हुवै, जेम^८ निस पूनिम चंदै ।
 भुज^९ विसाळ^{१०} लंकाळ^{११}, वरण भाळाहळ^{१२} सुंदर^{१३} ।
 भरि मातै भाद्रवै, जाणि^{१४} ऊगौ^{१५} भासंकर ।
 बत्तीस^{१६} लखण^{१७} सुभ आचरण, बाळपणै^{१८} हूअौ^{१९} तरुण ।
 कमधज्ज^{२०} कुंअर^{२१} कमधज्ज हर^{२२}, राजहंस मूरति मईण^{२३} ॥७॥
 गात मेर गज^{२४} भीम, महा जोधा^{२५} ऊतळी^{२६}-बळ ।
 भुजां^{२७}-डंड परचंड, जेम गंगा-जळ^{२८} ऊजळ^{२९} ।
 किरणां कळ कळ^{३०} कमळ^{३१}, सकळ^{३२} भाळाहळ^{३३} निम्मळ^{३४} ।
 तेज पूंज राजांत, धीर कांधोधर धम्मळ^{३५} ।
 कमधज्ज^{३६} वंस ऊदोत^{३७} कर, कमधज्जां^{३८} कुळि^{३९} आभरण ।
 गरजियौ^{४०} पिता वेटै 'गजण', पिता पाट पाटो-धरण ॥८॥
 कांधमल्लही^{४१} सऊ^{४२}, जोध रिणमल^{४३} तणै धरि ।
 पिडि अचल्ल^{४४} अणपल्ल^{४५}, ठल्ल^{४६} गज^{४७} ढाहण मच्छरि^{४८} ।
 खळ^{४९} प्रत्यळ खळ^{५०} सयळ^{५१}, बत्थ^{५२} दे बळह^{५३} तणी परि ।
 खडग^{५४} भल्ल^{५५} जग भल्ल^{५६}, करण आंकल्ल^{५७} घणा अरि ।

- १ आ.इ. कमलि । २ आ.इ. ससिकला । ३ आ.इ. कला । ४ इ. चंडती । ५
 इ. भग । ६ आ.इ. कलाहीण । ७ आ.इ. पल । ८ इ. भेम । ९ इ. भुक्त । १०
 आ.इ. विसाल । ११ आ.इ. लंकाल । १२ आ.इ. भालाहल । १३ आ. भुंदर । १४
 आ. जाणि । १५ आ. भाणि । १६ आ. उगौ । १७ आ.इ. बत्तीस । १८ आ.इ. लखण ।
 १९ आ.इ. बालयण । २० आ. हूअौ । २१ आ.इ. कमधज । २२ आ.इ. कुअर । २३
 आ.इ. कमधज । २४ आ.इ. मईण । २५ आ. गक्त । २६ इ. भोध । २७ आ.
 अतुलीबल । २८ आ. भुजा । २९ आ. भुक्ता । ३० आ. गंगाजल । ३१ आ. गंगाकळ । ३२
 आ. उजल । ३३ आ. उमल । ३४ आ.इ. कलकल । ३५ आ.इ. कमल । ३६ आ.इ.
 सकल । ३७ आ.इ. भालाहल । ३८ आ. निमल । ३९ आ.इ. धमल । ४० आ.इ. कमधज ।
 ४१ आ.इ. कमधक्त । ४२ आ.इ. उदोत । ४३ आ.इ. कमधजां । ४४ आ.इ. कुलि ।
 ४५ इ. गरभियौ । ४६ आ.इ. कोधमल । ४७ आ. सऊ । ४८ आ.इ. हीसल । ४९
 आ.इ. रणमल । ५० आ.इ. अचल । ५१ आ.इ. अणपल । ५२ आ.इ. टल । ५३ इ. गक्त ।
 ५४ आ.इ. मछरि । ५५ आ.इ. बल पथल । ५६ आ.इ. पल । ५७ आ.इ. सयल । ५८
 आ.इ. बथ । ५९ आ.इ. षल । ६० आ.इ. खडग । ६१ आ.इ. भल्ल । ६२ आ.इ. भल ।
 ६३ आ.इ. आकल ।

जस गल्ह रहावण जे सहल, मइयळ^१ भंजै मेहवर ।
 'गजमल्ल'^२ 'मल्ल'^३ 'गंगे' कुली^४, रिण दुभल्ल^५ रठ्ठीड^६-हर ॥६॥

नर नरिंद अणनिंद, विंद वांकिम्म^७ वीर वर ।
 सुत सुरिंद^८ हरचंद, कंद काढण केवी हर ।
 देहाचंद दुडिंद^९ इंद^{१०} फुणियंद मिणंधर^{११} ।
 नर संमद राजिंद, कृपा^{१२} गोविंद विसंभर ।
 विभाड^{१३} गयंद मयंद^{१४} विध, महि सांमंद इधकै मच्छरि^{१५} ।
 'सूरउत'^{१६} प्रगट नवनंद सिर, गरु अति मेर गिरंद सिरि^{१७} ॥१०॥

बाण पत्थ^{१८} बळि^{१९} भीम, जिसौ अहंकार^{२०} हि रांमण^{२१} ।
 जिसौ वाच जुजठिल्ल^{२२}, जिसौ मांणाहि^{२३} द्रोजोवण^{२४} ।
 समरि करन^{२५} बळिराव, दांन दद्धीच^{२६} जिसौ भणि ।
 साहस विकमाईत, भोज राजा^{२७} जाणै परिण^{२८} ।
 आरंभ रांम आरंभ गुरु, पारधही फरसां धरण^{२९} ।
 गजसिंघ महण गंभीर पण, कळा तेज संहस^{३०} किरण^{३१} ॥११॥

एक राऊ^{३२} थप्पइण^{३३}, एक रावां ऊथप्पण^{३४} ।
 एक राव गढ़ लियण, एक रावां गढ़ अप्पण^{३५} ।
 एक राव परिभवण, एक रावां पडि गाहण ।
 एक राव जड गमण, एक राऊ^{३६} सरणै रक्खण^{३७} ।
 इक^{३८} राव रंक करि रोळवण, एकां आलंवण थियी^{३९} ।
 कमधज व्रजागि^{४०} 'गज' केसरी, आगि खाइ^{४१} इम ऊठियी^{४२} ॥१२॥

१ आ.इ. मईयल । २ आ.इ. गजमल । ३ आ.इ. मल । ४ आ.इ. कुलि । ५
 आ.इ. दुभल्ल । ६ आ. रठ्ठीड । ७ आ.इ. वांकिम । ८ आ. सुरिंद ।
 ९ अ. दुपिड । १० आ. ईद । ११ आ.इ. मिणंधर । १२ आ.इ. कृपा । १३ इ.
 विभा । १४ आ. मयद । १५ आ.इ. मच्छरि । १६ इ. सूरत । १७ आ.इ. सिर ।
 १८ आ.इ. पथ । १९ आ.इ. बलि । २० आ. अहंकार । २१ आ.इ. रांमण ।
 २२ आ.इ. जुजठिल्ल । २३ आ.इ. माणहि । २४ इ. द्रोजोवण । २५ आ.
 करन । २६ आ. दद्धीच । २७ आ. राजा । २८ आ. जाणवण । २९ आ.
 पण । ३० आ.इ. फरसाधरण । ३१ आ.इ. संहस । ३२ आ.इ. किरण । ३३ इ.
 राऊ । ३४ इ. थप्पइण । ३५ आ. उथप्पण । ३६ आ.इ. अपण । ३७
 आ.इ. राव । ३८ आ.इ. रक्खण । ३९ आ.इ. थियी । ४० आ.इ. व्रजागि ।
 ४१ आ.इ. खाई । ४२ आ.इ. उठियी ।

दूहा

कोटा^१ मेवट गढ गिळण , सुरिताणां उरिसल्ल^२ ।
 'गाजीसाह' अभिन्नमो^३ , दादो 'माल' दुभल्ल^४ ॥१॥
 दाने लख^५ कोडी दियण , जुडि जीपण रिण जंग^६ ।
 सूरजिसिघ^७ समोभ्रमी^८ , दूजो 'गंगा' अभंम ॥२॥
 गजपत्ती^९ दातार गुर , सहि कामे समरत्थ^{१०} ।
 रिण डोहण रिणमल जिसो , जोघ जिसो कळिमत्थ ॥३॥
 तेरां साखां^{११} जस^{१२} तिलक , राठोडां^{१३} छळ रक्ख^{१४} ।
 वीर उपत्तो^{१५} वीरवर , सिद्धां^{१६} धरि^{१७} साधिक^{१८} ॥४॥
 इन्द्र^{१९} प्रभत इंद्रह विभौ , इंद्र छभा अनांण ।
 इन्द्र समीवड रठवड^{२०} , हिंदूवै सुरतांण ॥५॥

छन्द रंगिका (रीगीका)

इंद अस्ट^{२१} भौ^{२२} आपांण , भौ तार जांमणि^{२३} भांण ।
 चवुदहौ^{२४} विद्या जांण^{२५} , बहोतरि^{२६} कळा^{२७} ।
 राग छत्तीस^{२८} मांणग रंग , सास्त्र^{२९} कोक सुचंग ।
 कमध अनंग अंग , धणी कमळा^{३०} ॥१॥

हद भूखण^{३१} वस्त^{३२} हीर , नित कमकमै नीर ।
 चंदण पैक^{३३} अंबरि^{३४} , चंपक दळं ।

- १ आ.इ. कोटा । २ आ.इ. उरिसल । ३ आ.इ. अभिनमो । ४ आ.इ. दुभल ।
 ५ आ.इ. लख । ६ इ. भंग । ७ आ. सूरजिसिघ । इ. सूरभिसिघ । ८ आ. समोभ्रमी ।
 ९ आ.इ. गजपत्ती । १० आ.इ. समरथ । ११ आ.इ. साखां । १२ इ. भस । १३ इ.
 राठोडां । १४ आ.इ. रण । १५ आ.इ. उपनी । १६ आ.इ. सिधां । १७ अ. यरि ।
 १८ आ.इ. साधिक । १९ आ. ईंद्र । २० आ. रठवड । इ. राठवड । २१ आ.इ.
 अष्ट । २२ आ.इ. भौ । २३ आ.इ. जामणी । २४ अ. चवदहौ । २५ इ. भांण ।
 २६ आ. बहोतरी । इ. बहोतरी । २७ आ.इ. कला । २८ इ. छत्तीस । २९ आ.
 सास्त । ३० आ.इ. कमला । ३१ आ.इ. भूषण । ३२ इ. वस्त । ३३ अ. पैक ।
 ३४ आ. अंबरि ।

काया केसरी^१ किसनागरि, जबाधि मै जळहरि^२ ।
मिग^३ नाभ^४ मलैतरि, मयाचळ ॥२॥

भ्रख^५ अढार भोजण भांणि, तंवोळ^६ मुख^७ तरणि ।
वाजेंद्र राह वाहणि, आरूढ वळे^८ ।
रिति वरखा^९ सरद^{१०} हैमंत, सेंसर हृद^{११} ।
वसंत गीखम^{१२} सद^{१३} सुख^{१४} सगळे ॥३॥

हेक चाढंत सीस हुकंम्म^{१५}, नमंत एक अनंम^{१६} ।
खडग^{१७} धारी खतम, आगळि^{१८} खडा^{१९} ।
जुडै भालियां^{२०} वागां जंगम गडडै जूह दुगम ।
काछियां^{२१} पाइ कम कम, स्रम^{२२} कन्नडा^{२३} ॥४॥

वंस छत्तीस^{२४} पांतवळ, कोठारां हुवै कळळ^{२५} ।
प्रगट न सदा सबळ^{२६}, ऊपट^{२७} पला ।
दे दे^{२८} हुवा रिदवट दन्न^{२९}, ऊधमै धिरत वन्न^{३०} ।
'वाघा'^{३१} हरौ खट वन्न^{३२}, करे सबळा^{३३} ॥५॥

'चूडै'^{३४} सारिखौ^{३५} चर सुगोल^{३६} भला ही भली^{३७} भूपाल^{३८} ।
कमधज प्रजंपाल^{३९}, अनंत करं^{४०} ।
दीपै भुजाई देव^{४१} मै कळा, रांणी रांणि रावताळा^{४२} ।
भडां हुवै भाटकळा^{४३} आठी पुहरं ॥६॥

१ आ.इ. केसरि । २ आ.इ. जलिहरि । ३ आ. मिग । इ. मृग । ४ अ. नाभ । ५ आ. भृष । इ. भष । ६ आ. इ. तंवोल । ७ आ.इ. सुष । ८ आ.इ. वले । ९ आ.इ. वरपा । १० आ.इ. सरद । ११ आ.इ. हृद । १२ आ.इ. गीषम । १३ आ.इ. सद । १४ आ.इ. सुष । १५ आ. हुकम । इ. हुंकम । १६ आ. अनम । १७ आ.इ. पडग । १८ आ.इ. आगली । १९ आ.इ. पडा । २० आ.इ. भालीयां । २१ आ.इ. काछीयां । २२ आ.इ. श्रम । २३ आ.इ. कनडा । २४ अ.इ. छत्तीस । २५ आ.इ. कलल । २६ आ.इ. सबल । २७ आ.इ. उपट । २८ आ.इ. दे दे । २९ आ.इ. दन । ३० आ.इ. अन । ३१ आ.इ. वाघा हरौ । ३२ आ. पटवन । इ. पट-वन । ३३ आ.इ. सबला । ३४ आ.इ. चूडै । ३५ आ.इ. सारिपी । ३६ आ.इ. चर सुगोल । ३७ आ.इ. भली । ३८ आ.इ. भूपाल । ३९ आ. पृजपाल । इ. पृज-पाल । ४० आ. कर । ४१ इ. देव । ४२ आ.इ. रावताला । ४३ आ. इ. भाटकला ।

ओल्लगै^१ ओटै लाख यार^२ भालिये^३ खागे^४ जूंभार^५ ।
 सामंत^६ निरोहासार, सोहड़ सूर।
 चुरै^७ प्रिसण आवध चोट, मंछराळा मन मोट ।
 प्रचंड^८ दुबाहा कोट, प्रवाडै^९ पूरा ॥७॥

लैभ बगसिजै कोड़ी लाख^{१०}, डूंगर खट^{११} भाख^{१२} ।
 तिलक तेरह^{१३} साख^{१४}, कमध कहै^{१५} ।
 चवै कीरति चंक^{१६} चारण, गज-पात कहै गुण ।
 पवंग गयंद पण, सांसण लहै^{१७} ॥८॥

आगे हुवंत नट औसर^{१८}, संगीत सपत सुर,
 नमंत निरत कर, पैगति निमै^{१९} ।
 अद^{२०} मादळ वाजै अदंग^{२१} अउबभति उपंग,
 निरूपै गीत नादंग, जस न जिमै^{२२} ॥९॥

सोमंडल^{२३} रबाब सार, रुद^{२४} वीणा भणंकार^{२५} ।
 तैत मझि घोर तार, ग्रामा^{२६} त्रिहणै^{२७} ।
 ताल^{२८} कंसाळ^{२९} झालरी टेक, अधोटी कच्छिबी^{३०} एक ।
 आगळी^{३१} वाजै अनेक^{३२}, बिबह वणै^{३३} ॥१०॥

रोडि द्रुमति ढोल रवद, सहनाई^{३४} भेर सद^{३५},
 निकेरी भेरी निनद, नोसांण धुवै^{३६} ।
 पंच सद^{३७} दमाम^{३८} पूर, रुडै^{३९} डूड रिणतूर ।
 प्रमाणै^{४०} मेघ पडूर (पडर), हैरांन हुवै ॥११॥

१ आ. ओलेगै । २ आ. लष यार । ३ आ. लाषयवार । ४ आ. भालीए । ५ आ. भालीयै । ६ आ. इ. पागे । ७ आ. इ. भूंभार । ८ आ. इ. सामंत । ९ आ. चुरै । १० आ. प्रचाडै । ११ आ. प्रवाडै । १२ आ. इ. लाख । १३ आ. इ. पट । १४ आ. इ. भाष । १५ आ. तई । १६ आ. इ. साष । १७ आ. कहे । १८ आ. इ. चंड । १९ आ. लहे । २० आ. और । २१ आ. निमै । २२ आ. इ. मृद । २३ आ. इ. मृदंग । २४ आ. जिमै । २५ आ. धीमंडल । २६ आ. इ. रुद वीणा । २७ आ. इ. भणकार । २८ आ. इ. ग्राम । २९ आ. त्रिहणै । ३० आ. ताल । ३१ आ. इ. कंसाळ । ३२ आ. इ. कच्छिबी । ३३ आ. इ. आगली । ३४ आ. इ. अनिक । ३५ आ. इ. वणै । ३६ आ. सहनाइ । ३७ आ. इ. सद । ३८ आ. इ. धुणै । ३९ आ. पंच सद । ४० आ. पंचसद । ४१ आ. माम । ४२ आ. दमाम । ४३ आ. रुडै । ४४ आ. प्रमाणै । ४५ आ. प्रमाण ।

निमौ^१ साहिब खेड^२ नरेस, आसति मति आदेस,
पर राठां हूंत^३ पेस, मेलहै^४ मंडली^५ ।
गढ़ जोधाण इसी^६ गहन, कुअर^७ दूसरी^८ करन ।
सूरज माल सुतन् सहंस^९ बली^{१०} ॥१२॥

सवाई महाराजा सूरसीध तथा महाराज कुमार गजसीध री वरणण

॥ कवित्त ॥

सहस पंच चत्र गांम^{११}, मंडि नवकोट मुरद्धर^{१२} ।
असी सहंस^{१३} रावतां, असी सह सहाई^{१४} पखर^{१५} ।
इळ^{१६} भूचै^{१७} आइ पद^{१८}, असी सहसां असवारां ।
सू^{१९} लडिया^{२०} नवलाख^{२१} खुंद^{२२} खारां खंधारां^{२३} ।

राठीड मौड^{२४} हिंदुवाण^{२५} सिरि, महा द्रुग^{२६} गढ़ जोधपुर ।
गजसिध कुंवर^{२७} निप^{२८} सूरसिध, सहवै^{२९} वंदे सुर असुर ॥१॥

मंडोवर मुरधरा, खेत^{३०} लोहडा^{३१} खुरसाणह^{३२} ।
नर समंद^{३३} तै नाम^{३४}, सह^{३५} सिर हिंदुस्थानह^{३६} ।
सातवीस मद मोख^{३७}, गुडै^{३८} मैगळ^{३९} मद मत्ता^{४०} ।
सहस पंच रठौड^{४१}, जोध असमांण^{४२} छिवत्ता^{४३} ।

गजसिध कुंअर^{४४} कुंअरां^{४५} तिलक, मल्ल^{४६} जेम जीपण कळह ।
जैचंद “ पंग ” राजा जिसी, सूरजसिध राजा सुपह ॥२॥

१ आ.इ. निमो । २ आ.इ. पेड - नरेस । ३ आ.इ. हूंत । ४ इ. मेलहे । ५ इ. मंडली । ६ आ. इसी । ७ इ. इसी । ८ यह शब्द आ. और इ. में नहीं मिला । ९ इ. दूसरी । १० आ.इ. सहस । ११ आ.इ. बली । १२ आ. चत गांम । १३ आ.इ. मुर-धर । १४ आ.इ. सहस । १५ इ. साहइ । १६ आ. पखर । इ. पाखर । १७ आ.इ. इल । १८ आ. भुचे । इ. भुचे । १९ आ.इ. पद । २० आ.इ. सु । २१ आ.इ. लडिया । २२ आ.इ. लाप । २३ इ. दुंद कारां । २४ आ.इ. पंधारां । २५ आ.इ. मौड । २६ आ.इ. हिंदूवाण । २७ आ. द्रुग । इ. दुरंग । २८ आ.इ. कुवर । २९ आ.इ. निप । ३० आ. सहवै । ३१ आ.इ. पेत । ३२ आ. लोहडा । इ. लोहडा । ३३ आ.इ. पुरसाणह । ३४ आ.इ. समद । ३५ इ. नाम । ३६ इ. सह । ३७ आ.इ. हिंदूस्थानह । ३८ आ.इ. मोप । ३९ इ. गुडै । ४० आ.इ. मैगल । ४१ आ.इ. मदमत्ता । ४२ आ. रठौड । इ. राठीड । ४३ आ.इ. अमांण । ४४ आ.इ. छिवत्ता । ४५ आ. कुअर । ४६ आ. कुअरां । ४७ आ.इ. मल ।

राज्य वैभव वरणण

गाथा

साहण समंद सूरी, ईस्वर^१ अवतार देव राजिद्रौ^२ ।
कविळास^३ जोधद्रुगो, कुमेरी संपदा पण ए^४ ॥१॥

जोधपुर तुल मेंरी, तेरह^५ साखां^६ कोडि तेतीसी^७ ।
तथी^८ "गजसाह" इंद्री^९ वित चित विसेखांयु^{१०} ॥२॥

गज^{११} कोटि राज द्वारी, मिंदर उत्तंग महल अटाला ।
संवेख^{१२} धाम^{१३} वाम^{१४}, विसक्रमा^{१५} विभ्रम^{१६} भवेत ॥३॥

नगर वरणण

छन्व नाराज^{१७}

उत्तंग^{१८} चंग भीत चीत, मंड चंड मंदरं ।
कळी^{१९} सपेत जाणि सेत, धार धम्मला गिरं^{२०} ।
पहाड कोटि कम्मसीस^{२१} पेखिए^{२२} प्रचंड ए ।
जळद्^{२३} हद्^{२४} रूप जाणि, मेघमाल मंड ए ॥१॥

महल्ल^{२५} गौख^{२६} सोभ^{२७} मान, कुंदनी^{२८} कळस्स ए^{२९} ।
पणंत काच नील व्रन्न^{३०}, आरिखे^{३१} अरस्स ए^{३२} ।
पवै^{३३} गिरां पगार पौलि^{३४}, लोहम कपाट ए ।
(जु) स्निगमेर^{३५} सीस जाणि, ओपियंत^{३६} आट ए ॥२॥

१ आ.इ. ईस्वर । २ आ.इ. राजिद्रौ । ३ आ.इ. कवलास । ४ आ. ऐ । ५ अ. तेइ । आ. तेई । ६ आ. साषां । इ. सषां । ७ आ. तेतीसी । ८ आ.इ. तथा । ९ आ.इ. इंद्री । १० आ.इ. विसेषायु । ११ आ.इ. गढ कोटि । १२ आ.इ. संपेख । १३ आ.इ. धाम । १४ आ. वामं । इ. ठामं । १५ आ.इ. विसुक्रमा । १६ आ. विभ्रमं । १७ आ.इ. नाराज । १८ आ.इ. उत्तंग । १९ आ.इ. कली । २० आ.इ. धमला गिरं । २१ आ.इ. कमसीस । २२ आ.इ. पेखीयै । २३ आ.इ. जलद । २४ आ.इ. हद् । २५ आ.इ. महल । २६ आ.इ. गौष । २७ आ. सौभ । २८ इ. कुंदनी । २९ आ.इ. कलसए । ३० आ. पून । इ. पून । ३१ आ.इ. आरिखे । ३२ आ.इ. अरसए । ३३ आ. पवै । ३४ आ.इ. पौलि । ३५ आ.इ. स्निग मेर । ३६ आ.इ. ओपीमंत ।

जरद^१ लाल सेत स्याह, जालियां^२ पखाण ए^३ ।
 सपत्त^४ मै खणा^५ आमास, ओपि असमाण ए^६ ।
 विराज मान राजथान कमधज्ज^७ भूपती ।
 जुगत्ति^८ राजगत्ति^९ जाणि, इंद अमरावती^{१०} ॥३॥

विनोद गीत नाद भेद, सह^{११} घंट भालरी ।
 प्रसाद देव पुजिइत, अंविका हरोहरी ।
 निसा जलंत^{१२} दीपजोत, मिंदरं^{१३} उजाल ए^{१४} ।
 सदा सरव्वदा^{१५} हुवत्त^{१६}, जाण दीपमाल ए^{१७} ॥४॥

उद अरक्क^{१८} ऊगहंत, माल लक्ख^{१९} मंडही ।
 स्त्रीवंत^{२०} साह लाखपत्ति^{२१}, कवि कोड^{२२} दी धुही ।
 वियास^{२३} भट्ट^{२४} के महंत, जोतिकी ब्रह्मणं^{२५} ।
 कथा पुराण^{२६} भागवंत, भारथ रांमाइणं ॥५॥

रुधव्व^{२७} जुज्ज^{२८} सांमवेद^{२९}, आमना अथव्वणं^{३०} ।
 त्रैस^{३१} राण^{३२} वेद मंत्र^{३३}, बोलियंत^{३४} वभणं^{३५} ।
 जुडित्त^{३६} एक जोरदार, थोर भुज्ज^{३७} डंड ए^{३८} ।
 जेठी प्रचंड ग्रीठ^{३९} पिंड मल्ल^{४०} जुध्ध^{४१} मंड ए ॥६॥

भणंत एक व्याकरण, वीर इस्ट^{४२} के करे ।
 तरक्क^{४३} नीति^{४४} सासत्राणि^{४५}, एक मुख^{४६} उच्चरे^{४७} ।

१ आ.इ. जरद । २ आ.इ. जालीयां । ३ पखाणए । ४ आ.इ. सपत्त । ५ आ.इ. पण । ६ आ.इ. आसमाणए । ७ आ.इ. कमधज । ८ आ.इ. जुगत्ति । ९ आ.इ. राजगत्ति । १० आ.इ. अमरावती । ११ आ.इ. सद । १२ आ.इ. जलंत । १३ आ.इ. मिंदर । १४ आ.इ. उजलए । १५ आ.इ. सरव्वदा । १६ आ.इ. हुवत्त । १७ आ.इ. दीपमालाए । १८ आ.इ. अरक्क । १९ आ.इ. लक्ख । २० आ.इ. स्त्रीवंत । २१ आ.इ. लाखपत्ति । २२ आ.इ. कोड । २३ आ.इ. व्यास । २४ आ.इ. भट्ट । २५ आ.इ. ब्रह्मणं । २६ आ.इ. पुराण । २७ आ.इ. रुधव्व । २८ आ.इ. जुज्ज । २९ आ.इ. सामवेद । ३० आ.इ. अथव्वणं । ३१ आ.इ. त्रैस । ३२ आ.इ. राण । ३३ आ.इ. मंत्र । ३४ आ.इ. बोलियंत । ३५ आ.इ. वभणं । ३६ आ.इ. जुडित्त । ३७ आ.इ. भुज्ज । ३८ आ.इ. डंडए । ३९ आ.इ. ग्रीठ । ४० आ.इ. पिंड । ४१ आ.इ. जुध्ध । ४२ आ.इ. इस्ट । ४३ आ.इ. तरक्क । ४४ आ.इ. नीति । ४५ आ.इ. सासत्राणि । ४६ आ.इ. मुख । ४७ आ.इ. उच्चरे ।

मारतं एक सब^१ घात, केळवै^२ रसायण^३ ।
 अगाध^४ वैद राज राज^५ ओखदी^६ विचारणं ॥७॥
 कखी^७ विणज्ज^८ आकराणि^९, पसू चौपदी घणी ।
 अनेक संपदा^{१०} उपाउ, लाछि^{११} चतुरंगणी^{१२} ।
 पदम^{१३} राग लाल पाच, नीलया^{१४}-मिणी^{१५} नगं ।
 पना कनक^{१६} मै^{१७} जडाउ^{१८} जोइ^{१९} मोहियै^{२०} जगं ॥८॥

बाजार वरणण

करै वणिज्ज^{२१} एक हठ^{२२} रूप सकलत्त ए^{२३} ।
 साखा^{२४} चौतार मुखमल्ल^{२५}, रेसमी वसत्त ए^{२६} ।
 करंत एक दान पुनि^{२७} जिग^{२८} होम जप्प^{२९} ए ।
 करंत एक राग रंग, मोहिए^{३०} सरप्प ए^{३१} ॥९॥
 गाइत्ति^{३२} एक आप ग्रेह, मांणणीस^{३३} मंगळ ।
 चमीर हीर हार चीर, कान हेम कुंडळ^{३४} ।
 सिंगार खोड^{३५} मै^{३६} संजुत्त^{३७} सुंदरी वषाण ए^{३८} ।
 पंच^{३९} आंगुली^{४०} जु पाण, काम पंच बाण ए^{४१} ॥१०॥
 अनेक एक पेखियंति^{४२}, रूप मै^{४३} चिरत्त ए^{४४} ।
 वसंत पट्टण^{४५} विसाल^{४६}, जोति मै^{४७} नखत्त ए^{४८} ।

- १ आ. सब । इ. सर्व । २ आ. केलवे । इ. केलवै । ३ आ. इ. रसायणं । ४ आ. अगाध । इ. अगाधि । ५ वेदराट । ६ आ. इ. ओपदी । ७ आ. इ. कपी । ८ आ. विणज्ज । इ. विणज्ज । ९ आ. इ. आकराणि । १० आ. सपदा । ११ आ. इ. लाछि । १२ आ. चतुरंगणी । इ. चतुरंगणी । १३ आ. इ. पदम । १४ आ. निलया । इ. निलयी । १५ इ. मीणी । १६ आ. इ. कनक । १७ आ. इ. मै । १८ आ. इ. जडाव । १९ आ. जोई । २० आ. इ. मोहियै । २१ आ. वणिज्ज । इ. वणिज्ज । २२ आ. इ. हठ । २३ आ. इ. सकलत्तए । २४ आ. इ. साखा । २५ आ. इ. मुखमल्ल । २६ आ. इ. वसत्तए । २७ आ. इ. पुनि । इ. पुन्य । २८ आ. इ. जिग । २९ आ. इ. जप्पण । ३० आ. इ. मोहियै । ३१ आ. इ. सरप्पए । ३२ आ. इ. गाइत्ति । ३३ आ. माणणीस । ३४ कुंडल । ३५ आ. इ. खोड । ३६ आ. मै । ३७ आ. इ. संजुत्त । ३८ आ. वषाणए । इ. वषाणए । ३९ आ. पंच । ४० आ. इ. आंगुली । ४१ आ. बाणए । ४२ आ. इ. पेखियंती । ४३ आ. मै । ४४ आ. इ. चिरत्तए । ४५ आ. इ. पट्टण । ४६ आ. इ. विसाल । ४७ आ. मै । ४८ आ. इ. तषत्तए ।

वसै^१ अढारहै वरन^२ लोक मै^३ अपार ए ।

वसै^४ छतीस पूण^५ जात, कज्जि^६ रोजगार ए ॥११॥

तालाव उपवन आदि घरणण

अहीनिसा^७ कहौ हुवंत, लाख^८ लोक^९ नगरं^{१०} ।

हिलोल^{११} जाणि हूकळंत^{१२}, सद^{१३} नद^{१४} सगरं^{१५} ।

सरोवरां तटाक^{१६} हीद, तीरथं प्रमाण ए^{१७} ।

वावी अनूप कूप वाइ, नीभरै निवांण ए^{१८} ॥१२॥

आरुव भूव ओपवांन^{१९}, अंब वाग ओप ए ।

अठार^{२०} भार अदभू^{२१}, अजू अजू अजोप ए ।

गुलाव मालती सुगंध, सेवती सुपडुलं^{२२} ।

तराणि पंच केवडाकि, केतकी परिम्मलं^{२३} ॥१३॥

जंभीर^{२४} दाख^{२५} बीज^{२६} पूर, व्रख^{२७} कोळ^{२८} बदरी^{२९} ।

खिजूर^{३०} ताड नाळिकेर, दाडिमी जळंधरी^{३१} ।

सदा फळाणि^{३२} निवुआणि^{३३}, राइणी^{३४} महुअडा ।

कल्हार जंबुई^{३५} नारंग - रंग वाग रुअडा ॥१४॥

भुजंग वेलि चंदनी^{३६}, न कुंज^{३७} मै^{३८} तमाळ ए ।

अनेक व्रख^{३९} अग्नि^{४०} अग्नि, रुप मे रसाळए^{४१} ।

चळाणि^{४२} पत्रियाणि^{४३} वट^{४४}, आंबली^{४५} असंभ ए ।

बकाणि नीव^{४६} में बहत्त, ईखियै^{४७} अचंभ ए ॥१५॥

१ आ. वसे । २ आ.इ. वरन । ३ आ. में । ४ आ. वसे । ५ इ. छतीस । ६ आ. पुण । ७ आ. कजि । ८ आ. अहीनिस । ९ आ.इ. लाख । १० आ. लोक । ११ आ.इ. नगर । १२ आ.इ. हिलोल । १३ आ.इ. हुकलंत । १४ आ. इ. सद । १५ आ.इ. नद । १६ आ.इ. सगर । १७ आ.इ. तटाके । १८ आ.इ. प्रमाणए । १९ आ.इ. नीवांणए । २० आ. ओपवान । २१ आ. ओपमान । २२ आ.इ. अठार भार । २३ आ.इ. अद भू । २४ आ.इ. सुपडुलं । २५ आ.इ. परमलं । २६ इ. जंभीर । २७ आ.इ. दाख । २८ आ.इ. बीज । २९ आ. वृष । ३० आ. कोल । ३१ आ.इ. बदरी । ३२ आ.इ. खिजूर । ३३ आ.इ. जलंधरी । ३४ आ.इ. फलाणि । ३५ इ. निवु आणि । ३६ इ. राइणी । ३७ आ. जंबुई । ३८ आ.इ. चंदनि । ३९ आ. कुंज । ४० आ. में । ४१ आ.इ. वृष । ४२ आ.इ. अग्नि । ४३ आ.इ. रसालप । ४४ आ. चलाणि । ४५ आ. पत्रियाणि । ४६ आ. पत्रियाण । ४७ आ.इ. वट । ४८ आ. आंबली । ४९ आ.इ. नीव । ५० आ. इपीयै । ५१ इ. इपीयै ।

सहाराजकुमार गजसिंघ री बडा महाराजा री अनुपस्थिति में राज्य भरा सन्हाळणो

इहा

गड्ड^१ जोधपुर इन्द्र^२ पुर, छबि सोभा अणपार ।
कवि जीहा कहि दखवै^३, केतोइक विसतार ॥१॥

दरि है गै धरि राइधी^४, भड बंका दीवाण ।
की इन्द्रापुर^५ अगली^६, घटि कीं सू^७ जोधाण^८ ॥२॥

बापूह वित अछेह^९ में, आपह चित अछेह ।
'गज्जण'^{१०} मांण साहिबी, ज्यू^{११} महि मांण मेह ॥३॥

दुहू^{१२} भुजै^{१३} सुरताण बळ^{१४}, दुहू^{१५} भुजे कुळ^{१६} लाज ।
राजा सरहदां^{१७} लियै, कुंअर^{१८} भुगतै^{१९} राज ॥४॥

राजा राज भळावियौ^{२०}, 'गाजीसाह' नरेस ।
आसा^{२१} पै श्री^{२२} जोधपुर, आ धरती श्री^{२३} देस ॥५॥

धमळी बापू कारियो^{२४}, बाली^{२५} है बळि बंड ।
धुरि माथी धूणै नहीं^{२६}, भरि ओडै भूडंड^{२७} ॥६॥

महाराजा सवाई सुरसिंघ री दखिण में गमन

कवित्त

पछिम पुरब^{२८} उत्तराध, इला^{२९} दखणाधह^{३०} आगळ^{३१} ।
हिंदूबाण^{३२} खुरसाण^{३३}, दुहू^{३४} भुज्जे^{३५} दुन्है छळ^{३६} ।

१ आ.इ. गड । २ इ. इजपुर । ३ आ.इ. दखवै । ४ आ.इ. राईधी । ५ इ. इडापुर । ६ आ.इ. अगली । ७ आ. सु । इ. सू । ८ आ. जोधाण । ९ आ.इ. अछेह । १० आ.इ. गजण । ११ आ. ज्यू । १२ आ.इ. दुहू । १३ आ.इ. भुजे । १४ आ.इ. । छळ १५ दुहू । १६ आ.इ. कुल । १७ आ.इ. सरहदां । १८ आ.इ. कुअर । १९ आ.इ. भुगतै । २० आ.इ. भलावीयो । २१ आ.इ. आ सा । २२ इ. श्री । २३ आ.इ. श्री । २४ आ. बापुकारीयो । इ. बापुकारीयो । २५ आ.इ. बाली । २६ आ.इ. नहीं । २७ आ. भूडंड । इ. भुडंड । २८ आ. पूर्व । इ. पूरव । २९ आ. इला । इ. ईला । ३० आ. दखणाधह । इ. दिखणाधह । ३१ आ.इ. आगल । ३२ आ.इ. हिंदूबाण । ३३ आ. पुसाण । इ. पुरसाण । ३४ आ.इ. दुहू । ३५ आ. भुजे । ३६ आ.इ. छल ।

सूरसिंघ दिगपाल^१, एक पक्खर^२ लख^३ पक्खर^४ ।
 गुजरवै^५ अरबद्द^६, कीध वंका सूर^७ पघर^८ ।
 दल थंभ^९ देखि^{१०} दिल्ली^{११} घणी^{१२}, दखण^{१३} दीध^{१४} आडी^{१५} दळां^{१६} ।
 तिण वार भळावै^{१७} निय^{१८} तणी, 'गाजीसाह' भुअव्वळां^{१९} ॥१॥

महाराजकुमार गजसिंघ री मेवाड पर आक्रमण तथा नाडूळ पर अधिकार करणी

मेद पाट खुरसाण^{२०}, आदि बकवाद^{२१} संभारे^{२२} ।
 साहि कीध फुरमांण, खान^{२३} सुरतांण हकारै^{२४} ।
 चढे^{२५} सेन चतुरंग, सपत किरि साइर^{२६} फट्टा^{२७} ।
 एक लाख^{२८} असवार, आवि मेवाड निहट्टा^{२९} ।
 ऊवरा खान^{३०} बहतिरि^{३१} सतिरि, प्रजाबंध पाडे मढां ।
 नाडूळ^{३२} 'सिघ' गळ^{३३} गज्जियो^{३४}, गोदवाड ऊपरि^{३५} गढां ॥२॥

वली^{३६} जूह विभाड^{३७}, डसण नाडूळ^{३८} उपट्टे^{३९} ।
 जोजावर चामलोद^{४०}, खोड^{४१} आंमिख^{४२} गळ घट्टे^{४३} ।
 गिले^{४४} गुंद^{४५} सादही, सयल^{४६} सावज^{४७} मन रंजे^{४८} ।
 कोलर तोडि^{४९} करंक, गूह^{५०} गरजी खत^{५१} भंजे^{५२} ।
 गोदवाड बरड-संघाण^{५३} सह, कूभ^{५४} भंजि कूभेण गिरि ।
 गजसिंघ^{५५} कियो^{५६} गज केसरी, सिघनाद मेवाड सिरि ॥३॥

१ आ.इ. दिगपाल । २ आ.इ. पक्खर । ३ आ.इ. लख । ४ आ.इ. पक्खर । ५ आ.इ. गुजरवै । ६ आ.इ. अरबद । ७ आ.आ. सर । ८ आ. पक्खर । ९ आ.इ. दल-थंभ । १० आ.इ. देखि । ११ आ.इ. दिली । १२ आ. दखणी । १३ आ.इ. दखण । १४ आ. दीध । १५ आ.इ. आडा । १६ आ.इ. दलां । १७ आ.इ. भलावै । १८ आ.इ. नीय । १९ आ.इ. भुअवलां । २० आ.इ. पुरसांण । २१ इ. बकवादो । २२ आ.इ. संभारे । २३ आ.इ. पान । २४ आ.इ. हकारै । २५ आ.इ. चढे । २६ आ.इ. साइ । २७ आ.इ. फटा । २८ आ.इ. लाख । २९ आ.इ. निहटा । ३० आ.इ. पान । ३१ आ. वहतिरि । इ. वहतिरि । ३२ आ.इ. नाडूळ । ३३ आ.इ. गल । ३४ आ. गजियो । इ. गजयो । ३५ आ.इ. उपरि । ३६ आ.इ. वली । ३७ आ.इ. विभाड । ३८ आ.इ. नाडूळ । ३९ आ.इ. उपट्टे । ४० आ.इ. चामलोद । ४१ आ.इ. पोड । ४२ आ.इ. आंमिख । ४३ आ.इ. घट्टे । ४४ आ.इ. गिले । ४५ आ.इ. गुंद । इ. गुद । ४६ आ.इ. सयल । ४७ आ.इ. सावज । ४८ आ.इ. रंजे । ४९ आ.इ. तोडि । ५० आ.इ. गुद । ५१ आ.इ. पत । ५२ इ. भंजे । ५३ आ. संघाण । इ. संसंघाण । ५४ इ. कूभ । ५५ इ. गजांसिघ । ५६ आ.इ. कियो ।

इहा

है पाई^१ गिरि गाहिजै, मारीजै^२ मेवास ।
निस वासर नागाद्रहा^३, हियै^४ न पूजै सास ॥१॥

वरळाई^५ सोळंकिया^६, घूणै बळी^७ पहाड ।
घा बालीसां^८ सींघलां^९, गमिया जडां उपाड ॥२॥

छन्द हाकुटिया^{१०}

सोळंकी^{११} सारे मछर मारे, ढंढोळै^{१२} पहाड ।
बालीसा बोए फौजां ढोए, मळवट्टै^{१३} मेवाड ।
सींघल^{१४} संघारे बोल उतारे, मेले दळ^{१५} कळि^{१६} मूळ^{१७} ।
खागै^{१८} खूमाणां^{१९} रेहलि रांणा, निज थांणा^{२०} नाडूळ^{२१} ॥१॥

गाहा चोर^{२२} [चोसर]

कमधज्जां^{२३} नाडूळ^{२४} लसकर^{२५} ।
लोहोडी^{२६} खुरसाण^{२७} मंडोवर ।
हेरि कतारं नयर दूनाडै^{२८} ।
मांडै^{२९} डांण रांण मेवाडै ।

इहा

मेवाडी ओळोभियी^{३०}, धारि पही मन धोड ।
जोधपुरी^{३१} जीपै सदा, जुध हारै चीतोड ॥१॥

१ आ. पाई । इ. पापाई । २ आ.इ. मारिजै । ३ नागाद्रहा । ४ आ.इ. हियै ।
५ आ.इ. छरळाई । ६ आ.इ. सोलंकीयां । ७ आ.इ. बळी । ८ बालीसा । ९ आ.इ.
सींघलां । १० आ.इ. हाकुटीया । ११ आ. सोलंकी । इ. सोलंकी । १२ आ.इ.
ढंढोले । १३ आ.इ. मलवटे । १४ आ.इ. सीघल । १५ आ.इ. दल । १६ आ.इ.
कलि । १७ आ.इ. मूल । १८ आ.इ. पागे । १९ आ.इ. घूमाणा । २० आ.इ.
थाना । २१ आ.इ. नाडूळ । २२ आ. गाहा चोर । इ. गाहा चोरस । २३ आ.इ.
कमधजां । २४ आ.इ. नाडूळ । २५ आ.इ. लसकर । २६ आ. लोहोडी । इ. लोहेडो ।
२७ आ.इ. पुरासाण । २८ इ. दूनाडै । २९ आ.इ. मांडे । ३० आ. ओलोभीयी । इ.
आलोजीयो । ३१ आ.इ. जोधपुर ।

सू^१ थांणै नव^२ साहसौ, रांण जरूकी राडि^३ ।
घाडां कारण^४ मेलिया^५, दस सहसै^६ दळ^७ चाडि ॥२॥

छंद तवत्^८

मेवाडै^९ रांण^{१०} तणा दिल मुरधर चालै दळ^{११} चतुरंग ।
घोडां पडताळ भडां घांसाहड, परराणं पडिभंग ।
दळ^{१२} वळिया^{१३} पाछा डांणी हूँ^{१४}, लांभौ मन्ने^{१५} भिड वाउ ।
आयौ तिण वेळा^{१६} 'गोइंद' आडौ, भेडक भाटी राउ ॥१॥

महाराणा की पराजय

कवित्त^{१७}

भाटीराउ गजभोम, जुडे^{१८} जांमळि रठौडां^{१९} ।
जीता जोधपुराह, हारि हुई^{२०} चीतीडां^{२१} ।
देसपती^{२२} राउत्त^{२३}, अमुह केती ऊजाणां ।
ईसर^{२४} सांमळदास, खेत^{२५} रहिया^{२६} खूमाणां^{२७} ।
'गोइंद' पेखि^{२८} जैसळगिरी^{२९}, बाघ वीसमी वीरवर ।
रिणवार रांण 'अमरेस' रा, कुरंगां^{३०} जेम^{३१} गया कुंअर ॥१॥

महाराजकुमार गजसोघ री सिरोही पर आक्रमण

हूहा

मछरीकां^{३२} सिर मछरियो^{३३}, राइजादौ^{३४} राठौड ।
वैर पुराणा^{३५} वाळिवा, करै नवल्ली^{३६} दीड ॥१॥

१ आ.इ. सु । २ इ. नह । ३ इ. राड । ४ इ. करण । ५ आ.इ. मेलीया ।
६ दस सहस । ७ आ.इ. दल । ८ आ. तवत् । ९ आ.इ. मेवाडै । १० आ. राण ।
११ आ.इ. दल । १२ आ.इ. दल । १३ आ.इ. वलीया । १४ आ.इ. हु । १५ आ.इ. मने ।
१६ आ.इ. वेला । १७ आ.इ. कवित्त । १८ आ.इ. जुडे । १९ आ. रठौडां ।
इ. राठौडां । २० आ.इ. हुइ । २१ इ. चीतीडां । २२ आ. देसपति । २३ आ.इ. राउत्त ।
२४ आ. इसर । २५ आ.इ. पेत । २६ आ. रहिया । इ. रहियां । २७ इ. पुभांणां ।
२८ आ.इ. पेखि । २९ आ.इ. जैसळगिरी । ३० आ. कुरंगा । ३१ आ. जेम ।
३२ आ. मछरीका । ३३ आ.इ. मछरीयो । ३४ इ. राइजादौ । ३५ आ. पुराणां ।
३६ आ.इ. नवली ।

गजवंधी^१ दळ^२ मेलिहया^३ , पहरै^४ जोध^५ जरद^६ ।
मारि मनांउ देवडा^७ , हव गंजू^८ अरवद^९ ॥२॥

छंद त्रिभंगी

ऊपरि^{१०} अरवद^{११} कोपि मरद^{१२} , जडै जरद^{१३} जुध वद^{१४} ।
नीसांण निनद^{१५} , पंच सबद^{१६} रोडि रवद^{१७} घण सद^{१८} ।
हालै^{१९} दळ^{२०} हद^{२१} , जाणि^{२२} जळद^{२३} गयण गरद^{२४} मिलि^{२५} तद^{२६} ।
फतै^{२७} सिरि हद^{२८} , रेण^{२९} रहद^{३०} रांवां मद^{३१} थिय^{३२} रद^{३३} ॥१॥
पैमाल पेहद^{३४} , घाट दुघट^{३५} , हींसा^{३६} फट^{३७} घण थट^{३८} ।
राठोड सुभट^{३९} , आखि निहट^{४०} , बंध प्रघट^{४१} रिणवट^{४२} ।
छिल्लै^{४३} मे(ह)^{४४} णाणं , दळ^{४५} असमाणं^{४६} , खेड^{४७} प्रमाण^{४८} खुरसांण^{४९} ।
चाते चहुआंणं , बलि केवांणं , चाडि^{५०} चखांण^{५१} सिस भाणं ॥२॥

महाराजकुमार री सरोही पर विजय

कवित्त

सेन मेल सिवपुरी, फौज घेर^{५२} घांसांहर^{५३} ।
जैतहत्य^{५४} कलि^{५५} मत्थ^{५६} , साथि भाटी^{५७} रिण घोयर^{५८} ।

१ इ. गजवंधीया । २ आ.इ. दल । ३ आ.इ. मेलीया । ४ इ. पहरै । ५ आ. जोधी । ६ आ.इ. जरद । ७ इ. देवडा । ८ आ. गंजू । ९ आ.इ. अरवद । १० इ. ऊपडि । ११ आ.इ. अरवद । १२ आ.इ. मरद । १३ आ.इ. जरद । १४ आ. इ. वद । १५ आ.इ. निनद । १६ आ.इ. पंच-सबद । १७ आ.इ. रवद । १८ आ.इ. सद । १९ आ.इ. हाले । २० आ.इ. दल । २१ आ.इ. हद । २२ आ. जाणि । २३ आ.इ. जलद । २४ आ.इ. गरद । २५ आ.इ. मिलि । २६ आ.इ. तद । २७ आ.इ. फतै । २८ आ.इ. हद । २९ आ.इ. रेण । ३० आ.इ. रहद । ३१ आ.इ. मद । ३२ आ.इ. थियो । ३३ आ.इ. रद । ३४ आ. पेहद । इ. पेहरं ३५ आ.इ. दुघट । ३६ इ. हीसा । ३७ आ.इ. फट । ३८ आ.इ. थट । ३९ आ.इ. सुभट । ४० आ.इ. निहट । ४१ आ.इ. प्रघट । ४२ आ.इ. रिणवट । ४३ आ.इ. छिले । ४४ आ.इ. मणाणं । ४५ आ.इ. दलं । ४६ आ.इ. असयाणं । ४७ आ.इ. खेड । ४८ आ. पुमाणं । इ. पुमाणं । ४९ आ.इ. खुरसांण । ५० आ.इ. चाडि । ५१ आ. चषणं । इ. वषांणं । ५२ आ. घेरै । इ. पुरे । ५३ आ. घांसांहर । इ. घांसांहर । ५४ आ. जैतहत्य । इ. जैतहत्य । ५५ आ.इ. कलि । ५६ आ.इ. मथ । ५७ आ. भांटी । ५८ आ.इ. घोघर ।

कटि इम पडिगी^१ रें(ण), धणी अड्डार गिरंदर^२ ।
 लाया पाइ^३ रकेव^४, कीध मछरीक रेंहवर^५ ।
 राठीड^६ कुंअर^७ पक्खर^८ खंद^९, कवण(भ^{१०}) समवड करै ।
 जमदाढ छोड विज्जै^{११} लई, कना राउ अरवद्^{१२} रै ॥१॥

वाढशाह जहांगीर रौ अजमेर आगमन और राजा सूरसीव नै बुलाणी

पातिसाह अजमेर, आप आयौ गुडि^{१३} पक्खरि^{१४} ।
 सतरि खान^{१५} खीटिया^{१६}, अनै उबरा(व) वहत्तरि^{१७} ।
 हुआ^{१८} ग्रीध समसांण, वाढ^{१९} करिकां कूंवूअळ ।
 नर हय गय पळ^{२०} खीण^{२१}, मत्त पल जंवू संमळ^{२२} ।
 असपति^{२३} राउ सांम्ही^{२४} अरज, इम मेल्लै^{२५} सिख^{२६} सुर असुर ।
 गंजैत रांण राठीडि नृप^{२७}, 'अमर' रांण^{२८} नृप^{२९} सिलै^{३०} गुर ॥२॥

तांम^{३१} साह^{३२} (ह) जिहगीर^{३३}, लिखे^{३४} मूकयी^{३५} परमांणी ।
 पळ खूटी^{३६} खुरसांण^{३७}, सब्बळा^{३८} अजुं खूंमांणी^{३९} ।
 मेर मेर सारिखी^{४०}, हुआ^{४१} इक इक्क^{४२} पहाडह ।
 ती पक्खै^{४३} कमधज्ज^{४४}, कमण गंजै मेवाडह ।
 सूरज्जमल्ल^{४५} सुरतांण वळि^{४६}, ग्रहे खाग^{४७} लागी अरस ।
 आयौ अभंग नव साहसी^{४८}, खडि^{४९} तुरंग सिरि दस सहस ॥३॥

१ आ. गिरे । इ. गिरे । २ आ. अडार गिरवर । इ. अडार गिरवड । ३ इ. आ. पाई । ४ आ. रेह । इ. रकेव । ५ रेहवर । ६ इ. राठोड । ७ आ.इ. कुवर । ८ आ.इ. पपर । ९ इ. खद । १० इ. तूस । ११ आ.इ. वेजै । १२ आ.इ. अरवद । १३ इ. गुड । १४ आ.इ. पपरि । १५ आ.इ. पांन । १६ आ. पीटीया । इ. पीटीया । १७ वहत्तरि । १८ आ. हुआ । इ. हूवा । १९ आ.इ. वाडि । २० आ.इ. पल । २१ आ.इ. पीण । २२ आ.इ. समल । २३ आ.इ. असपति । २४ आ. सांमी । २५ आ. मेल्लै । इ. मेलै । २६ आ.इ. लिष । २७ आ.इ. नृप । २८ आ. राण । २९ आ. नृप । ३० आ.इ. सेलगुर । ३१ आ.इ. ताम । ३२ आ. संह । ३३ आ.इ. जिहगीर । ३४ आ. लिपै । इ. लिपे । ३५ आ. मूकओ । ३६ आ. पूटी । इ. पूटो । ३७ आ.इ. पुरसांण । ३८ आ.इ. सबल । ३९ आ. पुभाणै । इ. पुभांणो । ४० आ.इ. सारिखी । ४१ आ. हूवा । इ. हुवो । ४२ आ.इ. इक । ४३ आ. पपै । इ. तोपै । ४४ आ.इ. कमधज । ४५ आ. सूरजमल । इ. सूरजमल । ४६ आ. वलि । ४७ आ.इ. पाग । ४८ आ. तवसाहसी । ४९ आ.इ. पडि ।

सवाई राजा सूरसीध री विजय

रुकरस राठीड गुरड प्रगटी^१ गैणागा ।

नवकुल^२ दळ^३ दस हंस^४, चडे^५ अलंगै^६ पडि भग्गा^७ ।

मिळिया^८ के मारिया^९, भडप चंचां^{१०} खग^{११} भाटां ।

पंख^{१२} सोकां वाजंत, हमस^{१३} पाए हैथाटां ।

मेवाड हुवा नागां मंडळ^{१४}, साफराफ पाहाड^{१५} सह ।

इकलंग^{१६} कंठ रहियो^{१७} 'अमर', चील-सेख^{१८} चीत्तीड^{१९} पह ॥४॥

सवाई राजा सूरसीध री महाराजकुमार गजसीध न पत्र लिख न बुलाणी

राजा कागळ^{२०} लिखै^{२१} कुंअर^{२२} तेडे निय^{२३} कन्हळि^{२४} ।

मिळण^{२५} मनोरथ करै^{२६}, साह^{२७} जाहंगीर^{२८} तणै छळि^{२९} ।

चडै^{३०} ताम^{३१} गजपती^{३२}, करे लसकर आडंबर ।

भड वंका वर तुरी, लिया मदमत्ता^{३३} कुंजर ।

जूहार^{३४} उदैपुर जाइ किय^{३५} साथि भीच 'गोइंद' सगह ।

इके रास^{३६} हुआ^{३७} किरि एकठा, सूरज थावर बिनै ग्रह ॥५॥

महाराजा सवाई सूरसीध री महाराणा नै समझा नै बादसाह सूं सुलह करानी
बूहा

राजा राणां मेलिया^{३८}, कीध उकीलां वत्त^{३९} ।

वाद वडां^{४०} सूं^{४१} छंडिये, एहस^{४२} आदू मत्त^{४३} ॥१॥

राणै^{४४} राजा नूं^{४५} कह्यौ, मेल्लै^{४६} परधानांह ।

साह पगै^{४७} धुन^{४८} मोकळूं^{४९}, जो थे^{५०} अप्पौ^{५१} बांह ॥२॥

१ इ. प्रगट्यौ । २ आ.इ. नवकुल । ३ आ.इ. दल । ४ अ. सैस हंस । ५ आ. चडे । ६ आ.इ. अलंगे । ७ आ.इ. भगा । ८ आ.इ. मिलीया । ९ आ.इ. मारीया । १० अ. चंचा । ११ आ.इ. षग । १२ आ.इ. पंष । १३ आ.इ. हमंस । १४ आ.इ. मंडल । १५ अ. पाहोड । १६ आ. एक लंग । इ. एकलग । १७ आ.इ. रह्यौ । १८ आ.इ. चील-सेष । १९ अ. चीत्तीड । इ. चीत्तीड । २० आ.इ. कागल । २१ अ. लिखै । २२ आ.इ. कुअर । २३ आ.इ. नीय । २४ आ.इ. कनली । २५ आ.इ. मिलण । २६ आ.इ. करे । २७ आ. सांह । २८ आ.इ. जिहंगीर । २९ अ. बलि । ३० अ. चडै । ३१ आ.इ. ताम । ३२ आ. गमुषति । इ. गजपति । ३३ आ.इ. मदमत्ता । ३४ आ.इ. जुहार । ३५ आ.इ. कीय । ३६ आ.इ. एक । ३७ आ. हुआ । इ. हुवा । ३८ आ.इ. मेलीया । ३९ आ.इ. वत्त । ४० आ. वडा । ४१ आ.इ. सु । ४२ आ. एहस । ४३ आ.इ. मत्त । ४४ आ. राणै । ४५ आ. नूं । ४६ आ. मल्ले । ४७ आ.इ. पगै । ४८ इ. कनि । ४९ इ. मोकळूं । ५० आ. थे । ५१ आ.इ. आयौ ।

राजा बोल समप्पियौ^१, कहियौ^२ रांण प्रमांण ।

वे घोघूंदै^३ मेलिया^४, खूंदालम^५ खूमांण^६ ॥३॥

खिजमति^७ करण कवूला^८ की, बल^९ छंडे समसेर ।

खुरम^{१०} फतै कर हल्लियौ^{११}, साह पगे अजमेर ॥४॥

साहजादा खुरम रौ विजयी होनै वादसाह रै पास महाराजकुमार करण
री लेनै अजमेर में आगमण

छन्द चैताल

नीसांण रोडि दमांम^{१२} नौबति^{१३}, भेरि पंच-सवद^{१४} ए ।

लख^{१५} थाट मोगर लीण लमकर, गिगन धूळ गरद^{१६} ए ।

फरहरा चीधां^{१७} ढेलिकि नेजां^{१८}, कुंजरां सिर ढल्ल^{१९} ए ।

अजमेर दिस हूता उदैपुर, कटक इण परि चल्ल^{२०} ए ॥१॥

संमूह^{२१} सेन असंख^{२२} सफां, अगिग^{२३} मुज्झै^{२४} मंभली^{२५} ।

मल्हपति फौजां मुहरि मैगल^{२६}, सुंड^{२७} डोहै सिघली^{२८} ।

पडताळ पवंग^{२९} रोलि^{३०} पक्खर^{३१}, धोर गैमर^{३२} घट्ट^{३३} ए ।

दीसै न अंबर डावि डंबर, उदध जांणि उलट्ट^{३४} ए ॥२॥

गज थाट ध्रू सगडस^{३५} गज दल^{३६}, क्रमे^{३७} कोअण कंठल^{३८} ।

परवत्त^{३९} माल^{४०} कि^{४१} हेम हल्लै^{४२}, मेघमाल^{४३} कि^{४४} वदल^{४५} ।

घडहडै^{४६} सात पंयाळ^{४७} धूजै, सेख^{४८} नाग घडक्क^{४९} ए ।

खित^{५०} भार दाढ वाराह खडकै^{५१}, कोम^{५२} कंध कडक्क^{५३} ए ॥३॥

१ आ.इ. समपीयौ । २ आ. कहियौ । इ. कहियौ । ३ आ.इ. घोघूंदै । ४ आ. इ. मेलिया । ५ आ.इ. पुदालम । ६ आ. पुमाण । इ. पुरसांण । ७ आ.इ. विजमति । ८ आ. कवूल । ९ आ.इ. वल । १० आ.इ. पुरम । ११ आ.इ. हलीयौ । १२ आ.इ. दमाम । १३ आ. नौवीति । १४ आ.इ. पंच सवद । १५ आ.इ. लष । १६ आ.इ. गरदक । १७ आ. वीधां । १८ आ. नेजा । १९ आ.इ. ढल । २० आ.इ. चल । २१ आ.इ. समूह । २२ आ.इ. असंख । २३ आ.इ. मिग । २४ आ. मुझै । इ. मुजै । २५ आ.इ. मंभली । २६ आ. मेगल । इ. मैगला । २७ आ. सुंड । इ. सुंड । २८ आ. सिघली । २९ आ. पप । ३० आ. रोलि । ३१ आ.इ. पषर । ३२ आ. गैमर । ३३ आ. इ. घट । ३४ आ.इ. उलट । ३५ आ.इ. सगड । ३६ आ.इ. दल । ३७ आ. क्रमे । ३८ आ. कंठल । ३९ आ.इ. परवत । ४० आ.इ. माल । ४१ आ.इ. क । ४२ आ.इ. हल्लै । ४३ आ.इ. मेघ-माल । ४४ आ.इ. क । ४५ आ.इ. वदल । ४६ आ.इ. घडहडै । ४७ आ.इ. पयाल । ४८ आ.इ. सेप । ४९ घडक्क । इ. घडक । ५० आ.इ. पित । ५१ आ. पडके । इ. पडके । ५२ आ. कोरम । ५३ आ. कडक । इ. कडक ।

दस दस^१ कोस मुकांम डेरा, खुरम^२ खेल^३ सिकार ए ।
 संघरै जाहर रोझ सांवर, अरस पंख^४ उतार ए ।
 अजमेर आयौ साहजादौ, 'करन' सत्ये^५ आण^६ ए ।
 परबर्ता पासै लाल पंडर, गयण गूडरा तांण ए ॥४॥

बादसाह जहांगीर रौ कुमार करणसींघ रौ सनमान करणी

॥ कवित्त^७ ॥

साहिजादौ अजमेर 'करन' हजरत^८ पै लाए ।
 जर^९ है गै सिरपाउ, बगसि खिजमति^{१०} फुरमा ए ।
 कहै साह जिहगीर^{११}, खुरम^{१२} सुरतांण (सुणेरहंत^{१३}) ।
 तम सूर हम खुदाइ^{१४}, पीर पक्कंवर^{१५} मुद्दत^{१६} ॥१॥

राठौड़ां री बढती सूं बादसाह रौ संकित होणौ

मखसूद^{१७} हुआ हूई फतै, बहुत तेग मारी सबल^{१८} ।
 तम दीया हिंदुस्थान^{१९} सब, खुरासांण^{२०} दिल्ली^{२१} मंडल^{२२} ॥१॥
 हठियौ^{२३} सिर हिंदुवां^{२४} माड मेले खूमांणां^{२५} ।
 आदि वैर संभरे^{२६} सरस दिल्ली^{२७} सुरतांणां ।
 राजा^{२८} सूरजसिंघ^{२९}, जोध गजसिंघ^{३०} जमज्जड^{३१} ।
 किसनसिंघ^{३२} करमैत, 'करन' सपेख^{३३} महाभड ।
 गुण दोस गिणै इक^{३४} सारिखा^{३५} घडै घाट मनभंज घड ।
 असपति^{३६} तणै सह एकठा, हियै^{३७} न मावै रठवड^{३८} ॥२॥

१ आ.इ. दस । २ आ.इ. पुरम । ३ आ.इ. खेल । ४ आ.इ. पंख । ५ आ.इ. सत्ये । ६ आ. आण । ७ आ. कवित्त । ८ आ. हजरत । ९ आ. जर । १० आ.इ. खिजमति । ११ आ. जिहगीर । १२ आ.इ. पुरम । १३ आ. रै रहंत । १४ आ. खुदाई । १५ आ. पक्कंवर । १६ आ.इ. मुद्दत । १७ आ.इ. मखसूद । १८ आ.इ. सबल । १९ आ. हिंदुस्थान । २० आ.इ. खुरासांण । २१ आ.इ. दिल्ली । २२ आ.इ. मंडल । २३ आ.इ. हठियौ । २४ आ.इ. हिंदुवां । २५ आ.इ. पुमांणां । २६ आ.इ. संभरे । २७ आ.इ. दिल्ली । २८ आ. राजा । २९ आ. सूरजसिंघ । ३० आ. गजसिंघ । ३१ आ.इ. जमज्जड । ३२ आ. किसनसिंघ । ३३ आ.इ. सपेख । ३४ आ.इ. एक । ३५ आ.इ. सारिखा । ३६ आ.इ. असपति । ३७ आ.इ. हियै । ३८ आ. रठवड । इ. राठवड ।

सूरसिंघ 'केहरी', कळह करिवा काळ^१ नळ ।
 एक खेत^२ ऊपना^३, एक पांणी भालाहळ^४ ।
 वाढ गाढ^५ बह वधै^६ अणी असमांन अडकै^७ ।
 पांण मांण अंहकार^८, खेध^९ वेधह^{१०} खरडकै^{११} ।
 रहमांण विनांणी हत्थ^{१२} तै, भंजण घडण संसार जग ।
 सुरतांण हुआ^{१३} खुरसांण सिरि, खेडपती^{१४} हुआ खडग^{१५} ॥३॥
 सूरजमाल^{१६} नरिदं, कनै गोइंद गज केसरि ।
 पखै^{१७} आप कोइ अवर, गिणै नह आपा ऊपरि^{१८} ।
 भड भुजाळ भड सिहर, मेर मांभी 'मांनावत' ।
 कुंभकरण^{१९} अवतार, दुरिति इक^{२०} दौढी रावत^{२१} ।
 काळी पहाडू केल्हणहरी, देख^{२२} साह दीयी हुकम ।
 राठोड हुवा हठि मारिवा, ग्रास वेध 'गोइंद'^{२३} जम ॥४॥

गाथा

पावकी जमसपी^{२४} वेस्या तुरिया^{२५} पांणियी^{२६} वहणै^{२७} ।
 तसकर तुरक नरिदौ^{२८}, आपांण कदे न हुवंतं ॥१॥

वादसाह री किसनसिंघ नै भडकाणी

दूहा

साह लगाडै रठवड^{२९} द्रौही दिल्ली^{३०} डग^{३१} ।
 वाढ चढै खुरसांण^{३२} सू^{३३}, करि खुरसांणी^{३४} खग^{३५} ॥१॥
 'गाजीसाह' पधारियी^{३६}, चढि मुजरै दरबार ।
 दिलीपति^{३७} दीनौ हुकम, केहरि 'गोइंद' मार^{३८} ॥२॥

१ आ.इ. कालनल । २ आ.इ. पेत । ३ आ.इ. उपना । ४ आ.इ. भालाहल । ५
 अ. गाढ । ६ आ. वधे । ७ आ. अडकै । ८ आ. अंहकार । ९ आ.इ. वेध । १०
 आ. वेधह । ११ आ.इ. परडकै । १२ आ.इ. हथ । १३ आ.इ. हवी । १४ अ. पेडपति ।
 १५ आ.इ. पडग । १६ आ. सूरजमाल । १७ आ.इ. पखै । १८ आ.इ. उपरि । १९
 आ. कुंभकर्न । इ. कुंभकरन । २० आ.इ. एक । २१ आ.इ. रावत । २२ आ.इ. देख ।
 २३ आ. गोइंद । २४ आ. सरयी । इ. सरपी । २५ आ. तुरीय । २६ आ. पाणीयी ।
 २७ आ. वेहणै । २८ आ. मरिदौ । २९ आ. राठवड । इ. रठवड । ३० आ.इ.
 दिल्ली । ३१ आ. डग । ३२ आ.इ. खुरसांण । ३३ आ.इ. सू । ३४ आ.इ. खुरसांणी ।
 ३५ आ.इ. खग । ३६ आ.इ. पधारियी । ३७ आ.इ. दिलीपति । ३८ आ.इ. मारि ।

महाराजकुमार गजसौंध री किसनसौंध नै पडूतर
 बळ^१ भरियै^२ गह पूरियै^३, असमर उभारेह^४ ।
 गजबंधी इम अखियौ^५, 'केहरि'^६ पूतारिह ॥३॥
 'केहरि'^७ कहियौ^८ पैज करि, ग्रहियै^९ चंद-पहास^{१०} ।
 'गोइंद' गिरियां^{११} मारियो^{१२}, पख^{१३} एकणि काइ मास ॥४॥
 गजबंधी इम^{१४} आखियो^{१५}, करि घूणे करमाळ^{१६} ।
 'गोइंद' माथै आवसी^{१७}, त्यां सिरि आयौ काल^{१८} ॥५॥
 'केहरि' वेडी (वै)^{१९} घणूं^{२०}, मज्जीठी^{२१} मुहराइ^{२२} ।
 करन^{२३} 'कमी' एकै मतै, वे उभा पडगाहि ॥६॥
 कुंअर^{२४} पयंपै 'केहरि', करि मोसूं^{२५} रिणताळ^{२६} ।
 'गोइंद' हुंती^{२७} साथि मौ, मै बूही गोपाल^{२८} ॥७॥
 वयणै^{२९} गाढा^{३०} वड चडै, मूठी गाढा^{३१} खरग^{३२} ।
 हाजरती^{३३} दरबार मै^{३४}, विरता बीयै^{३५} वरघ^{३६} ॥८॥

कवि वाच

सनमुख^{३७} साह निविद्धियो^{३८}, कीधी नारद कांम^{३९} ।
 कलि^{४०} लग्गी^{४१} रट्ठीड^{४२} हर, मरसी के वरियांम^{४३} ॥९॥
 डेरै^{४४} हालीहळ हुई, हुआ सचाळां^{४५} सत्थ^{४६} ।
 आज विहांणै रट्ठवड^{४७} करिसी^{४८} को भारत्य^{४९} ॥१०॥

१ आ.इ. बल । २ आ.इ. भरियो । ३ इ. पुरियो । ४ आ. उभोरह । इ. उभा-
 रेअ । ५ आ.इ. अखियो । ६ आ. केहरि । इ. केअरी । ७ अ. केहरि । ८ आ.इ.
 कहीयो । ९ आ.इ. ग्रहीयै । १० इ. चंपक हास । ११ आ.इ. गिरियो । १२ आ.इ.
 मारियो । १३ आ.इ. पख । १४ आ. एम । १५ आ.इ. आखियो । १६ आ.इ.
 करिमाल । १७ आ. आवसि । १८ आ.इ. काल । १९ अ.आ. वेडावै । २० आ.इ.
 घणु । २१ आ.इ. मजीठी । २२ आ.इ. मुहराई । २३ आ. कनै । २४ आ.इ.
 कुअर । २५ आ. मोसुं । इ. मोसु । २६ आ.इ. रिण ताल । २७ आ. हुंती । इ.
 हुंती । २८ आ.इ. गोपाल । २९ आ.इ. वयणे । ३० अ. गाढा । ३१ अ. गढा । ३२
 आ. पाघा । इ. पघ । ३३ आ.इ. हजरती । ३४ अ. मै । ३५ आ. वियै । ३६
 आ.इ. वघ । ३७ अ.इ. सनमुख । ३८ आ.इ. निविद्धियो । ३९ आ.इ. काम । ४०
 आ.इ. कलि । ४१ आ. लगी । इ. लागी । ४२ आ. रठीड । इ. राठीड । ४३ आ.
 इ. वरियांम । ४४ आ.इ. डेरै । ४५ आ. सचाला । ४६ आ.इ. सत्थ । ४७ आ. रठ-
 वड । इ. राठवडि । ४८ इ. करसि । ४९ आ.इ. भारत्य ।

गाथा

कुरु पिंड वेध वसुधा, अपण मंभेण भुज्झयी^१ उभए ।
 कुरखेत^२ जुद्ध^३ समयी, विणसिण काल^४ बुद्ध^५ विपरीती^६ ॥१॥
 राजा जुजठळ-राभी, धारण मन धू खत्र^७ ध्रमाणै^८ ।
 पाळण^९ पैज प्रतंग्या, दुरजोधनी 'केहरी' माण^{१०} ॥२॥

किसनसोध री आपरी परगे सू परामरस
 हूहा

'केहरि' परिगहि पालियी^{११}, करि परधाने गूभ (गुज्भ) ।
 राजा राठीडे^{१२} वडौ, जै सुं^{१३} मांडि म भूभ (भुज्भ) ॥१॥
 'केहरि' कहियी^{१४} सांभळी, ऐ^{१५} खत्री^{१६} पण राह ।
 बोल न जाए^{१७} सूरिमां^{१८}, काया जाइ त जाह ॥२॥

छन्द रोमकंध

बकवाद^{१९} हुआ^{२०} वधि वैर वडै घरि, बोलैय^{२१} भारी बोल हुवा ।
 विदसी भड धूहड आज विहांणै, कथन^{२२} कोपि कहै^{२३} कडुवा ।
 कुं(ण) तेजमहाद अणी काढ़ावै^{२४} वाढ़ाळां मुंहि^{२५} वाढ़ पडे ।
 जिणसाल^{२६} तियार करंत जरादी, घाय विनांणिय^{२७} लोह घडे ॥१॥
 हैथरु^{२८} हसंम^{२९} हलवळ^{३०} हुकल^{३१}, दीठ हलोहल^{३२} चाल दळां^{३३} ।
 भडभूळ^{३४} गहंमहकां गड भाळ^{३५}, वेद^{३६} हुई^{३७} ए-वीस वळां^{३८} ।
 प्रभणै इम 'केहरि' तेड परिगह^{३९} मै कळपै^{४०} तन मूभ तरणी ।
 पतिसाह^{४१} उतांमळ^{४२} मूभ समापै^{४३}, मो इकवार^{४४} अछै मरणी ॥२॥

१ आ.इ. भुज्झयी । २ आ. कुरपेत । इ. कुरपेत । ३ आ.इ. जुध । ४ आ.इ. काल । ५ आ. बुध । इ. बुधि । ६ आ. विपरीति । इ. विपरीत । ७ आ.इ. पत्र । ८ ध्र.मांणै । ९ आ.इ. पालण । १० इ. मांण । ११ आ.इ. पालीयी । १२ आ. राठीडे । इ. राठीडे । १३ आ. सुं । इ. सु । १४ आ.इ. वहीयी । १५ आ. ए । १६ आ.इ. पत्री । १७ आ.इ. जायै । १८ आ.इ. सूरमा । १९ आ.इ. बकवाद । २० इ. हुवा । २१ आ. बोलैय । २२ आ.इ. कथन । २३ आ.इ. कहे । २४ इ. कड़ावै । २५ आ.इ. मुहि । २६ आ.इ. जीणसाल । २७ आ. वेनांणीय । २८ आ.इ. हैथर । २९ आ.इ. हसम । ३० आ.इ. हलवळ । ३१ आ.इ. हुकल । ३२ आ. हालोहल । ३३ आ.इ. दल । ३४ आ.इ. भूळ । ३५ आ.इ. भाले । ३६ आ.इ. विद । ३७ आ. हुई । ३८ आ.इ. वलां । ३९ आ.इ. परिगह । ४० आ.इ. कलपे । ४१ इ. पतसाह । ४२ आ.इ. उतांमल । ४३ आ.इ. पमाण । ४४ आ.इ. एक वार ।

मन मूक तणे वीमाह जिसी अत^१, मारु 'गोइंद'^२ आप मरे ।
 आओ^३ भड साथि जिकौ^४ मो आवै काल^५ निमत^६ सरीर करे ।
 मम ढील करौ हल वार म लावौ, वेग चढौ^७ वहिळा^८ वहिळा^९ ।
 भिडता भड सूरज^{१०} मंडल^{११} भेदै, भूल^{१२} भरै रंभ भूक भला^{१३} ॥३॥

सांमंतां री तैयारी

वड रावत ऊससिया^{१४} तिण वेला, एम सुणै भुज आंमळता^{१५} ।
 ललकार हुवौ^{१६} भड आवै लासां, छोडै तेज तुरी छिलता ।
 वरियांम^{१७} लगाण पलाण वणावौ^{१८}, असे^{१९} उपाडै ऊकडता^{२०} ।
 परचंड हुसंड किया^{२१} तहि पक्खर^{२२}, अंबर सांमा ऊछलता^{२३} ॥४॥

जोधारां री जोगियां री जमात सूं कवि री रूपक बांधणी

जिण साल^{२४}, जुआण^{२५} करंत जरादो, जूसण बाधै^{२६} जम्मजडा^{२७} ।
 हद ओप विटोप रंगावळि हाथळ, सुमात्रा^{२८} करि सिद्ध^{२९} खडा^{३०} ।
 डिल^{३१} खट्ट^{३२} तिसूं डंड आवध डावै, पोरिस रावत पूअरिया^{३३} ।
 आवै^{३४} अहि कूंत दरगह^{३५} ऊभा^{३६}, थाट थिडवै^{३७} औथरिया ॥५॥

असटंग^{३८} विभूत सनाह उपावै, लोह छत्तीस^{३९} सिंघार लियं^{४०} ।
 सिध बारह पंथक तेरह साखा^{४१}, 'केहरि' गोरख रूप कियं^{४२} ।
 कमधज्ज^{४३} तजे मनमोह कायाचौ, वीर तिसौह विसतयरियं^{४४} ।
 तत ले निरबाण क राज तियाग^{४५}, गोपीचंद भरतथरियं^{४६} ॥६॥

१ आ. मृत । २ इ. गोइंद । ३ अ. आडौ । ४ आ. इ. जिके । ५
 आ. इ. काल । ६ आ. इ. निमत । ७ आ. इ. चढी । ८ आ. इ. वहिला । ९ आ. इ.
 वहिला । १० आ. सूरज । ११ आ. इ. मंडल । १२ आ. इ. भूल । १३
 आ. इ. भुला । १४ आ. इ. उससीया । १५ आ. इ. वेला । १६ आ. इ. आपंलता । १७
 आ. इ. हुओ । १८ आ. इ. वरीयांम । १९ आ. वणावौ । २० आ. ऐस ।
 आ. ऐस । २१ आ. इ. उकडतां । २२ आ. कीया । २३ आ. इ. पपर । २४ आ. इ.
 छलता । २५ आ. इ. जीण-साल । २६ इ. जुआण । २७ आ. इ. बांधे । २८ आ. इ.
 जमजडा । २९ आ. इ. सुमात्रा । ३० आ. इ. सिध । ३१ आ. इ. षडा । ३२ आ. इ.
 डीले । ३३ आ. इ. षटवीस । ३४ आ. इ. पुअरिया । ३५ आ. इ. आवै । ३६ आ. इ.
 दरगहि । ३७ आ. इ. उमा । ३८ थिडवै । ३९ आ. अष्टंग । ४० इ. उपावै । ४१
 अ. वतीस । ४२ आ. इ. लीयं । ४३ आ. इ. साषा । ४४ आ. इ. कीयं । ४५ ला. इ.
 कमधज । ४६ आ. इ. विसथरीयं । ४७ आ. तियाग । ४८ आ. इ. भरतथरीयं ।

पग वांमां^१ वांम रकेव परठुवि^२, धूहड धारणमन्न^३ धुअं^४ ।
 बलि वंत^५ तुरीगम^६ चंमर^७ बांधै, आरोता^८ भगदंत हुअं^९ ।
 चडिया^{१०} कमधज्ज^{११} चडेवा चौरंगि, पांणै^{१२} भाला पाकडिया^{१३} ।

...

...

...

...

॥७॥

प्रभात री गोइंद पर आक्रमण तथा गोइंद री मुकाबलो करणी

आया रवि ऊगै^{१४} 'गोइंद'^{१५} ऊपरि^{१६}, ताता लोही रातिसिया^{१७} ।
 असि छांड^{१८} रकेवां कूत^{१९} ऊपाडै, धाराळां^{२०} काढे^{२१} घसिया^{२२} ।
 उठियौ^{२३} राउ^{२४} भाटी लागे^{२५} अंबरि, दोमजि वासिग^{२६} खांड^{२७} डहै ।
 जुध सूती कुंभकरन्न^{२८} जगायौ, 'गोइंददास'^{२९} बांणास ग्रहै ॥८॥

जुध घरणण भाटी गोइंद री घोरगति प्राप्त होणी

आया भड, भाटी दौढ़ी आडा, रावत दौढ़ा^{३०} रुकभल^{३१} ।
 प्रिथिराज^{३२} 'गोइंद'^{३३} 'कमौ' 'भादौ' पडि, कुंभो^{३४} 'सूजी' 'मांन' कळ^{३५} ।
 चहवांण 'नरौ' 'हुल' 'पातल'^{३६} चौरंगी^{३७}, भूप कलावत 'रूप' भडै ।
 बालाउत 'तोगी' 'केसव'^{३८} बैवै, लोह 'गोइंद' रांणीत^{३९} लडै^{४०} ॥९॥

भिडियौ^{४१} रुघनांथ भूपाळ समोअम^{४२}, धार पहार विरुड^{४३} धडै^{४४} ।
 पहला^{४५} वरियांम^{४६} इता^{४७} पडिया^{४८}, ता पाछै गोइंददास^{४९} पडै^{५०} ।

१ आ. वांमौ-वांम । २ आ. इ. परठोवि । ३ आ. इ. मन । ४ आ. इ. धूअं । ५ आ. इ. बलियतं । ६ इ. तुरंगम । ७ आ. इ. चमर । ८ इ. आरो-हिता । ९ आ. इ. हुअं । १० आ. इ. चडीय । ११ आ. इ. कमधज । १२ आ. इ. पांणै । १३ आ. इ. पाकडीया । १४ आ. उगै । १५ आ. गोइंद । १६ आ. इ. उपरि । १७ आ. रातिसीया । १८ आ. छांडि । १९ आ. इ. छाडि । २० आ. इ. कुत । २१ आ. धाराळां । २२ आ. इ. काढि । २३ आ. इ. घसीया । २४ आ. इ. उठियौ । २५ आ. राय । २६ आ. इ. राऊ । २७ आ. इ. लागै । २८ आ. वासिगं । २९ आ. इ. वासिग । ३० आ. पाड । ३१ आ. कुंभकर्न । ३२ आ. इ. कुंभकर्न । ३३ आ. गोइंददास । ३४ आ. इ. गोइंददास । ३५ आ. इ. दौढ़ा । ३६ आ. इ. रुकभलु । ३७ आ. प्रिथीराज । ३८ आ. गोइंद । ३९ आ. कुंभो । ४० आ. इ. कलु । ४१ आ. पान । ४२ आ. चौरंगि । ४३ आ. इ. चौरंगि । ४४ आ. कसव । ४५ आ. इ. केसर । ४६ आ. रांणीत । ४७ आ. लडे । ४८ आ. भिडियौ । ४९ आ. इ. समोअम । ५० आ. इ. विरुड । ५१ आ. इ. घसे । ५२ आ. इ. पैहला । ५३ आ. इ. वरीयांम । ५४ आ. इ. एता । ५५ आ. इ. पडिया । ५६ आ. गोइंददास । ५७ आ. इ. पडै ।

रिमराह तियार^१ बंधै^२ रणवट्टां^३ 'खेम'^४ समोभ्रमि^५ रोकि खळां^६ ।
रुकै^७ रिमराह बहादर राजै भार ग्रहै^८ निय^९ भूअबळां^{१०} ॥१०॥

महाराजा सवाईसीध री युद्धारथ तैयार होणो

उठियो^{११} तिणवार वडौ उतलीबळ^{१२} सूरजसिंघ सह(स)^{१३} बळ^{१४} ।
कोपनळ^{१५} काळ^{१६} भुजाळ^{१७} कमंधज^{१८}, दोमजि^{१९} भंजण^{२०} सत्रु दळ^{२१} ।
किरणांवळि^{२२} सूरजि^{२३} जेम^{२४} कळक्कळ^{२५} धूण घजब्बड^{२६} खेड^{२७} धणी ।
चख^{२८} लाल कियां^{२९} मुख^{३०} चोळ^{३१} वरत्तह^{३२}, मेलै^{३३} अहां मूछ^{३४} अणी ॥११॥
अति सूरिति^{३५} आवस जेती^{३६} ऊफणि^{३७}, वाणण रूप जिहीं^{३८} वधियो^{३९} ।
विढवा दळ सांम्ही दीन्ही विक्खां^{४०}, जाणै^{४१} अतंक जागवियो^{४२} ।

महाराजकुमार गजसीध री आगमण

आयो 'गजसाह' उभारि असंमर^{४३}, जोध तयांरां जोधपुरी ।
मुह आगळि^{४४} तात तणौ^{४५} कळि^{४६} माती, मारण केवी 'माल' हरी ॥१२॥
जग जेठ भली जुध राजा जांमळि^{४७} आप पराकम दाखि^{४८} इसी ।
कुअरां गुर^{४९} आच करंमर^{५०} कीयौ, जोध अरज्जन^{५१} भीम जिसी ।
बळ^{५२} दाखवि^{५३} बेली वापुकारै^{५४}, ऊभा रोस उभांखरिया^{५५} ।
दळनायक^{५६} बेटी बाप दुसासण, बैवै^{५७} वासंग^{५८} वज्जरिया^{५९} ॥१३॥

१ आ.इ. तियारां । २ आ.इ. बंध । ३ आ. रणवट्टे । ४ आ.इ. खेम । ५ आ.इ. समोभ्रम । ६ आ.इ. पलां । ७ आ.इ. रुके । ८ आ.इ. ग्रहे । ९ आ.इ. नीय । १० इ. भुअबलां । ११ आ.इ. उठियो । १२ आ. उतलीबल । १३ आ. सहस । १४ आ. वलं । १५ आ.इ. कोपनल । १६ आ.इ. काल । १७ आ.इ. भुजाल । १८ आ.इ. कमधज । १९ आ. दोमति । २० अ. जंजण । २१ आ.इ. दल । २२ आ. किरिणावलि । २३ आ. सूरजि । २४ आ. जेम । २५ आ.इ. कलकल । २६ आ. घजवड । २७ आ.इ. घजवड । २८ आ.इ. घेड । २९ आ.इ. चष । ३० आ.इ. कीयां । ३१ आ.इ. मुष । ३२ आ.इ. चोल । ३३ आ.इ. वरत्तह । ३४ आ.इ. मेले । ३५ इ. मुछां । ३६ आ.इ. सूरिति । ३७ आ. जिही । ३८ आ.इ. ऊफणि । ३९ आ. जिही । ४० आ.इ. वधियो । ४१ आ. विषां । ४२ आ. विषां । ४३ आ.इ. असंमर । ४४ आ.इ. आगलि । ४५ आ.इ. तणौ । ४६ आ.इ. कलि । ४७ आ.इ. जांमलि । ४८ आ.इ. दाखि । ४९ आ.इ. गुरां । ५० आ. करंमर । ५१ आ.इ. अरज्जन । ५२ आ.इ. वल । ५३ आ.इ. दाखवि । ५४ आ. वापुकारे । ५५ आ. उभांखरिया । ५६ आ.इ. दलनायक । ५७ आ.इ. बै । ५८ आ.इ. वासंग । ५९ आ.इ. वजरीया ।

जुध वरणण

आया राठीड^१ राठीडां^२ ऊपरि^३ , तूटै तेग तिमंछ तिसा ।
 ऊलक्कापात^४ हुवै तिक अंबर, नाखत्र^५ जाणि खिरंत^६ निसा ।
 जुध सीस पडंत^७ धडांहं जोळा, वीजळ^८ धक्क^९ चरक्क^{१०} वहै ।
 गळिवांह^{११} लोळावट^{१२} होय^{१३} गळोवळ^{१४}, गुथावत्थ^{१५} सुभट्ट^{१६} ग्रहै ॥१४॥

मतवाळां जेम घुमंत महाभड, लोह तणी छक लालुरता ।
 जमदूठ उठंतं टवे जमदाढां, वाहै आवध वीबरता ।
 जुध माती रीठ डंडैहड 'जांगै', खाग^{१७} खडाखड^{१८} खाट^{१९} खडै^{२०} ।
 राजारा साजा ऊभा^{२१} रावत, पैला रावत खेत^{२२} पडै ॥१५॥

घोराडि जमदूठ^{२३} फाटि फटै^{२४} घट, नीसर सुस्सर^{२५} सेल नरां ।
 वाढाल^{२६} वहै रत खाल^{२७} विछूटै^{२८}, रंभ वरै वरमाळ वरां ।
 भूभारां^{२९} भाट मिलै^{३०} खग^{३१} भाळां^{३२}, जालै तुगम^{३३} तोप दुआँ । (जु)
 दळथंभ^{३४} दळां^{३५} विच 'सेखी'^{३६} दूजी, होळी 'केहरि' थंभ हुआँ ॥१६॥

गज-ग्राह ग्रहित पडित्त गडूथळ^{३७}, लोह वडौ अवसांण लहै^{३८} ।
 कळिमूल^{३९} (हु)^{४०} औ करि 'कंदळ'^{४१} 'केहरि' 'केहरि' 'जांमळि' कन्न^{४२} कहै^{४३} ।
 जोधा रिणमाल दुहू^{४४} दळ^{४५} जूटा, पूरि^{४६} लडाइय^{४७} जोर पडी ।
 पळ हाड छूहा^{४८} सिरखा^{४९} पडयालग, हूआँ^{५०} भारथ^{५१} हेक घडी ॥१७॥

१ इ. राठीड । २ राठीडां । ३ आ.इ. उपरि । ४ आ.इ. उलकापात । ५ आ.इ. नाखत्र । ६ आ.इ. पिरंत । ७ आ.इ. पंडति । ८ आ.इ. वीजल । ९ आ.इ. धक्क । १० आ.इ. चरक । ११ आ.इ. गालिवाह । १२ आ.इ. लोलावट । १३ आ.इ. हुए । १४ आ.इ. गलोवल । १५ आ.इ. गुथावथ । १६ आ. सुभट । १७ आ.इ. पाग । १८ आ.इ. पडा पड । १९ आ.इ. पाट । २० आ. पडै । इ. पडै । २१ आ.इ. उभा । २२ आ.इ. पेत । २३ आ.इ. जमदढ । २४ आ. फटै । २५ आ.इ. सुसर । २६ आ. वाटाल । इ. वाढाल । २७ आ.इ. पाल । २८ आ.इ. विछुटै । २९ आ. भूभारां । इ. भुभारां । ३० आ.इ. मिलै । ३१ आ.इ. पग । ३२ आ.इ. भाळां । ३३ आ.इ. तुगम । ३४ आ.इ. दलथंभ । ३५ आ.इ. दलां । ३६ आ.इ. सेपी । ३७ आ.इ. गडुथल । ३८ आ.इ. लहै । ३९ आ.इ. कलिमूल । ४० आ. हूआँ । इ. मुआँ । ४१ आ.इ. कंदल । ४२ आ. कर्न । इ. करन । ४३ आ.इ. रहे । ४४ आ.इ. दुहुं । इ. दुहु । ४५ आ.इ. दल । ४६ आ.इ. पुरि । ४७ आ.इ. लडाई । ४८ आ. छूहा । इ. हूआँ । ४९ आ.इ. सिरपा । ५० हूआँ । ५१ आ. भारथ ।

किसनसिंघ री साधियां सहित वीरगति प्राप्त होणी

कवित्त

पखै^१ इंद^२ आवध^३, कमण भेलै कर वज्जर^४ ।
 पवखै^५ खाटंग-घर^६, जरै कुण खारौ^७ जैहर^८ ।
 पवखै^९ गोरखनाथ^{१०}, कमण जाइ^{११} पैसे विमर ।
 पखै^{१२} रांम दहकंध, कमण^{१३} वेधै^{१४} एकै सर ।
 हणमंत पखै^{१५} वानर अवर, कवण कूदि^{१६} लंघै महण ।
 गजसिंघ पखै^{१७} पूजै कलिह, सूरसिंघ जांमलि^{१८} कमण ॥१॥

किसनसिंघ कमधज्ज^{१९}, मुआ^{२०} गोअरधन मारे ।
 करमसेन नीकळ^{२१}, कूंत गज कूंभ पहारे ।
 सकतसिंघ अग्रह, 'करन' रहियौ^{२२} पग मंडे ।
 सूर धीर नेठहै^{२३}, गया^{२४} काइर बळ^{२५} छंडे ।
 आत्रत्त^{२६} हुआ^{२७} एकै घडी, हुआ^{२८} सुभट्टां^{२९} सत्थरा^{३०} ।
 संग्राम चक्र वूहा सत्रां^{३१}, सूरसिंघ चक्रवत्त^{३२} रा ॥२॥

'माधव' मांन 'किसोर' सग्रह^{३३} 'रासी' 'सूरिजमल' ।
 पांचै(इ) वीरमदेव^{३४}, जांणि 'माधौ' 'गांगौ' तल ।
 'वाघ' सुत्त^{३५} 'गोपाल', खेत^{३६} 'चांपा' हर ओपम ।
 लखमण^{३७} संभ्रम 'प्राग'^{३८}, 'माल' 'सुरताण' समोभ्रम^{३९} ।
 चहवांण पांच^{४०} कूरम उभै, भीम वाघ भांटी पडे^{४१} ।
 सो^{४२} साठ रहै^{४३} 'केहरि' सरस, राठीडां रिण नीमडे^{४४} ॥३॥

१ आ.इ. पखै । २ इ. इंद । ३ आ.इ. आवध । ४ आ.इ. वज्जर । ५ आ.इ. पखै ।
 ६ आ. खाटंगघर । इ. पांगंघट । ७ आ. पारौ । इ. पायै । ८ आ.इ. जहर । ९ आ.
 इ. पखै । १० आ. गोरखनाथ । इ. गौरखनाथ । ११ आ. जाइ । इ. जाय । १२
 आ.इ. पखै । १३ आ. कमण । १४ आ.इ. छैदे । १५ आ.इ. पखै । १६ आ. कुदि ।
 १७ आ.इ. पखै । १८ आ.इ. जामलि । १९ आ.इ. कमधज्ज । २० आ.इ. मुआ । २१
 आ.इ. नीकले । २२ आ.इ. रयौ । २३ आ. नेठहै । २४ आ. गया । २५ आ.इ.
 वल । २६ आ.इ. आत्रत्त । २७ आ.इ. हुआ । २८ आ. हुआ । इ. हुवा । २९ आ.
 इ. सुभट्टां । ३० आ.इ. सत्थरा । ३१ आ. सता । ३२ आ. चक्रपति । इ. चक्रवित ।
 ३३ आ. सगृह । इ. सगहं । ३४ आ. वीरमदेव । ३५ आ.इ. सुत । ३६ आ.इ. पेत । ३७
 आ.इ. लखमण । ३८ आ. पयाग । इ. धयाग । ३९ आ. समोभ्रम । ४० आ. पांच । ४१
 आ.इ. पडे । ४२ आ.इ. सोह । ४३ आ. रहै । ४४ इ. निमडे ।

महादुरग^१ अजमेर, सूर जीती^२ रिण चाचर ।
 जळीयो^३ जोगणपुरी, वाइ जाणै वैसन्नर^४ ।
 पाखरिजै^५ गजथट^६, खान^७ सुरताण मिलै दळ^८ ।
 कटक बंध अनिमध^९, हुऐ फौजा हीलोहळ^{१०} ।
 गजसिंघ साह मुंह आगली, ग्रहै बाथ पडतौ^{११} गइणि^{१२} ।
 अडपियो^{१३} सांड ऊदग^{१४} रू, सिंघ^{१५} मांड सुरताण सुणि ॥४॥

सहाराजा सवाई सूरसींघ रौ जोधपुर आगमण

पातसाह^{१६} आळोज, मन्न^{१७} विच्चार^{१८} विमासै ।
 वळ^{१९} छळ^{२०} दळ^{२१} दक्खवै^{२२}, पाण विन्नाण^{२३} कळासै^{२४} ।
 दे घोडी सिरपाउ, हुकम कीयी छंडे हर ।
 जाह देस आपणै^{२५}, सीख^{२६} दीन्ही दे आदर ।
 नौवत्ति^{२७} नगारे वाजते, चमर ढुळते^{२८} चीसरै^{२९} ।
 जगजेठ राव जोधपुरी^{३०}, जोधपुरह^{३१} आयी घरे ॥५॥

चंद्राइणा

सूरजसिंघ नरिंद, जोधपुर आविया^{३२} ।
 नोवोति^{३३} रोडि दमांम^{३४}, निसाण रुडाविया^{३५} ।
 सद^{३६} हुआ^{३७} सहनाइ^{३८}, बुरंग निफेरियां^{३९} ।
 परिहां वजि^{४०} काहूळ^{४१}, डंड^{४२} वळे^{४३} (घाड) फेरियां^{४४} ॥६॥

१ आ. दुर्ग । इ. दुरंग । २ आ. जिती । ३ आ.इ. जळीयो । ४ आ. वेसनर । इ. वेसनर । ५ आ. पापरिजै । इ. पापरीजै । ६ आ.इ. गजथट । ७ आ.इ. पांन । ८ आ.इ. दल । ९ आ. अनमंघ । इ. अनिमंघ । १० आ.इ. हीलोहल । ११ इ. डगती । १२ आ. गइणि । इ. गयणि । १३ आ.इ. अडपीयो । १४ आ. उदगर । इ. उव्वर । १५ आ.इ. सीध । १६ आ. पातिसाह । १७ आ.इ. मन । १८ आ.इ. विचार । १९ आ.इ. वल । २० आ.इ. छल । २१ आ.इ. दल । २२ आ.इ. दक्खे । २३ आ. इ. विनाण । २४ आ.इ. कलासे । २५ आ.इ. आपरै । २६ आ.इ. सीध । २७ आ. नौवत्ति । इ. नौवत्त । २८ आ.इ. ढुलते । २९ आ. चीसरै । ३० आ.इ. जोधपुरी । ३१ आ.इ. जोधपुर । ३२ आ. आवीया । इ. आवीया । ३३ आ. नौवत्त । इ. नौवत्ति । ३४ आ. दसांम । इ. दमांन । ३५ आ.इ. रुडावीया । ३६ आ.इ. सद । ३७ आ. हुआ । ३८ आ. सनाई । आ. असनाई । ३९ आ. फेरीया । इ. निफेरीया । ४० इ. वाजि । ४१ आ. काहल । इ. काहुल । ४२ आ. डूल । ४३ आ.इ. वले । ४४ आ.इ. फेरीयां ।

बिन्ह बिन्ह लाजां बंध^१ । कमळा^२ दीरघ^३ कंध ।
 मसी^४ भरै मदोमत^५ । रुंडी^६ कोसा विरतं^७ ॥४॥
 सिलहां कोठी सिदूख^८ । उपाडे^९ ऊठ^{१०} असंख^{११} ।
 डुंगा^{१२} भारिया^{१३} दरक्क^{१४} । करै कुंट^{१५} केसरक्क^{१६} ॥५॥
 कमळा किया^{१७} कतार । भर^{१८} बुडी^{१९} तंग भार ।
 लेह^{२०} देह छोडीजै लास । विलोहणै^{२१} वरहास ॥६॥

घोडां रौ धरणण

चढिवा^{२२} काज चंचळ^{२३} । वालि छूट^{२४} वैंगागळ^{२५} ।
 हरड^{२६} किहाडा हीर । माणके^{२७} बोर हमीर ॥७॥
 रोभी निला गंगाजळ । हंसला नैण काजळ ।
 अस सेराहा अऊव । खैंग^{२८} रोहला हाबूब^{२९} ॥८॥
 गुरड सीहा गुलाल । चीतळा चौरंगी चाल ।
 कविला^{३०} काळा^{३१} केकाण । कमेत^{३२} पंचकित्याण^{३३} ॥९॥
 करडा के कबूतर^{३४} । भूरडा^{३५} स्याह भमर ।
 चंपला सोनडा जंग । पयला तेजी पवंग ॥१०॥
 अबलक सीविराजी । तापणा महुडा^{३६} ताजी ।
 लालमां मोला^{३७} लाखीक^{३८} । कुलिथ्या केवी कोडीक ॥११॥
 मिघला^{३९} चक्कवा^{४०} मोर । कूदणा भंपां^{४१} किसोर ।
 अँराकी ऊन्हा अलल^{४२} । भाडजी आरबी भल्ल^{४३} ॥१२॥

१ आ.इ. बंध । २ आ.इ. कमला । ३ इ. दीरघ । ४ इ. मसि । ५ आ.इ. मदोमत । ६ इ. रुंडी । ७ इ. उरत । ८ आ.इ. सिदूष । ९ आ. ऊपाडे । १० आ. आ.इ. ऊठ । ११ आ.इ. असंख । १२ आ.इ. डुगा । १३ आ.इ. भारीया । १४ आ.इ. दरक । १५ आ.इ. कुटे । १६ आ.इ. कसरक । १७ आ. कोया । इ. कीय । १८ आ. भरै । १९ आ. छुडि । २० आ. लहे । २१ आ.इ. विलोहणे । २२ आ. चढीया । २३ आ. चंचल । २४ आ. छूटे । २५ आ. वैंगागल । इ. वेगागल । २६ आ. हरडिया । २७ आ. माणक । २८ वैंग । २९ आ. पांबूब । ३० आ.इ. कविला । ३१ आ.इ. काला । ३२ आ.इ. कमेत । ३३ आ. पंच कित्याण । इ. पंच कल्याण । ३४ इ. कबुतरा । ३५ आ.इ. भुरडा । ३६ आ. महुडा । ३७ इ. मौला । ३८ आ.इ. लाषीक । ३९ आ. मिघला । इ. मृघला । ४० आ.इ. चक्का । ४१ आ. भंय । ४२ आ.इ. अलल । ४३ आ.इ. भल ।

मुगट कछी सुमाग । जबाधिया^१ वच्छ नाग^२ ।
 वदकसमी वेलारी । खैग^३ बगसी खंधारी^४ ॥१३॥
 केवी^५ केची मुक्कराणी^६ । खेत^७ जाया^८ खुरसांगी^९ ।
 सामंद्री^{१०} वेग मै सर^{११} । पेखियै^{१२} प्रवत्तै^{१३} पर ॥१४॥
 मोरै घरै^{१४} छोट मोट । गया परबितौ गोड ।
 धूमडा घाटी धडाळ । पांणी पंथा^{१५} पटा वाल ॥१५॥
 तुरकी^{१६} ताजी तुरंग । विलाती देसी विडंग ।
 धूना^{१७} चित्तांगिया^{१८} धैंग । खेड^{१९} रा नीपना खैंग^{२०} ॥१६॥
 घणा घणा मोला^{२१} धोडा । पाइगहां पाटी - होडा^{२२} ।
 आगला धडे अलंब । अंजूली^{२३} पियै^{२४} अंब^{२५} ॥१७॥
 वेग लीयै^{२६} मूठी^{२७} वाव । राज रथ पंखां राव^{२८} ।
 मैगळां ऊरध मंड । खेसै^{२९} आठ^{३०} भीत खंड^{३१} ॥१८॥
 खुरै^{३२} खांना^{३३} पडै खुरी^{३४} । तांनामांना^{३५} करै तुरी ।
 फौरा दीयै^{३६} फरगट^{३७} । नाच छंद जिही नट^{३८} ॥१९॥
 सुधा वाघ सरवंग । आरखे^{३९} चित्रांम^{४०} अंग ।
 अंतरिक्ख^{४१} वहै ओळ । ग्रंभ गळे^{४२} घाते गोळ ॥२०॥
 डहै जेम कपि^{४३} डांण । वाज वोम रा विवांण ।
 जोध लिये बाथां जोड । छूटै हुई छोड छोड ॥२१॥
 लाइजै मुखै^{४४} लगांण । पूठी मांडीजै^{४५} पलांण ।

१ आ.इ. जवधीया । २ वछ नाग । ३ आ.इ. पैंग । ४ आ.इ. बंधारी । ५ आ.
 केवी । ६ आ.इ. मुकराणी । ७ आ.इ. पेत । ८ आ. जाया । ९ आ.इ. पुरसांगी ।
 १० आ. सामंद्री । ११ आ. सरा । १२ अ. पेखिये । इ. वेखियै । १३ आ. प्रवत्तै ।
 १४ आ. धडे । १५ आ.इ. पाणी पंथा । १६ आ.इ. तुरकी । १७ आ. धुना । १८
 अ. चित्तांगिया । १९ आ.इ. पेड । २० आ.इ. पैंग । २१ आ.इ. मोलो । २२ आ.
 पाटि-घाडा । २३ इ. अंजुगी । २४ इ. पीयै । २५ अ. अंग । २६ आ. लियै । इ.
 लीये । २७ आ.इ. मुठी । २८ आ. पंषराव । इ. पंषराउ । २९ आ.इ. पेसै । ३०
 आ.इ. आठु । ३१ आ.इ. षंड । ३२ आ. पुर । इ. वुरे । ३३ आ.इ. पांना । ३४
 आ.इ. पुरी । ३५ आ. तांना-माना । इ. तांना-यांना । ३६ अ. दीयै । ३७
 ३७ आ.इ. फरगट । ३८ आ.इ. नट । ३९ आ.इ. आरये । ४० आ. चित्राय । ४१
 आ. अंतरिप । इ. अंतरीष । ४२ आ.इ. गले । ४३ आ.इ. कपी । ४४ आ.इ. मुपे ।
 ४५ आ. मांडील ।

महाराजकुमार गजसौंध री जाळोर धिजय करण री तैयारी
 राजा काम^१ भळावियी,^२ राखे^३ विकळी^४ कथ^५ ।
 कह्यो^६ वजीरां^७ 'गजपती',^८ तेडो^९ साऊ^{१०} सथ^{११} ॥११॥
 चीरी फाटी चहु^{१२} दिसे,^{१३} सांमी^{१४} कमधज्जांह^{१५} ।
 कटक पधारी^{१६} ठाकुरे, जोधा रिडमल्लांह^{१७} ॥१२॥

छन्द सिंहावलोकण^{१८}

रिणमल इक^{१९} जोधा अनै^{२०} अखैरज,^{२१} एक एकह लख^{२२} पखर^{२३} ए^{२४} ।
 चांपा चत्रवाह अनड चलता,^{२५} परबत डूंगर गर भक्खर^{२६} ए ।
 मुह रावत मछर भयंकर मांडण, महि मंडळावत मछराळ^{२७} ।
 पातावत परभुसींह^{२८} पंचांण, रूपा जीपण रिणताळ^{२९} ॥१॥
 कळिहण^{३०} करनीत^{३१} वडा^{३२} काळंनळ, भेडक नाथू^{३३} निवड भडं ।
 लखथाट^{३४} करे^{३५} दहवाट लखंमण,^{३६} घण घाए वर^{३७} त्रिधि^{३८} धिघडं ।
 सुरा^{३९} 'अडूवाळ' सुजड हथ 'सांडा', 'जैता' जंगमल जैताई^{४०} ।
 कांधिल कळिमूल^{४१} सदा कळि^{४२} चालण, वैरा वेढक^{४३} वरदाई^{४४} ॥२॥
 'भीमीत' 'सतावत' 'अरडक मल्लां', 'कांना' 'पूना' 'रिणधीरं'^{४५} ।
 'देहल' 'जैसीघ'^{४६} 'अनै' 'गोगादे', 'वीरम' 'माला' वर वीरं ।
 'जैतमल' 'सोभिति' 'लखा'^{४७} जमज्जड^{४८} धूहड 'ऊहड' खत्र धोडं^{४९} ।
 सक सींधल^{५०} धांधलि अनियै^{५१} सूंडा, तेरह^{५२} साखा^{५३} राठीडं ॥३॥

१ आ. काम । २ आ.इ. भलावीयी । ३ आ.इ. राखेवी । ४ आ. विकलि । इ. विकल । ५ आ.इ. कथ । ६ आ. कह्यो । ७ आ. वजीरा । ८ आ. गजपति । ९ आ.इ. तेडो । १० आ. साऊ । ११ आ.इ. सथ । १२ आ. चिहु । इ. चहु । १३ इ. दीसे । १४ इ. सांम्ही । १५ आ.इ. कमधजां । १६ आ. पधारी । १७ आ. रिड-मल्लांह । इ. रिणमल्लांह । १८ आ.इ. समिया लोकण । १९ आ.इ. एक । २० आ. अनै । २१ आ. अषरज । इ. अषैराज । २२ आ. लष । २३ आ.इ. पषर । २४ आ. ऐ । २५ आ.इ. चलता । २६ आ.इ. भषर । २७ आ. भुइसीह । २८ आ.इ. कलि-हण । २९ आ.इ. करनीत । ३० आ. वडा । ३१ आ.इ. नाथु । ३२ आ.इ. लषथाट । ३३ आ.इ. करे । ३४ आ.इ. लषमण । ३५ इ. वरि । ३६ आ. तिधि । ३७ इ. सुरा । ३८ आ. जैताई । ३९ आ.इ. कलिमूल । ४० आ.इ. कलि । ४१ आ. वेढक । ४२ आ. वरदाई । ४३ इ. रिणधर । ४४ आ. जैसीघ । इ. सीघ । ४५ आ.इ. लषा । ४६ आ.इ. जमजड । ४७ आ. षत-धोड । इ. षत्र धोडो । ४८ आ.इ. सींधल । ४९ आ. अनियै । इ. अनियै । ५० आ. तेरह । ५१ आ.इ. साखा ।

छप्पन^१ मै कोडि छात्राळा^२ छिडिया,^३ जादव भाटी जोधारं ।
 साखोधर^४ सोढा सोहड^५ सजूभा,^६ पैतीसै^७ साख^८ पमारं ।
 वड गूजर^९ तूंअर^{१०} के^{११} वाघेला^{१२}, हाडा खीची^{१३} चहवाणं^{१४} ।
 चाळूक^{१५} चंदेल अने^{१६} चाळुडा,^{१७} के कछवाहा निरबाणं^{१८} ॥४॥

दहिया^{१९} पडिहार इंदा^{२०} आसाइच^{२१}, गोहिल नै हुल पीपाडा ।
 गैलोत^{२२} अने मांगळिया^{२३} गाढा, एक (.....) सीसोदा हाडा^{२४} ।
 डोडीया डोड दाहिमा डाभी, भाला भालण करिमालं ।
 बहियोला^{२५} बारड मौहील मौरी^{२६}, वइस^{२७} अने^{२८} सिक्खरवाल^{२९} ॥५॥

जम जड के जाट चाहिलं^{३०} जोया, के मुकवाणा^{३१} मल्हणासं ।
 वह भूभारा कभुटा वोडाणां,^{३२} गौड^{३३} उदाळण परिग्रासं ।
 राजकुळी वंस छतीसेइ^{३४} रावतं, वीरति वंका वरियामं^{३५} ।
 मारुधर^{३६} सांम तणै छलि^{३७} मिलिया^{३८}, करण कणैगिरि^{३९} संग्रामं ॥६॥

सांमंतां री वरणण

सांमंत^{४०} जिके हणमंतह,^{४१} सिरखा लख^{४२} दळ सुं^{४३} एकल^{४४} लडै ।
 वैरा^{४५} कजि जिके^{४६} अघडची^{४७} समवड, चौरिंग^{४८} यदां दांत चडै ।
 आखडै^{४९} जिके सदा^{५०} आवटियळ^{५१}, रिणारिदल^{५२} जीपंति^{५३} रिणं ।
 सुरातन^{५४} जिके सहस वळ^{५५} सुरा, पह साढूळा^{५६} पंचाईणं^{५७} ॥७॥

१ आइ. छप्पन । २ अ. छात्राळा । आ. भाला । ३ आ. छिडीया । ४ आ.इ. सांघोधर । ५ आ. सोहड । ६ आ. सजूभा । ७ आ. पैतीसे । ८ आ.इ. साख । ९ आ. वडगुजर । १० आ. तुअर । इ. तुवर । ११ अ. कै । १२ आ. वाघेला । १३ आ.इ. खीची । १४ आ. चहवाणं । १५ आ.इ. चालुक । १६ आ. अने । १७ आ.इ. चाळुडा । १८ आ. निरवाण । १९ आ.इ. दहिया । २० आ. इंदा । इ. इद्रा । २१ इ. आसायच । २२ आ. गैलोत । २३ आ.इ. मांगलीया । २४ आ.इ. आहाडा । २५ आ.इ. बहियोला । २६ इ. मारी । २७ आ. वइस । २८ आ. अने । २९ आ.इ. सिक्खरवाल । ३० आ. चाहिल । ३१ आ. मुकवाण । ३२ इ. वोडाणां । ३३ आ.इ. गोड । ३४ इ. छतीसेइ । ३५ इ. वरीयामं । ३६ आ. मारुधर । ३७ आ.इ. छलि । ३८ अ.इ. मिलिया । ३९ आ. कणैगिरि । ४० आ.इ. सांमंत । ४१ आ.इ. हणमंत । ४२ आ.इ. सरिपा । ४३ आ.इ. लप । ४४ इ. सुं । ४५ आ.इ. एकल । ४६ इ. वैरां । ४७ इ. जिके । ४८ इ. अघवी । ४९ अ. घोरि । इ. चौरिग । ४९ आ.इ. आखडे । ५० आ.इ. सदा । ५१ आ. आवटीयल । इ. आवटीयल । ५२ अ.इ. रिघल । ५३ अ. जीपंत । ५४ आ.इ. सुरातन । ५५ आ.इ. वल । ५६ आ.इ. साढूला । ५७ इ. पंचाईणं ।

बलवन्त^१ जिके अरजण बाणपंती,^२ भूभ सरीखा^३ गजा भलं ।
 भगदंत^४ जिके आस्ता भेडक, भूरी^५ भीषम^६ करन सलं ।
 दुस्सासण^७ जिके जिसा दुरजोधन, रिख^८ असथामां द्रोण^९ रिखं^{१०} ।
 भारथ^{११} भुइ^{१२} जिके कदे नह भाजै, परदळ^{१३} भंजण पांच मुखं^{१४} ॥८॥
 पिडि संगम जिके मंडै^{१५} हुइ^{१६} पांच(म)रु, धुधण^{१७} मन धरै धडै^{१८} ।
 दुहु बांहां^{१९} जिके लहै लख^{२०} निय^{२१} दिठ, विठा इकाणि^{२२} तरवार वडै ।
 चड्डै^{२३} रिण जिके पुजै रिण चाचरि, सुजडे पिसणां पाडि सिरं ।
 वीटांणा^{२४} जिके रहै रावत वट, माभी परबत मेर^{२५} गिरं^{२६} ॥९॥

पठाणां री वरणण

पठाण^{२७} जिके पग न दियै पाछा, सिर पग मंडै^{२८} सहस फणं ।
 खांडैराव^{२९} जिके खडग हथ^{३०} खीवर,^{३१} ग्रहै भुजै पडतौ गयणं ।
 कलहेवा^{३२} जिके वडा^{३३} कुदरत मै^{३४}, हांस सबळि^{३५} खळ^{३६} वहण हियै^{३७} ।
 त्रिजडां^{३८} मुंहि जिके वरै त्रिविधिधड, देखे^{३९} जम मुंहि^{४०} पूठ^{४१} दियै^{४२} । १०
 ग्रहि बांथां जिके उपाडै गिरवर,^{४३} काढै^{४४} कुंजर^{४५} डसण करै^{४६} ।
 ऊथाळ^{४७} जिके मछरिया^{४८} आहवि,^{४९} धरा नकुळ जिम कूंत धरै^{५०} ।

पुन सांमंतों री वरणण

वड^{५१} रावत जिके वडा^{५२} ग्रह^{५३} वेढक, भडपै अरियण खडग^{५४} भडं ।
 आया जूहार^{५५} कुंअर गुर^{५६} आगळि,^{५७} भड कमधज लख^{५८} अवरभडं । ११

- १ आ.इ. बलवन्त । २ आ.इ. बाणापति । ३ आ. सरिषा, इ. सिरषा । ४ इ. भगदंत ।
 ५ आ.इ. भूरी । ६ भीषम । ७ आ.इ. दुसासण । ८ आ. दुर्जोधन । ९ आ.इ. रिष ।
 १० इ. द्रोण । ११ आ.इ. रिष । १२ इ. भारथ । १३ इ. भुय । १४ आ.इ. परदल ।
 १५ आ. पंचमुखं । इ. पांचमुखं । १६ आ. मंडै । १७ इ. हुई । १८ आ. धंधण ।
 १९ आ. धडे । २० आ.इ. बालं । २१ आ.इ. लष । २२ आ.इ. नीय । २३ आ.इ.
 इकाण । २४ आ.इ. चडै । २५ इ. विटांण । २६ आ. मरे । २७ आ. गिरं । २८
 आ. पठाण । इ. पठाण । २९ इ. माडे । ३० आ.इ. पडिराव । ३१ आ.इ. पडग
 हथ । ३२ आ.इ. वीवर । ३३ आ. कलहैवा । इ. कलहेव । ३४ आ. वडा । ३५
 आ. मै । ३६ आ.इ. सबलि । ३७ आ.इ. पल । ३८ आ.इ. हीयै । ३९ आ. त्रिजडां ।
 ४० आ.इ. देखे । ४१ आ.इ. मुहि । ४२ आ.इ. पूठि । ४३ आ.इ. दीयै । ४४ आ.
 गिरवर । ४५ आ. काटे । ४६ आ.इ. कुंजर । ४७ आ. करे । ४८ आ. उछाळ । ४९
 आ.इ. मछरीया । ५० आ. आहवि । ५१ आ. धरे । ५२ आ. वड । ५३ आ. वडा ।
 ५४ आ.इ. गृह । ५५ आ.इ. पडग । ५६ आ.इ. जूहार । ५७ आ.इ. कुंअर गुर । ५८
 आ.इ. आगलि । ५९ आ.इ. लप ।

गाहा चौसर

भड वंका राठीड^१ सुभट्ट^२ । सळखाहर^३ सांमंत^४ सुभट्ट^५ ।
 सांम^६ दरग ही^७ मिळ^८ सुभट्ट^९ । साख^{१०} छतीसां तणा सुभट्ट^{११} ॥१॥
 थिडिवे थिडिवे^{१२} थिडिया थट्ट^{१३} । थोया कटकह कोअणं थट्ट^{१४} ।
 हूकळ^{१५} कळ^{१६} हूवै^{१७} हयंथट्ट^{१८} । गहंमह हुए गुडे गज थट्ट^{१९} ॥२॥

... ..
 हैगड भड गैघड हालोहळ । हाकल^{२०} होल चाळ^{२१} हालोहळ^{२२} ॥३॥
 साहण वाहण हसम संभाळ^{२३} । सीलां^{२४} डेरां रखत^{२५} संभाळ^{२६} ।
 भरिया माल सिंदूक संभाळ^{२७} । साथे लियण काज संभाळ^{२८} ॥४॥

सेना का कूच वरणण

छन्द विहमाला

हुई चाल हळ वळ^{२९}, हम तम हालोहळ^{३०} ।
 अराबां^{३१} नाळि^{३२} उपाडि,^{३३} चोटां नूं नगारा चाडि ॥१॥
 गज नाळि^{३४} गोळां^{३५} वांण, अनंमंघ^{३६} असमांण ।
 अणिया^{३७} फरासै^{३८} ऊंठ,^{३९} पलांणै घातिया^{४०} पूठ^{४१} ॥२॥

ऊंठां री वरणण

जमाज गोरा व जूंग^{४२} । गूगळा^{४३} मई^{४४} गडंग ।
 पंडरा राता^{४५} प्रचंड । भूरा काळा^{४६} भळि^{४७} खंड^{४८} ॥३॥

१ आ. राठीड । २ आ.इ. सुभट । ३ आ.इ. सलपाहर । ४ आ. सामंत । इ. सामंत । ५ आ.इ. सुभट । ६ आ.इ. साम । ७ आ.इ. हि । ८ आ.इ. सुभट । ९ आ.इ. साव । १० आ.इ. सुभट । ११ आ.इ. थिडिवे थिडिवे । १२ आ.इ. थट । १३ आ.इ. थट । १४ आ. हूकल । इ. हूकल । १५ आ.इ. कल । १६ आ.इ. हुवे । १७ आ.इ. थट । १८ आ.इ. गजथट । १९ आ.इ. हांकल । २० आ. हालचाल । २१ आ.इ. हालोहल । २२ आ. सभाले । इ. संभाले । २३ आ.इ. सिलां । २४ आ. इ. रखत । २५ आ. सभाले । इ. संभाले । २६ आ.इ. हलवल । २७ आ.इ. हालोहल । २८ आ.इ. अरापा । २९ आ.इ. नाळि । ३० आ. ऊपाडी । ३१ आ. गजनाळि । ३२ आ.इ. गोला । ३३ आ. अनमंघ । इ. अनमघ । ३४ आ.इ. आंणीया । ३५ आ. फेरसै । ३६ आ.इ. ऊंठ । ३७ आ. घातीया । इ. घातीए । ३८ आ.इ. पुठि । ३९ आ.इ. जुग । ४० आ.इ. गुगला । ४१ आ.इ. मई । ४२ आ. रीता । ४३ आ. इ. काला । ४४ आ.इ. भलि । ४५ आ.इ. पंड ।

वानैता^१ असवार. गयंद सिंगारिया^२ ।
 हुआ^३ मंगलचार, कवी^४ सुभकारिया^५ ।
 मुंहि आगळि 'गजसाह', पराक्रम भांमणा ।
 परिहां ऐसा^६ पूत सपूत^७ क(नित) वधांमणां ॥२॥

राजा महले^८ बैस क, चमर दुळाविया^९ ।
 सैणां मनै^{१०} संतोख^{११}, खळां^{१२} नह भाविया^{१३} ।
 डरिया^{१४} नैडा देस, औद्रावो^{१५} अन्नडां^{१६} ।
 परिहां काढ़े पिसण^{१७}, कथ रहै^{१८} अच्चडां^{१९} ॥३॥

महाराजा सूरसीघ री दखण में जाणी तथा महाराजकुमार
 गजसीघ री सासण भार सम्हाळणी

रहिया^{२०} जोध दुरंग^{२१} चौमासी^{२२} एकडा ।
 साहि बुलाए पासि, पठाए^{२३} मेवडा ।
 ले घोडी^{२४} सिरपाउ, दखिण^{२५} दिस चल्लिया^{२६} ।
 परिहां हंदा 'गजण', भोम भर झल्लिया^{२७} ॥४॥

इहा

राजा दखिण^{२८} विराजियो^{२९} गा दखणी^{३०} हुइ^{३१} रद^{३२} ।
 साह^{३३} सुपारिस सांभळे, की फत्तै सरहद^{३४} ॥४॥

मोझी मेर अभंग भड, मारु अमली-माण^{३५} ।
 गिल्लण गटां^{३६} भूखालुओ^{३७}, ओबासै^{३८} जमराण ॥२॥

१ आ. वानैतां । २ आ. सिंगारीया । ३ आ. इ. हुआ । ४ इ. कवि । ५ आ. इ. सुभकारीया । ६ आ. ऐसा । ७ आ. इ. सयुत । ८ आ. महले । ९ आ. इ. दुलावीया । १० आ. मन । आ. मनै । ११ आ. इ. संतोष । १२ आ. इ. पलां । १३ आ. भावीया । १४ आ. इ. डरीया । १५ इ. औद्रावो । १६ आ. इ. अन्नडां । १७ आ. इ. पिसणां । १८ आ. इ. रहावै । १९ आ. इ. अच्चडां । २० आ. इ. रहीया । २१ आ. दुरंग । २२ आ. चौमासी । २३ आ. पठाए । २४ आ. इ. घोडी । २५ आ. इ. दखिण । २६ आ. इ. चलीया । २७ आ. इ. झलीया । २८ आ. इ. दखिण । २९ आ. इ. विराजीयो । ३० आ. इ. दखणी । ३१ आ. हुई । ३२ इ. रद । ३३ आ. इ. साह । ३४ आ. सरहद । ३५ आ. अमली-माण । ३६ आ. गटां । ३७ आ. इ. भूखालुओ । ३८ आ. ओबासै ।

अधपत्ती^१ इनि आसनां^२, महिपति द्रौहै मन्ति^३ ।
निजर दियै^४ नव साहसी, किरि^५ बारहमाँ सन्नि^६ ॥३॥

बादसाह रौ जाळोर रा सासक पहाड़खां सूं नाराज होणी तथा
जाळोर रौ प्रदेश महाराजा सूरसींघ नै मिळणी

रुठी^७ सीस विहारियां,^८ दिलीपति^९ सुरतांण ।
खान^{१०} पहाड विभाडियौ,^{११} बैठा फिरै^{१२} पठांण ॥४॥
खाना^{१३} ऊपर^{१४} खीजियौ^{१५} खूंदालम्म^{१६} रहंम^{१७} ।
राजा नूं^{१८} जाळोर रौ, दीनी साह हुकंम^{१९} ॥५॥
राजा कागळ मेलियौ,^{२०} लिखाडे^{२१} चड चोट ।
जिम जांणै^{२२} तिम मारलै, कुंअर^{२३} कणैगिर^{२४} कोट ॥६॥
जोधपुरौ जुध जीपवा, गढ़ लेवा 'गजसाह' ।
विरती^{२५} कोडी^{२६} विळकुळै,^{२७} रोसांणी रिमराह^{२८} ॥७॥
चिहुर अलक्का^{२९} ऊधरौ,^{३०} विकसै^{३१} वदन^{३२} विसाळ ।
चोळ^{३३} वरन्न^{३४} कपोळ^{३५} किय,^{३६} रत्ता^{३७} लोचन माळ ॥८॥
आंखै^{३८} रोस कसाइया, किय^{३९} मूंछां बिय^{४०} चंद ।
चाढै^{४१} भूंहां^{४२} बंकियां,^{४३} कि(र) कणणियौ^{४४} मइंद ॥९॥
जोधपुरे जाळोर सिरि, काम^{४५} तिकौ पकडेह^{४६} ।
कीयौ^{४७} आरंभ कळहरी^{४८} बाहरि चादर देह^{४९} ॥१०॥

१ आ. अधपत्ती । इ. अधपति । २ आ. आसना । ३ आ. मनि । इ. मन । ४ आ. दिय । इ. दीयै । ५ आ. किरि । ६ आ. इ. सनि । ७ आ. रुठी । ८ आ. इ. विहारीयां । ९ आ. इ. दिलीपति । १० आ. इ. खान । ११ आ. इ. विभाडीयौ । १२ आ. फिरै । १३ आ. इ. खानां । १४ आ. इ. उपरि । १५ आ. इ. पीजीयौ । १६ आ. इ. पुदालम । १७ आ. इ. रहम । १८ आ. इ. नु । १९ आ. हुकम । २० आ. इ. मेलीयौ । २१ आ. इ. लिपाडे । २२ आ. जाणै । २३ इ. कुअर । २४ आ. कणैगिरि । इ. कणैगिरि । २५ आ. इ. विरति । २६ आ. कोड । इ. कोडि । २७ आ. इ. विलकुले । २८ रिमराह । २९ आ. इ. अलकां । ३० आ. इ. उधसे । ३१ आ. इ. विकसे । ३२ आ. वरन । ३३ आ. इ. चोल । ३४ आ. इ. वरन । ३५ आ. इ. कपोल । ३६ आ. इ. कीय । ३७ आ. इ. रता । ३८ आ. इ. आंखै । ३९ आ. इ. कीय । ४० आ. बाय । ४१ इ. चाढी । ४२ आ. भूहां । ४३ आ. वंकीयां । इ. वेकीयां । ४४ आ. इ. कणणीयौ । ४५ आ. काम । ४६ आ. पकडेआ । इ. पकरेअ । ४७ आ. कीये । ४८ आ. कलह रो । ४९ आ. देअ ।

जोधारां री वरणण

आचागळ^१ भडे असि । किया^२ खडा तंग कसि ॥२२॥
 तरस्सीया^३ ब्रहुंटाळ^४ । जोध लियौ^५ जीणसाळ^६ ।
 सूरतन^७ चडी^८ सोह । लिया^९ खटत्रीस^{१०} लोह ॥२३॥
 भाला टवे^{११} हुआ भड । ऊभा^{१२} लोह मै अनड ।
 आंमलै^{१३} खवा अयार । आलोमल्ला^{१४} असवार ॥२४॥
 मांटी पणै घणै मन्ति । विकसीया वीर तन्ति ।
 सांम नू^{१५} निरोहा सार । जु आण करै जुहार ॥२५॥
 पांडवां^{१६} नीलो पलांण^{१७} । असी^{१८} घोडे^{१९} राव आण ।
 वैडतै^{२०} उमे विकास । आरिखै^{२१} जिसो उचास ॥२६॥
 ऊपनी^{२२} अमूल^{२३} खांण । खैंग^{२४} डूमे^{२५} खुरासांण^{२६} ।
 एराकी पखे असंभ । रमै मांडै^{२७} नाटारंभ ॥२७॥
 प्रघळी पटाट पूर । गाढ दाढ गज्ज-ऊर^{२८} ।
 लोई^{२९} दीप मै लोचन^{३०} । कांगरि^{३१} सारीखा कन^{३२} ॥२८॥
 थोर पींडा पग थंभ । गात जांणै गजखंभ ।
 सतेज रूप साहण । वार्जिद राज वाहण ॥२९॥
 तुरी सपतास तुल^{३३} । भाटक्कीयौ^{३४} नांखी^{३५} भूल ।
 वैसासीयै^{३६} दीन्ही वाच । डावहियै^{३७} लगांण^{३८} डाच ॥३०॥

१ आ. आचागले । २ आ. किया । ३ आ.इ. तरसीया । ४ आ. ब्रहुंटाळ । ५ आ. लीय । ६ आ. जीरण साल । ७ आ. सूरतन । ८ आ. चडी । ९ आ. लिया । १० आ.इ. षटतीस । ११ आ. टवे । १२ आ. उभा । १३ आ. आंमलै । १४ आ.इ. आलोमल्ला । १५ आ.इ. असी । १६ आ.इ. नीलो । १७ आ. पलांण । १८ आ.इ. घोडे । १९ आ.इ. राव । २० आ.इ. वैडतै । २१ आ.इ. आरिखै । २२ आ.इ. ऊपनी । २३ आ.इ. अमूल । २४ आ.इ. खैंग । २५ आ.इ. डूमे । २६ आ.इ. खुरासांण । २७ आ.इ. मांडै । २८ आ.इ. गज्ज-ऊर । २९ आ.इ. लोई । ३० आ.इ. लोचन । ३१ आ.इ. कांगरि । ३२ आ.इ. कन । ३३ आ.इ. तुल । ३४ आ.इ. भाटक्कीयौ । ३५ आ.इ. नांखी । ३६ आ.इ. वैसासीयै । ३७ आ.इ. डावहियै । ३८ आ.इ. लगाण ।

तांण तंरा तुरी तणी । फाबि जीण नाग फणी^१ ।
 गज्ज-ग्राह^२ गळें तयार । हींडोळीयी^३ जेम हार ॥३१॥
 ओपी^४ रुप में^५ अजब्ब । तूरी^६ कीयी^७ मुरातब्ब ।
 सांमी^८ आगळी सिंगार । आंणीयी^९ लूण^{१०} ऊतारै^{११} ॥३२॥

महाराजकुमार गजसौंध री वरणण

कमंध^{१२} 'गज' केसर । पाघ बांधें पाटोघर ।
 खेडेचै^{१३} खेलवा खत्र । पहिरै पंचें वसंत्र ॥३३॥
 हेम^{१४} में^{१५} जड्डित हीर । जूअळे मीजा जंजीर ।
 दूसरै 'गंगा' दवाढ । जडी कडी जमदाढ ॥३४॥
 सादी बाधी सम्मसेर । मच्छरीयी^{१६} माभी मेर ।
 तांण सींग निभै तरण । भेडावीयी^{१७} भूथारण ॥३५॥
 कंदील अनै कबांण । वीद^{१८} वीदणी^{१९} वखांण ।
 काढी ढाल ले कमंध । बांधी खवें अलीबंध ॥३६॥
 धूणीयी^{२०} चौधार धारी^{२१} । वीजळता^{२२} मोहा^{२३} वारी^{२४} ।
 खंड^{२५} दळे खंड पती^{२६} । माल्हीयी^{२७} मयंद गती^{२८} ॥३७॥

जोधारां री नामावळी तथा वरणण

कवित्त

सहस कज्ज कमधज्ज, जिकै ढाहै गज ढल्लां ।
 खेमकरण^{२९} अंगरुद^{३०}, रूप जोधां रिण मल्लां ॥

१ आ. फणी । २ आ.इ. गजग्राह । ३ आ. हीडोलीयी । ४ इ. ओपि । ५ अ. मे । ६ आ.इ. तुरी । ७ अ. कियी । ८ आ. साम । इ. सांम । ९ अ. आंणियी । १० आ.इ. लूण । ११ आ.इ. उतार । १२ अ. कमध । १३ आ. पैंडेचे । इ. पैंडेचै । १४ आ. हिय । १५ अ. जे । इ. में । १६ अ. मछरियो । इ. मछरियो । १७ अ. भेडावियो । १८ आ.इ. बीद । १९ आ. बीदणी । २० अ. धूणियो । २१ अ.इ. धरि । २२ आ. वीजळता । २३ आ.इ. मेह । २४ आ. वारि । २५ आ.इ. पेढ । २६ आ.इ. पेढपति । २७ अ. माल्हीयी । २८ आ.इ. गति । २९ आ. पेमकर्न । इ. पेमकरन । ३० इ. अंगरुद ।

उदिया-सिघ^१ 'महेस', जिसी^२ जंग जेठी 'मांडरा' ।
जिसी^३ देद प्रिथिराज^४, जिसी^५ जैती^६ पंचाइण^७ ॥
पंडरि धीर सांमंत^८ परि^९, इळा पाटि छलि^{१०} उघरै ।
गजसिघ सहाइत गज धरि, जिसी कन^{११} राव 'मल' रै ॥१॥

सन्नाहे भड सुहड^{१२}, जिके^{१३} असवार अचगल ।
परि अधर पाइक^{१४}, सेत बांबल^{१५} पाए दळ ॥
तीर दार खंधार वणै^{१६}, सिलहां रिण पक्खर ।
गय ढल्लां फरहरै^{१७}, धजा ओछायी अंबर ॥
हाऊल^{१८} हमस हंसा रवण, घण दमांम भेरी घुरै ।
गजसिघ लियण जालोर^{१९} गढ, चडियौ^{२०} हय गय पक्खरै ॥२॥

छंद अरधनाराच^{२१}

दमांम भेर सह ऐ^{२२} । न फेर तूर नह ऐ^{२३} ॥
क्रमे^{२४} कडक्क कोअण^{२५} । समूह साहणं घणं ॥१॥
थिडै^{२६} थिडंब थट्ट ऐ^{२७} । समंद^{२८} जाण फट्ट ऐ^{२९} ॥
ढळिक्क ढाल गैमरां । पुऊर^{३०} रोळ पक्खरां ॥२॥
गुडै गयंद^{३१} भल्ल ऐ^{३२} । पहाड जाण चल्ल ऐ^{३३} ॥
हसत्त जूथ हींडळै^{३४} । क मेघ^{३५} माल सल्लळै ॥३॥
सपेत दंत^{३६} अग ऐ^{३७} । घटाक पंथ बग ऐ^{३८} ॥
धजा धैधंगरां^{३९} सिरै^{४०} । भमै क पंख भक्खरै ॥४॥

१ इ. उदीयासिघ । २ आ. जिसी । ३ इ. जिसी । ४ आ. प्रिथीराज । इ. प्रीथीराज । ५ इ. जिसी । ६ आ. जेतो । ७ आ. पंचाइण । इ. पंचाइण । ८ इ. सामंत । ९ आ. वरि । १० आ. छल । ११ आ. इ. कर्न । १२ आ. इ. सोहड । १३ इ. जिके । १४ इ. पाईक । १५ आ. बांबल । १६ आ. इ. वणे । १७ आ. फरहर । इ. फरहरै । १८ आ. हाहुल । इ. हाऊला । १९ आ. जालोर । २० आ. चडियौ । इ. चडियो । २१ आ. नाराज । २२ इ. ए । २३ इ. ए । २४ आ. क्रमे । २५ इ. कोइणं । २६ आ. इ. थिडे । २७ आ. ए । २८ आ. इ. समद । २९ आ. फट्ट । इ. ऐं । ३० आ. इ-पुऊर । ३१ आ. गयद । ३२ आ. इ. ए । ३३ आ. ए । ३४ आ. इ. हीडले । ३५ आ. कमघ । ३६ इ. दांत । ३७ इ. ए । ३८ आ. ए । ३९ इ. धेघरां । ४० इ. सिरै ।

ढोहत सूंड^१ सिंघली^२ । घटा विराज सांमली ॥
धमंकि घंट घुंघरं^३ सिंदूर^४ सीस चम्मरं ॥५॥

पटा वहंत मद् ऐ^५ । (कि) घरा मै जळद ऐ ॥
नेजा^६ वरक्क^६ फव्व ऐ^७ । (सु)ताड त्रिक्ख^८ पव्व ऐ^८ ॥६॥

भरंत दांण कुंजरं । गिरै कि नीर नीभरं ॥
मदोमसत्त^९ मैंगळं । करै^{१०} प्रवीत^{११} काजळं ॥७॥

आरुढ पीलवांणा ऐ । गजिद - वाग पांणाए ॥
घटा फवज्ज धूधली^{१२} । चमक्कि कूत^{१४} बीजली ॥८॥

नीसांण रोडि वज्जऐ । गगन्न^{१५} जांणि गज्ज^{१६} ऐ ॥
समीर वेग चंचळ^{१७} । वानैत^{१८} जोव वहलं ॥९॥

नलं कहक्क हेमरां । सरे क बोल दहरां ॥
रजी सुभट्ट पीजरै । तुरंग जेम^{१९} हीजरै^{२०} ॥१०॥

ढळादि डंव उल्लडै । पवंग वाग ऊपडै^{२१} ॥
खुरां ज खोणि बीखणी । पतंग छाड^{२२} पोईणी^{२३} ॥११॥

वहै क वाज पत्थए । अकास^{२४} मै क रत्थऐ ॥
सीरम^{२५} साह^{२६} नस्सहै । विवांण^{२७} उड्डिया^{२८} वहै ॥१२॥

पाए पवंग^{२९} पीडए । घरा धमस घोड^{३०} ए ॥
हमस्स असी^{३१} हंख ए । सिचांण जांण पंखए ॥१३॥

१ आ.इ. सुंड । २ आ. सिंघली । इ. सींघली । ३ आ. सिंदूर । इ. सिंदुर ।
४ आ.इ. ए । ५ आ.इ. नेज । ६ आ. वरक्क । ७ इ. ऐ । ८ आ. त्रिपी । ९
आ.इ. ए । १० आ. मदोमसत्त । इ. मादोमसत्त । ११ आ. करै । १२ आ. प्रवित ।
इ. पृवित । १३ आ.इ. धुधली । १४ आ.इ. कूत । १५ इ. गगनि । १६ आ.इ. गज ।
१७ आ.ई. चंचलै । १८ आ.इ. वानैता । १९ इ. तेज । २० आ. हीजरै । इ. हीजर ।
२१ आ.इ. उपडे । २२ आ.इ. छाई । २३ आ. पोईणी । इ. योईणी । २४ आ.
आकाज । इ. आकास । २५ आ. सीरम । इ. सीरम । २६ आ. साह । २७ इ.
विवाण । २८ आ.ई. उडिया । २९ आ. पावंग । इ. पावग । ३० आ. घोड ।
इ. घोडि । ३१ इ. असी ।

विडंग बाज छुट्ट^१ ए । परवांण पाय फुट्ट^२ ए ।
खणक^३ नाळि है खुरां । प्रडंति आगि पत्थरां ॥१४॥

ध्रुमै^४ ब्रहास^५ नास ऐ । वजै उरद्ध सास ऐ ।
त्रछोल^६ ताळु ए मिळै । ऐलांण फीण ऊछळै ॥१५॥

फौडा^७ विसंभ फाड^८ ए । तुरंग^९ कोमंड ताड ए ।
कट्टक फौज^{१०} कंठळा । अणी खिवत साबळा ॥१६॥

भडां गरद्द लग ए । खेलंत जांणि^{११} फग ए ।
सिरै^{१२} विवांण^{१३} भिग ऐ । कितक्क जांण उग ए ॥१७॥

नरांक कोप भल्लरा । कोटिक्क भीत कांकरां ।
रजी अरक्क विद् ऐ । पूरणां^{१४} (मा) के चंद ऐ ॥१८॥

कुरंग सिघ रुक्क ऐ । मरंति मज्झि मुज्झ ऐ ।
अरस्स खेह ढकए^{१५} । पंयाल सात पंकए ॥१९॥

भुइग^{१६} भार^{१७} सप्पए । फणां^{१८} सहस्स तप्पए ।
वराहै धूजि दडुऐ । कडक्क कोम^{१९} कंधए ॥२०॥

पहाड भाड वन्नए । रहद्द कीध रन्नऐ ।
उडंति डाव डंबरे । लग (१) सिलीण अंबरे ॥२१॥

गिगन्न गोमं गूधळां । गिरंद मेर मेखळां ।
बहौत^{२०} सेत बंबळां । समूळ सब्बळां दळां ॥२२॥

आया राठीड है खडे । प्रजा चढंत^{२१} अन्नडै ।
भगांण भोमिया^{२२} डरै । गया अलंग ऊतरै^{२३} ॥२३॥

१ आ.इ. छुट । २ अ.आ. छुट । ३ इ. जणंक । ४ आ.इ. ध्रुमै । ५ आ.इ. ब्रहास । ६ इ. त्रछोल । ७ इ. फौरा । ८ इ. भाड । ९ इ. तुरां । १० आ.इ. फौज । ११ अ.आ. जांण । १२ आ.इ. सिरै । १३ अ. चिवांण । १४ आ. पूरणां । १५ इ. ढंक । १६ आ. भुयग । इ. भुयंग । १७ इ. भारां । १८ आ.इ. फणां । १९ आ. काम । २० आ. बौहत । इ. बौहत । २१ इ. चढंत । २२ आ.इ. भोमीया । २३ अ. ऊतरै । इ. उत्तरै ।

महाराज कुमार रौ ससेना जाळोर पहुंचणी

दूहा

जाळंधर आयी 'गजणं, गय गज्जै हय हींस' ।
 चढे^१ गिरंदां डंबरा, गयणं गिरदां सीस ॥१॥
 देवळ काबा मनि डरै, बोडा भड बालीत ।
 सगळा आवै^४ सांमहा^५, मिळिया^६ देखै मौत ॥२॥
 रजपूते^७ भुइ^८ भागियै^९, दळ मुका^{१०} छळ देस ।
 वीहारी वंजे नहीं, सूना मेल्ले नेस ॥३॥
 इम^{११} कहियो^{१२} विहारियां^{१३}, ओटि नत्त की काई ।
 आज धणी हम सोनिगर, हम इक^{१४} धणी खुदाइ ॥४॥
 मीयां खांन मिलक्क सेह, ऊंडा^{१५} मंडे^{१६} पग्ग ।
 एक कर घतें^{१७} दढ्ढियां, इक^{१८} कर धुरौ^{१९} खग्ग ॥५॥
 वीहारी^{२०} दिन वंकडे^{२१}, वंका सेर जुआण^{२२} ।
 रहियो^{२३} गढ जाळोर^{२४} सू, संकळपै आपाण ॥६॥

गाथा

जुधे^{२५} दुलंभ मरणी, जुधे उघाप दांणवां देवां ।
 साके सम^{२६} भागकते^{२७}, रामणी^{२८} रामचंदस्य^{२९} ॥ (रां)

विहारियां रौ वरणण

कवित्त

धरे मन्न धूधडे^{३०}, कोटि पैठा सोभाऊ^{३१} ।
 असली जादा^{३२} अभंग, मिलक मीरं बरसाऊ^{३३} ॥

१ इ हीय । २ आ. चढे । ३ इ गरदां । ४ इ. आवै । ५ आ. सांहांमा । इ. सांमुहा । ६ इ. मीलीया । ७ आ. रजपूत । इ. रजपूतो । ८ इ. भुई । ९ आ. इ. भागीए । १० आ. इ. मुका । ११ इ. ईम । १२ आ. कहीयी । इ. कहायो । १३ इ. विहारीयां । १४ आ. इ. एक । १५ आ. इ. उंडा । १६ अ. मंडे । १७ आ. घाते । १८ आ. इ. एक । १९ आ. धुरो । इ. धुरौ । २० आ. विहारी । २१ आ. वंकडे । २२ आ. इ. जुआण । २३ आ. इ. रहीया । २४ आ. जाळोर । २५ इ. जुगे । २६ इ. समे । २७ आ. कृते । २८ आ. इ. रामणी । २९ इ. रामचंदस्य । ३० आ. इ. धूधडे । ३१ इ. सोभाऊ । ३२ आ. असलीजाता । ३३ आ. बरसर ऊ ।

अल्ला एक करीम, रब्ब रहमाणे^१ संभारे^२ ।
कहि खुदाइ खालिकक, इलम^३ कत्तेब^४ विचारे ॥
बलिवंत जोध^५ (बू) ठण^६ हरो, सूर धीर साकौ करण ।
संकलपि^६ प्राण जाळोर सुं^७, नीमे रहिया^८ निज मरण ॥१॥

जिम^९ राजा हम्मीर^{१०}, कियो^{११} साकौ रिणथंभर ।
राइसेण गढ़ जेम, कियो^{१२} पूरणमल^{१३} तूअर^{१४} ॥
अचलदास गागुरण, रैण 'मूल'^{१५} जेसाणै^{१६} ।
सौम मंडोवर^{१७} कियो^{१८}, करे सातळ सिवियाणै^{१९} ॥
चीतोड^{२०} कियो^{२१} जैमल चडे, 'पातळ' पावै द्रुग^{२२} सिरि^{२३} ।
पट्ठाण करै कान्हड^{२४} पछै, साकौ जिम गढ़ सोनगिरि ॥२॥

कापड माल असंख, हेम मिण रयण विभूखण ।
परिमळ चंदन अगुर, पांन कप्पूरह^{२५} अस्सण ॥
भरै^{२६} अन्न भंडार, सालि गोधूम^{२७} सघण घण ।
ध्रित तेल गुळ लूण^{२८}, लगै^{२९} अहिफेणह सांबरा^{३०} ॥
खड ईंधण^{३१} पांणी वैसनर, सरब^{३२} थोक संग्रह^{३३} करै^{३४} ।
जाळोर^{३५} नाम^{३६} करवा जरू, चढि पठांण नह उतरै^{३७} ॥३॥

जुध - वरणण

जबर जंग जंत्र मै, असंख आराबा^{३८} छूटै^{३९} ।
वोम गोम घडहडै^{४०}, टूक^{४१} पाहाडां^{४२} तूटै^{४३} ॥
गडि गडि गोळा नाळि, विज खडडै किरि अंबर ।
अगन बांण ऊछले^{४४}, धोम धूहा^{४५} रव डंभर^{४६} ॥

१ आ. रहमान । इ. रहमाण । २ इ. संभरे । ३ इ. ईलम । ४ आ.इ. कतेब ।
५ वूटण । ६ आ. संकलपि । इ. संकलप । ७ आ. सुं । ८ आ.इ. रहीया । ९ आ.
जीम । १० आ.इ. हमीर । ११ आ.इ. कीयो । १२ आ.इ. कीयो । १३ आ. पूरणमल ।
१४ आ.इ. तुअर । १५ आ. मुल । इ. मुलु । १६ इ. जेसाणै । १७ आ. मंडोअर ।
इ. मंडोअर । १८ आ. कीयो । इ. कीयो । १९ आ. सिवियाणै । इ. सीवियाणै । २०
इ. चीतोड । २१ इ. कीयो । २२ आ.इ. द्रुग । २३ इ. सिर । २४ आ. कान्हड ।
२५ इ. कपूरह । २६ इ. भरे । २७ इ. गोधुम । २८ आ. लूण । २९ आ.इ. लगै ।
३० इ. वावरा । ३१ आ.इ. ईंधण । ३२ आ.इ. सर्व । ३३ आ. संग्रह । ३४ आ.इ.
करे । ३५ आ. जालोर । ३६ आ.इ. नाम । ३७ इ. उतरे । ३८ आ. आरा । ३९
आ.इ. छूटे । ४० आ. घड हडै । ४१ आ.इ. टुक । ४२ पहाडां । इ. पहीडां । ४३
आ.इ. तुटे । ४४ आ.इ. उछले । ४५ आ.इ. धुआरवां । ४६ आ. उभर । इ. उभर ।

आवत्त^१ घोर अंधार^२ में^३, सोर घोर माचै^४ सघण ।
घोम-रिख जाणि घूहर^५ रचै^६, जोजन - गंधा रित रमण^७ ॥४॥

सूर घोर सामंत^८, बिजड^९ जूटण बंगाळां^{१०} ।
रागां हाथळ टोप, पैहरि जरदां छकडाळां ॥
ले छतीस आवध, भुजे हुचीयां छडाळां ।
सहस अर्ध भूभार^{११}, चढे गज ऊपर माळां^{१२} ॥
अणभंग जोघ असमान^{१३} दिस, ऊतरिया^{१४} असमानरा ।
कमधज्ज कणैगिरि लूंबिया^{१५}, किरि लंका गढ वानरा ॥५॥

छंद सिंघालोकण^{१६}

विटे^{१७} बीजाजळ गुडिया गज दळ, दमगळ हूंकळ कळियळ ए ।
बळिवंत अतुळ बळ, जुटा^{१८} चिहुं बळ (बळ) भळहळ दळ बीजळ ए ।
घण भेरी घरहर, हुई सिधु^{१९} सुर^{२०} दूका^{२१} कुंजर कोट डहै^{२२} ।
गीघणियां^{२३} गह हुवर छायो अंबर, रथ रातंबर तांणि रहै ॥१॥
कतियांणी^{२४} कह कह नारद डह डह, हेका टह टह वीर हसै^{२५} ।
बड रावत ब्रह ब्रह पोरसि प्रह प्रह दूडी^{२६} ठह ठह होठ डसै^{२७} ।
पडियालग पींजरे^{२८} हुइ^{२९} हुब, हींजर गाजे^{३०} गिरवर गोम ग्रहै^{३१} ।
औल्हार अणीसर जमधर खंजर, धडि धडि असमर धार वहै^{३२} ॥२॥
सुजडां मुंहि^{३३} संघर^{३४} लडिया लसकर, डिगमिग काइर कळह डरै ।
खागां पळ खंडर कटि सिर कूपर^{३५} सोणी खप्पर सकति भरै ।
धारां रंति^{३६} धंरहर, दळपळ डालहर^{३७} भटकै^{३८} पै कर सोस भडै^{३९} ।
बडडै घाइ^{४०} बगतर, फाटै^{४१} बडफर, रुके विनूर रीठ पडै ॥३॥

१ आ. आवत्त । २ आ. अंधरे । ३ आ. में । ४ आ.इ. माचै । ५ आ. घुहर ।
६ आ.इ. रचे । ७ आ. रमण । ८ आ.इ. सामंत । ९ आ. बिजड । १० आ. बंगाला ।
११ आ. भूभार । १२ आ. भालां । १३ आ. असमान । १४ आ.इ. उत्तरीया । १५
आ. लूंबीया । इ. लुंबीया । १६ आ. सिंघालोकण । १७ आ. बीरे । आ. विटे । १८
आ. जुटा । इ. जुटी । १९ आ. दल-भल । २० आ. सिधु । २१ आ. सूर । २२
आ. दूका । २३ आ. टहै । २४ आ. गीघणी । इ. गीघणीयां । २५ आ. कतियांणी । इ.
कतियाणी । २६ आ. हसे । २७ आ. दुडि । इ. रुडां । २८ आ. डसे । २९ आ. पीपोज ।
३० आ. हुई । ३१ आ. गजे । ३२ आ.इ. ग्रहे । ३३ आ. वहे । ३४ आ. मुहि । ३५
आ. सयर । ३६ आ.इ. कूपर । ३७ आ. तल । इ. रति । ३८ आ. डालहर । ३९
आ. भटक । इ. भटके । ४० आ.इ. भडे । ४१ आ. घाइ । ४२ आ. फाटे ।

धू'नाचै भड घड, फीफड^२ फडहड, लोडे^३ लडथट लोहि लडे^४ ।
 वीयै^५ दळ वड चड हुई हडवड, जोवै^६ घडतड अनड अडे^७ ॥
 वीहारी^८ धूहड^९ वाजे^{१०} घजवड, तूंग त्रिसीगड तुड तरसै^{१२} ।
 दोमजि रत दडि-अड^{१३} जाण^{१४} नदी नड, जोटा जमजड जोध खसै ॥४॥

वळकै वीजूजळ कुटके^{१५} कम्मळ, सू^{१६} सर सावळ भळहळ ए ।
 अडडे^{१७} कांठूसळ कुटकै कम्मळ, सोणी^{१८} रळ-चळ खळहळ ए ॥
 करमाळां कड कड पडि सिर दड दड, भाजै मरगड कंध भडां ।
 खंगरजै खंगड^{१९} लागै लोहड, घाइ उजड पड घूम घडां^{२०} ॥५॥

गाहट थट गडथळ भंग अंग भड खळ, अणिया^{२१} वरघळ अणी ।
 सुजडां मुंहि^{२२} उरबळ कटि घटि कंगळ नीमडि आधळ हुवै नरां सरां ॥
 भूभभारा^{२३} खग भट खळ दळ खळखट, खेटी खत्रवट खेड घणी ।
 कडि कडि कंठि कोपट, गोधम गजथट, घाइ आवट^{२४} धर मार घणी ॥६॥

तुटं^{२५} कसण तण, जिरहां^{२६} जूसण^{२७}, खंडे उडुण खंडर ए ।
 कळि हुविया^{२८} कोअण, निहस निभेमण, जूध दुसासाण^{२९} जुध कर ए ॥
 आव्रत^{३०} कळ ऊकल गहण गळोवळ, सिलहां सकळ ऊजडियं ।
 भड भिडै भुजां वळ सुजडे^{३१} सैफळ^{३२}, घोमग उच्छळ^{३३} घडहडियं ॥७॥

खग हुए खंडां खंड किरि डंडीहड, रिण भुइ रींहड^{३४} रत^{३५} रिडे^{३६} ।
 वीहारी^{३७} वडि वडि तूटै घडि घडि, अणियां^{३८} चडि चहि अठ्ठ अडे^{३९} ॥
 भळरि करि भणिहण^{४०} दिसि गैणंगणि^{४१}, तीमछ^{४२} छणमण तेगतणै^{४३} ।
 असमानं अथरवण रचै^{४४} रांमाइण, रांम रांमण ऊभै रिणै^{४५} ॥८॥

१ आ.इ. घुना । २ आ.इ. फीफड । ३ अ. लोडे । ४. अ. लडे । ५ आ. वियै ।
 इ वियै । ६ आ.इ. दोवै । ७ आ.इ. अडे । ८ आ.इ. विहारी । ९ आ. धूहड । इ. धूहड ।
 १० आ.इ. वाजे । ११ आ. तुग । इ. त्रुग । १२ आ.इ. तरसे । १३. इ. दडीअड ।
 १४ आ. जाण । १५. अ. कुटकै । १६ आ.इ. सु । १७ आ. कठडे । इ. कडडे ।
 १८ आ.इ. ओणी । १९ आ. उज्यड । २० आ.इ. घुमघडां । २१ आ.इ. अणीयां ।
 २२ आ.इ. मुहि । २३ आ.इ. भूभारां । २४. आ.इ. अवट । २५ अ. तुटंस ।
 २६ इ. जिरहा । २७ आ.इ. जूसण । २८ आ.इ. हुवीया । २९ आ. दुसासाण ।
 ३० आ.इ. आव्रत । ३१ आ. सुजडे । ३२ इ. सैफल । ३३ इ. उच्छलि । ३४ आ.
 रिहड । ३५ इ. रति । ३६ आ. रिडे । ३७ आ. विहारी । इ. विहारी । ३८ आ.इ.
 अणीयां । ३९ आ. अडे । ४० आ.इ. भणिहण । ४१ अ.आ. गैणंगण । ४२ आ.इ.
 तीमछी । ४३ आ.इ. तरो । ४४ आ. रचे । ४५ आ.इ. रिणै

अंग अंग अवल फट मिल घाए मैवट, धार घजवट घोम धिखै ।
 आहुडिया^१ अविअट^२ वधे रिणवट, वळिवंन बाथट वल्ल वखै ॥
 भड खलिया भंभर वेहक^३ वज्जर, वडिया^४ पक्खर विहंड वपै^५ ।
 पळ खंडिया^६ पंजर पडै पंचाहर, जै जै संकर सकति जपै^७ ॥६॥

हसि जोगणि हडहड, गोळी रत गड गड, मंडै^८ खफर पत्र मिलै ।
 तिल तिल हुइ ठूकड, वेलै तुरभड, मच्छक तडफड तुच्छ जळै ॥
 जंवक जख प्रघळ^९ मिलिया^{१०} सम्मळ^{११} होऊं ठूकळ रत^{१२} हिलै ।
 डाइणि^{१३} भख डळ डळ चूपै^{१४} चळवल पळ भैवर वळ वळ भूत मिलै ॥१०॥

महाराज कुमार री विजय

कवित्त

मिलै^{१५} कोट खग चोट, वडा कमधां वरियांमां^{१६} ।
 पडै राडि पट्टाण, चंद रवि चाडे^{१७} नांमां ॥
 जाळंघर पलटियो^{१८}, वडौ रिण जंग भारथ करि ।
 वीहारी^{१९} विट^{२०} दियो^{२१}, कियो^{२२} साकी^{२३} कणियागिरि^{२४} ॥
 'गजसाह' वडै 'गजसाह' छलि, अगनि वांण आतस^{२५} सहे^{२६} ।
 पडिहार एक 'पांचा सभ्रम^{२७}' रायसिंघ रिणभूइ^{२८} रहे^{२९} ॥१॥

वीर गति प्राप्त खास खास पठांण जोषाआरी नामावळी

वडो जोघ सांमंत^{३०}, पडे^{३१} जवदळ प्रचंडह ।
 खेत पडे^{३२} ताजखां, पडे^{३३} केहरि वळिवंडह ॥

१ आ. आहुडीया । इ. आहुडीया । २ आ. अवीअट । इ. अविअट । ३ आ. वहेक ।
 ४ आ. इ. वडोया । ५ आ. इ. वपे । ६ आ. इ. वंडोया । ७ आ. इ. जपे । ८ आ. इ.
 मंडेई । ९ अ. प्रत्यळ । १० आ. इ. मिलोया । ११ आ. इ. संमल । १२ इ. रति ।
 १३ इ. डाइण । १४ आ. चूपे । इ. चूपे । १५ आ. मिले । १६ आ. इ. वरीयांमां ।
 १७ आ. इ. चाडे । १८ आ. इ. पलटोयो । १९ आ. इ. विहारी । २० आ. विट ।
 २१ आ. इ. दीयो । २२ आ. इ. कीयो । २३ आ. साको । २४ आ. कणीयागिरि ।
 २५ आ. आतम । २६ आ. सहे । २७ आ. इ. सभ्रम । २८ आ. इ.
 भूइ । २९ आ. रहे । ३० आ. इ. सांमंत । ३१ अ. आ. पडे । ३२ अ. आ. पडे ।
 ३३ अ. आ. पडे ।

चंद खान चतखान, पडे^१ प्राप्ती पतिसाहे ।
 पडे^२ खान सेलार, कणै दुग्गहि पडिगाहै ॥
 संग्राम इता साऊ पडे, वाहंता तरवारियां^३ ।
 जाळोर^४ नाम करिवा अमर, मर दीनौ वीहारियां^५ ॥२॥

तणा देस रजपूत^६, देस गढ चाढि^७ न मूआ ।
 हुआ^८ सरब भुई^९ भूत^{१०}, देव सिद्धाण न हूआ^{११} ॥
 कावे बलि छंडिया^{१२}, हुआ^{१३} फेरा ऊबोडा^{१४} ।
 सामि^{१५} धम्म परिहरे, घरे किसान बाधा घोडा ॥
 चहुवाण^{१६} न आसिर चूकता^{१७}, (...) ऐ जुगती जगि थयी ।
 बालीत^{१८} पंचाइन^{१९} सोनगिरि, चढे^{२०} सरगि ऊतरि गयी ॥३॥

जाळोर विजय कर महाराज कुमार री जोधपुर पहुंचणी ।

महाराज कुमार री स्वागत

इहा

जुद करि पट्टाणां सरिसि, गढ जाळंधर लीय ।
 'गजपति' आयी जोधपुर, मंगळ धमळ हरीय ॥१॥
 कर सुं^{२१} करि कुकुम^{२२} तिलक, चाढे^{२३} चावळ भाळ ।
 कुंअर बघावै राइकुवरि^{२४}, ले सोवून^{२५} मै थाळ ॥२॥

छंद भमराळी

लिय कुकुम चंदन तंदूलयं^{२६} महियं^{२७} ।
 मुख गावत मंगळ धमळयं सहियं^{२८} ॥
 घण वाजत घोर त्रंवागळयं^{२९} घुरियं^{३०} ।
 कवि कीरति बिंद कोळाहळयं करियं ॥१॥

१ अ. पडे । २ अ.आ. पडे । ३ आ.इ. तरवारीया । ४ अ. जालौर । ५ आ.इ. विहारीया । ६ आ.इ. रजपुत । ७ आ.इ. चाढ । ८ आ.इ. हुआ । ९ इ. भूय । १० इ. भूत । ११ आ.इ. हुआ । १२ आ.इ. छंडीया । १३ आ.इ. हुआ । १४ इ. उबोडा । १५ आ. सामि-धम्म । १६ आ. साम-धम्म । १७ इ. चहुवाण । १८ इ. चुकता । १९ आ. बालीत । २० आ.इ. पंचाइन । २१ आ. चढे । २२ इ. चढे । २३ आ.इ. सुं । २४ आ.इ. कुकुम । २५ आ. चाढे । २६ आ. राय कुआरे । २७ इ. राइकुअर । २८ आ. शोवून । २९ इ. सोवून । ३० आ. तंदूलयं । ३१ आ. तंदूलयं । ३२ आ.इ. महियं । ३३ आ.इ. सहियं । ३४ आ. तंवागल । ३५ आ. घुंघरियं ।

आमना चत्र वेद ब्रह्माणयं^१ विप्रयं^२ ।
 रुघ जुज्जर सांम अथरवणयं^३ जपयं ॥
 वेदो धुनि जै जै सब्बदयं वणयं ।
 गुंजार रव भेर पडं-सदयं घणयं ॥२॥

रंग राग विणेद विसातरयं^४ बहुयं^५ ।
 चडि चाडति सुंदर मिंदरयं^६ सहयं ॥
 मिण माणक^७ कुंदण कंकणमं दिपतं ।
 मोताहळ हार विभूखणयं वणितं ॥३॥

'गजसाह' वधाउत चातुरया ललिता^८ ।
 चहुवै दिस चंमर^९ चौसरया दुळिता ॥
 मसि कर जळ हुइत, भाळिअल्ल^{१०} दुयणं^{११} ।
 परि पूनिम चंद कळा कमळं सयणं ॥४॥

कवित्त.

सैणां ठरिया^{१२} नयण, हिया^{१३} प्रसणां परजळिया ।
 जस प्रताप वाधियो^{१४}, घाउ नीसांणा वळिया^{१५} ॥
 घर घर मंगळचार, मोहत चढियो^{१६} मंडोवर ।
 नाद वेद वरतिया^{१७}, सुकवि बोलै सुभ अक्खर ॥
 जोघपुर द्रुग^{१८} जोघपुरी, कळा तप तेज कळ कळ ।
 भाद्रवै मास भीनै सिहरि, किरि भासंकर भळहळै ॥१॥

डरै^{१९} माड मेवाड, वळी पाहाड^{२०} द्रवक्कै^{२१} ।
 आकपं^{२२} अरवद्, सीस देवडां चमक्कै ॥
 जडिजै गढा किमाड, प्रज्ज भाजै परराठां ।
 खळां खंड खळभळै, इळा दहलै दिस आठां ॥

१ आ. ब्रह्माणयं । २ आ. विप्रयं । ३ आ. अथर्वणयं । ४ आ. विसालयं ।
 ५ आ. विसतरयं । ५ आ. बहुयं । ६ आ. मिंदरयं । ७ आ. माणक । ८ आ. लुलितां ।
 ९ आ. चमर । १० आ. भालीअल्ल । ११ दुधणं । आ. दुधणं । १२ आ. ठरीया ।
 १३ आ. हीया । १४ आ. वाधियो । १५ आ. वणलीया । १६ आ. चढियो ।
 १७ आ. वरतीया । १८ आ. द्रुग । १९ आ. डरै । २० आ. पहाड ।
 २१ आ. द्रव्यके । २२ आ. आकप

फेरिया^१ उलाक चिहुंवे^२, दिसी हुई^३ राजथानां हटक ।
मेलिया^४ 'गज्जण' मंडोवरै, करमसैन माथै कटक ॥२॥

ले सुभट्ट अविआट^५, आप चढीयौ^६ कोप कर ।
साठ कोस इल्लकार, कियौ^७ 'उंगरावत' ऊपर ॥
खुरताळां विक्खणी, घणी लग्गी आयासां ।
नह सुणिजै नीसाण, वंसू^८ वाजी वरहासां ॥
गज सिंघ परिग्रह आगळै, हाक मार आयी हणूं^९ ।
'करमैत' उडी^{१०} कपूर वरि, गौ छंडे गढ लाडणूं ॥३॥

थळ जंगळ आरांन, जेथ गिरि नहीं^{११} सरोवर ।
जळ पयाळ काइ गिगन, भोम उदास भयंकर ॥
तेथ फिरे रडवडे थकित, हुआ पंथ डूली ।
लांघणियो भूखियो, सीह किरि डांणा हूली ॥
साह वळ वडो विहवळ, हुवै त्रिखावंत जळ मौकळ ।
कळि मूळ आइ पैठो, कमौ, भूइ कंठे भाखर वळ ॥४॥

कुंवर^{१२} तांम^{१३} 'गजपती' घडे गढ सोजत^{१४} आयी ।
आरंभ पारंभ करे, करण जुध रोस कसायी ॥
नव^{१५} दुरगा नवरात, वीस भुअडंड प्रचंडा ।
पुहप^{१६} धूप नइवेद, सकति पूजी चामंडा^{१७} ॥
देवी मनाइ विज्जैदसम, चतुरंग दळां चढीयौ^{१८} भरणि ।
कह ताज मेर माभी, 'कमौ, गयो भाजि मेरां सरणि ॥५॥

गज दळ घूस^{१९} गडूस, मेल चतुरंग महादळ ।
पाइल बांणावळी, खडे खंधार चहुं-वळ^{२०} ॥
गिरंकंदर पाहाड^{२१}, गाहि पाए केकाणं ।
किया^{२२} मट्ट मैवास^{२३}, प्रज्ज पाळी मेलहाणं^{२४} ॥

१ अ. फेरिया । २ अ. चिहुंवे । ३ अ. हुई । ४ अ. मेलीया । ५ अ. अवीआट । ६ अ. चढीयौ । ७ अ. कीयौ । ८ अ. वसु । ९ अ. हणु । १० अ. उडि । ११ अ. नहीं । १२ अ. कुंवर । १३ अ. तांम । १४ अ. सोजत । १५ अ. नवा । १६ अ. पोहप । १७ अ. चामुंडा । १८ अ. चढीयौ । १९ अ. घूस । २० अ. चहुं । २१ अ. पहाड । २२ अ. किया । २३ अ. मैवास । २४ अ. मेलहाणं ।

घंस फेरि घरां सिरि वालरां, सुणी वात देसे दसे ।
‘गज बंध’ वळी गिरि धूणियो^१, तिकर ताड कुंजर खसे ॥६॥

ले पाए घातिया^२, मेर साखा कर वाढे ।
वळा-बंध ढंडोळ, ‘कमी’ अलंगां हूं^३ काढे ॥
भड तुरंग वीणार, चडे^४ माभी गज केसर ।
फौज लगै फूलियै^५, दीघ परराठां पस्सर ॥

गज सिंघ भए गज केसरी, काळ पेख करमर छरा ।
उग्रसेन समोन्नम^६ हंस ले, गयी तांम^७ हाडा घरा ॥७॥

महाराजा सवाई सूरसींघ री सुरगनास

रांम राज जोधपुर, सहू^८ हरचंद वारी ।
मास पंच खट मास, साहु आपे वाधारी ॥
दखणाधी^९ सरहद्द, वडा^{१०} जीता आखाडा ।
वडा प्रिसण परभवे, वडा खाटिया^{११} प्रवाडा ॥
खैंगरे खग खळ घासियां^{१२}, अभंग नाथ उदमादमै ।
दिन दिन प्रताप जस आगळ, सूरसिंघ नृप^{१३} आयमै ॥८॥

सोळसै संमत, वरस^{१४} छहतरै^{१५} वयट्टे ।
सुकळ पक्ख भाद्रवे, घुम्मि वरखा घण बुट्टे ॥
दक्खण^{१६} देस मुहंम, नयर मुक्कांम महीकर^{१७} ।
भुगति आउ^{१८} भूपाळ, वरस गुणचासां भीतर ॥
चौईस^{१९} वरस राजस करै^{२०}, सूरसिंघ नृप^{२१} द्वापुरी ।
इक^{२२} छत्र नवे^{२३} गढ भोगवे^{२४}, मुअ्री^{२५} राउ मंडोवरी ॥९॥

जपै^{२६} मुख जैरांम, पक्ख तेरै उजवाळण ।
काया मंजन करे, चीर पहिरे आभूखण ॥

१ आ.इ. धुणीयो । २ आ.इ. घातीया । ३ आ. हु । इ. हुत । ४ आ.इ. चडे ।
५ आ.इ. फूलीयो । ६ इ. समोभूम । ७ आ.इ. ताम । ८ आ. सहू । इ. सहूं ।
९ अ. दक्खणाधी । इ. दक्खणाधि । १० अ.आ. बडा । ११ आ.इ. पाटीया । १२ आ.इ.
घासीया । १३ आ. नृप । इ. निप । १४ इ. वरस । १५ इ. छहरै । १६ अ.
दक्खण । इ. दिक्खण । १७ आ. इ. महिकर । १८ आ. आव । १९ आ. चौईस ।
इ. चौवीस । २० आ. करै । २१ आ.इ. निप । २२ आ.इ. एक । २३ आ.इ. नवैगढ ।
२४ आ.इ. भोगवै । २५ आ.इ. मूअ्री । २६ आ.इ. जपे ।

वीनो^१ पीत सनेह, प्रेम निरवाहे पावन ।
 लाज मांग^२ अहंकार^३, सिरै चाढे^४ सूरतन ॥
 कूरमि पमारि कमधज्ज सुं^५, भटियांणी^६ कुळ छळ भळे ।
 जोधपुर हुई जादवि सती, पावक च्यारै प्रज्जळ ॥१०॥
 अस्ट^७ पात्र सव चंग, काइ^८ तरुणि काइ^९ वाळा ।
 पिक हंसद् आलाप, कंठ मोहित मुगताळा ॥
 मेकवीस मूरछा, त्रिण(ह)ग्राम^{१०} निसपति^{११} सुर ।
 लहण भेउ खटराग कांठ, अक्खै^{१२} मोखंतर ॥
 अपछरांन मारु पह इघक, सरस गीत संगीत धुनि ।
 ऐहडै अखाडै सुं^{१३} गयो^{१४}, सूरसिघ सगगह भवनि ॥११॥
 जई^{१५} सूर आथमै, तई दिस हुई^{१६} दखण ।
 खंळ हुआ खित प्रघटह^{१७}, प्रघटह^{१८} तारा गयंगण^{१९} ॥
 सूरज^{२०} वंसी कमळ, तुरक हिंदू^{२१} संकुडिया^{२२} ।
 गड्ड द्रुग^{२३} परसाद, तीह ले ताळा जडिया^{२४} ॥
 अरणोद अउगम जांणियै^{२५}, गी^{२६} आधारे अगम-गमै ।

गजसीघ रो वरणण

दखणाघ 'गजेसी' दीपियौ^{२७}, किरि देवायर^{२८} ऊगमै ॥१२॥
 आयौ दखण इळा, खेड इलकार तुरंगम ।
 राजखिघ राखियौ^{२९}, कोट रखवाळ दुरगंम ॥
 सुहड^{३०} साथि^{३१} रिणमाल, जोध जोधा दूसासण^{३२} ।
 सभाए साहिबी, भार भालियौ^{३३} अथरवण ॥

१ इ. विनो । २ आ. मांग । ३ आ. अहंकार । ४ आ. इ. चाडे ।
 ५ आ. इ. सु । ६ आ. इ. भटियांणी । ७ आ. इ. अस्ट । ८ इ. काई । ९ इ. काई ।
 १० आ. इ. ग्राम । ११ आ. निसपुत । आ. निसपत । १२ इ. अवे । १३ आ. इ. सुं ।
 १४ आ. गयो । १५ आ. जइ । १६ आ. हुई । १७ आ. इ. प्रघट । १८ आ. इ. प्रघट ।
 १९ आ. गयंगे गण । इ. गयंगण । २० इ. सूरज । २१ आ. हींदू ।
 इ. हीदु । २२ आ. इ. संकुडीया । २३ आ. दुरग । इ. दुरंग । २४ आ. इ. जडीया ।
 २५ आ. इ. जांणीयो । २६ आ. इ. गो । २७ आ. इ. दीपीयो । २८ आ. देवाइर ।
 इ. देवाइर । २९ आ. इ. रापीयो । ३० आ. इ. सोहड । ३१ इ. सधि । ३२ इ. दूसासण ।
 ३३ आ. भालीयो । इ. भालयो ।

परचंड पराक्रम दाखवे, पित्त^१ वीवनै^२ पंच दिन ।
 'गजसाह' वसुह राखी पगे, डहे भुज्ज डिगियी^३ गिगन ॥१३॥
 सूरज सिध^४ त्रिसींग^५, गयी खग त्याग सुधारे ।
 मंडोवरि आथाण, तात () छळि उद्धारे ॥
 उड्डि महाभर कंध, भार भलपण संबाहे ।
 वेगड वांमी^६ वहण, प्रिथी प्राप्ती पतिसाहे ॥
 गेणाग ज्यार पडियो^७ गळै, बळहारी^८ भुअडंड बळ ।
 तिण तार 'गजेसी' त्राडियो^९, घुर^{१०} हिलोळ बाळी घमळ ॥१४॥

महाराजा गजसींघ री राजतिलक

छंद अडल

भाक्का भूळ सुभट्टां पासै ।
 वैठी^{११} वाप तणै^{१२} आंमासे^{१३} ॥
 ब्राहनपुर^{१४} दसरावी थप्पे^{१५} ।
 जोसी तिलक मुहूरत^{१६} अप्पे ॥
 विजै दसम्मी होम करावे ।
 विप्रां कन्ना वेद वचावे ॥
 निघ^{१७} नृप^{१८} तिलक दियण^{१९} खत्र घौडें ।
 मिळ मंगळीक किया^{२०} राठीडे ॥१॥

छंद जात दुपई

'सूरजमल' संभ्रम राज संप्रापत, मंडप ताखत मंड ए ।
 सिंघासण वैस छत्र तांणे^{२१} सिरि, दीपति कन्न (क)मंड ए ॥
 नव दुरगा नवे^{२२} खेट वरदाई, कर गि मंगळीक रच्चए ।
 वंदिण जैकार विद कोळा हळ, विप्रां^{२३} वेदउ वच्च ए ॥१॥

१ आ. पिता । २ आ. विवा । ३. विवूनै । ३ आ.इ. डिगीयो । ४ आ. सुरज-
 सिध । ५ आ.इ. त्रिसींग । ६ आ. वांमी । ७ आ.इ. पडियो । ८ आ. बलहार ।
 ९ आ.इ. त्राडियो । १० आ. घुर । ११ आ. वैठी । १२ आ. तणो । १३ आ.
 आंमासे । १४ आ. ब्राहनपुर । १५ आ. थप्पे । १६ आ. मुहूरत । १७ आ. तिय, आ. निय । १८ आ.इ. नृप । १९ आ.इ. दीयण । २० आ.इ.
 किया । २१ आ.इ. तांणे । २२ आ.इ. नवे । २३ आ.इ. विप्रां ।

चंद आघ्राण सार गंध किस-नागर, कसतूरी^१ ऊपट्ट ए ।
सोरंभ अबीर कमकमौ केसर, परिमळ जाणक हट्ट ए ॥
कुंदन मै थाळ द्रोव दधि कुकम,^२ पूरित अक्खत तंदुळ ।
इत्यादिक गीत नाद वेदव^३-धुनि, मंगळ धमळ मंगळ ॥२॥

सुभ वासुर सुभ जोग वेळा, तिल्लक्क निलाट^४ तांण ए ।
सोळह मुखि कळा चंद संपूरण^५, द्वादस^६ ऊगति^७ भांण ए ॥
निछरावळि कीध नांखि नंजीरव^८, मोताहळ ऊच्छाळ ए ।
राठोडां^९ 'गजण' देव मै राजा, चिहु^{१०} दिसि चम्मर ढाळ ए ॥३॥

सुहडा^{११} सब^{१२} अंग चंग दिगंगवर, राइ^{१३} अंगण सोभ ए ।
मधुकर गुंजार^{१४} डंबरी सांमल, परिमळ^{१५} वास लोभ ए ॥
अवंक नीसांण रोडि तुरारव^{१६}, भेरी गुहीर^{१७} सह ए ।
बरधू^{१८} नफेर^{१९} डोड सहनाई, जाणक मेघं नह ए ॥४॥

सिणगारे सरव^{२०} हेम मे साकति, गळै गज्जगाह बंध ए ।
वेगागळ वाजराज वाहण या, दीपत सरल () कंध ए ॥
सिद्धर^{२१} हिचोळ कूभ सूडाहळ^{२२}, धज पताख^{२३} ढाळ ए ।
सोहै सरजीत^{२४} पंख संजुगता, किर परबत-माळ ए ॥५॥

गज रूपां सीस फाबि फरहरिया^{२५}, उण उणिहार इक्ख ए ।
आरुहि करि अछर मेर गिरि स्निगी, विभ्रम स्निगक पेख ए ॥
वीणा मरदंग^{२६} ताळ स्त्रीमंडळ, भणहण सहक भल्लरी ।
चढि^{२७} चढि गज^{२८} गमणि मिदरे गोखे गावै गीतक सुंदरी ॥६॥

१ अ.इ. कसतूरी । २ इ. कुकम । ३ आ.इ. वेद । ४ आ.इ. लिलाट । ५ आ.
दसपूरण । इ. संपूरण । ६ इ. द्वादसि । ७ अ. उदति । इ. उदत । ८ इ. नंजी-
रव । ९ अ. राठोडां । १० आ.इ. चिहु । ११ आ.इ. सोहडा । १२ आ.इ. अब ।
१३ इ. राई । १४ इ. गुंजार । १५ इ. पारिमल । १६ इ. तुरारव । १७ आ.इ.
गुहीर । १८ इ. बरधु । १९ इ. नफेरि । २० आ. सनाइ । इ. सनाई । २१ इ.
जांणिक । २२ आ.इ. अब । २३ इ. सिद्धर । २४ इ. सूडाहल । २५ इ. पताक ।
२६ इ. सराभीत । २७ इ. फरहरिया । २८ आ.इ. मृदंग । २९ आ.इ. चढि ।
३० इ. गभ ।

संपूरण^१ छभा इंद्र राजा^२ परि, सांमंत^३ सोहड थट्ट ए ।
 जंपै^४ आसीस जै जया सबद, चारण विप्रक भट्ट ए ॥
 पाळ गजां पांच दोमजां प्रियमी, जां^५ लग मेर मेखळा ।
 तां लग कमधज्ज राज चिजी^६ ह्वै, भुगतै^७ राजं कमळा ॥७॥

छप्पय

कमळ सयण बिळकुळै, मज्झि उर कमळ विकासै ।
 कमळि कमळि सुभ वड्ढण, कमळि दुरिजणं निकासै ॥
 कमळ पेख उणहार, कमळ वदनी मन मोहै^{१०} ।
 कमळ-नाभ थिय क्रिया, छभा परि कमळ सोहै ॥
 अभिखेक हुआ उत्तम जुगति, जोध दिय^{११} जांमली^{१२} ।
 'गजसाह' कमळि वणियो^{१३} तिळक, किरि मयक सकंर कमळि ॥१॥

घरि सींघासण^{१४} अघर, पाटि वैंठो पाटोघर^{१५} ।
 आपण पै^{१६} ईसवर, चमर ढोळावै^{१७} चौसर ॥
 इंद्र छभा किर अमर, निडर राठौड निभे-नर ।
 पह रेणाइर पसर, घणी नवकोट छिहंतर ॥
 अल्लव^{१८} अठारै^{१९} राइहर, 'वाघ' वंसोघर वीण वर ।
 'गजसाह' सीस मेघाडंबर, किरि^{२०} सुमेर सिरि^{२१} कळपतर ॥२॥

मेघनाद गडडंत, गुडै मैगळ गडडंता ।
 सुहड^{२२} पुरख मैरयण, रयण भूखण काइता^{२३} ॥
 ओपि वनै फळ पुहप, थिया^{२४} मनछाफळ प्राप्त ।
 सत्रां सापति थियो^{२५}, नाक विग्रह आई^{२६} संपत ॥

१ आ.इ. संपूर्ण । २ इ. राक्का । ३ आ.इ. सांमंत । ४ इ. जंपे । ५ इ. छिपक ।
 ६ आ.इ. जा । ७ आ. चिजीवे । ८ आ.इ. भुगतै । ९ आ. दुरिजणा । १० आ.इ. मोहै ।
 ११ आ. दीपे । १२ आ. जांमलि । १३ आ.इ. वणियो । १४ इ. सिसाण ।
 १५ आ.इ. पाटोघर । १६ आ. पे । १७ आ. ढोलावै । १८ आ.इ. अलव ।
 १९ आ. अठारै । २० आ.इ. किर । २१ आ. सिर । २२ आ. सोहड । २३ इ. काइता ।
 २४ आ.इ. थियो । २५ आ. थियो । २६ आ. आई ।

संपेख तेज जम रवि उदै, मुगट - बंध वादै समंद ।
'गजबंध' महीपति जोधपुर, जिम अजोधिया' रामचंद' ॥३॥

प्रभ्रिति^३ इद्र प्रताप, पाक पिड तेज प्रभा-कर ।
क्रोध जम्म वैभव कुमेर, दिढ मेर गिरव्वर ॥
दधि अजाद^४ बलि सेख, नाग भूतेस^५ भलप्पण ।
रूप काम आरंभ राम^६ सर, विद्या अरजण ॥
बलि राउ चाउ धीरज धू, कळप त्रिच्छ छाया करण ।
कमधज्ज निपति^७ क(...क) रता कियो^८, संग्रहि इत्ता सरब गुण ॥४॥

राठौडां सौह वधी, वधी सोह हिंदुसथानां^९ ।
वरंकरार^{१०} नव कोट, हसम राखिया^{११} खजानां ॥
दिल्लीवे^{१२} सुरताण, वाज वंका वेगागल^{१३} ।
सूटी^{१४} ले मेल्लीया^{१५}, जूह मद वहता मंगल ॥
चास धव वरस चौईस^{१६} में, राजा नाम विराजियो^{१७} ।
जग जेठ 'गजैसी' जनमियो^{१८}, थाल भलाई वाजियो^{१९} ॥५॥

वर तुरंग उत्तंग^{२०}, कणै साकति^{२१} विराजित ।
मदोमत्त मात्तंग, जाण^{२२} जळ वादळ गरजित ॥
पहरावै^{२३} सपिया^{२४}, पटासन पैरावत्ता^{२५} ।
मोड बंधां ठाकुरां, बडा सोहडी सामत्तां ॥
दे गांम तुरी द्रव लाखदे, हसत बंध^{२६} कीया सुकवि ।
कुरियंद^{२७} 'गजैसी' कापियो^{२८}, गयो समंद^{२९} पैली पहवि^{३०} ॥६॥

१ आ.इ. अजोध्या । २ आ. रायचंद । ३ आ. प्रभ्रिति । ४ आ.इ. मृजाद । ५ आ. भूतस । ६ आ. भूतेस । ७ आ. राम । ८ आ.इ. निपति । ९ आ.इ. कीयो । १० इ. हिंदुसथानां । ११ इ. वरंकरार । १२ आ.इ. राखीया । १३ आ. दिल्लीवे । १४ आ. वेगागल । १५ आ. मेगागल । १६ आ. सूटी । १७ आ. सुटी । १८ आ.इ. मेल्लीया । १९ इ. चौईस । २० आ.इ. विराजियो । २१ आ.इ. जनमियो । २२ आ.इ. वाजियो । २३ आ.इ. उत्तंग । २४ आ. सकति । २५ आ. जाण । २६ आ.इ. पैहरावै । २७ आ.इ. समपीया । २८ आ. पैरावत । २९ आ.इ. पैरावतां । ३० आ.इ. हस्तबंध । ३१ आ.इ. कुरियंद । ३२ आ.इ. कापीयो । ३३ आ.इ. समद । ३४ आ.इ. पहव ।

किया^१ राम^२ आरंभ, जिकै^३ दळ आरंभ कीजै ।
 जिकै^४ पथ्य^५ जीपती, जिकै^६ भारथ जीपी जै ॥
 जिकै^७ 'वीक' कापती^८, जिकै^९ पर दुख कापी जै ।
 तिकै^{१०} भोज^{११} पूछती, जिकै^{१२} वातां पूछी जै^{१३} ॥
 सुख जिके इंद्र^{१४} भुगतै सरगि, जिकै सुख सब^{१५} भोगवै ।
 अवतार वीर राजा^{१६} इसी, 'गजपत्ती' राठीडवै ॥७॥

असि उलास उच्चास, जिसा ऐरापति^{१७} कुंजर ।
 कामधेन^{१८} निज धरा, कोटि साखाह कळिपतर ॥
 सुहृद^{१९} सघण सुर-छभा, सुकवि जण^{२०} किता सुधाकर ।
 अस्त^{२१} भोग संजोग, पांण पिथमी^{२२} पुड ऊपर ॥
 कुळ धू^{२३} कळिन्^{२४} इंद्राणी^{२५}, गीत नाद संगीत गुण ।
 म्रित-लोक^{२६} इंद्र^{२७} कोइ महपती, ती 'गजपत्ती' 'सूर' तण ॥८॥

सूरसिध^{२८} दसरथ^{२९}, पित्ता तिण पाटि^{३०} महीपत ।
 'सलख' वंस^{३१} रुधवंस^{३२}, अवधपुर^{३३} जोधां तक्खत ॥
 दळ मेळे चतुरंग, पदम^{३४} अट्टारह वांनर ।
 पट्टाणां जुध करै^{३५}, लीध लंका जाळ धर ॥
 दिग-विजै जंग जीपण दखण, 'गजण' अंगजी गढ़ वरै ।
 सिर-ताज^{३६} सलक्खां सामंतां^{३७}, रामचंद राठीड रै^{३८} ॥९॥

असि अंभग आरुढ़, गुरड आरुढ़ भयंकर ।
 डंडा^{३९} आवध छत्रीस, चक्र^{४०} सारंग गदाधर ॥

१ आ.इ. कीया । २ आ. राम । ३ आ. जिके । ४ आ. भिके ।
 ५ आ. आ. जिके । ६ आ. भिके । ७ आ. पथ्य । ८ आ. पथ । ९ आ. भीपती । १०
 आ. जिके । ११ आ. भिके । १२ आ. भिपीमै । १३ आ. जिके । १४ आ.इ. कापता ।
 १५ आ. जिके । १६ आ.इ. जिके । १७ आ.इ. भोज । १८ आ.इ. पूछीजै ।
 १९ आ.इ. इंद्र । २० आ.इ. अव । २१ आ.इ. राभा । २२ आ. ऐरापति । २३ आ. ऐरापति ।
 २४ आ. कामधेन । २५ आ.इ. सोहृद । २६ आ.इ. भण । २७ आ.इ. अस्त । २८ आ.इ. प्रियमी ।
 २९ आ.इ. धु । ३० आ.इ. कलि । ३१ आ.इ. इन्द्रायणी । ३२ आ. म्रित-लोक । ३३ आ.इ. इंद्र ।
 ३४ आ.इ. सूरसिध । ३५ आ.इ. दसरथ । ३६ आ.इ. दसरथ । ३७ आ.इ. पाट । ३८ आ. वंस ।
 ३९ आ.इ. रुधवंस । ४० आ.इ. अवधपुर । ४१ आ.इ. अवधपुर । ४२ आ.इ. पदम । ४३ आ.इ.
 कर । ४४ आ.इ. सिरताजां । ४५ आ.इ. सामितां । ४६ आ.इ. रै । ४७ आ.इ. डंड । ४८ आ.इ.
 चक्र ।

पाट पवै उद्धरण दुजड^१, भंजण दळ लाखां ।
 जुरा - सिध सारिखां, दळण दाणवां^२ असंखां ॥
 कल्याण^३ सदा जै जै कुसल, नित जीपण जुध नव नवां ।
 'गजबंध' कमध्वां मांही^४ जिम, जिम हरि मांही पांडवां^५ ॥१०॥

पंच इंद्री^६ निग्रहे^७, ग्रहे छत्रीसेइ^८ आवध ।
 इडा पिंड सुखमणा, त्रिविधि^९ घडि मंडि घडासुध ॥
 सुवपि जोग संग्राम^{१०}, जोध विद्या अभियासी ।
 तांण बांण कोमंड^{११}, चंद्र^{१२} सूरिज^{१३} आकासी^{१४} ॥
 सुत^{१५} सूरज^{१६} मालम दिस दसू^{१७}, अर के भंजण काळ रिम ।
 'गजबंध' कमध्वां मंझुली, सिधां मज्झि गोरवख जिम ॥११॥

महाराजा गजसिंध रौ वरणण

इहा

सविता जिण^{१८} सीत (ळ) हुवै, कंपै^{१९} सीत परज्ज ।
 तिण दिस 'गजपत्ती' निपत^{२०}, तप दाखै कमधज्ज ॥१॥

कवित्त

तप दाखै^{२१} कमधज्ज, तेज सूरिज^{२२} प्रवकासै ।
 रवि द्वादस उद्योत^{२३}, दिसी चिहु^{२४} द्वादस^{२५} मासै ॥
 खाग आग वरजाग, प्रिसण बाळै पर जाळै ।
 खत्रवाट कुळवाट, पाट परियां^{२६} उजवाळै^{२७} ॥
 सामंत^{२८} सहस^{२९} सहंस किरण, तेज पुंज्ज पौरसि प्रभित^{३०} ।
 गजसिंध तेथ^{३१} तत्तौ थयौ, जेथ थाय^{३२} सीतळ सवित ॥१॥

१ अ. दुजण । २ आ. दाणवां । ३ आ. कल्याण । ४ अ. कल्याण । ५ आ. मांही । ६ इ. पंडवां । ७ इ. इंद्री । ८ इ. निग्रहे । ९ अ. छत्रीसेइ । १० अ. त्रिविध । १० आ. संग्राम । ११ आ. कोमंड । १२ अ. चंद्र । १३ आ. इ. सूरिज । १४ अ. आ. आकासी । १५ आ. इ. सुरज । १६ आ. सूत । १७ आ. इ. संदसू । १८ इ. गजवं । १९ इ. भिण । २० इ. कंपे । २१ आ. इ. निपति । २२ इ. दपै । २३ आ. इ. सूरिज । २४ अ. उद्योत । २५ अ. चिहु । २६ आ. द्वादश । २७ आ. इ. परियां । २८ अ. अजवाळै । २९ आ. सांयत । ३० आ. इ. सहस । ३१ इ. प्रभेत । ३२ आ. तेत । ३३ आ. इ. थाइ ।

सपत दीप नवखंड, सपत दधि जळ थळ महिअळ^१ ।
 एक भाग हजरत्त, मारि लीयो महि मंडळ ॥
 पछिम देस पारंभ, लियौ^२ लोहां उप्पाडे ।
 पूरव^३ दिस^४ पतिसाह, लियौ^५ लख दळ विव्भाडे ॥
 उत्तराध खंड असपति लियौ, दखण राज जोगणपुरै ।
 अकबर जलाल खाटी इळा, जिती साह जिहगीररै ॥२॥

दिल्ली मंडळ में दरोळ

जोगणपुर लाहौर, थटौ भक्खर मुळतांणह ।
 कासमीर काबल्ल, तिती जंभी^६ तुरकांणह ॥
 गुजर मांडव खंधार, प्रगट गढ़ परबत-माळह ।
 रोहितास उड्डीस, गोळकूंडी बंगाळह ॥
 अहमदानगर आसेर गढ़, पातिसाह पालट्टिया ।
 पूरव्व पछिम उत्तर, दखण च्यार चक्क चकतै लिथा^७ ॥३॥

खुरासांण दिस लंक, वेध लग्गा पति (सा) हां ।
 दळ असंख आवंदा, गुडे माभी गळि बाहां ॥
 जोगणपूर पह काज, तुरक हिंदू बे लडिया^८ ।
 मारू सेर मयंद, मेर माभी आहुडिया ॥
 गजसिंघ गढ़ां कोटां गिळण, जैत खंभ ज(म) राउ सौ ।
 राठौड हियै दखण धडै, नवौ साह नव-साहसौ ॥४॥

‘सूरजम’ (ळ) गो सरगि, साह निव्वाज विविन्नौ ।
 मत्त तुरकां हिंदुवां, तांम वैराग उपन्नौ ॥
 खान मीर उमराव, सह डोळी पतिसाही ।
 पौरसि^९ राखी पगे, ‘गजण’ दे हत्थौ वांही ॥
 दखणाध दमंगळ दाखिवा^{१०}, आंगमिया^{११} उत्तराधि^{१२} दळ ।
 सूत्रियौ^{१३} जुध्व सुरतांण^{१४} सूं, प्रारंभ आरंभ की (धी दळ) प्रवळ ॥५॥

१ आ. महीअल । इ. महियल । २ आ.इ. लीयो । ३ इ. पुरव । ४ आ. देश, इ. देस । ५ आ. लीयो । इ. लीयो । ६ आ.इ. जमी । ७ आ.इ. लीया । ८ आ.इ. लडोया । ९ आ.इ. आहुडिया । १० आ. पौरसि । इ. पौरिस । ११ इ. दापोवा । १२ आ.इ. आंगमीया । १३ अ. उत्तराध । १४ आ. सूत्तीयौ । इ. सूत्रीयो । १५ इ. पुरसाण ।

उत्तराधि^१ दखणाधि^२, उभै आहुडै वदीता ।
जद ज(द) दिन पध्वरी, तीह जद भारथ जीता ॥
असिपति^३ दळ 'गजपति', लोह त्रिविधा^४ घड^५ लाडी ।
आगळि^६ हिंदुसथान^७, इळा^८ खुरसाणह आडी ॥
कमधज्ज पित्ता जिम कल्लवा, बेहसि बाघी नेत सिरि ।
कांमत्ति हुंइ खित कारणै, गढ जोधह गिरि^९ देवगिरि^{१०} ॥६॥

गाथा

जुद्धो वरजित दोखो, दक्खण सनमुख भो-अणी ।
वरजित सा दक्खण हण खगे, राठोडे^{११} भुहणो कर ए ॥

महाराजा गजसीध रौ दखणाघ में दरोळ मेटण सारु गमन

छंद सारसी

दखणीस डंबर खरळ संकर, थेट मोगर थंड ए ।
उमराव^{१२} बहतर^{१३} खान सत्तर सीस उत्तर खंड ए ॥
खिडिया खंधारं जोरदारं सेन पारं पक्ख ए ।
केता हजारं तेग मारं अस्स मारं लक्ख ए ॥१॥
छत्रपती^{१४} छिडिया^{१५} थाट थिडिया^{१६} गयंद गुडिया^{१७} मत्त ए ।
ताणे कबाणं करि^{१८} जुवाणं गोण बाण धत्त ए ॥
दोलताबादं^{१९} नाम जादं मिळि^{२०} मुरादं^{२१} भीर ए^{२२} ।
करणाट कंकण देस दक्खण धूंअ^{२३} अधारण घीर ए ॥२॥
विज्जयानगर छिडे विहुर दुरति खप्पर दूठ ए ।
मरहट बराडं भंड किमाडं गिड पहाडं ग्रीठ ए ॥
गढपती गूडं^{२४} गोळकूडं भाड - खंड लग ए ।
सेत मै बंधं अन्नमंधं^{२५} करण जुध्धं खग ए ॥३॥

१ अ. उत्तराघ । २ दखणाघ । ३ अ. असपति । ४ इ. विधी । ५ इ. घड ।
६ अ. आगल । ७ आ.इ. हीदुसथान । ८ इ. ईला । ९ आ. गिरि । १० आ.इ.
देव गिरि । ११ आ.इ. राठोडे । १२ आ. ऊमराव । इ. ऊमरा । १३ आ. हुतर
पान । इ. बहुतर पान । १४ आ.इ. छत्रपति । १५ आ.इ. छिडीया । १६ आ.इ.
थडीया । १७ आ.इ. गुडीया । १८ आ.इ. कर । १९ आ.इ. दोलताबादं । २० आ.इ.
मिल । २१ आ.इ. मरदं । २२ अ. मरदं । इ. मिरदं । २३ आ.इ. धूंअ । २४ आ.इ.
गुडं । २५ इ. अन्नबंधं ।

नासत्रवक्कं छिडि कटक्कं सिंघ लक्कं सेन ए ।
 पंचाळ देसं पंडिवेसं^१ इळानरेसं ऐन ए ॥
 मल्यार मंडळ वीजिया जळ दक्खणी दळ संमिले^२ ।
 कन्नडा हवसी दैत^३ वंसी चिहूं^४ दिस्सी सालळ^५ ॥४॥

सेना रौ वरणण

गरजंत गजदळ जूह सब्बळ करै मैगळ सारसी ।
 बंधंत चम्मर कसै हैमर पुट्टि पक्खर आरसी ॥
 पक्खरां रोळं जळा-बोळं^६ किरि हिलोळ सिंघ ए^७ ।
 चतुरंग फवजां चींघ धज्जां पुठि गज्जां बंध ए ॥४॥
 आवै अछाया दैतराया रोद्र^८ काया रूप ए ।
 अन्नड कराळा वड वडाळा भड भुजाळा भूप ए^९ ॥
 लुग्धा सिघांणी काळ बांणी पंख वांणी बोळ ए ।
 परवत्त मेरं जुध्ध पेरं समस्सेरं तोल ए ॥६॥
 पाई^{१०} कवट्टं रिण प्रघट्टं खाग भट्टं खेल ए^{११} ।
 दूठ दुग्म्मं करै सग्म्मं जोर जमं ठेळ ए ॥
 अज्जां(न) बांहं रिम्मरांहं पातिसांहं मान ए ।
 गैदळ गाहं नरां नांहं खाग वांहं खान ए ॥७॥
 पाहाड^{१२} पिंडं गिडि प्रचंडं भुजां डंडं भीम ए ।
 जोघ जवन्नं^{१३} निभै^{१४} मन्नं सूर तन्नं सीम ए ॥
 वीराधिवीरं मिलं^{१५} मीरं सूर धीरं सत्थ^{१६} ए ।
 आरेण मत्ती भीम भत्ती बाण पत्ती पत्थ ए ॥८॥
 कळि मत्थ कोमं सत्र सोमं पस्स लोमं सी(स) ए ।
 कंधार काळं जम्म जाळं विक्कराळं दीस ए ॥
 बाहंत घावं मंडि^{१७} पावं नागरावं मत्थ ए ।
 भारत्य भल्लं भूभ भल्लं बाह बल्लं वत्थ ए ॥९॥

१ इ. पंडवेसं । २ इ. सुमिले । ३ इ. दैत्य । ४ आ. चिहु । ५ अ. जल-बोलं ।
 ६ इ. ऐ. । ७ इ. रोद्रि । ८ आ. इ. वडे वडाळा अन्नड कराळा (इस प्रकार का पाठ
 भेद है) ९ इ. पाइ । १० इ. ऐ. । ११ इ. पहाड । १२ अ. जवानं । १३ इ. निभै ।
 १४ आ. इ. निले । १५ इ. स्टथ । १६ इ. मंड ।

घानंक - घारी बळाकारी मालहारी^१ मद् ए ।
 सूरा सिपाई तुंग ताई सकज्जाई हद्^२ ए ॥
 वाहंत पाणं असम्माणं जम्मराणं जोध ए ।
 सहुवै सकूपं रिण कूपं काळ - रूपं क्रोध ए ॥१०॥
 जमराउ^३ जैसा रूप ऐसा साळ(है) पैसा लाख ए ।
 बांहां बिहूरा अंग भूरा सेन सूरा साख ए ॥
 पहरै नरांमा पंचठांमा अंग जांमा ओप ए ।
 सोहै सकाजा^४ सीस ताजां^५ सार मोजां^६ जोप ए ॥११॥

बूहा

इळ^७ कारण आरंभ कियो^८, पूरी कियो^९ पारंभ ।
 दखणियां^{१०} दळ से मिले, मत्थण महिणारंभ^{११} ॥१॥
 केताइ हिंदू^{१२} खेडिया^{१३}, केताइ पंडरवेस^{१४} ।
 हूवा खिडिकी^{१५} हेकठा, लंक उडल्ला देस ॥२॥

मलिक-अंबर

छंद अडिळ

दखणी फौज^{१६} छिडे^{१७} असमानं ।
 बहुतरि सतरि ऊमरा खानं ॥
 दखणी पिडिक^{१८} मिले दुयंगम ।
 नवसै नदीक साइरि^{१९} संगम ॥१॥
 कोट मुलक खिडिया केताइ खंड ।
 व्याइ वसूहक फाटी ब्रह्मंड^{२०} ॥
 वडा वडा आवै वरियांमं^{२१} ।
 'अंबर' आगै करै सलांमं ॥२॥

१ इ. सामहरी । २ इ. हथ ३ आ.इ. जमराव । ४ इ. सकजां । ५ इ. तजां ।
 ६ मोजां । ७ इ. ईला । ८ आ.इ. कीयी । ९ आ.इ. कीयी । १० आ.इ. दपणीयां ।
 ११ इ. महिलारंभ । १२ इ. हीदू । १३ आ.इ. पेडीया । १४ इ. पंडवेस । १५ इ.
 पिडीकी । १६ इ. १५ इ. फौज । १७ इ. चिडे । १८ इ. पिडिक । १९ इ. साइर ।
 २० इ. ब्रह्मंड । २१ आ.इ. वरीयांम ।

ऐहा जोध बहसीया आया ।
 काजळ मसि(क) वरनी काया ॥
 माथै छत्रस ऊजळ दीठा ।
 बलियै त्रिक्ख किरि हंस बयठा ॥३॥

बादसाह री अंबर रै विरुद्ध वोडी फेरणी
 सगळ तेडि खान सुरतांणं ।
 बीडी अप्पि अप्पि फुरमाणं ॥
 असी सहंस असवारां घोडां ।
 कीध^१ विद्या^२ ऊपरि राठीडां ॥४॥

आकूत खान असक्कत माभी ।
 दक्खण दळ तेग तै प्राभी ॥
 सहतररि ताबीन समप्पै ।
 सेनाधपति सेन मभि थप्पै ॥५॥

आकूत खां (याकूत खा) री बीडी उठाणी
 छंद दोमळा

आकूतह खान भाळ पांनं छट्टै साहण पंखाळा ।
 लाए लग्गाणं मंडि पलांणं घोडे पक्खर थंभ साळा ॥

सेना री वरणण

तह कीध तुरंगं ताणै तंगं वंधे चंमर^३ गजगाहं ।
 लीया वरियामे 'अंबर' आमे सूरै पूरै सत्ताहं ॥१॥
 रंगावळि सत्थळ हत्थे हत्थळ भूळरियाळा^४ धू टोपं ।
 जडिया^५ ले जूसण वंधे कस्सण सिद्धक जाणै सक्कोपं ॥
 गुरजां चकमारां अंग अगारां डावे पट्टां जमदडुं ।
 खंडा खुरसांणी तेगां पांणी सींगी^६ नेजा सत्तड्डं ॥२॥
 दुधधार गुपती खंजर कत्ती सुंनर^७ कस्सी कोमंडं ।
 छोही तरगाळी ढल्लां काळो छत्रीसेइ आवव डंडं ॥

१ इ. किधा । २ आ. विद्या । ३ इ. चमर । ४ आ.इ. भूळरीयाला । ५ आ.इ. बदीया । ६ आ. सीशी । ७ इ. सीगी । ७. इ. सुतर ।

डंड - आवध डावै^१ फारिक फावै^२ वीरति^३ वंका भूंभारं^४ ।
सत्तांमां कीयां ऊभा मीयां सांम सनमुख सिल्लाएं ॥३॥

खल्लहलतां डांणां खंभूठांणां^५ गोड करंता गज - भारं ।
ढल्ला ढळकावी चींध^६ वणावी पूठि चइन्ना पीतारं^७ ॥
गडडंता मंगळ पाए सांकळ कोटां भंजण किमाडं ।
सिंदूर वखांणै गेरू जाणो मेघ क धोया पाहाडं ॥४॥

दीपै दंताळा वयंड काळा ऊभा लागै आकासै ।
पिलवांण पटाभर काळा कुंजर लोक त्रिहुं हुआ तंमासै ॥
सवजे जर दाई लाल सिहाई वानै छायाी ब्रह्मंडं ।
फररा बैरवकां फावी^८ कटकां जाणक^९ फूले वन-खंडं ॥५॥

कवित्त

खंड देस गढकोट, मुलक मांणं तम महाधर ।
कनक मंड^{१०} मांडंत, छत्र सिर^{११} मेघाडंबर ॥
पाटंबर पैहरंत, सूफजर बाफ मसंजर ।
जम दाढां नमि जडित, कडां जडिया^{१२} जर कंबर ॥
जोगिंद हुआ सिलहां जडे, दिढ़ दाखवि देवगिरा ।
चंचळे खान सत्तरि चडे, चडे बहुत्तरि उमरा ॥१॥

तणा मीर मरहट्ट, तणा बंगाल बराडह ।
कुंकण करणाटक, खान देसां नमियाडह ॥
गोलकुंड महिमुंड, तुंड मंडिळा तिलंगा ।
वेदुर बीजापुरा, कनड हबसी अणभंगा ॥

सांमद उअल्ला सैतबंध, हिंदू^{१३} हम्मीरह खरा ।
आकूत खान साथे इता, दळ चडिया^{१४} दक्खण-धरा ॥२॥

१ अ. डावे । आ. डावो । २ आ. फोवे । ३ इ. विरती । ४ आ.इ. भूंभारं ।
५ इ. पांभूठांणा । ६ आ.इ. चींध । ७ इ. पीतार । ८ इ. फावि । ९ आ.इ. जाणिक ।
१० अ. डंड । ११ आ.इ. सिस । १२ आ.इ. जडीया । १३ आ. इ. हीदू । १४ अ.
चडीया ।

फौज री कूच

छंद डंडीश्रळ १

दम्मांमा घाउर^१ भेर भिहाऊ^३ है गैराऊ^४ दळ चडिया^२ ।
 वज्जे सहनाई^६ नौवत घाई तूर त्रिघाई^७ गडगडिया^८ ॥
 रुडिया^९ रिणतूर^{१०} त्रंबक पूरं वाजि पडूरं^{११} असमांणं ।
 खेहां धमरोळं मिळि गोघोळं पक्खर रोळं केकांणं ॥१॥

हाहूळि हुलाहं हूहि हुकाहं सेन अबांह उल्लट्टं ।
 गिरि कंदर कूरं भंगर भूरं वाजि पडूरं^{१२} उप्पट्टं ॥
 खडिया^{१३} ऊमगं ऊपडि वग्गं द्रमे पनग्गं पायाळं ।
 हाहस्स हसम्मं सटा^{१४} सिरम्मं असी उरम्मं पडताळं ॥२॥

द्रोडा-रव^{१५} द्रम्मी वाजि दिसम्मी गूडळं जम्मी गैणगै^{१६} ।
 फुण सेस सहस्सं^{१७} धूजि^{१८} धमस्सं पंथ हमस्सं है-परगै^{१९} ॥
 वाराह घडक्कै^{२०} दाढ खडक्कै कंध कडक्कै कूरम्मं^{२१} ।
 सम्मूह सळक्कै कूत वळक्कै खंगं खळक्कै कैजम्मं^{२२} ॥३॥

असमांन अलव्वं थाट^{२३} थिडव्वं^{२४} उट्ठि दिडव्वं अणपारं ।
 सरतांण^{२५} धनंखं खांडे पंखं अडे असंखं खंधारं ॥
 घण जाणिक^{२६} घट्टा साहणं छुट्टा सातक फट्टा सांमद्रं ।
 सणणी^{२७} सीचांणां^{२८} जेम^{२९} विवांणां वांनर डांणां वाजिद्रं^{३०} ॥४॥

खैगां खुरताळे खोणा^{३१} उछाळे असी^{३२} अफाळं असवारां ।
 चतुरंगह^{३३} चल्ले हेमक हल्ले फूल उभल्ले भूभारां ॥

१ इ. डडअल । २ आ. घाऊ । ३ आ. घाउ । ४ आ. भिहाऊं । ५ निहाऊ ।
 ४ इ. गैराउ । ५ आ. इ. चडीया । ६ आ. सनाई । ७ इ. सेहनाई । ७ इ. त्रिघाई ।
 ८ आ. इ. गड गडीया । ९ आ. रुडीया । १० इ. रिणतुर । ११ इ. पडूर । १२ आ.
 पडूरं । १३ आ. इ. पडीया । १४ आ. साटी । १५ आ. इ. द्रोडारव ।
 १६ आ. गैणायो । १७ आ. इ. गैणायगै । १८ आ. इ. सहसं । १९ इ. धुजि । २० आ. हे ।
 २० घडके । २१ आ. कूरयं । २२ आ. इ. कूरमं । २३ आ. इ. केजमं । २४ इ. छाटि ।
 २५ इ. छिडव्वं । २६ इ. सरसांण । २७ इ. जाणिक । २८ इ. सणणे । २९ आ.
 सीचांणां । ३० आ. इ. सिचांणां । ३१ आ. जेम । ३२ आ. विजद्रं । ३३ आ. आ. पोल ।
 ३४ इ. असि । ३५ आ. इ. चतरंगह ।

पाहाड^१ सिरंगे^२ पंथ पवंगे^३ गोम निहंगे गूधोळ^४ ।
पाधर किय^५ पट्टं वन्न विकट्टं जाणि^६ उलंठ जळ बोळं ॥५॥

घूजंत घरती फीज वहत्ती हम्मंस मत्ती है^७ पाए ।
वहतां वरहासां बाजै नासां चोट चीरासां न सुणाए ॥
गडगडि^८ नीसांण मेघ मंडांण अंबर भांण रज छाया ।
हींसा-रव^९ घोडे^{१०} दखणो दौडे वागां जोडे दळ धाया ॥६॥

दखणी सेना री वरणण

गाहा

दळ मारत आया दखणाघा ।
फट्टां दळ वादळ उतराघा ॥
वरसे^{११} आगि वहतां बांगां^{१२} ।
ठीडि ठीड^{१३} हूं उट्टे थांणा ॥१॥

दखणी दक्खण पस्सरिया दळ ।
किरमं कडा करस्सण मेहळ ॥
दखणी कटक चहूं दिस दौडै ।
महिकरनह^{१४} मुहक्कयी^{१५} राठीडै ॥२॥

मूक्कया लिखि 'दाराब' उतांमळ ।
'खांनाखान' सांमुहा^{१६} कागळ ॥
हुवा कटक्के दखणी हाऊ ।
ब्राहनपुर^{१७} आया वाहाऊ^{१८} ॥३॥

खांना खान री महाराज गजसंध ने विरुदाणो

कवित्त

खांना खान नबाब, 'गजण' कहियौ^{१९} औनाडह^{२०} ।
तू^{२१} परचंड पहाड, लोह औछाड^{२२} किमाडह ॥

१ आ.इ. पहाड । २ आ.इ. सिरंगे । ३ इ. वहंगे । ३ अ. गूधालं । ५ आ.इ. किय । ६ आ.इ. जाणि । ७ अ.आ. हे । ८ अ.आ. गड गड । ९ आ.इ. हीसारव । १० अ.आ. घोडे । ११ आ.इ. वरसे । १२ अ.आ. बांगां । १३ अ.आ. ठीड ठीड । १४ इ. न । १५ इ. महक्कयी । १६ आ. सामहा । इ. सामुहा । १७ इ. ब्राहनपुर । १८ इ. वाहाऊ । १९ आ.इ. कहियौ । २० इ. औनाडह । २१ आ.इ. तू । २२ इ. औछाडह ।

तूं^१ आगळ हिंदुवां, तुहिज^२ हम्मीरां आगळ ।
 तं भंजे मेवाडि^३, किया^४ खळ-खट्ट वहे खळ ॥
 दखणाधि दळ फाटी उदधि, रहै न दूजै^५ रोकियो^६ ।
 कमघज्ज ऊठि कर तेग ले, तो भुज भार खडक्कियो^७ ॥१॥

महाराजा गजसीध री जोस में आणी

वयणे^८ वाकारियो^९, तांम माझो गज केसरी ।
 पवन पूर ऊफणे^{१०}, जळण जाणै^{११} वन अंतरि ॥
 बळि राजा वांधवा, वोम किर लागी वांमण^{१२} ।
 विजै जेम वैराट, भीम भंजण दूसासण ॥
 हणमंत द्रोण हिल्लोळवा, वीरा - तन किरि विळकुळं ।
 दळ-थंभ विढण दखणाधि^{१३} सुं^{१४}, ऐम^{१५} ऊठियो^{१६} भुज आंमळ ॥२॥

बळ देखे वोलियो^{१७}, सुणो खानां सुरतांण ।
 'सूरजमल' मो पित्ता, तेणि थूडे^{१८} अरि थांणां ॥
 सबळ भार मो भुजै, तणी परियां परचंडां ।
 दधि फाटी वंध दूं, हुई ज भेलूं ब्रह्मंडां^{१९} ॥
 मो तेग वंदै^{२०} हिंदू^{२१} तुरक, जेती ऊगे आथमै ।
 'गजसाह' कहै पतिसाह दळ, मो^{२२} उभै^{२३} कुण आंगमै ॥३॥

राजद्वार कोठार, जीण - सालां काढीजै ।
 जरद जरदी घडे, लोह लोहे कूटीजै ॥
 वेनांणी वेगळा, वाढ घालै केवांणां ।
 कूंत वांण कीजति, अणी तीखा खुरसांणां ॥
 कापिजै कनक दीजै भडां, वाहिर आपे वारिग्रह ।
 मारु^{२४} नरिद महिकर दिसा, पारंभ आरंभ कीध पह ॥४॥

१ आ.इ. तूं । २ इ. तूं हीज । ३ अ.आ. मेवाड । ४ आ.इ. कीया । ५ अ.आ. दूजो । ६ आ.इ. रोकियो । ७ आ.इ. पडकीयो । ८ अ.आ. वसणै । ९ आ.इ. वाकारियो । १० आ.इ. उफणे । ११ आ.इ. जाणं । १२ आ. वायाण । इ. वामण । १३ अ.आ. दपणाध । १४ आ. सुं । इ. सु । १५ अ. इम । १६ आ.इ. उठियो । १७ आ.इ. वोलियो । १८ आ.इ. थूरे । १९ आ.इ. ब्रह्मंडां । २० अ. वधे । २१ आ. हींदु । इ. हींदू । २२ आ.इ. मो । २३ इ. उभो । २४ अ. मारु ।

इहा

त्राहन-पुर^१ खट^२ मास रहि, होळी रमे वसंत ।
तंग तुरंगां ताणिया^३, खेलण खत्र निभ्रंत^४ ॥१॥
कारण तामै कुंजरां, जोहडां सजोहडांह ।
सीहां सत्य उतांमळी, परिगह राठोडांह ॥२॥

गाथा

अरजणी नंद घोखी, सूरज सपतास^५ इंद्र ऐरापति^६ ।
गोमंद^७ गुरडन्याए, नेजा डा^८ सिध आरुडह^९ ॥

कवित्त

ग्रहे वज्र जिम भुजा, चढे ऐरापति इंद्रह ।
नंद गोरव जिम^{१०} पथ, चढे^{११} कर ग्रह कोमंडह ॥
ग्रहे आचर त्रिसूळ, चढे^{१२} जिम संकर धम्मलि ।
चढे^{१३} राम खगपति, गदा चक्र गहे भुअब्बलि ॥
सूरज्जि जेम सपतास चढि^{१४}, पदमपांण आवध ग्रहै ।
गजसिध लोह खटनीस ले, इम 'जे' पूठी आरुहै ॥२॥
गोडी-रव गैमरां, जूह वहतां तळ जोडां ।
घंटा-रव पक्खरां, हुए हींसा-रव^{१५} घोडां ॥
ढोवा-रव ढिग ढिगै, गोम गैणा-रव गज्जै ।
गुंजा-रव भेरियां^{१६}, धनक टंका-रव वज्जै ॥
सुंडोर वसे नेसां हणे, किरि लहरी-रव ऊपडै ।
रोठोड जमलि 'गजसाह' री, तुरां पूठि नाहर चडै ॥२॥

सेना री वरणण

छंद संजुता^{१७}

नोसांण नह निफेरियं^{१८} । दम्मांम काहुळि भेरियं^{१९} ।
रिण तूर वाजि जंबूर ए । आवाज गाज निहंग ए ॥१॥

१ अ.आ. त्राहनपुर । २ इ. घट । ३ आ.इ. तांणीया- । ४ इ. निभंत । ५ इ. सपताह । ६ आ. औरापति । इ. ऐरापति । ७ आ. गोमद । इ. गेमद । ८ इ. मा । ९ इ. आरुड । १० इ. जि । ११ इ. चढ । १२ इ. चडे । १३ इ. चडे । १४ इ. चडि । १५ इ. हीसारव । १६ आ.इ. भेरीयां । १७ अ.आ. संजुत । १८ आ.इ. नफेरीय । १९ इ. भेरीयं ।

वाजित्र नौबति वज्ज ए । घण जाण भाद्रव गज्ज ए ।
चतुरंग सेनह चल्ल ए । है-थाट हैमक हल्ल ए ॥२॥

परबत पंख प्रचंड ए । मल्हपति^१ मांणक डंड ए^२ ।
मदमोख जूह महाबली । सदरूप^३ मेघक सिघली^४ ॥३॥

डोहंत सूडा^५ डंड ए । स्त्रीखंड सरपक हिड ए ।
गज-वाग^६ मत्थै मैगळां । वळकत्त वीजक वट्टलां ॥४॥

गुडियंत जूह गडाड ए । सरजीत जाणि^७ पहाड ए ।
मदगंध मद ऊमंड ए । हय पाई रजनी ऊडु ए ॥५॥

गंभीर गडिअड ढोल ए । पड-सद् परबत बोल ए ।
खुर रव(ज) खैगां थाइयं । रज धूळ अंबर^८ छाइयं ॥६॥

गोधूळ गोम गहत्त ए । वरहास वेग वहत्त ए ।
पडताळ पाइ पवंग ए । भुअ^९ भार कं पि भुअंग ए ॥७॥

असि भंफ मंकड^{१०} पाळ ए । घडकंति सात पंयाळ ए ।
खेडंत^{११} खैंग जुवांण ए । सुरजाणि^{१२} वोम विवांण ए ॥८॥

जन्नांख वाजि पलांण ए । किरिसोक^{१३} पंख सिचांण ए ।
उल्लट्ट थट्ट थिडंब ए । दिसि अन्भ उडु दिडंब ए ॥९॥

ग्रहराउ^{१४} मज्झि गरद् ए । किरि चंद राति सरद् ए ।
अहिराव कूरम^{१५} क्रोड ए । मसतक्क भारह मोड ए ॥१०॥

वरहास दीडे वेगळा । किरि खडै^{१६} नभ उर मंडळा ।
हुइ हमस धम धम है-खुरां । वाजंत धम-धम पाखरां ॥११॥

हालंत हैमर लीण ए । ऐहलांण^{१७} भर हरि फीण ए ।
'गजसाह' राव^{१८} राठीड ए । किरि पत्थ गो ग्रह दीड ए ॥१२॥

१ इ. मल्हति । २ इ. मंड । ३ अ. सदरूप । ४ आ. सिघली । ५ आ. इ. सुंडा ।
६ अ. आ. वन वाग । ७ आ. इ. जाणि । ८ आ. अंबर । ९ आ. इ. भूअ । १० आ.
मंकक । ११ इ. पडंत । १२ आ. जाणि । १३ इ. सोप । १४ इ. ग्रहराऊ ।
१५ आ. इ. कूरम । १६ इ. पडे । १७ आ. इ. ऐहलांण । १८ इ. राऊ ।

महाराजा गजसिंघ री वरणण

कवित्त

जिम घायी जोगेस, वसुह दिख ज्याग विघूसण ।
जिम घायी^१ ग्रह वांण, पत्थ गो^२ ग्रह छाडावण^३ ॥
जिम घायी हणमंत, द्रोण पब्बे उप्पाडण ।
जिम घायी भीमेण, दैत लंक मीर विभाडण ॥

पित वैर क घायी^४ फरसवर, संधारण सहसा-रजण^५ ।
घायी कमध्व दिल्ली^६ दळां, जिम अन्नंत गज उग्रहण^७ ॥१॥

तणी चाढ सुरतांण, खेडि आयी खुद्रा असि ।
दधि महिकर दळ वधे, पेखि राजा पूर^८ ससि^९ ॥
चडि^{१०} आया सांमहा, सुहड^{११} साखेत^{१२} भुजाळा ।
कियो सनमुख जुहार, आप आपे अंकमाळा ॥
कमधज्ज मिळे सुं^{१३} कमधजां, हीया परफूलत हुवै ।
वंदीयो^{१४} "गजण" विय चंदवरि, तांम तुरवकै हिन्दुवै^{१५} ॥२॥

सह सुभट्ट अविअट्ट, वंघि रिणवट्ट सत्रांणां^{१६} ।
लोह मरट्ट विकट दिये^{१७}, किरच.....कबांणां ॥
ज्या प्रघट्ट खतवट्ट^{१८}, कोट अपलट्ट पलट्टे ।
ज्या निकट्ट भी नही, निपट सग्रांम निहट्टे ॥
खल-खट्ट करे खागां मुहै, सूरज्ज हट्ट समूह गह ।
कमधज्ज दियण^{१९} पसणां पहत, थिडे थट्ट हूआ थडह ॥३॥

गजदंतां मुहि^{२०} चडै, जिके गजदंत विभाडै ।
गाडि सीम गज भीम, गयण गजरूप भमाडै ॥
करन द्रोण भीखम्म, जिसा भूरी भगदत्तह ।
घन्न रिद्ध धन रज्ज, वाच जुजुळल निआंतह^{२१} ॥

१ इ. घायी । २ इ. गो । ३ इ. छाडावण । ४ इ. घायी । ५ इ. सहसारभण ।
६ आ. दिली । ७ इ. उग्रहण । ८ इ. पूरण । ९ आ.आ. सुसि । १० इ. चडि ।
११ इ. सोहड । १२ इ. साखेत । १३ इ. सु । १४ आ.इ. वंदीयो । १५ आ. हींदुवे ।
१६ इ. हीदवे । १७ इ. सुत्राणा । १८ आ.इ. दीयै । १९ आ.इ. पत्रवट । २० इ.
दीयण । २१ इ. मुह । २२ इ. निआंतह ।

भगवाट गिणै पुत्रह वधू, वांमां अंग त्रिविध घड ।
कमधज्ज राऊ जांमळि कमध, जांणि मेर जांमळि अनड ॥४॥

जै जीती दखणाघ, हाकि हबसी दळ सब्बळ ।
जै भागी मेवाड, मीढ सू^१ दिल्ली मंडळ ॥
जै जीती अजमेर, घडी मांही घण चक्कह ।
जै लीयौ जाळोर, भिडे पट्टाण कटक्कह ॥
वरियांम^२ मेरं माभी वडा, जिसा जोघ हथणापुरा ।
सामंत^३ सहू^४ भेळा हुआ^५, गिडि^६ प्रचंड गजसिध रा ॥५॥

इहा

राठीडे^७ पिडी^८ गाहियो^९, गज बंधी भूपाळ ।
पूनिम चंद पडगरै, जांणि नखत्रां माळ ॥१॥
एका एक अभंग भड, थिया थिडंबे^{१०} थट्ट ।
मारु^{११} मांभी^{१२} मारका^{१३}, कुण कुण वडा सुभट्ट ॥२॥

राठीडां री जुदी २ साखावां री नामावळी

कवित्त

‘जोधा’ ‘चांपा’ ‘अखा’, भला भणि ‘डूगर’^{१४} भाखर ।
‘मांडण’ ‘मंडळा’ ‘करन’, वरण फौजां वीर-व्वर ॥
‘रूपा’^{१५} ‘नाथू’ ‘सलख’, ‘पात’ ‘कांबल्ल’^{१६} ‘जगंमल’ ।
‘जेतमाल’ ‘अडवाळ’^{१७}, ‘लखा’ ‘सांडा’ वेरस्सल’^{१८} ॥
एक एक नमै खत्र आगळा, भाला हत्या भड सिहर’^{१९} ।
नव समंद खाण नवसाहसा, राठीडां रिणमल्ल हर ॥१॥

‘जोधा’^{२०} ‘सूजा’^{२१} अणी, अणी ‘सूजां’^{२२} ही ‘ऊदा’^{२३} ।
वड रावत ‘वरसीघ’^{२४}, दुरित दुस्सासण’^{२५} ‘दूदा’ ॥

१ इ. सु । २ आ.इ. वरीयांम । ३ आ.इ. सामंत । ४ आ.इ. सोह । ५ आ. हुआ । इ. हुवा । ६ इ. गिड । ७ आ.इ. राठीडे । ८ आ. पिडी । इ. पिड । ९ आ.इ. गाहियो । १० आ.इ. थिडंबे । ११ इ. मारु । १२ आ. मांभी । १३ इ. मारिका । १४ इ. डूगर । १५ इ. रूपा । १६ आ.इ. काबल । १७ आ. अडवाल । १८ आ.इ. वेरसल । १९ आ.इ. सेहर । २० आ.इ. जोघ । २१ इ. सुजा । २२ इ. मुजा । २३ इ. उदा । २४ आ.इ. वरसिघ । २५ आ. दूसासण । इ. दुसासण ।

‘करमसिध’^१ कलिमत्थ^२, रुक^३ ‘राइसिध’^४ रंढाला ।
 ‘वीदा’^५ ‘विकमाइत’^६, ‘भीम’^७ ‘भारमल’^८ भुजाळा ॥
 ‘सिवराज’^९ अने ‘जोगा’^{१०} सगह, प्रिथी प्रमाणे प्रगडा^{११} ।
 जोधपुर इता जोधां तणा, महण^{१२} मेर जेवड घडा^{१३} ॥२॥

कुण कुण कहि दाखिये^{१४}, सह^{१५} भेली सलखाइण^{१६} ।
 जिके^{१७} जोध वरियांम^{१८}, तिके बत्थह पंचाइण^{१९} ॥
 ‘उहड’^{२०} ‘सीधल’^{२१} अभंग, तेर साखा राठीहड ।

भाटियां री साखायां री नामावळी

‘जेसो’^{२२} ‘केल्हण’^{२३} ‘अरजणोत’^{२४}, भला भाटी खत्र घोहड ॥

चोहाण

चोइस^{२५} साख चहुवांण हर, ‘सोनगिरा’^{२६} के ‘देवडा’ ।
 ब्रह्मंड^{२७} न माने वीर रस, खडग हत्य दरगहि खडा ॥३॥

दोनू तरफ री सेना री वरणण

दूहा

सिलह भडां व्हे^{२८} केजमां^{२९}, गुडि^{३०} पाखर गजथट्ट ।
 सू^{३१} बाघी दखणाधि^{३२} दळ, राठीडे रिणवट्ट ॥१॥
 दुहुं^{३३} दळ हालीहळ सबळ, दुहुं^{३४} दळ घुरे दमांम ।
 दमगळ मांती दुहुं^{३५} दळां, दुहुं^{३६} वै^{३७} कोस मुकांम ॥२॥
 कटकां काइ^{३८} सख्या नही^{३९}, कोई सांणो न पार ।
 डेरा दिक्खणियां^{४०} तणा, किरि^{४१} धोळा गिरि^{४२} धार ॥३॥

१ आ.इ. करमसीह । २ आ. कालिमथ । इ. कलिमथि । ३ आ. रुके । इ. रुक ।
 ४ इ. रंढाला । ५ आ. विकमाइत । इ. वीकमाइत । ६ इ. प्रघडा । ७ इ. महड ।
 ८ इ. घड । ९ आ. दषीयी । इ. दाषीयी । १० आ.इ. सह । ११ इ. सलखाईण ।
 १२ इ. जिके । १३ आ.इ. वरीयांम । १४ आ. पचाइण । इ. पचांइण । १५ इ. उहड ।
 १६ इ. सीधल । १७ इ. केलण । १८ आ. अरजनीत । इ. अरजणीत । १९ इ.
 चोवीस । २० इ. सोनिगरा । २१ आ. ब्रह्मंड । इ. ब्रह्मंड । २२ इ. है । २३ इ.
 केजम । २४ आ. गुड । इ. गिड । २५ आ. सुं । इ. सु । २६ इ. दपण । २७ आ.इ.
 दुहुं । २८ आ.इ. दुहुं । २९ इ. दह । ३० दुहुं । ३१ इ. काई । ३२ आ. जही ।
 ३३ आ. दिक्खणीयां । इ. दिषीणीयां । ३४ इ. फिर । ३५ इ. घौलागिर ।

दखणाघा उत्तराध दिसि^१, अगि वृजागि^२ वहत ।
जाणै बाण प्रधान हुइ, जुध भारथ मातंग ॥४॥

दखणी सेना रो धरणग

छद मोदिक^३

दखणि^४ सेन खडै जळ बोळह ।
पूठि पवंगां पक्खर रोळह ॥
कैजम जीण तुरंग में राजित ।
पाखरिया^५ किरि पंख परब्रत ॥१॥

पूठि^६ भिडज्जां आरुहिया^७ भड ।
तिस रुप^८ लेय छतीसे त्रिज्जड ॥
सत्तरि खांत बहुत्तरि ऊमर ।
सीस^९ विराजित^{१०} मेघाडंबर ॥२॥

वांता^{११} ओपै^{१२} हद विहदह ।
लाल सपेत स्याह जरदह ॥
वैरक चींध^{१३} घजा गज डंबर ।
नेजै नेजै मोर बहादर^{१४} ॥३॥

फाबी फीज घडां चतुरंगणि ।
फूळे जाणि पलास क^{१५} फागणि ॥
जगमग^{१६} जीण - साळ...मरदां ।
जाणै^{१७} बीज खिवंत जळदां ॥४॥

अंबक^{१८} रोडि रुडै^{१९} रिण तूरह ।
काइर कंपति रस्सै सूरह ॥
फीज चडी घण थाट घांसाहर^{२०} ।
एह समुद्र क फाटी अंबर^{२१} ॥५॥

१ इ. दिसा । २ आ.इ. वृजागि । ३ आ. मोदिका । ४ इ. दखणी । ५ आ.इ. पाखरीया । ६ इ. पूठि । ७ आ.इ. आरुहिया । ८ आ.इ. रुप । ९ इ. सिस । १० इ. विराजित । ११ आ.इ. वांता । १२ आ. ओपै । १३ आ.इ. चींध । १४ आ.इ. बहादर । १५ इ. पलास । १६ आ.इ. जगमगै । १७ इ. जाणि । १८ इ. अंबक । १९ आ.इ. रुडे । २० आ.इ. घांसाहर । २१ आ. अंबर ।

खोहड^१ खान खडे खरहंडह ।
मेइण^२ धुंधलियो^३ ब्रह्मंडह^४ ॥
नेजा दखणियां^५ दळ अंतर ।
जाणे वास पहाडां ऊपर ॥६॥

ऊलटिया^६ दखणाघ तणा दळ ।
मेघ मंडाण^७ क तारा मंडळ ॥
मांडे फौज गडूस^८ महिक्कर ।
आया थाट 'गजैसी'^९ ऊपर ॥७॥

कवित्त

दळ मेहळ ऊपडै, भमर रज डम्मर अम्मै ।
असख बाण आतस्स, गयण पंखारव गम्मै ॥
पसरि पख है पाई^{१०}, इळा^{११} उड्डै^{१२} आघंतरि ।
जरद लाल इक^{१३} स्याह, वरन वांना विबहथरि^{१४} ॥
सपेखि तीड दिक्खण सुहड^{१५}, इडग मेर माभी अनड ।
'गजसिघ' आत केही गिणै^{१६}, ग्रह समूह^{१७} ग्रीधळ गुरड ॥१॥

महाराजा गजसिघ रौ वरणण

गज हैमर पक्खरै, सिलह^{१८} सुहडां^{१९} पहरावै^{२०} ।
आप कवच ओपवै, सत्रै^{२१} संग्राम रचावै ॥
डाब लोह खटत्रीस^{२२}, आभ उपाडै ऊडळ ।
तांणि निळै तिस्सली, भाग तोजै^{२३} अहि साबळ ॥
आरुढ हुए 'जै' नाम^{२४} असि, रवि ऊगमणि परगडै ।
'गजसिघ' दमांमा^{२५} गाजतां, चढि^{२६} आयो तब चापडै ॥२॥

१ आ. वोहड । इ. पोहण । २ आ. गइण । ३ इ. धुधलियो । ४ आ. ब्रह्मंड ।
इ. ब्रह्मंड । ५ आ. दखणीया । इ. दषणीयां । ६ आ.इ. उलटीया । ७ आ. मांडाण ।
८ इ. गडूस । ९ आ. गजैसी । १० इ. पाई । ११ इ. ईला । १२ आ.इ. उडे ।
१३ आ.इ. एक । १४ आ. विहपरि । इ. विबहपरि । १५ आ.इ. सोहड । १६ इ.
गीणै । १७ इ. समूह । १८ इ. सिलह । १९ आ.इ. सोहडां । २० आ.इ. पहराव ।
२१ इ. सूत्रि । २२ आ.इ. खटत्रीस । २३ आ.इ. जीजै । २४ आ.इ. नाम । २५ आ.
दमांमा । २६ इ. चढि ।

गाथा

इक्को^१ सहस-किणौ, किति मेराइ^२ अंधकारस्य ।
संपेख^३ दक्खण सेना, कमधज्ज हसियं कोपि ॥१॥

जुध धरणण

छंद हणूफाळ

दखिणाध दळ असवार । चाळीस दूण हजार ।
चापडै^४ खेत चडेउ^५ । असमाण फोज अडेउ^६ ॥१॥
राठौड रिणवट वद्धि । जमदूत निहटा जुद्धि ।
है कळळ हूकळ^७ हुब्बि । दम्मांम दोमभि धुब्बि ॥२॥
विपरीत विस्सम घात । किरि^८ वांण वज्जहै पात ।
वर जाग वूंग वहंति । किरि अग्गि द्रिस्टि हुवंति ॥३॥
धौकार वाजि धनंख । उडुंति तीर असंख ।
हैकंपि हुई^९ ब्रह्मंड^{१०} । गरजंति गुण कोमंड ॥४॥
आतस्स घोर अंधार । लै^{११} कार मार संधार ।
धण चक्र उत्तरियाणि^{१२} । कुरु-खेत भारथ जाणि ॥५॥
वाजंति नाळ निहाउ । किरि कूत बीज^{१३} सिळाउ ।
ऊडुंति आगि दवंग^{१४} । नाखत्र जाणि निहंग ॥६॥
खिवि पटा खंडा धार । फिल्लमळै^{१५} भळ हळ सार ।
रिण रचै सिधू राग । खिल मिळै नागा खार ॥७॥
है थाट हैमर हींस^{१६} । गडडाट गैमर क्रीस ।
गडगडै^{१७} त्रंबक गोडि । रिण तूर वज्जै रोडि ॥८॥
गुण वांण सीधणि^{१८} गाढ । वाहंति तांणक वाढ ।
बंदूक^{१९} वांणे मार । भालोड भंग भंमार ॥९॥

१ आ. इको । इ. सको । २ आ.इ. मंराइ । ३ इ. संपेख । ४ आ.इ. चापडे ।
५ आ.इ. चडेऊ । ६ इ. अडेऊ । ७ इ. हुकल । ८ इ. किर । ९ आ.इ. हुई ।
१० आ.इ. ब्रह्मंड । ११ आ.इ. ली । १२ आ. उत्तरियाणि । इ. उत्तरियाणि । १३ इ.
बीज । १४ आ.इ. देवग । १५ आ. मिल मले । इ. फिल्लमिले । १६ आ. हीस ।
१७ आ. गडगडे । इ. गड गड । १८ आ. सीधणि । १९ आ.इ. बंदूक ।

रिण-ताळ खाळ रगत^१ । आराण हू^२ आव्रत्त^३ ।
जम जाळ जूट^४ काळ । करि-माळ भाळ कराळ ॥१०॥
खलकंत खोणी खाळ । पावस्स करि पर-नाळ ।
घाराळ धोम धडक्^५ । कळळति कोम कडक्^६ ॥११॥
निहसति जोध नत्रीठि^७ । रिण रूक वापरि^८ रीठ ।
वे निहस सेन निसंक । किरि राम^९ रामण^{१०} लक ॥१२॥

महाराजा गजसीध री विजय

कवित्त

महिकर दळ रक्खियी^१, कोट^२ मंडे^३ केवांणां ।
अवर^४ वूठी^५ अगनि^६, बूंद घण गोळा^७ बांणां ॥
बूंदेली वरसिघ^८, 'रतन' नह^९ आयी हाडी ।
'चांदी' सीसोदियो^{१०}, फिरे^{११} नह^{१२} फौजां^{१३} आडी ॥
'दाराव-खाने'^{१४} नायो मुदत, अरक अंत^{१५} आयी खरे^{१६} ।
दो^{१७} पहर^{१८} जुद्ध दखणाघ सुं^{१९} कीयी जुडे जोधपुरे^{२०} ॥१॥

दळा-कार दखणाघि^१, खपे खीटा पळ खुट्टा^२ ।
जादव राइ^३ सारखा, अणी दस आठ पलट्टा ॥
रूपे रूप चाडावि, पडे^४ 'आसौ' पिडि संगम ।
अखैराज चहुवाण, पडे^५ आगळी पराक्रम ॥
पांच सै खेत दखणी^६ पडे, रिण वकै दिन पध्वरे ।
गज थटां भांजि जीते 'गजण', महाजुध मंडोवरै ॥२॥

१ आ. हुई । इ. हुइ । २ आ. इ. आव्रत्त । ३ इ. जुटे । ४ आ. इ. घरेक ।
५ आ. टक । इ. करेक । ६ इ. नत्रीठे । ७ आ. वापिरि । ८ आ. इ. राम । ९ आ. इ.
रावण । १० आ. इ. रापीयी । ११ इ. कोटि । १२ आ. इ. भडे । १३ इ. अवरि ।
१४ आ. वूठां । इ. वूठी । १५ आ. आग । १६ आ. इ. गोलां । १७ इ. वनसिह ।
१८ इ. नहि । १९ आ. इ. सीसोदीयी । २० आ. इ. फिरे । २१ इ. नहि । २२ आ.
फौजा । इ. फौजां । २३ आ. इ. दारावखान । २४ इ. जंत । २५ आ. पडे, आ. पडी ।
२६ आ. दोइ । इ. दोय । २७ आ. इ. पोहर । २८ आ. इ. सुं । २९ आ. जोधपुर कीयी
जडे । ३० आ. दणाघि । ३१ आ. पुटा, इ. पूटा । ३२ इ. राय । ३३ आ. इ.
सारिषा । ३४ आ. इ. पडे । ३५ आ. इ. दणोयर ।

इहा

दळ भंजे^१ दिखणाधरा^२, की 'गजबंध'^३ हटक्क ।
 गा नरसिंघ संपेखी^४, भूतां^५ तण कटक्क ॥१॥
 दळ भंजे डेरा फुरळि, गमि दखणी दहवाट ।
 गज केसरी^६ घ्रांसाड्यो^७, दोइणां^८ वाळें दाट^९ ॥२॥
 जूमगे^{१०} जूए मुहे, हुए^{११} दखणि^{१२} जळा^{१३} हीण ।
 किरि वरखा रित^{१४} चालिया, घणहर वूठें लीण ॥३॥
 वांन वधारे^{१५} कमवजां, आधारे असमान ।
 'गजबंधी' नव साहसै, भागा बारह खान ॥४॥

चोपाई

'गजबंधी'^१ ज रहे^२ जसवील । दीना जैत दमांमां^३ ढोल ।
 दखण^४ फीजां^५ चहुं^६ पास । वदल^७ फटा^८ जाणि^९ अकास ॥१॥
 दखणी छंडि दिसा दखणांध । आया फिर सांसा उत्तरांध ।
 जोधपुरै^{१०} जीता संग्राम । तब चहुं कोसे किया^{११} मुकाम ॥२॥

'पुनः अवर री आक्रमण'

इहा

दखणियै^१ घेरी^२ कियो^३, कटके^४ कोइ^५ न थरग^६ ।
 अन घत^७ खड ईधण^८, दुलभ^९ चिहु दिस रोके मरग ॥१॥
 लूण^{१०} कपूर समान थिऊ, अन सोवन^{११} सम भाग ।
 तेल थयी मुरहेळ^{१२} सम हय सुहडां^{१३} थयु^{१४} आग ॥२॥

१ इ. भंजे । २ आ.इ. दपणाधरा । ३ आ.इ. सपेखीयी । ४ आ.इ. भुजां ।
 ५ इ. केहरि । ६ आ. घ्रांसाडीयो । ७ घुंसाडीयो । ८ इ. दोयणां । ९ आ.इ. दाट । १० आ.इ. जूमगे । ११ इ. हुई । १२ आ. दखणी । १३ आ.इ. जली । १४ आ.इ. रित । १५ आ. वधारे । १६ आ. गजबंधी । १७ आ.इ. रहे । १८ आ.इ. षट । १९ आ.इ. दमांमां । २० आ.इ. दुमांमां । २१ आ.इ. दखण । २२ आ.इ. फीज । २३ आ.इ. चहुं । २४ आ.इ. जोधपुरै । २५ आ.इ. कोसा । २६ आ.इ. दखणीये । २७ आ.इ. घेरी । २८ आ.इ. कियो । २९ आ.इ. कटक । ३० आ.इ. कोई । ३१ आ.इ. थठा । ३२ आ.इ. घृत । ३३ आ.इ. ईधण । ३४ आ.इ. दुलभ । ३५ आ.इ. लूण । ३६ आ.इ. सोवन । ३७ आ.इ. मुरहेल । ३८ आ.इ. सोहडां । ३९ आ.इ. थयी ।

बादसाही सेना में गजसींघ री हरावल मै होणी

दोली दिल्लीवे^१ दलां, ओली मंडे^२ ओट^३ ।
 जोधा^४ रिणमल्लां^५ कियो^६, भालां हंदी^७ कोट ॥३॥
 आतस बाजी गाडियां^८, आराबा अनमंघ ।
 गड्डे गोली^९ नालियां^{१०}, किरि लहरी र व^{११} सिंघ ॥४॥
 राठीडे^{१२} रिण सूत्रियो^{१३}, सू^{१४} दखणाघ दलांह ।
 जोगण-पुर^{१५} री^{१६} जूवटी, माथे जोधपुरांह ॥६॥
 तवियो^{१७} तुरकां हिंदुवां^{१८}, असपति^{१९} दल अणियांह^{२०} ।
 चाली ले चतुरंग दल, डेरे^{२१} दखणियांह^{२२} ॥६॥
 खांन वरावा^{२३} खडकियो^{२४}, ले मथे भर भार ।
 'गजण' कटक्कां हुई^{२५} मुहरि, कलि मध्यण^{२६} जोधार ॥७॥

कवित्त

चड खांन "दाराब"^{२७}, रहम दा दल निय^{२८} जांमल ।
 सुरसिंघ^{२९} कमधज, चडे^{३०} राजा नृप^{३१} जंगल ॥
 राउ^{३२} हाडी^{३३} "रतन", चडे^{३४} चंदी खूमाणिह ।
 राजा वरसिंघ दे, चडे^{३५} सेने^{३६} महिराणह^{३७} ॥
 महम्मद चडे^{३८} वहलोल खां, अरे बै पिठांण^{३९} अणी ।
 चालिया^{४०} चडे चतुरंग दल, मुहि दे मंडोवर^{४१} घणी ॥१॥
 घुरे भेर दम्मांम, नाद गरजे^{४२} नीसांणह ।
 गडडि^{४३} मेघ गयणांग^{४४}, जांग कूतह^{४५} कल्याणह^{४६} ॥

१ दोलीवे । २ आ.इ. मंडे । ३ आ. ओट । ४ आ. जोधा । ५ इ. रिणमलां ।
 ६ इ. कीयो । ७ आ. हंदी । ८ आ.इ. गाडियां । ९ इ. गोली । १० आ.इ. नालियां ।
 ११ लहरी र व । १२ आ.आ. राठीडे । १३ आ.इ. सूत्रियो । १४ आ.इ. सुं । १५ आ.
 जोगणीपूर । इ. जोगणीपूरी । १६ आ. री । १७ आ.इ. तवियो । १८ आ.इ. हींदुवां ।
 १९ इ. असिपते । २० आ.इ. अणियांह । २१ आ. डेरे । २२ आ.इ. दखणियांह ।
 २३ आ. वारावा । इ. वरावां । २४ आ.इ. खडकीयो । २५ इ. हुई । २६ इ. मथण ।
 २७ इ. वाराव । २८ आ. नीय । २९ आ. सुरसिंघ । ३० आ. चडे । ३१ आ.
 नृप । इ. निप । ३२ आ.इ. राव । ३३ आ. हाडी । ३४ आ.इ. चडे । ३५ आ. चडे ।
 ३६ आ.इ. सोने । ३७ आ. महिराणह । ३८ आ.इ. चडे । ३९ आ. पठाण ।
 इ. पठाण । ४० आ.इ. चालीयां । ४१ आ. मंडोवर । ४२ आ.इ. गरजे । ४३ आ.
 गडडी । इ. गडडि । ४४ आ. गयणां । ४५ आ.इ. कूतक । ४६ इ. कल्याणह ।

धज पताख फरहराट, लंकी^१ गज आलम ढल्लां ।
 घटा रूप गज फौज, दंति^२ किरि पंति बुगल्लां ॥
 पैमाळ गोम पक्खर गहण, खुरासाण^३ बैठो खिडै^४ ।
 दिखणाघ^५ सीस उतराघ^६ दळ, आयौ अल्लक ऊपडै ॥२॥

गाथा

रयणी भूखण^७ चंदौ, आकास भूखणी^८ भांणी ।
 भूखण भूतळ^९ इंदौ, भूखण^{१०} साह फौज "गजसिंधी" ॥१॥
 दुल्लह^{११} राउ^{१२} राठीड, दखण घणा^{१३} काम मैमती^{१४} ।
 कारण पांण ग्रहणी, सांम्है ले मुक्कियौ^{१५} बांण ॥३॥

जुध वरणण

छंद रंडकी (रेंणकी)

गरजंति धनख गुण बांण वरणण घण ।
 आग अकारण उडुवियं^{१६} ।
 गज थाटां गहण गणण गयणंगण ।
 सोक सणण भरपूर^{१७} थियं^{१८} ॥
 मंगळ भळ विमळ लगै रवि मंडळ ।
 तांस^{१९} हूकळ कळळ तुरै ।
 लळ वळ पुंज सुंड भळळ दांतूसळ ।
 धिख धारुजळ ढोल धुरै ॥१॥
 असमर भट भपट विकट थट आवट ।
 गो^{२०} गाहट थट गरट गहै^{२१} ॥
 ऊकट थिय^{२२} काट सुभट लख आरट ।
 खळखट रिणवट खडग वहै ॥

१ इ. लिक । २ इ. दंत । ३ आ. पुरासाण । ४ इ. पिरे । ५ आ. दषणाघ ।
 ६ इ. उत्तराघ । ७ इ. भुषण । ८ इ. भुषणी । ९ इ. भूतल । १० इ. भुषण ।
 ११ आ. दुलह । १२ इ. राव । १३ इ. घणां । १४ इ. मैमती ।
 १५ आ. इ. मुकीमौ । १६ आ. इ. उडवीयं । १७ आ. भरे-पूर । इ. सर-पूर । १८ आ. इ.
 थियं । १९ आ. इ. तामस । २० आ. इ. गो । २१ आ. इ. गहे । २२ आ. इ. थियौ ।

घडहडि^१ धक धोम वलिक^२ खग घडि घडि ।

रावत वडि वडि रोस चडै ।

गडि गडि नीसांण गयण^३ किरि^४ गडि-अड^५ ।

खांडा खडि खडि खाट खडै^६ ॥२॥

गयंदां ढळ ऊथळ - पथळ गयंडोथळ^७ ।

मूळ नहीं सळ दुभळ मुडै ।

रत्तळ भळ खखळ बखळ खळळ रिणरीधळ ।

जोध रिणमल^८ अपल जुडै ॥

कमधज भुज निमज सकज सुसुपह कज ।

राखै रज रिणतूर^९ रुडै ॥

दम्मांमां गरज वहै व्रज दोमज ।

गज पाताडक^{१०} भुरज गुडै ॥३॥

तूटै^{११} भड निवड त्रिजड भड तिमछै ।

वाढ^{१२} अंतेवड^{१३} विहंड वपे^{१४} ।

छूटंती^{१५} रुहिर नडड^{१६} दड वड छिलि ।

घारां धजवड सुहड^{१७} धपे^{१८} ।

खळ हळ रत खाल भबकि खग भळ-हळ ।

कंठल वळवळ वीज कळां ।

कळ अकळ^{१९} हुए^{२०} गळोव(ळ) कंदळ ।

आफळ घाया उभै दळां ॥४॥

दखणी सेना री पराजय

कवित्त

सोर धीर.....सम्मूह^{२१}, बांण ऊच्छळै वळंता ।

वहै आग वरजाग, वोम किरि^{२२} वीजळ लंता ॥

१ इ. घडि घडि । २ इ. वालिक । ३ आ. गयण । ४ आ. किरि । ५ आ. इ. गडोअड । ६ आ. इ. षडे । ७ आ. इ. गडोथल । ८ इ. रिणरण । ९ इ. तुर । १० इ. पाताडक । ११ आ. इ. तूटै । १२ आ. वाट । १३ इ. अंतेवड । १४ आ. इ. वपे । १५ आ. इ. छूटंति । १६ आ. इ. दडड । १७ आ. इ. सोहड । १८ आ. धपे । १९ आ. इ. अकल । २० आ. इ. हुए । २१ आ. सम्भूह । २२ इ. कोरि ।

हुए मीर संधार, सोक सर पूर विह्वले ।
प्रले काळ आनत^१, फौज फौजां मुहि जुटे^२ ॥

गजसिंघ भडां किस्माड थिउ^३, कीए^४ आगलि कमधजे ।
डेरा पिमूकि^५ गा^६ दखणी, किरि पनंग कांचू^७ तजे ॥१॥

दल उत्तर दिखणी, उभे आहुडे^८ जियारां^९ ।
अगन वाण घमसाण, घाण^{१०} ऊतर तियारां ॥
गोअरधन भी^{११} जसू, पडे राउ^{१२} रयण सहवर^{१३} ।
बूंदी^{१४} पह मछरीक, खडग वाहे खडगधर ॥
सातसे पडे पल्ला^{१५} सुहड^{१६}, उल्लाई भड एतडा ।
कमधज्ज जुध्ध महकर^{१७} कियी^{१८}, वे पतिसाहां प्रगडा^{१९} ॥२॥

करि संग्राम सु^{२०} देखण, तुरक हिंदू^{२१} बाहुडिया^{२२} ।
है पक्खर परहरे, गज्ज किरि गिरिवर^{२३} गुडिया^{२४} ॥
असि वागां ऊपडी, फौज फारक्कां घाई ।
दल दखणी ऊलटा, ऊव^{२५} आसाढ क आई ॥
अगनिमै वाण छूटा असख, वली वीढ चिहुवै^{२६} वली^{२७} ।
पछिवाण^{२८} हुवी^{२९} पूठी^{३०} रुखी, "गजण" ताम^{३१} दिल्ली दळां ॥३॥

नीमडियी^{३२} भारत्य, कथ राखी कमधज्जे ।
किया^{३३} जोध खलहांण, भार पडती ग्रहि भुज्जे ।
पच्छवाण^{३४} पग्मार^{३५}, हुआ^{३६} राजा मंडोवर^{३७} ।
रुडे^{३८} जेत रिण तूर(फ), वडौ जीतो जुडि जागर ।

१ आ. आनत । इ. आनत । २ इ. जुटे । ३ इ. थिउ । ४ इ. कीयो । ५ आ. पैमकि । इ. पैमुक । ६ इ. गा । ७ इ. कांचू । ८ आ. इ. आहुडे । ९ इ. जियारां । १० आ. घाण । ११ आ. इ. भी । १२ आ. राऊ । १३ आ. इ. सहोवर । १४ आ. बूंदी । १५ आ. इ. पल्ला । १६ आ. इ. सोहड । १७ इ. महिकर । १८ आ. इ. कीयो । १९ प्रगडां । २० आ. सुं । २१ आ. इ. हिंदु । २२ आ. बाहुडिया । इ. बाहुडिया । २३ आ. इ. गिरिवर । २४ आ. इ. गुडिया । २५ आ. इ. उव । २६ आ. चिहुवै । २७ आ. वली । २८ आ. इ. पछिवाण । २९ आ. हुआ । इ. हुआ । ३० आ. पूठी । इ. पुठि । ३१ आ. ताम । ३२ आ. इ. नीमडियी । ३३ आ. इ. किया । ३४ आ. इ. पछवाण । ३५ इ. पगां । ३६ आ. इ. हुआ । ३७ इ. मंडोवर । ३८ इ. जुड ।

दळकार हठे दखणाध रा, दिल्ली फीजां निरबही^१ ।
किरि जांण अपूठा^२ बाहुडे^३, जान^४ वीलाए मांडही ॥४॥

है पलाण न ऊतरै, रहै दळ चाके^५ चडिया^६ ।
मिळै कोट मैवट्ट, घरा घट घाए^७ घडिया^८ ।
गयण गीध ढक्कियो^९, खिवे^{१०} असमर ऊबाणा^{११} ।
वहै बांण विपरीत, सोक^{१२} जांणै सीचाणा^{१३} ।

जोधार अहोनिस् जालवे^{१४}, जीण-सांल डीले जडी ।
तिरा वार हुवौ^{१५} हिंदू^{१६} तुरक, कोई गजसिध समवडी ॥५॥

उतराधी दक्खणी, कटक^{१७} वै वै आरुढा^{१८} ।
कापड चोपड खपै, अन्न खड ईधण खूटा ॥
प्रल काल पेखियो^{१९}, वाडि करकां^{२०} मंडाणी^{२१} ।
जोधपुरां जळ चडे, वियां^{२२} ऊतरियो^{२३} पांणी ॥

देवगिरि^{२४} अन्नै जोगणि पुरां, सबळी भारथ सूत्रियो^{२५} ।
महिराण महिक्कर^{२६} मत्थतां^{२७}, च्यार मास विग्रह कियो^{२८} ॥६॥

महिकर घेरी^{२९} सबळ, कियो^{३०} दखणाधि कटक्कां ।
गढ़ दुरंग घेरियो^{३१}, प्रजा भागी परिचक्कां^{३२} ॥
नको^{३३} प्राण विन्नाण, नेस फीका^{३४} खुरसाणी ।
गयणंगण^{३५} डोलियो^{३६}, सीम चंपी सुरतांणी ॥

राठीड राउ रोहै रिणह, खडग दाढ खळ खंडरै^{३७} ।
वाराह सिध वाळा - पुरह, आयौ दळ आगळ करै^{३८} ॥७॥

१ आ.इ. निरबही । २ इ. अपूठा । ३ आ.इ. बाहुडे । ४ आ.इ. जान । ५ आ. चाके । ६ आ.इ. चडिया । ७ आ. घाए । ८ आ.इ. घडिया । ९ आ. ढकीयो । १० आ.इ. खिवै । ११ आ.इ. उबाणा । १२ आ.इ. सीक । १३ इ. सीचाणा । १४ आ. जालवे । १५ आ. हुवौ । १६ आ.इ. हिंदू । १७ इ. कटक । १८ इ. आरुढा । १९ आ.इ. पेखियो । २० आ. करकां । २१ इ. मंडाणी । २२ आ.इ. वियां । २३ आ.इ. उतरियो । २४ इ. देवगिरि । २५ आ.इ. सूत्रियो । २६ आ.इ. महिकर । २७ आ. मत्थतां । २८ आ.इ. कीयो । २९ इ. घेर । ३० आ.इ. कीयो । ३१ आ.इ. घेरियो । ३२ आ.इ. परिचकां । ३३ आ.इ. नका । ३४ आ.इ. सीफां । ३५ आ.इ. गयणांगण । ३६ आ.इ. डोलियो । ३७ अ.आ. षडरे । ३८ अ. करै ।

चडे बेल वरियांम^१, सुजळ ते आगळ चंचळ ।
 गरजि नाद गंभीर, रोडि रिणतूर^२ त्रंवागळ^३ ॥
 असंख फीण ओपत्ति^४, बहुत चीधां बैरवकां ।
 मारवाड मरजाद, भडां अनडां मारवकां ॥
 अणतांघ^५ कूंत^६ असमर भमर, कच्छ मच्छ कूरम सबळ ।
 “गजबंध” मंडांगी मेरगिर, सपतसिघ^७ दखणाध दळ ॥८॥
 नित्त जुध्ध मंडिजै, नित्त सिलहां पहिरीजै^८ ।
 नित्त तंग तांणिजै, नित्त कैकाण^९ कसीजै ॥
 नित्त खडग खडखडै, नित्त पळ-चरां धवीजै^{१०} ।
 नित्त जोध निहसंति, नित्त गज दळ गाहीजै^{११} ॥
 नित्त हुवै प्रवाडा नव नवा, नित्त राखीजै अचचडां ।
 राठीड रिमां जड धोइवा, घारां धोवै धजवडां ॥९॥

दखणी सेना रो केर आक्रमण

छंद मंगाउळी

दखणी सेन आया अबाहं ।
 पक्खरे तुरी पहिरै^{१२} सनाहं ।
 फावि चतुरंग फीजां अचाळं ।
 छपन कोडी किरै मेघमाळं ॥१॥

मछरियी^{१३} “गजपती” मेर मांभी^१ ।
 पल्लिवा प्रज्ज राठीड प्रांभी ।

जुध धरणण

महाराजा गजसौंघ रो हरावळ में होणो

सुहड^{१४} साखेत^{१५} सगळी सओधा ।
 हुआ हरवल्ल रिणमल्ल जोधा ॥२॥

१ आ.इ. वरीमांम । २ आ.इ. रिणतूर । ३ आ. त्रंविगल । इ. त्रंवागलि । ४ आ. ओपत्ति । ५ आ. अणताय । ६ आ.इ. कूंत । ७ आ.इ. सपत-सिघ । ८ आ.इ. पहिरीजे । ९ आ.इ. कैकाण । १० आ.इ. धवीजे । ११ आ.इ. गाहिजे । १२ आ.इ. पहरै । १३ आ.इ. मछरीयी । १४ इ. मांभी । १५ आ. सुहड । १६ आ.इ. साखेत ।

आमही सामंहा छूटि बाणं ।
घड घडै^१ घोम घुबि^२ आसमांणं ।
गड गडै नाळि छूटंति गोळा ।
जाणक उडंति मेहे किलोळा ॥३॥

मारु ए^३ दखणि ए^४ जुद्ध मातौ ।
त्रिविध^५ घड ऊछळ लोह तातौ ।
छूटि^६ कोवंड^७ गुण बाण^८ गाजे^९ ।
फारकां मारिकां हाक वाजे ॥४॥

काळ भैरव रुद्र भद्र काळी ।
हरखि हसि दीध नारद ताळी ।
दखण सूं दियो^{१०} राठौड बत्थां^{११} ।
रवी^{१२} रह ताण^{१३} आकास^{१४} रत्थां^{१५} ॥५॥

रुक^{१६} आवाहिया^{१७} देवराए ।
गाजि ब्रह्मंड^{१८} घाए निहाए ॥
खीजिया^{१९} जोध वाहै खडगं ।
विसरि किरि जीह वासिग^{२०} नगं^{२१} ॥६॥

वहै^{२२} विपरीत वेळा करारी ।
कूत किरमाळ नेजा कटारी ॥
धजवडां घार रुळ^{२३} रुंड मुंड ।
विहंड फड वाढ़ खंडह विहंड ॥७॥

महाराजा गजसींघ री विजय

राउ राठौड रिणताळ जीतौ ।
विडे^{२४} पतिसाह प्रिथमी वदीतौ ॥

१ इ. घडहडे । २ इ. घुबि । ३ आ. ऐ । ४ इ. ऐ । ५ आ. इ. त्रिविधि ।
६ आ. इ. छूटि । ७ अ. कोमंड । ८ आ. बाण । ९ इ. गजे । १० आ. इ. दीयो ।
११ इ. बत्थां । १२ आ. इ. रवि । १३ इ. रहै । १४ आ. आकारथं । १५ आ. रथं ।
१६ अ. रुक । १७ आ. इ. आवाहीया । १८ आ. ब्रह्मंड । इ. बृहमंड । १९ आ.
खीजीया । इ. खिजीया । २० आ. वासिग । इ. वासग । २१ आ. इ. नगं । २२ आ.
वहे । २३ अ. रुळि । २४ इ. विडे ।

लडण "गजसाह" असमान लगे ।
अरध लख देखणी ताम भगे ॥८॥

कवित्त

दखिण खेत कुरुखेत^३, महा जुध^३ भारथ मत्तै ।
भारि ओडि भुवडंड^४, बाथ भरतै निहसत्तै ॥
इयारै खोहणी, खान वारैह विभाडै ।
अरि उलाळ रिणताळ, गज्ज गयणाग भमाडै^५ ॥

कमधज्ज गरजि कंठीर जिम, महाकोप^६ चडियी^७ मछरि^८ ।
गजसिध तेग वाही गजां, बाला-पूरि बलाल वरि ॥९॥

दखणवै दळ असंख, चिहू^९ पासै^{१०} चतुरंगह ।
गडडि नाळि गाडियां^{११}, बोल पडसंद^{१२} निहंगह ॥
ढोल दमांमा^{१३} धुवै^{१४}, हुवै^{१५} है-थाट हमल्लै ।
धरणि^{१६} धुज^{१७} धम हमे, सपत पंयाळ^{१८} दहल्लै ॥

खुरसाण लंक पती^{१९} खहण, खेध वेध वूहा खडग ।
पतिसाह दळां पाघर हुआ^{२०}, राड रोह मुर मास लग ॥१०॥

गुण धनख धीकार, भेर नीसांण निनदह^{२१} ।
ईळा पुडि ऊपडे^{२२}, विकट वंकी सरहदह ॥
धोम भाळ^{२३} घड हडै^{२४}, प्रळै पाक दरस्सै ।
अगनि बांण पडि वूंद^{२५}, जांण ब्रहमंड^{२६} वरस्सै ॥

चौफेर फिरै^{२७} चतुरंग दळ, घण सरूप तिसरी^{२८} घडां ।
दळ थंभ दखण आडी डहै, भड किमाड उत्तर भडां ॥११॥

१ आ.इ. ताम । २ इ. कुरुषेत्र । ३ आ.इ. माहाजुध । ४ इ. भुजडंड । ५ आ.इ. भमाडे । ६ आ.इ. माहा कोप । ७ आ.इ. चडियी । ८ आ.इ. मछरि । ९ आ.इ. चिहू । १० आ.इ. पासै । ११ आ.इ. गाडीयां । १२ आ.इ. पडसद । १३ आ. दमांम । १४ आ. धुव । इ. धुवे । १५ आ.इ. हुवे । १६ इ. धरिण । १७ आ. धुज । इ. धुजि । १८ आ. पयाळ । इ. पायाळ । १९ आ. लंकपती । २० आ.इ. हुआ । २१ आ.इ. निनदह । २२ आ. उपाडे । इ. उपडे । २३ आ. धोमभाळ । २४ आ.इ. घदहडे । २५ आ.इ. वूंद । २६ आ.इ. ब्रह्मंड । २७ आ.इ. फिरै । २८ आ. तिसरी । इ. तिसरी ।

दुजड दांत आलाय, आग दवंगे उडंते ।
 पारध्वी पाडती, तुंड उप्पाडे कूते^१ ।
 हेडवती है - थाट, किये^२ मज्जीठे कम्मल ।
 उर आगळ घातिये^३, डार सुरतांग तरौ^४ दळ ।
 पूरणा नदी पाणी^५ पिये^६, रोस चईनी^७ रठुवड^८ ।
 वाराह सिंघ आयी विढे, साज नाद अभंग भंड ॥४॥

ब्रह्म

सांड त्रिसिंघ अखाड - सिंघ, पौरिस^९ जोध प्रचंड ।
 तोडर बांधे आडियो^{१०}, "गजबंधी" बळि-वंड^{११} ॥१॥
 पाधारे ब्राह्मन-पुर^{१२}, साथ स-जूक पास ।
 राजा चमर ठुलावियो^{१३}, पित हृदै^{१४} आमास^{१५} ॥२॥

विजय प्राप्त कर महाराज गजसिंघ री बुरहानपुर में आगमन
 कवित्त

ब्राह्मन-पुर^{१६} "गजपती"^{१७}, आवि बैठो आमासै^{१८} ।
 खट ठूण आदीत^{१९}, तेज आणणि आभासै ॥
 धमळ ग्रेह वर तरण, धमळ सिरि^{२०} मंगळ गाए ।
 वेद मंत्र अभिषेक, सयण^{२१} आणंद ज थाए ॥
 जेकारविद कोळाहळह, कमधज्जां ग्रह^{२२} जस कुसळ ।
 चाहंत^{२३} प्रजा ओटै चडी, च्यार कोस चतुरंग दळ ॥१॥

फेर बुराहान पर घेरी

के हवसी कन्नडा^{२४}, केइ^{२५} पाईक फरीधर ।
 के राजा के राव, केई^{२६} रावत बहादर ॥

१ आ. कूत । २ आ.इ. कीयो । ३ आ.इ. घातीयो । ४ आ.इ. तरौ । ५ आ.इ. पाणी । ६ आ.इ. पीयै । ७ आ. चईती । ८ इ. राठवड । ९ आ. पोसि । इ. पोसी । १० आ.इ. आडियो । ११ आ.इ. बिलवंड । १२ आ. ब्राह्मन पुर । इ. ब्राह्मन पुर । १३ आ.आ. ठुलावियो । १४ आ. हृदै । १५ इ. आमास । १६ आ. ब्राह्मन पुर । इ. ब्राह्मन पुर । १७ आ. गजपति । इ. गजपत । १८ आ. आमासे । १९ इ. आवधीत । २० इ. सिर । २१ इ. सयण । २२ अ. ग्रह । २३ आ.आ. चाहत । २४ इ. कन्नडा । २५ इ. केई । २६ इ. केइ ।

गिणतां लाभै ग्यांन, न को^१ घोडां असवारां ।
 पार न को पायदळां, खिडे खोहण खंधारां^२ ॥
 सुरतांण खांन मीयां^३ मिलक, कुण जांणै भड केतडे ।
 दुरवेस फौज दखणाधरी, असणि जांणि करसण पडै^४ ॥२॥

सवज लाळ सप्पेत^५, वणै^६ पीतंबर वांना^७ ।
 तुरै^८ वंध गजगाह, चडौ^९ असवार दिवांना^{१०} ॥
 सेना^{११} चतुरंग मै, छौळ^{१२} दरियाव^{१३} क छिल्लै ।
 फौज रूप फावन्ति^{१४}, वसंत वणराइक^{१५} फुल्लै^{१६} ॥
 गै-थाट गुडै^{१७} है, पक्खरे कससे^{१८} कोरण तेवडा ।
 उत्तराध दळां सिरि^{१९} ऊपडै^{२०}, घटा टोप दक्खण^{२१} घडा ॥३॥

ब्राह्मपुर^{२२} घेरियो^{२३}, कटक दखणाधी आए ।
 गोधाम^{२४} कंदल हुए^{२५}, दुंद दमंगळ उट्टाए^{२६} ॥
 फिरै^{२७} भूळ नेजाळ, हमस है पाए बाजी ।
 हम्मीरां हिंदुवां^{२८}, रही राठीडां बाजी ॥
 दिसि निहंग वूंग^{२९} उड्डै दवंग, अगन^{३०} वांण^{३१} उड्डै बहत^{३२} ।
 आवंत मलैतर उड्डिया^{३३}, अहिक पंख मिण संजुगत ॥४॥

खांन खांना री महाराजा गजसींध नू बिरुदाणो

सोवै साहिव सरद^{३४}, खांन खांना दळ मांही ।
 “गजवंधी” पडगरै^{३५}, वडी कमधज्ज वडां ही ॥
 तूं राजा रिणखंभ, धीर दळ थंभ धराधर ।
 नव कोटी^{३६} सै धणी, तेरै साखां^{३७} उज्जागर ॥

१ आ.इ. न को । २ इ. पंधारा । ३ इ. मियां । ४ आ.इ. पडे । ५ आ.इ. सपेत । ६ आ.इ. वणै । ७ आ. वांनां । ८ आ.इ. तुरे । ९ इ. चडे । १० आ. दीवांना । इ. दिवानां । ११ इ. सैन । १२ आ. छोल । १३ आ.इ. दरीयाव । १४ इ. फावती । १५ आ.इ. वणराई । १६ आ.इ. फुल्लै । १७ आ. गुडि । १८ इ. कसठे । १९ इ. सिर । २० आ. उपडै । २१ इ. दक्खण । २२ आ. ब्राह्मन पुर । इ. ब्राह्मन पुरी । २३ आ. घेरियो । इ. घेरियो । २४ आ.इ. गोधम । २५ आ.इ. हुए । २६ आ.इ. उठाए । २७ आ.इ. फिरै । २८ इ. हींदुवां । २९ आ. वूंग । इ. वूंग । ३० इ. अनंगन । ३१ आ. वाण । ३२ इ. बहत । ३३ आ.इ. उड्डिया । ३४ आ.आ. सरव । ३५ आ.इ. पडगरै । ३६ इ. नव कोटा । ३७ आ. साख ।

आदीत अमूंभी^१ छोक^२ ज्यूं^३, जाणोजै जोधह पुरा^४ ।
भरभार आज थारै भुजै^५, सह^६ काज सुरतांणरा ॥५॥

महाराजा गजसींघ री जोस में आणो

“गजबंधी” ऊठियौ, तेग भूडंड उभारै ।
किरि पाखरणी^७ सिलह, सुहड^८ सोह^९ बापुकारे^{१०} ;
“जै” तुरंग^{११} आरुह^{१२}, हुए^{१३} कमधज्ज महाभड ।
पडे चोट नीसांण, पडे पडसद्दा अन्नड ।
सम्भूह चडे सुरतांणरा, कटक बंध कोअण सघण ।
जांणियौ^{१४} ताम^{१५} तापी नदी, दे अण-मान^{१६} आयौ महण ॥६॥

सेना री वरणण

छंद डुडिला (डुमिला)

दम्मांम^{१७} डहडुह तूर^{१८} त्रहतह गोळ^{१९} गहम्मह गैगुडियं^{२०} ।
चल्ले चतुरंगह सेन असंखह आरिख अब्बह ऊपडियं^{२१} ।
तपती^{२२} नदि^{२३} ऊतरि^{२४} आया^{२५} पाधरि लागै^{२६} “अंबर” लख्ख दळ ।
घण भूभै घुस्सर^{२७} दक्खण ऊपर वोळ मंडोवर बांह^{२८} बळ ॥१॥
मलपे घड मैंगळ^{२९} सूंड लळवळ हालि हळोहळ जूह हिलै ।
सुरतांण तणा दळ साहण सब्बळ छौळ हीळोहळ^{३०} जाण छिलै ।
फीजां गजडंबर लीण(I) लसक्कर दक्खण उत्तर आहूडियं^{३१} ।
वहै बाण^{३२} विसन्नर^{३३} धिक्खियौ^{३४} धोमर ताळ भयंकर ता(व)डियं^{३५} ॥२॥

जुध वरणण

वह छूटै कैबर सोक^{३६} नलीसर सींघणि^{३७} संघर साचवियं^{३८} ।
घुबि जाण^{३९} धराहर सालुळि सेहर मेघ महाभर माचवियं^{४०} ।

१ आ. अमूंभी । २ आ. छोक । ३ आ.इ. ज्यूं । ४ आ. जोधपुरा । इ. जोधपुर
रा । ५ आ.इ. भुजे । ६ आ.इ. सह । ७ इ. पाधर । ८ आ. सोहड । इ. सौहड ।
९ अ.आ. सौह । १० अ.आ. पुकारे । ११ आ.इ. तुरंग । १२ आ. आरुह । १३ इ.
हुए । १४ आ.इ. जांणियौ । १५ आ. ताम । १६ आ. अणमान । १७ आ.इ. दमाम ।
१८ आ.इ. तूर । १९ इ. गो । २० आ.इ. गुडियं । २१ आ. उपडीयं । इ. ऊपडीयं ।
२२ आ.इ. तपति । २३ इ. नदी । २४ इ. उत्तरिअ । २५ इ. आध । २६ आ.इ.
लागे । २७ आ. घुस्सर । इ. घूसर । २८ इ. बाह । २९ आ.इ. मैंगल । ३० अ.आ.
हालोहळ । ३१ आ.इ. आहूडियं । ३२ इ. बाण । ३३ आ. विसन्नर । इ. विसन्नर ।
३४ आ.इ. धिक्खियौ । ३५ आ. तूडीयं । इ. त्राडीयं । ३६ इ. सोक । ३७ आ. सींघणि ।
इ. सीघणि । ३८ आ.इ. साचवीयं । ३९ आ. जाण । ४० आ.इ. माचवीयं ।

औईड^१ अथव्वण भाद्रव सावण कस्सस कोरण कंठलियं^२ ।
विपरीत वरस्सण कट्टक कोअण सेन महाघण सम्मलियं^३ ॥३॥

गैणागि गडी-अड ढोल^४ निघ्रस्सड^५ पावस त्रींगड^६ छंट पडे ।
रोहराल नदी नड दांमणि^७ दुज्जड^८ घम्म^९ बिनै घड लूव लडे^{१०} ।
खग कूते^{११} खिव्वणि चम्मकि दांमणि^{१२} सैन कळाइणि^{१३} सुभटयं^{१४} ।
हुइ हाक हणे-हणि^{१५} मेघ महाघणि उत्तर दक्खण^{१६} आरटयं ॥४॥

रत खाल रळ - तळ पालर प्रग्घळ^{१७} होहूं हूकळ थट्ट हुवै^{१८} ।
वळ-कंते विजूल^{१९} वोजक वट्टल ढोल^{२०} त्रिमंगल^{२१} वोम धुवै^{२२} ।
मुडिया^{२३} पिड^{२४} मंगल^{२५} अस्सि उच्छळ^{२६} रावत विम्मल लडि पडियं^{२७} ।
दुजडा दुनै^{२८} दळ विट्टे सब्बल कंदल^{२९} पेखै रिब खडियं^{३०} ॥५॥

असमानक अजभर धार असम्मर तूंट तरोवर तुंग नरं ।
डह्लाए दहर हीसै हेमर फूटि^{३१} सरोवर पाल फरं ।
दळ भागा विदुर^{३२} नीघक निडुर चूहड मच्छर घन्न हियं^{३३} ।
वूहां किरि वज्जर चौरंगि चक्कर गज्ज गिरव्वर सै गुडियं^{३४} ॥६॥

महाराजा गजसीध री विजय

कवित्त

गुडे गज्ज पाहाड^{३५}, टूंक^{३६} ढहिया^{३७} कूभाथळ ।
वज्जपात करमाल, गुडे तूटे कंबू - सळ ॥
गयण ढोल गडगडे, सीह खळ आफ(ळ)^{३८} भज्जै ।
सकति पत्र^{३९} सरभरै, सोणा नदियां^{४०} नड वज्जै ।

१ आ. औहड । २ आ. औइड । ३ आ. इ. कंठलीयं । ४ आ. ढाल ।
आ. टोल । ५ आ. मिघ्रसड । ६ आ. निघ्रसड । ७ आ. तींगड । ८ आ. दांमणि ।
९ आ. दुजड । १० आ. दुजडि । ११ आ. घमं । १२ आ. घूमं । १३ आ. लडे । १४ आ. लूडे ।
१५ आ. कूते । १६ आ. दांमणि । १७ आ. कळाइणि । १८ आ. सुभटयं ।
१९ आ. हणी-हणि । २० आ. दषण । २१ आ. दिषण । २२ आ. प्रंगल । २३ आ. इ. हुवै ।
२४ आ. इ. वीजूलल । २५ आ. ढाल । २६ आ. त्रिमंगल । २७ आ. इ. धुवै ।
२८ आ. इ. मुडियां । २९ आ. इ. पिड । ३० आ. मंग । ३१ आ. मंगल । ३२ आ. उच्छळ ।
३३ आ. इ. पडियं । ३४ आ. इ. दुनै । ३५ आ. कंदल । ३६ आ. इ. पडियं । ३७ आ. इ. फूटि ।
३८ आ. इ. विदुर । ३९ आ. इ. घनहीयं । ४० आ. इ. गुडियां । ४१ आ. इ. पहाडी ।
४२ आ. इ. टूक । ४३ आ. इ. ढहिया । ४४ आ. इ. आभल । ४५ आ. यंत्र । ४६ आ. इ. नदियां ।

घड मोर नवी परि नाचियो^१, दक्खण फौजां आइयां ।
“गजबंध” मेह विपरीत गति^२, वूठी सिरि^३ बैराइयां^४ ॥१॥

पडे^५ जोध जरदैत, पडे^६ बरहास^७ सपक्खर ।
पडे^८ बाण एक लक्ख, सीस “जिहंगीर” लसक्कर ॥

वीरगति प्राप्त प्रमुख वीरां री नामावळी

पडे^९ रीठ करमरां, पडे^{१०} खगां पाहारां^{१०} ।
पडे^{११} मार दळ भार, पडे^{१२} फळ खंड अपारां ॥
संग्राम^{१३} पडे ग्रीधण समळ, रगत पूज^{१४} रेणा^{१५} चडे^{१६} ।
“जसवंत” समोभ्रम खाटि जस, प्रिथीराज^{१७} भाटी पडे^{१८} ॥२॥

कियो^{१९} जुद्ध भारत्य, धमस धारां धमरोळ^{२०} ।
धोमा रवि ढंकीयो^{२१}, गयण पड बाणै-गोळ^{२२} ।
भइ बहतरी ऊमरां^{२३}, खान सत्तरि^{२४} थहरियां^{२५} ।
तिण वेळा तुडि-ताण, विढण मारू बळ भरियां^{२६} ।
काळ प्रळ पेखि^{२७} पंतीस^{२८} कुळ, लोहि लडतां लह बहे^{२९} ।
पांच रूप^{३०} हुवी^{३१} नव कोट पह, राउ अवर ओळ रहै^{३२} ॥३॥

बाबसाह नू खान खाना रौ जुधरी विजय रौ पत्र । महाराजा गजसीध ने
दळथंभण री पदवी मिळणी

साह दिस्स मेलिया^{३३}, खान खानां लिख कागळ ।
ऐ अजीत रटुवड, किता^{३४} जे जीता कंदळ ॥
सबळा सत्र संधरे, छळे सबळे पडि-गिरियां^{३५} ।
जेथ भिडे^{३६} दळि पडे, तेथ आडां भुज धरियां^{३७} ॥

१ अ.आ. नचीया । २ आ.इ. गत । ३ इ. सि । ४ इ. बैराइयां । ५ अ. पडे ।
६ अ. पडे । ७ आ. परहास । ८ अ. पडे । ९ अ. पडे । १० आ.इ. पाहारां ।
११ अ. पडे । १२ अ.आ. पडे । १३ आ.इ. संग्राम । १४ आ. पूजत । १५ अ.आ.
रेणा । १६ अ. चडे । १७ अ. प्रीथीराज । १८ अ. पडे । १९ आ.इ. कियो ।
२० आ.इ. धमरोले । २१ आ.इ. ढंकीयो । २२ आ.इ. बाणै-गोले । २३ आ. उमरा ।
२४ आ. सतरि । इ. संतरि । २५ आ.इ. थरहरीयां । २६ आ.इ. भरियां । २७ इ.
पेखियै । २८ आ.इ. पंतीस । २९ अ. आ. बहे । ३० अ.आ. रूप । ३१ आ.इ. हुवी ।
३२ आ. रहै । ३३ आ.इ. मेलिया । ३४ आ.इ. किताइ । ३५ आ.इ. पडिगिरियां ।
३६ आ. भिडे । इ. भीड । ३७ आ.इ. धरीयां ।

कळि मूळ निभैमण, कळिमथण, ऊभी^१ सिरि "अंवर" डहै ।
पतिसाह परीछै ए प्रसिध, दळथभण राजा कहै ॥४॥

दखण में फेर दरोल

साहजादा खुरम ने सेनापति वणाय भेजणी

तांम साह सनमुख, खुरम ऊभी^२ सुरिताणह ।
दे वीडो^३ सिर दखिण, हुकम कीयी फुरमाणह ॥
तू^४ सरहदां^५ लियै^६, तुंहिज^७ सरहदां लाइक ।
तू^८ सरहदां घणी, तुंहिज^९ सरहदां नाइक^{१०} ॥
खूंदालम जपै तू^{११} खुरम, सुकरि^{१२} खग संभाहियी^{१३} ।
भर भार भळावै भोम छळि, पिता पूत पडिगाहियी^{१४} ॥५॥

बादसाह सूं खुरम री सेर खां री मांग करणी

तव वोलियी^{१५} खुरम्म, अरज हजरत्त सुणीजै ।
एक कौल इक^{१६} जाव^{१७}, कहूं^{१८} जो^{१९} कहियी^{२०} कीजै ॥
हम खिजमत कवूल, हम्म फरजन्न तुमारै ।
हम^{२१} सिरि^{२२} ऊपरिरजा, हुकम हुम कियो^{२३} आरें ॥
साहिजादी जपै साह सूं, मन मांही^{२४} द्रोहै मतै ।
सुरताण "सेर" अप्पी मुक्कै, कहूं मार दक्खण फतै ॥६॥

गाथा

काळे कोक न छळियं^{२५}, अहि मानव देव^{२६} दाणवी ।
दिलेस बुध नासं, आपे खुरमि "सेर" सुरताणं ॥१॥
अहि गरळ काळ कूटं, हळा-हळ^{२७} रीपियं वियं^{२८} ।
अंकुर नैव पतं फळ, लगसी कोइ^{२९} निरवाणं ॥२॥

१ आ. उभी । इ. उभी । २ आ. इ. उभी । ३ अ. वीडो । इ. वीडो । ४ आ. इ. तु । ५ आ. सरहदां । ६ आ. इ. लीयै । ७ आ. इ. तुहीज । ८ आ. इ. तु । ९ आ. इ. तुदज । १० इ. नाइक । ११ आ. इ. तु । १२ आ. भुकरे । इ. तुकरि । १३ आ. इ. संभाहीवी । १४ इ. पडिगाहीवी । १५ आ. इ. वोलियी । १६ आ. इ. एक । १७ आ. जाव । १८ आ. इ. कहूं । १९ आ. इ. जो । २० आ. इ. कहियी । २१ आ. हम । २२ आ. इ. सिरि । २३ आ. इ. कियो । २४ आ. माही । इ. माहै । २५ इ. छलीयं । २६ आ. देव । २७ आ. इ. हाहाहर्त्त । २८ आ. इ. वीयं । २९ आ. इ. कोई । ३० आ. इ. निरवाण ।

सेना रौ धरण

छंद विश्रवरी

खूंदालम^१ खुरम पडेगरि । दीनी बीडी दक्खण ऊपरि^२ ।
 लाख करोड माल खज्जीना । है गै मुलक मया करि दीना ॥१॥
 साथे हिंदू^३ मुस्सलमांण^४ । हिंदुस्थान^५ खिडे खुरसांण^६ ।
 मुळ गळ^७ ऊज्बकि खुरसांणी । वोले जेम विहंगम बांणी ॥२॥
 दुइ दुइ तरकुस^८ पासि^९ जुवांणां^{१०} । दुइ दुइ^{११} टंक अठार कबांणां^{१२} ।
 चडिया^{१३} घोडे^{१४} भीर बहादर । पावां लग रुळदी^{१५} पाखर ॥३॥
 हूवी^{१६} टांमक घाव नगारै^{१७} । कसमोराह खडे इल-कारै^{१८} ।
 दक्खण ऊपरि^{१९} मंडे डांणा^{२०} । खुरम किया^{२१} दर-कूच^{२२} पयांणा^{२३} ॥४॥
 चतुरंग सेन असंख्यां चल्लै । हेमाचळ परबत किरि हल्लै ।
 देम दगगो सेन रवहं । किरि ऊलटिया^{२४} सात समहं ॥५॥
 गरडे गज्ज वहंतां दांणा । अझर हुवा घणहर अहिनांणा ।
 गै गुडिया^{२५} मद - गंध गडाडं । कुळ अठक^{२६} सर जीत पहाडं ॥६॥
 दांतूसळ दीपै घड दंती । सांमा घटा जांणै बगपंती ।
 हींडुलता^{२७} गै जूह^{२८} हमल्लां । ढलकै काळी पीळी ढल्लां ॥७॥
 परबत - माळ क चल्लै पाए । घजां पताखां अंबर छाए ।
 फौजां मुहरि मलप्पे मैंगळ । पेरे^{२९} जांणि^{३०} पवत्तै वादळ ॥८॥
 खिडिया^{३१} खोहण खान खंधारं । भाजै वन्न अठारह भारं ।
 दळ पाए ऊपडिया^{३२} डंबर । औधुल्लिया^{३३} गरदी^{३४} अंबर ॥९॥

१ आ. पुंदालम । इ. पुदालम । २ आ.इ. उपरि । ३ आ. हीदुं । इ. हींदु ।
 ४ आ. हीदुस्थान । इ. हींदुस्थान । ५ इ. मुगलल । ६ आ.इ. तरकस । ७ इ. पास ।
 ८ इ. जुवाणां । ९ इ. दुई दुई । १० आ. अठार । ११ आ.इ. चडया । १२ आ.इ.
 घोडे । १३ आ.इ. हूवी । १४ आ.इ. नगारै । १५ इ. ईल-कारे । १६ आ.इ. उपरि ।
 १७ आ.इ. डाणां । १८ आ.इ. कीया । १९ आ.इ. दर-कूच । २० आ. पयाणा ।
 इ. पयाणां । २१ आ.इ. उलटिया । २२ आ.इ. गुडीया । २३ आ.इ. अठक ।
 २४ आ.इ. हीडुलता । २५ इ. जह । २६ आ.इ. पेरे । २७ आ.इ. जांण । २८ आ.इ.
 विडिया । २९ आ.इ. उपडिया । ३० आ. औधुलीया । इ. ओधुलीया । ३१ आ.
 गरदी । इ. गरदां ।

पुड वसुधा वरहासां^१ पाए । थरहर थाळ तणी परि थाए ।
 पार पखै^२ असवार पाइदळ^३ । पंख समारिक चल्ले मेहळ ॥१०॥
 कूदंता वहता केकाणां^४ । रत्ता फीण भरै ऐलाणां^५ ।
 पवंग^६ पगां तळि पत्थर फोडै^७ । धम धमके जम उपद्रव घोडे ॥११॥
 उछळते खंगे असराळे । खांना खोण पडे खुरताळे ।
 थोके थोके^८ घाट थिडंबं^९ । दीडे असि ऊडंति^{१०} दिडंबं ॥१२॥
 ऊपडि^{११} फीज घटा आडंबर । रजघूळ^{१२} हि छाया रातंबर ।
 चडिया^{१३} धडे धडालां चंचळ । वाजै^{१४} नास वहै वेगागळ ॥१३॥
 वांक मुहा वाजिद विवांणां^{१५} । दांटां^{१६} पोसै रोस लगांणां^{१७} ।
 धरती धमस तुरां धमधमी । वाढे^{१८} साढ^{१९} सेट सीरम्मी ॥१४॥
 सावज सीह मरण संभाही^{२०} । मूंभे अगिग फवज्जां मांही ।
 लगा वहण असंख्यां लसकर । ते धूजिया तिणै धरणीधर ॥१५॥
 खुरम सताव खडे अस तामं । बारह बारह कोस मुकामं ।
 खुरम खवा असमान डहंतो । मांडव^{२१} आयी मार कहंतो^{२२} ॥१६॥
 वेगो आयी न करी वेरुं । खांडे करि सूं दक्खण खेरुं ।
 रत्ता^{२३} मुगळ नीली टोपी । ततकाळे नरबदा लोपी ॥१७॥
 दक्खणियां^{२४} घर वाहण^{२५} आदो । ब्रांहन पुर^{२६} आयी साहिजादो^{२७} ।
 देख खुरम दखणी दळ भग्गे । किरि दीठी पंखराऊ^{२८} पनग्गे ॥१८॥

दखणी दळ री पलायन

कवित्त

पन्नंगे पेखियो^{२९} जाणि पंखराऊ^{३०} प्रघट्टी ।
 किरि दीणै कुंजरां^{३१}, सीह सादूल^{३२} निहट्टी ॥

१ आ. वरहासां । २ आ.इ. पखे । ३ इ. पाईदल । ४ आ. केकाणं । इ. केकाण ।
 ५ इ. अलाणां । ६ आ.इ. पवग । ७ इ. घोडे । ८ इ. थोका थोक । ९ आ. थिडवै ।
 १० आ.इ. उडंति । ११ आ.इ. उपडि । १२ आ.इ. रज-घुल । १३ आ.इ. चडीया ।
 १४ इ. वाजै । १५ आ. वेवांणां । इ. देवाणं । १६ आ. दांटां । १७ आ. लागाणं ।
 इ. लगाणं । १८ आ.इ. वाजे । १९ इ. साढ । २० इ. संभाही । २१ आ. मांडव ।
 २२ आ. कहंतो । २३ इ. राता । २४ आ.इ. दक्खणीयां । २५ इ. आयी । २६ आ.इ.
 ब्रांहन पुर । २७ आ.इ. साहिजादो । २८ आ. पंखराऊ । २९ आ.इ. पेखियो ।
 ३० इ. पंखराऊ । ३१ इ. कुंजरां । ३२ इ. सादुल ।

अरक पेखि किर उदी, मिटे तम^१ तारामंडल ।
गयो सीत भैभीत, जाणि^२ पेखे जालंनल ॥

नरसिंघ वीर आराधियै^३, भूत प्रेत भाजंत जिम ।
सुरतांण खुरम संपेखियै^४, गा दखणी^५ दहवाट तिम ॥१॥

ब्राह्मण-पुर^६ निज तखत, आंवि बैठी^७ साहिजादी ।
सरहदां सुरतांण, आप बलि आप मुरादी ॥
राजा राठीडवै, मेर माभी मुंह आगल ।
पहरावै^८ पडगरै^९, भार दीनी भुज्जाबल ॥

ताबीन दीन हिंदु^{१०} तुरक, अउब पेख आतम सकति ।
दळथंभ दळां विच, थप्पियौ^{११} जेत खंभ सेनाधपति^{१२} ॥२॥

जुघ में विजय प्राप्त, बादसाह रो खुस होणो, महाराजा गजसींघ नूं पंच-हजारी रो पद तथा
जाळोर, सांचोर रा परगना मिलणा

महण-रंभ मथियौ^{१३}, तेग तुडि दखण मारी ।
पाति साह^{१४} हुइ प्रसन, हुकम किय^{१५} पंच हजारी ॥
संडोवर नर - समंद, सीस मनसप वधधारे ।
दे नगगारा तोग, तुरी साकति सिंगारे^{१६} ॥

फुरमास सुपारसि मोकळी, दिढ^{१७} राजा दळथंभ तूं^{१८} ।
जागीर दीध जोगणि-पुरै, कणिया-गिर^{१९} सांचौर सूं^{२०} ॥३॥

सेना रो वरणण

वाळण दखण वसुह, कटक बंध चढिया^{२१} कोअण ।
भेरी पंच सह^{२२} ताम^{२३}, सुणियै^{२४} लग जोजण ॥

१ आ.इ. तब । २ आ. जाण । ३ आ.इ. आराधियै । ४ आ.इ. संपेखियै ।
५ इ. दिषणी । ६ आ. ब्राह्मणपुर । ७ आ. ब्राह्मणपुर । ८ इ. बैठी । ९ आ. मेहरावै ।
१० इ. पहरावै । ११ आ.इ. पडगरै । १२ आ.इ. हीदू । १३ आ.इ. थपियौ । १४ आ.
सानाधपति । १५ आ.इ. सेनाधपति । १६ आ.इ. मथियौ । १७ इ. पतसाह । १८ आ.इ.
कीध । १९ आ. सिधारे । २० आ. दीढ । २१ आ.इ. तु । २२ आ.इ. कणीया-
गिरि । २३ इ. सुं । २४ आ. चढीया । २५ आ. चढीया । २६ आ. पंच सवद । २७ इ. पंच
सवद । २८ आ. ताम । २९ आ.इ. सुणियै ।

हिंदू^१ मुसलमान, खान सुरताण^२ चइना ।
हलवल्लि मैगळ^३ हुए, सुजळ किरि वादळ भीना ॥

चतुरंग पंच फौजां अणी, भूल न जाये^४ भल्लिया^५ ।
निप^६ सहस नेत नव साहसी, दळ वारह घण चल्लिया^७ ॥४॥

है - खुर रज ऊछळी, रजी लग्गी रिव - मंडळ ।
चडी सेस सिरहत्य, पुहवि^८ गाहट पगां तळ^९ ॥
कमठ भार कसमस्स, दाढ़ वाराह खडक्के ।
मंडळ मेर मेखळा, धमस^{१०} धूळी^{११} रिव^{१२} ढक्के^{१३} ॥
सम्मूह सेन संख्या पखै, जाइ लसक्कर जूजुए^{१४} ।
पतिसाह दळां दीनी पसर, गिरि भंगर पद्धर हुए^{१५} ॥

छंद रूपकगति^{१६}

“गजबंध सुणे आवंता । दखणी दळ दूर^{१७} पहुंता^{१८} ।
मलिका पुर फेर हवाई^{१९} । नव कोटे नौबत्त वजाई ॥१॥
जाई रोहणी खेडा^{२०} लीया । अधरती घाटां लंघीया ।
पह देवल गां पध्वारे । दळ थंभ दमांम दिवारे ॥२॥
“गजबंधी” सीह विरत्ता । दखणी दळ भाजि विगूता ।
बालापुर^{२१} महिक्कर छोडे । दखणी दळ भागा होडे ॥३॥
घोपट्टे लीघ घरत्ती । जिहंगीरे^{२२} आंण वरत्ती ।
वीरातन^{२३} वागां जोडे । चांपी भुइ चढियौ^{२४} घोडे ॥४॥
“गजबंधी” नाहर गज्जे । दखणी गा कुंजर भज्जे ।
“गजबंध” निरोहै^{२५} पूगा^{२६} । मुख वारह सूरज ऊगा^{२७} ॥५॥

१ आ. हींदु । इ. हीदु । २ आ. सुरताण । ३ आ.इ. मैगल । ४ आ.इ. जाये ।
५ आ.इ. भल्लीया । ६ इ. निप । ७ आ.इ. चलीया । ८ इ. पुहव । ९ इ. तलि ।
१० इ. धुमस । ११ इ. धुली । १२ इ. रवि । १३ आ.इ. ढक्के । १४ आ.इ. जूजुए ।
१५ इ. हुए । १६ इ. रूपक सकति । १७ इ. दूर । १८ आ.इ. पहुता । १९ इ.
हवाई । २० इ. रोहिण खेडा । २१ आ.इ. बालापुर । २२ आ.इ. जिहगीर ।
२३ आ.इ. वीरांतन । २४ आ.इ. चढीयो । इ. चढीयी । २५ इ. नीरोहे । २६ इ.
पगा । २७ आ.इ. उगा ।

कमधज्जो उदोतं कवट्टे । किरि कांठळ^१ भाणं प्रघट्टे^२ ।
दोळा दळ दिल्ली बाळा । पंच रूप करि प्रब्रत-माळा^३ ॥६॥
सांमंद विरोळ सकज्जे । घमचक्क किया कमधज्जे ।

खिडकी गढ़ ध्वंस

सुरताणतण दळ सत्ये । खडि आया खिडकीमत्ये ॥७॥
“गजबंध”^४ कमध निहट्टा । तब साह निवाज पलट्टा ।
दखणी “गजबंध” विडारे । गौ “अंबर” डंबर हारे ॥८॥
दखणी दहवाटां कीयां । दौलताबाद डरीयां ।
गज थाटां कीघ गाहट्टां । ढंडोळे हाट चीहट्टां ॥९॥
मंड मैडी चित्तर-साळा^५ । गढ ढाहै गौख अटाळा ।
कमठाणा पौळ पगारं । किय^६ कोट सैलोड समारं ॥१०॥
घमळा-हर^७ घोम धिखाया । किरि लाखां जमहरि^८ लाया ।
पटसाळा मिंदर पाडे । जड बंद्धा सहर उजाडे^९ ॥११॥
गढ़ भंजे भीत किमाडं । उत्थामे जडां उपाडं ।
सात खणा महल मंडाणं । किय^{१०} ढाहि पंखाण पखाणं ॥१२॥
पाडे किया^{११} पहट^{१२} मैदानं । दरबार दिवाणह-खानं^{१३} ।
उध्वै पुडि दखण उपाडे । खंडे मीर खपाड^{१४} पछाडे^{१५} ॥१३॥
गुळ चावळ गोहूं^{१६} पाया । तब लूटि लसक्कर धाया ।
“गजबंधी” आपो^{१७} पांणां । वरतावण दखण आणां ॥१४॥

ध्वस्त नगर रौ वरणण

कवित्त

जेथि^{१८} दीप दीपता, तेथि^{१९} प्रजळ हुत्तासण^{२०} ॥

जेथि हसति गुंजता^{२१}, तेथि^{२२} गुंजे^{२३} पंचाइन^{२४} ॥

१ आ.इ. कांठलि । २ इ. प्रगटे । ३ इ. प्रबत-माला । ४ इ. गजबंधी । ५ आ.इ. चित्र-साला । ६ आ.इ. कीय । ७ इ. घमल-हरे । ८ आ.इ. जमहर । ९ आ.इ. उपाडे । १० आ.इ. कीय । ११ आ. कीय । १२ इ. कीयां । १३ इ. पह । १४ आ.इ. दीवाणह-खानं । १५ इ. षपाडं । १६ इ. पछाडं । १७ आ.इ. गोहु । १८ इ. आयो । १९ आ.इ. जेथ । २० आ.इ. तेथ । २१ आ. हुतासणं । २२ इ. हुतासण । २३ आ.इ. गुंजता । २४ इ. तेथ । २५ इ. गुंजे । २६ इ. पचाइन ।

जेथि^१ रंग-आमास, तेथि क्रीडति^२ कुरंगह ।
 जेथि नृपति^३ बैसता, तेथि उडुत^४ विहंगह ॥
 त्रिय तेथि रेख काजळ नयण, भुअण तेथि भरिया^५ भसम ।
 खेडपति कीध खिडकी-तखत, वसुह रीत विपरीत इम ॥१॥

जडामूल^६ उप्पाडि, भांजि खिडकी-गढ दखण^७ ।
 हबसी दळ हेडवे, मारि^८ लग मुग्गी-पट्टण ॥
 खांन देस मरहट्ट, बराड मुलक वस^९ कीया वंका ।
 सेत-बंध रामेस, भंग पडियो^{१०} गढ^{११} लंका ॥
 अहमदा नगर हूआ उभै, कटकबंध काबिल^{१२} तणा ।
 गढ लियण^{१३} सीह^{१४} गुंजारियो^{१५}, आवि खडगह पूरण ॥२॥

विग्रह चाळा वधे, खसे खूरसांगह धायी ।
 दखण^{१६} दमंगळ^{१७} करे, सरद साहिजादो^{१८} आयी ॥
 सबळ भीड संभळी, भूम ग्रहियो^{१९} भूमारे^{२०} ।
 सांम काम^{२१} हणमंत^{२२}, कमध^{२३} कुळ मग संभारे ॥
 मंडळीक कळोघर मारकी, ऊससि लग्गी^{२४} अंबहर ।
 आइयो^{२५} ताम^{२६} असि ऊलके^{२७}, राम भीची^{२८} जिम राजघर^{२९} ॥३॥

दळ लंका^{३०} दखणाधि, रूप माया राकस्सी^{३१} ।
 बहुतरि^{३२} सत्तरि^{३३} चडे, खांन उवरा^{३४} हबस्सी ॥
 वाज पंख सीचाण, वाज विव्वाण उडायी ।
 पवन आतुर^{३५} पेरियो^{३६}, जळद जाणे किरि धायी ॥

१ अ. जेथ । इ. जेथि । २ आ. क्रीडती । इ. क्रीडति । ३ आ. नृपति । इ. नृपत ।
 ४ आ. इ. उडति । ५ आ. इ. भरिया । ६ इ. जडामूल । ७ इ. दिखण । ८ अ.
 मगरि । ९ आ. इ. वसि । १० आ. इ. पडियो । ११ इ. लग । १२ इ. काविली ।
 १३ आ. इ. लियण । १४ इ. सीह । १५ आ. इ. गुजारीयो । १६ इ. दपण । १७ आ.
 दमंगळ । १८ आ. साहिजादो । इ. साहजादो । १९ आ. ग्रहीयो । इ. ग्रहीया ।
 २० आ. इ. भूमारे । २१ इ. काम । २२ आ. हणमंत । २३ आ. कमध । २४ इ.
 तणा । २५ आ. इ. आवीयो । २६ आ. इ. ताम । २७ आ. उलके । इ. उलके ।
 २८ आ. इ. भीच । २९ इ. राजघर । ३० लंक । ३१ इ. राकस्सी । ३२ इ. बहुतरि ।
 ३३ आ. सत्तरि । इ. सितरि । ३४ आ. उवरा । इ. उमरा । ३५ इ. आतुर । ३६ आ.
 पेरीयो । इ. पेरीया ।

असमाण बाण आंचे लिया^१, सेन सडंबर सालळ^२ ।
कोटाण^३ कोटि कोअण^४ कटक, आया दळ वढळ मिळ^५ ॥४॥

दखणी दळ री फेर हल्ली

दूहा

मिळ दळ वढळ आविया^६, दखणी घस लागाह^७ ।
जरा^८ सजे^९ तुरियां^{१०} चढे^{११}, भागा^{१२} अणभागाह ॥१॥

दोमज^{१३} छलि वळ दखण^{१४}, खीटावण खुरसाण^{१५} ।
दीनी^{१६} आवे^{१७} दखणिए^{१८}, कटके कोस मल्हाण^{१९} ॥२॥

कटके काछी^{२०} तणे, “गाजीसाह” नरिद ।
वाधे नेत विराजियो^{२१}, भीडक वाधे विद ॥३॥

असती^{२२} नरपति गजपती^{२३}, ओळोभे^{२४} त्रिउ राउ^{२५} ।
कही^{२६} हमीरां^{२७} हिंदुवां^{२८} करिसी^{२९} केही^{३०} दाउ^{३१} ॥४॥

“गजण” गरज्जे बोलियो^{३२}, करि ग्रहिये^{३३} केवाणं ।
भलीं भिडंतां आगळी, बाहुडियां^{३४} पछवांण^{३५} ॥५॥

सेना री कूच

छंद विराज

हुआ^{३६} भेर घावं । निसाणं निहावं ।
सहनाइ^{३७} सहं । नफेरी^{३८} ननदं ॥१॥

१. आ. लिया । इ. लिया । २. आ. कोटाण । इ. कोटान । ३. इ. आविया ।
४. आ. इ. लागाह । ५. आ. जारां । ६. आ. साजे । इ. साजे । ७. आ. तुरीए । इ. तुरीये
८. आ. इ. चढे । ९. इ. भागाइ । १०. आ. इ. दोमजि । ११. इ. दखण । १२. इ.
दीजो । १३. आ. आवे । १४. इ. दखणिए । १५. आ. मल्हाण । इ. मल्लाण । १६. आ.
कावि । काछिवे । १७. आ. इ. विराजियो । १८. इ. असपति । १९. आ. गजपति ।
२०. आ. आलीभे । इ. आलाजे । २१. आ. त्रिउ राऊ । इ. त्रिहू राहू । २२. आ. कही ।
इ. केही । २३. आ. अमीरां । २४. आ. हींदुवां । इ. हींदूवां । २५. आ. इ. करिसी ।
२६. इ. केही । २७. आ. इ. दाऊ । २८. आ. इ. बोलियो । २९. आ. इ. ग्रहीये । ३०. आ. इ.
बाहुडियां । ३१. इ. पछि-वांण । ३२. इ. हुवा । ३३. आ. इ. निसाण । ३४. आ. इ.
सहनाई । ३५. आ. इ. नफेरी ।

पहं खेड पत्ती^१ । चडे चक्रवत्ती^२ ।
 खडे खंग खुद्रं । कीयी^३ रूप रुद्रं ॥२॥
 समूहं^४ सुभट्टं । गुडे गज्ज थट्टं ।
 दळाकार दीडं । तुरां वाज^५ पोडं ॥३॥
 वसू^६ घाव जाए । रजी भांण छाए ।
 क्रमे कोम^७ सेनं । मिळो रज्जमेनं ॥४॥
 धरत्त धमस्सं । आंकप अरस्सं ।
 ताजव्वे तोखारं । खिडे जाणि^८ तारं ॥५॥
 वहै वाज लीणं । भरै^९ मुखि फीणं ।
 मवै मग्ग मोणं । अमूभत्ता ओण^{१०} ॥६॥
 हिले हेम थट्टं । फिरे वोम फट्टं ।
 भाद्रव्वे आसोजं^{११} । घटा जाणि फीजं ॥७॥
 सिरै उतराधं^{१२} । खडे दक्खणाधं ।
 थिडे थट्टं काळा । किरि^{१३} मेघ^{१४} माळा^{१५} ॥८॥
 भडां दाखिरोसं^{१६} । खडे खट्ट कोसं ।
 आंणी गज्ज साहं । रचे रिम्म राहं ॥९॥

जुघ वरणण

आतस्सं अपारं । मिळो अंधकारं ।
 हुवे^{१७} बाणि^{१८} होमं । धुवे भाळि घोमं^{१९} ॥१०॥
 हथन्नाळ गोळा । पडे^{२०} जाणि^{२१} ओळा ।
 करगे^{२२} केवाणं^{२३} । निमज्जे^{२४} जुवाणं^{२५} ॥११॥
 नाराजे कोमंडे । करे तीर उडुं ।
 घनरवे धौकारं । भालोडे भंभारं ॥१२॥

१ आ. पेडयती । इ. पेडपति । २ आ.इ. चक्रवती । ३ आ.इ. कीयी । ४ इ. समूहं । ५ इ. वाजि । ६ आ.इ. वसु । ७ इ. कामसेनं ८ आ. जाणि । ९ इ. भरै । १० इ. आणं । ११ आ. आसोजं । १२ अ. उतरधां । १३ इ. किरै । १४ आ. माघ । १५ अ.आ. काळा । १६ आ.इ. दखिरोसं । १७ इ. हुवे । १८ इ. बाण । १९ इ. घामं । २० आ.इ. पडे । २१ आ.इ. जाण । २२ अ. करगे । इ. करगे । २३ इ. कवाणं । २४ आ. निमजे । इ. निमजे । २५ इ. जूवाणं ।

सरै^१ सोक एहं । मिळे जाण मेहं ।
 मने उद्दमहं । किलक्के नारहं ॥१३॥
 वोरम्मै वैताळ^२ । खिले खेतपाळं ।
 कटक्कां कसस्से । सुभट्टं सनस्से ॥१४॥
 केवाणां^३ सकज्जां^४ । किया^५ काढि घज्जां ।
 रिणं तुर^६ वागा । खिवै^७ खाग नागा ॥१५॥
 महा जुध्व मत्तं । इसी आवरत्तं ।
 रूके उड्डि रोठं । गुडे जोध ग्रीठं^८ ॥१६॥
 लडे लोह हत्थं । गहे गूथ - वत्थं^९ ।
 पडे^{१०} सोस पाणं^{११} । छणक्कै केवाणं^{१२} ॥१७॥
 निहस्सै निराटं । करम्माळ^{१३} भाटं^{१४} ।
 हुए^{१५} हुव्व^{१६} सोरं । घणं^{१७} घाइ घोरं^{१८} ॥१८॥
 जग-ज्जेठ जूटे^{१९} । फरी कूत फूटे^{२०} ।
 कटक्के^{२१} कराळ^{२२} । जुआ^{२३} जीण - साळं ॥१९॥
 अवाजै^{२४} आगाढं । तेगां जम्मदाढं^{२५} ।
 है - थाटे हिलोळं । धारा घम्मरोळं^{२६} ॥२०॥
 मिळै ताळ ताती । धका - धोम^{२७} माती ।
 हिले रत्तं खाळं । नदी जाण नाळं ॥२१॥
 मुहे रूक माडं । हुए^{२८} चूक^{२९} हाडं ।
 भडां कंध भाजै । घडां धार वाजै ॥२२॥
 मिडे^{३०} भींच^{३१} भल्लं । ढहे ढींच - ढल्लं^{३२} ।
 भूमे ले पयाळा । करे मत्त वाळा ॥२३॥

१ आ.इ. सरै । २ आ. वेताल । इ. वैताले । ३ आ. केपाणं । ४ आ. सकजा ।
 इ. सकजा । ५ आ.इ. कीया । ६ इ. तुर । ७ आ.इ. खिवै । ८ आ. ग्रीठं । ९ आ.इ.
 गुथ वत्थं । १० इ. पडे । ११ इ. पाणं । १२ इ. केवाणं । १३ इ. करमाल ।
 १४ इ. फाटं । १५ आ.इ. हुए । १६ इ. हूव । १७ इ. घण । १८ इ. घोर ।
 १९ आ. जूटे । २० इ. फूटे । २१ इ. कटके । २२ इ. कडालं । २३ आ.इ. जुआ ।
 २४ आ.इ. आवाजै । २५ इ. जंमदाढं । २६ आ. घमराल । २७ आ. धका-धोम ।
 २८ इ. हुए । २९ इ. चुक । ३० आ. मिडे । ३१ आ.इ. भींच । ३२ आ.इ. ढींच
 ढलं ।

करै^१ कील कोधं^२ । जुडै^३ जुद्ध^४ जोषं ।
 उरे उव्व-राडं । भटक्के भराडं ॥२४॥
 वहै सम्म सेरं । भरै भट्ट भेरं^५ ।
 कटै आच ओणं । रडै रत्त सोणं ॥२५॥
 तुरां तूठ^६ तुंडुं । सुंडाला^७ भुसंडं^८ ।
 भडां भोम जाए । गडत्थल्ल^९ खाए ॥२६॥
 घडं^{१०} रत्त वूडै । भडां हंस ऊडै ।
 खिवै खग धारां । गुडै गज्ज भारां ॥२७॥
 जुटे^{११} जम्म जालं । वपै विक्करालं ।
 बाहुडंड^{१२} पिंडं । बाणासै^{१३} विखंडं ॥२८॥
 पडै^{१४} पूर लोहं । महा जुद्ध मोहं^{१५} ।
 धोरं धार तम्मं । सवित्ता विभ्रम्मं^{१६} ॥२९॥
 वदे तेण वारं । देवत्ता जेकारं ।
 ढोवै रंभ रत्थं । बरै वीद तत्थं ॥३०॥
 त्रिपत्ता तियारं । हुए मंसहारं^{१७} ।
 कमाळी कपालं । रत्ते^{१८} रुंड-मालं ॥३१॥

महाराजा गजसींघ री विजय

कवित्त

रुंड^{१९} मुंड सै खंड, गुडे गज माणक डंडह ।
 अगनि बाण आरिक्ख, वीज विरखा^{२०} ब्रह्मंडह^{२१} ॥
 बांध नेत रिण खेत, सैद अल्ली मेंहमूंदह^{२२} ।
 हैफखान संभमी^{२३}, पडै पोरस्स मयंदह ॥

१ आ.इ. करे । २ इ. काधं । ३ आ.इ. जुडे । ४ इ. जुधि । ५ अ. फेर ।
 ६ आ.इ. तुट । ७ आ.इ. सुडाला । ८ आ. भ्रासंडं । ९ अ. भ्रसुडं । १० आ. गड्ढयल ।
 ११ गड्ढयल । १२ अ. घडं । १३ आ.इ. जूटै । १४ इ. बाहुडंड । १५ आ.इ.
 मांसहारं । १६ आ.इ. पडे । १७ आ. महं । १८ आ. विभ्रमं । १९ अ. विभ्रमं । २० इ.
 मांसहारं । २१ आ.इ. रत्ते । २२ इ. रुंड । २३ इ. वरीपा । २४ ब्रह्मंडह । २५ अ. महमदह । २६ सभमी ।

उपडी वाग "अरजण" हरी, सूर^१ घोर सत आगळी ।
तिण दीह रहै "डुंगर"^२ तणी^३, "राघव" भाटी रिण-खळी ॥१॥

नेजालै^४ नांमिया^५, मारि^६ भाले चोघारै^७ ।
चूरि थाट चापडे, सैद पडिया^८ चडि सारै^९ ॥
माथै मंडोवरां, जुद्ध जुवटो^{१०} मंडांणी ।
लई वाग ग्रह खाग, लाख घोडां^{११} उज्जाणी ॥

"गजसिध" कियो^{१२} गोधम वडी, दळ भागी दखणाधरी ।
तिण वार हुआ^{१३} महि आगळी, "राजसिध" "खेमाल"री ॥२॥

हवसी दळ हाकियो^{१४}, मार^{१५} कमधे कळि-मूळे^{१६} ।
गया छाड^{१७} रिण-भूम^{१८}, जाणि^{१९} पंखी हुई^{२०} ढल्ले ॥
अगनि बाण बांहति, खिरै असमांत के तारे ।
मिणै जाणि ब्रह्मंड^{२१}, घोम डोरी पस्सारै ॥

दळ-थंभ हुआ^{२२} पछिवाण दळ, आप पराक्रम अन्न-भै ।
कमधज्ज तांम^{२३} संग्राम किय^{२४}, जुडे जांम^{२५} एकह उभै ॥३॥

प्रथम मेक संग्राम^{२६}, कियो^{२७} महिकर आथाणह^{२८} ।
बियो^{२९} कीध रिणजंग, दिखण कटके मेलहाणह^{३०} ॥
तियो^{३१} कीध रिणताळ, बहसि बाला-पुर आए ।
चौथी ब्राहन-पुरे^{३२}, जुद्ध जीती घण घाए^{३३} ॥

"गज साह" भिडे पतिसाह छलि, हेठि हेठि अविणासु हुआ^{३४} ।
पंचमै जुद्ध दक्खण फत्ते^{३५}, तै की^{३६} "सूरजमाल" सुअ^{३७} ॥४॥

१ आ.इ. सूर । २ इ. डुंगर । ३ इ. तणी । ४ आ.इ. नेजालां । ५ आ. नांमीयां ।
इ. नांमीया । ६ इ. मार । ७ इ. चोघारे । ८ इ. पडीया । ९ इ. सारं । १० आ.
जुवटो । ११ आ. थोडां । १२ आ.इ. कीयो । १३ आ.इ. हुआ । १४ आ.इ. हाकीयो ।
१५ इ. मारि । १६ इ. कल-मूले । १७ इ. छाडि । १८ आ. रिण-भूम । १९ आ.इ.
जाणि । २० आ. हुई । २१ आ. ब्रह्मंड । इ. ब्रह्मंड । २२ आ. हुआ । इ. हुआ ।
२३ आ.इ. तांम । २४ आ.इ. कीय । २५ आ.इ. जांम । २६ इ. संग्राम । २७ आ.
कियो । इ. कीयो । २८ आ.इ. आथाणह । २९ आ. बियो । इ. बियो । ३० इ.
मेलहाणह । ३१ आ. तीयो । इ. त्रीयो । ३२ आ.इ. ब्राहनपुर । ३३ इ. घाए ।
३४ इ. हुआ । ३५ आ.इ. फत्ते । ३६ आ. आ. कीध । ३७ आ.इ. सुअ ।

दूहा

सिंघ फतै करि गाजियो^१, दखणी भांज दुभल्ल ।
पाडि पमायी सू पछे^२, सोई सच्चौ मल्ल ॥१॥

महाराजा गजसौंघ री विजय

केवांगे जीते कळह^३, घुरते नीसांणेह ।
मेलहांगे^४ मंडोवरी, आयी आपांणेह ॥२॥

जोधपुरे जुध जीपतै, बळ दक्खे बाणास^५ ।
दक्खणिये^६ पळ खूटते^७, हूआ^८ बारह मास ॥३॥

“अंबर” आंपांणी^९ छभा, कीघी^{१०} वैसि विचार ।
पोरस^{११} पार न लब्ध^{१२} ही, उत्तर^{१३} पंथ अपार ॥४॥

दखणाधे उत्तराघसू^{१४}, करि क्रामत्ति^{१५} उखेळ ।
सीले^{१६} कौले^{१७} कागळ, सगळां कीघी^{१८} मेळ ॥५॥

सलै^{१९} हुई^{२०} सुख ऊपनी^{२१}, भागी दळां दुवाळि ।
सीमां नीमां गढ मुलक, सगळे लिया^{२२} संभाळि ॥६॥

जे^{२३} थांणे भड ऊठिया^{२४}, बैठा ते थांणेह^{२५} ।
सोगढी सतरंज जिम, आपी आंपांणेह^{२६} ॥७॥

राजा “गाजी” सारिखा, से वड्डा सिरदार ।
दखणी मार मनाविया^{२७}, मार कहीजै सार ॥८॥

कवित्त

मार सार मारकां...^{२८} इळा...^{२९} हूवै^{३०} आंपांणी ।
मुहि खगां है - खुरां, जेह रक्खी ते मांणी ॥

१ इ. गाजीयो । २ इ. पछै । ३ आ.इ. कह । ४ इ. मेलहांगे । ५ आ. बाणास ।
इ. वणास । ६ आ.इ. दक्खणीये । ७ आ.इ. पुटते । ८ अ. हूई । आ. हुआ । ९ अ.
आपांणी । १० इ. कीघी । ११ आ.इ. पोरस । १२ आ.इ. लभ । १३ आ.इ. उत्तर ।
१४ आ.इ. सुं । १५ अ.इ. क्रामत्ति । १६ अ.आ. सील । १७ अ. कौल । १८ इ.
कीघी । १९ आ.इ. सल । २० आ.इ. हुई । २१ अ.इ. उपनी । २२ आ.इ. लीया ।
२३ इ. जै । २४ आ.इ. उठिया । २५ आ.इ. थांणेय । २६ अ.इ. आपांणेय ।
२७ आ.इ. मनावीया । २८ अ. मारका । २९ इ. ईला । ३० अ. हूवै ।

वर केता वौलिया^१, कळह केताइ^२ कुनारी^३ ।
 पुरख न परणी^४ किणिह^५, आद^६ जुग्गादि^७ कुआरी ॥
 गढ लियण^८ कोट^९ मैवट्ट में, कमधज दिखण^{१०} मथण कळी ।
 महि तैहिज^{११} मार मनावि^{१२} इम, खेडेचा राउ^{१३} खग-बळी ॥१॥

दखणाघी^{१४} की फतै, पंच^{१५} खट पक्खां^{१६} मांही ।
 दक्खणिणी^{१७} दे देस, पेस दीनी सगळांही^{१८} ॥
 मेद-पाट राजिद्र, देखि सरहदां दोडी^{१९} ।
 गुडवाणे^{२०} मेल्लिह्यो^{२१}, "भीम" रांणी चीतोडी^{२२} ॥
 आंणियो^{२३} द्रोह अंतह करण, पाडी^{२४} खुरमह पंतरण ।
 ततकाळ "सेर" सुरतांण रौ, कीधी अज्जुगतो मरण ॥२॥

गाथा

विकमाईत^{२५} नांम^{२६} ब्राह्मण^{२७} ।
 वूफे मंत्र कुंमत्री^{२८} बंभण ॥
 अंतह करण दुरम्मति आई ।
 वहै खुरम्मह जेठी भाई ॥१॥

खुरम का मांडव आगमन

भूलौ भरम खुरम भव हारे ।
 पाप^{२९} कमायो^{३०} आत पहारे ॥
 आतम सुं^{३१} अहनिस्^{३२} आळोजै ।
 नव खंड पह नमिया^{३३} नवरोज ॥२॥

१ आ. वौलीया । इ. बोलीया । २ आ. केइ । इ. केलाई । ३ इ. कलिनारी ।
 ४ आ. पिरणी । ५ आ. किणेह । इ. किणीह । ६ इ. आदि । ७ इ. जुग्गादि ।
 ८ आ. इ. लियण । ९ इ. कोट । १० इ. दिखणी । ११ आ. इ. तैहीज । १२ आ. इ.
 मनावी । १३ इ. राऊ । १४ इ. दखणाघी । १५ इ. पांच । १६ इ. पक्कां । १७ आ.
 दक्खणीयो । इ. दक्खणीयां । १८ आ. सगलाई । इ. सगलाई । १९ आ. दोडी ।
 २० आ. इ. गुडवाणे । २१ आ. इ. मेल्लिह्यो । २२ आ. चीतोडी । इ. चित्तोडी । २३ आ. इ.
 आंणीयो । २४ आ. इ. पडी । २५ आ. इ. विकमाइत । २६ आ. इ. ताम । २७ आ.
 ब्रह्मण । इ. ब्रह्मण । २८ आ. कुमत्ती । इ. कुमित्री । २९ आ. आ. पाय । ३० आ.
 कमायो । कमायो । ३१ आ. इ. सुं । ३२ आ. इ. अहोनिस् । ३३ इ. मीया ।

ब्राह्मन-पुरसू^१ चडे सतावं ।
 साथे खांता खांत^२ निबावं ॥
 मारि सेर सुरताण पमायी ।
 महण मथेवा मांडव^३ आयी ॥३॥

दूहा

मांडव आय^४ मुकांम किय^५, दळ वदळ, आणिय ।
 समियाण^६ असमांण^७ सूं^८, जूजाळ^९ ताणिय ॥१॥
 दियो दिलासा ऊवरां^{१०}, करे कटक्कां चाळ ।
 गढ मांडव श्रीगाजियी^{११}, सिरि दिल्ली लंकाळ ॥२॥
 मांडव आगम मेह रित^{१२}, महलां मज्झ रहास ।
 फुरमायी "गजसाह" नूं^{१३}, तुम^{१४} आवी हम पास ॥३॥
 खुरम प्रवांणा मेलिया^{१५}, लीघा राठीडेय^{१६} ।
 "गजवंधी"^{१७} आयी खडे, चडि तीन्हे^{१८} घोडेय^{१९} ॥४॥
 दळ भंजे गंजे दखण, चंद चडावे^{२०} नांम ।
 खेडेचा^{२१} राउ^{२२} खुरमनूं^{२३}, आवे कीध सलाम^{२४} ॥५॥
 खुरम सैंतोख पडंगरे, अँकमाळा आपेय ।
 सीख मया किरि^{२५} देसनूं^{२६}, दीनी आदर देय ॥६॥

महाराजा गजसींघ री जोधपुर आगमत

मनछा फळ प्राप्त हुआ^{२७}, हुआ^{२८} मनोरथ सिद्ध ।
 जोधपुरे दिस जोधपुर, चडे पयांणी^{२९} किद्ध^{३०} ॥७॥
 धरि पुठी^{३१} घर सांमहा, सहू^{३२} जुवांणां सत्थ ।
 मनरत्त मनमत्थसूं^{३३}, मन चाहै मनरत्थ ॥८॥

१ आ.इ. सूं । २ इ. पांत पां । ३ इ. मंडप । ४ आ.इ. आव । ५ आ.इ. कीय ।
 ६ आ.इ. समीयाणां । ७ इ. असमान । ८ आ.इ. सुं । ९ आ. झूकाउ । १० जूकाउ ।
 १० आ.इ. उवरां । ११ आ.इ. श्रीगाजीयी । १२ अ. रिमं । १३ आ.इ. नूं ।
 १४ आ.इ. तुम । १५ आ.इ. मेलीया । १६ इ. राठीडेह । १७ अ. गजवंधा । १८ आ.
 तीन्हे । १९ इ. घोडेह । २० अ.आ. चडावे । २१ आ.इ. पेडेचै । २२ इ. राऊ ।
 २३ आ.इ. नूं । २४ इ. सलाम । २५ इ. करि । २६ आ.इ. नूं । २७ आ.इ. हुआ ।
 २८ इ. हुआ । २९ आ. पयांणां । ३० आ. किध । इ. कीध । ३१ आ.इ. पुठी ।
 ३२ आ. सहू । इ. अहू । ३३ आ.इ. सुं ।

साथ सऊब^१ आवळे, मारग वूठा मेह^२ ।
आयी नव कोटी घणी, ऊबळ^३ के तुरियेह^४ ॥६॥

“गजबंधी गढ^५ आवियो^६, मेरी घाउ वळेय ।
जोवै मांही जालियां^७, गोरी गौख चडेय ॥१०॥

गज-बंधी बाधाविजै^८, मोती उच्छालेय^९ ।
लूण^{१०} उतारै राइ-धी, चडियै^{११} अट्टालेय ॥११॥

महाराजा री सुआगत

छंद लीलावती

सुख प्रामियो^{१२} सजणां दुख थियो^{१३} दुजणां ।
लोक रळियांमणी^{१४} लिये^{१५} भांमणां ॥
रिण-तूर^{१६} रुडांमणां ढोल^{१७} धूवांवणां^{१८} ।
तोरण दरपणां प्रोळ - पणां ॥१॥

मिण मांणक आभूखणा, पहिरे^{१९} गहणां ।
मंगळ गाइणां^{२०} घमळ घणां ॥
सिर^{२१} पहप वरसणां अबीर उडांमणां ।
निरखियो^{२२} नयणां सयळ जरां ॥२॥

चत्र वेद ब्राह्मणं^{२३} भली विध^{२४} भणणां^{२५} ।
अभिखेक अप्पणां तिलक तणां ॥
गुणं कहो^{२६} गुणियणां^{२७} विप्रां चारणां ।
आसीस उलावणां, सुभ वयणां ॥३॥

सिणगार सुहामणां, महलायत खणां ॥
पूर राइ - अंगणां, चौक रथणां ॥

१ आ.इ. सऊब । २ आ.इ. उवला । ३ आ. तुरीवेह । तुरीरोह । ४ इ. गज ।
५ इ. आवीयो । ६ आ.इ. जालीयां । ७ इ. बंधाविजै । ८ आ. उच्छालेय । इ. उछालेह ।
९ आ.इ. लूण । १० आ.इ. चडीये । ११ आ.इ. प्रामियो । १२ आ.इ. थियो ।
१३ आ.इ. रलीयांमणां । १४ आ.इ. लीये । १५ आ.इ. रिण-तूर । १६ आ. ढोल ।
१७ आ.इ. धूवांमणां । १८ आ. पहरे । इ. पहिरे । १९ आ. गायणां । २० आ.आ. सिरि ।
२१ आ.इ. निरखियो । २२ आ. वृहमणां । इ. ब्राह्मणं । २३ आ. विधी ।
२४ अप्पणां । २५ इ. कहि । २६ आ.इ. गुणीअणां ।

“गजसाह” गरजणां, तम - चर जीवणां ।
मंगळ हुवा^१ वधावणां^२ हरख घणां हरख घणां ॥४॥

हुह^३

हुआ^४ हरख वद्धामणां, मंगळ घमळ सुणेस ।
कियो जोघ अभिन्नमं^५, गढ जोघाण प्रवेस ॥१॥
दळ भंजे^६ दखणाधरा, “सूरजमल्ल”^७ सुतन्न^८ ।
आयो काळी मांण मलि, जाणै^९ गोकळ कन्नह^{१०} ॥२॥

महाराजारी जोघपुरमें निवास

कवित्त

चित्र-साळां^{१०} चित्रजै, महल मंडप मांडीजै ।
घमळ ग्रेह घमळिजै, देव चंदण अरचीजै^{११} ॥
दिवां दीप - मालिका, भडां भरियो^{१२} राई^{१३} - अंगण ।
पुत्र कळिस परठिया^{१४}, घजा पताखा^{१५} तोरण ॥
गजसिंघ तपै जोघाण गढ, सीस छत्र झळ-हळ कमळ ।
नव रंग नवल्ला नेह थिउ, नाद वेद मंगळ घमळ ॥१॥
अस्ट - सिद्ध नवनिघ^{१६}, हुआ^{१७} ग्रह नवैई^{१८} सवाडा ।
भै भाजै^{१९} परठि, सदा साजा दीहाडा^{२०} ॥
हुवा^{२१} मेह नव नेह, दीप दळ भूखण दच्छी ।
लोकां घरि^{२२} लिछमी^{२३}, नंद गौ - अल करि लच्छी ॥
जप जाप होम कीजै जिगन, वरन खट्ट प्रामै^{२४} वरी ।
जोघपुर आज अजुघा-पुरी^{२५}, राम राज कमधज्ज री ॥२॥
कसतूरी ऊपट्ट, महिक सोरंभ मळैतर ।
कमकम्मी कपूर^{२६}, अने^{२७} केसर किसनागर ॥

१ इ. हुवा । २ आ. वधामणां । ३ इ. हुवा । ४ आ. अभिन । इ. अभिनमं ।
५ इ. भंजे । ६ आ. इ. सुरजमल । ७ आ. इ. सुतं । ८ आ. इ. जाणे । ९ आ. इ. कन्ह ।
१० आ. इ. चित्र-साला । ११ इ. अरचिजै । १२ आ. इ. भरीयो । १३ इ. राई-अंगण ।
१४ आ. इ. परठिया । इ. पठिया । १५ इ. पताका । १६ आ. नवामैघ । १७ आ. इ. हुआ ।
१८ आ. इ. नवैई । १९ आ. इ. दिहाडा । २० आ. हुआ । इ. हुवा । २१ इ. घर ।
२२ इ. लीछमी । २३ आ. प्रमै । २४ इ. अजोघ्या-पुरी । २५ इ. कपुर । २६ आ. अने ।

अग्नि^१, अवीर जबाधि, विवह अन्नेक परिम्मळ ।

चंपक दळ केतकी^२, कुसम सेवती सुपडुळ ।

नीसाण^३ सह सुणिये^४ नहीं, भेर नाद मरदंग घण ॥

आघ्राण^५ महल्ले अंग रहण, इम अलिअर गुंजारवण ॥३॥

के बाळा राइ-कुंअरि^६, केय मुगधा कुळवंती ।

के मध्या मांणणी, जिशी सूरज कांयंती ॥

पूगळ भा पदमणी, कठिण^७ असतन गज कुंभह ।

चंपक वरनी^८ तरणि, जंघ विपरीतक रंभह ॥

पिक-वाण^९ जाण वैणी पनंग^{१०}, हिरणाखी हंसा-गमणि^{११} ।

रंग-महल सिंघ राजांन सुर^{१२}, रमति राज-पुत्री रमणि ॥४॥

राग रंग धुनि चित्त, ताल वीणा^{१३} मरदंगह ।

पातरये^{१४} गति निरति, तांन^{१५} गुण ग्यांन उपंगह ॥

खड्ग रिखभ गंधार, मद्दि पंचहम निखादह ।

सरिस कंठ सुर-सपत, गीत संगीत अलापह ॥

अणुहार अखाडी^{१६} इंद्री, जोधह-पुर^{१७} इंद्रा-पुरी ।

“गजसिंघ” इंद्र^{१८} राजंद्र^{१९}-गति, सरव इंद्र^{२०} सांमगरी ॥५॥

इंद्र छभा किरि छभा, द्वारि गडडंत गयंदह^{२१} ।

नर नरिद^{२२} ओळगै, कळा किरि चंद-दुडंदह^{२३} ॥

सुगंध^{२४} तरणि^{२५} तंबोळ, राग सांभळिजै कांनै ।

वोहण भुअण वसत्र, भक्ख^{२६} सतरह^{२७} भोजनै ॥

अस्टादि भोग इंद्रादि-मुख^{२८}, ढळे^{२९} सीस चौसर चमर ।

भोगवै^{३०} लच्छि भरतार जिम^{३१}, “गजपती” नृप^{३२} छत्र-घर ॥६॥

१ आ. अग्नि । २ आ. कैतकी । ३ आ. नीसाण । ४ आ.इ. सुणीयै । ५ आ. आघ्राण । ६ आ.इ. राय-कुअरि । ७ अ. कंठ । ८ आ. वरनी । ९ इ. पिक-वाण । १० इ. पनंग । ११ आ.इ. हंसा-गमणी । १२ इ. सुर । १३ आ. विणा । १४ आ. पातरियै । इ. पातरये । १५ इ. तीन । १६ आ.इ. अखाडी । १७ आ.इ. जोधपुर । १८ इ. इंद्र । १९ आ. राजिंद्र । इ. राजिंद्रि । २० इंद्र । २१ आ. गयंदह । २२ आ.इ. निरिद । २३ आ. चंद-दुंडदह । २४ आ. सुगंध । २५ आ. तरणि । २६ आ. भक्ख । इ. भक्ख । २७ इ. सतर । २८ इ. इंद्रादिमुख । २९ इ. ढुले । ३० आ. भोगवै । ३१ इ. जीम । ३२ आ.इ. नृप ।

इहा

“गजवंधी”^१ जोधाण^२ गढ़ि, दसराहो^३ पूजेय^४ ।
 जूहारी^५ दिप-माळका^६, होळी फाग रमेय ॥१॥
 सरद हिमं तह रिति सिसिर, की कीला सुख भोग ।
 धूना^७ मिदर^८ घोहरै^९, सिसि^{१०} वदनी^{११} संजोग^{१२} ॥२॥
 रत्ता सांमी^{१३} धरम सुं^{१४}, रांमा^{१५} कांम ही रत्त ।
 मन मोटा दिन पद्धरा, भड वंका गहमत ॥३॥
 दत^{१६} देतां घन^{१७} मांणतां, जगि सुणतां जसवास ।
 वसुधा इण^{१८} पर^{१९} वौळिया^{२०}, नव कोटी खट-मास ॥४॥
 चंचड कोरड जव चिणा, चीना केकाणेह ।

खुरम री विद्रोह

इत्तै गोधम ऊठियो^{२१}, दिल्ली सुरताणेह^{२२} ...
 ॥५॥
 मांडव^{२३} खुरम अडपियो^{२४}, हालाविया^{२५} हमल्ल ।
 साहे विरोधण कळि मथण, इळ^{२६} करिवा ऊथल्ल ॥६॥

खुरम रा विद्रोह री खबर फैलणी

कवित्त

नव नंद^{२७} कोपिया^{२८}, दुंद माती तुरकाणै ।
 मांडव बैठो खुरम, आवि दिल्ली^{२९} सिरिहांणै ॥
 हूओ^{३०} हाहाकार, प्रिथी दमगळ^{३१} पेखीजै ।
 जवनां जावण मूळ^{३२}, ओह^{३३} आगम जांणीजै ॥

१ आ. गजवंधा । २ आ.इ. जोधाण । ३ आ. दसराहो । ४ आ. पुजेय । इ. पुजैय ।
 ५ आ. जुहारी । इ. जुहारि । ६ आ.इ. दीपमालका । ७ इ. धुना । ८ आ.इ. मिदर ।
 ९ आ. घोहरै । इ. घोलहर । १० इ. सिसि । ११ आ. वदनी । १२ अ. सांजोग ।
 १३ आ.इ. सांमी । १४ आ.इ. सुं । १५ आ. रांमां । इ. रामा । १६ अ. दन ।
 इ. घन । १७ आ. घन । १८ इ. ईण । १९ आ.इ. परि । २० आ.इ. वौलीयां ।
 २१ आ. ऊठियो । इ. उठियो । २२ आ. सुरताणेह । २३ आ. मांडव । २४ आ.इ.
 अडपीयो । २५ आ. हालाविया । इ. हलाविया । २६ इ. इल । २७ आ. नंद ।
 २८ आ.इ. कोपीया । २९ इ. दीली । ३० इ. हुवी । ३१ आ.इ. दमंगल । ३२ इ.
 मुल । ३३ आ.इ. राह ।

पातिसाह^१ पासि^२ कागळ गए, सुणी वात विपरीत परि ।
सुरतांण सेर वूहा^३ खुरम, कासमीर आई^४ खबरि ॥१॥

जळे पट्ट जिहगीर^५, दुक्ख लागी^६ दावा - नळ ।
घडहडि^७ पौरसि^८ धिखे^९, घित आहज क मंगळ ॥
कळि लागी^{१०} मुग्गळां, तांम^{११} हसियो^{१२} जोगण-पुर ।
वसूं हुवे घर वेघ^{*}, अगं विढिया^{१३} पांडव - कुर^{१४} ॥
त्रिकाल-दरस्सी जोइसी^{१५}, कहै एम^{१६} आगम - कहा ।
असमांन उपद्रह थाइसै, उठी आग^{१७} पाणी^{१८} महा ॥२॥

वादसाह रौ खुरम रै विरुध आदेश

हठ - वादा हजरति, कोपि हठियो^{१९} कालंनळ^{२०} ।
प्रळ - काल उतपात, जाण^{२१} बंधी^{२२} वड मंडळ ॥
आप मुख कियो^{२३} हुकम, चोट हूई^{२४} नग्गारां ।
चडे^{२५} भीच चंचळे^{२६}, कूच^{२७} कीयो^{२८} दळ - कारां ॥
जिहगीर^{२९} कहै^{३०} जमरूप हुइ^{३१}, खुरम कहां जाइ^{३२} वप्पडौ ।
पैसै पयाळ अंबर चडे, जिहां^{३३} जाइ^{३४} तहां पक्कडौ ॥३॥

के लख पखर प्रचंड, तेज तीनी^{३५} तोखारह ।
के लख हिंदू^{३६} तुरक, लाख केताइ^{३७} असवारह ॥
के लख अस्त्र^{३८} कमाल, लाख केताइ^{३९} पाइदळ^{४०} ।
के लख वाजि निसांण^{४१}, जाण^{४२} गडडंत^{४३} निधी-जळ^{४४} ॥

१ अ. पतिसाह । २ इ. पास । ३ इ. वूही । ४ इ. आई । ५ आ.इ. जिहंगीर ।
६ आ. लागी । ७ इ. घडहडियो । ८ इ. पौरिस । ९ आ. धिधिखे । १० इ. जागी ।
११ आ.इ. ताम । १२ आ.इ. हसीयो । * इ. प्रति में पाठ इस प्रकार है 'वसुह वेघ घर
वेघ' । १३ आ.इ. विढिया । १४ इ. पंडव-कुर । १५ इ. जोईसी । १६ आ. ईम ।
१७ इ. आगि । १८ आ. पाणी । १९ आ. हठियो । इ. हिठियो । २० आ.इ. काल-
नल । २१ आ. जाण । २२ आ. बंधी । २३ आ.इ. कीयो । २४ आ. हुइ । इ. हुई ।
२५ अ. चडे । आ. चडे । २६ आ.इ. चंचलै । २७ इ. कुच । २८ अ. कियो ।
२९ इ. जिहंगीर । ३० इ. केहै । ३१ इ. हुई । ३२ आ. जाइ । इ. जाय । ३३ इ.
जहां । ३४ आ. जायै । इ. जाय । ३५ इ. तीना । ३६ आ. हीदू । इ. हीदु ।
३७ आ.इ. केताई । ३८ आ.इ. असतर । ३९ आ.इ. केताई । ४० आ. पाईदल । इ. पाय-
दल । ४१ आ. नीसांण । नासांण । ४२ आ. जाण । ४३ इ. गडडंति । ४४ इ.
निधि-जल ।

केतला^१ लख धानंख-धर^२, केताइ^३ लख गैमर^४ गुडे^५ ।
जिहगीर^६ पयांणे परठियौ^७, दिल्ली दिस हैमर चडे^८ ॥४॥

साही सेना रो कूच

छंद त्रोटक

खुंहालम^९ आरुहि है खडियं^{१०} ।
गति भीति^{११} गिरव्वर गै गुडियं^{१२} ॥
घण भेर दमांम निसांण^{१३} घुरे^{१४} ।
धुवियंति^{१५} क मेघ असाढ^{१६} घुरे^{१७} ॥१॥
रिण-तुर^{१८} पयंच-सव्व^{१९} वेद^{२०} रुडे^{२१} ।
गयणाग क^{२२} अँवनिधी गडडै^{२३} ॥
ढळकै^{२४} गज - ढालां ढूहरियं^{२५} ।
अनडां^{२६} सिरि^{२७} जाणक अच्छरियं^{२८} ॥२॥
पट हत्थ मदोमत्त पक्खरियं^{२९} ।
वन जाण वसंत^{३०} गिरव्वरियं^{३१} ॥
परचंड पटाभर पंथि पुळं ।
किरि जाणि परव्वत अट्ट - कुळं ॥३॥
मलपंति मदोमत्त मैगळयं^{३२} ।
वरखा रित जाणक वडळयं^{३३} ॥
घण भंडा लोड वियंड - घडा^{३४} ।
किरि^{३५} हा दीनक^{३६} पग खडा ॥४॥

१ आ. केतलाई । इ. केतलाई । २ आ.इ. धानंष-धर । ३ इ. केताई । ४ अ. डोमर । ५ अ.आ. गुडे । ६ आ.इ. जिहंगीर । ७ आ.इ. परठियौ । ८ अ.आ. चडे । ९ आ. पुंदांलम । इ. पुदांलम । १० आ.इ. पडियं । ११ अ. भांति । आ. भाति । १२ आ.इ. गुडियं । १३ आ.इ. नीसाण । १४ अ.आ. घुरै । १५ आ. धुवीयंति । १६ इ. आसाढ । १७ आ.इ. घुरै । १८ इ. रिण-तुर । १९ इ. पयंच सव्व । २० आ. वेद । २१ आ.इ. रुडे । २२ इ. गयत्तिग । २३ आ.इ. गडडे । २४ आ.इ. ढलके । २५ आ.इ. ढूहरीयं । २६ अ. अनडा । २७ इ. सिर । २८ आ.इ. अच्छरीयं । २९ आ.इ. पक्खरीयं । ३० आ. वसत । ३१ आ. गिरवरीयं । इ. गिरवरीयां । ३२ आ. मैगलयं । इ. मैगलीयं । ३३ आ. वडलयं । इ. वडल । ३४ आ. विपुंड-घडा । इ. विहंड-घडा । ३५ आ.इ. किरि । ३६ इ. दीनंष ।

काळी घड पावस कंवळयं^१ ।
 बग पंकति^२ दीप दंतुसळयं^३ ॥
 हिलिया^४ भद्र जातिय^५ हींडुलता^६ ।
 परवत्त क पंखिय^७ संजुगता^८ ॥५॥
 थियो^९ चोळ^{१०} सिंदूर कुंभाथळयं^{११} ।
 वन^{१२} गेरुअ^{१३} जाण विभाचळयं ॥
 चींघाळां^{१४} चींघ^{१५} अयास चडे^{१६} ।
 अनली - पंख^{१७} जाण भम अनडे ॥६॥
 घण चम्मर सीस गयंद घटा ।
 जड - धारक मेर विखेर जटा ॥
 गडडति गुडता मत्त - गयं ।
 गरजंतिक^{१८} जाणय^{१९} गोरभयं ॥७॥
 सुंडाळां^{२०} आलम ठल्ल सिरै ।
 ननावधि^{२१} वंसक नंद - गिरै ॥
 घंटा - रव घूघर^{२२} सह हुए ।
 बोलंत विहंगम^{२३} जाण घुवै^{२४} ॥८॥
 पिलवांणां^{२५} आकस पांण धरे ।
 सुज दामणि^{२६} जाणि खिवै^{२७} सिहरै^{२८} ॥
 धज स्याह वरन्नह धम्मळियं^{२९} ।
 परि लाल^{३०} सबज्जह पीयळयं^{३१} ॥९॥
 किरणां रवि कूंत^{३२} करक्कळयं^{३३} ।
 नभ जाणक नाखत्र मंडळयं ॥

- १ इ. कंवलयं । २ इ. पंगति । ३ आ.इ. दंतुसलयं । ४ आ.इ. हिलीया ।
 ५ आ.इ. जाती । ६ आ. हिंडुलता । इ. हीडुलता । ७ आ.इ. पंखी । ८ आ. संजुगता ।
 ९ इ. थियो । १० आ. चोळ । इ. चौ । ११ आ. कुंभाथलयं । इ. कुंभाथलयं ।
 १२ आ.इ. वन । १३ आ. गेरु । इ. गेरुं । १४ आ.इ. चीघाला । १५ आ.इ. चीघ ।
 १६ आ. चडे । १७ आ. अमली-पंख । १८ आ. गरजति । इ. गरजांतिक । १९ आ.इ. जाणो ।
 २० आ.इ. सुडाला । २१ आ. ननावधि । इ. नजावधि । २२ आ. घुघर ।
 २३ आ. विहंगम । २४ इ. घुवे । २५ आ.इ. पीलवांणां । २६ आ.इ. दामणि ।
 २७ आ.इ. खिवै । २८ आ.इ. सेहरे । २९ आ.इ. धम्मलीयं । ३० इ. लाल । ३१ आ. पीपलियं ।
 ३२ इ. कूंत । ३३ आ. करकलयं ।

दुरवेस छिले जिहंगीर दळ ।
हिले सातसमद्र क...हेमजळ ॥१०॥

खूंदालम^१ फौज चडे खडिया^२ ।
असमान क आभा ऊपडिया^३ ॥
पर तारां^४ सीरम साट पडे^५ ।
घज खेडे लागा खंग घडे^६ ॥११॥

नळ वाजि^७ विडंगां राग नरे^८ ।
पारेवर बोलै जेण परे^९ ॥
तेजागळ तेज^{१०} तुरंग तिडे^{११} ।
नाखत्रव जाण निहंग खिडे ॥१२॥

भिरिया^{१२} अहलांणै^{१३} फीण भडे ।
खुरताळे खांना खोण पडे ॥
फडडाटा खंग करे^{१४} फुरणे ।
नडे^{१५} नीर हुवे किरि^{१६} नीभरणे^{१७} ॥१३॥

इळ^{१८} वाज वजावै^{१९} ऊपडता^{२०} ।
रिणतूर नसां भिळजे रुडता ॥
डांगां^{२१} किरि पाउ^{२२} पलंब डहै ।
वाजिद्रक वेग^{२३} विवांण वहै ॥१४॥

असवार दिवांना^{२४} तेज^{२५} तुरी^{२६} ।
खित नांखै^{२७} खंग^{२८} उपाडि खुरी ॥
क्रमिया^{२९} दळ कोअण काबळरा ।
घडकंत रसातळ धूजि^{३०} घरा ॥१५॥

१ आ. पुंदालम । इ. पुदालम । २ आ. पडीया । इ. पडीया । ३ आ. ऊपडीया ।
इ. उपांडीया । ४ आ. पडनारां । इ. पडतालां । ५ आ.इ. पडे । ६ आ.इ. घडे ।
७ इ. वजे । ८ आ.इ. नरे । ९ आ.इ. परे । १० इ. तेग । ११ आ. तिडे । इ. त्रिडे ।
१२ आ. भेरीया । इ. भैरीया । १३ आ. अंलांणे । इ. अंणांण । १४ आ. करे ।
१५ इ. निड । १६ आ. किरि । १७ इ. निभरणे । १८ इ. ईल । १९ इ. वजवे ।
२० आ. उपडता । २१ इ. डाणां । २२ इ. पाऊ । २३ वेग । २४ इ. दीवांना ।
२५ इ. तिज । २६ आ. तुरी । २७ इ. नापै । २८ आ.इ. पंग । २९ आ.इ. क्रमीया ।
३० आ.इ. धूजि ।

गरदां धर अंबर गूंधालियो^१ ।
घमळा - गिर डूंगर^२ घूंधुलियो^३ ॥
कटकां विच मीर सिकार करै ।
म्रिघ^४ नाहर संबर रोभ मरै ॥१६॥

कुदरत्ती कोमंड तांग^५ करै ।
छेदंत विहंग दुहंग^६ सरै ॥
रज धूधळ^७ समूह मिळे रयणं ।
ग्रहपत्ति प्रछन्न थथी गयणं ॥१७॥

परबतां ऊपर^८ पंथ डहै^९ ।
गिरकंदर भंगर मोर गहै ॥
खुरसाण खुरम्म^{१०} सिरै खडियं^{११} ।
उतराधक कंठळ ऊपडियं^{१२} ॥१८॥

भुजिया^{१३} दळ वादळ फौज भडां ।
घण सांवण^{१४} भाद्रव जाण घडां ॥
पमंगं पडताळ^{१५} पयाळ^{१६} प्रमे^{१७} ।
भर भार सिरं^{१८} हर हार भ्रमे^{१९} ॥१९॥

जड ऊबड^{२०} त्रिक्ख^{२१} पडंत जुआ^{२२} ।
है पाए पहाड मसट्ट^{२३} हुआ^{२४} ॥
पति-साहि^{२५} पयाण^{२६} पुरं...^{२७} कियं^{२८} ।
असमानक अस्सणि^{२९} ऊलटियं^{३०} ॥२०॥

१ आ. गूंधालीयां । इ. गुंधलीयां । २ आ. डूंगर । ३ आ. घूधलीया । इ. घुधलीयां ।
४ आ. मृघ । इ. म्रिग । ५ इ. ताण । ६ अ. दहंग । ७ आ. इ. धूल । ८ इ. उपर ।
९ आ. डेहं । इ. डहे । १० इ. पुरंम । ११ आ. इ. षडीयं । १२ आ. इ. उपडीयं ।
१३ आ. इ. भुजीया । १४ आ. आवण । इ. आवण । १५ आ. पडताळ । १६ आ. इ. पयाळ ।
१७ आ. प्रमे । इ. द्रमे । १८ इ. सिर । १९ आ. इ. भ्रमे । २० आ. इ. उबड ।
२१ आ. त्रिष । इ. त्रष । २२ आ. इ. जुआ । २३ आ. इ. मसट । २४ आ. हुआ ।
२५ इ. पतसाहं । २६ इ. पयाण । २७ आ. इ. पुर । २८ आ. इ. कीयं ।
२९ आ. अस्सणि । इ. अस्सण । ३० आ. ऊलटीयं । इ. उलटीयं ।

हूहा

साह दळां जळ साइरां^१, जळहर^२ वूदां^३ धार ।
 अंवर तारां महि त्रणां^४, केही^५ लव्भे पार ॥१॥
 ऊंड-पणी^६ पायाळ^७ में, ऊंच-पणी^८ ब्रह्मंड^९ ।
 असपत्ति आरंभ तप अरक, सर अरजण कोमंड ॥२॥

गाथा

सुरताण^{१०} दळ मेघाण^{११} वद्दळ ।
 सपत समद्र पांणियं^{१२} सयळ^{१३} ॥
 उडियण^{१४} रयणी गयणं^{१५} ।
 कुण संख्या मांत्तव करण ॥१॥
 अग्रे दळाय पांणी मझि दळां ।
 कादमं गहणं ॥
 दळ पुडि उडि^{१६} रेयणं^{१७} ।
 कीतूहळ^{१८} कोडि त्रियासा ॥२॥

कवित्त

नह संख्या कुंजरां, न का संख्या केकांणां ।
 नह संख्या हिंदुवां^{१९}, संख नह^{२०} मुस्सळयांणां^{२१} ॥
 नह संख्या लसकरां, न का संख्या नीसांणां^{२२} ।
 संख न का उमरांन^{२३}, न को^{२४} खानां सुरितांणां^{२५} ॥
 नेजां न संख नेजाइतां^{२६}, न को संख पाई-दळां^{२७} ।
 असपत्ति तणी फीजां असंख, मिळे कहळे मेहळ्ळा ॥१॥

१ इ. सायरां । २ आ. जहर । ३ इ. वूदां । ४ आ. तारां । इ. त्रिणां । ५ आ. केही । इ. केही । ६ इ. उडपणी । ७ आ. इ. पयाळ । ८ इ. उचपणी । ९ आ. ब्रह्मंड । इ. ब्रह्मंड । १० इ. सुरताण । ११ आ. इ. मेघाण । १२ आ. इ. पांणीय । १३ आ. सयलं । १४ आ. इ. उडपण । १५ आ. गयणं । १६ इ. उडी । १७ इ. रयणं । १८ आ. इ. कीतूहलं । १९ आ. हींदुवां । इ. हींदुवां । २० इ. नही । २१ आ. मुसलमाणां । इ. मुसलमाणां । २२ आ. निसाणां । २३ इ. उमरां । २४ आ. न की । २५ आ. सुरिताणं । इ. सुरेताणां । २६ इ. नेजाइता । २७ आ. पाई-दल । इ. पाय-दलां ।

सेना का पड़ाव

खड खूटा^१ जंगले, खूटिगा^२ लाकड ईधण^३ ।
 पांणी खूटा^४ द्रहे, कूप^५ वापी लेखे कुण ॥
 गाहटे गज दळां, कीध कादम्म सरोवर^६ ।
 नह खूटा जळ नयां, जहां संगम रैणायर ॥
 मुक्कांम कीध जोगण - पुरै^७, खूदालम्म^८ लसक्करां^९ ।
 गयाणाग^{१०} किया^{११} गूडे^{१२} खडा, छांह हुई^{१३} सिर डूगरां^{१४} ॥२॥

दूहा

तंबू^{१५} तांण सिराइचा^{१६}, सहू^{१७} छाया वन - खंड ।
 इळ पुडि ईडा^{१८} मेल्लिया^{१९}, किरि व्यायी ब्रह्मंड^{२०} ॥१॥
 फौजां डेरा फाबिया^{२१}, दीसै हद्द विहद् ।
 सबज वरना स्याह व्रन^{२२}, लाल सपेत^{२३} जरद् ॥२॥
 साह बड्ठा सोहिया^{२४}, सभा^{२५} मसंदी^{२६} सज्ज^{२७} ।
 चंद दिपंदा^{२८} वेखिया^{२९}, जांण नखत्रां मज्ज^{३०} ॥३॥
 विवह वरन्ना^{३१} कप्पळ, विवह वरन्नी^{३२} पाग ।
 फजर हुवंदी फूलिया^{३३}, जांण मलूकां^{३४} वाग ॥४॥
 जांमे कसब जडाव नग, मरदां कळा अनूप^{३५} ।
 जोति चिरागां^{३६} जगमगे^{३७}, हेक हुवंदा रूप^{३८} ॥५॥

१ इ. पुटा । २ इ. पुटगा । ३ आ. इ. इधण । ४ इ. पुटा । ५ आ. कूप ।
 इ. कुवां । ६ इ. सरोवरां । ७ आ. जोगण-पुरै । ८ आ. इ. पुदालम । ९ आ. लस-
 कारां । इ. लसकरां । १० आ. गयाणाग । इ. गयाणाग । ११ आ. इ. कीया । १२ आ.
 गूडर । इ. गुडर । १३ आ. इ. हुई । १४ आ. डूगरां । इ. डूगरां । १५ इ. तंबू ।
 १६ इ. सिराइचा । १७ इ. सहू । १८ इ. ईडा । १९ आ. मेल्लिया । इ. मेलीया ।
 २० आ. ब्रह्मंड । इ. ब्रह्मंड । २१ आ. इ. फाबीया । २२ आ. वरना । इ. वना ।
 २३ इ. सफेद । २४ आ. सोहीयो । इ. सोहीयो । २५ आ. इ. छाभा । २६ इ. समंदी ।
 २७ आ. इ. संभ । २८ आ. दीपदा । २९ आ. इ. वेपीया । ३० आ. इ. मंज ।
 ३१ आ. वरना । इ. वरना । ३२ आ. वरन्नी । इ. वरन्नी । ३३ आ. इ. फूलीया ।
 ३४ मलूकां । ३५ इ. अनूप । ३६ इ. चौराकां । ३७ आ. जगमगे । ३८ आ. इ. रूप ।

काइव

सिंघासणौ वा इंद्रासणौ वा, प्रिथीपती^१ वा सरगपती वा ।
भ्रितं सुरो वा भ्रितं नरो वा, दिलीसरी वा जगदीस री वा ॥१॥

गाथा

वंसौ वधति^२ बहुअं, अंतर^३ गति गंठि^४ वेध उतपत्नी ।
संजोगि^५ अगनि^६ पतंगी^७, प्रजळय^८ अप मज्जेण ॥१॥
पितह पुत्र विरोधे, भ्रितह सोम^९ विग्रहे भ्राता ।
सजण जणा^{१०} निक्रोधे^{११}, खिम्या^{१२} समौ भेख जो नथि ॥२॥
जुअलं^{१३} हिंदुसथानं^{१४}, घात सपत दीप सपतमै ।
प्रबळ उपद्रह पेखे, खिति^{१५} डोलियं^{१६} सीस खुरसाणं^{१७} ॥३॥

बूहा^{१८}

दिलीसां भला भावता, खून्दाळम^{१९} खंधार ।
मांडव साहं खुरम्म रा, आया खब्बरदार ॥१॥
खुरम कटक्के अगळी, साह दळे असमान ।
मूळ न मावै मारका, दोय^{२०} खंडा इक म्यांन^{२१} ॥२॥
खालिक^{२२} खुरम न मन ही, नह मन्नै पीरांह ।
ऊभौ^{२३} खांडे ऊभियो^{२४}, आडी हम्मीरांह ॥३॥
कळि^{२५} लग्गी सुरताण घर, हैवे हुवा^{२६} उदास ।
तव कहा दीजे^{२७} थिगडी^{२८}, जव फट्टै आकास ॥४॥

गाथा चौसर

सुणि सुरताणं^{२९} खुरम सुरताणं^{३०}, करि कामंति^{३१} धुके बाणं ।
आगम वोलै वेद पुराणं, खागै आवटिस्वै खुरसाणं ॥१॥

१ इ. प्रिथीपति । २ इ. वधती । ३ इ. अंतरि । ४ इ. गंठ । ५ इ. संजोग ।
६ इ. अगनि । ७ अ. पतंगी । ८ इ. प्रजालयं । ९ इ. सम । १० इ. जण । ११ आ.
निक्रोध । इ. निकीवे । १२ इ. प्यमा । १३ इ. जुअल । १४ आ. हिंदुसथानं ।
इ. हिंदुसथानं । १५ इ. पितं । १६ आ. इ. डोलीयं । १७ आ. इ. पुरसाणं । १८ इ.
बूहा । १९ आ. इ. पुदालम । २० आ. दोइ । २१ आ. इ. एक । २२ इ. पालक ।
२३ आ. इ. उभौ । २४ आ. उभीयो । इ. उभीयै । २५ इ. कल । २६ आ. हुवा ।
इ. हुवा । २७ अ. दीजे । २८ आ. थिगडी इ. थिगडी । २९ आ. सुरिताण । इ. सुर-
ताण । ३० इ. सुरताणं । ३१ इ. कामंति ।

नरां नरिदां^१ पार न लब्धै, वीरति^२ खुरम विदेवा विब्धै ।
 साहतणो घर^३ फाटो सब्धै, ऊमर^४ माड पडै की अब्धै ॥२॥
 लाखां स्यांन असंखां लसकर, बांह^५ लहै दुहूं लाख बहादर ।
 आरंभ खुरम किया^६ आडंबर, चालण चाळा दीनी चादर ॥३॥
 खंभूठाणां^७ गयंद खडोए, पावस जाण^८ परबत धोए ।
 डैचाळां सिर^९ ढल्लां सोए, पक्खर रोळ पंगंगां होए ॥४॥

खुरम री सेना री कूच

छंद ऊधोर

हुओ^{१०} खुरम हय असवार । वाजत्र वाजिया^{११} तिण वार ।
 रोड दमांम बंब रवह । सारस जाण बोलै सह ॥१॥
 तडडै बुरंग त्रास निफेर^{१२} । भाहर सह वाजै^{१३} भेर ।
 घुरि निसाण^{१४} नीवत^{१५} घाइ^{१६} । साद सुहामणा^{१७} सहनाइ^{१८} ॥२॥
 चडिया^{१९} भड तुरे चड चोट । काळी घूस^{२०} ऊपंड^{२१} कोट ।
 वागा^{२२} जोड फौज वणाव । दम्भै दगगियो^{२३} दरियाव^{२४} ॥३॥
 खुर रव खंग डंबर खेह । मिलिया^{२५} जाण बारह मेह ।
 ऊलटि^{२६} सै नमै अखियात^{२७} । सायर^{२८} जाण^{२९} फाटा सात ॥४॥
 हिलिया^{३०} खंभूठाणां हुंत^{३१} । आगळि^{३२} सिघली^{३३} अदभूत^{३४} ।
 ऊंतग स्यांम गति^{३५} अजब्ब^{३६} । पावस जाण धोया पबब ॥
 महोमत्त खंभ मरोड । जूह वहंति^{३७} गैतूळ^{३८}-जोड ।
 मस्सी वरन^{३९} मह मसत्त^{४०} । पांखां^{४१} उड्डिया^{४२} परबत्त ॥६॥

१ आ.इ. नरिदां । २ इ. विपरीत । ३ इ. घरि । ४ आ.इ. उभर । ५ इ. बाह ।
 ६ आ.इ. कीया । ७ इ. खंभूठाणां । ८ इ. जाणि । ९ आ. सिरि । १० इ. हुओ ।
 ११ आ. वाजीया । १२ इ. नफेरि । १३ आ. गजेय । इ. वाजैय । १४ आ.इ.
 निसाण । १५ आ. नीवति । इ. नीवत्ती । १६ इ. घाई । १७ इ. सुहमणी । १८ इ.
 सहनाई । १९ आ.इ. चडिया । २० इ. घ्रह । २१ आ. उपडि । इ. उपर । २२ इ.
 वागां । २३ आ. दगगीयो । इ. दगगीयो । २४ आ.इ. दरियाब । २५ आ.इ. मिलीया ।
 २६ आ.आ. उलट । २७ इ. अषियात । २८ आ. साइर । २९ आ.इ. जाणि । ३० आ.
 हिलीया । इ. हेलीया । ३१ आ.इ. हुंत । ३२ आ. आगल । ३३ आ.इ. सिघली ।
 ३४ इ. अदभूत । ३५ इ. गीति । ३६ आ. अजिब । ३७ आ. वहवृति । इ. वहवहंत ।
 ३८ आ.इ. गैतल । ३९ इ. वरन । ४० इ. मसंत । ४१ आ. पांखां । इ. पांखां । ४२ आ.
 उडीया । इ. उडीयां ।

चडिये^१ गयण गज चीधांह । गुड्डी^२ जाण^३ फव्वि गिरांह ।
वाजे^४ वीरघंट^५ विसाल । पक्खर पूठि^६ घूघर-माळ^७ ॥७॥

ओप^८ सिंदूर तेल अपल्ल । गडडे^९ वाज ढळकै ढल्ल ।
वहता विडंग^{१०} दाखै वेग । मारुत पेरियो^{११} किरि मेग^{१२} ॥८॥

है-थट समद^{१३} जाण^{१४} हिलोळ । पमगां^{१५} हमस^{१६} पक्खर रोळ ।
क्रमते खुरमरे^{१७} कटकेह । वसुधा वीखणी^{१८} विडंगेह ॥९॥

गिरवर डहर भंगर गाहि^{१९} । पाघर किया^{२०} पमंगा^{२१} पाहि^{२२} ।
थट्टे^{२३} ऊलटा गज - थाट । वहता करे ऊजड^{२४} वाट ॥१०॥

घरत्ती^{२५} घमस^{२६} तुरियं^{२७} घाउ । आकंप^{२८} हैकंप^{२९} अहिराउ^{३०} ।
घसमस^{३१} घरणि फीजां^{३२} घूस^{३३} । गजदळ गरट थाट गडूस ॥११॥

खेडे खुरम लसकर खूब^{३४} । अंबर वहै^{३५} जाण^{३६} ऊब^{३७} ।
फोरे^{३८} खुरी फरहरताह । घोडा रहे घरहरताह ॥१२॥

खित पुडि^{३९} पडी भांति खुरांह^{४०} । तीना ऊरवरवं तुरांह ।
तपिण^{४१} ताळुए उत्तंग । पोसे मुहे^{४२} लोह पवंग ॥१३॥

तेजी तापडंत ततार । ऊपर^{४३} आवळा असवार ।
विडंगां दोड दडवडतेह । फुरणे^{४४} नास फडहडतेह ॥१४॥

ताकुर^{४५} खडे पाखर सेर । फीजां वहै जोजण फेर ।
भल असवार भलहोडेह^{४६} । घमघम कैजमां^{४७} घोडेह ॥१५॥

१ आ. घ. चडिये । २ आ. घ. गुड्डी । ३ आ. जाण । ४ आ. जाणि । ५ आ. वीरघंट ।
६ आ. पुठि । ७ आ. घ. घूघर-मान । ८ आ. घ. ओप । ९ आ. मडडे । १० आ. विडंग ।
११ आ. घ. पेरियो । १२ आ. वेग । १३ आ. समद । १४ आ. जाणि । १५ आ. पमगां ।
१६ आ. हमस । १७ आ. घ. घुरमरे । १८ आ. वीखणी । १९ आ. गाहि । २० आ. घ. किया ।
२१ आ. घ. पमगां । २२ आ. पाहि । २३ आ. घ. थट्टे । २४ आ. घ. ऊजड । २५ आ. घ. घरत्ती ।
२६ आ. घ. घमस । २७ आ. घ. तुरियं । २८ आ. घ. आकंप । २९ आ. घ. हैकंप । ३० आ. घ. अहिराउ ।
३१ आ. घ. घसमस । ३२ आ. घ. फीजां । ३३ आ. घ. घूस । ३४ आ. घ. खूब । ३५ आ. घ. वहै ।
३६ आ. घ. जाण । ३७ आ. घ. ऊब । ३८ आ. घ. फोरे । ३९ आ. घ. पुडि । ४० आ. घ. पडी ।
४१ आ. घ. तपिण । ४२ आ. घ. मुहे । ४३ आ. घ. ऊपर । ४४ आ. घ. फुरणे । ४५ आ. घ. ताकुर ।
४६ आ. घ. भलहोडेह । ४७ आ. घ. कैजमां ।

भलहल बूग साबल^१ भूल । गुडिली^२ गयण मिलि गोधूल^३ ।
 ऊपर^४ रजी^५ धार अंधार । दीडे^६ खुरमरा दलकार^७ ॥१६॥
 पमंगां^८ पछट^९ खेहां पूर^{१०} । सूभै नहीं अंबर सूर ।
 खिडिया^{११} खुरमरा खरहंड । वसुधा धूघाला^{१२} ब्रह्मंड^{१३} ॥१७॥
 परबत गहीजै^{१४} पाय^{१५} । थरहर भोम हैकंप थाय^{१६} ।
 सीरम सेट^{१७} वाजै^{१८} साट । भरहर पसर हेमर भाट ॥१८॥
 गडडै गयंद करता गोडि । रुडता दमांमां हुय^{१९} रोडि ।
 द्रम्मी^{२०} वाज^{२१} घोडा दीडि^{२२} । पत्थर पंथां^{२३} भाजै पौडि^{२४} ॥१९॥
 हैथट हमस^{२५} हाहस होय । कटकां^{२६} ग्यांन संख न कोय^{२७} ।
 लैणां^{२८} चलै^{२९} बल - बल लूर । खान पठांण लसकर खूर^{३०} ॥२०॥
 तांणै^{३१} मीर तीर धनंख । पाडै^{३२} गयण हुंता^{३३} पंख ।
 दिस-दिस^{३४} मारिजै तिण दीह । सूअर^{३५} रोभ सांबर सीह ॥२१॥
 साहण^{३६} सेन सब^{३७} चढियाह^{३८} । आभा जांण ऊपडियाह^{३९} ।
 आयो^{४०} खुरम कर^{४१} इलकार । कोटां हुओ^{४२} हाहाकार ॥२२॥

गाहा चौसर

गढ मांडव^{४३} बहुता^{४४} गुडि^{४५} पक्खरि । पूरै पारंभ दिल्ली^{४६} ऊपरि^{४७} ।
 भंग अजै - गढ तोडै सैभरि^{४८} । खुरम खडे आयो रिणथंभरि ॥२३॥

१ इ. भाबल । २ आ. गुडली । ३ आ. मिलिगो । इ. गोमिलि । ४ आ. उपरि ।
 इ. उपडि । ५ इ. घोर । ६ इ. दोडे । ७ आ. हलकार । ८ आ. पवंगां । इ. पवंगां ।
 ९ आ. इ. पछटि । १० इ. पुर । ११ आ. इ. पिडिया । १२ आ. इ. धुघला ।
 १३ आ. इ. ब्रह्मंड । १४ आ. गहिजै । इ. गार्जै । १५ आ. पाइ । इ. पाई । १६ आ.
 थाइ । इ. थाई । १७ आ. इ. सेट । १८ आ. वाजे । १९ आ. हुइ । इ. हुई । २० आ.
 द्रमी । इ. द्रमीं । २१ आ. इ. वाजि । २२ इ. दीडि । २३ आ. पंथं । इ. पंथं ।
 २४ इ. पोडि । २५ इ. हसम । २६ आ. कुटका । इ. कटके । २७ आ. इ. कोइ ।
 २८ इ. लीणां । २९ आ. इ. चले । ३० इ. पुर । ३१ आ. इ. तांणो । ३२ इ. पाडे ।
 ३३ आ. हुंता । इ. हुता । ३४ आ. दिसि दिसि । इ. दीस दीस । ३५ इ. सूवर ।
 ३६ आ. सांहण । ३७ आ. सब । इ. सब । ३८ आ. चढियाह । इ. चढियाह ।
 ३९ आ. इ. उपडियाह । ४० इ. आयो । ४१ आ. इ. करि । ४२ आ. हुओ । इ. हुओ ।
 ४३ आ. इ. मांभ । ४४ आ. इ. बहुता । ४५ आ. इ. गुडि । ४६ आ. दिली । इ. दीली ।
 ४७ आ. इ. उपरि । ४८ आ. सैभरी । इ. सैभर ।

पसर पमंगां^१ भंग पहाडे^२ । चहुं^३ दिसि^४ प्रजा अलंगां चाडे ।
 आयी खुरम खडग उप्पाडे । कोटां जडिया^५ कुलफ किमाडे^६ ॥२॥
 भिडे^७ साहु-सूं^८ आपो^९ भांणी । जालिम खुरम करे जुलमांणी ।
 भोम पडे^{१०} नवखंड भगांणी^{११} । माथे दिल्ली गाढ मंडाणी^{१२} ॥३॥
 मूकयी खुरम हुकम मेडती । रांणै^{१३} “भीम” दिसी रिण रत्त ।
 वपि वांकम^{१४} साढूळ^{१५} वहत्त । तूं अजमेर करे गढ फत्त ॥४॥

भीम सीसोदिया री सेना री वरणण

गाहेवा^{१६} अजमेर गिरव्वर । सूं^{१७} साढूळ माडंवा सम्मर ।
 करग उपाडे “भीम” किरम्मर । वधियौ^{१८} बांमण^{१९} जेम विकोदर ॥५॥
 ईसर भीम पिथै कुल मोडे^{२०} । खुरम सहाय^{२१} खत्रीवट घोडे^{२२} ।
 सीसोदी^{२३} सांमंत^{२४} सजोडे^{२५} । रांणी^{२६} पडगरियो^{२७} राठीडे^{२८} ॥६॥
 मांभी^{२९} मोगर थटां मोडी^{३०} । घाते^{३१} लखां दळां विच^{३२} घोडी^{३३} ।
 देसां दसां ऊपर दौडी । चढियो^{३४} कलि चालण चीतोडी^{३५} ॥७॥

छंद अडित

असि भीम चडे । असमांन अडे ।
 दम्मांम सदं । नीसांण नंदं ॥१॥
 रिणतूर रुडे । गजथाट गुडे ।
 दळ ऊलटियं^{३६} । गिर गाहटियं^{३७} ॥२॥
 किरि हेम हिलै । सांमंत छिलै ।
 ताजंत तुरी । मुख वंकि दुरी ॥३॥

१ आ. पवंगा । इ. पवंगां । २ आ. पहाडे । ३ आ. चिहुं । इ. चिहूं । ४ आ. दिशि । इ. दिस । ५ आ. इ. जडिया । ६ आ. इ. कमाडे । ७ आ. भिड । इ. भिडण । ८ आ. सा सु । इ. साहुसुं । ९ इ. आपां । १० अ. पडे । इ. करे । ११ अ. भगाणी । १२ इ. मंडाणी । १३ इ. राणी । १४ आ. इ. वांकम । १५ आ. साढुल । १६ आ. इ. गहेवा । १७ आ. इ. सूं । १८ आ. इ. वधियो । १९ आ. इ. वामण । २० आ. इ. मोडे । २१ आ. साहइ । इ. सहाई । २२ आ. इ. घोडे । २३ आ. सीसोदी । इ. सीसोदी । २४ इ. सामंत । २५ इ. सजोडे । २६ आ. राणी । २७ आ. इ. पडग-रियो । २८ आ. इ. राठीडे । २९ इ. मोभी । ३० आ. इ. मोडी । ३१ आ. घाते । इ. पाते । ३२ इ. वीच । ३३ इ. घोडी । ३४ आ. इ. चढियो । ३५ आ. चीतोडी । इ. चीतोडी । ३६ आ. इ. उलटियं । ३७ आ. इ. गाहटियं ।

असि नास तिडे^१ । खरहंड खिडे^२ ।
 पायाळ द्रमे^३ । सिरि^४ सेस अमे^५ ॥४॥
 है हींस हुअं । भैभंग भुअं^६ ।
 भुज फौज भडां । घण रूप घडां ॥५॥
 पडताल तुरे^७ । मिळि खेह^८ खुरे ।
 रज - डंबरयं । ठकि अंबरयं ॥६॥
 है थाट हुबै^९ । नीसांण घुबै ।
 भद्र - जात भलं । ठळकंत ठलं ॥७॥
 वाजंत द्रमी । हैकंपि^{१०} जमी ।
 हिल हैमरयं । लख पक्खरयं ॥८॥
 फांवतं गजं । फररंत धजं ।
 गुडि गैमरयं । किरि भक्खरयं ॥९॥
 गिर भंगरयं । थिय^{११} पद्धरयं ।
 पुळि जंगमयं । रुळि कैजमयं ॥१०॥
 चतुरंग दळ^{१२} । दधि^{१३} जाण^{१४} हलं^{१५} ।
 पैमाल घरां^{१६} । दस देस खरां ॥११॥
 असि वेग वहै । गिरि^{१७} खंग गहै ।
 रवि रेण^{१८} भिल्लै । मिहि^{१९} मैन मिळै ॥१२॥
 दुइदूण दिसा । रजधूळ निसा ।
 भिल्लि भूळ भरां^{२०} । तुडि वाजि तरां^{२१} ॥१३॥
 असमान फटा । किरि मेघ^{२२} घटा ।
 गज गोडि करै । मद-दाण^{२३} भरै ॥१४॥
 दळ देख डरै । अघि^{२४} मूंक मरै ।
 भिल्लि भोमि^{२५} तणी । पुडि वोम पणी ॥१५॥

१ आ.इ. त्रिडे । २ आ.इ. षिडे । ३ आ.इ. द्रमे । ४ इ. सिरि । ५ आ. अमे ।
 इ. अमे । ६ आ. भूअं । ७ आ.इ. तुरे । ८ इ. पे । ९ आ.इ. घुबे । १० आ.
 हकंपि । ११ आ. थोय । १२ इ. दधी । १३ इ. जाण । १४ आ. हलां । इ जलां ।
 १५ इ. घरा । १६ इ. गिरि । १७ आ.इ. रेण । १८ इ. मिह । १९ इ. तरां ।
 २० इ. तुरां । २१ आ. मेघ । २२ अ. सद-दाण । २३ अ. अग । २४ इ. भोम ।

फुण^१ नागि निमै^२ । गयणागि^३ गिमै^४ ।
 रज पीजरयं । हय हींजरयं ॥१६॥
 सट सीरमयं^५ । असि ऊरमयं^६ ।
 क्रमि कोअणयं । लख सांहणयं ॥१७॥
 धू - मस धडै^७ । खुमांण^८ खडै ।
 खडि - वाह^९ कियं^{१०} । भेलहांण लियं^{११} ॥१८॥
 भीमेण भडं । ओपियै^{१२} अनडं^{१३} ।
 चीतौड^{१४} धणी^{१५} । मुख मूछ^{१६} वणी ॥१९॥
 वन प्रज्जळयं । किरि मंगळयं ।
 नर सिंघ रुखं । थियौ^{१७} पंच-मुख ॥२०॥
 भुज नीम जयं । दिठ^{१८} दाखवियं^{१९} ।
 सादूल दुडे^{२०} । पाहाड^{२१} पुडे^{२२} ॥२१॥

सादूल सौंघ री पलायन

कवित्त^{२३} छप्पै

पाहाडै^{२४} सादूल^{२५} । भाजि चढियौ^{२६} भिडवायी ।
 चीतौडौ^{२७} चतुरंग । भीम दळ मेले आयौ ।
 वळि वोलै^{२८} सीसोद^{२९}, मूछं^{३०} वळ^{३१} घालै^{३२} मच्छरि^{३३} ।
 अभै-दांन आपियौ^{३४}, आव^{३५} पैलालि विनौ करि^{३६} ॥

सोभाग^{३७} सजीवन औखधी^{३८}, तिण कारण तुडि वत्थ भरि ।
 अजमेर उपाडिस^{३९} काइ^{४०} अनड, पवै-द्रोण हणमंत परि ॥२१॥

१ अ. फुल । २ आ. निमे । ३ आ. गयणाग । ४ आ. गिमे । ५ आ. सीमयं ।
 ६ इ. उरमयं । ७ इ. धूडै । ८ इ. पुमांण । ९ इ. खडवाह । १० आ. इ. कीयां ।
 ११ आ. इ. लीयं । १२ आ. ओपीयै । इ. ओपीयै । १३ आ. अनड । इ. अनड । १४ आ.
 चीतौड । इ. चित्तौड । १५ आ. धणी । १६ इ. मुख । १७ आ. इ. थियौ ।
 १८ आ. इ. दिठ । १९ आ. इ. दाखवीय । २० अ. दुडै । २१ आ. पहाड । इ. पहाड ।
 २२ अ. पुडै । २३ आ. इ. कवित्त । २४ आ. इ. पहाडे । २५ इ. सादुल । २६ आ. इ.
 चढीयौ । २७ आ. चीतौडौ । इ. चित्तौडौ । २८ आ. वोलै । २९ आ. सीसोद ।
 ३० आ. इ. मुख । ३१ इ. वलि । ३२ आ. इ. घालै । ३३ आ. इ. मच्छरि । ३४ आ. इ.
 ओपीयौ । ३५ आ. इ. आवि । ३६ इ. विनोकरि । ३७ इ. सोभाग । ३८ आ. इ.
 ओखधी । ३९ आ. उपाडीस । इ. उपडसी । ४० इ. काई ।

अजमेरा ऊतरे^१, कमळ कू^२ बोल चडावे^३ ।
 मेलिह^४ पराक्रम मछरं, कुळह काळवख^५ लगावे^६ ॥
 जत्त सत्त गरुअत^७, तजे^८ पौरस आपांणी ।
 अडप छाडि अहंकार^९, हुए^{१०} बळ - हीण निमांणी ॥
 निज सीस नमै^{११} जळ निगमें^{१२}, पुणी^{१३} सौंस^{१४} वीआपरी ।
 लुघ^{१५} तूळ^{१६} हुए^{१७} लज्जावियी^{१८}, नाम सिंघ सादूळरी ॥२॥
 तेज रोस तांमंस^{१९}, सत्त सूरतन छोडे ।
 सबळ-पणी^{२०} मेलिहयी^{२१}, नहीं^{२२} लाह थळ संकोडे^{२३} ॥
 लोभ मोह - बंधणी, गयी गळ बंधण बध्धी ।
 जिह^{२४} भखतौ आंमंख^{२५}, तेह दंतै त्रिण खध्धी ॥
 गह दाख^{२६} गीत^{२७} गावाडतौ, तू^{२८} राठीडां ईढ-गर^{२९} ।
 "सादूळ" न एतौ गरबियी^{३०}, गरब पहारी ईसवर^{३१} ॥३॥

इहा

खुरम पौहतौ सीकरी, है खडिऐ^{३२} इळकार ।
 भूभांरे गढ़ भल्लिया^{३३}, नह भल्ली^{३४} तरवार ॥१॥
 सादूलै संकळ सहै^{३५}, तोडे लाज^{३६} जंजीर ।
 स्रोण सलो-भी^{३७} चीतवे^{३८}, गिणी^{३९} निलो-भी^{४०} नीर ॥२॥
 उतारै^{४१} अजमेर सू^{४२}, खुरम सनमुख^{४३} आंण^{४४} ।
 कर साहे "सादूळ" नुं, खेलायो^{४५} खूमांण^{४६} ॥३॥

१ आ. उतरे । इ. ऊतरे । आ.इ. कु । ३ आ.इ. चडावे । ४ इ. मेलि । ५ आ. कालक । इ. कालंक । ६ आ.इ. लगावे । ७ इ. गरुअत । ८ आ.इ. तजे । ९ आ.इ. अहंकार । १० इ. हुए । ११ आ. नमे । इ. निमै । १२ आ.इ. नीग । १३ आ. पूणी । इ. पूणी । १४ आ.इ. सांस । १५ इ. लुघु । १६ इ. तुल । १७ इ. हुवे । १८ आ.इ. लजावीयी । १९ आ. नामंस । २० आ.इ. पण । २१ आ.इ. मेलिहयी । २२ आ. न । इ. ने । २३ आ.इ. संकोडे । २४ आ.इ. जेह । २५ इ. आंमंख । २६ आ.इ. दाषि । २७ इ. गित । २८ इ. तु । २९ आ.इ. इढ गर । ३० आ.इ. गरबीयी । ३१ आ. इसवर । ३२ आ. हैखडीय । ३३ आ.इ. भल्लीया । ३४ आ.इ. भल्लीया । ३५ इ. सहै । ३६ इ. लात । ३७ आ. सलोणी । ३८ आ. चीतवे । इ. चितवे । ३९ आ.इ. गिणे । ४० इ. न लोभी । ४१ आ. उतारे । इ. ऊतारे । ४२ इ. सुं । ४३ इ. सनमुंष । ४४ आ.इ. आणि । ४५ आ. पेलायी । इ. पैलायी । ४६ आ.इ. पुमांणि ।

लाख लसकर ऊदडे^१, चढिया^२ घोडां चूच^३ ।
जंगम जोगण - पुर दिसा, खुरम खडे^४ दर - कूच ॥४॥

खुरम री सेना री दिल्ली री ओर कूच

छंद मथाण

काबल्ली चूच^५ । खडे दर - कूच ।
सहू^६ सुरताण । खडे खुरसाणं ॥१॥
खुरम्म^७ खंधार । उलट्टि अपार ।
गरज्जि निसाण । करै^८ असमाण ॥२॥
दमांमां^९ चंड । घुवै^{१०} ब्रह्मंड^{११} ।
क्रमै^{१२} दळकार । गुडै^{१३} गज-भार ॥३॥
तुरां पडताळ । घडाविक^{१४} पयाळ ।
डरै दस-देस^{१५} । तपै^{१६} फुण सेस ॥४॥
क्रमंत केकाण । क वोम विवाण ।
वहै वरहास । धमंता^{१७} नास ॥५॥
सिरंमां^{१८} साट । हुवै^{१९} हाय-थाट ।
धरा रज - धूळ । मुडै^{२०} त्रिख^{२१} मूळ ॥६॥
पअवखर-रोर^{२२} । लसकर लोर ।
क्रमै^{२३} दळ कोम । गह-मह^{२४} गोम ॥७॥
गरज्जंत नाग । किरै^{२५} गयणाग ।
सयंकळ^{२६} तोड । करै तळ-जोड ॥८॥
गुडै गज - रूप । क मैघ सरूप ।
गयंद गडाड । प्रतक^{२७} पहाड ॥९॥

१ आ.इ. उपडे । २ आ. चढीया । इ. चडीया । ३ आ. चूच । इ. चुच । ४ आ. पडे । ५ इ. चुंच । ६ आ.इ. सहू । ७ आ. पुरम । इ. पुरंम । ८ आ.इ. करे । ९ इ. दमांमां । १० आ. घुवे । इ. घूवे । ११ आ. ब्रह्मंड । इ. ब्रह्मंड । १२ आ.इ. क्रमे । १३ आ.इ. गुडे । १४ आ. घडकी । इ. घडकि । १५ इ. दसरेस । १६ आ.इ. तपे । १७ आ.इ. धमता । १८ आ.इ. सीरमां । १९ आ.इ. हुवे । २० इ. मुडे । २१ आ. विप । इ. वप । २२ आ. रार । इ. रोल । २३ आ.इ. क्रमे । २४ आ. गव्यमह । २५ आ.इ. किरै । २६ इ. सधकल । २७ आ.इ. प्रतिक ।

दिपै^१ गय दंत । घटा बग - पंत ।
 सळक्क समूह । हयत्थट हूह ॥१०॥
 वसुध्वा वट्ट । पैमाल पहट्ट ।
 गोधूळ गरह । पाखे गय - मद्द ॥११॥
 छिले^३ दधि छीळ । दळां वधि लोळ^३ ।
 पवंगां^४ पाइ^५ । पडै खड हाई^६ ॥१२॥
 घुजे^७ घमहम्म । वाराह कुरम्म^८ ।
 कटक्कह - बंध । सप्तह सिध^९ ॥१३॥
 चले चतुरंग । मुक्त कुरंग ।
 उरव्वड^{१०} अस्स^{११} । घरा घसमस्स^{१२} ॥१४॥
 हैपाइ^{१३} हमस्स^{१४} । घाइट घमस्स ।
 गाहत अलंग । पहाड सिरंग ॥१५॥
 है - थाट हसम्म^{१५} । हालंत हैजम्म^{१६} ।
 नगरां नद्द । गिरा पड-सद्द^{१७} ॥१६॥
 गयंद गुडंत । निसाण रुडंत^{१८} ।
 तूरी दवडंत । घरा घडडंत ॥१७॥
 कटक्क क्रमंत । भाला चमकंत ।
 खडै^{१९} खरहंड । खळव्वल खंड ॥१८॥
 वसध्वा वाज । गिरव्वर गाज ।
 दगगे देम । जळानिध^{२०} जेम ॥१९॥
 तुरां उखरंब । उडंत^{२१} दिडंब ।
 अघार उधोळ । घारा घमरोळ ॥२०॥
 कटक्क कांधार । समूह^{२२} सेलार ।
 पयाण करंत । मेल्हाण दियंत ॥२१॥

१ इ. दियै । २ आ.इ. छिले कि । ३ आ. लील । ४ आ. पवंगा । ५ आ. पाई ।
 ६ आ.इ. हाई । ७ आ. घूजे । इ. घूजे । ८ आ. कुरम । इ. कुरम । ९ आ. सिध ।
 १० आ. उरवड । इ. उरवडि । ११ आ. अस्सि । १२ आ. घसमसि । १३ इ. पाई ।
 १४ आ.इ. हमस । १५ आ.इ. हसंम । १६ आ. हैजंम । इ. हैजंम । १७ आ.इ. पडिसद
 १८ आ.इ. रुडति । १९ आ.इ. षडे । २० आ. जलनिध । २१ इ. उडंति ।
 २२ समुह ।

फौज रौ पड़ाव

कवित्त छप्प

पतिसाहां दळ पडे^१, उभै मेहल^२ अहिनांणै^३ ।
 जमीदोज किय^४ खडा, गयण छायाी समियांणै^५ ॥
 धौळा कप्पड कोट, जांणि घमळा - गिर धारां ।
 निसाचारा^६ कै प्रळै, वंस किरि भार अडारां ॥
 जीहां^७ खुरम्म ऊपर^८ जमी^९, दोई^{१०} खुंदालम^{११} आहुडे^{१२} ।
 मुक्काम किया^{१३} दिल्ली-मंडळ, आसमान^{१४} गूडर^{१५} अडे^{१६} ॥१॥
 वे घुरत्ति नौबत्ति, तूर^{१७} दम्मांम त्रिधाई ।
 तबल ताळ कंसाळ, भरे^{१८} बरधू^{१९} सहनाई ।
 चौघडियो^{२०} नौसांण^{२१}, रोड^{२२} रिणतूरां आगळ^{२३} ।
 मही धूम - मत्थांण^{२४}, कन्ह अवतार क गोकळ ॥
 दहलिया^{२५} तांम च्यारै दिसी^{२६}, दस द्रिग-पाळ^{२७} डरप्पिया^{२८} ।
 जुध करण एक^{२९} जोगण - पुरहि, बेयतिसाह अडप्पिया^{३०} ॥२॥
 हुई^{३१} हालोहळ^{३२} सबळ, धुरै निसांण नगारा ।
 करै^{३३} कोप क्रामत्ति^{३४}, कथन बोलंत करारा ॥
 गज्जनाळ^{३५} गडिअडे^{३६}, भार मत्थै गज - भारां ।
 चौकी फौज चडंत, भूल भूठां जूभारां^{३७} ॥
 असमान^{३८} उभैदळ ऊलटा, उदधी^{३९} जांण उलट्टिया^{४०} ।
 पाधरै खेत पतिसाह वे, नेजा गाडि निहट्टिया^{४१} ॥३॥

१ अ. पडे । २ अ. माहल । आ. महल । ३ आ.इ. अहिनांणै । ४ आ. कीय ।
 इ. कीया । ५ आ. समयाणै । इ. समीयांणै । ६ इ. निसचरा । ७ आ.इ. जिहां ।
 ८ आ.इ. उपरि । ९ इ. जमी । १० आ. दोइ । इ. दोय । ११ आ.इ. पुदालम ।
 १२ आ. आहुडे । इ. आहुडे । १३ आ.इ. कीया । १४ आ.इ. असमान । १५ आ.
 गूडर । इ. गुडर । १६ आ.इ. अडे । १७ इ. तुर । १८ अ.आ. भरे । १९ इ. बरधू ।
 २० आ.इ. चौघडीयो । २१ इ. निसांण । २२ आ. रोड । २३ इ. अगल । २४ अ.
 धूम-मत्थांण । २५ आ.इ. दहलीया । २६ इ. दीसि । २७ इ. द्रीगपाल । २८ आ.इ.
 डरपीया । २९ इ. एक । ३० आ.इ. अडपीया । ३१ इ. हुई । ३२ इ. हालीहल ।
 ३३ इ. करे । ३४ इ. क्रमंति । ३५ आ. गजनालि । इ. गजनाल । ३६ आ.इ. गडीअडे ।
 ३७ आ.इ. भूभारां । ३८ आ. असमांण । ३९ आ.इ. उदधि । ४० आ. उलटीयां ।
 इ. उलटीया । ४१ इ. निहटीया ।

तव खूरम^१ सुरताण, खानखांना ले सत्यह ।
 उभै मेक जोजन^२, पूठि रहियौ^३ भारत्यह ॥
 “भीम” राणा खूमाण^४, बियौ विकमाइत^५ बंभण^६ ।
 त्रियौ खान दाराव, मुहर मंडै कळि मत्थण ॥
 जिहंगीर खुरम जुडसी उभै, साखी^७ चंद दुडिंद^८ सुर ।
 जोगणी - पीठ निहटा जवन, किर हथणापुर पंड कुर ॥४॥

कुर पंडव कळहिया^९, उभै कुर - खेत रिणंगण^{१०} ।
 हुओ^{११} जांम भारत्य, खपे अड्डारह खोहण^{१२} ॥
 जुजठिलह^{१३} दुज्जोण^{१४}, मारि हथणा-पुर लीघी^{१५} ।
 भीखम द्रोण करन, कळह अरजण सुं^{१६} कीघी ॥
 बोळंत^{१७} सकति मो वळि^{१८} हुई, सुभट असंखां संधरे^{१९} ।
 स्रोण इक^{२०} आज खप्पर भरसि^{२१} तई^{२२} एक खप्पर भरै^{२३} ॥५॥

चमर तेल सिद्धर, ढाळ माथै ढैचाळां ।
 केकाणां कैजम्म^{२४}, पंख किरि परबत माळां^{२५} ॥
 असपती गजपती, फौज नरपत्ती फाबै^{२६} ।
 जीण - साळ जोगिंद्र, डंड छक आवध डाबै ॥
 ऊजळा^{२७} जरद मरदां अंगे^{२८}, ऊंडी^{२९} जाणक अंब द्रह ।
 जिहंगीर रूप सिधाणवै, चडै^{३०} साह बंधै सिलह ॥६॥

गजां घुण^{३१} घाराळ, पिसण कुंजर उलाडण ।
 भुजाडंड नीमजै^{३२}, पैज परतापी^{३३} पाळण ॥

१ आ.इ. खुरम । २ आ. जोजन । ३ आ.इ. रहियौ । ४ आ. पुमांण ।
 ५ आ.इ. किकमाइत । ६ इ. बांभण । ७ इ. साष । ८ इ. दुडंद ।
 ९ आ.इ. कलहिया । १० आ. रिण-गणि । इ. रिणयणि । ११ आ. हुओ । इ. हूंवौ ।
 १२ आ.इ. खोहणि । १३ आ. जुजुठिलह । १४ आ. दुजोण । इ. दुरुजोण । १५ आ.
 लिघी । १६ आ.इ. सुं । १७ इ. बोलति । १८ इ. बल । १९ अ. संधरै । २० इ.
 एक । २१ अ. भरति । २२ आ.इ. तई । २३ इ. भरे । २४ आ.इ. कैजम ।
 २५ इ. परतमालां । २६ इ. फाबै । २७ आ.इ. उजला । २८ इ. अंग । २९ इ.
 उंडी । ३० आ.इ. चडे । ३१ इ. घुण । ३२ आ. नीमजे । ३३ इ. परतंत्रिया ।

वीकोदर वीर वर, अनड पाहाड^१ असंकित ।
त्रिविध^२ फीज रचिअणी, अरध आठम^३ चंद्राकत^४ ॥

सीसोदिया भीम री तैयारी

करि सिंघनाद कैलपुरी^५, दळां - थंभ दोखह दही ।
गरजियी^६ "भीम" माती गहण, नेत-बंध^७ नागांध्रही^८ ॥७॥

गरजै गुण कोमडं, वूग छूटै^९ नळियारां^{१०} ।
कै बरळागि^{११} खतंग, अंग घोडां असवारां ॥
पूर सोक^{१२} पखाल^{१३}, अरस छाया आधंतरि ।
सरापंज किउ^{१४} पंथ, जाण खंडी - वन ऊपरि ॥

घड हडै^{१५} धोम आतस धिखे, गै लख पक्खर है गुडै^{१६} ।
रिणतूर^{१७} रुडै दळ आहुडै^{१८}, वे खूंदालम^{१९} रिण चडै^{२०} ॥८॥

गाथा

विभ्रम विमोह चित्तं, सपत तुरंग तांणियं^{२१} सविता ।
वासर विसाळ लहियं^{२२}, चक - वाणै मंगळ भवण ॥९॥

जुधवरण

* छंद मोती दांम

विहूं^{२३} पतसाहां^{२४} बध्धौ^{२५} नेत ।
खरौ खुरसांण चईनो खेत ॥
महा जुध माती गोळी मार ।
अरावां^{२६} आतस छूटि^{२७} अपार ॥१॥

१ आ.इ. पहाड । २ इ. विध । ३ अ. आठूं । आ. आठ । ४ आ. चंद्राकित ।
इ. चंद्रकित । ५ आ. कैलपुरी । इ. कैल पुरी । ६ आ.इ. गरजियी । ६ इ. नेत्रबंध ।
८ इ. नागांध्रही । ९ आ. छूटे । १० आ. नलीयारां । ११ इ. बरलागि ।
१२ आ.इ. सोक । १३ इ. पंखाल । १४ इ. कीउं । १५ आ.इ. घडहडे । १६ आ.इ.
गुडे । १७ इ. रिणतूर । १८ आ. आहुडे । इ. आहुडे । १९ आ.इ. पुदालम । २० इ.
चडे । २१ आ.इ. तांणीयां । २२ आ.इ. लहीयां । *आ.इ. प्रति में "अथ छंद मोती
दांम" है । २३ आ.इ. विहू । २४ इ. पतिसाहां । २५ आ.इ. बाधौ । २६ इ. अरावा ।
२७ आ. छूटी ।

प्रचंडे^१ गोळै नाळ प्रचंड ।
वहंतै हैकंपियौ^२ ब्रह्मंड^३ ॥
जुडंत^४ खुरंम अनै जिहगीर ।
तिडां^५ किरि^६ अंबर उड्डै तीर ॥२॥

*कोमंड गरज्ज हुए हलकार ।
भडां भालोड करंत भंभार ॥
एकुकी^७ मूठ^८ विछट्ट^९ असंख ।
परै सर फूटै^{१०} कोरी पंख ॥३॥

विन्है दळ आहरता बंगाळ ।
रवद्र रूप हुए^{११} रणताळ^{१२} ॥
इळा^{१३} पुडि धूज^{१४} धुवे असमाण ।
अदब्भुत उकाळियौ^{१५} आराण ॥४॥

वहै वोजुजळ^{१६} हद्द - विहद्द^{१७} ।
नचंत^{१८} विनोद^{१९} करंत नारद्द ॥
तमासै^{२०} भाण हुआ^{२१} रथ ताण^{२२} ।
कहक्कह^{२३} वीर हंसे^{२४} कतियाण^{२५} ॥५॥

भटवकै घोम भटवकै भाळ ।
घडां बिहुं घूम^{२६} मचे घम-चाळ ॥
निदस्सै^{२७} जोध जुआण नित्रीठ ।
रुकां महिमात्तौ^{२८} आकारीठ ॥६॥

बसविक भबविक बलवकै सार ।
घावां मिळ तिमर घोर अंधार ॥

१ इ. प्रचंडे । २ आ.इ. हैकंपीयौ । ३ आ. ब्रह्मंड । ४ आ. जुडति ।
इ. जुडित । ५ आ.इ. तीडां । ६ इ. कीरि । * आ. में यह पंक्ति "गरजि कोमंड हुए
हलकार" । ७ इ. एकुकी । ८ इ. मुठ । ९ आ. विछूट । इ. विछूटी । १० आ.इ.
फुटै । ११ आ. हुवै । इ. हुवै । १२ इ. रणताळ । १३ इ. ईला । १४ आ.इ.
धुजि । १५ आ.इ. उकलीयो । १६ इ. विजुजळ । १७ इ. हथ-विहद्द । १८ आ.
नाचति । इ. नाचंत । १९ आ. विणोद । इ. विणोद । २० इ. तमासी । २१ आ.
हुआ । २२ इ. तांणि । २३ आ.इ. कह कह । २४ आ. हसे । २५ आ. कतियाणे ।
इ. कतियाण । २६ इ. घूम । २७ आ. निदस्सै । इ. निदस्सै । २८ इ. मुहि मात्तौ ।

सुभट्ट विदंत वहै समसेर ।
भराल^१ वढीवै^२ सूला भेर ॥७॥

खडा - खड भाट^३ भडा - भड खग ।
पडै निरलंग नरा सिर पग ॥
भडां करि - माल रिखग भडंत ।
पडै^४ भुइ^५ घाउ निहाउ पडंत ॥८॥

खलक्कै स्त्रोण छलक्कै खाग ।
भडां वह अंग हुवै बहु भाग ॥
उभै पतिसाह भिडै अण - भंग ।
रमांइण^६ भारथ ए रिण - जंग ॥९॥

हणै^७ हण हींजर हैमर हींस^८ ।
कळीयण हूकळ कुंजर^९ कीस ॥
तुटंत^{१०} तिमच्छ^{११} तणा तरवार^{१२} ।
उलक्कापात^{१३} उडां उणिहार^{१४} ॥१०॥

पडै पळ खंडर^{१५} पिंड प्रचंड ।
वहै घाउ खागै खंड विहंड ॥
हुवै^{१६} दळ सक्कळ^{१७} हूक^{१८} हमल्ल ।
ढहै ढेचाल सहेता ढल्ल ॥११॥

*अबै रुडं मुडं भडां घड अंत ।
मरगड भाजि असंघ मुडंत^{१९} ॥
असिमर घाउ वहै वढ आड ।
*हुवै ति मिरी वढ गूडन हाड ॥१२॥

१ आ. भराला इ. भरालां । २ इ. वढिवे । ३ आ.इ. भाटि । ४ आ.इ. पिंड ।
५ इ. भुइई । ६ इ. रमांईण । ७ आ.इ. हणौ । ८ इ. हीस । ९ आ.इ. कुंजर ।
१० आ. तुटित । इ. तुटिति । ११ आ.इ. तिमछ । १२ आ. तरवारि । इ. तरिवारि ।
१३ आ. उलकापात । इ. उलकापाति । १४ इ. उणुहारि । १५ इ. पलि पंडर । १६
आ.इ. हुवे । १७ आ.इ. सवल । १८ इ. हूक । * आ. प्रति में यह पंक्ति “वे रुड
भडां घड वेहड अंत” । १९ इ. मुडत । * आ. प्रति में यह पंक्ति “हुवति मिरी वढ गूड
न हाड” । इ. प्रति में यही पंक्ति “हुवति मीरी वढ गूड न हाड” ।

उडै खग^१ चोट घडां सू^२ अंत^३ ।
भडांचा सीस दडांचो भंत^४ ॥
अणी सर फूटै कूंत^५ अत्रांस ।
ववार^६ वपै^७ किरि वाजै ब्रांस^८ ॥१३॥

कटै कडियाळ^९ वहै करमाळ ।
कुटवकै कोपर कंध कपाळ ॥
बगत्तर जोध हुवति^{१०} बिसुद्ध ।
जुटंत बहादर बाहुअ जुद्ध ॥१४॥

संग्राम खडग वाहंत सनड्ड ।
वपै^{११} पळ तंडळ ऊखळ वंड्ड ॥
वढै जरदैत जडाळ वहति^{१२} ।
तुटंत^{१३} गडा किरि साबिण^{१४} तंति ॥१५॥

दड - दड सीस पडंत दडाक ।
वडीयण^{१५} बंध असंध बडाक ॥
समीवड आहुडिया^{१६} सुरतांण ।
खुटै^{१७} खर-हंड^{१८} तणा खुरसांण^{१९} ॥१६॥

किलंब कटवकै उकट - काट^{२०} ।
गड्डस्स^{२१} गरट्ट गहै गज - थाट ॥
पडै उर - बल्ल^{२२} गडोथळ पिंड ।
भडा - भड^{२३} खल्ल जुवा^{२४} भुजदंड ॥१७॥

पडंति गयंद खडग पछाड^{२५} ।
प्रलै किरि वज्रह^{२६} पत्त^{२७} पहाड ॥

१ आ.इ. षाग । २ आ. सुं । इ. सु । ३ आ.इ. अति । ४ आ.इ. भति ।
५ आ.इ. कूत । ६ आ.इ. वा बार । ७ इ. वपे । ८ इ. व्रांस । ९ इ. कडीयाळ ।
१० आ. हुविति । इ. हुविसि । ११ आ.इ. वपे । १२ आ.इ. वहति । १३ आ. तूटंति ।
इ. दूटंति । १४ आ. साबेण । इ. साबण । १५ इ. वडीयड । १६ आ.इ. आहुडीया ।
१७ आ. पूटै । इ. पूटे । १८ अ. षड-हंड । आ. पहहंडि । १९ आ. पुरसांणि ।
२० आ. उकट-काट । इ. उगट-गाट । २१ आ.इ. गडस । २२ आ. उर-बल । इ. डर-
बल । २३ इ. भडां-भड । २४ आ.इ. जूवा । २५ इ. पछाडि । २६ इ. वज्र ।
२७ इ. पति ।

जरदां जेम चमक्के^१ जागि ।
उठंति^२ भटक्कि^३ भटक्कै आगि ॥१८॥

वथां^४ जग - जेठ जुटै वळ - बंड ।
पडै गळि - बाहां^५ जोध प्रचंड ॥
वहोहळ^६ तेग खांडा - हळ^७ वाढ ।
दुवा सूं सेल पटा जंम दाढ ॥१९॥

राउत्तां^८ गात वंवाळ^९ रगत्ता ।
करंमर^{१०} वाहि^{११} किया^{१२} करवत्त ॥
अणी भवरक्क हुलां ऊमेल^{१३} ।
सनाह सुं सुतणं तोडै सेल ॥२०॥

धसै वरियांम^{१४} वहै खग - धार ।
विढंति^{१५} सुवप्प पडंत विहार ॥
लडै हिक^{१६} सांमां लोह लियंत^{१७} ।
दियै हिक^{१८} पाव चडे गज - दंत ॥२१॥

लडै हिक^{१९} लालुरता छकि लोह ।
पडै हिक^{२०} पाइक ऊठै^{२१} छोहि^{२२} ॥
आवै हिक^{२३} वाहै^{२४} खग उभारि ।
मुखां हिक^{२५} जोध कहै मारि मारि ॥२२॥

भिडै^{२६} हिक^{२७} नीजुडिऐ^{२८} भ्रकुटेह^{२९} ।
चडै हिक^{३०} रोस पडंत^{३१} चटेह^{३२} ॥

१ अ. चमक । इ. चकमक । २ अ. उरंति । इ. उडंति । ३ आ. भटकि ।
इ. भटाकि । ४ आ.इ. वथां । ५ आ. गल-बांहा । इ. गलिबांहां । ६ आ.इ. वहोहुल ।
७ अ. पंडाहल । आ. पांडहल । ८ इ. रावता । ९ आ.इ. ववाल । १० आ.इ.
करमरि । ११ आ.इ. वहि । १२ आ.इ. कीया । १३ आ.इ. उमेल । १४ आ.इ.
वरीयांम । १५ इ. विढंत । १६ आ. हेक । इ. ऐक । १७ इ. लीयंत । १८ आ.इ.
हेक । १९ आ.इ. हेक । २० आ.इ. हेक । २१ आ.इ. उठै । २२ इ. छोह ।
२३ आ.इ. हेक । २४ अ. आवै । २५ आ.इ. मुवा-हेक । २६ इ. भिडै । २७ आ.इ.
हेक । २८ आ. नीजुडोए । इ. निजुडोये । २९ आ. भ्रिकुटेय । इ. भिकुटेय । ३० आ.इ.
हेक । ३१ आ.इ. पडंति । ३२ अ.इ. चडेय ।

जुटै हिक^१ बथां^२ जोध जुआण^३ ।

पौरस्स हुवै हिक^४ वाहै पाण ॥२३॥

भरै हिक^५ सोणी पिंड भुजाळ ।

विठै हिक^६ वीर हुआ^७ विकराळ ॥

करै हिक^८ हाकां जोध कंठीर ।

धारां हिक^९ भीक हुवै धर धीर ॥२४॥

चडै हिक^{१०} लोह^{११} विवाणै^{१२} चीत^{१३} ।

वळै^{१४} हिक^{१५} खाइ गुडा विपरीत ॥

पिसै^{१६} के दांत भुजै^{१७} करि प्राण ।

मुहै^{१८} चडि हेक^{१९} पडै मुह - ताण^{२०} ॥२५॥

खमै हिक^{२१} आवध गोडी खाय^{२२} ।

गडै हिक^{२३} भागै गुंछळ थाय^{२४} ॥

धड-धड^{२५} तूटै एक^{२६} धसति ।

हिणै खग^{२७} खागै हेक हसति ॥२६॥

जुडै^{२८} हिक^{२९} वींभरता^{३०} जम - दूत ।

कढै^{३१} हिक^{३२} मारि अणी सर कूंत ॥

वहै^{३३} हिक^{३४} घाउ वदै विख बाण ।

रिखै हिक गोलीयां^{३५} रिण-ढाण^{३६} ॥२७॥

उडै हिक^{३७} उडुण घाउ^{३८} असंभ ।

गुडै हिक^{३९} पाखरिया^{४०} गज - खंभ ॥

- १ आ.इ. हेक । २ आ. बाथां । इ. वाथां । ३ इ. जुवांण । ४ आ.इ. हेक ।
 ५ आ.इ. हेक । ६ आ.इ. हेक । ७ आ. हुआ । इ. हुआ । ८ आ.इ. हेक । ९ आ.इ.
 हेक । १० आ.इ. हेक । ११ इ. लोह । १२ इ. विवणै । १३ इ. चित । १४ आ.
 वल । इ. वहै । १५ आ.इ. हेक । १६ आ.इ. पीसै । १७ आ.इ. भुजै । १८ आ.इ.
 मुहै । १९ आ. हिक । २० इ. मूहताण । २१ आ.इ. हेक । २२ आ. पाइ ।
 इ. पाई । २३ आ.इ. हेक । २४ आ.इ. घाई । २५ आ.इ. धडि-धडि । २६ आ. अक ।
 इ. हेक । २७ आ. पाग । २८ आ. जुडै । इ. जूडै । २९ आ.इ. हेक । ३० आ.
 वींवरता । इ. विवरता । ३१ आ. कढै । ३२ आ.इ. हेक । ३३ आ. वाहै ।
 ३४ आ.इ. हेक । ३५ आ.इ. गोलीयां । ३६ आ. रिण-ढाल । इ. रिण-ढाणी ।
 ३७ आ.इ. हेक । ३८ इ. घाई । ३९ इ. हेक । ४० आ. पाखरीया । इ. पाखरी ।

वदै हिक^१ जै जै रांमह वाच ।
 उछाळ^२ हेक^३ छछोहा आच ॥२८॥
 गळोवळ हेक^४ चटा^५ वख^६ गूंथ ।
 लळावट^७ हेक^८ लुळ^९ हुई^{१०} लूंथ ॥
 चळ-व्वळ हेक^{११} हुआ^{१२} व्रन चोळ ।
 धारां मुहि हेक^{१३} दियै^{१४} धमरोळ ॥२९॥
 रिणंगण हेकां आंत्र^{१५} रुळंत ।
 हसता दांतां हिक^{१६} हींझुळ - अंत^{१७} ॥
 लडै हिक^{१८} लागै लोहस - लोध ।
 जमदूढ टेक उठै हिक^{१९} जोध ॥३०॥
 भयांनक हेक^{२०} करै भराथ^{२१} ।
 हिकां^{२२} मसतक्क पडै पग हाथ ॥
 वेणी - डंड^{२३} हेकां वीखरियाह^{२४} ।
 लुटे^{२५} भुंई^{२६} हेक^{२७} लुही^{२८} भरियाह^{२९} ॥३१॥
 घुमै^{३०} हिक^{३१} जोध सहै घण घाव ।
 पडै पिंड हेकां स्त्रोण प्रवाव ॥
 कटारां वाहै हेक^{३२} कराळ ।
 घडां सिर हेक^{३३} ध्रवै धाराळ ॥३२॥
 वाहै हिक^{३४} तेग भुजै^{३५} वरियांम^{३६} ।
 वीरारस हेक^{३७} विढै वरियांम^{३८} ॥
 गुडै हिक^{३९} खाग^{४०} तुरी मद - गंध ।
 गुडावै हिक^{४१} गुडै गज वंध ॥३३॥

१ आ.इ. हेक । २ आ. हिक । ३ आ. हिक । आ. हैक । ४ आ. चटा-वृष ।
 ५ आ.इ. लोलावट । ६ इ. हुई । ७ आ. हुवा । इ. हूआ । ८ इ. दीयै । ९ इ. आंत ।
 १० इ. हिडूलयंत । ११ आ.इ. हेक । १२ आ.इ. हेक । १३ आ.इ. भाराथ ।
 १४ आ.इ. हेकां । १५ इ. वेणी-डंड । १६ आ. विषरीयाह । इ. विषरीयांह । १७
 आ.इ. लोटै । १८ आ. भुई । इ. भूई । १९ आ.इ. लोही । २० आ.इ. भरीयाह ।
 २१ आ. घुमै । इ. घुमै । २२ आ.इ. हेक । २३ आ.इ. हेक । २४ आ.इ. भुजे ।
 २५ इ. भरियांम । २६ आ.इ. वरीयांम । २७ आ. हेक । २८ आ. पागि । इ. पगि ।
 २९ आ.इ. हेक ।

धुकै भड हेक धजव्वड^१ धाई^२ ।
ग्रिणै हिक जोध वडै गज ग्राहि^३ ॥
मिळै हिक सोस घणै रिण सांहि^४ ।
फिरै हिक^५ फारक फेरी खाहि^६ ॥३४॥

धारां मुहि^७ हेक उडावै^८ धूप ।
जुडै हिक^९ जोध हुआ^{१०} जम - रूप ॥
पडै पिडि^{११} भोम तजै हिक^{१२} प्राण ।
खगां^{१३} मुहि हेक हुवै खल हांण ॥३५॥

वीरा-रस हेक न मेल्लै^{१४} वाद ।
निहस्सै हेक करै सिघ-नाद ॥
सिरै^{१५} हिक धार प्रहार सहंत ।
लोहां मुहि हेक सुगत्त^{१६} लहंत ॥३६॥

सोणी हिक^{१७} हुआ^{१८} व्रज^{१९} सिद्धर ।
सिरै हिक^{२०} तूटै^{२१} जूटै सूर ॥
गडगड^{२२} जोगणि रत्त^{२३} गिलंत ।
हडहड नारद रिक्ख^{२४} हसंत ॥३७॥

वडव्वड वीजळ^{२५} धार वहंत ।
लडत्थड संकर सीस लहंत ॥
भडजभड औभड^{२६} आवध भट्ट ।
लडल्लड लागै^{२७} लोह सुभट्ट ॥
खडक्खड खंडा - खाट^{२८} खडंत ।
धडधड हुंता^{२९} धूह पडंत^{३०} ॥३८॥

- १ इ. धजवडि । २ इ. धाई । ३ आ.इ. हेक । ४ आ.इ. ग्राहि ।
५-इ. सांहि । ६ आ.इ. उडावै । ७ आ.इ. हेक । ८ आ. हुआ । इ. हुवा । ९-अ.
पिडि । १० आ.इ. हेक । ११ आ. पाण । इ. पागां । १२ इ. मेल्ले । १३ इ. सिरै ।
१४ आ. मुगत्त । इ. मुगति । १५ आ.इ. हेक । १६ इ. हुआ । १७ इ. व्रज ।
१८ आ.इ. हेक । १९ इ. तूटे । २० आ.इ. गड गड । २१ आ. रत्त । इ. रगत ।
२२ आ.इ. रिण । २३ आ. वीजुल । इ. विजुल । २४ आ.इ. औभड । २५-आ.
लागे । २६ आ.इ. षडाषड २७ इ. हुता । २८ इ. पडंति ।

कडकड त्रिज्जड^१ आवट - कूट^२ ।
 फडफड प्राण अणी सिर फूट ॥
 हयभभड सीस दडदड होइ^३ ।
 तडफफड मच्छक^४ तीछै तोइ^५ ॥३६॥
 भडीयड भांजि मरगमड मूंड ।
 रडव्वड रैण^६ करंडक रूंड ॥
 भडफफड पंखणि^७ सावज^८ भूळ ।
 गुडंत गयाघण^९ गात्र सथूल^{१०} ॥४०॥

कवित्त

गुडै जूह मद - गंध, सेन अनमंध सुभट्टह ।
 घड वेहड^{११} ऊकरड^{१२}, कटै कोपट्ट भिकुट्टह^{१३} ॥
 रगत खाळ परिनाळ, लग पग्गां पायाळह^{१४} ।
 नवै कुळी^{१५} नागिद्र^{१६}, हुआ सौणी बंवाळह ॥
 ऊजळै^{१७} हूंत हूआ^{१८} अरण^{१९}, सेसनाग^{२०} सैहस^{२१} फुणी^{२२} ।
 तिण वार डरै^{२३} तिण कारणै, पेख^{२४} पदमण नागणी ॥१॥
 भोम भार भल्लियौ^{२५}, खडग भल्लै^{२६} खूमाणै^{२७} ।
 कियौ^{२८} सेन संधार, जांणि रुठै^{२९} जमराणै ॥
 तबल वाजि असवार, पडै^{३०} पक्खरिया^{३१} हैमर ।
 मीयां^{३२} मीर मिलक्क^{३३}, खान खुरसांणी खप्पर^{३४} ॥
 वंभण^{३५} वजीर राजा बिरद, भारथ ओडवि उभै भुअ^{३६} ।
 सुरतांण खुरम दळ सेनपति, 'वीकम' खंड विहंड^{३७} हुअ^{३८} ॥२॥

१ आ.इ. त्रिजड । २ इ. आवट-कूट । ३ इ. होय । ४ आ. मच्छक । इ. मच्छिक ।
 ५. इ. तोई । ६ आ. रेण । इ. रेणु । ७ आ.इ. पंखण । ८ आ. सावज । ९ आ.
 गया याड । इ. गय घड । १० इ. सथूल । ११ इ. वेहाड । १२ आ. उकरड ।
 इ. उरकरड । १३ आ. भिकुट्टह । इ. भिकूट्टह । १४ आ.इ. पयालह । १५ आ.इ.
 नवै-कुल । १६ आ. नागिद्र । १७ आ.इ. उजलै । १८ इ. हूवौ । १९ इ. अरण ।
 २० आ.इ. सेसनाग । २१ आ. सह । इ. सहस । २२ इ. फूणी । २३ आ. डरै ।
 २४ आ. पेख । २५ आ.इ. भल्लियौ । २६ आ. भल्ले । इ. भल्लै । २७ आ.इ. पुमाणै ।
 २८ आ. कीयौ । इ. कीयो । २९ आ.आ. रुठे । ३० आ.इ. पडे । ३१ आ.इ. पक्खरीया ।
 ३२ इ. मीरां मी । ३३ आ. मिलक । इ. मीलक । ३४ इ. प्रफर । ३५ इ. वंभण ।
 ३६ आ. भुअ । ३७ आ. विहंड । ३८ आ. हुअ ।

जिही^१ सींह^२ सादूळ, नळ^३ हत्थळ^४ उपाडै^५ ।
छरा खग ऊनंग, लग गैणंग भमाडै^६ ॥
सिघल दियौ साबल्ले^७, हिणै हेकूकी^८ हत्थळ ।
करडि कुंभ^९ गय गुडे, धरणि औलरि दांतूसळ ॥

मोती अमुल जिहि^{१०} भड पडै^{११}, भागमंत पामंत^{१२} नर ।
भूपाळ^{१३} कियौ^{१४} गोपाळरै, रिण चाचरि लज्जी नयर ॥३॥

रचि^{१५} अजाद^{१६} गज तुरी, बंधि^{१७} पेडी^{१८} धड बेहड ।
स्रोण अंब^{१९} अण थाग^{२०}, मच्छ कूरम्म तुरी भड ॥
चिहुर^{२१} जाळ सेवतल^{२२}, लहरि^{२३} लगै^{२४} केवांणह ।
ओडणि^{२५} कमळणि पत्र, अमर^{२६} गुंजै नीसांणह^{२७} ॥

पणिहार^{२८} सकति पांणी भरै, स्रोणी^{२९} खप्पर कूं भलै ।
“गोपाळ”तणै मंजन कियौ^{३०}, रिण तळाइ भूपाळ ले ॥४॥

स्रोण^{३१} भील कमकमै, कियै^{३२} करिमरां चडाए ।
रचे^{३३} सेज^{३४} रिण-भोम, कुसम अरि कमळ विछाए^{३५} ॥
नखस^{३६} तिक्ख^{३७} सरकूंत^{३८}, सहै अन-मंध^{३९} अचगळ^{४०} ।
पांण पयौहर कठण, मथै मैगळ कुंभा - थळ ॥

विपरीत रहसि वीरा रसहि^{४१}, रिण दूभल^{४२} हुई^{४३} रटवड^{४४} ।
सूती संग्राम करि स्रोण-हर, भूप मांण संग्राम घड ॥५॥

१ इ. जीही । २ आ.इ. सीह । ३ आ.इ. नला । ४ आ.इ. हथल । ५ आ. उकंडे । ६ आ.इ. भमाडे । ७ आ.इ. सबल । ८ आ. ककूकी । इ. हेकूकी । ९ आ. कुंभ । इ. कुंभ । १० आ.इ. जहां । ११ इ. पडे । १२ अ. पाममंत । १३ आ.इ. भुपाल । १४ आ.इ. कीयौ । १५ आ. रचे । १६ आ.इ. मृजाद । १७ इ. बंध । १८ इ. पेडी । १९ इ. अंबर । २० इ. ऐणताग । २१ आ.इ. चिहोर । २२ आ. सोवतल । इ. सेवत । २३ आ. हरि । २४ आ.इ. लगै । २५ इ. ओडण । २६ आ.इ. चमर । २७ आ. गुंजै । इ. गुंजै । २८ इ. निसाण । २९ आ. पसाहर । इ. पणहारि । ३० इ. श्रीणी । ३१ आ.इ. कीयौ । ३२ आ. श्रीणी । इ. श्रीणी । ३३ आ. कीयै । इ. कीये । ३४ इ. रचै । ३५ आ. सेभ । ३६ इ. विछाये । ३७ आ. नषसि । ३८ आ. तीय । इ. तीयर । ३९ आ.इ. कूत । ४० आ. अन मंधि । इ. अनिमंध । ४१ आ.इ. अचगल । ४२ आ.इ. रसह । ४३ आ.इ. दुभल । ४४ इ. हुई । ४५ आ. रठवड । इ. राडवड ।

ईस सीस संग्रहे^१, रुंड - माळा किउ^२ सद्धर^३ ।
 अमख^४ ग्रीध उग्रजै, भूत वैताळ निसाचर ॥
 पंखाळा नहसळ, सयळ^५ सावच्चह^६ धप्पै^७ ।
 भवै^८ रत्त^९ भरि^{१०} पत्र, सकति आसीस समप्पै^{११} ॥

भूपाळ भिडे^{१२} भीमेण छळि^{१३}, अछरमोह मूक्यौ^{१४} सबळ ।
 अंतरह जोति अविणास यह, गयी भेद सूरज - मंडळ^{१५} ॥६॥

गाथा

धारां तीरथ समंदी, स्त्रोणी^{१६} सलिल^{१७} सुरभं^{१८} भरए^{१९} ।
 परि^{२०} पहुत्ता^{२१} सुरी, वैसं ग्रीध उडोयं^{२२} हंसा ॥१॥
 हड हड नारद हस्सियं^{२३}, पांण ग्रहण पेखियं^{२४} सुहडां^{२५} ।
 मोता - हळ गज डसणं, रंभा आभूखणं चुणए^{२६} ॥२॥
 गै जूह मत्त गुढियं^{२७}, पिडे पळ खंड धार पहाडां ।
 विपरीत वज्र पतंक, विहर सिध परबत्तह ॥३॥
 वसुधा स्त्रोण सुरंगी, तुरियां^{२८} घसळ वित्युरी^{२९} रेणा ।
 आदू चपळ सहावी, हुइ रत्ती हुइ अणरतह ॥४॥

कवि-वाच

इहा

साहिजादो सुरतांण, वे नाइक वाधै सेत ।

किरि हथणापुर कळहिया^{३०}, कुर-पंडव कुर-खेत ॥१॥

घर फूटी घर कारणै, घर में लग्गी लाहि^{३१} ।

जे जीती तो हारियी^{३२}, दिल्लीवै पतिसाह ॥२॥

- १ आ. संग्रहे । २ आ. इ. कीउ । ३ आ. इ. सद्धर । ४ आ. इ. अमख ।
 ५ इ. सयल । ६ आ. सावजह । ७ आ. इ. धप्पे । ८ आ. भप्पे । ९ आ.
 रत्त । १० इ. रगत । ११ आ. इ. समप्पे । १२ आ. इ. भिडे । १३ इ.
 छल । १४ इ. मूक्यौ । १५ इ. सूरज-मंडल । १६ इ. श्रीणी । १७ आ. सलि ।
 १८ आ. इ. सुरभ । १९ आ. भरणा । २० परी । २१ आ. पहुत्ता । इ. पहुतां । २२ इ.
 उडयं । २३ आ. इ. हसीयं । २४ आ. इ. पेखीयं । २५ आ. सोहडां । इ. सोहडी ।
 २६ इ. चुणए । २७ आ. इ. गुडीयं । २८ आ. इ. तुरीयां । २९ आ. इ. वित्युरी ।
 ३० आ. इ. कलहीया । ३१ इ. भाहि । ३२ आ. इ. हारीयो ।

खुरम कहै मन बंध बळ, आतुर म हुइ^१ अधीर ।
 काइर^२ हुवां^३ न छूटि^४ है, जब^५ रूठी जहंगीर^६ ॥३॥
 साहिजादौ सुरतांग बे, रिण भूके^७ रिम राह ।
 डार परिगह करि मुहरि, नीसरियो^८ वारांह ॥४॥
 खूंदालम^९ आगळ^{१०} खुरम, तीइ न कुसळ पडंत ।
 जे^{११} पैसै पायाळ^{१२} तळ, जे असमांन चडंत ॥५॥
 सत पराक्रम सूरमां, मन्न म हुआ^{१३} उदमाद^{१४} ।
 रोस फुणिदां रंढ त्रियां^{१५}, हम्मीरां हठ वाद ॥६॥

गाहा चौसर

पुत्रां कजि खाटै^{१६} धन पित्तं ।
 पुत्रां हूं घर हुवै प्रवित्तं^{१७} ॥
 असुभ हुवै^{१८} तब^{१९} होइ^{२०} अहित^{२१} ।
 विह^{२२} लिखियो^{२३} बुधो^{२४} विपरीतं ॥१॥
 ग्रहै^{२५} कवण^{२६} गिर-मेर^{२७} गिरव्वर^{२८} ।
 ऊवडियो^{२९} कुण^{३०} सांधें अंबर^{३१} ॥
 पाखै कुण राखै परमेसर ।
 साहतणी घर फाटौ सायर ॥२॥
 भिडवायो सारो^{३२} भुआ - मंडळ^{३३} ।
 वसुधा गोधम गहण चिहूं - वळ^{३४} ॥
 किलवां महण^{३५} मत्थेहण^{३६} कंदळ ।
 दिल्ली माती^{३७} दुंद^{३८} दमंगळ^{३९} ॥३॥

१ इ. हुई । २ इ. कायर । ३ इ. हुआं । ४ आ.इ. छुटीयै । ५ इ. जम ।
 ६ आ.इ. जिहंगीर । ७ आ. भूके । ८ आ. निसरीयो । इ. निसरीयो । ९ आ.इ.
 पुंदादम । १० आ.इ. आगलि । ११ अ.आ. जै । १२ आ.इ. पायाल । १३ आ.इ.
 हुवा । १४ अ. उनमांद । आ. उनभाव । १५ आ.इ. त्रियां । १६ आ.इ. पाटे ।
 १७ इ. पवित्तं । १८ इ. होवै । १९ अ. त । इ. होयै । २० इ. अहितं । २१ इ.
 वेह । २२ आ. लिषीयो । इ. लीषीयो । २३ आ. बुध । इ. बुधि । २४ इ. ग्रह ।
 २५ इ. कवाण । २६ आ.इ. मेर गिर । २७ आ.इ. गिरव्वर । २८ आ.इ. उवडीयो ।
 २९ इ. कुण । ३० अ.आ. अमर । ३१ आ.इ. सारो । ३२ आ.इ. भूअ-मंडल ।
 ३३ आ.इ. चिहुंवल । ३४ आ. किल-वांम । ३५ आ. हण-मथेण । ३६ आ. मांती ।
 ३७ दुद । ३८ आ.इ. दमगल ।

मारामार^१ हुई^२ महि - मंडळ ।
 मेछां^३ भंग पडै महि - मंडळ ॥
 मांडै धीर नकौ महि - मंडळ ।
 मच्छ गळा - गळ^४ दिल्ली - मंडळ ॥४॥

गाथा

कुपिया^५ कुटंब कळही, पावस पंथांण रोग प्रव्वळए^६ ।
 दुरमत्ती^७ दुस्ट पुत्री, दूभरियं^८ पंच दुखाई ॥१॥
 कुव्याळ^९ कुळह मज्जे हुइयं, अद्याप तात न हुइण^{१०} ए ।
 आदू पुरांण सुणिय^{११}, पांणह कमण कवियं^{१२} पांण ॥२॥
 विकराळ काल वदन, दारण दुजीह गरळ मैमत्ती ।
 विपरीत^{१३} कुळह ब्रती, इजगूरं या डिभरं गिळ ए ॥३॥
 संसार मगन माया, कांमौ^{१४} क्रोधं लोभ मोहांणौ^{१५} ।
 स्वारथ हित^{१६} करणी, को^{१७} आता तात^{१८} पुत्राई^{१९} ॥४॥
 मुगळांणं^{२०} मुगध बुद्धी^{२१}, कि^{२२} गुर सव्व^{२३} साधु उपदेसौ ।
 दिन^{२४} मेक उदधि रहणौ, नह^{२५} मूंचित मगधांण^{२६} ॥५॥

इहा

वादसाह री विचार में पड़णो

मुगळवै^{२७} मां^{२८} दाखियौ^{२९}, मन लागंती^{३०} मार ।
 जद भलियै^{३१} मुख मंभळी, तद केहौ^{३२} उपचार ॥१॥

१ आ. मारामर । इ. मारा मारा । २ आ.इ. हुई । ३ इ. म्लेच्छां । ४ आ.इ. गिलागिल । ५ आ. कुपीया । ६ आ.इ. पवल । ७ अ. दुरमति । ८ अ.आ. दुभरीयं । ९ अ. कुव्याउ । इ. कुव्याउ । १० इ. हुहिण-ए । ११ इ. सुणीयं । १२ आ.इ. कपियं । १३ इ. विप्रीत । १४ इ. कामौ । १५ इ. मोहिणौ । १६ आ. हेत । इ. हेत । १७ इ. कूं । १८ अ. नात । इ. आं । १९ आ.इ. पुत्राई । २० आ.इ. मुगलाण । २१ आ.इ. बुद्धी । २२ इ. कि । २३ आ. सव्व । इ. सवद । २४ आ.इ. दिन । २५ इ. नहि । २६ आ.इ. मद्यंवाण । २७ आ. मूगल । इ. मुगलवै । २८ इ. मा । २९ आ.इ. दीपीयी । ३० इ. लागीती । ३१ आ. भलीयै । इ. फलीयै । ३२ इ. केहो ।

असपत^१ राव ओलीभियौ^२, विध^३ जिण वांकम^४ होइ ।
 कुमति^५ पग ऊपरं^६ कहै^७, कहौ^८ सुमंती कोइ ॥२॥
 वडे वजीरे मंत्रि^९, कहियौ^{१०} वयण विचार ।
 जो आवै राठौड नृप^{११}, तो नह^{१२} आवै हार ॥३॥
 धन सूरतन धन अडप, धन राठौडां ईस^{१३} ।
 सुणि सुरताण कबूल की, वात विसव्वा - वीस^{१४} ॥४॥

बाहसाह री महाराजा गजसींघ नै सहायता सारु बुलावणी

गाहा चौसर

आप कहै पतसाह^{१५} अचगल^{१६} ।
 "गाजीसाह" कमणा^{१७} तो जांमल ॥
 तूं^{१८} खुरसांण हिंदुवां^{१९} आगल ।
 किलंवां - राइं लिखे इम कागल ॥१॥
 खांडै^{२०} - राव सिरै नव - खंडां ।
 मारु ती^{२१} सिर भारथ मंडां^{२२} ॥
 भारथ^{२३} भळायी^{२४} ती^{२५} भूअ-डंडां^{२६} ।
 मांडे^{२७} तूं^{२८} थांभां ब्रह्मंडां^{२९} ॥२॥
 तुं^{३०} राजा दळ - थंभ कहायी ।
 ए^{३१} भर भार भुजै ती आयी ॥
 इळ साइजादै^{३२} दुंद^{३३} उठायी ।
 पातसाह^{३४} फुरमाण पठायी ॥३॥

१ आ.इ. असपति । २ आ. ओलोभीयौ । इ. आलोभीयो । ३ आ. विधि । ४ इ. वंकम । ५ आ.इ. सुमतिज । ६ आ. उपरि । ७ अ. कहौ । ८ आ.इ. कहै । ९ आ. मंत्रीए । इ. मंत्रीये । १० आ.इ. कहियौ । ११ आ.इ. नृप । १२ इ. नहि । १३ आ. इस । १४ आ.इ. विसवा-वीस । १५ आ.इ. पतिसाह । १६ इ. अचगल । १७ इ. कवण । १८ आ.इ. तु । १९ आ. हींदूवां । इ. हींदूवां । २० आ. पांडेराव । २१ अ. तो । २२ अ. मंडे । २३ अ. भार । २४ आ. भलीयो । २५ अ. तो । २६ इ. भूअडंडे । २७ आ. मांडे । २८ आ. तु । इ. तूं । २९ आ. ब्रह्मंडां । इ. ब्रह्मंडे । ३० आ. तु । इ. तूं । ३१ इ. ऐ । ३२ आ. साइजादै । इ. साहिजादै । ३३ इ. दुद । ३४ आ. पातिसाह । इ. पतिसाह ।

हुजम लिखे मोकळीयो^१ हजरति ।
तांम^२ पहुंती^३ जोधां तखति^४ ॥
कमध वडी तो पासि^५ करामति ।
पति^६ मो रखी^७ कहै दिल्ली पति ॥४॥

इहा

“गजपत्ती दिस मेलिह्यौ^८, असपती फुरमाण ।
खुरम विलगौ राह हुइ^९, ती छूटै खुरसाण ॥१॥
कमण सहींदू कुण तुरक, कमण कहैवा पीड ।
ती^{१०} पाखै राउ राठवड^{११}, बियै न भज्जै भीड ।
हिंदुवै^{१२} सुरताण तुं, तूं सुरताणां^{१३} संड^{१४} ।
तूं सुरताणां^{१५} चीतगर^{१६}, तूं^{१७} सुरताणां^{१८} चंड^{१९} ॥३॥
गाड पडंते “गजपती, पूठो जोध अडूर ।
तूं साह आलम समरियो^{२०}, छीक अमूभी^{२१} सूर ॥४॥
जोधपुरी जोगणिपुरे, जग - जेठी वळवंत ।
लेण क लंका रांमचंद, हक्कारै हणमंत ॥५॥
“गजवंधी”^{२२} तेडावियो^{२३}, सगळी^{२४} साऊ^{२५} सत्यं ।
इळि^{२६} नवकोटी मुरधरा, कुण कुण सुहड^{२७} समत्य ॥६॥

सहाराजा गजसींघरा सांमंतारी सभा

छंद पधरी

“राजधर” आदि रिण भीम पत्थ ।
“खेमाळ” समोभ्रम^{२८} खडग हत्थ ॥

१ आ.इ. मोकलीयो । २ आ.इ. ताम । ३ आ. पहुंती । इ. पहुती । ४ आ. तपति । इ. तपत । ५ आ. पास । ६ आ. पाडी । इ. पत । ७ आ.इ. राषी । ८ आ.इ. मेलिह्यौ । ९ इ. हूय । १० आ. तो । ११ इ. रठवड । १२ आ. हींदुवै । इ. हींदुवै । १३ इ. सुरताण । १४ इ. संड । १५ इ. सुरताणा । १६ इ. चितगिर । १७ आ.इ. तु । १८ इ. सुरताणा । १९ इ. चंड । २० आ.इ. समरियो । २१ आ. अमूभी । २२ आ. गज वंधा । आ. गजवंधा । २३ आ.इ. तेडावियो । २४ इ. सगलो । २५ आ.इ. साऊ । २६ इ. इल । २७ आ. सोहड । इ. सोहडण । २८ आ. समोभ्रमे ।

अजमेर कियो^१ जुघ आसमान^२ ।
आसोप तखत्तह राज - थान ॥१॥

नवकोट घणी "गाजी" नरेस ।
दाहिणी^३ भुजा दीपै^४ महेस ॥
"सूरजमल" पिता^५ सत्रु^६ संघारि ।
जिण लियो^७ मान चहुवाण^८ मारि ॥२॥

मंडोवर रूप महेसदास ।
उतली - बल^९ पीरस अस्सहास^{१०} ॥
"दळपत्त"^{११} सुत ओपम दळेय ।
दादो^{१२} उदियासिघ^{१३} "मालदेय" ॥३॥

"आसक्रन्न" कमध्वज अवीयाट^{१४} ।
परि-भवे^{१५} जेण पह भेद - पाट ॥
दळ - थंभ पिता "देदो" अडूर ।
चहुवाणा^{१६} प्रवाडे लियो^{१७} सूर ॥४॥

जग - जेठ खत्री - गुर "खेम" जाउ ।
पीपाड^{१८} तखत्तह^{१९} कन्हराउ ॥
दखणाध^{२०} देस विढियो^{२१} अगाहि ।
मुर दीह रहै^{२२} रिण^{२३} - खेत मांहि ॥५॥

खाडुक-मल^{२४} "मानी" "खेम" चंद ।
चहुवाण जेण^{२५} आंजियो^{२६} "चंद" ॥
बिरदेत जोध घाटे^{२७} - बराड ।
"गोइंद"^{२८} कणैठ काली - पहाड ॥६॥

१ आ.इ. कीयो । २ आ.इ. असमान । ३ अ. दाहिणी । ४ इ. दाहणी । ५ इ. दीपै । ५ आ.इ. पिता । ६ अ. सत्रु । आ. सत । ७ आ.इ. लियो । ८ इ. चहुवाण । ९ आ. अतली बल । इ. अत्रुल-बल । १० आ.इ. असि हास । ११ इ. दलपति । १२ अ. दादो । १३ आ.इ. उदियासिघ । १४ इ. अवीयाट । १५ आ. परिभवे । इ. परिभव । १६ इ. चहुवाण । १७ आ.इ. लियो । १८ इ. पीपाड । १९ आ.इ. तखत्तह । २० आ. दखणाध । इ. दखणाधि । २१ आ.इ. विढियो । २२ इ. रहै । २३ इ. रिणी-खेत । २४ अ. खाड-कमल । आ. खडकमल । २५ आ. जेम । २६ आ.इ. आंजीयो । २७ आ. घाठ-बराड । इ. घाट-बराड । २८ इ. गेयंद ।

जगमाल महेवै जैतहत्थ^१ ।

“मालै” तिलक्क रावळ समत्थ ॥

“दूदा” सु - नंद^२ दूसरी “मेघ” ।

राठीड वहै व्रत त्याग तेग ॥७॥

भगवानं दास भाराथ^३ भल्ल ।

“वगडी” तखत्त^४ आखाडमल्ल^५ ॥

लांगडी हणुं जिम^६ लियण^७ बाथ ।

ओगम लागे^८ अणभंग नाथ ॥८॥

“जसवंत” मंडोवर दिग्गपाल ।

“माहेस” कळोधर मच्छराळ ॥

“सादूळ” पिता विठ मरण दीह ।

देवडी संघारे समर सीह ॥९॥

“माधव” मयंद गय घड विभाड ।

पूरणलोत^९ प्रिसणां^{१०} पछाड ॥

है - थाट चलावै चाढ^{११} हीक ।

मंडळीक हरौ गिड मंडळीक ॥१०॥

नरपाल काळ मांभी^{१२} निडार ।

“भांणीत^{१३}” भुज^{१४} नवकोट भार ॥

जैसिघ हरी जीपत्ति^{१५} जंग ।

इक पखर लक्ख पक्खर अभंग ॥११॥

बल्लाळ लहै^{१६} बिहुं^{१७} बांह लक्ख ।

राठीड रूप तेरहां^{१८} सक्ख ॥

“गोपाल” समोभ्रम काळ जम्म ।

दहिया^{१९} घड डोहण भड दुगम्म ॥१२॥

१ इ. जैत्र हथ । २ आ.इ. सुतन । ३ अ. भाराथ । ४ इ. तपेत्त । ५ आ. आपड-मल । इ. आपडमल । ६ इ. जियण । ७ आ. लीयण । ८ आ.इ. लगै । ९ आ. पूरणमलोत । इ. पूरमलोत । १० इ. प्रिसणां । ११ आ.इ. चाडि । १२ आ.इ. मांभी । १३ आ. भाण उत । इ. भांण उत । १४ इ. भुजे । १५ आ. जीपत्ति । १६ इ. लहै । १७ इ. बिहु । १८ आ.इ. तेरहै । १९ इ. दहीयां ।

वीठल्लदास वीराधि^१ - वीर ।
 सामंत अमंग रिण सूरधीर ॥
 दहियौ^२ जिण मोडण जडि दवाढ ।
 खीवर रिण वाहै खडग वाढ ॥१३॥

गोअरधन^३ गाढिम लोह - गड्ड ।
 संग्राम - चंद समोअम सनड्ड ॥
 बाळा - पुर विढीयो^४ बळ प्रमाण ।
 वड रावत लोडी^५ खुरासाण ॥१४॥

संग्राम कांम "राजो" स "कूप" ।
 राठीड प्रमाणै पंच - रूप ॥
 "विसनावत" वीरति^६ वधी घाड^७ ।
 मेडतीयो^८ मुइयड^९ भड किमाड ॥१५॥

गोपाल दास गरुअत^{१०} मेर ।
 पर घड विभाड पक्खरह सेर ॥
 "सुंदर" सुतन्न सात्रवां^{११} सल्ल ।
 मरजाद महा नेठाह - मल्ल ॥१६॥

अणडोल असंकत आसकन्न^{१२} ।
 मानावत माभी तिभै - मन्न ॥
 "भुंभार"^{१३} भार असमान भेल ।
 ईसर^{१४} हर ओपम रिण अठेल ॥१७॥

"जगतौ"^{१५} भुजाळ जमजाळ जोध ।
 कमधज्ज भयंकर काळ क्रोध^{१६} ॥
 "रामउत" "रूप" राठीड वंस ।
 अवतार वीरम - देव अस ॥१८॥

१ इ. वीराध-वीर । २ आ.इ. दहीयो । ३ इ. गोवर-धन । ४ आ.इ. विढीयो ।
 ५ आ.इ. लोडी । ६ इ. वीरत । ७ इ. वधीयाड । ८ आ. मेडतीयो । ९ इ. मेडतीयो ।
 १० आ. मुईअड । ११ आ. गरुअत । १२ आ.इ. सत्रवां । १३ आ. आसकन्न ।
 १४ आ. सत्रवां । १५ आ. भुभार । १६ आ. इसर । १७ आ. जगतौ ।
 १८ आ. जगतौ । १९ इ. क्रोध ।

हरदास विढ़े वाहक मन्न ।
 तुडताण तुग^१ "नाहर" सुतन्न ॥
 "सुरजन्न" हरी समहर^२ अपल्ल ।
 राठीड अभनमी^३ रायमल्ल^४ ॥१६॥

"राजी" निराट रिम थाट - चूर ।
 "सांवळ" सुतन्न ऊजळी सूर ॥
 अभनमी भोज अणखूट चाइ^५ ।
 घण कोपि आवूं घड वरण घाइ^६ ॥२०॥

जगनाथ तखत पाली जडाग^७ ।
 अखराज^८ हरी वरजाग^९ आग^{१०} ॥
 दूसरी^{११} "मांन" माभी^{१२} दुभल्ल ।
 मछरीक जिसी मूछाल^{१३} मल्ल ॥२१॥

चहवाण "घाल"^{१४} चम्मर^{१५} वंवाळ ।
 सूरमीसीह सांमत सिघाल^{१६} ॥
 "सिखरा" सुतन्न साचोर^{१७} सोह ।
 दूसरी "कन्न" अरि घडा डोह ॥२२॥

नरसिघ दास नेठाह^{१८} घीर ।
 जगमाल सुत्त कमधज^{१९} कंठीर ॥
 उजवाळ "ऊंदो" हर^{२०} अवीह ।
 डूंगरसी "जसवंत" तेजसीह ॥२३॥

"मोहण" आभूखण मारवाड^{२१} ।
 राठीड जुडे जीपंत राड^{२२} ॥
 "गोपाल" तणौ खत्रियां^{२३} नगेम ।
 खग त्याग अभनमी^{२४} "रयण" खेम ॥२४॥

१ इ. तुड तुंग तांण । २ आ.इ. समहरि । ३ इ. अभिनमो । ४ इ. राइमल ।
 ५ इ. चाई । ६ इ. घाई । ७ आ.इ. जडागि । ८ आ.इ. अखराज । ९ इ. वरेजाग ।
 १० आ.इ. आगि । ११ इ. दुसरी । १२ इ. मांभी । १३ आ. मूछाल । इ. मुछाल ।
 १४ आ.इ. घाल । १५ आ.इ. चम्मर । १६ आ. सिघाल । १७ इ. साचोर । १८ आ.
 नेठाह । १९ आ. कमधक । २० आ.इ. उदांहर । २१ आ.इ. मारवाडि । २२ आ.इ.
 राडि । २३ आ. पत्तीयां । इ. पत्रीयां । २४ इ. अभनम ।

“अजमाल” भयंक ऊहडां^१ छात ।
 “गिरमेर” तणा गिरमेर गात ॥
 “कोढणा” धणी कमधजे राह ।
 नव - कोटी आगळ नरां - नाह ॥२५॥

गोपाळय जाणै दसै^२ देस ।
 नव - गढ किमाड माडह नरेस ॥
 आसाव्रत^३ केवी करण अंत ।
 कालै - नळ^४ भाटी करड दंत ॥२६॥

दळ रूप दळां ओपम “दयाळ” ।
 बांहां प्रळंब^५ भाटी बांहाळ ॥
 “गोपाळ” तणी किरमाळ भल्ल ।
 मछरीक वहै जिण^६ सहस मल्ल ॥२७॥

“केसव” “अजीत” सरजीत कोट ।
 “वाघ” उत वरण अरि घड^७ अबोट ॥
 “माल” हरौ^८ ओपम महि अजाद^९ ।
 नव-गढ नरेस नव-गढां-नाद नाद ॥२८॥

मछरत्त^{१०} भीच^{११} भाटी मरह ।
 “अचलैस”^{१२} अचगळ रामचंद ॥
 “सुरताण”^{१३} पिता बंधियै^{१४} नेत ।
 मुड^{१५} मांभी^{१६} मारै^{१७} मूअै^{१८} खेत ॥२९॥

रिण घोधर “वेणी” प्रथीराज^{१९} ।
 भाटियां^{२०} भुजे भारोथ लाज ॥
 अजमेर मुअै^{२१} “गोइंद” तात ।
 सकबंधी जाणै दीप सात ॥३०॥

१ आ.इ. उहडां । २ इ. दस । ३ आ.इ. आसाव्रत । ४ आ. काले-नल । इ. काल-
 नल । ५ आ. पलंब । ६ आ. जिसा । ७ इ. घडि । ८ आ.इ. मल्ल हर । ९ आ.इ.
 मृजाद । १० आ. मछरत । इ. मछरंत । ११ इ. भाच । १२ इ. अचलस । १३ आ.
 सुरीताण । १४ आ.इ. बंधीयै । १५ आ. मुर । १६ आ. मोभी । इ. माभी ।
 १७ आ.इ. मारै । १८ आ. मूअै । १९ आ.इ. प्रथीराज । २० आ.इ. भाटीयां । २१
 आ.इ. मूवी ।

“ईसर” वहंत वपि वीर - व्रत ।
 भाटियां^१ - राज सांमह भगत्त ॥
 हरदास तणी^२ मारकां^३ हद्द ।
 रण - ताळ काळ पाखर खवद्द ॥३१॥

हरदास न चूकै चाइ^४ चौज ।
 अणहुतै^५ वीकम^६ हुतै भौज^७ ॥
 खग त्याग उजाळ^८ टाळि खोड^९ ।
 कांनावत जादम छूपन कोड^{१०} ॥३२॥

रुघनाथ भीम भाटी भुजाळ ।
 काळी पहाड चालती काळ ॥
 जोग-रज पिता नृप^{११} छळि निभ्रंत ।
 जमदादु हणै^{१२} गरज प्राण अंत ॥३३॥

“भगवानं” “भाण” वैचत्र^{१३} वाह ।
 सुरताण तणा समहर सनाह ॥
 “रामेण” कळोधर “रूप” रेण ।
 सारखा^{१४} अरज्जण भीमसेण ॥३४॥

देवडी “अंचळ” दोमज^{१५} दुवाह^{१६} ।
 “रावत्त” समोभ्रम^{१७} रिमां - राह ॥
 “डूंगरे” मेर “परवत” “माळ” ।
 अरवद्द अढारै - गिरि^{१८} उजाळ^{१९} ॥३५॥

कळि-मूळ कमधज्ज “रूप”^{२०} कन्न ।
 तुडि भुइ^{२१} अपल “जैमाल” तन्न ॥
 अभनम्मी “वीदी” “भारमल्ल” ।
 “वालां” हर^{२२} ओपम वाथ बल्ल ॥३६॥

१ आ.इ. भाटीयां । २ इ. हरी । ३ इ. मारकी । ४ आ.इ. चाई । ५ आ.इ. अणहुतै । ६ इ. विकम । ७ आ. फोज । इ. मोज । ८ आ. पाड । इ. पोडि । ९ इ. काडि । १० आ.इ. नृप । ११ आ.इ. हिणै । १२ इ. वैचत्र । १३ आ.इ. सारिष । १४ आ. दोमंज । इ. दोमजि । १५ इ. दुवाह । १६ इ. समोभ्रम । १७ आ. अढारै-गिरि । इ. वारंगिरि । १८ आ. उजाल । १९ इ. कूप । २० आ. भूइ । इ. भूई । २१ इ. वाला-हर ।

आसकन्न^१ वडो^२ एकाधपत्ति^३ ।
 नीब-उत^४ नमो^५ आतम सकत्ति ॥
 ओपमा^६ करन्नै अणं - नींद^७ ।
 वरियांम^८ कुंआरी^९ घडा^{१०}-वींद ॥३७॥
 "नरहरो"^{११} तिडर "कल्याण" नंद ।
 कमध्वज पराक्रम कपी^{१२} चंद ॥
 आया कणैठ, बंधव अबीह ।
 त्रिवधी घड डोहण तेजसीहं^{१३} ॥३८॥
 पूरणह - मल्ल बाहां पलंब^{१४} ।
 "ईदा" हर^{१५} राखै रुकि अंब ॥
 वर - वीर धीर सुरतांण वेत ।
 बाखांण चौरासी वीर - खेत ॥३९॥
 पडिहार भीम भुज दांत भत्त ।
 प्रित्थमी^{१६} दीप जाणै सपत्ता ॥
 थाकै सति साहंस^{१७} विस्सरांम ।
 "नाद"^{१८} उत कियो^{१९} रवि चंद नाम ॥४०॥
 अनि अन्न राज वंसी अनेक ।
 इक्काह^{२०} भलो वरियांम^{२१} एक^{२२} ॥
 मोटा गढ जोधपुरै मभार ।
 रावत्त मिळै राजां^{२३} दुवार ॥४१॥
 आवंत^{२४} दरगह अन्न - मंध^{२५} ।
 मोड - बंधा ठाकर मुगट - बंध ॥
 जोधपुर धणी आगळ^{२६} जोधार ।
 दीवांण^{२७} बड्डा करि जुहार ॥४२॥

१ आ. आसकन्न । २ आ.इ. वडो । ३ आ. एकाधपत्ति । इ. ऐकाधपत्ति । ४ आ.इ. नीब उत । ५ आ. नमो । इ. मो । ६ आ.इ. ओपम । ७ आ.इ. अण-नींद । ८ आ. वरयांम । इ. वरीयाम । ९ आ.इ. कुआरी । १० आ. घडां । ११ इ. नरहरो । १२ आ.इ. कपी । १३ इ. तेजसिह । १४ इ. प्रलंब । १५ आ. ईदा हर । इ. ईदाहर । १६ आ.इ. प्रित्थमी । १७ इ. साहस । १८ आ. नाद उत । १९ आ.इ. कीयी । २० आ. दूकाह । इ. एकाह । २१ आ.इ. वरीयांम । २२ आ इक । २३ आ.इ. राज । २४ अ. आवत । २५ आ.इ. अनि-मंध । २६ आ. आगली । इ. आगलि । २७ इ. दीवाण ।

सामंत^१ सुहड^२ दीपै^३ सरब्ब ।
 जीपंत जिके जुध महा - प्रब्ब ॥
 प्रौचाळ^४ महा जोधा प्रचंड ।
 डोलता^५ डहै नभ भुजा - डंड ॥४३॥

ढैचाळ ढलां^६ ढाहण^७ सगाह ।
 भड सिंह^८ जोध आजांन - बाह^९ ॥
 चाचरै जिकै चांडंत देग ।
 तेजरी तीह^{१०} तूटंत तेग ॥४४॥

दळ सुहडा^{११} सूरु - तन दिपंति ।
 पांन सुं दीप किरि प्राजळंति^{१२} ॥
 दिगंबर देहा देव - गात ।
 आदीत दुवां - दस^{१३} मुखै^{१४} आत ॥४५॥

वेहंद् हद् वागै वणाव ।
 चम्मीर हीर जांमै जडाव ॥
 जगमगै जोप कसबी^{१५} अनूप ।
 नोलक्क मसंजर लाल सूप ॥४६॥

आभूखण सोहै अंग अंग ।
 सिर पाग^{१६} वादळाई सुचंग ॥
 केसरिया^{१७} वागा वपे किद्ध^{१८} ।
 सोहिया^{१९} सुहड^{२०} आखाड-सिद्ध^{२१} ॥४७॥

वरियांम^{२२} विराजै तेण वार ।
 आभूखण वसत्रां अलंकार ॥
 डांबिये^{२३} फरी सेले दुवाढ ।
 जरकम्मर^{२४} तेगां जम्मदाढ ॥४८॥

१ आ.इ. सामंत । २ आ.इ. सोहड । ३ इ. दीपे । ४ आ.इ. पुचाल । ५ आ.इ. डोलतै ।
 ६ आ.इ. ढल । ७ इ. गृहाण । ८ आ.इ. सेहर । ९ आ. अजांन-बाह । इ. अजांन-
 बाह । १० इ. त्यांह । ११ आ.इ. सोहड । १२ अ. प्राजलंत । १३ अ. दुआ - दस ।
 १४ इ. मुपे । १५ आ. कसमी । १६ आ.इ. पाघ । १७ आ.इ. केसरिया । १८ आ.
 किध । इ. कीध । १९ आ.इ. सोहीया । २० आ. सीहड । इ. सोहड । २१ आ.इ.
 अपाड-सिध । २२ आ.इ. वरीयांम । २३ आ.इ. डांबीयै । २४ आ. जरकमर । इ. जरंकमर ।

कोमुंड खवै कडि कसै तूण^१ ।
 भड - पत्थक भीखम करन^२ द्रोण ॥
 केसर तिलक भाळीअळेय^३ ।
 मुक्कता - माळ सोहै गळेय^४ ॥४६॥
 हिरनमै पन्न हीरै^५ जडित ।
 सांकळा करगो सुसोभित ॥
 मुद्रका सुकर - साखा सुभग ।
 मिण जाण दिपै फुण सेस नग ॥५०॥
 आभरण रयण उद्योत कार ।
 सौरंभ अग - मद^६ रंभ सार ॥
 देहा^७ विलेप स्त्रीखंड डाळ ।
 मालती चंपका^८ पुहुपमाळ^९ ॥५१॥
 अहि - वेल पत्र कप्पूर^{१०} सुक्ख ।
 तंबोल लाल सोहंत मुक्ख ॥
 आघ्राण^{११} छभा परिमळ असंख ।
 गुंजारव^{१२} डंबर भ्रमर^{१३} पंख^{१४} ॥५२॥
 सौरंभ^{१५} फूट जब्बाध^{१६} एम ।
 घण वूठे जळहर लहर^{१७} जेम ॥
 पेखियै^{१८} तास^{१९} सोभा^{२०} परम्म^{२१} ।
 किसनागर अंबर जख कदम्म ॥५३॥
 सूंधे सरीर किय^{२२} गरक्काब ।
 अब्बीर नीर पहरै गुलाब ॥
 सम्मूह सुहड^{२३} परिमळ सुभट्ट ।
 गांधियां^{२४} तणा^{२५} किरि^{२६} जाण हट्ट ॥५४॥

१ अ. तोण । इ. गि । २ इ. क्रन । ३ आ इ. भालीअलेह । ४ इ. गलेह । ५ इ. हीरे ।
 ६ आ.इ. मृग-मद । ७ इ. देहां । ८ आ.इ. चंपक । ९ आ.इ. पुहपमाल । १० आ.
 कपूर । इ. कपुर । ११ आ.इ. आघ्राण । १२ आ.इ. गुंजारव । १३ आ.इ. भ्रमर ।
 १४ अ. पंख । १५ आ. सौरंभ । १६ आ. जबाध । इ. जुबाध । १७ इ. पलहर ।
 १८ आ. पेखीयै । इ. पेखीयै । १९ आ. नास । २० इ. सोभा । २१ आ. परम ।
 इ. परंम । २२ आ. थोयी । इ. कीयी । २३ आ.इ. सोहड । २४ आ.इ. गांधीया ।
 २५ इ. तणां । २६ अ. किर ।

रावत्त सह राठीड देव ।
 'गजपती' इंद^१ दूजो^२ 'गंगेव' ॥
 राजान^३ राउ^४ राठीड घन्न ।
 किरि जाण दीठ अवतार कन्ह ॥५५॥
 गजसिघ मेर गिरमेर गात ।
 सिंघासण^५ आसण सीस छात^६ ॥
 चौसर^७ सीस चम्मर दुळंत^८ ।
 कीरती^९ सुकव चारण भणंत ॥५६॥
 'रुध' सांम वेद वाचंत^{१०} विप्र^{११} ।
 नखतंत राय^{१२} जद सुणंत^{१३} नृप्प^{१४} ॥
 दीसंत^{१५} दुयंग^{१६} पद देव-गत्ति ।
 दीवांण वडो वड देसपत्ति ॥५७॥
 दीवांण सुहड दीप सुवंस ।
 पावासर जाणै राजहंस ॥
 रावत्त इसा^{१७} मिलियो^{१८} राजिद्र ।
 अणुहार छभा सुर^{१९} जाण इंद्र^{२०} ॥५८॥

इहा

इंद्रापुर आरख^{२१} इसा, प्रथमी^{२२} इंद्र^{२३} प्रताप ।
 इंद्रा^{२४} छभा कमधां छभा, इंद्र 'गजैसी' आप ॥१॥
 मध नायक^{२५} 'मांडण' हरी, 'राजो' भीम भुजाळ ।
 सयळ छभा पंगति सुहड^{२६}, जाणक^{२७} मुगतामाळ ॥२॥
 चाचर सूर पऊर^{२८} गह, चाचर चाड्डे देग ।
 लक्ख लहै दुहु वांह-बलि, दुइ^{२९} दुइ वंधै तेग ॥३॥

१ इ. ईंद्र । २ इ. दुजो । ३. आ. राजान । ४ इ. राव । ५ इ. सींघासण ।
 ६ आ. छात्र । ७. छात्र । ७ अ. चौसरी । ८ आ. इ. दुळंती । ९ आ. कीरति । इ.
 किरति । १० इ. वाचंति । ११ इ. विप्र । १२ आ. राइ । इ. राई । १३ आ. सुणत ।
 इ. सुणंति । १४ आ. इ. नृप । १५ आ. दीसंति । १६ आ. दुयंग । इ. दुयंगम ।
 १७ इ. ईसा । १८ इ. मिलीया । १९ इ. सुर । २० आ. इ. ईंद्र । २१ इ.
 आरौप । २२ अ. इ. प्रथमी । २३ इ. ईंद्र । २४ ईंद्र । २५ आ. नाइक ।
 इ. नाईक । २६ आ. सोहड । इ. सोहडि । २७ आ. इ. जाण । २८ इ. पऊर ।
 २९ अ. बलि ।

दीठी हेक दईव - गति, जोधपुरै दीवांण ।
सुहड^१ गडे-वड भड सिहर, मिलिया^२ रांणी^३-रांण ॥४॥

कवि-वाच

गाथा

गजसिंघी^४ राजिंदी, खत्रियै^५ राजसिंघ वर-खत्री^६ ।
सुर अधपत्ती^७ इंदी^८, सुर तेतीस कोड^९ सुरामुक्ख^{१०} ॥२॥
सिधांण छभा रुद्री^{११}, बळि पयाळ सग इंद्रांणी^{१२} ।
रठ्ठीड वीर वसुधाः, त्रिभवणे^{१३} छभा चतुरहः ॥२॥
सुरपुरी अनंत सिद्धा, नभे नाखत्र-माळ नवलख ।
तेत्रीस^{१४} कोड, ^{१५} सुरए, तेरह साखा^{१६} वंस राठीडह^{१७} ॥३॥
पाबासरेण हंसा, सिंघलदीपेण^{१८} सिंह^{१९} सादूळा ।
बीजा चले न नग^{२०}, जोधपुर जोध कमधज्जं ॥४॥
लिजीयी^{२१} नयरेण हीरा, सायर मभेण रतन नेपती ।
ओवण^{२२} मेर सिखरे, सुहडा^{२३} सिध खेत मंडोवर ॥५॥
सामंत^{२४} सुहड^{२५} सूरों^{२६}, जोधा रिणमल जोधवरियांमं^{२७} ।
दीवांण^{२८} देसपत्ती, मिलिया^{२९} थट मेखळा-मेर ॥६॥

महाराजा गजसिंघ री वरणण

गाहा चौसर

साखेतां^{३०} सुहडां^{३१} सामंतां^{३२} । विरदैतां जोधां वळवंतां^{३३} ।
'गाजीसाह' सिरंगै^{३४} मंतां । रांणी-रांण^{३५} मिळै रावतां ॥१॥

१ आ.इ. सोहड । २ आ.इ. मिलीया । ३ आ.इ. रांणी-रांण । ४ आ.इ. गजसिंघी ।
५ आ. पत्रीये । इ. पत्रीह । ६ आ. वरषती । इ. वरषत्री । ७ आ. अधपत्ती । इ. अधि-
पत्ती । ८ आ. इंदो । इ. इंदी । ९ आ.इ. करेड । १० आ.इ. सुरमुष । ११ आ.
रुद्री । इ. रुदी । १२ आ. इंद्राणी । १३ आ. त्रिभवणे । आ. त्रिभवन । १४ आ.इ.
तेतीस । १५ आ.इ. कोड । १६ आ. सषा । इ. साष । १७ आ. रठीड । १८ आ.
सीघलदीपेण । इ. सीघल दीपेण । १९ आ.इ. सीह । २० आ.इ. नगं । २१ आ.
लीजे । आ. लिजी । २२ आ. ओवण । इ. ओण । २३ आ.इ. सोहड । २४ आ.इ.
सामंत । २५ आ. सोहेड । इ. सोहड । २६ इ. सूरों । २७ आ. वेरीर्याम । इ. वरीर्याम ।
२८ इ. देवाण । २९ आ. मिलीयां । इ. मिलीया । ३० आ.इ. सखेतं । ३१ आ.इ.
सोहडां । ३२ आ.इ. सामंतां । ३३ आ.इ. बलिवंतां । ३४ इ. सिरंगै । ३५ आ.
राण राण ।

वीच छभा "गजसाह" विराजै । छत्रपाट सिंघासण छाजै ।
 साजै नाद दिहाडै साजै । देखि कळा ससि^१ पूनम^२ लाजै ॥२॥
 वीरति^३ मुख सूरति विलकुलियं^४ । कमधज तेज कमळ कळमळयं^५ ।
 किसन वरण माझिल कंठलियं^६ । सूरज^७ किरण जाण भलहलियं^८ ॥३॥
 सामं^९ धरम कुळ धरम संभारै^{१०} । आच "गजैसो" खडग उभारै^{११} ।
 ऊफणियी^{१२} असमान अघारै । मिलिया^{१३} मूँछ अणी भूंहारै^{१४} ॥४॥
 साहस बळ छळ पेख सनसरियं^{१५} । राव राठीड वीर रस्सरिसीयं ।
 कूंत त्रिभाग धूण^{१६} करसीयं । हठिचढि^{१७} कोप मुलक मुख^{१८} हसियं ॥५॥
 कमध^{१९} कहै कर रुक^{२०} कळासी । आतम जोध विद्या अभियासी ।
 वात रहै ब्रह्मा वरसासी । हुयसी जुद्ध नहीं ऐ^{२१} हासी ॥६॥

महाराजा रा सामंतां री वरणण

उठिया^{२२} सीह करै औवासी । वीजळ परतक चौमंडावासी^{२३} ।
 थोडै जंग घणघणा^{२४} थासी । कोइ^{२५} मत मंत्र^{२६} सुमत्ति^{२७} प्रकासी ॥७॥
 वांका^{२८} भीचि^{२९} घण भरियावळि^{३०} । इम बोलिया^{३१} भुजाडंड आंमळि^{३२} ।
 भिडता भांजै सबळ भुजां बळि । औ मुह रावत तो^{३३} मुंह^{३४} आगळि^{३५} ॥८॥
 सुहडां^{३६} करि जुहार सब्बांही । राज महेल राज धू - आंही^{३७} ।
 राजा पद्धारै रळियांही^{३८} । मुख हसत राव लगन^{३९} माही ॥९॥

तेपुर - वरणण

कांमाकांम कमधज दीठी^{४०} । पलकां अंतर^{४१} अमी पड्ढी^{४२} ।
 रत्ता लोचन मुख^{४३} मजीठी^{४४} । आवि सिंघासण^{४५} सिंघ बड्ढे^{४६} ॥१०॥

१ आ.इ. सिसि । २ इ. पूनिम । ३ आ. वीरती । इ. विरति । ४ आ.इ. विलकुलीयं । ५ आ.इ. कलकलीयं । ६ आ. कंठलीयं । इ. कंठालीयं । ७ इ. सूरज । ८ आ.इ. भलहलीयं । ९ आ.इ. साम । १० आ.इ. संभारे । ११ आ.इ. उभारे । १२ आ.इ. उफणीयी । १३ आ.इ. मिलीया । १४ आ.इ. भूंहारे । १५ आ. सांये । इ. सीयं । १६ आ. धूण । इ. घुणे । १७ आ.इ. चडि । १८ आ. मूप । १९ इ. कमधज । २० आ. रुक । २१ इ. ए । २२ आ.इ. उठिया । २३ आ. चामंडवासी । २४ इ. घणै घण । २५ इ. कोई । २६ आ. मंत । २७ आ.इ. सुमति । २८ आ. वांका । २९ आ.इ. भीच । ३० आ.इ. भरीयावली । ३१ आ.इ. बोलीया । ३२ इ. अंमलि । ३३ इ. ती । ३४ आ. मुह । ३५ आ. आगली । ३६ आ.इ. सोहडां । ३७ आ. घुआंही । इ. घुआई । ३८ आ.इ. रलीयां । ३९ आ. लगन । ४० आ. दिठी । ४१ आ.इ. अंतरि । ४२ आ. पयिठी । इ. पयठी । ४३ इ. मूप । ४४ आ. मजेठी । ४५ आ. सिंघासण । ४६ आ. बयिठी । इ. बयठी ।

वप^१ सोळह^२ सिणगार^३ वनित्ता । लखण बतीस संजुगत ललित्ता^४ ।
 सोभा सारिख^५ किरण सवित्ता । दीपै^६ मंदर राज दुहिता ॥११॥
 कनक-लता पत्र वसत्रक कांमणि । भूहां^७ भमर^८ विराजै भांमीणि ।
 चपळ नयण प्रफुलत चंद्राणण^९ । किरि पेखे हि-म्रिगो^{१०} कमोदणि ॥१२॥
 वदन कळा सोळह सिसहर वरि । कोमळ वप्प^{११} वरन्नी केसरि^{१२} ।
 वांमा अंग वणी वर सुंदरि^{१३} । कनकलता जाणै^{१४} कळप्पतरि^{१५} ॥१३॥
 दैसीतां धूडह^{१६} भूलवकी । चंपक वरन कळी किरि पक्की ।
 सांम सन - मुख आवो सबकी । सह बैठी सिणगार चवक्की ॥१४॥

गाथा

सिव सकत्ती सम मुगती^{१७}, सिव मभि सकति सकति सिव मभे ।
 आतम सकति सकति सिद्धी, सिव सकति पिंड ब्रह्मंडी^{१८} ॥१॥
 प्राचीन करम सुब्भए^{१९}, पुरखा^{२०} पाइत उत्तमा^{२१} महिला ।
 कुळ - दीप पुत्र जिणयै^{२२}, कुळ धू^{२३} विनै रूप संजुगता ॥२॥

कवित्त

सीळ - मांन संजुगत, कळा सोळह ससि - वरणी^{२४} ।
 वाघ - लंक पिक - वांणि^{२५}, हंस - गमणी म्रिग - नयणी^{२६} ॥
 जिण जायौ "जसवंत", पाट पायौ सिंघासण ।
 खुम्मांणी^{२७} पण खत्र, अंग लगौ^{२८} आभूखण^{२९} ॥
 सारधू "भांण" सुहाग सू^{३०}, उदै - भाग आदीत वरि ।
 कुळ - वहू "मल्ल" "गंगेव" घरि^{३१}, कुळ - पुत्री "हम्मीर"^{३२} हरि ॥१॥

१ आ.इ. वपि । २ आ.इ. सोलैह । ३ आ. सिधर । इ. सिधार । ४ इ. ललता ।
 ५ आ. सारख । ६ इ. दीपै । ७ आ. भूहा । इ. भूहं । ८ आ.इ. भमर । ९ आ.
 चंद्राणिणि । इ. चंद्राणणी । १० आ. हिमग । इ. हिम्रग । ११ आ.इ. वपि । १२ आ.
 केसुरि । इ. कैसुरि । १३ आ. सुंदरी । १४ आ.इ. जांणी । १५ आ.इ. कलपतरि ।
 १६ आ. धूडी । १७ आ.इ. जुगती । १८ आ.आ. ब्रह्मंडी । १९ आ. सुभुए । इ. सुभए ।
 २० इ. में यह पंक्ति निम्न प्रकार है । 'पुरषा पाइत उजला उत्तमा महिला' । २१ अ.
 उत्तमा । २२ आ. जिणये । इ. जिणये । २३ अ. धुव । २४ आ.इ. सिसि-वरणी ।
 २५ आ. पिक-वाणि । इ. पिक-वांण । २६ आ. मृग-नयनी । इ. मृग-नयणी । २७ इ.
 पुंमांणी । २८ आ. लगौ । इ. लगै । २९ आ. आभूखण । ३० अ. सम । ३१ अ.आ.
 घर । ३२ आ.इ. हमीर ।

सुवपि सोळ स्रंगार^१, लाज वत्रीसैइ^२ लक्खण^३ ।
 खम्या धरम धीरज्ज, सीळ संतोख सतोगुण^४ ॥
 रंभा देवांगना, रतन्न ग्रन्भा^५ पति रत्ती ।
 गंगा गवरि लिच्छम्मि, जिशी सीता सतवत्ती^६ ॥
 अखैराज - वंस जसराज - धू, धू - जिम धारण नह फिरी ।
 'अमरेस' पुत्र जिण जनमियौ^७ धन^८ चहुवांण^९ कण-गिरी ॥२॥
 मन गंगा-जळ-निमळ, वदन किरि^{१०} पूनम^{११} ससिहर^{१२} ।
 सुवप व्रन्न^{१३} सोव्रन्न^{१४}, गात ममंतक गैमर ॥
 कडि^{१५} लच्छण केहरी, जंघ जाणै जाळधर ।
 राइ-आंगण^{१६} गति क्रमति, हंस किरि^{१७} मांण-सरोवर ॥
 'जग रूप' सधू 'जगनाथ' - कुळ, पदमणि किरि^{१८} सूरज प्रभा ।
 वनीती कुलीण कुरम वडी, परम लछि पती वल्लभा^{१९} ॥३॥
 चपळ नेत्र सारंग, रेख अहू^{२०} मकरंद ।
 दीपक - नासा दिपंत^{२१}, सरद - रेणी मुख - इंद्रह ॥
 डंसण - बीज^{२२} - दाडंम^{२३}, वेणि - वासंग^{२४} - भुयंगम ।
 भटियांणी^{२५} वर कमध, समद^{२६} गंगा नदि^{२७} संगम ॥
 'कलियांण'^{२८} सधू मोटै कुळहि, सुवप महातम सुरसरी ।
 इधकार सील अधिक वडै, जमळि^{२९} कंत जैसल - गिरी^{३०} ॥४॥
 दुति सोभा दामणी^{३१}, वरन आदीत वरन्नी ।
 भाव - सिध सारधू^{३२}, देव कन्या^{३३} उत्पन्नी ॥
 आप सकति अवतार, अउव आभूखण अवर ।
 करग^{३४} पंच किरि साख, काम जाणै^{३५} पंचे-सर^{३६} ॥

१ आ.इ. सिंगार । २ इ. वतीसैइ । ३ आ.इ. लक्खण । ४ इ. सतगुण । ५ इ. ग्रन्भा । ६ इ. सतवत्ती । ७ इ. जनमियौ । ८ इ. धन । ९ अ. चहुवांण । १० अ. किरि । ११ इ. पूनम । १२ इ. ससिहर । १३ इ. व्रन्न । १४ इ. सोव्रन्न । १५ इ. कडियां । १६ आ. अंगण । इ. अंगणि । १७ अ. किरि । १८ अ.आ. किरि । १९ इ. पति-वल्लभा । २० इ. अहू । २१ इ. दिपंति । २२ इ. बीज । २३ इ. दाडिम । २४ आ. वासिग । इ. वासग । २५ आ.इ. भटियांणी । २६ आ.इ. समंद । २७ आ. गंगा नदि । इ. गंगा नदी । २८ आ.इ. कलीयांण । २९ अ. जमल । ३० इ. जैसल-गिरी । ३१ इ. दामणी । ३२ इ. सारधू । ३३ इ. कन्या । ३४ इ. करगं । ३५ इ. जाणै । ३६ इ. पंचई-सर ।

वतीस^१ लखण चौसठ^२ कळा, आंबेरी उत्तम सहज ।
कूरम^३ संपेखे^४ मुख कमळ, सरद इंद्र पावंत^५ लज ॥५॥

त्रिहुं पक्ख ऊजळी^६, कमळि^७ निकळंक कळा निधि ।
मांण महातम मरट, अगड सूरतन अव्वधि^८ ॥
प्रविता पारव्वती, कना कमळा सावंत्री ।
जमना गंगा जिशी, चंद्र - भागा सरसत्ती ॥
'चंद्रभांण' सधू चंद्रा वदनि, चंद्रावत सीसोदणी ।
रूपक चडावण रांम - पुरी^९, इधक रूप इंद्रायणी^{१०} ॥६॥

लोयण^{११} चंचळ चपळ^{१२}, अचळ धू जिम मन धारण ।
कडि मयंद^{१३} मुख इंद्र^{१४}, दीरघ वैणी अहि दारण ॥
मद गयंद गति मंद, काया जाणै ग्रभ^{१५} कंदळि ।
वपि चंपक दळ वरण^{१६}, सीस गुंजार करै अलि ॥
सत्र साल^{१७} पढीजै^{१८} वीरभद्र^{१९}, प्रघट^{२०} जांम है मह प्रथी^{२१} ।
जाडैचोज 'जसवंत' जांम, धु जिशी^{२२} गंगा भागीरथी ॥७॥

नवसात् ससि^{२३} वदन, अरक कांडितक^{२४} ऊजळ^{२५} ।
डसण हीर^{२६} किर ललित, मुख लोयणां^{२७} भीमळ ॥
कमळ पत्र कर चरण, कंठ मोताहळ माळा ।
प्रवित अंग मन चंग, गंग जाणै^{२८} जळ धारा ॥
सारधु^{२९} सिखर महि-क्रन्न सुअ, रूप अनोपम वेरावळ रची ।
चहवांण इंद्र कमधज्जरे, साचौरी सुंदर सच्ची ॥८॥

चख चंचळ मन अचळ, कमळ चख भुहां^{३०} अलीअळ^{३१} ।
तन ऊजळ^{३२} पति रत्त^{३३} रूप भरता रुचि मंभळ^{३४} ॥

१ इ. वतीस । २ इ. चौसठि । ३ इ. कूरमे । ४ इ. संपेखे । ५ इ. पावंतज ।
६ इ. उजली । ७ अ. कमल । ८ इ. अविधि । ९ इ. रांम-पुरि । १० इ. इंद्रायणी ।
११ इ. लोइण । १२ अ. पल । १३ आ. इ. मयंक । १४ अ. आ. इंद्र । १५ अ. ग्रंभ ।
१६ आ. इ. वरन । १७ आ. सतसाल । १८ आ. पढुजै । इ. पढुजै । १९ इ. वीरभद्र ।
२० इ. प्रघट । २१ आ. प्रिथी । २२ अ. धूजि । २३ आ. सिसी । इ. सिस ।
२४ आ. कांडितक । इ. कांडितक । २५ आ. इ. उजल । २६ आ. इ. हीरन । २७ आ. इ. लोइण ।
२८ आ. इ. जाणै । २९ अ. सारधी । इ. सारधू । ३० इ. भूहां । ३१ इ. अलियल ।
३२ आ. इ. उजल । ३३ अ. पतिरत्त । ३४ इ. मंडल ।

केहरि जिम कडि क्रिस्स, लगति चालंती गजिद्रह^१ ।
 सोभति वैणी^२ सरप, हरै^३ धीरज्ज खगिद्रह^४ ॥
 कुळ मोटै बहुवां कुळ धुवां, मांन महातम^५ निरवहै ।
 कण सूप जिहीं^६ ओगण^७ तजै^८, गुण मोताहळ जिम ग्रहै ॥६॥

आदू मंजन करिध, पाट पेहरे देही दळ ।
 नयणे^९ कज्जल रेख, तिलक कुंकम भाळीयळ ॥
 कणै कांन त्राटक^{१०}, वेण नासा मोतीहळ^{११} ।
 हार उर^{१२} चंदन विलेप, रची^{१३} कांकण कटि मेखळ ॥
 गळि पुहप माळ नूपर^{१४} पगे^{१५}, अति तंबोळ^{१६} मुख चातुरी ।
 सिणगार^{१७} सवांही^{१८} खोडसै^{१९}, सह^{२०} सोहै^{२१} वर सुंदरी ॥१०॥

जिहं^{२२} वाणक्क^{२३} कटाख^{२४}, चपळ नयणी चंद्राणणि^{२५} ।
 के कुरंग लोचना, कांम अक्खी केकांणी ॥
 सूकेसी^{२६} उर-वसी^{२७}, ध्रितेची मैना^{२८} रंभा ।
 इंद्र-लोक अपछरा, इसी^{२९} उणहारि असंभा ॥
 गजसिंघ गहंतिर गजगमणि, इन्द्र अखाडै एहडी^{३०} ।
 के पात्र अलापै गेव-कंठ, के खवासि कन्हलि खडी ॥११॥

छंद अडिल्ल

एक खडी मुख रूप निहाळै । एक खडी सिर^{३१} चम्मर ढाळै ।
 कांम लतापिणकणक^{३२} वरन्नी^{३३} । पास खडी सुख रास पतन्नी ॥१॥
 धुंकार^{३४} हुई मिद^{३५} मांदळ । वीण रवाव ताळ स्त्रीमंडळ ।
 गीत संगीत सपत सुर गाए । आगळि पात्रअखाडौ^{३६} थाए^{३७} ॥२॥

१ आ. गजिद्रह । २ आ. इ. वैणी । ३ अ. आ. घरै । ४ आ. इ. खगिद्रह । ५ आ. माहातम । ६ आ. इ. जिही । ७ आ. ओगुण । इ. ओगुण । ८ इ. तजे । ९ इ. नयणे । १० आ. ताटक । ११ इ. मोताहळ । १२ आ. इ. डोर । १३ आ. इ. रचि । १४ अ. आ. नूपुर्ये । १५ आ. अंगे । १६ इ. तंबील । १७ अ. आ. सिण-घार । १८ अ. आ. सांवाही । १९ अ. पीडसै । २० आ. सह । इ. सोह । २१ इ. सोहै । २२ आ. इ. जीह । २३ अ. वाण इ. वाणक । २४ अ. आ. कटापु । २५ आ. इ. चंद्राणिणि । २६ आ. इ. सुकेसी । २७ अ. आ. ऊर-वसी । २८ इ. मैना । २९ आ. इ. इसी । ३० आ. इ. एहडी । ३१ आ. इ. सिरि । ३२ अ. कण । इ. कनक । ३३ इ. वरणी । ३४ अ. दोळंकार । इ. दाळंकार । ३५ अ. आ. मिद । इ. मिंदर । ३६ इ. आषाडी । ३७ इ. थाए ।

राग छत्तीस^१ तरंग अनंगं । रूप अनूप अनोपम रंगं ।
बोलीजं^२ सुख निस - वासर । आणंद गीत विणोद^३ अवस्सर ॥३॥

गाथा

रण - वास राज - रमणी, सूरज^४ किरणं^५ तुल सोभा^६ ।
फूलीक कांम वल्ली, करि मज्जे कांम आरांम ॥१॥

इहा

राजा राज-कुंवारीयां^७, आंगण^८ पद्धारेह ।
आदर मांन समप्पियो^९, दख्खे^{१०} पति^{११} सनेह ॥१॥

राजा भूलरि^{१२} रांणियां^{१३}, सोहै ईहीं^{१४} भंति^{१५} ।
किरि वेघाणै किरतियां^{१६}, चंदी पुनम^{१७} रति^{१८} ॥२॥

आज हुआ^{१९} किल्लाण सह, आज हसंदा^{२०} मुख ।
आप पघारे आंगणै, साहिब^{२१} दीना सुख ॥३॥

सबै मनोरथ पूरिया^{२२}, सबै पूरी^{२३} आस ।
जाण कमोदणि^{२४} सिस उदै, तन मन हुआ^{२५} विकास ॥४॥

सहुआं^{२६} कुळ वडुं जनम, सहुवां^{२७} वड्डा भाग ।
सहु^{२८} छत्रपति^{२९} पूतियां^{३०}, सहुआं^{३१} सही^{३२} सुहाग^{३३} ॥५॥

राजा निय^{३४} रणवास हूं^{३५}, अक्खी^{३६} एक^{३७} सु वत ।
नूप^{३८} सोभा खत्री धरम, त्रिय^{३९} सोभा पति व्रत^{४०} ॥६॥

१ इ. छत्तीस । २ अ. बोलीजे । इ. बोलीजे । ३ इ. विनोद । ४ अ.आ. सूरजि ।
५ आ. किरणां । इ. किरण । ६ इ. सोभा । ७ आ.इ. कुवारीयां । ८ इ. अंगण ।
९ आ.इ. समपीयो । १० आ. देखे । ११ आ. पीत । १२ आ. भूलरि । १३ आ.इ.
रांणीयां । १४ अ. ईही । इ. एही । १५ अ. भत्त । आ. भत । १६ आ.इ. किर-
तीयां । १७ इ. पुनम । १८ अ. रत । १९ आ.इ. हुआ । २० इ. हसीदी । २१ इ.
आहिब । २२ आ. पुरीया । इ. पूरीयां । २३ आ.इ. पुरी । २४ इ. कमोदनि । २५ इ.
हुवा । २६ आ.इ. सहुवां । २७ इ. सहुवां । २८ इ. सहुवां । २९ आ.इ. छत्रपती ।
३० आ. पुतीयां । इ. पूतीयां । ३१ आ. सहुवां । इ. सहुवां । ३२ आ.इ. ही । ३३ इ.
सोहाग । ३४ आ.इ. नय । ३५ आ. हूं । इ. हूं । ३६ इ. आषी । ३७ आ. इक ।
३८ आ.इ. निप । ३९ अ. त्रिय । आ. तीय । ४० आ.इ. पतिव्रत ।

त्रिय^१ वामै वर दांहिणे, वयण सु आखै^२ वाम^३ ।
 धमलज वामी घुर वहै, धमळ^४ ऊदी^५ नाम ॥७॥
 जो^६ नृप^७ पूती^८ नह दियै^९, दासी दूध^{१०} अहार ।
 ती विहरै गिरि वज्र^{११} जिम, खत्री^{१२} खग पहार । ८॥
 धन कुळ बहुआं^{१३} कुळ घियां^{१४}, जीनां^{१५} ऐह^{१६} जुगत ।
 जिन्हां उहर^{१७} ऊपजै^{१८}, "अमरज" जेहा पुत्त^{१९} ॥९॥

महाराज गजसींघरै पुत्रांरी वरणरा

कवित्त

सूरज पुत्र करन्न^{२०}, पेट कूता उतपत्नी^{२१} ।
 पवन पुत्र हणमंत, उदर अंजनी उपत्नी^{२२} ॥
 ईस^{२३} पुत्र खट-मुक्ख^{२४}, पुत्र जनमे^{२५} रुदांणी^{२६} ।
 राघव दसरथ पुत्र, जणे कउसल्या^{२७} रांणी ॥
 जनमियो^{२८} पुत्र कणहैगिरो^{२९}, "अमर" कुंवर^{३०} गजसिंघरो ।
 वेपक्ख सुद्ध आदू^{३१} बिरद, पुत्रां एह पटंतरो^{३२} ॥१॥

"अमर" घरम आंकूर^{३३}, पटी^{३४} दीयो^{३५} पाटी-घर ।
 राजहंस प्रम अंस, जिसी सूरज्ज^{३६} सुधाकर ॥
 मयण काम मूरत्ति^{३७}, गात गिरवर वींभा-चळ^{३८} ।
 वडी वीर वीराधि^{३९}, सिंघ रूपी सहंस - वळ^{४०} ॥

१ इ. त्रिय । २ आ. अंपै । इ. अंपै । ३ आ. वाम । ४ अ.आ. धमलेति । इ. धमलति ।
 ५ आ. नुदो । इ. नुदो । ६ आ. इ. जो । ७ आ. नृप । इ. नृप । ८ आ.
 पुती । इ. पुत्री । ९ आ. दियै । १० आ. दुध । ११ आ. वज्र । १२ आ. पत्नी ।
 १३ आ. बहुआं । इ. बहुवां । १४ आ. इ. घियां । १५ आ. इ. जिना । १६ आ. इ. ऐ ।
 १७ आ. इ. उदर । १८ आ. इ. उपजै । १९ आ. इ. पुत्र । २० अ. रन । इ. करन ।
 २१ आ. ऊपनी । इ. उतपनी । २२ आ. उपनी । इ. उपनी । २३ अ. इ. इस ।
 २४ आ. इ. पटंमुप । २५ आ. जनमै । इ. जन । २६ आ. रुदांणी । इ. इद्रांणी ।
 २७ अ.आ. केउसल्या । २८ अ.आ. जनमीयो । २९ आ. इ. कणै-गिरी । ३० आ.
 कुंवर । इ. कुअर । ३१ इ. आदु । ३२ आ. पटंतरो । ३३ इ. अंकुर । ३४ आ.
 पटि । ३५ अ.आ. उदीयो । ३६ अ.आ. सूरज । ३७ आ. इ. मूरत्ति । ३८ आ.
 वींभाचल । इ. विंभाचल । ३९ आ. विराधि । ४० आ. इ. सहंस-चल ।

राइजादे^१ ओपम राठवड^२ बिहुवै^३ पक्ख निरंमळा^४ ।
बळवंत कुमर^५ विय^६ चांद^७ जिम, कुंवरां^८ - गुर चढती^९ कळा ॥२॥

मज्जीठै^{१०} मुहरंग, नयण जोती जालंनळ ।
विक्ख^{११} वंक किस लंक, थोर बाहू^{१२} डंड^{१३} हत्थळ ॥
दीरध देहा खंभ, करी भांजै कुंभाथळ ।
कांमण^{१४} भूखण^{१५} डसण, हार पहरै^{१६} मोताहळ ॥
गजसिघतणी गज गौडवण^{१७}, जोघपुरी जस अगगळी ।
बळवंत - कमध^{१८} जसह सबळ, सींह समंधी^{१९} सिधळी ॥३॥

दीपक हूंत दीपक, अवं हूं अंबक उगै ।
सिघ हूता^{२०} साधिवक, वीर घर^{२१} वीरक^{२२} जगै ॥
समंद^{२३} हूंत किरि सोम, सोम हूता^{२४} सिद्धांणह ।
सत हूत किरि धरम, धम्म^{२५} हूता कित्यांणह ॥
नाद हूं वेद उत्तपन^{२६} हुअी^{२७}, मेरगिर हुता हिरन ।
'अमरेस' हुअी^{२८} गजसिघसूं^{२९}, जाण दिवाकर^{३०} हूंत^{३१} दिन ॥४॥

साखां भुज्ज विसाळ, गात गुरू-अत^{३२} गहव्वर ।
पलव हय गयंद^{३३} सुहडू^{३४}, मौज महिमा मति मंजर ॥
जड पयाळ^{३५} पै जुअल^{३६}, सीस ब्रह्मंड^{३७} विलगो ।
कळू - वाउ डंडूळ^{३८}, डिगै नह^{३९} डोलै^{४०} जुगो ॥
अड्ढार - वरण आलंब वण, खट - दरसण छाया मिलै ।
'अमरेस' इंद्र गजसिगरै, आंणि कळप - तर फळै ॥५॥

- १ आ. राइजादे । २ आ. राठवड । ३ आ. रठीडवै । ४ आ. निरमला । ५ आ. कुसध । ६ आ. वीय । ७ आ. वाद । ८ आ. कुअ । ९ आ. चढती । १० आ. मजीठै । ११ आ. विक्ख । १२ आ. बाहु । १३ आ. भुज । १४ आ. कामिण । १५ आ. भुखण । १६ आ. पहरै । १७ आ. गोड-वण । १८ आ. बलवंत-कमध । १९ आ. समंधी । २० आ. हुता । २१ आ. घरि । २२ आ. वीर । २३ आ. समंद । २४ आ. हुंत । २५ आ. धरम । २६ आ. उत्तपन । २७ आ. हुअी । २८ आ. हुवो । २९ आ. सुं । ३० आ. देवाकर । ३१ आ. हुंत । ३२ आ. गरुअत । ३३ आ. गय । ३४ आ. सीहड । ३५ आ. पयाळ । ३६ आ. जुअल । ३७ आ. वृहंड । ३८ आ. डंडूळ । ३९ आ. नहि । ४० आ. डोलै ।

गाथा

पुत्रां^१ सपूत उद्दिया, सुणियै^२ कानै^३ क्रीत^४ आपांणी^५ ।
 वित्तानि विमळ वित्तं, किं किं जै स्रग^६ भोगादि ॥१॥
 पांणी नरिंद पुत्रां^६, भोमी गढ व्रद^७ भारिया^८ ।
 खट - मेक^९ जतन कीजै^{१०}, कथितं^{११} आदि जुगादि ॥२॥

हहा

मिळि मंत्री परधान मै^{१२}, विधि दक्खै विच्चार ।
 जळ रक्खण गढ^{१३} जोधपुर, के रक्खौ जोधार ॥१॥
 नरां मंडोवर नर समंद, खिति लोडी^{१४} खुरसांण ।
 है^{१५} केइ^{१६} देस न हक्कडौ, दोइ तेहा वाखांण^{१७} ॥२॥
 सभै^{१८} अभै थंभ दे, सब्भै^{१९} ही खत्र - घौड ।
 सब्भां^{२०} ही दिन पद्धरी, सभ वंका राठौड ॥३॥
 पट्टांणां नव लाख सुं^{२१}, लडिया^{२२} बांधे चाळ ।
 राजा रावत रक्खिया^{२३}, रिणमल महि रखपाळ ॥४॥

कवित्त

सेरसाह सुरतांण, तुरी नव लक्ख पलांण ।
 आयी सिरि "माल दे", करन तै सुं^{२४} तुड - तांणै^{२५} ॥
 मांडण सीही वहै, संड^{२६} गंजै सींधल^{२७} हर ।
 अकवरि मांगी कुंअरि^{२८}, तांम मुख दीनौ^{२९} उत्तर ॥

तै पाट तूंग कूपां तिलक, खेम-कल^{३०} अणभंग भड ।
 तै "खेम" तणौ खांडा - हथौ, कल^{३१} मेर माभी निवड ॥१॥

१ आ. पुत्ता । २ आ.इ. सुणियै । ३ इ. कीरत । ४ इ. अपांणी । ५ इ. अर्ग ।
 ६ आ. पुत्ता । ७ इ. व्रिद । ८ आ.इ. भारीया । ९ इ. पट-मेष । १० इ. कीजे ।
 ११ अ. कथितं । १२ अ. मे । १३ इ. में नहीं है । १४ आ. गट । १५ आ. लोडी ।
 १६ आ.इ. हे । १७ आ.इ. कै । १८ इ. वपांण । १९ इ. अभै ।
 २० आ.इ. सभै । २१ आ.इ. सुं । २२ आ.इ. लडिया । २३ आ.इ. रपिया ।
 २४ आ.इ. सुं । २५ इ. तुडि-तांणै । २६ इ. सुड । २७ आ. गजंसीध ।
 २८ इ. कुअरि । २९ इ. दीन्हौ । ३० आ.इ. पेमकन । ३१ आ.इ. कन ।

छल महेश मुर देस, मुअौ^१ डीघोड महारिण ।
 परणे अकबर घडा, चढे^२ गज दांतां तोरण^३ ॥
 समर - सींह देवडौ, वहै^४ सादूल रिणं - गण^५ ।
 नाम जांम अरबद्^६, ताम^७ बैठो इंद्रासण^८ ॥
 तिण पाट रूप रिणमल्ल - हर, कूप कन्न^९ कुळ उद्धरण ।
 सिणगार^{१०} 'जसौ' नवसाहसौ^{११}, तेरे^{१२} साखां आभरण ॥२॥
 सेरसाह रिणमांह^{१३}, जैत ढाहण गजढल्लह ।
 खूंदालम^{१४} किउ^{१५} खडौ^{१६}, तवै^{१७} मुख तोबा अल्लह ॥
 प्रिथीराज मेडतै, मुअौ^{१८} सांमंत निभै - मण^{१९} ।
 सत्र^{२०} चवदै सिंघार, कियो^{२१} भारत^{२२} रांमाइण^{२३} ॥
 तै पाट^{२४} 'वाघ' 'वगडी' तखत^{२५}, 'वाघ' सुतन^{२६} भड वांकडौ^{२७} ।
 भगवानं डहै असमांत भुज^{२८}, हेक हणमंत^{२९} लांगडौ^{३०} ॥३॥
 'चांपै'^{३१} जेसौ^{३२} चरड, अनड माभी^{३३} अडसाळी ।
 भांगेसर^{३४} दांणवां^{३५}, जेण भगौ भालाळी ॥
 'जैतमाल' अण - पाल, वींद^{३६} मेवाड तणी घड ।
 सिवियाणै सोभति^{३७}, 'भांण' रोलिया^{३८} भडां घड ॥
 तै 'भांण' तणी अवसांण - सिद्ध, वडा जुद्ध डोहण विमर ।
 जोधार पखर लक्ख जिसी, निरौ एक^{३९} पक्खर निडर ॥४॥
 मिणि-अड^{४०} नेपति^{४१} भडां, खग वाहां खत्र-धीडां^{४२} ।
 खुरासांण सम सांण, तखत आदू राठीडां ॥

१ आ.इ. मुवौ । २ आ.इ. चढे । ३ आ.इ. तोरण । ४ आ. वहै । ५ आ.इ. रिण-गण । ६ इ. अरबद । ७ आ.इ. ताम । ८ आ.इ. इंद्रासण । ९ इ. कन्न । १० इ. सीणगार । ११ इ. नवे साहसी । १२ इ. तेरे । १३ आ.इ. रिणमाह । १४ आ.इ. पुदालम । १५ आ. कीउ । इ. कीयो । १६ आ. वडौ । १७ आ.इ. तवै । १८ इ. मुवौ । १९ इ. निभै-मण । २० आ. सत्त । इ. सत्र । २१ आ.इ. कीयो । २२ आ. भारत । २३ आ. रांमाइण । इ. रांमाईण । २४ आ. पाटि । इ. में नहीं है । २५ आ.इ. तषति । २६ आ. सुतं । इ. सुत । २७ आ.इ. वंकडौ । २८ इ. भुजर । २९ अ. हणमंत । ३० इ. लांगणी । ३१ आ.इ. चांपै । ३२ इ. जेसौ । ३३ इ. मांभी । ३४ इ. भांगे । ३५ अ.आ. वांणवां । ३६ इ. वींद । ३७ आ. सोभत । ३८ आ.इ. रोलिया । ३९ इ. एक । ४० इ. मिण-अड । ४१ अ. नेपत । ४२ आ. खत-धीडां ।

मलीनाथ भाराथ, गाहि गोरी गज थट्ठां ।
 तेरह तुंगां^१ तुरक, भिडे भागा दह - वट्ठां ॥
 आराध^२ अलख आदीक घर^३, सिद्ध खेत सूरति^४ घणै^५ ।
 'जगमाल' तेण 'दूदे' तणौ, पाट - मल्ल^६ रावळ तरौ ॥५॥
 जगतिंसिघ 'रांम' सू, नरी जगमाल सुतन्नह^७ ।
 गाढां - गुर 'गोइंद', खत्री सुत खेम-करन्नह^८ ॥
 भाटी 'ईसरदास', भुजे नव कोटतणा छळ ।
 ऊहड^९ 'मांडण' 'अजी', उभं नवकोटी^{१०} आगळ ॥
 तुडि-ताण^{११} 'अमर' 'सुरिजना' तणौ, सांम^{१२} 'कांम'^{१३} वाहण सुजड ।
 राखिया^{१४} राइ^{१५} राठौडवै, कुमरां पासि इता^{१६} सोहड^{१७} ॥६॥
 गयण - थंभ दळ - थंभ^{१८}, संभ जिवकै जीवत्तह ।
 देस - थंभ दळ - थंभ, हत्थ कुळ - थंभ वडा - ग्रह ॥
 जैत - खंभ रिण - खंभ, मारि गज - खंभ मदोमत ।
 देहा - खंभ असंभ, जिसा गोरंभ परव्वत ॥
 पारंभ करण आरंभमै, लियण लंभ सोरंभ - जस ।
 रखपाळ मंडोवर^{१९} राखिया^{२०}, भू डंडे रक्खे अडस ॥७॥

गाहा

पुत्री^{२१} पर - उपगारी, कारिज सांमी^{२२} देव कारिजी ।
 ततकाळेण ताल-विमाल^{२३} न कीजै, ए कीजै तत-काळेण ॥

महाराजा गजसींघरी दरबार में पधारणौ जोसियांसूं मूहरत पूछणौ

गाहा

गजवंधी दीवांण पधारे^{२४} । इम कहियौ^{२५} मन मही^{२६} विचारे ।
 चाड इसी^{२७} जिण वेग चडीजै । दिस^{२८} सुरतांण पयांणौ^{२९} कीजै ॥१॥

१ इ. तूंगा । २ इ. आराधि । ३ इ. घरि । ४ आ.इ. सुरति । ५ इ. थणै ।
 ६ आ.इ. पाटि-मल । ७ इ. सुतन्नह । ८ इ. पेमकरन्नह । ९ इ. उहड । १० आ.
 न कोटी । ११ आ.इ. तुड-ताण । १२ आ. सांमि । १३ आ. कांमि । १४ आ.इ.
 रापीया । १५ प्रति इ. में राइ शब्द नहीं है । १६ इ. ईता । १७ आ. सोहड ।
 इ. सोहड । १८ इ. गढ थंभ । आ. भड - थंभ । १९ आ. मांडोवर । २० आ.इ.
 रापीया । २१ आ.इ. पुत्री । २२ आ.इ. सांमि । २३ इ. प्रति में न नहीं है । २४ आ.आ.
 पधारे । २५ आ.इ. कहियौ । २६ आ.इ. मांही । २७ इ. इसी । २८ इ. दिया ।
 २९ आ. पयांणौ ।

वेद मंत्र पाठी चत्र - वेदह । जाणै^१ जोतिख भेद सुभेदह ।
होम दिये^२ आहुत^३ हुतासण । तेडे तांम^४ इसा^५ ब्रह्मण^६ ॥२॥
तिलक दुआ - दस वसत्र^७ कखंबर । करै सदा खट करम निरंतर ।
राजा वंदन कीध उभै कर । आसी - वाच विप्रां^८ इम उच्चर ॥३॥
नूप^९ कमधज विप्रां^{१०} इम^{११} बूझै^{१२} । आगम निगम तुम्हां सह सूझै ।
निरति^{१३} सुरति^{१४} मन चेतन रक्खौ । दिस सुरताण पयांणौ दक्खौ ॥४॥
जाण प्रमाण प्रमाण जोइसी । देवंग^{१५} देख त्रिकाळ - दरस्सी ।
सुभ-वासर सुभ-जोग सांपन्नौ^{१६} । जोसी खरौ-स मुहरत^{१७} दीनौ ॥५॥

कवित्त

सिद्ध-जोग रवि-जोग, सुद्ध^{१८}-दिनमान^{१९} सहू^{२०} सिसि^{२१} ।
दिसा-सूळ^{२२} थयौ^{२३} पूठि^{२४}, वळे जोगणि बांमी दिसि^{२५} ॥
तारा-बळ चंद्र-बळ, घडी-अमृत^{२६} साधारण ।
चतुर पंच सह बळी, नांम वाहण सुभ वाहण ॥
तिथि-वार^{२७} नखत्र उत्तम करण, पण महरत^{२८} नूप^{२९} चडे ।
कल्याण^{३०} हुवै सिध^{३१} कामना^{३२}, तांमह^{३३} अस्सड संपडै ॥१॥

ब्रह्मा

कोअण कोम कटक्कमे, वोम विलगै वद्धि ।
कीध^{३४} सताबी साह दिस^{३५}, चडण महरत^{३६} मद्धि^{३७} ॥१॥

इष्ट देव पूजा

राजा पूजै शिव^{३८} सकति, चाढै^{३९} घूप^{४०} नैवेद^{४१} ।
कुंकम-तिलक निलाट दे, विप्र^{४२} भणंदा^{४३} वेद ॥२॥

१ आ.इ. जाणौ । २ आ.इ. दीयै । ३ आ. आहुत । ४ आ. ताम । इ. प्रति में
नहीं है । ५ इ. ईसा । ६ आ.इ. ब्राह्मण । ७ आ.इ. वसत्र । ८ आ.इ. द्विपां ।
९ आ.इ. नूप । १० आ.इ. द्विपां । ११ आ. ईम । १२ आ. बूजे । १३ इ. निरत ।
१४ आ. सुरत । १५ आ.इ. देवग । १६ आ. सापनी । इ. सपनी । १७ इ. महरत ।
१८ आ. सुध । इ. सुधि । १९ आ.इ. दिनमान । २० आ.इ. सहू । २१ इ. सिस ।
२२ इ. दिसा-सुल । २३ आ. थायी । इ. थियो । २४ आ. पुठि । २५ आ. दिसी ।
इ. दिस । २६ अ. अमृत । २७ इ. तिथवार । २८ इ. मुहरत । २९ आ.इ. नूप ।
३० इ. कल्याण । ३१ अ. सुभ । आ. सुध । ३२ आ. कामना । ३३ आ.इ. ताम ।
३४ इ. कीध । ३५ इ. दीस । ३६ इ. मुहरति । ३७ आ.इ. मधि । ३८ आ. शिव ।
३९ आ.इ. चाडे । ४० इ. घुप । ४१ अ. नैवेद । ४२ आ. विप्रां । ४३ आ. भणंदा ।
इ. भणंदा ।

पूठी^१ वामै^२ दाहिनै, आगळि अग्ने - वांण^३ ।
 राजा "गाजी साह"नूं, राखंदी रहमाण^४ ॥३॥
 दीहा^५ पाधर वंक गय, भुज धरिये^६ कुळ - भार ।
 चोळ - वरन्ने लोचने, आयी आप दुवार ॥४॥
 गै गोडी - रव है कळळ, सुहड गडी - वड थट्ट ।
 सुभ मंगळ जै जै सबद, बोलै चारण भट्ट ॥५॥
 नाथ - निरंजण^७ अलख महा, महा मंगळ वह नांमि^८ ।
 सिव सकती सम जुगति जग^९, जग जणणी जग जांमि^{१०} ॥६॥

कवित्त

दियण^{११} वुद्धि रिघ सिद्ध, विघन छेदन लंबोवर^{१२} ।
 नारसिंघ हणमंत^{१३}, अचळ नह^{१४} खंडी^{१५} अम्मर ॥
 जग^{१६} जणणी जग जांमि, सकति तुलज्या^{१७} महमाई^{१८} ।
 सरव^{१९} अहां सूरज्ज, सरव देवांह सवाई ॥
 नवनाथ अनंत सिधांणवै, भैरव अट्टै संभरै ।
 सुर बळ सु जोग क्रम समपिया, इस्ट नांम आदिह करै ॥१॥

महाराजारो घुड़ सवार होणो

खुरासांण नैपत्ति, असल ऐराकी चंचळ ।
 पाखर मै परचंड, पंख पाहाड^{२०} अचगळ ॥
 ऊंचासी^{२१} इंद्ररै^{२२}, रांमरै गुरड^{२३} विहंगम ।
 सूरजरो सिलह "जै", जिसी सपतास तुरंगम ॥
 असवार वडी असमांन गति, धूहड धूजै वड घडै ।
 पहू पूठि चडै जैवंत भड, पाउ^{२४} परट्ठै पाघडै^{२५} ॥२॥

१ इ. पुठि । २ इ. वामै । ३ आ. अगेवांण । इ. आगेवांण । ४ अ. रमाण ।
 इ. रिमाण । ५ इ. दिहा । ६ आ. इ. धरीयै । ७ आ. नीरंजण । ८ आ. इ. नामि ।
 ९ आ. इ. जगत्र । १० आ. इ. जामि । ११ अ. आ. दिअण । १२ अ. लंबावर ।
 इ. लंबोदर । १३ आ. हणमंत । इ. हणवंत । १४ इ. न । १५ अ. पंडा । १६ आ. इ.
 जगि । १७ अ. तुलज्या । इ. तुलजा । १८ इ. महामाई । १९ अ. आ. सर्व ।
 २० आ. इ. पहाड । २१ आ. इ. उचासी । २२ इ. इंद्ररै । २३ इ. गुरडं रांमरै पाठ है ।
 २४ आ. पाव । २५ आ. इ. पागडै ।

सोरठा

राउ^१ प्रबळ रिण - ताळ, गाढां गुर थाए 'गजण' ।
 चढतां^२ चमर - वंवाळ, 'जै' तू^३ जोधांहर धणी ॥१॥
 चढीयो^४ मछर चडेह, रोपे रांम रकेब है ।
 भोळी^५ भंग पडेह, सिव नाटा - रंभ "सूर उत" ॥२॥
 दे नीसांणां घाउ, चैत सुदी^६ एकादसी^७ ।
 चढे^८ कमंधां^९ - राउ, दिल्लीवै सुरतांण दिस ॥३॥

महाराजा गजसींधरा दळरो धरण

गाहा

भेळा जूल भळक्कै भालै । मुहर^{१०} कियो^{११} जोधै^{१२} रिणमालै ।
 साहण - समंद दिलीचै^{१३} सांमी । दीनी 'गोजीसाह' दमांमी ॥१॥
 नौवति रोडि^{१४} हुई^{१५} नीसांणां^{१६} । अंबर गाजि^{१७} वाजि^{१८} असमांणां ।
 जांण प्रभाकर जोत^{१९} प्रगट्टी । गढ हूं चढि^{२०} आयी तळ - हटी^{२१} ॥२॥
 छोडि महावत^{२२} खंभूठांणां^{२३} । मद - तळ^{२४} जोड वहंतां दांणां^{२५} ।
 घुघर^{२६} घंट कसे अंबाडी । गय चीधां^{२७} गयणाग^{२८} भमाडी ॥३॥
 सिलह संदूक^{२९} सलीते^{३०} वड्डे । लहे ऊंट^{३१} चलाए^{३२} गिड्डे ।
 लारोलार कतारां^{३३} हल्ली । काती जांण कुरभां^{३४} चल्ली ॥४॥
 चढै^{३५} चले चतुरंग^{३६} महादळ । वीजक जांण^{३७} वलक्के सावळ ।
 वाजी घोडां^{३८} पाइ धरत्ती । झूटा सांण^{३९} हाहुल माती ॥५॥

१ इ. राव । २ आ. चढता । ३ आ. इ. तु । ४ आ. चडीयो । इ. चडीया ।
 ५ आ. भोला । ६ आ. इ. सुदि । ७ इ. ऐकादसी । ८ आ. चडे । इ. चडे । ९ आ. इ.
 कमंधां । १० आ. इ. मोहर । ११ आ. कीयो । इ. कीयी । १२ आ. इ. जोधे ।
 १३ आ. आ. दिलीवै । १४ आ. रोड । १५ आ. हुई । १६ इ. निसांणह । १७ आ.
 गजि । १८ आ. वजि । १९ आ. जोति । २० आ. इ. चडि । २१ आ. नलहठी ।
 आ. तलहठी । २२ आ. महघस । २३ आ. पंभू-ठाण । इ. पंभूठांणा । २४ आ. मदत ।
 २५ इ. डांणां । २६ इ. घुघर । २७ आ. चीधं । २८ आ. गयणाग । २९ आ.
 सिद्धूष । इ. संदूष । ३० इ. सलीचे । ३१ आ. इ. उट । ३२ आ. चाए । ३३ आ.
 कतारां । इ. कतारां । ३४ आ. कुरभां । इ. कुरभां । ३५ आ. इ. चडे । ३६ आ. चतुरंग ।
 ३७ इ. जांणे । ३८ इ. घोडां । ३९ इ. सांहिण ।

दळ रो कूच

अथ चंद्रायण

चीटां घोर^१ निहाय^२, नगारा वज्जिया^३ ।
 भेर बुरंग निनद्, क अंबर गज्जिया^४ ॥
 सह हुआ^५ सहनाई^६, समुद्र^७ उभळिया^८ ।
 राजा^९ 'गाजीसाह', दिली दिस^{१०} चल्लिया^{११} ॥१॥

ढैचाळां^{१२} सिर^{१३} ठल्ल^{१४}, ठळक्कै^{१५} ठूहरी^{१६} ।
 खेहा मज्झि दुडिंद, क चंद सरव्वरी ॥
 ऊपडियां^{१७} असमानं क, कोरण तेवडा ।
 वांक^{१८} मुहा वर हास, महाभड वंकडा ॥२॥

सीरम सेटां^{१९} सट, तुरंगम तप्पडै ।
 पाहाडां पड - सद्, निसाण^{२०} गडगडै ॥
 साहण^{२१} थट्ट सुभट्ट, असंख^{२२} अपार है ।
 चीमासे किरि जाण, चले घण बार है ॥३॥

हिल्लै हेम - पहाड, क हैथट^{२३} हिल्लिया^{२४} ।
 फट्टी जाण अकास, क साइर^{२५} छिल्लिया^{२६} ॥
 हुई हमस्स घमस्स, पंयाळ^{२७} दहल्लिया^{२८} ।
 कमधज्जे केकाण, दिली^{२९} दिस ढल्लिया^{३०} ॥४॥

गाथा

गोधूळ^{३१} गयण लगं, साहण^{३२} उलट्टि^{३३} सेन समूहं ।
 है - पाइ गाहि वंका, सर पधरी कीध पहाडहं ॥१॥

१ इ. घोड़ । २. आ. निहाइ । इ. निहाई । ३ आ.इ. वजीया । ४ आ.इ. गजीया ।
 ५ आ. हुआ । ६ आ. सहनाई । इ. सहनाई । ७ आ. समुद्र । ८ आ.इ. उभलीया । ९ अ.
 राजी । १० इ. दिच । ११ आ.इ. चलीया । १२ अ. टैचाळां । १३ आ. सिरि ।
 १४ आ. ठल । १५ आ. ठलकै । १६ आ. ठूहरी । १७ आ. उपडीया । इ. उपडी ।
 १८ इ. वंक । १९ अ.आ. सेटां । २० आ.इ. नीसाण । २१ अ. साहण । २२ अ.
 असप । २३ इ. हैथट । २४ आ.इ. हिलीय । २५ आ. साईर । २६ आ.इ. छिलीया ।
 २७ आ.इ. पयाळ । २८ आ.इ. दहलीया । २९ आ. ठिली । ३० आ. ठिलीया ।
 इ. डिलीया । ३१. इ. गोधूल । ३२ अ.आ. साहण । ३३ आ. उलटि ।

सरपां नव - कुळाणिय, महि - मंडळ मेर - मेखळा ।
परवत अस्त-कुलीए^१, घरणी-^२-घर धूजिया^३ त्रिण ऐ ॥२॥

छंद भांफताळी

घडहडे सात-पुडि^४ धूजि^५धम-हम^६ घरा ।
डंब औधूळ अंबर चडे डंबरा ॥
वावंता नास वेगाळ तेजी वहै ।
गाहटां^७ गोम पाहाड^८ पाए गहै ॥१॥

साट सीरम्म ऊरम्म^९ हुई^{१०} साहणां^{११} ।
घाघरट थाट घांसार हालै घणां^{१२} ॥
तापडै ऊपडै^{१३} तेज मांही^{१४} तुरा ।
उड्डिया^{१५} जाण वेवांण^{१६} आकासरा ॥२॥

फरहरै वांनरा^{१७} जेम फाट्यां फुरणि ।
धमता नास वरहास हूआ^{१८} धमणि ॥
पंथि^{१९} पाखांण पीठी करै पेंनुहै ।
मन्न सूधा^{२०} भरै डांण वांके^{२१} मुहै^{२२} ॥३॥

ऊवटां विक्कटां औघटां ऊपरा ।
दोडती^{२३} है - थटां राह हूआ दरा^{२४} ॥
ऊछळै फीण है सास वाजै उरै ।
ताडि कोमंडमें^{२५} फाडि कीया तुरै ॥४॥

चावके^{२६} भालिया^{२७} चंचळा चप्पळा ।
नाम^{२८} "जै" अंग ऊतंग वाहै नळा ॥

१. आ.इ. कुल । २ इ. घरणि-घर । ३ आ. धूजीया । इ. धुजीय । ४ आ. पुड ।
५ इ. धुजि । ६ अ. धम-हमि । ७ अ. गांहटां । ८ अ. पहाड । ९ आ. उरम ।
इ. मोरम । १० इ. हुई । ११ इ. सांहणां । १२ इ. घणा । १३ आ.इ. उपडै ।
१४ अ. मांही । १५ आ.इ. उडोया । १६ आ. विवांण । इ. वीवांण । १७ इ. वांनरां ।
१८ इ. हूआ । १९ इ. पंथि । २० आ.इ. सुधा । २१ इ. वांके । २२ इ. मुहै ।
२३ इ. दोडती । २४ आ.इ. हूआ-दरा । २५ आ.इ. कोमंडमै । २६ इ. चावके ।
२७ आ.इ. भालीया । २८ इ. नीम ।

सांमटै ऊलटै कमधजां साहणे^१ ।
 सांकिंयां^२ सात पायाळ^३ जम्मी सुणै ॥५॥
 *खेडरा जोध तुरंगाण^४ ताता खडै^५ ।
 पैखुरै^६ वीखणी^७ खोण^८ खांना पडै ॥
 तप्पिया^९ तालूए^{१०} लोह घोडातणै ।
 आड भांफां भरै तेजसू^{११} ऊफणै^{१२} ॥६॥
 राति सांमीर सारंग डांणे^{१३} ग्रहै ।
 वाइ ऊपडीया^{१४} लीण जाणै^{१५} वहै ॥
 हद्द वेहदपै वेगपै हैमरां ।
 पाधरा जाण^{१६} पाहाड^{१७} उड्डै परां^{१८} ॥७॥
 धूस^{१९} रावत तेजी वहै धूबडा^{२०} ।
 घस्ससी^{२१} धूंधली^{२२} फौज काळी-घडा ॥
 ऊजळा दांत गय सांमळा आगळी ।
 सुंड उल्लाळता^{२३} हींडळ^{२४} सिंगळी^{२५} ॥८॥
 मंद मंदोमता^{२६} ब्रक्ख^{२७} धक्का मुडै ।
 गाजता मेघ पाहाड^{२८} काळा गुडै ॥
 ओप^{२९} ढैचाल^{३०} ढालां^{३१} घटा ऊपडै^{३२} ।
 ऊपरै^{३३} चींघ^{३४} आकास नेजा अडै ॥९॥
 आंकुसां^{३५} गज्ज कुंभाथळां^{३६} ऊजळी^{३७} ।
 वादळी^{३८} सीस जाणै^{३९} खिमै^{४०} बीजळी ॥

१ अ. सांहरणै । २ अ. सांकीया । इ. सांकीयो । ३ अ. इ. पयाल । *‘आ’ प्रति
 में यह पंक्ति इस प्रकार है—‘खेड रा जोध ताता खडै ।’ ४ इ. तोषार । ५ इ. पडे ।
 ६ अ. पपुरे । इ. पैपुरे । ७ इ. विपुणी । ८ इ. पीण । ९ अ. तपीया । इ. तपीया ।
 १० अ. तालए । ११ अ. इ. सु । १२ अ. इ. उफणै । १३ अ. डांण । १४ अ.
 उपडीया । इ. उपाडीया । १५ अ. इ. जाणै । १६ अ. आ. जाणि । १७ अ. पहाड ।
 १८ अ. इ. परा । १९ इ. घूस । २० अ. इ. घुबडा । २१ अ. इ. घससी । २२ अ. इ.
 धुधली । २३ अ. उलालता । इ. उल्लालता । २४ अ. इ. हिंडलै । २५ अ. सिधली ।
 इ. सिधली । २६ अ. सदोमता । इ. मदिसधोमता । २७ अ. इ. वृष । २८ अ. माहाड ।
 २९ अ. इ. ओपि । ३० अ. टेचाल । इ. ढैचाल । ३१ अ. ढालां । ३२ अ. इ. उपडै ।
 ३३ अ. इ. उपरै । ३४ अ. चीघ । ३५ अ. आंकुसा । ३६ इ. कुंभाथलां । ३७ अ. इ.
 उजली । ३८ अ. वादलां । ३९ अ. इ. जाणै । ४० अ. इ. खिमै ।

उमंडै मद् गै-सुंड^१ डोहै^२ अगे^३ ।
पांखिया^४ जाण^५ पाहाड हालै पगे^६ ॥१०॥

लाइयां लंगरां पेखि पट्टाभरां ।
डोल भौली^७ पडै कुंजरां डूंगरां^८ ॥
गज्ज ऊधोलिया^९ रज्ज सुं गुडला^{१०} ।
धोममै पव^{११} दीपै किरै धूधला^{१२} ॥११॥

वोम लागा वहै लोडता वारणूं ।
हल्लवै द्रोण ऊपाड^{१३} जाणै^{१४} हणूं^{१५} ॥
पाटमें भूल^{१६} गै घातियां^{१७} पाखरां ।
भार-अटठार^{१८} आबू किरै^{१९} भाखरां ॥१२॥

कुंजरां^{२०} डूंहरी^{२१} ढाल^{२२} कुंभा-थलै^{२३} ।
वादला जाण^{२४} फाबत्त^{२५} वीजा-चालै^{२६} ॥
धम्मळी पीयळी^{२७} लाल नीली-धजं ।
गाजता जाण गोरंभ दीसै गजं^{२८} ॥१३॥

ओपियै^{२९} बैरकां कुजरां ऊपरै^{३०} ।
गुडियं^{३१} उडियं^{३२} जाण^{३३} पब्वै-गिरै^{३४} ॥
सामठौ हल्लकौ मैंगलां^{३५} सब्बळी ।
वाट उभी^{३६} वहै जाण आडी-वळी ॥१४॥

सामळा गात डोहत्ति^{३७} गै-सूडयं ।
स्रप्प हींडै^{३८} किरै^{३९} साख स्त्री खंडयं ॥

१ इ. गैसूंड । २ इ. माहै । ३ आ.इ. अगे । ४ अ. पांखीया । इ. पांखीयां । ५ आ.इ. जाणि । ६ आ.इ. पगे । ७ आ.इ. भौली । ८ इ. डूंगरां । ९ आ. उधौलीया । इ. उधौलीयां । १० आ. गुडला । ११ अ. पेव । १२ आ. धूधला । इ. धुधला । १३ आ.इ. उपाडि । १४ आ. जाणै । १५ इ. हणु । १६ इ. फूल । १७ आ.इ. घातीयां । १८ आ. भार-अटार इ. अटार । १९ आ.इ. किरै । २० आ. इ. कुंजरा । २१ आ. डूंहरी । २२ आ. ढाल । २३ आ. कुंभा-थले । इ. विचा-चले । २४ आ.इ. जाणि । २५ आ.इ. फाबित । २६ अ. वीजा-जले । इ. विचा-चले । २७ आ. पीबली । २८ इ. गजां । २९ आ.इ. ओपीयै । ३० आ.इ. उपरै । ३१ आ. गुडीय । इ. गुडीयां । ३२ आ. उडीयं । इ. उडीयां । ३३ इ. जाणि । ३४ इ. पब्वै-गिरै । ३५ इ. मैंगलां । ३६ आ.इ. उभी । ३७ इ. डोहंड । ३८ इ. हिंडै । ३९ आ.इ. किरै ।

घुघरां^१ पाखरां रोळ घंटा-सुरं^२ ।
चोळ कप्पोळ^३ सिंदूरमें^४ चम्मरं ॥१५॥

मारुवै^५ रावतां^६ गार्जेतां मैणळां^७ ।
वाधियो^८ वाद^९ सू इंद्ररी^{१०} वादळां ॥
अद् भू - मद् समूळ ऊपाडतां^{११} ।
भद्र-जाती गुडै^{१२} सुंड^{१३} भंमाडतां ॥१६॥

हिल्लिया^{१४} हेम हैथाट फौजां^{१५} हुवै^{१६} ।
धूस^{१७} नौबत्ति दम्मांम^{१८} भेरी धुवै^{१९} ॥
तव्व अंधारमें मैन खेहांतणी ।
ऊजला^{२०} वूग नाखत्र भालां अणी ॥१७॥

आवळा-भूल^{२१} भालांतणा आमंळां ।
ऊमडै^{२२} खंग राठीड आचागलां ॥
ऊलकै^{२३} हेमरै^{२४} सेन ले आपरी^{२५} ।
साह सांमी^{२६} अयी^{२७} 'मालदे' दूसरी^{२८} ॥१८॥

महाराजारी बादसाहसूं मिळाव

गाहा

'जोध' कळोधर जोध अंसली । 'गाजीसाह' तेग भुज भल्ली^{२९} ।
आवै^{३०} सू^{३१} जिहगीर^{३२} अदल्ली^{३३} । मीयी^{३४} विच^{३५} अजमेरह दिल्ली ॥१॥
कमळ बारै ऊगा^{३६} किरणळा । भाळै "गाजीसाह" भुजाळा^{३७} ।
वप^{३८} भूडंड पसारि विसाळा । असपत्ति-राइ आपि^{३९} अंकमाळा ॥२॥

१ इ. घुघरां । २ इ. घंटा सुरं । ३ इ. कपुरमें । ४ अ. सिंदूरमें । ५ अ. मारुवै ।
६ आ. रावरां । ७ आ. राव मैरां । ८ आ. मींगली । ९ आ. वाधीयो । १० आ. वादीयी ।
११ इ. वाद सु । १२ इ. इंद्ररां । १३ आ. इ. उपाडतां । १४ इ. गुडै । १५ आ. सुंड ।
१६ इ. सुड । १७ आ. इ. हिल्लिया । १८ इ. फौजां । १९ इ. हुवै । २० आ. धूस ।
२१ इ. धूस । २२ इ. दमांन । २३ आ. धुवै । २४ आ. इ. उजला । २५ आ. उजलां । २६ अ.
अवला-भूल । २७ आ. इ. उमडै । २८ आ. उलकै । २९ आ. उलके । ३० आ. हेमेरे ।
३१ इ. हेमरे । ३२ इ. अपुरी । ३३ इ. सांम्हो । ३४ आ. इ. आयी । ३५ आ. दूसरी ।
३६ इ. दुसरी । ३७ इ. छली । ३८ इ. आव । ३९ आ. सु । ४० इ. सु । ४१ इ. जहंगीर ।
४२ आ. अदली । ४३ इ. अदली । ४४ आ. मियो । ४५ इ. वीच । ४६ आ. इ. उगा ।
४७ अ. आ. भुजीला । ४८ आ. इ. वपि । ४९ आ. आपी । ५० इ. आपीया ।

खुरम^१ खरवे खलक^२ नित्रीठी^३ । किरि पलवांडी सांड पईठी ।
मेळी "गजण" दिलीवे मीठी । अरक क छीक^४ अमूंभी^५ दोठी ॥३॥

ब्रह्म

राजा तम^६ हमसूं^७ मिळै, हमह मिळै^८ सुख - सात^९ ।
हजरत रळियायित^{१०} हुअी^{११}, हसि^{१२} पूछी^{१३} कुसळात ॥१॥
तूं^{१४} भासंकर भाळियळ^{१५}, वरे घडा अणबोट ।
भागा जो^{१६} वड भाखरां, डर हंदा सीकोट^{१७} ॥२॥
आजूणै^{१८} दिन कारणै, तो^{१९} जेहा कमघज्ज ।
भरद मुहंगा^{२०} रक्खियै^{२१}, दुभर^{२२} रक्खण^{२३} लज्ज ॥३॥
हाजर हिंदुवै^{२४} तुरक, लियै^{२५} न पर भुंइ^{२६} लोडि^{२७} ।
चीत^{२८} वटावण हेक तूं, वीत वटावण^{२९} कोडि^{३०} ॥४॥

गाथा

साइर^{३१} मभेण लंका, राण^{३२} कुभेण^{३३} इंद्रजित सत्र^{३४} ।
अगली^{३५} नृप^{३६} राम चंदां^{३७}, तत्र^{३८} गछे हणुमान से^{३९} ॥१॥
आतमा अभै - दानं, किन्या - दानं^{४०} द्योत^{४१} मेदनी विद्या ।
चत्वारि^{४२} दानं धरमं^{४३}, तं तुल्यं^{४४} सोम धरमयं^{४५} ॥२॥
खत्र मग खग धारा^{४६}, धारा *खग जोग धारण्या ।
आरूढ पतितै पुरखा, गणा गणपति^{४७} गतिपाळह^{४८} ॥३॥

१ आ.इ. पुरम । २ इ. पलपे । ३ अ. नित्रीवी । ४ आ.इ. छीक । ५ आ.इ. अमूंभी । ६ इ. तुम । ७. हमसूं । ८ आ.इ. मिले । ९ इ. सा । १० आ. रलीयां-यित । इ. रलीयाडत । ११ आ. हुअी । इ. हुवी । १२ इ. हसी । १३ आ. पुछी । १४ आ.इ. तु । १५ आ.इ. भालीअल । १६ आ.इ. जे । १७ इ. सीकोट । १८ आ.इ. आजूणै । १९ इ. तो । २० अ.आ. मुहंगा । २१ आ.इ. रषीयं । २२ इ. दुभर । २३ आ. रषण । इ. राषण । २४ आ. हिंदुवै । इ. हींदुवै । २५ इ. लीयै । २६ आ.इ. भुई । २७ इ. लोडि । २८ इ. चित । २९ अ.आ. वटावण । ३० इ. कोडि । ३१ आ. साइर । इ. सायर । ३२ इ. राण । ३३ अ. कुभेण । ३४ अ. सत्र । आ. सन्त । ३५ आ.इ. अगलि । ३६ आ. नृप । इ. नृप । ३७ अ. रामचंदः । ३८ इ. तत । ३९ आ.इ. से । ४० अ. किना-दान । इ. कन्या-दान । ४१ अ. द्योत । ४२ आ.इ. चत्वार । ४३ अ. धरमं । ४४ अ. तुल । इ. तुल्यं । ४५ इ. धरमं-मयं । ४६ इ. धारां । *इ. प्रति में यह पंक्ति इस प्रकार है । 'पग जाग धारण्या' । ४७ आ.इ. गपति । ४८ अ. गतियाल । इ. गतियालं ।

कुळ जनंम^१ पाणि खगं, आसण तुरियां^२ सुरत न अंगे ।
किं भवति^३ राज चिंता, खत्रियाणं^४ नैव दळिद्रः ॥४॥

सनमुखे महा - जुद्धे^५, सनमुखे मंगते - दानं^६ ।
सनमुख सांम^७ अग्यां, नविहड ऐ^८ सूर धीराई^९ ॥५॥

राजा मेक संजीहा, कमण^{१०} वखांण तुभ^{११} वरणणवए ।
फण सहस सेस - नागं^{१२}, सहस दुजीह जोग सोभागं ॥६॥

'पररेज' साह^{१३} सत्ये, दे कमधज लज भूडंडे ।
सुरतांण^{१४} खुरम मत्ये, दे वीडी कीव फुरमाणं^{१५} ॥७॥

महाराजारी खुरमसूं जुघ करणारी वीडी उठाणी

छंद कामिखी^{१६}

फुरमाणं पाणं वीडी भल्लै, नीमज्जे भुज्जा डंडं ।
राठीडां^{१७} मीडां^{१८} खत्रह-घोडां^{१९}, घन्न^{२०} मन्नं^{२१} वळि-वडं ॥
संग्रामं^{२२} कामं^{२३} हामं^{२४} मत्ते, दाढी मूछां^{२५} कर घत्ते ।
* गयणगं लगं खगं, तोलै वीरं धीरं वीरत्ते ॥१॥

तेरस्से हस्से कोपे^{२६} ओपे^{२७}, रोपे^{२८} वंधे^{२९} रिणवट्टं ।
निल्लाटै पट्टै तप्पै दिप्पे, भाणं दूणं मैवट्टं ॥
चोळम्मै रुक्खं मुखं चक्ख, वपं रूपं परचंडं ।
भारत्थं वत्थं पत्थं भीमं, मांभी^{३०} मेरं ब्रह्मंडं^{३१} ॥२॥

भीखम कन्नं द्रोणं जाणे, सल्लं भूरी भगदत्तं ।
गाहेवा लंका वंका गड्डं, किरि अंगदं हणिमंतं^{३२} ॥

१ आ.इ. जनम । २ आ.इ. तुरीयां । ३ इ. भवती । ४ आ.इ. पत्रीयाणो । ५ आ. महाजुधे । ६ आ. महाजुध । ७ आ. मंगत-दान । ८ इ. स्याम । ९ इ. ए । १० इ. कवण । ११ आ.इ. तुभ । १२ आ. सेपनाग । १३ आ. साव । १४ आ. सुरताण । १५ इ. फुरमाणं । १६ आ. कामिषी । इ. कामीषी । १७ आ. राठीडं । १८ आ. मोडं । १९ आ. पत्र-घोडं । २० आ.इ. घनं । २१ आ.इ. मन्नं । २२ आ.इ. संग्रामं । २३ इ. कामं । २४ आ.इ. हामं । २५ आ.इ. मुछां । * इ. प्रति में यह पंक्ति इस प्रकार है । गयणगं लगं पगं पगं । २६ आ.इ. कोपे । २७ आ.इ. ओपे । २८ आ.इ. रोपे । २९ आ.इ. वंधे । ३० इ. मांभी । ३१ आ. ब्रह्मंडं । इ. ब्रह्मंडं । ३२ आ.इ. हणमंतं ।

विकसासैं हासैं सीसे बंध^१, मेले मूँछां^२ अहूहारे^३ ।
घारा लंकाळं पाणे धूणे, अब्भं नब्भं आघारे^४ ॥३॥

सत्तोलं बोलं मुखे दक्खे, खेलेवा खत्रं-घीडं ।
साहिजादै माथं विद्दा हूअरी, हिन्दू - पत्ती^५ राठीडं ॥
पडिगाहं साहं बाहं उम्भे, भारं भुज्जे संभाए ।
दुर-बारा मज्जे 'माली'^६, दूजी^७ बळियी^८ राजा वेडाए ॥४॥

सज्जोडा घोडा तेजी तत्ता, सहोमता सुंडाळं ।
खज्जानां ग्यानां लक्खां कोडो, आणै दीना अच्चाळं ॥
अवाडी गज्जां घज्जां नेजां, घोडे^९ घत्ते पल्लाणं ।
कोठारं भारं ऊंठा^{१०} पूठी, डेरा तंबू साइवाणं^{११} ॥५॥

नाफेरी^{१२} भेरी सहं नहं, हुब्बै धुब्बै नीसाणं^{१३} ।
दम्मां दीयं कूचं कीयं, मीडे मीडे मेल्लाणं^{१४} ॥
सुरतांनां खानां वड्डा वड्डा, मिल्लिकं मीयं मीरं ।
रट्टीडं रावं 'गाजी साहं'^{१५}, सत्थे हिन्दू^{१६} हम्मीरं ॥६॥

गाथा

फुरमाण वेग फिरियं^{१७}, असपति^{१८} नरगजपति^{१९} अगै ।
दिस आठ राठ विडियं^{२०}, मझि समुद्र हेम यवांइ ॥१॥

छंद मेहांणी

घोडां ने देसांरा नांम

हूरम्मजि^{२१} केची मुकराणी^{२२} ।
खंधार हरेबी खुरसाणी ॥
आरब्बी रूमी उजबक्का ।
समहदी संभर - कंदक्का ॥१॥

१ आ. वधे । २ इ. मूछं । ३ अ. चुहारे । ४ अ. अहारे । ५ इ. हींदू-पत्ती । ६ इ. माली । ७ इ. दुजी । ८ आ. वलीयी । ९ आ. इ. घोडे । १० इ. उंठा । ११ इ. वाईवाणं । १२ अ. नफेरी । १३ इ. नफरी । १४ इ. निसाणं । १५ अ. मोहाणं । १६ इ. मेल्लाणं । १७ अ. गाजीसाह । १८ अ. हींदू । १९ इ. फिरीयं । २० इ. असपति । २१ इ. गजपती । २२ अ. विडीयं । २३ आ. हुरमजी । २४ इ. हुरमजि । २५ आ. इ. मुकराणी ।

बंगस्सी^१ भम्मर खोहाए ।
 बदकस्सी काबिल रोहाए ॥
 गलबल्ला^२ मक्का महीना ।
 कसमीर भुटंती राज्जीना^३ ॥२॥

मुलताणां सिधू घटाए ।
 आरोडा भक्खर थटाए ॥
 लौहोरी^४ हांसी हंसारी ।
 पूरब्बी देसी गंगपारी ॥३॥

नाळनीळ^५ डीडू नग्गीरा ।
 अजमेरा^६ बोली दुग्गीरा ॥
 गुवालेर^७ ओलो सहोडाए^८ ।
 रिणथंभर सैभर^९ तोडाए ॥४॥

कस्सूरी भेहर कुस्सावा ।
 देपाळपुरी - सा^{१०} पंजावा ॥
 वितुंडा सरसा त्रीहाडा^{११} ।
 सीहांन दी कोठी बाजवाडा ॥५॥

कम्माउ नग्गर कोटाए ।
 मेवाती मुहसद दोटाए^{१२} ॥
 धम तोडा पक्खलिया लाए ।
 जंगलिया^{१३} जंबूवा लाए ॥६॥

मरहट्टी भट्टी मंडहाडा ।
 पठाण^{१४} घोला-गिर^{१५} पाहाडा^{१६} ॥
 दळ डाहळ-गलिया दाणीए ।
 पीयलिया^{१७} काळा पाणीए ॥७॥

१ इ. बगसी । २ इ. कलबल्ला । ३ अ.आ. गजनी । ४ आ.इ. लाहोरी । ५ आ.
 नाल-नोल । ६ अ. अजमेरी । ७ इ. गुवालेर । ८ आ.इ. सहोडाए । ९ आ.इ. सैभर ।
 १० अ. देपालपुर । इ. देपालपुरा । ११ इ. त्रीहाडा । १२ इ. दोठा ए । १३ अ.इ.
 जंगलीया । १४ अ. पंठाणं । इ. पंठाणं । १५ आ. घोला-गिरि । इ. घोला-गिर ।
 १६ आ.इ. पहाडा । १७ अ.इ. पीयलीया ।

पांणी-पंथ पंडुर^१ वेसा ए ।
 करणाटक^२ कूंकण^३ देसा ए^४ ॥
 वोजा-पुर कनडो वुगलाणा^५ ।
 गोळ-कुंडा^६ वेदुर^७ तिलगांणा^८ ॥८॥

देव - गिरी^९ दोलत^{१०} वदाए^{११} ।
 नासका व्रंवक^{१२} हदा ए ॥
 अहमदा नगर^{१३} आसेरा ।
 साल्हेर मोल्हेरक भंभेरा ॥९॥

* नरवदा कंठा नमियाडा ।
 चौरासी गड्डां^{१४} वरुआडा ॥
 गुंड-वांणा^{१५} भाड खंडी-सा ए ।
 छिडि तांडा^{१६} गौड उडीसा ए ॥१०॥

रोहितास काली-भर बंगाळा ।
 नील-कंठ नांदर नेपाळा ॥
 कामरे वसंकर जट्टाए ।
 सूरती सेन उलट्टा ए^{१७} ॥११॥

लोहा-गिर पट्टण हांजी ए ।
 गड्डां^{१८} वैरागर लांजी ए ॥
 कनीजां^{१९} चीणी^{२०} चरणोटा^{२१} ।
 मांडव्वा बंधव सत्ताटा^{२२} ॥१२॥

१ आ. पंडर । इ. पंडर । २ आ.इ. करणाट । ३ आ.इ. कूंकण । ४ अ. ऐ ।
 ५ अ.इ. वूगलाणा । ६ अ. गोल कूडा । इ. गोल कुडा । ७ इ. वेदूर । ८ अ.
 तिलगांणा । ९ आ. देवगिरि । इ. देवगिर । १० आ.इ. दोलत । ११ इ. वदा-ऐ ।
 १२ आ. व्रंवक । १३ अ. अहम-नगर । * 'अ' प्रति में ६ वें छंद के बाद १० वां छंद दो
 बार लिखा हुआ है—

प्रथम १० वें से पुनः—“नरमदा नगर आसेरा । साल्हेर मोल्हेरक भंभेरा ॥१०॥

इसके बाद फिर १० वां छंद है जो बराबर 'इ' आदि प्रतियों से मेल खाता है । नोट—यह
 लिपिक की भूल मात्र है । १४ अ. गटा । १५ अ. गुडवांणा । १६ अ. तांड । १७ इ.
 उलटाए । १८ अ. गटा । १९ आ.इ. कनीजा । २० इ. चरणी । २१ अ. चरणाटा ।
 २२ अ.आ. सनाटा ।

ब्रंम - पुत्रह^१ कासी वेरारा ।
 सोनारा गांमी^२ पंचुआरा ॥
 मागध्वह राजा^३ महला ए ।
 तो सांम तिजाउर टिल्ला ए ॥१३॥
 मांडव्वा पट्टण चौरासी ।
 छिडिया^४ मांन-धाता सत्यासी ॥
 गूंजव्वै सत्तरि^५ हज्जारा ।
 बाणूं लक्ख वलक्ख वक्खारा ॥१४॥
 भर - अच्छी खंभा - इत्ती ए ।
 प्रति-काळ किरंग विलाती ए ॥
 ककडाळा पाउ कच्छी ए^६ ।
 दरियावां^७ कांठां^८ मच्छी ए ॥१५॥
 गिरनारा^९ जूना^{१०} गड्डा ए ।
 दळ वंका^{११} वहण^{१२} दुवड्डा^{१३} ए ॥
 छिडिया घर घोडा घट्टा ए^{१४} ।
 जळ - वट्ट अनै थळ-वट्टा ए ॥१६॥
 नवकोटी मारु मेवाडा ।
 हाडोती वागड ढूंढाडा^{१५} ॥
 पूरव^{१६} पच्छिम परचंडा ए ।
 दखणाधा^{१७} उत्तर खंडा ए ॥१७॥
 खुरसाणां हिंदुस-थांना^{१८} ए ।
 खिडिया^{१९} सुरताणां^{२०} खांना ए ॥
 खूंदालम^{२१} आगळि^{२२} आवीया ।
 दे वीडौ^{२३} वेग चलावीया^{२४} ॥१८॥

१ आ. ब्रह्म-पुत्र । इ. बृह्म-पुत्र । २ इ. गामी । ३ आ. इ. राज । ४ इ. छिडीया ।
 ५ इ. सतिरण । ६ इ. ऐ । ७ इ. दरियावां । ८ अ. कंठा । इ. कांठा । ९ अ.
 गिरिनारा । १० आ. जुंना गटा । इ. जुंना गढा । ११ अ. वंगा । १२ इ.
 वेहण । १३ अ. दुवटा । १४ इ. ऐ । १५ अ. इ. ढूंढाडा । १६ इ. पूरव । १७ अ.
 दपणाध । इ. दपणाधी । १८ अ. इ. हिंदुसथांना । इ. हिंदुस्थाना । १९ अ. इ. पिडीया ।
 २० इ. सुरताणां । २१ अ. पुदालम । इ. पुदालिम । २२ अ. अगलि । २३ आ. वीडो ।
 २४ अ. इ. चलाईया ।

ताम^१ सताब हुआ^२ त्थारु ए ।
जवन हिंदू^३ वूहा ज्यारुं ए ॥
हिंदूवै^४ सेन मुगल्ली ए ।
दळ दहळ फीजां चल्ली ए ॥१६॥

साही सेना रौ कूच

गाहा

गज भेरि नीसाण^५ ननदं । परबतमाळ^६ दियै^७ पड सहं ।
साह सेन चल्ले सरहदं । गूधळियौ^८ गयणाग^९ गगदं ॥१॥
असपति सेन असंख उलटुं^{१०} । हिले हेम दे महै पटुं ।
गिरवर धर भंगर गाहटुं । थिउ पैमाळ^{११} पाघरा पटुं^{१२} ॥२॥
गाही गोम गयण गुडळाणी^{१३} । घज्ज^{१४} पताकां^{१५} अरक ठकाणी^{१६} ।
दहळ पयाळ^{१७} सेख दहलाणी । पतसाही^{१८} दळ कीध पयाणी ॥३॥

छंद रसाउला^{१९}

सेनमें सबबला । हुई हीलोहळा ।
जाण निधेजळा^{२०} । पुळै^{२१} पाइदळी^{२२} ॥
*मल्हपै^{२३} मैंगला^{२४} । सुंड^{२५} लल्लवळा ।
आगळी ऊजळा । सेत - दांतू - सळा^{२६} ॥
सोहीया^{२७} सांमळा । वप्पि वीजा - चळा^{२८} ।
स्रंग^{२९} कूभा-थळा^{३०} । वोम किरि वदळा^{३१} ॥

१ अ. ताम । २ इ. हुआ । ३ आ.इ. हीदु । ४ अ. हीदूवै । इ. हिंदूवे । ५ इ. निसाण । ६ अ. परब-माल । ७ इ. दीयै । ८ आ.इ. गुधलीयो । ९ इ. गैयाग । १० इ. उदलं । ११ इ. पैमोल । १२ आ. थटं । १३ अ. गुडलाणी । १४ अ. घजा । इ. घजा । १५ इ. पताकां । १६ अ. टकाणी । इ. ठकाणी । १७ अ. पयालि । १८ इ. पतिसाही । १९ अ. रसाउला । इ. रसावला । २० अ.इ. निधजला । २१ इ. पुले । २२ आ. पाईदला । *प्रति अ. में यह छंद अगुद्ध है जिसका पाठ इस प्रकार है ।

“महला सेत दांतूसला, सोहीया सांमला, वप्पि वीजाचला, श्रिंग कूभाथला”
२३ अ. महला । इ. मल्हपे । २४ आ.इ. मैंगला । २५ इ. सुंड । २६ आ. दांतूसला । इ. दांतुसला । २७ आ.इ. सोहीया । २८ आ. वीजा-चला । इ. विजा-चला । २९ इ. श्रिंग । ३० इ. कूभा-थला । ३१ आ.इ. वादला ।

कसरसै कंठळा । आंकुसां वीजळा^१ ।
 चमकै चप्पळा । बैरकां बंबळा^२ ॥
 ढेच^३ ढालव्वळा^४ । अस्सि उतांमळा^५ ।
 वहै वेगागळा । वाज वाहै^६ नळा ॥
 कांपिया^७ कम्मला । धूजि रस्सातळा ।
 सेख सळसला । नाग नव्वै कुळा ॥
 प्रब्वंता प्रज्जळा । टंक^८ टळा टळा^९ ।

खंड खळम्भळा

गहपती^{१०} गिगन्नह गूधला^{११}, गोभ गिरव्वर गूडळा^{१२} ।
 सहि मेर मेहागिर^{१३} मेखळा, थियी धुळोरव^{१४} धूधळा ॥१॥

धूधळी^{१५} अंबर । खैह^{१६} मै डंबर ।
 बंब रातं - वरं । जाणि जन्नै करं ॥
 तूटि जाईतरं । भेरमै भंगरं ।
 पट थियो^{१७} पध्धरं । हींजरै^{१८} हैमरं ॥
 रोळ है - पक्खरं । गै गुडै भक्खरं ।
 मद्दमै नीभरं । धोर घट्टा सरं ॥
 भूल पाटंवरं । लोहमै लंगरं ।
 अक्कुटै^{१९} चम्मरं । मलप्पै^{२०} कुंजरं^{२१} ॥
 सैन किरि वांनरं । साथ सीतावरं ।
 उलट्टा सायरं^{२२} । जाण चत्रमुरं ॥
 भोम भारम्भरं । हार कपै^{२३} हरं ।
 कोम कोड डरं । है - खुरै^{२४} पत्थरं ॥

१ इ. विजला । २ अ. बंबला । ३ आ. टैच्च । ४ अ.आ. लालवला । ५ आ. उतामला । इ. उतांमला । ६ आ.इ. वाहे । ७ अ. कांपीय । इ. कांपीया । ८ अ. टक । ९ अ. टलवला । १० आ.इ. गहपति । ११ आ.इ. गुधला । १२ आ.इ. गुडला । १३ आ.इ. मेहागिरि । १४ आ.इ. धुली-रव । १५ अ. धूधलो । इ. धूधला । १६ इ. पेद । १७ आ.इ. थियो । १८ अ. हींजरै । १९ आ.इ. भूकुटे । २० आ.इ. मलये । २१ आ.इ. कुजरं । २२ अ. साहर । २३ इ. कपे । २४ इ. हैपुरे ।

उड्डि वैसन्नरं^१ । सांमठा सध्वरं ॥
 सुवभटां भूलरं^२ । फौज घांसाहरं ॥
 असमानक^३ फटी उदरं । गयण^४ गरदां गाह्वरं^५ ।
 लख थाट दगगै लसकरं । गाहट्टे गिर - कंदरं ॥२॥

कंदरां अन्नडा । गाज^६ तूटे गडा ।
 ढोल नीधस्सडा । हूकळै है - घडा ॥
 फूरणियां^७ फडहडा । धज्ज धू अधधडा ।
 है खडै वांकडा । ताजवै ताकडा ॥
 नभभ हू नीयडा । खिरै जाणै उडा ।
 हुवै^८ हूवच्छडा । अस्स^९ ऊरव्वडा ॥
 वाजिया^{१०} वेगडा । विक्ख^{११} भाजै थडा ।
 ऊजडै^{१२} सभभडा । धूज प्रिथ्थी पुडा ॥
 खट्टमै हैकडा^{१३} । कोम कंधं^{१४} मुडा ।
 कोडि कपं दडा । दाढ खंडहक्खडा ॥
 मेहलां^{१५} मंकडा । सैन तै समवडा ।
 मत गयंद गुडा । प्रव्वतां जेहडा ॥
 फरहरे कप्पडा । नीलमै रत्तडा ।
 भाभ भूलभभडा^{१६} । कूतमै^{१७} कंगडा ॥

रण-खेत^{१८} चडंदा रिहखडा । कमण आया की बप्पडा ।
 पतसाह^{१९} तणा दळ प्रगडा । पूरब पहुंचै^{२०} हूकडा ॥३॥

हूकडा हूबयं । सैन पूरव्वयं ।
 नगारां^{२१} धूबयं^{२२} । गुडै गज खंभयं ॥
 जाण^{२३} गोरंभयं । साट सीरंभयं ।
 असी ऊरंभयं । कीध ऊमंभयं ॥

१ आ.इ. वैसनरं । २ इ. भूलरं । ३ इ. असमान । ४ गण । ५ इ. गह्वरं ।
 ६ अ. गाज । ७ अ. पूरणियां । इ. फूरणी । ८ इ. हूह । ९ इ. असि । १० आ.
 वाजीया । ११ अ.इ. विष । १२ अ. उडै । १३ इ. हैकडा । १४ अ. कंध ।
 १५ इ. महला । १६ आ. भूल-भडा । इ. भूल-भडा । १७ आ.इ. कूतमै । १८ आ.इ.
 रिण-खेत । १९ आ.इ. पतिसातणा । २० अ. पहुंचै । इ. पहुंचे । २१ अ. नमारा ।
 २२ अ. धूबये । इ. धुबयं । २३ इ. जाणि ।

ऊपडै	वग्गयं ।	गाजवां	लग्गयं ।
गोम	गयणंगयं ।	धूजिया ^१	नग्गयं ॥
सेख	वासग्गयं ।	डंबरे	डंबयं ।
गाहिजै	पव्वयं ।	सात	सामंदयं ॥
जाण	ऊलट्टयं ।	हेम	परवत्तयं ।
जाण ^२ कि ^३	हिल्लये ।	खळभळे	खंडयं ॥
डोलिया ^४	दीपयं ।	मेर	ब्रह्मंडयं ^५ ।
सिघळी	सुंडयं ।	रेण	उच्चंडयं ॥
वैरका	भुंडये ^६ ।	गिग्गने	लोडयं ।
फौज	हेमज्जयं ।	मिग्ग ^७	अमूंजयं ॥

पतिसाह^८ नमो^९ पारंभयं । सैन^{१०} असंख्या लभभयं ।
इम किया^{११} राम आरंभयं । धूंघळिया^{१२} घर अभभयं ॥४॥

अब्बुररहोम खांना खांनरो कैद होणी

गाहा

आभा किरि गज दळ^{१३} उपडिया^{१४} ।
खूंदालम^{१५} कट्टक इम खडिया^{१६} ॥
राडि बरारी^{१७} भूमे^{१८} पडिया^{१९} ।
खांना - खांन जंजीरे जडिया^{२०} ॥१॥

भीम - नाद भेरी घूमाडै^{२१} ।
भालां डंबर गयण भमाडै ॥
पडिया^{२२} घोडां^{२३} घंस^{२४} पहाडै^{२५} ।
असपत^{२६} दळ वागां ऊपाडै ॥२॥

१ आ.इ. धूजीया । २ आ.इ. जाणि । ३ अ. कै । ४ आ.इ. डोलीया । ५ इ. वृह्मंडयं । ६ इ. भूडयं । ७ आ.इ. मिघ । ८ आ.इ. पातिसाह । ९ आ.इ. नमो । १० इ. सने । ११ आ.इ. कीया । १२ आ.इ. धूघलीया । १३ अ. दाण । आ. दांण । १४ आ.इ. उपडीया । १५ आ.इ. पूदालम । १६ आ.इ. पडीया । १७ आ.इ. बरारि । १८ आ.इ. भूमे । १९ आ.इ. पडीया । २० आ. जडीया । इ. जुडीया । २१ आ. घूमाडे । इ. घुमाडे । २२ आ.इ. पडीया । २३ इ. घोडां । २४ आ.इ. घस । २५ इ. पहाडे । २६ अ.इ. असपति ।

गोम गज^१ है - पाए^२ गाही ।

स्रप फुण सहस तपे सगलाही^३ ॥

लागा अंबर करण लडाई^४ ।

पूरव^५ दळ आया पतसाही ॥३॥

साही दळरी घरणण

कवित्त

भीम भयंकर नाद, भेर नीसांणां गरजै ।

गुहिर सह गडगडे, गयण वारह धण गरजै^१ ॥

खिमै^७ कूत^८ अदभूत, भडां वांकां भूडंडै ।

वादळ^९ वादळ वळकि^{१०}, बीज लत्ता ब्रह्मंडै^{११} ॥

तळ जोड पटै^{१२} कुंजर वहै, अनड नदी नड दडियडे^{१३} ।

असपती^{१४}-राव^{१५} असमानरा, दळ वदळ वदि वदि^{१६} चडे ॥२॥

भूमंडळ भैकंपे, जाण रैणाइउ^{१७} फट्टी ।

प्रळै-काळ कळिपंत^{१८}, प्रथी^{१९} उतपात प्रगट्टी^{२०} ॥

रांम चंद सिरि लंक, कीध जाणै आरंभह ।

जटा-जूट^{२१} किरि धुणि,^{२२} रुद्र किय^{२३} नाटारंभह ॥

वन खंड दुरगां^{२४} गिर-वरां, आवरत्त वूही सव्वळ ।

सुरतांण खुरम ऊपर^{२५} खडै^{२६}, दिस प्राची पतिसाह दळ ॥२॥

महाराज गजसींघरी घरणण

करिमरि कंकण सुकरि, नेत्र बाधी सिखराळह ।

वीर रस्स वरसोह, कंठ लज्जी वरमाळह ॥

१ अ. गज । २ आ. पाए । ३ अ. सगलाइ । इ. सगलाई । ४ आ. लडाई ।
५ अ. पूरव । ६ इ. गजे । ७ आ. इ. खिमै । ८ इ. कूत । ९ इ. वादलि ।
१० इ. वलक । ११ अ. ब्राह्मंडे । इ. ब्रह्मंडे । १२ इ. पडै । १३ आ. दडीयाडे । इ.
दडीयाडे । १४ आ. इ. असपति । १५ आ. इ. राउ । १६ आ. चतुरंगी दल वर चडै ।
१७ इ. रैणाईर । १८ अ. कलपंत । १९ आ. इ. प्रिथी । २० आ. इ. प्रघटी । २१
इ. जटाजूटि । २२ इ. धुणि । २३ इ. कीयी । २४ इ. दुरंगां । २५ आ. इ. उपर ।
२६ इ. षडे ।

विकट रूप वींदणी^१, खुरम^२ घड^३ कीध^४ आडंबर ।
 लगन^५ प्रव्व^६ रणताल^७, धमळ-मंगळ सिधू^८-सुर ॥
 अधपती^९ बहूतरि^{१०} ऊमरा^{११}, सतरि - खान सुरतांणरा ।
 दळ-थंभ 'गजण' दुल्लह^{१२} हुआ, जान सेन जोगणपुरा^{१३} ॥३॥

तीरथ-राउ^{१४} प्रयागि^{१५}, राव^{१६} कमधज्ज पधारे ।
 ब्रम-सूत^{१७} निय^{१८} पहरि^{१९}, करगि अंजलि कुस^{२०} धारे ॥
 करि मंजन विधि^{२१} सहित^{२२}, कीध तरपण गंगा तड^{२३} ।
 विवह दान दै विप्रां, अंकमाळी अक्खै वड ॥
 त्रिविध^{२४} मै ताप^{२५} पापह त्रिविध^{२६}, आप हूंत^{२७} अळगा करे ।
 'सूरउत' गोत ऊधरि^{२८} सपत^{२९}, एकोतर कुळ ऊधरे^{३०} ॥४॥

वेद-मंत्र बोलंत^{३१}, वेद पाठी ब्राह्मण^{३२} ।
 पहेरे^{३३} पट्ट अबोट, द्रव्व आपै^{३४} घण^{३५} सघण ॥
 सू^{३६} जमदड्डा तेग, जोड^{३७} चौधार बडप्पर ।
 सहित 'भाण' सारधू, सोळ सिंगार निरंतर ॥
 कीयौ तुलाव^{३८} कमधज्ज निप^{३९}, जस सस^{४०} सूरज^{४१} समवडै^{४२} ।
 हिंदुआं-छात^{४३} हिंदू^{४४} तुरक, धरम न तोलै तो धडै ॥५॥

कासीराव^{४५} कमधज्ज, नीर - गंगा तद नाहै^{४६} ।
 मुगति-खेत सिव-पुरी, महा तीरथ अवगाहै^{४७} ॥

१ अ. वींदणी । इ. विदणी । २ इ. पुरमि । ३ अ. घडि । इ. पड । ४ अ. की ।
 ५ अ. लगन । ६ अ. प्रव्व । ७ इ. रिण-ताल । ८ अ. सिध-सुर । ९ अ. इ. अधपति ।
 १० इ. बहुतर । ११ अ. उमरी । १२ अ. दुलह । १३ अ. गणि-पूरा । १४ अ. तीरथ
 राइ । १५ अ. पीयागि । इ. प्रयागि । १६ अ. इ. राउ । १७ अ. इ. वृह-सूत । १८
 अ. इ. नीय । १९ इ. पहरि । २० इ. कुस । २१ इ. विध । २२ अ. सहति । २३ अ.
 तडि । २४ अ. त्रिविधि । २५ इ. तात । २६ अ. आ. त्रिविधि । २७ अ. हुत । इ.
 हूत । २८ आ. उधरि । इ. उधर । २९ इ. सपति । ३० आ. उधरे । इ. उधारे ।
 ३१ आ. इ. बोलंति । ३२ आ. ब्राह्मण । इ. ब्राह्मण । ३३ आ. पहरि । इ. पहरि ।
 ३४ आ. इ. आप । ३५ इ. घणे । ३६ आ. इ. सु । ३७ इ. जोडि । ३८ इ. तुलाव ।
 ३९ आ. इ. निप । ४० आ. ससि । इ. सिस । ४१ इ. सुरज । ४२ अ. समवेडै । इ.
 समवेडे । ४३ आ. हींदुआं-छात । इ. हींदुवां छात । ४४ आ. हींदू । इ. हिंदु । ४५
 अ. इ. कासीराउ । ४६ अ. नाहे । इ. न्हाहे । ४७ इ. अविगाहे ।

दीध द्रव्य दक्खणा, करगि^१ वंभणा^२ कळप्पै^३ ।
 कपिल धेन कळ - धूत, भोम^४ आगाहट^५ अप्पे^६ ॥
 भो^७ मेटि उभै संसार भव, इम कुण कुळ^८ उद्धारसी ।
 परसियी^९ राय^{१०} जोधहपुरै^{११}, विस्वनाथ वांणारसी^{१२} ॥६॥
 गया राव राठीड, विद्ध देखे परपूरण^{१३} ।
 प्रेत सिला भरि^{१४} पिंड^{१५}, पीर^{१६} रिण हूहुइ ऊरण^{१७} ॥
 मात पक्ख पित पक्ख, पितर कारज^{१८} संभारे ।
 सपत गोत उद्धरे, वंस इकोत्तर^{१९} तारे ॥
 वड दांन दीध ब्राह्मणां, वडौ धरम जस विसतरे ।
 गज सिंघ वंस राठीड हर, इम भागीरथ अवतरे ॥७॥

गाथा

पुत्रज वैर वराहौ, पुत्र जग मां^{२०} उधरै पिंडी^{२१} ।
 पुत्रज सांम सनाहौ, पुत्रज पाट उद्धरण धीर ॥१॥
 सागर वंस उद्धरण कारण^{२२}, आंण^{२३} मथा सीस मंदागणि ।
 तै भागीरथ तणौ सहजे, 'गजीसाह' हुआ^{२४} कमधज्जे ॥२॥

कवित्त

प्रिथम पाट उद्धरे, त्याग उधारि^{२५} खट ब्रन्नां^{२६} ।
 आच खडग ऊधरे^{२७}, मुदति^{२८} सुरतांणां खानां ॥
 खत्री-धरम^{२९} उद्धरे, खत्र खेले^{३०} खत्र-घौडां^{३१} ।
 गया पिंड^{३२} उद्धरे, वंस उद्धरि राठीडां ॥
 पीयार^{३३} प्रिथी पुड उद्धरे, सर वापी उद्धरि वरण ।
 'गजसाह'^{३४} 'गंगेहर'^{३५} ऊठियी^{३६}, पतिसाहां छळ उधरण ॥३॥

१ इ. करणि । २ इ. वांभणां । ३ अ. कलपै । इ. कलपे । ४ आ. भोम । ५ आ. आगाहट । इ. अगाहट । ६ आ. इ. अप्पे । ७ आ. भो । ८ अ. कूल । ९ आ. इ. परसीयी । १० आ. राव । ११ अ. जोधपुरै । १२ आ. वाणारसी । इ. वाणारसी । १३ इ. परिपूर्ण । १४ आ. इ. भर । १५ आ. इ. पींड । १६ आ. इ. पिर । १७ इ. उर्ण । १८ आ. कारजि । १९ इ. ईकोत्तर । २० इ. मा । २१ इ. पिंडी । २२ अ. कारण । २३ इ. आणी । २४ अ. हुआ । इ. हुवा । २५ इ. उधारि । २६ इ. खट-वृत्तां । २७ इ. उधरे । २८ इ. मुदिति । २९ इ. धत्रीधर्म । ३० अ. वेले । ३१ इ. खत्र-घोडां । ३२ इ. पिंड । ३३ अ. पायार । ३४ इ. गजसीह । ३५ इ. गणो । ३६ आ. इ. उठीयी ।

गाथा

आरंभ जुध उभयौ^१, त्रितिय^२ नैवच^३ जुध आरंभौ ।
 जोधाणै^४ जोध विद्या, सिधाणै जोग संग्राम^५ ॥१॥
 तयौ देव (त्रिविध गुणया), त्रिविधि ह्योयसि^६ त्रिविध मे जोगी^७ ।
 त्रिकाळ^८ त्रिविध^९ कज्जं, देवी पिता सामि^{१०} कारज्जी^{११} ॥२॥
 रट्टौड रूप राए दीनौ^{१२}, सुरताण नाम दलथंभण^{१३} ।
 हिंदुवै^{१४} मुसलमांणौ^{१५}, विरदावियै^{१६} जोध विरदैता^{१७} ॥३॥
 गुणि-अणे^{१८} गुणमाला, गढि गुंथाइ^{१९} गूंथिया^{२०} गाथा ।
 गजसिंघ विद^{२१} सोभा, दंपति जथा^{२२} सोभिय^{२३} मोड^{२४} ॥४॥

कवित्त

जपै^{२५} सीह 'गजसीह', सुणौ^{२६} हिंदुवां^{२७} तुरवकां^{२८} ।
 कहै वेद कत्तेव, तत्त साहस त्रिहुं^{२९} लोकां ॥
 मारण मरण नै दांन, पाणं रहमांण तणै वे ।
 दियै^{३०} तांह जगदीस, आसमांणी फत्तै ए ॥
 एकाज टूस आडी नदी, नैडौ सहि जादौ^{३१} खुरम ।
 अणकियै^{३२} जुद्ध आपां^{३३} अघ्रिम, महाजुद्ध कीयी घरम^{३४} ॥१॥

महाराजा गजसिंघ की चढाई करणी

दे दमांम^{३५} गजपती, तांम^{३६} चडियी^{३७} बोले बळ ।
 चडे सेन घण सघण, तांम^{३८} कंपे हर मेखल ॥

१ आ.इ. उभयौ । २ आ.इ. त्रितिय । ३ इ. नइवच । ४ इ. जोधाण । ५ आ. इ. संग्राम । ६ आ.इ. लीयसि । ७ अ. जोरगो । ८ अ. त्रिकाळ । ९ आ. त्रिविधी । १० अ.इ. साम । ११ अ.इ. कारिजी । १२ इ. दीनो । १३ इ. दल-अंभ । १४ अ. हीदुवै । इ. हीदुवै । १५ इ. मुसलमांण । १६ अ. विरदावीयो । इ. विरदावीयी । १७ अ. विरदैत । १८ आ. गुणीअणे । इ. गुणीयणे । १९ अ.इ. गंथाई । २० आ. इ. गूंथिया । २१ इ. विद । २२ इ. जदा । २३ अ.इ. सोभीय । २४ अ. मोड । २५ अ.इ. जपै । २६ इ. सुणो । २७ अ. हीदुवां । इ. हींदुवां । २८ इ. में तुरकां शब्द नहीं है । २९ आ. तिहु । ३० इ. दीयै । ३१ इ. साहिजादो । ३२ इ. कीयी । ३३ इ. आयां । ३४ इ. घरम । ३५ अ. दमां । ३६ इ. ताम । ३७ आ.इ. चडीयो । ३८ इ. ताम ।

चडिया^१ हिंदू^२ तुरक, तांम^३ चडियौ^४ सहिजादौ^५ ।
 गजथट्टां गाहटे^६, कीध सल्लिता जळ कादौ^७ ॥
 उतरै^८ टूस^९ असपत्ति^{१०} दळ, दुहुं^{११} कोसे डेरी कियौ^{१२} ।
 तिण वार खुरम सुरतांण सू^{१३}, जोधपुरै जुध कापियौ^{१४} ॥२॥
 कमध राव^{१५} कोरटै, खुरम खैरागढ आयौ ।
 बिहुंवै^{१६} बळ बोलियौ^{१७}, करै बेकंध सुहायौ ॥
 गज समूह गजसींह, खुरम आगिना^{१८} आई^{१९} ।
 काळनळ कोपिया^{२०}, लियण असमान लडाई ॥
 लाभसी विगत^{२१} लाठां^{२२} भलां, नरां नाच आयौ नहै ।
 जिहंगीर खुरम उभै दळां, उभै कोस अंतर रहै ॥३॥
 बलि भरियौ^{२३} विरडियौ^{२४}, खुरम माभी गहवंती ।
 भ्रुह^{२५} चडै चख त्रिडे^{२६}, रोस हुं^{२७} मुंह^{२८} हुइ^{२९} राती^{३०} ॥
 रिडै^{३१} जांण आहज्ज^{३२}, अगन^{३३} धडहडती ऊपरि ।
 सधण गाज सांभळे, जांण^{३४} सादुल^{३५} केहरि ॥
 वांकिम्म वीद^{३६} दिन वांकडै^{३७}, वाद न छंडै^{३८} वंकपण ।
 वांकडौ^{३९} सेर ऊठै^{४०} विढण, वदै जीह वंका वयण ॥४॥

खुरमरी भीम सीसोदियाने विरुदाणी

तांम^{४१} रांण^{४२} सीसोद^{४३}, खुरम सुरतांण पडिगगर ।
 मूळ सेन दळ - थंभ, आज कुण तूळ बराबर^{४४} ॥
 दिल्ली दावा - मुदी, तुं हिंज आगळ है रांणां^{४५} ।
 तो दादौ 'संग्राम', ग्रहण मोखण सुरतांणां ॥

१ आ.इ. चडिया । २ आ. हीदु । इ. हिंदु । ३ इ. ताम । ४ आ.इ. चडियौ ।
 ५ इ. साहिजादौ । ६ इ. गाहेट । ७ अ. कादौ । ८ आ. उतरे । इ. उधरे । ९ इ. टूस ।
 १० आ. असपत्ति । इ. अधपती । ११ अ. दुहुं । इ. दहु । १२ आ.इ. कीयौ । १३ आ.
 इ. सुं । १४ अ. कावीयौ । इ. काबीयौ । १५ अ.इ. कमधज राव । १६ आ. बिहुंवै ।
 इ. बिहुंवे । १७ आ.इ. बोलीयौ । १८ अ. अगिना । १९ इ. आई । २० आ.इ.
 कोपीयौ । २१ आ.इ. विगति । २२ आ. लांवां । इ. लांवा । २३ आ.इ. भरीयौ ।
 २४ आ.इ. विरडियौ । २५ आ.इ. भ्रुह । २६ आ. तिडे । २७ आ.इ. हुं । २८ इ.
 मुहि । २९ आ. हुइ । इ. हुय । ३० आ. रती । ३१ अ. रियो । ३२ आ. आहज ।
 इ. आहाज । ३३ इ. अगनि । ३४ अ.इ. जांणि । ३५ आ.इ. सादुल । ३६ इ. विद ।
 ३७ आ. वंकडै । इ. वांकडे । ३८ अ. छेकै । ३९ इ. वांकडौ । ४० आ.इ. ऊठै ।
 ४१ आ.इ. ताम । ४२ आ.इ. राण । ४३ आ. सीसोद । ४४ आ.इ. बरावरि । ४५ इ. राण ।

खुमाण^१ दळे खुरसाण^२ सू^३, कमण जुद्ध मंडे वियी^४ ।
 'भीमेण' ऊठि^५ 'अमरेस' रा, तो सिरि^६ नेत^७ परट्टियी^८ ॥५॥

तांम^९ 'भीम' ऊठियी^{१०}, खाग^{११} धूणै^{१२} भूडंडह ।
 जडै पाउ पायाळ, अडे मत्थौ ब्रह्मंडह^{१३} ॥
 जिम वामण^{१४} बळ छळण, नेम वधियी^{१५} देहा दळ ।
 घणै घ्रित^{१६} सींचिये^{१७}, जाण धिखियी^{१८} जाळं-नळ ॥
 'भीमेण' भयंकर^{१९} भड सिहर, इसै^{२०} रूप^{२१} 'अमरा' सुतन ।
 जळ-निधी कुंभ^{२२}-सभ्रम जिहीं, एक करै जळ आचमन ॥६॥

गाथा

जोगाभ्यासी^{२३} कीजै, कीजै संग्राम^{२४} साम^{२५} छळ मरणौ ।
 पांमीजै^{२६} मित^{२७} मोखी, निस्चयं तत निरबाण ॥१॥

वदंति लोक वाक्या, पपीलिका मारगं पयणै^{२८} ।
 सिधंति सूर पंथं, विहंगम^{२९} पथ^{३०} पणयह^{३१} ॥२॥

धीर जो लज मांणी, अवसाण मै सिध अणभंगौ ।
 पौरस पराक्रमी, सूरणै सपत चिहनांनि ॥३॥

'भीमेण' वयण वंका, कहियासि^{३२} पेख सेन सुरतांणी ।
 ग्रह धाम ठाम दूरे, आसन्ती सूरमां सरग ॥४॥

मरणौ लाभंति^{३३} भागे, दखै खुमाण रांण दस-सहस्री ।
 असपति उभै जुद्ध ए, एह औसर कदं प्रामेस ॥५॥

१ आ.इ. खुमाण । २ इ. पुरमांण । ३ आ. सुं । ४ आ.इ. वीयी । ५ आ.इ. उठि । ६ आ.इ. सिर । ७ आ.इ. वेत । ८ आ.इ. परठीयी । ९ अ. ताम । १० आ.इ. उठीयी । ११ आ.इ. पग । १२ अ. धूणे । १३ इ. वृह्णंडह । १४ अ. वामण । १५ अ. वामण । १५ आ.इ. वधीयी । १६ इ. घ्रीत । १७ अ. इ. सीचीये । १८ आ.इ. धिपीयी । १९ अ. भयंकर । २० इ. इसै । २१ अ. रूपि । २२ अ. कुच-संभ्रम । २३ अ. कुभ-संभ्रम । २३ इ. जोगाभ्यास । २४ आ.इ. संग्राम । २५ आ.इ. साम । २६ अ.इ. पामिजे । २७ इ. मृत । २८ अ. पयणे । २९ अ. पणए । ३० अ. विहंगमं । ३१ अ. विहंगम । ३२ अ. पथं । ३३ अ. पयणेह । ३४ अ. पणह । ३५ अ.इ. महोद्यमि । ३६ इ. नालति ।

कुरुखेत^१ जुध करणी, भमाडण गज गयणंगे ।
जीपणी जुरासिधौ, ऊठियौ^३ गजा 'भीम' उप्पाडि ॥६॥

भीम सीसोदियारो वरणण

छंद पोमावती

उठियौ^४ गजां^५ उपाड^६, 'भीमेण' भुजाळजी ।
चीतोडी^७ चईनौ^८ कोप, चम्मर बंवाळजी ॥
नेत - बंधौ^९ नागंद्रहौ^{१०}, मेवाडी मसंदजी^{११} ।
आहाडौ^{१२} खूमांणी^{१३} ओपै, निडुर नरिंदजी^{१४} ॥१॥

कैल - पुरो कुंभळमेरी^{१५}, निप्पट^{१६} निराटजी ।
दस - सहंसी^{१७} सीसोदी^{१८}, पह मेद-पाटजी ॥
'अमरसी' 'प्रतापसी', 'उदैसी' अपालजी ।
साहण - समंद 'सांगौ', रांणी रायमालजी^{१९} ॥२॥

कुंभ-क्रत^{२०} 'मोकल' नै, 'लाखी' खेतसींहजी ।
उजाळै 'हम्मीर' आज, अरस्सी अबीहजी ॥
'अजैसी' भमाडै भली, हिंदुवांणी^{२१} छातजी^{२२} ।
लखमणसी मंडळीक, गिरव्वर गातजी ॥३॥

सीसोदियौ^{२३} सेलगुर, बापी^{२४} बिरदैतजी ।
उजाळै^{२५} 'अमर' उत, वंडाळी^{२६} वानैतजी ॥
सोह चाडै समरसी, सारिखां^{२७} सधीरजी ।
विढेवा विलागी^{२८} वोम, वड्डी वर वोरजी ॥४॥

१ अ. कुरुखेत । २ अ. जीमणौ । ३ आ.इ. उठीयौ । ४ आ.इ. उठीयौ । ५
आ.इ. गजा । ६ आ.इ. उपाडि । ७ आ. चीतोडो । ८ इ. चीत्रोडो । ९ इ. चईनौ ।
१० इ. नेत-बंधे । १० अ. नानोंद्रहौ । ११ अ. मसंदनी । १२ इ. आहाडो । १३ अ.
खूमांणी । इ. पुमांणी । १४ अ. नरिंद । आ. नरंद । १५ अ. कुंभलमेरी । १६ इ.
निपट । १७ अ. दस-सहसी । इ. दस सहसी । १८ अ.इ. सीसोदी । १९ अ. राइमाल ।
२० अ. कुंभक्रत । इ. कुंभक्रंत । २१ अ. हींदुवांणी । इ. हींदुवांणे । २२ इ. छात्र ।
२३ इ. सीसोदीयौ । २४ अ.इ. बापी । २५ अ. उजाली । २६ इ. वंडाली । २७ इ.
सापां । २८ इ. विलगी ।

मूछां अणी भ्रूह^१ मेळ^२, दाढी^३ कर दाखिजी^४ ।
 विढसी वीराध - वीर, सूर^५ जितै^६ साखिजी^७ ॥
 बळवंत बोलै बोल, चीतीड^८ नरेसजी ।
 उजाए^९ वांमी^{१०} उदक्क, माथै मो महेसजी ॥५॥

इहा

माथै उदक महेस मौ, साखी सिसहर भांण ।
 जुध प्रब मेलै^{११} जीववी^{१२}, इम दक्खै 'खूमांण'^{१३} ॥१॥
 बे^{१४} खूंदालम^{१५} बहसिया^{१६}, विढवा^{१७} आग वृजागि^{१८} ।
 आजु^{१९} वडौ प्रब आवियौ^{२०}, भीम कहै^{२१} मो भागि^{२२} ॥२॥
 'भीम' कहै भूलू^{२३} नहीं^{२४}, खेलेवो खत्र-धीड ।
 मो भगै^{२५} सीसोद हर, गढ लज्जै चीतीड^{२६} ॥३॥
 मेवाडी नीमे मरण, रत्ती रिण गिम्मार ।
 लोह सबाहै भुज्ज-बळ^{२७}, छंडै^{२८} मोह संसार^{२९} ॥४॥
 माया मोह प्रमुक्कियो^{३०}, इम 'खूमांण' नरिद ।
 जेम लखमण रामचंद, भरथर गोपीचंद ॥५॥
 नूप^{३१} माया तजि सिद्ध थिउ^{३२}, निनांणवै^{३३} करोडि ।
 सूरज - मंडळ भेदही, सूरों मज्जे कोडि ॥६॥
 सूरों लज्जी बळ वही, लच्छी कोइ^{३४} न कज्ज ।
 लच्छी गच्छी बाहुडै, गई न आवै लज्ज ॥७॥

१ इ. भ्रूह । २ अ.इ. मेलि । ३ अ. दाटी । इ. दाषी । ४ इ. दाषजी । ५ इ. सुर । ६ आ.इ. जतै । ७ इ. साषजी । ८ अ. चीत्रीड । इ. चीत्रोड । ९ आ.इ. उजाए । १० इ. वामो । ११ अ. मे । १२ अ. जीववी । १३ अ. पुमांण । इ. पुंमांण । १४ अ. बे । १५ अ. पुदामम । इ. पुदालम । १६ अ. बहसीयर । इ. बहसीया । १७ अ. विटवा । इ. विढवा । १८ आ.इ. वृजागि । १९ अ. आज । इ. आज । २० अ. आवीयी । इ. आवीयी । २१ अ. कहे । २२ इ. भाग । २३ अ. भूलू । इ. भुलुं । २४ अ.इ. नहीं । २५ अ. भगै । इ. भगे । २६ अ.इ. चीत्रीड । २७ अ.इ. भुज-बलि भुज-बली । २८ आ. छंडो । इ. छांडे । २९ अ. संसार । ३० आ. प्रमुकीयो । इ. प्रमुकीयो । ३१ अ.इ. निप । ३२ अ.इ. थिउ । ३३ अ.इ. निनांणुवे । ३४ इ. काइ ।

गाथा

गरजंति भीम नादं, पूरण^१ चंदाइ^२ पेखि^३ उफणिए^४ ।
 धन समद घोरं, नह लंघत^५ लाज मरजादं^६ ॥१॥
 गज 'भीम' गयण लग्गे, पौरसि^७ मदमत जोध परचंडं ।
 सोहिया^८ पैहर पगे^९, सांकळा लाज रांण सीसोदह^{१०} ॥२॥
 पलमेक प्रांण कस्टं, सूरा सहंत रण संग्रामै ।
 जामणी जरा-म्रितौ^{११}, भव भाजै भाखितं भीम ॥३॥

कवित्त

सिव नै सिसहर निलै, सकति नै सीह^{१२} चइत्री ।
 बांमण^{१३} अनियै^{१४} बळ^{१५}, वाच बळ राजा दीनी ॥
 रांमचंद नै भीच, हणु^{१६} मुंह^{१७} आगळ^{१८} कीधी ।
 थावर नै बारमौ, अधड नै अम्रत^{१९} पीधी ॥
 गोइंद अनै चढियौ^{२०} गुरड^{२१}, पावक नै बळ पवनरी ।
 सुरतांण खुरम नै सेलगुर, कनै भीम^{२२} केलहपुरी^{२३} ॥१॥

साह सेन संपेख, खुरम सुरतांण निहट्टी ।
 पग पाछा नह दियै^{२४}, जेण पंच-रूप आरट्टी ॥
 काळ रूप जम रूप, ग्रहै गयणागक उंडळ ।
 वासंग बळ वज्जरै, भुज्ज^{२५} धूणी वीजुजळ^{२६} ॥
 असमान थंभ उड्डै इसी, पकडै मेर पहाड^{२७} नू ।
 सुरतांण खुरम जुध सूत्रियो^{२८}, पातसाह^{२९} अल्लाह तू^{३०} ॥२॥

१ अ.इ. पूरण । २ अ. चंदाई । ३ अ. पेखी । ४ अ. पेखीयं । ५ अ. उफणिए ।
 ६ अ. फणिए । ७ अ. लंघण । ८ अ. रजाद । ९ अ. पौरसि । १० अ. पौरस । ११ अ.
 सोहोया । १२ अ. सीहीयं । १३ अ. पगे । १४ अ. सीसीदे । १५ अ. जरा मृती । १६
 अ. सिह । १७ अ. सिध । १८ अ.इ. वामण । १९ अ.इ. अनियै । २० अ. चले । २१
 अ. हनु । २२ अ. मुहि । २३ अ. आगलि । २४ अ.इ. अमृत । २५ अ.इ. चडीयी ।
 २६ अ. कुरड । २७ अ. भिम । २८ अ. केलपुरी । २९ अ.इ. दीयै । ३० अ.इ.
 भुजि । ३१ अ. विजुजल । ३२ अ. पडाड । ३३ अ.इ. सूत्रीयी । ३४ अ. पातिसाह ।
 ३५ अ. सू ।

खुरमरी धरण

छंद भुजंगी

खुरम्म^१ सुरताण धूणै^२ खडगं ।
 वधे वामणं^३ वोमि जाणै^४ विलगं ॥
 वणै चोळ^५ चक्खं मुखं चोळ वृन्नं^६ ।
 ग्रहै जे वही घात^७ बाथां गिगन्नं^८ ॥१॥

*महाकाल क्रोधन्नळ^९ क्रोध मन्ने ।
 दुआदस्स आदीत ऊगा वदन्ने^{१०} ॥
 भुजाडंड नीमज्ज^{११} माभी भुजाळी ।
 किरै^{१२} चंपीयी^{१३} ऊफण नाग काली^{१४} ॥२॥

गढां भूखीयी^{१५} कामरी हाम गाढी ।
 दिनी मूछ वळ पाण स-त्ताण दाढी ॥
 पौरस्से तरस्से उसस्से प्रचंड^{१६} ।
 विकस्से^{१७} हसे ऊघसे^{१८} वेण-डंड^{१९} ॥३॥

भुजाडंड ऊलाळि भाली भमाडै ।
 बाजोकी इसी मेर बाथां उपाडै ॥
 गरज्जे भली^{२०} बोलियी^{२१} भोम ग्राही ।
 पतीसाह^{२२} सू^{२३} माहरी पातसाही ॥४॥

कटक्कां मिळै मेखळा मेर कानै ।
 खडा ऊमरा खान दीवाण खानै ॥
 विढेवा^{२४} कियी^{२५} साहिजादै^{२६} विचारं ।
 अणी फौज वांटी हुआ^{२७} अस्सवारं ॥५॥

१ अ.इ. ती पुरम । २. आ. धूण । इ. धूणे । ३ आ. वामाणं । इ. वामणं ।
 ४ इ. जाणै । ५ इ. चोळ । ६ अ.इ. चोल-वृन्नं । ७ अ. घाति । ८ इ. गिननां । * अ.
 प्रति में यह पंक्ति इस प्रकार है—“महाकाल क्रोध मन्ने” । ९ इ. वदने । १० अ.इ.
 नीमजि । ११ अ.इ. किरै । १२ अ. चंपीयी । इ. चांपीयी । १३ अ. काली । १४
 आ. भुपीयी । इ. भूपीयी । १५ अ. पचंड । १६ अ. किकसे । १७ इ. उघसे ।
 १८ इ. वेण-डंड । १९ इ. भली । २० आ.इ. बोलीयी । २१ इ. पतिसाह । २२
 इ. हु । २३ अ. विढेवा । २४ आ.इ. कीयी । २५ आ. साहीजादै । इ. सहिजादै ।
 २६ आ. हवी । इ. हुआ ।

नगारौ हुआ^१ भेरि^२ नीसाण^३ नहं ।
सरहं गरज्जे करै मेघ सहं ॥
हळा-बोळ है - थाट हूए^४ हमल्लं ।
आउल्ला असव्वार तेजी अललं ॥६॥

लगावै^५ लगाणं^६ पवंगां^७ पलाणै^८ ।
बिपेटा^९ किया^{१०} बेवडा तंग ताणै^{११} ॥
विडंगां सिणंगार सोभा वणाणी^{१२} ।
रुळै पाखरां घूघरां^{१३} जाण^{१४} रांणी ॥७॥

विडंगं तुरक्की ऐराकी विलाती ।
मचै पाखरां रोळि है - हींस माती ॥
सिणंगारिया^{१५} पीलराणै^{१६} सुंडाळा ।
असमानं साम्हा दियंता^{१७} उलाळा ॥८॥

हलक्कां ताणै आंठुए बांध^{१८} हालां ।
ढळक्कावियै^{१९} दूहरी^{२०} पूठि ढालां ॥
करै हाथळां टोप रागां कडालं ।
जुवाणं^{२१} वपे^{२२} औपवै जीण-सालं ॥९॥

जमं-जाळ हिंदू^{२३} तुरक्काळ जूआ ।
जडे सीलहा^{२४} जोध^{२५} जोगिद्र^{२६} हूआ ॥
जमदाढ तेगां फरी कूत^{२७} जोडं ।
खरां खग ढावै^{२८} दूण^{२९} खोडं^{३०} ॥१०॥

१ अ.इ. हुवा । २ अ. भेर । ३ अ. नीसाण । इ. निसाण । ४ अ. हुए । इ. हुऐ ।
५ अ.इ. लगावै । ६ अ. लगाण । इ. लगाण । ७ अ. पवंगां । ८ अ.इ. पलाणै ।
९ इ. बिपेटा । १० अ. आ.इ. किया । ११ आ.इ. तांणै । १२ इ. वणीणी । १३ अ.
घूघरा । इ. घुघरा । १४ अ.इ. जांणि । १५ आ.इ. सिणंगारीया । १६ इ. पिलवांणै ।
१७ इ. दीयंता । १८ इ. बांधि । १९ अ. ढळकावियै । इ. ढलकीवियै । २० अ. दूहरी ।
२१ अ. जुवीणं । २२ आ.इ. वपे । २३ हीदू । २४ अ. सिलहां । इ. सिलहं ।
२५ इ. जोधि । २६ इ. जोगंद्र । २७ इ. कूत । २८ अ. डावै । इ. डावै । २९ अ.इ.
दूण । ३० आ. खोड । इ. खीडं ।

हुएँ हूच है-हींस माती हुलाहं ।
 चढै^१ चंचलै^२ आवळा चन्न-वाहं ॥
 चढै^३ भीम खूमाण^४ चीत्तीड^५ रांण ।
 किरै^६ भाद्रवै नीसरै सिसर भांण ॥११॥

चढै^७ खान अबदुल्ल^८ बोलै अवावं ।
 निभैसार जूभार मांभी निवावं ॥
 चढै^९ खान दरियाव^{१०} संग्राम सूरं ।
 पठाण^{११} पराक्रम पौरस्स पुरं^{१२} ॥१२॥

चढै^{१३} खान पाहाड^{१४} चलती पहाडं ।
 वरस्सिघ दे सुत्त फौजां विभाडं ॥
 चढै^{१५} 'भीम' कमधज्ज सुत्त 'कित्याण' ।
 रिमां-राह राठौड राउ^{१६} जम्मराणं^{१७} ॥१३॥

चढै 'पीथली' बांधि है^{१८} गज्ज गाहं ।
 'बलू' सुत^{१९} विरदैत^{२०} अज्जान-बाहं ॥
 चढे ताम^{२१} हरदास 'रांमा' सुत्तनं ।
 धरै^{२२} धारणा धूधडै मेर मन्नं ॥१४॥

चढै^{२३} रावतां राउला^{२४} राव^{२५} रांणा ।
 चढै^{२६} सुहड साखेत^{२७} जोधा जुवांणां ॥
 चढै^{२८} मीरजां-मीर^{२९} मीयां किलक्कं ।
 चढै^{३०} खान निब्बाव खांडा^{३१} खाइक्कं ॥१५॥

१ अ. चढै । २ इ. चढे । ३ इ. चंचले । ४ अ. इ. चढे । ५ इ. पुमांण । ६ अ. चीत्तीड । ७ इ. चित्रोड । ८ इ. किरै । ९ अ. इ. चढे । १० अ. इ. अबदुल । ११ अ. इ. चढे । १२ अ. इ. दरियाव । १३ अ. इ. पठाण । १४ इ. पुरं । १५ अ. इ. चढे । १६ अ. पहाड । १७ अ. इ. चढे । १८ अ. राऊ । १९ इ. जमराणं । २० अ. दै । २१ अ. सुत । २२ अ. विरदैत । २३ अ. इ. ताम । २४ इ. धरै । २५ अ. इ. चढे । २६ अ. इ. राऊला । २७ अ. राउ । २८ अ. इ. राऊ । २९ अ. इ. चढे । ३० अ. इ. साखेत । ३१ अ. इ. चढे । ३२ अ. मीरजा-मीर । ३३ अ. चढै । ३४ इ. पंडा ।

चडै^१ मत्तवाळा सरै फूल मत्ता ।
चडे^२ रूप अल्लेख^३ रहमाण^४ रत्ता ॥
चडे नबलमै वाजि तरकस्स^५ - बंधं ।
चडे रौद्र रिम - राह जमबाह जुद्धं ॥१६॥

चडे सब्बदां - वेध लूघा^६ सिघाणं^७ ।
चडे तूणमै^८ घातिआ^९ भूल बाणं ॥
चडे पंच - हज्जारियां^{१०} पंच-सद्दी ।
चडे मल्ल^{११} पायक्क^{१२} बंगसी^{१३} अहद्दी ॥१७॥

चडे कन्नडा^{१४} हब्बसी नेज-बाजं ।
चडे मीर खंधार बहतीर नाजं ॥
चडे बाहदर^{१५} दैतरूपी दिवांना^{१६} ।
चडे खिजमती हूमती^{१७} खेल खाना ॥१८॥

चडे कुदरती हुकमती असलि-जद्दा^{१८} ।
चडे दौलती नेखवा हुकम-बंदा ॥
चडे उजबकी रौद्र रूमी फिरंगी ।
चडे मुगळ पठाण^{१९} सईद^{२०} संगी ॥१९॥

चडे जांम जंगाह बल्लोच जत्तं ।
चडै वंस छत्तीस है राजपूतं^{२१} ॥
चडे उमरा^{२२} बहतरी सत्तरि^{२३} खानं ।
जिकै पाकडै डोलती^{२४} अस्समानं ॥२०॥

चडे खान सुरताण सेनस प्रमाणं^{२५} ।
चडे बहुत^{२६} हिंदू^{२७} अनै मुलळमाणं^{२८} ॥

१ आ. चडे । २ अ.इ. चडे । ३ अ. अलेक । ४ अ. रहमाण । ५ इ. तकस ।
६ इ. लुघा । ७ इ. सिघाणं । ८ अ.इ. दूण । ९ अ. घातीआ । १० अ. पंच-हजा-
रीयां । इ. पांच हजारीयां । ११ इ. मल । १२ अ.इ. पाइक । १३ अ. बगसी ।
१४ अ.इ. कनडा । १५ इ. बाहादर । १६ इ. दीवानां । १७ अ. दुमती । १८ अ.
असली जादा । १९ इ. पठाण । २० अ. सईद । इ. सइद । २१ इ. राजपुतं ।
२२ आ.इ. उमर । २३ इ. सत्तरि-खान । २४ इ. डोलती । २५ इ. सप्रमाणं । २६
इ. बोहत । २७ अ.इ. हींदू । २८ अ. मुसमानं । इ. मुसलमानं ।

चडे पूठि सुंडाहळां^१ पीलवाणं^२ ।
 अडे चींघ^३ नेजा लगै अस्समांणं ॥२१॥
 चडे सेन चतुरंग गै मह कादी ।
 चडे रांम रक्केव दे साहिजादी ॥
 सुरतांण खुरम्म चडियो^४ सत्रांणं ।
 सहन्नाय^५ नौबति^६ घुरियो^७ साईदांणा ॥२२॥
 गरज्जै दमामा^८ गजं^९ थाट गुडिया^{१०} ।
 रिणं^{११} तूर^{१२} मै भेर नीसांण रुडिया^{१३} ॥
 असंमांन^{१४} सू^{१५} सीस लागा अभंगां^{१६} ।
 हुऐ पक्खरां रोण^{१७} हाहूलि तुरंगां^{१८} ॥२३॥
 अगै^{१९} है-दळां मैगळां थाट आयी ।
 छिलै^{२०} फरहरां चींघ^{२१} ब्रह्मंड^{२२} छायी ॥
 कटक्कां - तणा ऊपडै धूस काळा ।
 मिळै भाद्रवै जाण^{२३} किरि मेघमाळा ॥२४॥
 भडां धूंधली^{२४} फोज भालां भळक्कै ।
 विचै वादळां जाण वीजां वळक्कै ॥
 जटाजूट किया^{२५} आगळी गै अनेरं ।
 पवै अठ-कुल^{२६} जाण परवत्त मेरं ॥२५॥
 वळी मैगळां - फोज दूजी वखाणै^{२७} ।
 जटाजूट गौरंभ गज - खंभ जाणै^{२८} ॥

भीमरो हरीळमें होणों

'दूजां' ऊबरां लोह लागे दुखाली ।
 कियो^{२९} आगळी 'भीम' पाहाडकाली^{३०} ॥२६॥

१ अ. सुंडहलां । इ. सुडाहला । २ इ. पीलवाणं । ३ अ.इ. चींघ । ४ अ.इ. चडीयो । ५ अ. सहनाइ । इ. सहनाई । ६ इ. नौबत । ७ आ.इ. घुरीया । ८ इ. दमामा । ९ आ.इ. गज । १० आ.इ. गुडीया । ११ अ.इ. रिण । १२ आ. तूर । १३ आ.इ. रुडीया । १४ अ.इ. असमांन । १५ आ.इ. सुं । १६ आ.इ. अभंगा । १७ इ. रोळि । १८ आ.इ. तुरंगा । १९ अ.इ. अगै । २० आ.इ. छिले । २१ इ. चींघ । २२ अ.इ. ब्रह्मंड । २३ इ. जाणि । २४ आ.इ. धूंधली । २५ अ.इ. कीया । २६ इ. अठकुल । २७ आ. वखाणे । २८ आ.इ. जाणे । २९ आ.इ. कीयी । ३० अ.इ. पहाडकाली ।

विटेवा^१ बधे दाखियी^२ वीर-रस्सं ।
 'अरस्सी' हरी कूत^३ तोलै अरस्सं ॥
 ओपै फौज माही अमर सिघ - तन्नं ।
 किरै^४ जाण लंका दळ कूभ - क्रन्न^५ ॥२७॥

तवै 'भीम' वांका^६ वचन्नं तियारं ।
 खुमाणै आदू जुद्धसूं खूंदकारं^७ ॥
 दुवै 'भाण' रा^८ भीच आगै दुभलं ।
 'मनी'^९ गोकळाणंद आखाड मल्लं ॥२८॥

वर-व्वीर खुमाण^{१०} वीराघ - वीरं ।
 कळी - मूळ सादूळ बैवै कंठीरं ॥
 भली भीच^{११} कल्याण - मल्ली भुजाळी ।
 'मानावत' वेढीमणी मच्छराळी ॥२९॥

हुओ^{१२} हेक-मोनू^{१३} महा-जुद्ध^{१४} हांम ।
 गळ-माळ तुळछी अनै सालिग्रामं^{१५} ॥
 सहू भीमरा^{१६} भीच आखाड-सिध्दं ।
 मरण प्रव्व संपेख मंगळीक किद्धं^{१७} ॥३०॥

तुरां तोरवै^{१८} मेलवा लोह ताती ।
 मरेवातणी होडरी कोड माती ॥
 वरस्सोह वध्धावळ आंक आडो ।
 लखै^{१९} घाट जानी हुओ 'भीम' लाडी ॥३१॥

कियां^{२०} जाग^{२१} जोडां खडै पंज कावै ।
 अडा-भीड आकास माथो^{२२} अडावै ॥
 हुवै हैमरां हूह सम्मूळ हल्लै^{२३} ।
 चली फौज गै-जूह पाहाड^{२४} चल्लै^{२५} ॥३२॥

१ अ. विटेवा । २ आ. इ. दाखियी । ३ अ. इ. कूत । ४ आ. इ. किरै । ५ अ. कुमक्रन्नं । इ. कुंभ-क्रन्नं । ६ अ. इ. वंका । ७ अ. इ. पूदकार । ८ इ. भाणरा । ९ अ. मानी । १० अ. इ. पुमाणे । ११ अ. नीच । १२ इ. हुओ । १३ इ. हेक-मनू । १४ इ. मही-जुघ । १५ आ. इ. सालिग्रामं । १६ इ. भीचरा भीच । १७ अ. इ. कीव । १८ अ. आ. तोलवै । १९ अ. इ. लष । २० आ. इ. कीयां । २१ अ. वै-जाग । २२ इ. पाथो । २३ अ. इ. हले । २४ अ. इ. पहाड । २५ इ. चले ।

चीरासी^१ घमक्कै गजां-पूठि^२ चींधां ।
 गिगन्नां-पती ढांकियी^३ पंथि ग्रीधां ॥
 असंख्या खुरै हैमरां खेह उड्डी ।
 गजां चींध जाणै^४ गिरां-सोस गुड्डी ॥३३॥

घसस्सै घणूं थाट घासांरु^५ घट्टा ।
 फुणां-फाट^६ अहिराउ^७ दरियाव^८ फट्टा ॥
 दिलीवै सुरत्ताण उट्टाई^९ दुदं ।
 निहट्टां^{१०} किरै^{११} रांमणां^{१२} रांमचंदं ॥३४॥

घरत्तीतणं खेध घर - वेध धारी ।
 बहस्सै उभै साह जुध वळाकारी ॥
 बिन्है साहिजादा लियै^{१३} लोह वत्थां ।
 कुरां-पांडवां^{१४} जेम भारत्य कत्थां ॥३५॥

खुरम्मं^{१५} सुरत्ताण खव्वर पढाई ।
 लडी वेग मैदान आपां लडाई ॥
 इसी^{१६} ऊफणै^{१७} साहिजादी अच्छायी ।
 असमानं हूता^{१८} असमान आयी ॥३६॥

गाहा

आयी असमानां ऊतरियी^{१९} ।

घुरै दमांम क घणहर घुरियी^{२०} ॥

घारण घूअ-घडै^{२१} मन धरियी^{२२} ।

सहजादी^{२३} विमुह न संचरियी^{२४} ॥३७॥

वसुंह तुरां खुरताळे वाजी ।

आगळ मांडी आतस बाजी ॥

१ इ. चोरासी । २ आ. पूठ । ३ अ. ढंकीयी । ४ इ. जाणै । ५ इ. घांसरु ।
 ६ अ. फुणा-फाट । ७ इ. फूणां-फाट । ८ आ. अहिराव । ९ अ. इ. दरियाव । १० अ.
 उठाई । ११ अ. उठाय । १२ अ. निहटा । १३ अ. निहटां । १४ अ. किरै । १५ अ. किरि । १६ अ.
 रांमणा । १७ अ. लीयै । १८ अ. इ. कुरां-पांडवा । १९ इ. पुरमं । २० अ. इसी ।
 २१ अ. ऊफणै । २२ अ. असमानं हूता । २३ अ. इ. उत्तरीयी । २४ आ. इ. घुरीयी ।
 २५ इ. घूअ घडै । २६ अ. इ. धरीयी । २७ इ. साहिजादी । २८ आ. इ. संचरीयी ।

वांसै^१ तेग^२ ज फौज^३ विराजी^४ ।
मुहि-अड^५ भीम हरीळां माभी^६ ॥२॥

वड्डा - वड्डा गोळा वज्जर ।
धूआ-धार^७ उठंदा धोमर ॥
आरब्बी असमान अवाहर ।
गडडै नाळि अणगाळिक^८ अंबर ॥३॥

'गज्जणवै' पाखरिया^९ गज-दळ ।
कससै^{१०} मेघक काळी कांठल^{११} ॥
उतराधा^{१२} सांमळ^{१३} के ऊजळ ।
वोम क चडे चडाऊ वड्डळ ॥४॥

दूहा

खुरम न भागी^{१४} पुरब^{१५} दिस, ऊब क आसाढांह^{१६} ।
सालुळीयो^{१७} चडि सांमहौ, जिम घणहर सिहरांह ॥१॥

खुरम समंदी मच्छ जिम, लहरी लक्ख दळांह ।
चडियी^{१८} पांणी सांमुहौ^{१९}, सुरताणी फौजांह ॥२॥

पुरब^{२०} पराक्रम पूरियो^{२१}, सिर लग्गै असमान ।
गिरे भंगर^{२२} भागे न गी^{२३}, चडि आयी मैदान ॥३॥

सुरताणी घड सांमुहौ^{२४}, सहिजादौ^{२५} सुरताण ।
आवि खडी वी^{२६} चापडै, तब दीठा नीसाण ॥४॥

१ अ. वासे । २ अ. वास । ३ अ. तेग । ४ अ. इ. फौ । ५ अ. इ. वीराजी । ६ अ. इ. मुहीअड । ७ अ. इ. माजी । ८ अ. इ. धुवा-धार । ९ अ. इ. आणगाळिक । १० अ. इ. पाखरीया । ११ अ. इ. कससे । १२ अ. इ. कंठलि । १३ अ. इ. उतराधा । १४ अ. इ. सांमे । १५ अ. भागी । १६ अ. पूर्व । १७ अ. आसाढांह । १८ अ. सालुलीयो । १९ अ. इ. साललीयो । २० अ. इ. चडीयो । २१ अ. सामहै । २२ अ. पूब । २३ अ. पूरियो । २४ अ. इ. पुरियो । २५ अ. भंगर । २६ अ. गो । २७ अ. सांमहौ । २८ अ. इ. सहिजादौ । २९ अ. इ. वो ।

गाहा

साहण^१ संख न की^२ सूंडाळ^३ ।
 नेजे संख न की^४ नेजाळ^५ ॥
 खुरम प्रगट्टी जडण जडाळे ।
 आग न दब्बी रहै पराळे^६ ॥१॥

आयी^७ खुरम विलागै^८ अंबरि^९ ।
 पूरै^{१०} पारंभ है गै पक्खरि ॥
 ऊपाडेह छरा आंधतरि ।
 जाणं सींह विरुत्ती छप्परि ॥२॥

गै गिरवर सरजीत गुडंदा ।
 गोडी-रव क करै गडडंदा^{११} ॥
 सद्दे मेघ क पंच-सवदा^{१२} ।
 भैर दमांम क भाहर सदा ॥३॥

एहो^{१३} खुरम कियो^{१४} आडंबर^{१५} ।
 गिरि-कुळ आठ कनव कुळ-मिणघर ।
 नवकुळ^{१६} नाखत्र^{१७} माळक निडुर ।
 बारह मेघ क सातई^{१८} सायर ॥४॥

घरियै^{१९} आभ लगे धाराळ ।
 भीरी भीम लियै^{२०} भुज्जाळ ॥
 दिल्ली फौजां मगग निहाळ ।
 खुरम^{२१} खडो मैदान विचाळ ॥५॥

१ अ. साहण । २ अ. की । ३ अ. इ. सुडाले । ४ अ. को । ५ अ. नोजाले ।
 ६ अ. पराले । ७ अ. आयी । ८ अ. विलागे । ९ अ. विलगै । १० अ. अंबर । ११
 अ. पूरै । १२ अ. गडडंदा । १३ अ. पंच-सवदा । १४ अ. एती । १५ अ. आ. इ. कीयी ।
 १६ अ. अडंबर । १७ अ. नवकुलै । १८ अ. नापेत्र । १९ अ. सातई । २० अ. व.
 घरीयै । २१ अ. आ. इ. लीयै । २२ अ. पुरम ।

साहजादारी महाराजा गजसौंघन विरदाणी

घुरे दमांम पक्खरां^१ घरहरि ।
फौज^२ गजां नेजां घज फरहरि ॥
आयी खुरम खडे^३ तो^४ ऊपरि ।
'गाजीसाह' ऊठि गज केसरि ॥६॥

जपे साह 'पररेज' जबावं ।
बोलें महवतखान नबावं ॥
सिलह करी अब चडो सतावं ।
तो दळ - थंभण तणी कितावं ॥७॥

वंभ त्रिकाळ - दरस बोलावें ।
जनम - जोग आगम जोवावें ॥
कहियो^५ पैज निवाव कहावें ।
राजा जेत दमांम रुडावें ॥८॥

पेख जनम - पुत्ती^६ परपूरण^७ ।
जनम-जोग ग्रह - वेळा जांमण ॥
मुणें जवाव नवाव निभै-मण ।
दियो दळां आडो^८ दळ-थंभण ॥९॥

'गजण'^९ वहण माभी गळ जोडै ।
राउ^{१०} राठीड तिलक राठीडै ॥
'माल'^{११} हरी मुख मूछ मरोडै ।
उठियो^{१२} सींह क आळस मोडै ॥१०॥

महाराजा गजसौंघ

छंद पदुडी^{१३}

ऊठियो^{१४} 'गजण' वरजागि आगि ।
जुडिवा जडागि गयणागि लागि ॥

१ अ.इ. परां । २ इ. फौज । ३ इ. चडे । ४ अ. तो । ५ अ. कहीयो । ६ इ. जनम-पुत्री । ७ अ. परपूर्ण । ८ अ. पर पुर्ण । ८ अ. आडि । ९ इ. गंजण । १० अ. राऊ । ११ अ. "मल" हरी । १२ अ. मलहरी । १२ अ.इ. उठीयो । १३ इ. पधरी । १४ अ.इ. उठीयो ।

नीमभे भुज्ज नव सहस नाद ।
सादूळ सुणे किरि^१ मेघ - साद ॥१॥

वीरत्ति विदेवा विळकुळेय ।
मुख राग मूँछ भ्रूँहां मिळेय ॥
चख लाल कीध मुख कीध चोळ ।
कळकळ तेज विकसै कपोळ ॥२॥

त्रिस्सळी तांण निल्लाट तांम^२ ।
कमधज्ज करण संग्राम कांम^३ ॥
ब्रह्मंड^४ लगै भुजडंड^५ वधिध ।
महमहण मथण किरि^६ महोदधिध ॥३॥

सपेख खुरम सुरतांण साथ ।
नरसिघ रूप नवकोट नाथ ॥
'सूरजमल' संभ्रम तै सरीख ।
वधियो^७ किरि वांमण^८ दियण वीख ॥४॥

मछरियो^९ ाउ^{१०} मारु^{११} मसंद ।
रांमण सीस जिम^{१२} रांमचंद ॥
गरजियो^{१३} विढण दूजी^{१४} 'गंगेव' ।
मारिवा त्रिपुर^{१५} किरि महादेव ॥५॥

ऊससै तरसि पौरस्स ईम^{१६} ।
भारत्थ करण किरि पत्थ भीम ॥
चौरासी पट्टण करण तल्ल ।
मछरियो^{१७} जांण धूंधली - मत्तल^{१८} ॥६॥

राठौड राउ^{१९} असमान खख ।
सींचियो^{२०} धित किरि^{२१} सुरांगुख ॥

१ अ. कि । २ अ.इ. ताम । ३ इ. काम । ४ अ. पहाड । ५ इ. वृह । ६
भुज-डंड । ६ अ. किर । ७ अ.इ. वधियो । ८ अ.इ. वांमण । ९ अ.इ. मछरीय
१० अ. राऊ । ११ अ. मारु । १२ अ. जाणो । १३ अ.इ. गरजियो । १४ अ.इ. मरजीय
१५ अ.इ. दूजी । १६ अ.इ. त्रिपुर । १७ अ.इ. इम । १८ अ.इ. मछरीयो । १९ अ.
घुधलीमल । २० अ. राव । २१ अ. सींचीयो । २२ अ. किर ।

चडि कोप ओप धूधडै^१ चीत ।
ऊगा वदन्न^२ वारे^३ अदीत^४ ॥७॥

‘सूरउत’ सुकर करिमाळ सज्जिभ ।
मुळकियौ^५ मछरि घण रोस मज्जिभ ॥
कमधज्ज कहै कर धूणि तेग ।
वरियांम^६ विडगां चडौ वेग ॥८॥

मुख बंध खैग^७ छौडै मरदं ।
सांहणी सांहणी हुऐ^८ सदं ॥
पाकडै जोध वाथां प्रचंड ।
हुइ लेह देह छूवै^९ हुसंड ॥९॥

डाचै लगाण खैगां^{१०} दियंत ।
असि जीण पटोटां उकढंत^{११} ॥
पै जुअळ लग्ग पक्खर रुळैय^{१२} ।
गजगाह तुरां बाधा गळैय ॥१०॥

परचंड जूह पव्वै प्रमाण ।
पुत्तार धरै गज - वाग पाण ॥
सींगळी गज्ज गरजंत साद ।
नभ जाण दवादस मेघनाद ॥११॥

सेनारी धरणण

चौरासी पक्खर चमर - बंध ।
गडढंत मदोमत^{१३} मंद - गंध ॥
ढाळां ढकि पताख धज्ज ।
गेरु सिंदूर^{१४} पाहाड गज्ज ॥१२॥

धूधरी^{१५} रोल घंटा सबद्द ।
मोखत्त पटे^{१६} तळ जोड मद्द ॥

१ अ. धूधडै । २ इ. वदन्न । ३ अ. वारे । ४ इ. आदीत । ५ आ. इ. मुळकीयौ ।
६ आ. इ. वरीयांम । ७ अ. पैग । ८ इ. हुऐ । ९ इ. छूटै । १० अ. पैगा ।
११ अ. इ. उकढंति । १२ अ. रुलेय । १३ अ. इ. सदोमत । १४ अ. सिंदूर । इ. सिंदूर ।
१५ इ. धूधरां । १६ इ. पटे ।

गुडिया^१ गयंद विहुव^२ गमेय ।
पाहाड^३ जाण हालै पगेय ॥१३॥

मदगळत जूह मैंगळ मसंत^४ ।
सिणगार खडा^५ किय^६ सदोमत्ता^७ ॥
वरियांम^८ विढोवा^९ वड वडंत^{१०} ।
जमदूत जोघ सिलहां जडत ॥१४॥

पोरस्स नकुळ पंडव प्रमाणि ।
तण^{११} वधे जूसण कसण तांणि ॥
ओपंत राग हाथां अनोप ।
तुडतांण^{१२} सीस रोपत^{१३} टोप ॥१५॥

ओपिया सिलह पहरी अपार^{१४} ।
किरि जाण^{१५} सिध्द मिलिय^{१६} केदार^{१७} ॥
जोघार जडी वपि^{१८} जीण साल ।
पेलियै^{१९} जाण परवत्ता माल ॥१६॥

मारु सुभट्ट गज थट्ट मोड^{२०} ।
जमदाढ तेग डावंत जोड ॥
बाहू^{२१} डंड ढालां^{२२} अलीवंध ।
कर ग्रहे कूत^{२३} घूणै^{२४} कमंध ॥१७॥

आवध्व डावि छतीस अंग ।
नीमजे भुज्ज अडिया निहंग ॥
गज केसर^{२५} जांमळि गज विभाड ।
पंचरूप जांमळि जाणे^{२६} पहाड ॥१८॥

१ अ.इ. गुडीया । २ इ. चिहूवै । ३ अ.इ. पहाड । ४ इ. मसत । ५ इ. पडो ।
६ अ.इ. कीय । ७ अ. सदोमत । ८ इ. वरीयाम । ९ इ. विढेवा । १० इ. वडंत ।
११ अ.इ. तांण । १२ इ. तुडितांण । १३ अ. रोपत । १४ अ. अयार । १५ अ. जांणि ।
१६ अ. मिलै । इ. मिले । १७ अ. केदार । १८ अ. जडीचाप । १९ इ. पेलियै ।
२० इ. मोड । २१ अ.इ. बाहु । २२ अ. ठालां । २३ अ.इ. कूत । २४ अ. घुरो ।
इ. घुरौ । २५ इ. केसरि । २६ अ.इ. जाणी ।

पडगरियो^१ सोहड^२ खेड-पत्त^३ ।
 निस मयंक^४ जाण^५ माला नखत्त^६ ॥
 घाघरट^७ धूस घण^८ थाट घेर ।
 मिलिया^९ सुभट्ट मेखला मेर ॥१६॥

महाराजा गजसींधरा घोडारी वरणण

कमधज्ज कहै केवियां^{१०} काल ।
 सांहणी आण^{११} साहण उजाल ॥
 सर वेग जंग^{१२} सर वेग चंग ।
 तेगागल चंचल 'जे'^{१३} तुरंग ॥२०॥

जोइवा^{१४} जगत आवंत जात ।
 गिर - वर विहग उत्तंग गात ॥
 दीपकक चक्ख सोभा दिवस्सि ।
 असराळ तेज कोडीक^{१५} अस्सि ॥२१॥

चीरंग दंत गयंदां चडंत ।
 पाखाण भीत आठू^{१६} पडंत ॥
 धूनी विसाल चीडी घडेय ।
 आणां^{१७} गुण घातै आपडेय ॥२२॥

दहलै पयंग^{१८} पायलां^{१९} दीड^{२०} ।
 परसाद थंभ पै जाण पौड ॥
 कांगारी^{२१} कन सिखराळ कंध^{२२} ।
 बळ उतळ घाट घट गरट^{२३} बंध ॥२३॥

तेजी वितंड ऊडंड^{२४} तेव ।
 विख्यात वाग अख्यात वेव ॥

१ अ. पडगरीयो । २ अ. सोहडा । ३ अ. इ. खेड पति । ४ अ. मयक । ५ अ. जां । इ. जाणि । ६ अ. इ. नखति । ७ अ. इ. घाघरट । ८ इ. ण । ९ अ. इ. मिलीया । १० अ. केवीयां । ११ अ. इ. आण । १२ अ. चंग । १३ अ. लजे । इ. जे । १४ इ. जोइव । १५ इ. कोडक । १६ अ. आठू । इ. आठुं । १७ अ. ऊणां । इ. डोणां । १८ इ. पतंग । १९ अ. इ. पागलां । २० अ. दीड । २१ अ. इ. कांगारि । २२ इ. धंध । २३ अ. घट । २४ अ. इ. उडंड ।

परवत^१ पंख पक्खर प्रचंड ।
 एराकी^२ पिठ^३ खुरसांण खंड ॥२४॥
 थोडी^४ पडछि जाभौ पठाढ^५ ।
 देहादळ^६ मैंगळ^७ गाढ^८ दाढ^९ ॥
 निकुळीण त्रिया जिम पैज^{१०} रति ।
 फरहरै कपी^{११} जेही फुरति^{१२} ॥२५॥
 अन्नूप रूप चित्रांम^{१३} अंग ।
 वेगागळ थळ^{१४} नाचै विडंग ॥
 अदभूत पराक्रम^{१५} गुण अछेह ।
 ऊंचास^{१६} कना सपतास अहे^{१७} ॥२६॥
 पाइगाह^{१८} मंडण^{१९} चढण^{२०} पाट ।
 सांहणी छोड^{२१} सिंगार थाट ॥
 लाखीकतणै मुंह^{२२} दीध लोह ।
 सोन्न^{२३} जोत^{२४} नग जडत सोह ॥२७॥
 पल्लांण परट्टु^{२५} तांण तंग ।
 साकत्ति हेम हीरे सुचंग ॥
 वरहास वणी पक्खर विसाळ ।
 गजगाह स-डंवर चमर माळ ॥२८॥
 सिख नक्ख लगै पंडव^{२६} सिंगार^{२७} ।
 आंणियो^{२८} लूण^{२९} ऊपरि^{३०} उतार^{३१} ॥

महाराजा गजसौंदरी वरणण

कमधज्ज राय^{३२} मंजन करेय ।
 चरणोदक^{३३} चत्रभुज तणी लेय ॥२९॥

१ आ. परवत । २ अ. औराकी । इ. औराकि । ३ इ. पुठि । ४ अ. इ. थोडी ।
 ५ अ. पटाटि । ६ इहेहादल । ७ अ. मेगल । इ. मैंगल । ८ अ. गाट । ९ अ.
 दाट । १० अ. पै । इ. परै । ११ अ. इ. कपि । १२ इ. फुरति । १३ अ. इ. चित्राम ।
 १४ अ. इ. घाल । १५ अ. पराक्रम । १६ इ. उचास । १७ अ. ऐह । इ. एह । १८
 इ. पाइगहि । १९ आ. मंडण । २० अ. चटण । इ. चढण । २१ अ. इ. छोडि । २२
 अ. इ. मुंह । २३ अ. ओत्तन । इ. सोत्तन । २४ अ. इ. जोट । २५ अ. परठ । इ. परठे ।
 २६ अ. पंडवु । २७ अ. इ. सिंगार । २८ अ. इ. आंणीयो । २९ अ. लुण । इ. लुण ।
 ३० अ. इ. उपरि । ३१ अ. इ. उतारि । ३२ अ. इ. राइ । ३३ अ. इ. चरणोदप ।

पैरिया-स^१ तांम^२ पांचै^३ वसत्र^४ ।
 बंधै^५ वि-पाघ सिरि बाह चत्र ॥
 राठौड बगत्तर जडे राग ।
 खेडचै^६ वाहण खळां खाग ॥३०॥

भालरी टोप सिर^७ भळहळय ।
 किरि भाण^८ उदे^९ गिरि कळकळय ॥
 बळवंत^{१०} जडे हाथाळां^{११} बेय ।
 पैहरिया^{१२} सार मोजा^{१३} पगेय ॥३१॥

सोहियौ^{१४} सिलह पहरी समाथ^{१५} ।
 अबधूत राय^{१६} गोरक्ख-नाथ ॥
 जगजेठी जोधपुरे^{१७} जुआण ।
 जमदाढ जडी कडि जम्मराण ॥३२॥

राठौड^{१८} रचेवा^{१९} रणंताळ^{२०} ।
 वामंग डहै^{२१} बीजला भाळ ॥
 बांधे^{२२} कंदील^{२३} संधे^{२४} विबाण ।
 कोसीस^{२५} भुजे^{२६} दीना^{२७} कबाण ॥३३॥

दीपियौ^{२८} 'गजण' दूसरी 'माल' ।
 घूहंडी^{२९} राव^{३०} भुजधरी ढाल^{३१} ॥
 खेडपति धूणियौ^{३२} कूत खीज ।
 वळकी^{३३} किरिकाळै सिहर^{३४} बीज ॥३४॥

'सूराउत' डाबि छतीस^{३५} सार ।
 मलपियौ^{३६} मयंद गति यंद^{३७} मार ॥

१ अ. परीया । इ. पैरीया । २ अ. इ. ताम । ३ इ. पांचु । ४ अ. वसत् । ५
 अ. इ. बंधे । ६ अ. पेडेचै । ७ अ. सिरि । ८ अ. भाणु । ९ अ. दै । इ. उदै ।
 १० अ. इ. बलिवंत । ११ अ. हाथला । १२ अ. इ. पहरीया । १३ इ. मोजां ।
 १४ अ. सोहीयो । इ. सोहीयो । १५ अ. समाथं । १६ अ. इ. राइ । १७ अ. इ.
 जोधपुरे । १८ इ. राठौडि । १९ इ. रचेवा । २० अ. इ. रिणताल । २१ आ. वहै ।
 २२ अ. इ. बांधे । २३ अ. कदील । २४ अ. संधे । इ. सांधे । २५ अ. इ. कासीस
 २६ अ. इ. भुजे । २७ अ. इ. दीनी । २८ अ. इ. दीपीयो । २९ इ. घूहंडे । ३० अ.
 राउ । ३१ अ. टाल । ३२ अ. इ. धूणीयो । ३३ इ. बलिकी । ३४ इ. सैहर ।
 ३५ इ. छत्रीस । ३६ अ. इ. मलपीयो । ३७ इ. गयंद ।

रेवंत^१ वंदि राठौड राव^२ ।
चड्डियौ^३ परठि पागडै पाव^४ ॥३५॥

सैनारी वरणण

रठौड^५ सह^६ चड्डिया^७ तुरेय ।
कुरु^८ पडक रत्थां आरुहेय ॥
रुडिया^९ दमांम रिणतूर^{१०} सह ।
नाफेर^{११} भेर नीसांण^{१२} नह ॥३६॥

चिहुं^{१३} दिस्सि^{१४} नगारे^{१५} पडे चोट ।
कोअण कटक्क ऊपडै^{१६} कोट ॥
सहिजादो^{१७} चड्डियो^{१८} सुरत्तांण ।
चड्डिया^{१९} सह^{२०} हिदू^{२१} मुसलमाण^{२२} ॥३७॥

महवतखांन चड्डियो^{२३} नबाव ।
साह छलि सिलह^{२४} बंधै^{२५} सताव^{२६} ॥
आंबेर घणी जैसिघ^{२७} देय ।
चड्डियो^{२८} फवज्ज चतुरंग लेय ॥३८॥

सेखावत राजावत सुभट्ट ।
ताबीन चडे कूरमां थट्ट ॥
सूरजसिघ खेलण खत्र-दाव^{२९} ।
राठौड चडे जंगली-राव^{३०} ॥३९॥

वरसिघ देव राजा वडाळ ।
वूंदेल चडै^{३१} चम्मर^{३२} बंवाळ ॥

१ अ.इ. रेवंत । २ अ. राउ । ३ अ.इ. चड्यो । ४ अ.इ. पाउ । ५ इ. राठौड ।
६ अ.इ. सह । ७ अ.इ. चड्यो । ८ इ. कुरु । ९ अ. रुड्या । इ. रुड्यो । १० इ.
रिणतुर । ११ अ.इ. नफेर । १२ इ. विसांण । १३ अ.इ. चिहु । १४ इ. दिस । १५
अ.इ. नगारे । १६ अ.इ. उपडे । १७ अ.इ. साहिजादो । १८ अ.इ. चड्यो । १९
अ.इ. चड्यो । २० अ. सह । इ. सहि । २१ अ. हीदू । इ. हीडु । २२ अ.
मुसमाण । इ. मुसलमान । २३ अ.इ. चड्यो । २४ अ.इ. सिल । २५ अ.इ. बंधे ।
२६ अ. साताव । २७ अ. जेसीघ । इ. जेसिघ । २८ अ.इ. चड्यो । २९ अ.इ.
पत्र दाउ । ३० अ.इ. राउ । ३१ अ.इ. चडे । ३२ इ. चम्मर ।

सारंग देव राजा सकाज ।
वहवाण चडे पक्खर^१ वाज ॥४०॥

साही अमीरांरी नामावळी

बहलोल खांन^२ चडियो^३ पठाण^४ ।
वरियांम^५ जोघ असली वखाण ॥
आलम्मखांन^६ चडियो^७ अजीत ।
खुरसाण हिदुवाणह^८ वदीत ॥४१॥

चडिया^९ वलोच अब्भूल बाण ।
चड्डे सयह^{१०} पढ्ढे^{११} कुराण ॥
चडिया^{१२} पठाण चडिया^{१३} मुगल्ल ।
ताणै^{१४} कवाण जमराण तुल्ल ॥४२॥

कन्नडा चडे^{१५} हबसी कट्ठक ।
खंधारी चडिया^{१६} उजब्बक्क ॥
रांमीय फिरंगी^{१७} चडे^{१८} रौद्र ।
लख चडे^{१९} बारहां^{२०} हुई^{२१} लौद्र ॥४३॥

काबिली^{२२} चडिया^{२३} कट्ठक कोम ।
दांणवां^{२४} ऊमरां^{२५} अवलि^{२६} दोम ॥
बंदूकदार चडिया^{२७} खंधार ।
तरकस्स बंध चडिया^{२८} अपार ॥४४॥

बह चडे^{२९} बहत्तरि^{३०} ऊमरांह^{३१} ।
चडि^{३२} सत्तरिखांन अजांनबाह^{३३} ॥

१ अ. षयरे । इ. पषरे । २ अ. वहलोलखांन । ३ अ. इ. चडीयो । ४ इ. पवाण ।
५ अ. इ. वरीयाम । ६ इ. आलम । ७ इ. चडीयो । ८ अ. हीदुवाणह । इ. हिदूवाणह ।
९ अ. चषीया । इ. चडीया । १० अ. सयइ । ११ अ. पटे । आ. दपटे । १२ अ. इ. चडीया ।
१३ अ. इ. चडीया । १४ इ. ताणे । १५ इ. चडे । १६ अ. इ. चडीया । १७ अ.
फिरीरंगी । १८ अ. इ. चडे । १९ अ. इ. चडे । २० अ. इ. बारह । २१ अ. इ. हुई ।
२२ इ. काबली । २३ अ. इ. चडीया । २४ अ. इ. दाणव । २५ अ. इ. उमरा । २६
इ. अविल । २७ अ. इ. चडीया । २८ अ. इ. चडीया । २९ अ. इ. चडे । ३० इ.
बहत्तर । ३१ अ. इ. उमराह । ३२ अ. इ. चडि । ३३ अ. पानबाह ।

पट हेथे^१ चढिया^२ पीलबाण^३ ।
परबते जाण पडिया^४ पखाण ॥४५॥

सुरताणखांन चढिया^५ सधीर ।
मीयां^६ मिलवक^७ मीरजा मीर^८ ॥
नरपत्ति चडे असपत्ति^९ राव^{१०} ।
गजपत्ति चडे हुय^{११} भेर घाव^{१२} ॥४६॥

अधपत्ति^{१३} चढे^{१४} देवमै अस ।
रजपूत चढे^{१५} छत्तीस^{१६} वस ॥
मंडोवर राजा मुहरि-मंड^{१७} ।
डावे^{१८}ली जोगणि^{१९} भुजाडंड^{२०} ॥४७॥

राठोड वधे मेळसी राड^{२१} ।
मुहरावत सिगळ^{२२} मारवाड^{२३} ॥
गयणाग लागि^{२४} ऊससै^{२५} गात ।
हूओ^{२६} हरीळ^{२७} हिंदुवां^{२८} छात ॥४८॥

गजसिघ वाज^{२९} पाखर गजंद ।
सबळै जुध ढोया^{३०} नर समंद ॥
गाजियो^{३१} गयण गोळा निहाय^{३२} ।
रण^{३३} जंग रचे^{३४} राठोड राय^{३५} ॥४९॥

नायकं^{३६} निळै वांधियै^{३७} नेत ।
खूंदालम^{३८} निहटा विनै^{३९} खेत ॥

१ इ. पट हेथे । २ अ.इ. चढीया । ३ इ. पिलवाण । ४ आ. चढीया । ५ अ.इ. चढीया । ६ इ. मियां । ७ अ. मीलक । इ. मिकल । ८ इ. अमीर । ९ अ. असपत्ति । १० अ. इ. राव । ११ अ. हुइ । इ. हुई । १२ अ. घाउ । १३ इ. अधिपति । १४ अ.इ. चडे । १५ अ.इ. चढे । १६ इ. छत्तीस । १७ अ. मुहरिमंडि । इ. मुहरि मंड । १८ आ. डावे । १९ इ. जोगण । २० अ. भुजाडंडि । २१ अ. राडि । इ. राहि । २२ अ.इ. सिगले । २३ अ.इ. मारवाडि । २४ अ. गयणागल । २५ अ.इ. उससे । २६ इ. हूओ । २७ अ. हेरील । इ. हरोल । २८ अ. हींदुवी । इ. हीदुवी । २९ इ. वाजि । ३० अ. ढोया । ३१ अ.इ. गाजियो । ३२ अ.इ. निहाई । ३३ इ. रण । ३४ अ. रचे । ३५ अ. राइ । इ. राई । ३६ अ. नाइक । इ. नाइक । ३७ अ. वांधायै । इ. वंधीयै । ३८ अ.इ. खुंदालम । ३९ इ. विन्है ।

धूजिया अमरं नर धूज^१ नाग ।
वहु^२ संग्राम^३ हुय^३ वडौ-राग ॥५०॥

जुघ प्रिय देवारी वरणण

वैताल वीर मिलिया^४ विहद् ।
सीकौतरि साकणि महा सद् ॥
मिळ^५ समळ ग्रीध आमंख भक्ख ।
जंबक्क रीछ^६ वड्डाक जक्ख ॥५१॥

हेकठा हुआ^७ बलितणै हेत ।
पळहारी वैतर^८ भूत प्रेत^९ ॥
खेचरा भूचरा^{१०} खेत - पाळ ।
कालिका पुत्र भैरव^{११} कंकाल^{१२} ॥५२॥

रहियो^{१३} रवि कौतिग^{१४} तांण^{१५} रत्थ ।
सिव सुरां^{१६} कोडि तेतीस^{१७} सत्थ ॥
अपछर विवाण ऊपरि^{१८} वहंत ।
हुय^{१९} औसर^{२०} नारद हड-हडंत ॥५३॥

डमडमै सकति डम्मरू डाक ।
है-थाट हुब्ब^{२१} हुय^{२२} वीर हाक ॥
गडि-अडै^{२३} भेर दम्मांम गज्ज ।
गयणगज^{२४} बारह घण गरज्ज ॥५४॥

हगमगै^{२५} थाट गहमहै^{२६} हूर ।
डहडहै^{२७} डुंड^{२८} तहन्नहै^{२९} तूर ॥

१ इ. धूजि । २ अ. संग्राम । ३ अ. हुइ । इ. हुई । ४ अ. इ. मिलीया । ५ इ. भिल । ६ इ. रीछ । ७ अ. हुआ । इ. हुवा । ८ इ. वैतर । ९ अ. पेत । १० अ. इ. भूचर । ११ अ. इ. भैर । १२ अ. इ. ककाल । १३ अ. इ. रहीयो । १४ अ. कौतिग । इ. कोतग । १५ इ. तांणि । १६ इ. सुरा । १७ इ. तेतीस । १८ अ. इ. उपरि । १९ अ. हुइ । इ. हुई । २० इ. औसर । २१ अ. व । इ. हुवे । २२ अ. हुइ । इ. हुई । २३ अ. इ. गडीअडे । २४ इ. गयणगक । २५ अ. इ. गहमहे । २६ अ. इ. गहगहे । २७ अ. इ. डहडहे । २८ अ. इ. डूट । २९ अ. इ. तहन्नहे ।

रिणतूर रुडे^१ तुडडे^२ बुरंग^३ ।
नीसाण धुवै^४ घुडडे^५ निहंग ॥५५॥

हथनाळ^६ हवाई^७ हुकळंत^८ ।
गजनाळां^९ गोळा गडिअडंत^{१०} ॥
बळती ब्रजागि उडु^{११} बहंत^{१२} ।
आराबी छूटी^{१३} आवरंत^{१४} ॥५६॥

गोळा बहत्त^{१५} धूजत्त^{१६} गोम ।
धुब्बियी^{१७} गगन^{१८} घडहडे^{१९} धोम ॥
आतस घोर मिलियी^{२०} अंधार ।
रिण सोर जोर हुय^{२१} रौद्रकार ॥५७॥

कुदरत्त विछूटा^{२२} कुहक^{२३}-वांण ।
आकंप^{२४} इळा^{२५} पुड आसमाण ॥
ळयां^{२६} ताड^{२७} विपरीत गत्त^{२८} ।
ओअडे^{२९} गडे^{३०} किरि मेह अत्त^{३१} ॥५८॥

घिखि^{३२} सोर धूवर^{३३} धूवा^{३४}-धार^{३५} ।
आन्नत मिले^{३६} तव अंधकार ॥
रांमायण^{३७} भारथ रूप सुद्ध ।
जोधपुरे माती खुरम जुद्ध ॥५९॥

जुध वरणण

भड वाहै नीमभ भुजा-डंड ।
कैबरां सोक^{३८} गरजै कोमंड^{३९} ॥

१ अ.इ. रुडे । २ अ.इ. तडडे । ३ इ. वूरंग । ४ अ.इ. धुवे । ५ अ.इ. घडडे ।
६ अ. हथनालि । ७ अ.इ. हवाई । ८ अ.इ. हुकलंत । ९ अ.इ. गजनाल । १० अ.
गडीअडे । ११ अ.इ. उडे । १२ इ. बहति । १३ इ. छुटे । १४ अ.इ. आवरत । १५
इ. बहत्त । १६ इ. धुजंत । १७ अ.इ. धुबीयी । १८ अ. गिगन । इ. गिगन । १९
अ.इ. घडहडे । २० अ.इ. मिलीयी । २१ अ. हुइ । इ. हुई । २२ इ. विछूटा । २३
अ.इ. कुहक-वांण । २४ अ.इ. आकंपि । २५ इ. ईला । २६ अ.इ. गोलीयां । २७ इ.
ताडि । २८ अ.इ. गति । २९ अ.इ. ओअडे । ३० अ.इ. गडे । ३१ अ.इ. अति । ३२
इ. घिख । ३३ अ. धूआ-रव । आ. धूवर । ३४ अ. धू । ३५ अ. आधार । इ. वाधार ।
३६ अ.इ. मिले । ३७ अ. रांमाइण । इ. रांमाईण । ३८ इ. सी । ३९ इ. कोमंड ।

उड्डिया^१ तीर उम्भे^२ दळांह^३ ।
 मांकडा जाण किरि मेहळांह ॥६०॥
 असमानं विच्छूटै^४ सर असंख ।
 धूंकारव^५ गाजै^६ गुण धनंख ॥
 सूरज्ज वोम छाया सरेय^७ ।
 किरि जाण काळ छाया करेय^८ ॥६१॥
 कन्ताढ बाण छूटै कवाण^९ ।
 पंजरां महा^{१०} लेजाय^{११} प्राण ॥
 नळयार मार सेलार भंग ।
 खरडकै^{१२} भडां फूटै^{१३} खतंग ॥६२॥
 बंदूक मार बाणां^{१४} पडेय ।
 कळलिया^{१५} थाट चडिया^{१६} कडेय ॥
 नीमजै^{१७} कूत^{१८} भुज काळ नाग ।
 खापां^{१९} उसांठि काढिया^{२०} खाग ॥६३॥
 भूभांरां^{२१} आवध भळहळेय ।
 ब्रह्मंडक^{२२} बीजां वळवळैय^{२३} ॥
 सैफली^{२४} वाजियी^{२५} सामतांह^{२६} ।
 मेलियो^{२७} लोह मुह रावतांह ॥६४॥
 भारत्य हाक वाजी^{२८} भडांह ।
 घैधूवि^{२९} थाट लूवै^{३०} घडांह ॥
 निहसिया^{३१} जोध घाए^{३२} नित्रीठ ।
 रिरण खळै रुक^{३३} वाजियो^{३४} रीठ ॥६५॥

१ अ.इ. उड्डिया । २ अ.इ. उम्भेरे । ३ अ. दलाह । ४ इ. विच्छुटै । ५ अ. धूंकार ।
 ६ अ. वगाजे । इ. वगाजै । ७ अ.इ. सरेअ । ८ इ. करेअ । ९ इ. कवाण । १०
 इ. माहा । ११ अ.इ. लेजाइ । १२ अ. खडकै । १३ अ. फूट । १४ अ. बाणां । इ.
 बाणा । १५ अ.इ. कललीया । १६ अ.इ. चडिया । १७ अ. नीमजे । १८ अ.इ.
 कूत । १९ इ. पापां । २० अ. काटीया । इ. काढीया । २१ अ.इ. भूभांरां । २२
 अ. ब्रह्मंडक । इ. ब्रह्मंडक । २३ इ. चलवलेय । २४ इ. सैफली । २५ अ.इ. वाजियो ।
 २६ इ. सामतांह । २७ अ. मेलियो । २८ अ. बांजी । २९ अ. घैधुवि । इ. घैधुवि ।
 ३० अ. लूवै । इ. लुवै । ३१ अ.इ. निहसीया । ३२ इ. घाये । ३३ इ. रुक । ३४
 अ.इ. वाजियो ।

उड्डियो^१ वूर धारा अंगार ।
 खळखट्ट निहट्टा खूंदकार^२ ॥
 हुब्बिया^३ कटक^४ वाप्परि^५ हीक ।
 भूंभार^६ भट्टकै^७ हुवै भीक ॥६६॥

संधार मार लैकार सेन ।
 मिळ सार धार अंधार मेन ॥
 घड मुंड^८ खंड बे - रुंड^९ धक्क ।
 करमाळ^{१०} वहै किरि काळ चक्क^{११} ॥६७॥

सांमठी^{१२} धाक पड^{१३} सावळांह^{१४} ।
 वळवळ^{१५} धार विजुजळांह^{१६} ॥
 गजवाज गडी-थळ भड गुडंत ।
 निरलंग अंग घड नीजुडंत ॥६८॥

घण फुरणि जोध वाहंत घाव^{१७} ।
 पायाळ डरै^{१८} पडतै निहाव^{१९} ॥
 लडथडै लोह वाहै लडाक ।
 बडडंत हाड भाजै बडाक ॥६९॥

भड खळां^{२०} भडां ऊतरै^{२१} भूंभ ।
 कुंजर^{२२} कड-डंत गूडंत कूंभ ॥
 तेगां तमच्छ^{२३} तूटंति^{२४} तोव^{२५} ।
 भवरक्क हुळां सावळां भोव ॥७०॥

सीसोद अनै कमघजां सत्थ ।
 गळबांह^{२६} गळोवळ गूथ-वत्थ^{२७} ॥

१ अ.इ. उडीयो । २ अ.इ. खूंदकार । ३ अ.इ. हुबीया । ४ अ.इ. कटक । ५ अ. वापरी । इ. वावपरी । ६ अ.इ. भूंभार । ७ अ. भटके । इ. भटकै । ८ अ.इ. मुंड । ९ अ. रुड । इ. रुंड । १० अ.इ. करिमाल । ११ अ. चंक । इ. चंक । १२ अ.इ. सामठी । १३ अ.इ. पडि । १४ अ. सावलाह । १५ अ. वलवधै । १६ अ. विजुजलाह । इ. वीभूजलाह । १७ अ. घाड । १८ इ. डरै । १९ अ.इ. निहाड । २० अ. तनुखलां । २१ अ.इ. उतरै । २२ अ. कूंभर । २३ इ. तिमछ । २४ इ. तुटंति । २५ अ. तीव । २६ इ. गलवाह । २७ इ. गुरवथ ।

मेवाड^१ मंडोवर^२ जुद्ध माचि^३ ।
नटगरां जेम घड धुअ नाचि ॥७१॥

दस सहस राव^४ नव सहस देस^५ ।
निहसिया^६ नेत-बाधै^७ नरेस^८ ॥
भूभारां^९ माथै पडै भाट^{१०} ।
मिलि घाइ मंडोवर^{११} मेदपाट ॥७२॥

मेवाडी मेलै नही मांण ।
खेडेची^{१२} लोहडी^{१३} खुरासाण^{१४} ॥
हम्मीर सळकखा हुवै^{१५} दूठ^{१६} ।
पतसाह^{१७} खडा वै^{१८} बेहु^{१९} पूठ^{२०} ॥७३॥

भीम सीसोदियारी वरणण

परवत्त मेर दक्खे^{२१} प्रमाण ।
रिणखंभ^{२२} हुअ्री^{२३} चीतोड^{२४} रांण ॥
संग्राम निहट्टी निरां सीम^{२५} ।
भूडंड^{२६} उपाडे^{२७} गजां^{२८} भीम ॥७४॥

“अरसी” हर ओपम^{२९} रिण अनीद^{३०} ।
वधियी^{३१} किरि तोरण चडण वीद^{३२} ॥
गज दळां वीच फौजां गसूर ।
सीसोद^{३३} रांण झळहळ^{३४} सूर ॥७५॥

१ इ. मेवाडि । २ इ. मंडोवरि । ३ अ. माछि । ४ अ. राठ ।
५ इ. देस । ६ अ. इ. निहसीया । ७ इ. नेत-बाधै । ८ अ. तरेस । ९ अ. भूभारा ।
१० इ. भटभाट । ११ इ. मांडोवर । १२ इ. खेचेची । १३ अ. लोहडी । इ. लोहडो ।
१४ इ. खुरासाण । १५ इ. हुवै । १६ इ. दुठ । १७ अ. इ. पतिसाह । १८ अ. वै ।
१९ अ. बेहु । इ. वैहू । २० इ. पुठि । २१ अ. इ. दक्खे । २२ इ. रिणखंभ । २३
अ. इ. हुअ्री । २४ अ. चीतोड । इ. चित्तोड । २५ अ. सीस । २६ अ. इ. भूडंड ।
२७ अ. इ. उपाडे । २८ अ. इ. गजा । २९ अ. ओपम । ३० अ. इ. अनीद । ३१
अ. इ. वधियी । ३२ अ. इ. वीद । ३३ अ. सीसोद । ३४ अ. झलहले ।

अमरावत ऊपरि^१ दळ अचाळ ।
 माथै किरि आवू मेघमाळ ॥
 सीसोद^२ सीस सोणी निवेस ।
 मस्तकक जाण गंगा^३ महेस ॥७६॥
 खूमाण जुडंतौ जैत - खंभ^४ ।
 थाटां विच होळी हुआ^५ थंभ ॥
 घडहडे घरा ब्रह्मंड^६ धुवेय^७ ।
 है-थाट 'भीम' माथै हुवेय ॥७७॥

जुघ वरणण

खळहळे^८ रत्त^९ परनाळ^{१०} खाळ ।
 डोळियां^{११} पडै घड जूह डाल^{१२} ॥
 करडकै कंध संधाण^{१३} घट्ट ।
 फरडकै फीफरां^{१४} आळ^{१५} फट्ट ॥७८॥
 भट्टकै भेर फाटे^{१६} भराड ।
 भीकौ^{१७} पडंत आसुरां^{१८} भराड ॥
 मरगडां जूह मुरडंत माड ।
 चूनी^{१९} हुइत्त^{२०} चौसट्टि^{२१} हाड ॥७९॥
 उड्डै कपाळ खग श्रीभडांह^{२२} ।
 दीभंति जाण दोटा दडांह^{२३} ॥
 हम्मलां ढहै^{२४} ढालां हसत्ति^{२५} ।
 ध्रुवकै दांत वाजै धरत्ति^{२६} ॥८०॥
 है तूट^{२७} तुंड^{२८} रुळि रुंड^{२९} मुंड^{३०} ।
 भाजै^{३१} असुंड^{३२} गै हाड-गुंड ॥

१ इ. उपरि । २ अ.इ. सीसीद । ३ अ. गंगम । ४ अ. जैते-पंभ । ५ अ. हूआ ।
 इ. हुओ । ६ अ. ब्रह्मंड । इ. वृमंड । ७ अ. धुवेस । इ. धुवेह । ८ अ. पलहलै ।
 ९ इ. नालरत । १० अ. परिनालं । इ. प्रनाल । ११ अ.इ. डोळीयां । १२ अ.
 जूंडाळ । इ. जुआ-डाल । १३ अ.इ. संधाण । १४ अ.इ. फीफर । १५ अ.इ. अल ।
 १६ अ.इ. फाटे । १७ इ. भीकै । १८ अ.इ. असुरां । १९ अ. चूनी । २० अ. हुइत ।
 इ. हुवंत । २१ इ. चौसट । २२ इ. श्रीभडांह । २३ अ. दडाह । २४ इ. ढहै ।
 २५ इ. हसत्ति । २६ इ. धरंति । २७ इ. तुट । २८ अ. तूड । इ. तूंड । २९ अ. रुड ।
 ३० अ. मूड । ३१ अ. नाजै । ३२ अ. असूड । इ. असूंड ।

वीछडै^१ संघ अनमंघ^२ वण्ण ।
भूँभार^३ दियै^४ तेगां भडण्ण^५ ॥८१॥

वेसूल^६ फूल - धारां विहार ।
भाले पडंत डोले भंभार ॥
संग्राम^७ लोह वाहै सनड्डु^८ ।
विपरीत घाउ^९ ऊखळा^{१०} वड्डु^{११} ॥८२॥

तडछिया^{१२} जांहि गोडिया^{१३} तांण ।
जम-दढां^{१४} टेवउ^{१५} ऊठै^{१६} जुवांण^{१७} ॥
लागे^{१८} भड लोहै^{१९} लोहछाक ।
धूमंति^{२०} जांण पीयै ऐराक^{२१} ॥८३॥

ऊजडै कडा जिरहां अळग ।
खडखडै जोध वाहै^{२२} खडग ॥
खसरक्क^{२३} पटै^{२४} खांडै^{२५} खडाक ।
नीजुडै नरां सिरि रहै नाक ॥८४॥

त्रिज्जडां त्रिजड वाजै^{२६} नित्रीठ^{२७} ।
डांडेहड^{२८} गेहरि जांण दीठ^{२९} ॥
उड्डु^{३०} तिमच्छ खागां^{३१} अघात ।
आकास जांण उल्लका-पात ॥८५॥

चोटां सुं^{३२} सुरि छैदै चौधार ।
वाजंति वास^{३३} जांणेवा^{३४} बार ॥

१ अ.इ. विछडै । २ अ.इ. भूँभार । ३ इ. दीयै । ४ इ. भडिप । ५ इ. वेसूल ।
६ अ. संग्राम । इ. संग्राम । ७ अ. सनट । ८ आ. घाव । ९ अ.इ. उखला । १०
अ. वट । ११ अ.इ. तडछीया । १२ अ. गोडीया । इ. गोडीयां । १३ अ. जमदटां ।
इ. जमदढां । १४ अ. टेवे । आ. वहे । १५ अ.इ. उठै । १६ अ. जवांण । १७ अ.
लागे । १८ अ.इ. लोहे । १९ अ. धूमति । आ धूमंत । २० अ.इ. ऐराक । २१ इ.
वाहे । २२ अ. पसरस । २३ अ. पटे । २४ अ. पांडे । २५ अ. वाजे । २६ अ.
निठाउ । आ. निवाव । २७ अ.इ. डांडेहड । २८ आ. दाव । २९ अ.इ. पगां ।
३० अ. सुं । इ. सु । ३१ इ. वांस । ३२ अ. जांणेवा ।

मारका^१ जुडै^२ घाए मयंद ।
गुड्डिया^३ गुडा खावै गयंद ॥८६॥

वेहंड^४ खंड घड वेहडांह ।
काली किरि भांजै कूलडांह ॥
सेलां उभेळ फाटै सनाह ।
घरहरै^५ सौण^६ धारां प्रवाह ॥८७॥

घडघवै^७ घोर सींगी^८ घमोड^९ ।
फूटंत अणी सर जिरह फोड^{१०} ॥
पळ खंड^{११} पडै सिर पांण पाउ^{१२} ।
राउत्तां^{१३} रुकां^{१४} घाव^{१५} राउ^{१६} ॥८८॥

जोधपुरी राजा जम्म-जाळ^{१७} ।
केवियां^{१८} कूंत^{१९} वाहै कराळ ॥
है थाट पडै पाधरी हीच ।
भारत्य भिडै गजसिघ भीच ॥८९॥

राठौड राव रिम गोडवंत ।
हणमंत जेम हाकां करंत ॥
त्रिम्भाग^{२०} सेल ग्रहियै^{२१} तयार^{२२} ।
गजसिघ उयांमै गजज - भार ॥९०॥

वळवंत भरंती^{२३} भुजै^{२४} वाथ ।
हाथियां^{२५} ठेलि वाहंत हाथ ॥
गजसिघ करंती गजज - गाह ।
कुंजरां गडां^{२६} घातियो^{२७} काह ॥९१॥

१ म.ह. मारकार । २ द. जुडै । ३ म.ह. गुडीया । ४ म. वेहडें । ५ म. वेहड ।
६ म. घरहरै । ७ म. भोला । ८ म. घडघवै । ९ म.ह. सींगी । १० म.ह. घमोडि ।
११ म.ह. फोडि । १२ म. पळखंड । १३ म. पाव । १४ म. का. राव । १५ म.
रुका । १६ म. राउ । १७ म. जम्मजाळ । १८ म.ह. केवियां । १९ म. कूंत । २० म. करंत । २१ म.ह. त्रिभाग । २२ म.
तयार । २३ म.ह. भरंती । २४ म. भुजै । २५ म.
हाथियां । २६ म.ह. गडां । २७ म. घातियो ।

राठौड भमाडै छरा रुक ।
भद्र-जाती भांजै^१ करै भूक^२ ॥
कमधज्ज हिणै हाथलां काळ ।
ढहि हुवै ढिगग ढालां ढैचाळ^३ ॥६२॥

भीम सीसोदिया अनै गजस घरो जुध
भारतथ भिडै गजसिंघ^४ भूप ।
राठौड राव नरसिंघ रूप ॥
'सूरउत'^५ अनै 'अमरा' सुतन्न^६ ।
कुरखेत जाण अरजन करन्न^७ ॥६३॥

'भीमेण' 'गजैसी' भिडै ताम^८ ।
रामायण^९ रामण जाण^{१०} राम^{११} ॥
दिठ^{१२} भिडै^{१३} 'गजैसी' 'भीम'^{१४} दोय^{१५} ।
हणमंत अनै^{१६} किरि जुद्ध होय^{१७} ॥६४॥

सीसोद^{१८} कमधज्ज सज्जगीस ।
आराण चडै^{१९} किरि त्रिपुर ईस^{२०} ॥
दूजै^{२१} 'संग्राम'^{२२} दूसरौ^{२३} 'गंग' ।
अडिया^{२४} पहाड^{२५} बै^{२६} बै^{२७} अभंग ॥६५॥

/ जुध

संग्राम मेर माझी सओध ।
जाकुळै वीर दूसरौ^{२८} जोध ॥
गज केसरि^{२९} गाहण गजां^{३०} थट्ट ।
सांघणै लोह ढोया सुभट्ट ॥६६॥

१ अ. भांजे । २ अ. सूक । ३ अ. टैचाल । ४ अ. गजसीघ । इ. गजसींघ । ५ अ. सूरउ । ६ इ. सुतन्न । ७ इ. करन्न । ८ अ. इ. ताम । ९ अ. इ. रामायण । १० अ. जाणि । इ. जाणि । ११ इ. राम । १२ अ. दिठ । इ. दिठि । १३ इ. भिडे । १४ इ. भीडैम । १५ अ. दोइ । इ. होइ । १६ अ. अने । १७ अ. होई । इ. होइ । १८ अ. सीसोद । १९ अ. इ. चडे । २० इ. इस । २१ इ. दुजै । २२ अ. संग्राम । २३ अ. दूसरी । इ. दुरै । २४ अ. इ. अडिया । २५ इ. पाहाड । २६ इ. बै । २७ अ. बै । २८ इ. दूसरी । २९ इ. केहरि । ३० अ. इ. गज ।

मारकी रूक वाहै 'महेस' ।
 दलपत्त^१ सुत्त विढता^२ अदेस^३ ॥
 भूभारसिंघ निहसै जुभार^४ ।
 जगजेठ^५ 'दलावत' जोरदार ॥६७॥

भुजबली^६ कांन भाराथ मंड^७ ।
 खीमउत करै^८ खल विहंड खंड^९ ॥
 राजघर रूकि राखंति^{१०} राज^{११} ।
 'सांमळ'^{१२} सुतन्न सबदी सकाज^{१३} ॥६८॥

नीधवक विढे^{१४} सींधुवै^{१५} नाद^{१६} ।
 'उदैसिंघ' 'माल' 'सीहा'^{१७} श्रीलाद ॥
 त्रिजडे मयंक 'कूपा' त्रि-सींग^{१८} ।
 भम्माडै^{१९} रुंडां^{२०} भाव-सिंघ^{२१} ॥६९॥

माधव दीयंत^{२२} सात्रवां^{२३} मार ।
 पूरणमलीत^{२४} वाहां^{२५} पगार ॥
 विढता धन गोवरधन वराह^{२६} ।
 चांदावत^{२७} चौरंग^{२८} चत्रबाह ॥१००॥

तोगावत रावत तुडी^{२९} तांण ।
 केवियां^{३०} 'भीम' वाहै केवांण ॥
 'अचळेस' 'भुजै'^{३१} ओडवै भार ।
 'वीकमसी' संभ्रम जमवहार ॥१०१॥

१ अ.इ. दलपति । २ अ. विटसा । ३ अ.इ. आदेस । ४ अ. भूभार । ५ अ. जमजेठ । ६ अ. भुजबलि । इ. भुजुबलि । ७ अ.इ. मंडि । ८ अ. करे । ९ अ.इ. पंडि । १० अ.इ. रापंत । ११ इ. राजि । १२ इ. सामळ । १३ अ.इ. सकज । १४ अ. विटसी । इ. विढे । १५ अ. सींधुवै । १६ अ. नादं । इ. नाथ । १७ इ. सिहां । १८ अ. तिसींग । १९ अ.इ. मवाडै । २० अ. रुडा । इ. रुडा । २१ अ. भावसिग । २२ अ. दि । २३ इ. सत्रवां । २४ इ. पूरणमलीत । २५ इ. वाहां । २६ अ.इ. पाराह । २७ अ. चांदावत । इ. चांदावत । २८ अ.इ. चौरंगि । २९ अ. इ. तुडि । ३० अ.इ. केवीयां । ३१ अ.इ. भुजे । ३२ अ. संभ्रम । इ. संभ्र ।

रुघनाथ भिडै^१ रजवट्ट^२ रीत ।
 मानउत हुआ^३ भरु अच्छ भीत ॥
 जोधार करै "अमरेस" जुद्ध ।
 आसक्रन्न सुत्त अवसाण सिद्ध ॥१०२॥
 वाहंत^४ खग 'केहरि'^५ विहद ।
 'जसवंत' समोभ्रम^६ जो मरद ॥
 खेतसी खाग^७ खेळंत खत्ता^८ ।
 'गोपाल' सुत्त गोडंत सत्त ॥१०३॥

कलियाण-मल्ल कळहै कंठीर ।
 "बैरसल" सुत्त वीराध-वीर ॥
 कूपावत^९ एता कळह वार ।
 सांमि छलि सत्रां वाहंत^{१०} सार ॥१०४॥

भगवान भडां^{११} दो^{१२} करै भाग ।
 वाघावत सिधल^{१३} तणी वाघ ॥
 गोईद^{१४} गुडावै गज्ज^{१५}-खंभ ।
 दोमज्झि 'वाघ' सुत^{१६} दलां^{१७}-थंभ ॥१०५॥

ऊजला^{१८} करै कमधज्ज आज ।
 पंचायण^{१९} 'जैती' प्रथी-राज^{२०} ॥
 'नरपाल' नेत बाधै^{२१} निहट्ट ।
 'भांणीत' भडां भड खळै घट्ट ॥१०६॥

'वीठलै' आंक ओडी^{२२} वळंति^{२३} ।
 'गोपाल' सुत्त गैमर गिलंति^{२४} ॥
 'करनी' करंत भारत्य कत्थ ।
 'भूपाल'^{२५} तणी वल्लाळ वत्थ ॥१०७॥

१ इ. विडै । २ इ. रजवट्टि । ३ अ.इ. हूवी । ४ अ.इ. वाहंति । ५ अ. केहर ।
 ६ इ. समोभ्रम । ७ अ.इ. पागि । ८ इ. पग । ९ अ. कुपावत । इ. कुपावत । १०
 इ. वाहंति । ११ अ. भडा । १२ अ. दोइ । इ. दोय । १३ अ. सिधल । १४ इ.
 गोईद । १५ इ. गजह । १६ अ. तद । १७ इ. दला । १८ इ. उजला । १९ इ.
 पांचाइणी । २० अ. प्रिथीराज । इ. प्रीथीराज । २१ अ. बाधै । इ. बाधि । २२
 अ. ओडी । इ. ओडो । २३ अ.इ. वलंत । २४ अ.इ. गिलंत । २५ इ. भूपाल ।

पडियालग^१ पडे^२ प्रिसेण^३ पीघ ।
 “सुरजन्त” समोभ्रभ^४ मानसिघ^५ ॥
 ओडै^६ भूडंड^७ ब्रह्मंड^८ ओट ।
 ‘चांपावत’ गुडै गयंद चोट^९ ॥१०८॥

जगमाल जुडै जिम्म^{१०} जगमाल ।
 दूदावत ढाहै^{११} गजां^{१२} ढाल ॥
 सूरत्ति^{१३} सरोखी^{१४} नाम^{१५} सिद्ध^{१६} ।
 ‘वीरम्मा’ ‘मालां’ जोध विद्ध^{१७} ॥१०९॥

‘मोहण’ लडंत वाहंत^{१८} लोह ।
 ‘गोपाळ’ सुत गजदळां डोह ॥
 दळपत्ति खळां दळ दुगम गति ।
 ‘भीमोत’^{१९} भमाडै भीम भति ॥११०॥

नरसिघदास सूरत^{२०} समूह^{२१} ।
 जगमाल सुत्त गौडवै^{२२} जूह ॥
 ‘कानो’^{२३} भिडंत चालती कोट^{२४} ।
 ‘माघव्व’ समोभ्रम मन्न मोट ॥१११॥

ऊदावत^{२५} जूटा^{२६} अरि दळांह ।
 किरि सीह^{२७} विछूटा सांकळांह ॥
 आसकन्न^{२८} भिडै^{२९} भाजै^{३०} असंघ^{३१} ।
 ‘मानोत’^{३२} खळां मैगळां^{३३} कंध ॥११२॥

१ अ.इ. पडियालग । २ इ. पडे । ३ अ. प्रिह्येण । इ. सिसण । ४ इ. समोभ्रम ।
 ५ अ.इ. मानसीघ । ६ अ.इ. ओडै । ७ अ. भूडंड । ८ अ. ब्रह्मंड । ९ इ. चोट ।
 १० अ. म । ११ इ. ढाहे । १२ अ. गज । १३ अ.इ. सुरत्ति । १४ अ. सरोखी ।
 १५ इ. नाम । १६ अ. सीघ । १७ अ.इ. विधि । १८ अ.इ. वाहंति । १९ इ. भीमोत ।
 २० इ. सूरत । २१ इ. समुह । २२ अ. गोडेवै । २३ इ. कानो । २४ अ. कोट ।
 २५ इ. उदावत । २६ इ. जुटा । २७ इ. सिंह । २८ इ. आसकन्न । २९ इ. भिड ।
 ३० इ. भाजै । ३१ अ. असघ । ३२ अ.इ. मानोत । ३३ अ.इ. मैगलां ।

'राजी'^१ भिडंत सूरिमा^२ राह ।
 'विसनावत' सीहक सिंधुराह^३ ॥
 'जगतौ'^४ जुडंत जमदूत जुद्ध^५ ।
 'रांमा' सुत 'नारण'^६ वडी^७ बुद्ध^८ ॥११३॥
 'गोकळसी' चूरै^९ गजदळांह ।
 विसनावत^{१०} हत्थळ वीजळांह^{११} ॥
 'सुंदर'^{१२} भिडंत संग्राम^{१३} धीर ।
 'रांमउत' रुक राखंत नीर ॥११४॥
 'जगनाथ' प्राग^{१४} बे^{१५} बे^{१६} जुडंत ।
 हरसिघ^{१७} सुत्त हाथां^{१८} हणंत ॥
 हररांम रुक वावरै हद्द ।
 'गोदउत' भडां मेळै गरद्द ॥११५॥
 'अभैरांम' भिडै आहिवै^{१९} अगाहि^{२०} ।
 'गोइंद' समोभ्रम गज्ज गाहि^{२१} ॥
 'उदैसिघ' वधारै^{२२} वंस^{२३} आधि^{२४} ।
 आसक्रंन^{२५} सुत्त डोहै^{२६} अताघ ॥११६॥
 'अमरसी'^{२७} विमर^{२८} पैठी अराण^{२९} ।
 'रासाउत'^{३०} साधक रुक पांण^{३१} ॥
 साहिब्व-खान नाहर सुजाव^{३२} ।
 घण भूंभी^{३३} वाहै सत्रां^{३४} घाव^{३५} ॥११७॥
 हरदास हिये^{३६} पूरवै हांम ।
 'सुरजन्न' हरी जीपण संग्राम^{३७} ॥

१ इ. राजो । २ अ. सूरिम । ३ सुरिम । ३ अ.इ. सिंधुराह । ४ इ. जगतै । ५
 अ. जुधि । ६ अ.इ. नरिण । ७ अ.इ. वट । ८ अ.इ. वंधि । ९ इ. चुरै । १० अ.
 विसनाउत । ११ अ. वीजुलांह । इ. विजुलांह । १२ अ. सुंदर । इ. सुंदरि । १३ अ.
 संग्राम । इ. संग्राम । १४ अ. प्रांम । १५ इ. वै । १६ अ. वै । इ. वे । इ. वे । १७
 अ. हरसीघ । १८ अ.इ. हयां । १९ अ. अहिवे । २० अ. अगहि । २१ इ. गांहि ।
 २२ अ. वधारै । इ. वधारै । २३ अ. वस । २४ अ.इ. आधि । २५ इ. आसक्रंन । २६
 अ. डोहै । २७ अ. अमसी । २८ अ. विमर । २९ अ.इ. आराण । ३० अ.इ. रास-
 उत । ३१ अ.इ. पांणि । ३२ अ.इ. सुजाउ । ३३ अ.इ. भूंभी । ३४ इ. सत्र । ३५
 अ.इ. घाव । ३६ अ. हीये । ३७ अ. संग्राम । इ. संग्राम ।

प्रिसणां दियंत^१ धारां प्रहारि^२ ।

‘दूदावत’ ‘सगल’^३ रिण दळारि ॥११८॥

जगनाथ^४ जुडै जुध^५ वाथ जोड^६ ।

कणियागिर^७ रुपक चडै कोड^८ ॥

चहवाण “दयाळ”^९ गज थटां चूर ।

‘सिखरा’^{१०} सुतन्न पेखंत सूर^{११} ॥११९॥

देवडी विढै^{१२} ‘अचळेस’ दूठ ।

रावत्त^{१३} समोभ्रम रिमां रूठ ॥

खळखट्ट करै खन्नवट्ट दाय^{१४} ।

*चहवाण^{१५} न चुकै^{१६} घायवाय ॥१२०॥

रोळंत रिमां घड^{१७} रांमचंद ।

‘संग्राम’^{१८} सुत्त सूरत^{१९} कंद ॥

‘सांगी’^{२०} भिडंत संग्राम^{२१} रस्सि ।

‘नगराज’ सुत्तन^{२२} घाए^{२३} निहस्सि ॥१२१॥

लंकाळ लडै रिण रांमदास ।

‘गोपाळ’ सुत्त सुंडाळ^{२४} ग्रास ।

‘करमसी’ भिडै कलिमथण कोपि ।

राठोड नग्न सिरि^{२५} पग्न रोपि ॥१२२॥

कूपी^{२६} भिडंत डूचियै^{२७} कूत ।

जैमाळ समोभ्रम जम्मदूत ॥

१ अ. दियत । २ अ.इ. पहार : ३ अ.इ. सगले । ४ इ. जमनाथ । ५ अ.इ. जुधि । ६ अ.इ. जोडि । ७ अ. कणीयोगरि । ८ अ. कणियागर । ९ अ.इ. कोडि । १० अ.इ. घास । ११ अ. सिखरां । १२ इ. पूर । १३ इ. विढे । १४ अ. रावत । १५ अ.इ. दाई । १६ अ. चवांण । १७ इ. चुकै । १८ अ.इ. घाइवाइ । १९ इ. घडि । २० अ. संग्राम । २१ अ. सूरत । २२ अ. सुरत । २३ अ.इ. सांगी । २४ अ. संग्राम । २५ अ.इ. सुत । २६ अ.इ. घाए । २७ अ. सुंडाल । २८ इ. सिर । २९ इ. कूपी । ३० अ.इ. डूचीयै ।

*इस छन्द के आगे ‘इ’ प्रति में निम्न पंक्तियां विशेष हैं :—

हरदास पग वाहत हृद । मेसउत पलांडै मरद ॥

कलियाण लडै केवीयांकाल । चूरे नेतावत चमरांल ॥

‘आसी’ भिडंत^१ अंबर अडेय^२ ।
‘नीबावत’^३ चौरंग^४ भुंइ^५ चडेय ॥१२३॥

‘भगवान’ लोह भेळ^६ भिडज ।
‘सुरताण’ सुत्त छळ सांम निज्ज ॥
‘नरपाळ’ खाग पाडै^७ खळांह ।
जळ चाढै^८ जोगां रावळांह ॥१२४॥

रायसिंघ^९ समोभ्रम^{१०} मेघराज ।
संग्राम हाम पूरण^{११} सकाज ॥
आरण^{१२} भिडंत जीवंत अगग^{१३} ।
ऊहड परट्टि^{१४} अहिसीस^{१५} पग ॥१२५॥

मारक्कौ ऊहड भिडै ‘मेघ’ ।
असमान^{१६} लगै ऊभारि^{१७} तेग ॥
‘रांमौ’^{१८} भिडंत केवियां^{१९} कंस ।
‘माहेस’ सुत ‘मालदे’ वंस ॥१२६॥

भाटी भिडंत^{२०} गोपाळ-मल्ल ।
‘आसावत’ रावत गिडि^{२१} इकल^{२२} ॥
‘केसव’ भिडंत केसरी सीह ।
‘वाघावत’ दारण विढण^{२३} दीह ॥१२७॥

रामचंद^{२४} करै^{२५} राहा^{२६} चरक्क ।
सुरताण सुत्त आषी अरक* ॥

१. अ. भिडंत । २ अ. अडेय । ३ अ. नीबावत । ४. निबावत । ५ अ.इ. चौरंगि ।
५ इ. भुई । ६ इ. भांजै । ७ अ. भिडंज । ८ अ. पालै । ९ अ.इ. चाडै । १० अ.
इ. राइसिंघ । ११ इ. समोभ्रम । १२ अ. पूरै । इ. पुरै । १३ अ.इ. अरण । १४
अ.इ. जग । १५ इ. परिट । १६ इ. सिस । १७ इ. असमान । १८ अ. उभारि ।
इ. भुभारित । १९ अ.इ. रांमो । २० अ.इ. केवीयां । २१ इ. भीडंत । २२ अ.
गिडि । इ. गिड । २३ अ. एकल । इ. ऐकल । २४ अ. विढण । २५ इ. राम-
चंद । २६ इ. करण । २७ इ. राह । २८ इ. चक ।

* प्रति ‘अ’ में “सुरताण सुत्त आषी अरक” पंक्ति नहीं है ।

* 'अचलो' भिडै ते वाह आच ।
सुरतांण सुत्त सीमंत^१ साच ॥१२८॥

'पीथी'^२ भिडंत संग्राम पीठ ।
'गोइंद'^३ सुत्त गहवंत ग्रीठ ॥
ईसर^४ भिडंत घाए अनंत ।
भाटी भड भूरी भाग^५-दंत ॥१२९॥

हरदास हियै^६ चाडै हसम्म^७ ।
'कांनावत' दाखै पराक्रम ॥
रुघनाथ समोभ्रम जोगराज ।
वाहंत तेग किरि इंद्र वज्र^८ ॥१३०॥

केसव भिडंत कुदरत्त^९ गत्त^{१०} ।
रायसिघ^{११} सुत्त^{१२} खग सावरत्त^{१३} ॥
'नाहरी' भांण संभ्रम^{१४} निराट ।
घण घाइ घडै^{१५} अरिहरां घाट ॥१३१॥

'नरपाळ' भिडै नेठाह नग ।
गोदउत वघै^{१६} गयणग लग ॥
भाटी भिडंत कुंभा^{१७} थळांह^{१८} ।
मिळिया मयंद किरि मंगळांह^{१९} ॥१३२॥

वाघंत विढती^{२०} वाज खान ।
लखधीर सुत्त लग आसमान ॥
'सादूळ' भिडै गोपाळ सुत्त ।
राठीड रूक ग्रहियां^{२१} दुरत्त^{२२} ॥१३३॥

* प्रति अ' में पंक्ति— "अचलो भिडै तेवाह आच" लुप्त है ।

१ इ. सीमंत । २ अ. पीथी । ३ इ. गोइंद्र । ४ इ. इसर । ५ अ. इ. भग दंत ।
६ अ. इ. हीर्य । ७ इ. हसंम । ८ इ. वाज । ९ अ. इ. कुदरति । १० अ. इ. गति ।
११ अ. राइसिघ । १२ अ. राइसिघ । १३ अ. सूत । १४ इ. सांवरत्त । १५ अ.
संभ्रम । १६ अ. समभ्रम । १७ इ. अडै । १८ अ. इ. वघे । १९ अ. इ. कुंभा । २०
इ. यलाह । २१ अ. इ. मंगलांह । २२ अ. विढती । २३ इ. विढती । २४ इ. ग्रहीया ।
२५ अ. इ. दुरित ।

‘पूरी’ भिडंत वाहंत पांण ।
भांणोत जुद्ध^१ जोवंत भांण ॥
जगमाल जुडै हींगोळ^२ जाव^३ ।
“रूपा”-हर^४ ओपम जंम्मराव^५ ॥१३४॥

‘देदी’^६ भिडंत दाठक्क मल्ल ।
‘रांणावत’ रूकै^७ रिम पथल्ल ॥
‘सेखी’^८ भिडंत डूचियै^९ सेल ।
दुज्जण-सलोत^{१०} खन्नवट्ट खेल ॥१३५॥

‘इंदौ’^{११} भिडंत ‘पूरी’ अनिद ।
देखत देव विभ्रम^{१२} दुडिद^{१३} ॥
वरियांम^{१४} ‘जसी’ वाहंत खग ।
सींघलां^{१५} राव^{१६} लेवा सरग ॥१३६॥

‘भाखरी’ छरा असमर^{१७} भमाड^{१८} ।
‘पीपाडी’ पडियो^{१९} खळां पाड^{२०} ॥
घींधियो^{२१} ‘धीर’ ‘वीकी’ घसंत ।
उतबंग ढळै^{२२} घड ऊकसंत^{२३} ॥१३७॥

सन्नवां^{२४} घडा घाए^{२५} सकूप ।
‘रूपसी’ भिडै रोहडां रूप ॥
जोधार ‘गजैसी’ जुद्ध वाहि^{२६} ।
मैंगळां^{२७} गहिण^{२८} घातिया^{२९} माहि^{३०} ॥१३८॥

१ अ.इ. जुधि । २ अ. हींगोल । ३ अ.इ. जाउ । ४ अ.इ. रूपांहर । ५ इ. जमराउ ।
६ इ. देदी । ७ अ.इ. रूके । ८ अ. सेखी । ९ अ. डूचीयै । इ. डुचियै । १० इ.
दुजण सलोत । ११ अ. इंदौ । १२ अ. वीभ्रम । १३ अ. दुडिद । इ. दुडंत । १४ अ.
वरीयांम । इ. वरयांम । १५ अ. सीघलां । १६ अ.इ. राउ । १७ अ. असिमरि ।
इ. असिमर । १८ अ.इ. भमाडि । १९ अ.इ. पडीयो । २० अ.इ. पाडि । २१ अ.
घींधियो । इ. घांधियो । २२ अ.इ. ढले । २३ अ.इ. उकसंत । २४ अ. सान्नवां ।
इ. सन्नवां । २५ इ. घाए । २६ अ. ठाहि । इ. ठांहि । २७ अ.इ. मैंगलां । २८
इ. गांहिण । २९ अ.इ. घातोया । ३० इ. मांहि ।

धांधल्ल भिडै धजवडां धार ।
 पैला पडंत^१ भड-पंख^२ पार ॥
 खीची भिडंत खाडक्क^३ मल्ल ।
 केवियां^४ कडा तूटै^५ कंगल्ल^६ ॥१३६॥

पडिहार भिडै आगळी पाट ।
 सांहणी धणी मांणक्क आट ॥
 आवधे दक्खै इद्धकार ।
 पैतीसे साखे परम्मार ॥१४०॥

दारण भिडंत लागंत आभ ।
 लोहै^७ सुजस्स खाटंत लाभ ॥
 मांगळिया^८ कळिह^९ कळिह मूळ ।
 सांभळी गाज जाणै^{१०} सादुळ^{११} ॥१४१॥

धांधल्ल^{१२} भिडंत वाहंत धक्क ।
 सांमरै कांम संग्राम^{१३} सक्क ॥
 आसायच^{१४} धाए^{१५} आफळंत ।
 आव्रत महारिण ऊकळंत^{१६} ॥१४२॥

पंचोळी^{१७} पैठा सार पूर ।
 संग्राम^{१८} सामि^{१९} हुआ^{२०} हजूर ॥
 भंडारी प्रिसणां करै^{२१} भंग ।
 आवध्यां ओडै आप अंग ॥१४३॥

जोधार भिडै^{२२} संगळ^{२३} जवान^{२४} ।
 वरियांम^{२५} हजुरी पासवान^{२६} ॥

१ अ.इ. पडंति । २ इ. पखै । ३ इ. खाडुकमाल । ४ अ.इ. केवीयां । ५ अ.
 तूटे । ६ अ. तूटे । ७ अ.इ. कंगल । ८ इ. लोहे । ९ अ.इ. मांगलीया । १० अ.इ. कलहै ।
 ११ इ. जाणै । १२ अ. सादुल । १३ अ. धाव । इ. धांधां । १४ अ. संग्राम ।
 १५ इ. आसाइजा । १६ इ. धाए । १७ अ.इ. उकळंत । १८ इ. पांचोली । १९ अ.
 संग्रामि । इ. संग्रामि । २० इ. साम । २१ अ.इ. हुआ । २२ अ. करे । २३ अ. भुडे ।
 २४ अ.इ. सगले । २५ अ. जुवाण । इ. जुवाण । २६ अ. वरीयांम । इ. वरीयाम ।
 २७ अ.इ. पासवाण ।

ओकट्ट कट्ट थिउ आहरट्ट ।
गाहट्ट थट्ट फीजां गरट्ट ॥१४४॥

तरवारि^१ तिमच्छां छणहणंत ।
भाळरी सद^२ किरि भणहणंत ॥
वाजै निहाव^३ घाए^४ विमोह ।
लोहार जाण कूटंत^५ लोह ॥१४५॥

रावतां रोस^६ वाहंत^७ रुक^८ ।
इक^९ इक्क घाव दुयं^{१०} दोय^{११} टुक^{१२} ॥
धू-माळ भाळ कळकळे^{१३} धूप ।
ऊजळे^{१४} जुद्ध आन्नत^{१५} रूप^{१६} ॥१४६॥

मारका जाण जूटंत^{१७} मल्ल ।
गजथाट गहै भड गडो-थल्ल ॥
पींजर^{१८} पडंत पडियालगांह^{१९} ।
सिर^{२०} अडादडा पड^{२१} सुभट्टांह ॥१४७॥

तुडतांण^{२२} पांण काया तजंत ।
जै रांम रांम जीहा जपंत ॥
रोसाळ हुवा^{२३} विकराळ रोस ।
पडियालग^{२४} वाहै दांत पीस ॥१४८॥

बगतरे^{२५} आग उडुंत बूंग^{२६} ।
दवहरण जाण^{२७} होळी दवूंग^{२८} ॥
घण भूभा^{२९} बाथां पडै घोट ।
लोटीगण^{३०} खावै लोट-पोट ॥१४९॥

१ इ. तरवार । २ अ. सेद । ३ अ. मिहाव । ४ इ. घाए । ५ इ. कुटंत । ६ अ. रोसि । ७ अ. वाहंति । ८ इ. रुक । ९ अ. एक एक । १० इ. ऐक ऐक । ११ इ. दोय । १२ अ. दोइ । १३ इ. टुक । १४ अ. इ. कलकले । १५ अ. इ. उजले । १६ अ. इ. आहृत । १७ इ. रूप । १८ इ. जुटंत । १९ अ. गडोयल । २० अ. पीजर । २१ अ. पडियालगांह । २२ अ. पडियालगांह । २३ अ. सिरि । २४ अ. पडि । २५ अ. तुडतांण । २६ अ. हुआ । २७ अ. हुआ । २८ अ. इ. पडियालग । २९ अ. इ. बगतरे । ३० अ. छुङ्ग । ३१ अ. जाणे । ३२ अ. इ. दवंग । ३३ अ. भूभा । ३४ अ. भूभा । ३५ इ. लोटीगण ।

दुधधार पटा खांडा^१ दुवाढ ।
जमदूत अवाहै^२ जम्म-दाढ ॥
कटिया^३ लाखिक^४ लोटै^५ केकाण ।
पाखरां सहित वढिया^६ पलाण ॥१५०॥

असमरां^७ धार घड ऊतरेय^८ ।
चिततांम सु दरसण^९ हर चडेय ॥
वळकति^{१०} खग चहुंवे वळाव^{११} ।
सिहरेक जाण वीजां^{१२} सिलाव^{१३} ॥१५१॥

कुंभाथळ फाटा कुंजरांह ।
दीसति^{१४} खोहे^{१५} किरि डूंगरांह^{१६} ॥
जूवटां जांहि घट अनै जिंद ।
गै जूह^{१७} मुडै^{१८} खावै गुडंद ॥१५२॥

सैखंड पिंड पळ खंड सीस ।
छच्छोह लोह लागै^{१९} छत्तीस ॥
धजवडां घाय^{२०} ढालां^{२१} ढहंत^{२२} ।
दांताळ पडै ओलरै दंत ॥१५३॥

कुंभाथळ मैंगल कडि^{२३} अडंत ।
परवतां संग^{२४} किरि खड-हडंत^{२५} ॥
है थाठ हीस^{२६} हीजर हमस्स ।
धारां पहार माती धमस्स ॥१५४॥

दुहुं^{२७} दळां माचि संग्रामं दुंद ।
गयणाग गोम गाजै गिरंद^{२८} ॥

१ अ. खाडा । २ अ. आवाहै । ३ अ. कटीया । इ. कढीया । ४ अ. इ. लापीक ।
५ अ. लोटे । ६ अ. पटीया । इ. वढीया । ७ इ. असरां । ८ अ. इ. उत्तरेय । ९ इ.
सुंदरणा । १० अ. वलकति । इ. वलवति । ११ अ. इ. वलाउ । १२ इ. वीजल ।
१३ अ. सिलाउ । इ. सलाउ । १४ इ. दिसति । १५ इ. पोह पोह । १६ अ.
डूंगरांह । १७ इ. जुह । १८ इ. गुडै । १९ आ. भागै । २० अ. इ. घाइ । २१
आ. ढीलां । २२ अ. ढहंत । २३ अ. इ. कढी । २४ अ. इ. अंग । २५ अ. पड हडत ।
२६ अ. हीक । इ. हीक । २७ इ. दुह । २८ अ. इ. गिरद ।

जडधार^१ तार जैकार किद्ध ।
भरि पत्त^२ रत्त^३ जोगणी पिद्ध^४ ॥१५५॥

भट्टकै^५ भाट श्रीभडी^६ भीर ।
फेरी फुरंत फारक्क फीर ॥
तांडळां दळां डूंगळां^७ दूक^८ ।
रंडळां रुळां सीकळां रुक ॥१५६॥

विप्पळां पळां आवळां^९ वाढ^{१०} ।
ग्रीधळां खळां सावळां^{११} गाढ^{१२} ॥
सावळां हुळां मंगळां^{१३} सल्ल ।
ढेचळां ढळां तूलांह^{१४} ढल्ल ॥१५७॥

खळ हळां चलै^{१५} रळतळां खाल ।
वीजळां भळां वीमळां^{१६} ब्राळ ॥
गूछळां^{१७} गळां गूथळां गड्ड ।
सिघळां^{१८} कळां^{१९} सांकळां सड्ड ॥१५८॥

जूअळां^{२०} भलां भूवळां जाल^{२१} ।
डांखळां डळां^{२२} डीगळां डाल^{२३} ॥
ऊछळां^{२४} लुळां^{२५} वाकुळां एम ।
*तोछळां जळां मछळां^{२६} तेम^{२७} ॥१५९॥

हैमरां^{२८} नरां खंडरां^{२९} हाड^{३०} ।
नीभरां भरां रुधिरां नाड ॥
जुधरां वरां सधरां^{३१} जूट^{३२} ।
करमरां करां पंजरां^{३३} कूट ॥१६०॥

१ इ. नडधार । २ अ.इ. पत्र । ३ अ. र । ४ इ. रत्र । ५ अ.इ. भटके । ६ इ. श्रीभडी । ७ इ. डूंगला । ८ इ. दुक । ९ अ.इ. आवलां । १० अ. वाट । ११ अ.इ. सबलां । १२ अ. गाढ । १३ अ. मेगलां । १४ अ.इ. अतुलां । १५ अ.इ. चले । १६ अ.इ. विमलां । १७ अ.इ. गूछलां । १८ अ.इ. सिघलां । १९ अ. कला । २० अ.इ. जुअलां । २१ इ. जोल । २२ अ. डलो । २३ अ.इ. डोल । २४ अ.इ. उछलां । २५ इ. तुलां । २६ अ. मेछलां । २७ अ.इ. जेम ।

*‘अ’ और ‘इ’ प्रतियों में अन्तिम पंक्ति इस प्रकार है :—‘मछलां जलां तोछलां जेम ।’
२८ अ. हैमरा । २९ अ. खंडरा । ३० अ. डाह । ३१ अ. सधरां । ३२ अ. जूट । ३३ अ.इ. पीजरां ।

जाजरां सिरां कीपरां^१ जोर ।
 घर-हरां तुरां पाखरां घोर ॥
 गिरवरां घरां अंवरां गाज^२ ।
 वज्जरां^३ छरां^४ निडुरां वाज^५ ॥१६१॥

षंजरां उरां खंजरां पेल ।
 सुंसरां^६ फरां बगतरां सेल ॥
 हींजरां खरां हंखरां होड ।
 लोहरां भरां लल्लरां^७ लोड ॥१६२॥

सिधुरां^८ गरां साथरां^९ सूर ।
 पै करां थरां संघरां पूर ॥
 लोहडां लडां लडथडां लोट ।
 वेहडां घडां मर-गडां बोट ॥१६३॥

ऊभडां^{१०} भडां नीभडां^{११} अंग^{१२} ।
 बीजडां^{१३} गडां बीछळां^{१४} वंग^{१५} ॥
 जमजडां घडां समवडां जंग ।
 त्रिज्जडां^{१६} भडां तडफडां तंग^{१७} ॥१६४॥

अन्नडां नडां अप्पडां^{१८} अंत ।
 फड फडां जीव^{१९} जाणै फुरंत ॥
 छप्पकडां कडां खडखडां^{२०} छूट^{२१} ।
 तूंवडां^{२२} जिहीं^{२३} सिर^{२४} पडै तूट^{२५} ॥१६५॥

हींसलां^{२६} भलां अप्पलां हूंत ।
 कंगळां सळां आघळां^{२७} कूत^{२८} ॥

१ इ. कोपरां । २ अ.इ. गाजि । ३ अ. वभरा । ४ अ. निडरां । ५ अ.इ. वाजि । ६ अ. सुंसरां । ७ अ. सुसरां । ८ अ. नहीं है । ९ अ. साथरा । १० अ.इ. उभडां । ११ अ.इ. नीजुडां । १२ अ.इ. अंगि । १३ अ.इ. विजडां । १४ अ.इ. बीछळां । १५ अ.इ. वंगि । १६ अ.इ. त्रिजडां । १७ अ.इ. तंग । १८ अ. अपडा । १९ अ. जीव जीव । २० अ. पडपडा । २१ अ.इ. छटि । २२ अ.इ. तूवडां । २३ अ.इ. जिही । २४ अ.इ. सिरि । २५ अ.इ. तूटि । २६ अ.इ. हीसलां । २७ अ.इ. अपलां । २८ अ.इ. आघलां । २९ अ. कूत ।

पत्थळां^१ ढलां^२ मातळां^३ पील ।
डर-बळां^४ डळां^५ बरघळां^६ डील ॥१६६॥

खागळां^७ भलां^८ ओखळां^९ खोब ।
घायलां^{१०} मलां^{११} घूमलां^{१२} घोब ॥
रीधळां^{१३} रिलां^{१४} ऊजळां^{१५} रत्त ।
गडथळां^{१६} भडां^{१७} भडरवळां^{१८} गत्त ॥१६७॥

खखरमां^{१९} बक्खलां^{२०} रत्त खाळ ।
पैलां-दळ^{२१} हूअ्री^{२२} प्रळ^{२३}-काळ^{२४} ॥
दुज्जला^{२५} हम्मल्ला^{२६} होठ^{२७} डस्सि ।
रिणमल्लां^{२८} जोधा^{२९} वीर रस्सि ॥१६८॥

कवित्त

वीर रस्स वाधियो^१, वीर लागा ब्रह्मंडे^२ ।
रांमायण^३ भारत्य, कना देवाइण^४ मंडे^५ ॥
ऐरापत्त^६ गजिद्र^७, फौज गै जूह गडाडां ।
तिकरि^८ मेर परवत्ता, मज्झि कुळ^९ आठ पहाडां ॥
बंदूक मार गोळा^{१०} सरे^{११}, लागे^{१२} पार न लोहडे^{१३} ।
रिण खेत खुरम सुरतांणरी^{१४}, जटा - जूट कुंजर^{१५} पडे^{१६} ॥१॥

प्रळ काळ रण ताळ, वडौ इक^१ आव्रत^२ वूही ।
सीसोदां^३ सैफळां^४, सरिस^५ राठौडां हूअ्री ॥

१ अ. टला । २ अ. पागलों । ३ अ.इ. घाइलां । ४ अ.इ. रींघलां । ५ अ.इ. उजलां । ६ अ. भड । ७ अ. षषरंभा । ८ अ. षषलां । ९ अ. पैलां दलां । १० अ. पैदलां । ११ अ. हूवी । १२ अ. पलैकाल । १३ अ. दुजलां । १४ अ. हमलां । १५ अ. होठि । १६ अ. जोधा । १७ अ.इ. वाधियो । १८ अ. ब्रह्मंडे । १९ अ.इ. रांमाइण । २० अ. देवायण । २१ अ. मंडे । २२ अ. मंडे । २३ अ.इ. ऐरापति । २४ अ. गजेंद्र । २५ अ. तिकिरि । २६ अ. कुल । २७ अ. गोलां । २८ अ.इ. सरे । २९ अ.इ. लागे । ३० अ.इ. लोहडे । ३१ अ. रो । ३२ अ. रै । ३३ अ. कुंजर । ३४ अ.इ. पडे । ३५ अ. एभ । ३६ अ. ऐक । ३७ अ.इ. आव्रत । ३८ अ. सीसोदां । ३९ अ. सिसोदां । ४० अ. सैफलां । ४१ अ. सरसि । ४२ अ. सरस ।

गोवरधन रटुवड़^१, पडे^२ पिंड लोहै^३ पूरै^४ ।
 कियै^५ कूत^६ सावरत, दळां चतुरंगां चूरै^७ ॥
 कीघी विसेख^८ करतै कळह, तरसि तूंग 'चांदै' तणै ।
 वणियाँक^९ 'चंद' संकर वदन, सुजड घाइ मुहि सांमणै^{१०} ॥२॥

सुसग्रांम^{११} गजमिघ^{१२}, सीस गयणंगण लगगै ।
 बीज जिहीं^{१३} वळकतै, खाग ग्रहीयै^{१४} ऊनगै^{१५} ॥
 जेम 'खेम' जेतसी^{१६}, जोध विद्या खेलंतौ^{१७} ।
 गजथट्टां^{१८} गाहतौ, साह फौजां फुरळंतौ ॥
 वरियांम^{१९} जणै^{२०} जण^{२१} वाजतौ^{२२}, जोधपुरां^{२३} जोधह^{२४} पुरी ।
 वजरंग हुआ^{२५} हणमंत वरि, भली 'भीम' कल्याणरी^{२६} ॥३॥

छूरा^{२७} खग ऊपाडि^{२८}, सीह करि सांकळ^{२९} छूटा ।
 मुरडि खंभ मदमोख, जाण सूंडा-हळ जुटा^{३०} ॥
 मारु संधै^{३१} मुहै^{३२}, दुरति^{३३} धौळी दीहाडै^{३४} ।
 जग - जेठी जमदूत, 'मल्ल' जाणै^{३५} आखाडै ॥
 रिणमल्ल कळोधर वीर रस, वज्र^{३६} जाण वज्रह^{३७} मिली ।
 नरपाळ प्रिथीमल निहसिया^{३८}, वे जमरांण^{३९} महाबली ॥४॥

जै मथिया^{४०} के महण, मेर कळि मत्थण माभी ।
 हेट हेट अविणास^{४१}, तेग प्रिथमी^{४२} पुड^{४३} प्राभी ॥
 तात वैरि ततकाळ, लियौ^{४४} जिण चालुक लोहै^{४५} ।
 जिण 'मोहरा' मारियाँ^{४६}, बिजड^{४७} बूंदी घड डोहै^{४८} ॥

१ इ. राठवड । २ अ.इ. पडे । ३ अ. लोहे । ४ अ. लोहां । ५ अ.इ. पूरे । ६ अ.इ. कीयै । ७ अ.इ. कूत । ८ अ.इ. चूरे । ९ अ. विसेख । १० अ.इ. वणीयीक । ११ इ. सांमणी । १२ अ.इ. सुसंग्राम । १३ अ. गजसीघ । १४ अ.इ. जिही । १५ अ.इ. ग्रहीयै । १६ अ. उनगै । १७ अ. उनगे । १८ अ. जेतसी । १९ अ. खेलंतौ । २० अ. गजथटा । २१ अ.इ. वरीयांम । २२ अ. जणी । २३ अ. जणां । २४ अ. वाजतौ । २५ इ. जोधपुरी । २६ अ.इ. जोधपुरी । २७ अ. हूआ । २८ अ. हूवी । २९ अ. कळरांणरी । ३० अ.इ. छूरा । ३१ अ.इ. उपाडि । ३२ इ. संकल । ३३ इ. जुटा । ३४ इ. संधे । ३५ अ.इ. मुहे । ३६ अ. दुरएति । ३७ अ.इ. दिहाडै । ३८ अ.इ. जाणे । ३९ अ. वजर । ४० इ. वज्र । ४१ अ.इ. निहसीया । ४२ अ. जमरांणण । ४३ अ.इ. मथिया । ४४ अ. अविणास । ४५ अ. प्रिथमी । ४६ अ.इ. पुडि । ४७ अ.इ. लीयो । ४८ अ.इ. लोहे । ४९ अ.इ. मारीयो । ५० अ. बिजड । ५१ अ.इ. डोहे ।

भांणरै भीच बलभद्र^१रौ, ऊथाले^२ साबळ अणी ।
नरपाळ प्रिथीमल पाडियो^३, दांणव सिघ^४ दरस्सणी ॥५॥

सीसोदां^५ कमधजां, जुद्ध माती^६ जोधारां ।
घाड घोर^७ अंधार, धमस धारां अंगारां ॥
पक्खरिया^८ है पडे^९, ढहे^{१०} ढैचाल^{११} घेधंगर^{१२} ।
जीण-साल ऊजडे^{१३} पडे^{१४} सुहडा^{१५} पंचाहर ॥
हेरांन हुआ^{१६} हिंदू^{१७} तुरक, आया लोह न आडडे ।
गजगाह 'भीम' 'गाजी' हुआ^{१८} व्याहक^{१९} लाडी लाड^{२०}डे ॥६॥

जिम अरजण^{२१} जुध करन, जेम भीमह^{२२} दूसासण ।
जिम हणमंत जुध अमै, रांमचंदह जिम रांमण ॥
भ्रिगुपति^{२३} सहसा-रजण, जेम जुध संकर त्रिप्पुर ।
जिम किसन्न^{२४} सिसपाळ, जेम इंद्रह वैतासुर ॥
लखमण^{२५} इंद्रजित्तह कियो^{२६}, साखी ससि सूरज बिबुध^{२७} ।
'सूर' उत कियो^{२८} जिम 'अमर' सुत, जुड 'गजपत्ती' 'भीम' जुध ॥७॥

चीतोडी^{२९} चालणी, अंग^{३०} हुआ^{३१} आरिब्वह^{३२} ।
कुरव्व दळ^{३३} अंतरै, जाण भीखम पितामह ॥
आरुहता^{३४} भगदंत, अस्सि रागां चाडंती^{३५} ।
गे जूहां गोडती, खग भूवळि झाडंती^{३६} ॥
भूडंड^{३७} वधे ब्रह्मंड^{३८} लग, धन्न पराक्रम सूरतन ।
पाडियो^{३९} जोध आउट्टमी, दीढी^{४०} रावत कुंभकन^{४१} ॥८॥

१ इ. अ.इ. बलिभद्र । २ अ.इ. उथाले । ३ अ.इ. पाडीयो । ४ अ. सीघ । ५ इ. सीसोदां । ६ इ. माती । ७ इ. घोर । ८ अ.इ. पक्खरीया । ९ इ. पडे । १० अ. ढहे । ११ अ. ढैचाल । १२ अ. घेधंगर । १३ अ.इ. उजडे । १४ अ.इ. पडे । १५ अ. सीहडा । १६ अ. हुआ । १७ अ. हींदू । १८ अ.इ. हुआ । १९ अ. व्याहक । २० अ. लाडरै । २१ इ. अरजण । २२ इ. भीम । २३ अ. भ्रिगुपति । २४ अ.इ. भिगुपति । २५ इ. लखमण । २६ अ.इ. कीयो । २७ अ.इ. बिबुध । २८ अ.इ. कीयो । २९ इ. गजपति । ३० अ. चीतोडी । ३१ अ. चीत्रोडी । ३२ इ. अंग । ३३ इ. हुवा । ३४ अ.इ. आरिब्वह । ३५ इ. पारिब्वह । ३६ इ. बदल । ३७ अ.इ. आरुहता । ३८ अ. चाडंती । ३९ अ.इ. झाडंती । ४० इ. भूडंड । ४१ अ.इ. ब्रह्मंड । ४२ अ.इ. पाडीयो । ४३ अ. दीढी । ४४ अ.इ. कुंभकन ।

वपि दिहंड पळ खंड, तेग तिमछां^१ मुहि तुटी ।
 धारां मुहि घडछियौ^२, कुंभ^३ किरि काली फूटी ॥
 हाड हाड संघाण, हुआ^४ जूजुआ^५ जडाळ^६ ।
 ढलतौ^७ घड ऊपरा^८, सीस संकर उदाळ^९ ॥
 तिण श्रोण^{१०} वदन कीयौ तिलक, सुकरा^{१०} श्रोण^{११} वंवाळियौ^{१२} ।
 खूमांण तणै^{१३} रिण मांणसर, अछरि^{१४} हंस वरमाळियौ^{१५} ॥६॥

मांनसिघ^{१६} सीसोद, भिडै^{१७} रहियौ^{१८} भांणावत^{१९} ।
 गोकळ जीवत-संभ^{२०}, विडे^{२१} हूआ^{२२} वड रावत ॥
 सीसीदौ^{२३} 'कल्याण', रहै रावत निभमैयण^{२४} ।
 हरीदास रटुववड^{२५}, रहै 'कचरी' रिण डोहण ॥
 हरिसिघ^{२६} हेक भाटी रहै^{२७}, दुल्लह^{२८} सुरतांणी घडा ।
 'भीमेण'^{२९} रहंतै 'अमर' रै, रहिया^{३०} रावत अतडा^{३०} ॥१०॥

भागी^{३१} खान पहाड, छाड^{३२} छळ^{३३} वळ^{३४} वूंदेली ।
 भागी दरिया^{३५} खान, राड^{३६} मूकै^{३७} रोहिल्लौ ॥
 गी^{३८} भज्जै^{३९} अवदुल^{४०}, रिदै नारायण^{४१} हाडी ।
 गी^{४२} 'सादुल'^{४३} पमार, धणी^{४४} गायड^{४५} री गाडी ॥
 खोजी^{४६} 'गयार' सावर गयी, खग संपेखे ऊनगा^{४७} ।
 सुरतांण खुरम जुध^{४८} भाजतै, कायर^{४९} अता^{५०} भाजगा^{५१} ॥११॥

१ इ. तिमडां । २ अ.इ. घडछियौ । ३ अ.इ. कुंभ । ४ अ. हुआ । ५ अ. जूजुआ । ६ अ. जूजुआ । ७ अ.इ. जडाळे । ८ अ. टलतौ । ९ अ.इ. उपरा । १० अ.इ. श्रोण । १० इ. सुकर । ११ अ. श्रोण । १२ अ. वंवालीयो । १३ अ.इ. तणौ । १४ इ. अछरे । १५ अ.इ. वरमालीयो । १६ अ. मांनसीघ । १७ अ.इ. भिडे । १८ अ.इ. रहियौ । १९ अ. भांणावत । २० अ. जीव-संभ । २१ अ. विडे । २२ अ.इ. सीसीदौ । २३ अ.इ. निभमैयण । २४ इ. राठवड । २५ अ. हरीसिघ । २६ अ.इ. रहे । २७ इ. दुल्लह । २८ अ. भीमेणा । २९ अ.इ. रहिया । ३० अ.इ. एतडा । ३१ इ. भागी । ३२ अ.इ. छाडि । ३३ अ.इ. छलि । ३४ इ. वलि । ३५ अ.इ. दरिया । ३६ इ. राडि । ३७ अ.इ. मूके । ३८ अ.इ. गो । ३९ अ.इ. भजे । ४० इ. अवदुल । ४१ अ. नारायण । ४२ अ. गो । ४३ इ. सादुल । ४४ अ.इ. धणी । ४५ अ.इ. घाइड । ४६ अ.इ. पोजी । ४७ अ. उतगा । ४८ अ.इ. जुधि । ४९ अ.इ. कायर । ५० अ. ईता । ५१ अ.इ. भजगा ।

खाल रत्ता खलहलै^१, जाण वरसाल नदी जळ ।
गज तुरंग^२ गुड्डिया^३, गुडै^४ भड हूवा^५ गूँछळ^६ ॥
रुंड^७ मुंड रोळिया^८, “भीम” पाडियो^९ भुजाळी ।
भारथ कुर-खेत रै^{१०}, हुग्री^{११} जुध लंका वालौ ॥

गजसिंघ^{१२} गिरंदां^{१३} कमधजां, माहि मेर माभी खडी^{१४} ।
पतसाह^{१५} दुहं^{१६} गजगाह प्रव, हुइ नीमडियो^{१७} हेकडी^{१८} ॥१२॥

घाइ घाण उत्तरे^{१९}, खांत सुरताण निघट्टा ।
राव^{२०} रांण हुइ रहच^{२१}, मीर उमराव^{२२} अहट्टा^{२३} ॥
खुरम गयी नीसरै^{२४}, “भीम” अमरावत साटै ।
केसूरा^{२५} लडि^{२६} मुआ^{२७}, लूण^{२८} किरि मिलियो^{२९} आटै ॥

वीर हर तिलक वावाडिया^{३०}, साइदांण^{३१} वज्जे^{३२} कटक ।
गजसिंघ^{३३} कियो^{३४} भिड गजदळां, रिण सँग्राम राहाचरक ॥१३॥

नवै कोडि कतियांण^{३५}, छपन कोडी चौमंडा^{३६} ।
चौसट्टी^{३७} जोगणी, बीस जैरै^{३८} भुज^{३९} डंडा^{४०} ॥
रगत पिद्ध वळि लिद्ध^{४१}, जपै^{४२} जैकार सकत्ती ।
कियो^{४३} संकर^{४४} सिंगार^{४५}, रुंडमाळा गळ^{४६} घत्ती ॥

कीतगि^{४७} दीठ भासंकरह, वरे वडा वर अच्छरां ।
रट्टौड^{४८} दीध रण चाचरहि, धूहड धवड पळच्चरां ॥१४॥

१ अ.इ. खलहले । २ अ. तुरंग । ३ इ. गूडीया । ४ अ.इ. गुडे । ५ अ. हूआ ।
इ. हुआ । ६ अ.इ. गूँछला । ७ अ.इ. रुंड । ८ अ.इ. रोलीया । ९ अ.इ. पाडीयो ।
१० इ. री । ११ अ.इ. हूग्री । १२ इ. गजसिंघ । १३ अ.इ. गिरिदां । १४ अ.
खडी । १५ अ.इ. पतिसाह । १६ अ. दुहं । इ. दुहु । १७ अ. नामडीयो । इ. नीम-
डीयो । १८ इ. हेठडी । १९ अ.इ. उत्तरे । २० अ. रांड । इ. रांड । २१ इ. रहव ।
२२ अ.इ. उमरा । २३ अ.इ. आवटा । २४ अ.इ. नीसरै । २५ अ.इ. सुरा । २६ अ.
लडी । २७ अ.इ. मुआ । २८ अ. लूण । २९ अ.इ. मिलीयो । ३० अ. वावाडीया ।
इ. वावाडीया । ३१ अ.इ. साइदांणा । ३२ अ.इ. वजे । ३३ अ. गजसिंघ । ३४ अ.इ.
कीयो । ३५ अ.इ. कतियांण । ३६ अ. चामंडा । इ. चामुडा । ३७ इ. चौसठ ।
३८ इ. जे । ३९ अ. भू । इ. भूज । ४० अ. डंड । ४१ इ. लीध । ४२ अ.इ. जपै ।
४३ अ.इ. कीयो । ४४ अ. संकर । ४५ अ. सिंगार । इ. सिंगार । ४६ अ. गलि ।
४७ इ. कीतग । ४८ इ. राठौड ।

जरख रीछ^१ वडुख, सिवा सत लस्स मलक्का ।
 साकणि डायणि^२ सकति, काळ भैरव काळक्का^३ ॥
 भूत प्रेत^४ पेसाच^५, बहत चेडा बह वैतर^६ ।
 वीर सिद्ध^७ वैताळ, निसाचर भूचर खेचर ॥

राठौड ज तै कीयी रिणह^८, गहण भुजाई भटकळह^९ ।
 पळ धाप^{१०} कियो^{११} पळहारियां^{१२}, कळळ, विंद कोळाहळह^{१३} ॥१५॥

एक^{१४} गया भगवाट^{१५}, सांमि छल मेल्ले^{१६} कुळ छळ ।
 हेक मुगति^{१७} साजोत^{१८}, गया भेदे रवि मंडळ ॥
 अरस हूंत^{१९} ऊतरे^{२०}, एक^{२१} वर अच्छर वरिया^{२२} ।
 एक^{२३} पडै^{२४} लोहडै^{२५}, लोह छक्का^{२६} लालुरिया^{२७} ॥

प्रिथीराज “भीम” गोकळ प्रचंड, अभंग पाड^{२८} ऊपाडिया^{२९} ।
 जुध कमंध जोध-विद्या नमौ^{३०}, जोध मार जीवाडिया^{३१} ॥१६॥

रांमायण रांमचंद, वहै^{३२} कूंभकन रांमण ।
 हणमंत खोडी^{३३} हुआ^{३४}, मरे जीवियौ^{३५} लखंमण^{३६} ॥
 अरजण^{३७} भारथ कियो^{३८}, लियण हथणापुर^{३९} ढूकी^{४०} ।
 जै दसरथ अहि-वन्न^{४१}, करन मारियौ^{४२} घडूकी^{४३} ॥

गजसिंघ कियो^{४४} गजगाहणी^{४५} “भीम” मारि भागी^{४६} खुरम ।
 कमधज्ज पखै जीती कमण, साजै नाद संग्राम^{४७} इम ॥१७॥

१ इ. रीछ । २ अ.इ. डाइण । ३ अ.इ. कालिका । ४ अ. पेत । ५ इ. पिसाच ।
 ६ इ. वैतर । ७ अ. सिध । ८ अ.इ. रिण । ९ अ.इ. भाटकलह । १० अ.इ. धापि ।
 ११ अ. कीयी । १२ अ.इ. पलहारीयां । १३ अ.इ. कोलाहल । १४ इ. ऐक । १५ अ.इ.
 भंगवाट । १६ इ. मेल्ले । १७ अ.इ. मुगत । १८ अ.इ. सासोज । १९ अ.इ. हूंत । इ. हुत ।
 २० अ.इ. उत्तरे । २१ अ.इ. ऐक । २२ अ.इ. वरीया । २३ इ. ऐक । २४ अ.इ.
 पडै । २५ अ.इ. लोहडै । २६ अ. छक्का । २७ अ.इ. लालुरिया । २८ अ.इ. पाडि ।
 २९ अ.इ. उपाडीया । ३० अ. नमो । ३१ अ. जीवाडीया । इ. जीवाडीयो । ३२ अ.इ.
 वहै । ३३ अ.इ. खोडी । ३४ अ. हुआ । इ. हूआ । ३५ अ.इ. जीवियौ । ३६ अ.इ.
 लखमण । ३७ अ. अरजणि । ३८ अ.इ. कीयी । ३९ अ. हथणापुर । ४० अ. ढुकी ।
 ४१ इ. वन्न । ४२ अ.इ. मारीयो । ४३ अ. घडूकी । ४४ अ.इ. कीयी । ४५ अ.
 गजगाहणी । इ. गहगाहणी । ४६ अ. भागी । ४७ इ. संग्राम ।

जिसी पत्थ भारत्य, रांम जीतौ^१ रांमायण^२ ।
जिसी^३ लखण इंद्रजीत^४, भीम भगै^५ दुज्जोअण^६ ॥
जिसी जोध बलि भद्र, पळव दांणव संहारियै^७ ।
जिसी वीर नरसिंघ, हरिणकस्सिप^८ वैहरियै^९ ॥
साभियै^{१०} तिपुर^{११} संकर जिसी, वांमण^{१२} चंपि पयाळ^{१३} बलि ।
गजसिंघ^{१४} भीम गोडव्वियो^{१५}, तिसी दीठ रवि चक्र तळि ॥१८॥
पडे^{१६} ढाल^{१७} दिसि^{१८} एक^{१९}, पडे^{२०} एक दिस पवखर^{२१} ।
पीलवांण इक^{२२} दिसा^{२३}, पडे^{२४} परचंड बहोदर ॥
हाड गुड^{२५} कप्पाळ, सेत दांतूसळ^{२६} सब्बळ ।
चरम मांस भडि पडे^{२७}, जांण धमळागिर ऊजळ^{२८} ॥
गजसिंघज गैमर गोडिया^{२९}, तीह कलेवर^{३०} पंजरां ।
सावज्ज सीह व्याया^{३१} सघण, रहि भोळै गिर कंदरां ॥१९॥
सोळह सै^{३२} संमंत^{३३}, हूअै^{३४} जोगण-पुर चाळै ।
सम्मै एकासियै^{३५} मास काती वडाळै^{३६} ॥
पूनम^{३७} थावर वार, सरद रित^{३८} है पालट्टी ।
वीर खेत पूरब्ब रित्त हेमंत प्रघट्टी ॥
सुरतांण खुरम भागी भिडे^{३९}, चाडि^{४०} चकथां चक्कवै ।
गजसिंघ प्रवाडी खट्टियो^{४१}, वहै भीम चीतौडवै^{४२} ॥२०॥
इति स्त्री महाराजाधिराज महाराजाजी स्त्री गजसिंघजी रौ गुण रूपक बंध
गाडण कैसोदास^{४३} रौ^{४४} कह्यो संपूर्ण^{४५}

इलोक

जाद्विसं पुस्तकं द्विष्टिवा ताद्विसं लिपितं मया,
यदि शुद्धमशुद्धं वा सम दोषो न दीयते ।

१ अ. जीतो । इ. जितौ । २ अ. रांमाइण । ३ इ. जिसो । ४ इ. इंद्रजित ।
५ अ. इ. भगै । ६ अ. इ. दुजोअण । ७ अ. इ. संघरीयै । ८ अ. हिरणकसप । इ. हिरण-
कसप । ९ अ. वैहरीयै । इ. वैहरीयो । १० अ. इ. साभियै । ११ इ. त्रिपुर ।
१२ अ. इ. वामण । १३ अ. चंपि । इ. चांपि । १४ अ. गजसींघ । १५ अ. संगोडवीयो ।
इ. संगोडीयो । १६ अ. पडे । १७ अ. ढाल । १८ अ. जिदिस । इ. जदिस । १९ इ.
एक । २० अ. पडे । २१ अ. पवर । २२ अ. इ. एक । २३ इ. दीसा । २४ अ. पडे ।
२५ इ. गुड । २६ इ. दांतूसल । २७ अ. पडे । २८ अ. ई. उजल । २९ अ. गोडीया ।
इ. गोमरडीया । ३० इ. कलवर । ३१ इ. व्यायां । ३२ इ. सहं । ३३ इ. समंत ।
३४ अ. हूअै । इ. हूऐ । ३५ अ. इ. एकासीये । ३६ अ. वंडालै । ३७ इ. पुनम ।
३८ इ. रित । ३९ इ. भिडे । ४० अ. चाडि । ४१ अ. इ. षट्टियो । ४२ इ. चीतौडवै ।
४३ आ. कैसोदास । ४४ आ. रौ । ४५ इ. प्रति में इस प्रकार है—२० इति श्री महाराजा
श्री गजसिंघजी रौ गुण रूपक-बंध संपूर्ण । सिधीजी श्री मेघराजजी पठनारथं ॥ श्रीरक्त ॥
कल्याणमस्तु ॥ १ ॥ श्री

परिशिष्ट १

जोधपुर राज-वंश के गीत

[राजस्थानी साहित्य की अपनी एक निजी विशेषता है—“डिंगल गीत साहित्य”। यह गीत साहित्य राजस्थानी तथा गुजराती चारण कवियों की देन है। यही कारण है कि इन उपर्युक्त दोनों भाषाओं के साहित्य के अतिरिक्त अन्यत्र दूसरी भाषाओं के साहित्य में इनका नितान्त अभाव है। अतः इस प्रकार से गीत साहित्य का महत्व राजस्थानी साहित्य में और भी बढ़ जाता है।

यों तो इन गीतों ने साहित्य-रंगमंच के हर रंग को निखारा है, लेकिन साहित्य का ऐतिहासिक पक्ष इनका विशेष आभारी है क्योंकि इन गीतों ने इतिहास की उन महान् विभूतियों की स्मृति एवं प्रसंगों को अपने आंचल में आश्रय दे जीवित रखा है जिनको कि इतिहास तक ने भुला दिया था। स्यात् ही ऐसा कोई वीर योद्धा इन गीतों द्वारा प्रशंसित तथा सम्मानित होने से वंचा हो। आज गीतों में उल्लेखित ये पवित्र स्मृतियाँ, राजस्थानी ऐतिहासिक साहित्य की अमूल्य निधि बन गई हैं। ये साहित्यिक आभूषणों के आभावान् रत्न हैं।

इन गीतों ने ऐतिहासिक साहित्य के सभी पक्षों को प्रदीप्त किया है। यथा-शौर्य, गांभीर्य, वदान्यता आदि। ये गीत ऐतिहासिक स्मृतियों को जीवित ही नहीं रखते बल्कि ऐतिहासिक घटनाओं आदि की प्रामाणिक पुष्टि भी इन से होती है।

प्रस्तुत परिशिष्ट में प्रधान सम्पादक पूज्य श्री मुनि जिनविजय जी के निर्देशानुसार गज गुण रूपक वंश में उल्लेखित ऐतिहासिक व्यक्तियों तथा प्रसंगों से संबंधित सभी प्रकार के मुख्य गीतों को समाविष्ट किया गया है —संपादक]

१ राव सही

गीत छोटी सांगोर

सूधै मन जात हालियौ सीही,

“सेत” सुतन अंग वीहली साज ॥

मूळ राज नाळैर मेलियौ,

ऊपर करौ कनीजा आज ॥१॥

शब्दार्थ—हालियौ - चला। सुतन - पुत्र। वीहली - बहुत। साज - सामान। मेलियौ - भेजा। ऊपर - मदद, सहायता। कनीजा - कनीज का, राठीड़।

*यह गीत ख्यातों के आधार पर रचा हुआ प्रतीत होता है। क्योंकि मूल राज तो राव-सीहा से बहुत पूर्व हो चुका था। [दे. डॉ. गो. ही. ओझा कृत जोधपुर का इतिहास, प्रथम खंड पृ. १४६ से १५७]

पाठान्तर

१ ख. प्रति में सेत सुतन नीधां संग साज।

जात गोमती चालिया^१ जात्री ,
 सगपण छै आगई^२ सात ॥
 जादव राय जोय आवां जद ,
 वळता करां सगपण रो वात ॥२॥
 पाटण "सीह" अचळ परणिया ,
 "मूला" तराँ मांडहै माल ॥
 भाटी तणी कमंध घट भांजै^४ ,
 सत्र तणी अरधंगी साल^५ ॥३॥
 कमधज^६ जादवै वैर कदोकी ,
 ऊंचासरै उजाळै आय ॥
 "सीह" मारियौ "लाखौ" सांमी^६ ,
 जग जाय^७ पण वात न जाय ॥४॥

(अज्ञात)

२ राव आसथान*

गीत पंखाळी

पाली ऊपडै गा खेड पहली । गोयल खागां गाळै ॥
 सीह तणा विरद सीहावत । आसथान ऊजवाळै ॥१॥
 ईडर संखोधार ऊपरा । आण वधारै येती ।
 नवकोटी मारवाड खगां नर । सीहै लीध सहेती ॥२॥

शब्दार्थ—जात — यात्रा । आगई — पहिले ही । जादव-राय — श्री कृष्ण ।
 जोय — दर्शन करके । वळता — वापिस लौटते समय । सगपण — सम्बंध । तराँ — के ।
 मांडहै — कन्या पक्ष वालों का स्थान । कदोकी — कभी का । ऊंचासरै — जन्म स्थान,
 निकास स्थान । सांभी — यादवों की समा शाखा का व्यक्ति ।

गाळै — ध्वंस किए, नष्ट किये । विरद — विरुद्ध । कीर्ति । सीहावत — सीहा का
 पुत्र । लीध — ली ।

*यह गीत राव सीहा के तीनों पुत्र आसथान, सोनंग और अज के संबंध में है जिन्होंने क्रमशः पृथक-पृथक खेड, ईडर और संखोधार (द्वारका) पर अधिकार किया था ।

पाठान्तर

१ ख. आया । २ क. ही । ३ ख. भागे । ४ ख. सत्रां तराँ यर घला साल ।
 ५ ख. कमंद । ६ ख. जादवां । ख. सी है लाखो जाम साजीयौ । ७ ख. जुग जासी ।

आसथांन सोनंग अज ऊभा । भाई त्रहू भुजाळा ।

गोयल खागां भार गाळिया । कमधज वड करनाळा ॥३॥

(अज्ञात)

३ राव धूहड*

गीत पंखाळी

सत्र पेठा वनै मनै सक संबळी । दियै वरस डंड अकण दीय ।

अण गंजियौ नह रहियौ अकौ । कोट छत्र तो आगळ कीय ॥१॥

आसथांनोत कियां बळ असमर । धर "धूहड" करते धक चाळ ।

पीह जैसांण सोनगर पहली । रसै पेस कस संभर साल ॥२॥

खळ अनमंद अखूटी खूटै । दीह रात सारसौ डर ।

कोटां दहूं विचै राव कमधज । नेसां पेस लियंत नर ॥३॥

(अज्ञात)

४ राव रायपाळ^१

गीत पंखाळी

थह कोट ऊथाप धरां थरसलै । रिम रेसां रेसे रिम-राह ।

रायां-पाळ वसै रढ-रांभण । बाघां दहूं विचै वाराह ॥१॥

आळ भयंकर कांन अळवै । टाळै नहीं कांइ कांटाळ ।

गाळ नाहरां हियै खेडेचौ । आठूं पौर करै गिड आळ ॥२॥

शब्दार्थ—गाळिया — संहार कर दिये । वड — बड़ा । करनाळा — शूर, वीर ।

मनै — मानते हैं । संक — भय, शंका । अण गंजियौ — अपराजित । आगळ — अगाडी । असमर — तलवार । धकचाळ — युद्ध । पीह — राजा । जैसांण — जैसलमेर । सोनगर — स्वर्णगिरि, जालोर । खळ — शत्रु । नेसां — घरों ।

थह — स्थान । ऊथाप — उखाड कर । थरसलै — कंपायमान होती है । रिम — शत्रु । रेसां — पराजय । रेसे — पराजित करता है । रिम-राह — शत्रुओं के लिए राह रूप । रढ-रांभण — रावण के समान हठ करने वाला । आळ — लड़ाई । कांटाळ — सिंह । गिड — सुअर ।

*इस गीत में वर्णित इतिहास ख्यातों आदि में नहीं मिलता है ।

^१गीत में कवि ने रायपाल के शौर्य का वर्णन किया है ।

कांठे रहै कंठीर कण्णती । लोपै तकै नहीं तळ लीह ।
धूहड़ ऊत सदा दिन धोळै । अकल चरै वळै अण-बीह ॥३॥
(अज्ञात)

५ राव कनपाळ*

गीत पंखाळी

भारथीयै ध्रहै अस भांफां भर । पोयण नाळी तेग परठै ।
कांन बहावै कांन नरेसु । सात्रव काळ गंजैगंठै ॥१॥
बोल विचाळव बांह बहेबळ । मंडप अथ अह कसप मथै ।
केवी पग स "सीह" कळोधर । नांम पराक्रम उनथ नथै ॥२॥
...सभोभ्रम "पाळ" ज नंदण । जोर महा त्रस आत्रस जाणै ।
"कांन" उभै अह कालंग केवी । येह अरी दळ खेबर आंणै ॥३॥
(अज्ञात)

६ राव जालणसी^६

गीत पालवणी

सलह सोहड सज अस पलांणै । 'जालण' जोगंद्र कीध जुआंणै ।
आप तराँ पहला धन आंणै । वांका ढोवा थाट विनांणै ॥१॥

शब्दार्थ— कंठीर — सिंह । कांठे — समीप । कण्णती — गर्जना करता हुआ ।
दिन-धोळ — दिन दहाड़े । अकल — अकेला रहने वाला सुप्र । अण बीह — निडर ।
भारथीयै — युद्ध में ? अस — घोड़ा । भांफां — छलांगों । केवी — शत्रु ।
कळोधर — वंशज । उनथ — जिसके नाथ नहीं । नथै — नाथ डालता है ।
सलह — सिलह — अस्त्र शस्त्र, हथियार । सोहड — सुभट, योद्धा । अस-अश्व — घोड़ा ।
पलांणै — चारजामा कसते हैं । जोगंद्र — योगीन्द्र । कीध — किये । जुआंणै — योद्धाओं
को । वांका — विकट, बांकुरा । ढोवा — आक्रमण, युद्ध । थाट — सेना, दल ।
विनांणै —

*राव कनपाल का इतिहास बहुत ही संक्षेप में मिलता है अतः इस गीत में वर्णित शौर्य का मेल ठीक नहीं बैठता है । वैसे गीत भी बहुत क्लिष्ट है ।

राव जालणसी ने ऊमरकोट के सोढा रांणा गांगा को परास्त कर दण्ड स्वरूप में खिराज वसूल किया था । इसी प्रकार अपने चाचा का प्रतिशोध लेने के निमित्त हाजी मलिक सराई को मारा डाला तथा थट्टा प्रांत को लूट कर मुल्तान के शासक से चौध वसूल की थी । इन्होंने जैसलमेर के भाटियों तथा भीनमाल के सोलंकियों को भी युद्ध में परास्त करके कर वसूल किये थे । इन्हीं घटनाओं के संबंध में किसी समकालीन कवि ने उपर्युक्त गीत की रचना की थी ।

‘पाळ’ कळोघर पक्कर पूरै । खेंगां गाहण खागां खूरै ।
 थाटां मुहडें थांणा थूरै । आरांणां माथै दळ ऊरै ॥२॥
 पाखरियो तेजी पीयावै । ‘कांन’ समोभ्रम कांटा कावै ।
 अणभंग आप सत्रां सर आवै । वाळै केवा ढोल वजावै ॥३॥
 दूजड हथी वडै दस देसां । नर नायक जळ चाढे नेसां ।
 प्रसण हूंत भरावै पेसां । अेम करै ‘जालण’ घर अेसां ॥४॥

(अज्ञात)

७ राव छाडी*

गीत छोटी सांणोर

तलवाळा हूंत महा दळ तांणै , ऊतरियो ईसाळू आय ।
 जैसल-मेर तणा जालणवत , घडां उडाय सहर धकाय ॥१॥
 तुंग प्रमाण ‘छाडै’ वजडां हथ , घाव माडेचां फीज धड़ी ।
 रावळ सर आयी खड-रावह , प्रगट वखूणै भीड़ पड़ी ॥२॥

शब्दार्थ—पाळ — रायपाळ । कळोघर — वंशज । पक्कर — हाथी या घोड़े का झूल नुमा कवच । पूरै — सजाता है । खेंगां — घोड़ों । गाहण — ध्वंस या संहार करने को । खागां — तलवारों । खूरै — काटता है ? थाटां — दलों । मुहडें — अगाड़ी । थांणा — चौकी । थूरै — ध्वंस करता है । आरांणां — युद्धों, युद्ध स्थलों । माथै — ऊपर । ऊरै — भोंकता है । पाखरिये — कवचधारी घोड़ा या हाथी । तेजी — घोड़ा । पीयावै — पीड़ित होते हैं । कांन — कनपाल । समोभ्रम — पुत्र । कांटा — आततायी । कावै — मिटाता है, दूर करता है । अणभंग — वीर । सत्रां — शत्रुओं । सर — ऊपर । वाळै — प्रतिशोध लेता है । केवा — कष्ट, दुख । दूजडहथी — खड्ग धारी । जळ — आभा, कांति । नेसां — वंशों । प्रसणां — शत्रुओं । हूंत — से । भरावै-पेसां — दण्ड या कर वसूल करता है । अेसां — आराम ।

तुंग — सेना । वजडांहथ — खड्ग धारी । माडेचां — भाटियों । सर — ऊपर । वखूणै — जैसलमेर के गढ़ का नाम । भीड़ — संकट, कष्ट ।

*राव छाडाजी ने जैसलमेर के तत्कालीन शासक को कहला भेजा कि अगर वे गढ़ के बाहर नगर बसायेंगे तो उनको खिराज देना होगा । जैसलमेर के नरेश ने इस पर कुछ भी ध्यान नहीं दिया । यह देख छाडाजी ने जैसलमेर पर चढ़ाई कर दी, भाटी पराजित हो गये और अपनी कन्या का विवाह छाडाजी के साथ कर सुलह करली ।

कमधज “छाड़ै” कीध कोपियै, माड-धरा ऊपर मच्छर ।

“धहड़” हरौ धूण खग धारां, सत्र लूटे वलीयौ समर ॥३॥

भाटी मांण पांण तज भागौ, पुळ लगौ आथांण पखै ।

सुज जीती समहर नव-सहसै, दणियर ससहर साख दखै ॥४॥

(अज्ञात)

८ राव तीडौ*

गीत छोटी सांणोर

सांमंत सभ सार संग्राम सजूजा^१, मिळतै कमध महा जुध माय^२ ।

भीनमाळ^३ हूँत^४ ताडै^५ भागा, सोनंग रा दळ सबळ संभाय^६ ॥१॥

छोडावियौ^७ मच्छर “छाडावत”^८ कळह बार ग्रहे केवांण ।

भिड़तै खेत भील-पुर भागौ, चौरंग सांवतसीह चहुवांण ॥२॥

गीतमपुर हुँता ग्रह गांजै, वळै प्रसण मुकावी बाळ ।

खांडां बळ भांगै खेडेचै, रावत साचोरौ रण - ताळ ॥३॥

विच साचोर भीलपुर^९ वासी, “सीहा” हरै मनाडै संक ।

मातंगपुर कटकां मरवाडै, धणियां ताय ढीलविया धंक^{१०} ॥४॥

(अज्ञात)

शब्दार्थ—माड-धरा—जैसलमेर राज्य । मच्छर-मत्सर—कोप, गुस्सा । वळियौ—लौटा । समर—युद्ध । मांण—मान, गर्व । पांण-पांण—प्राण-बळ । पुळ—जाकर । आथांण—आस्थान, घर, देश । पखै—पक्ष में । समहर—युद्ध । नव सहसौ—राठौड़ । दणियर-दिनकर—सूर्य । ससहर—चंद्रमा । साख—साक्षी । दखै—कहते-हैं ।

सांमंत—सांमंतसिंह चौहान, योद्धा । सार—तलवार । सजूजा—योद्धा । मच्छर—गर्व, अभिमान । बार—समय, वेला । केवांण—तलवार । चौरंग—युद्ध । वळै—फिर, और । प्रसण—शत्रु । मुकावी—छोडा कर । रण-ताळ—युद्धस्थल । हरै—वंशज । मनाडै—मना कर । संक—भय । आतंक । ढीलविया—शीथिल किये । धंक—इच्छा ।

*यह गीत इतिहास की कसौटी पर ठीक नहीं उतरता है, क्योंकि सांवतसिंह शिला-लेखों के अनुसार राव आसथान और धूहड़ का समकालीन था ।

पाठान्तर

१ क. सांमतसी जसा संग्राम सजूडा । २ क. माहै । ३ ख. भीलमाल । ४ ख. सुं । ५ ख. तीडौ । ६ क. सोनंग राव लियो वध साहै । ७ क. छांडाडियो । ८ क. छांडावत । ९ क. कर्णगर । १० क. मुह भाजवै गयो मछरीक ।

६ राव सलखौ*

गीत छोटी सांणोर

वाहस्वां हुआ न की वैराई, घण वहस केकांणां धुआ ।
 पोह फुटंत समी दे पर भूय, "सलख" लिया ताय सलख हुआ ॥१॥
 दुजडां-हत्ये ग्रहे दस देसां, घड़ सबली माचंतां घाय ।
 कमळा भेट करै केवीहर, कप लोयै ज कनौज राय ॥२॥
 करै न कळह क्रमै जाय केवी, करै जियां करमाळ कर ।
 "छाडा" हरी कहै नह छांडू आथ संग्रवी जका यर ॥३॥
 ऊगमण लगै सूर उछजियै, मिलै महादळ मच्छर मांण ।
 तांगै वतलायी "तीडावत", ढांणियां ताय ढीलवियै ढांण ॥४॥

(अज्ञात)

१० राव वीरम^{१२}

गीत

वटाऊ वात कहौ वीरमायण, जोखम दीह तरौ जुड़िया ।
 पोरस वात सहू को पूछे, पैला केता रण पड़िया ॥१॥

शब्दार्थ—वाहस्वां — चोरों का पीछा करने वाला दल, रक्षक । वैराई — शत्रु ।
 पोह-फुटंत — प्रातःकाल होते ही । समी — समय, पर । पर-भूय — पराजय । दुजडां-
 हत्ये — खड्गधारी । घड़ — सेना । कमळा — लक्ष्मी । केवीहर — शत्रु वंशज, शत्रु ।
 कळह — युद्ध । क्रमै — चलते हैं । केवी — शत्रु । करमाळ — तलवार । कर —
 हाथ । हरी — वंशज । ऊगमण — पूर्व दिशा । उछजियै — उदय । वत — धन,
 द्रव्य, मवेशी ।

वटाऊ — राहगीर । वीरमायण — वीरम + अयण — वीरम देव का चरित्र या
 वृत्तान्त । जोखम — आपत्ति, कष्ट । दीह — दिन । जुड़िया — भिड़े, युद्ध किया ।
 पोरस — पौरुष, बल, प्रराक्रम । सहू — सब । पैला — विपक्षी के, उस ओर के । रण
 पड़िया — वीर गति प्राप्त हुए ।

*यह राव तीडा का छोटा पुत्र था । भीनमाल के चौहान शासक को पराजित कर वहां
 का बहुत सा माल लूट कर अपने साथ ले आया । इसी घटना के संबंध में किसी
 समकालीन कवि ने उपर्युक्त गीत की रचना की थी ।

^{१२}यह राव सलखा का छोटा पुत्र था । वि. सं. १४४० में जोहियो से युद्ध करते हुए
 जोहियावाटी में लखवेरे के पास वीर-गति को प्राप्त हुआ । उक्त गीत में इसकी वीर
 गति प्राप्त होने को किसी समकालीन कवि ने वर्णन किया है ।

जुडिया "वीर" तणी जुग जांगै, दाखव पंथी देख दुयै ।
 काला सूं विढतां के वेळा, हांमै के हथवाह हुयै ॥२॥
 "वीरम" सूं "देवाळ" विढतां, अणी चढै नह ऊहवियौ ।
 राव राठौड़ तरणै रहंतै, राव जोइयां रिण रहियौ ॥३॥
 विढण वखांण करै वाटाऊ, अतो जांगू आवडियौ ।
 सत्रां सहेत महेवा सांमी, पाडी माभी रण पडियौ ॥४॥
 (दूदौ बारहठ)

११ राव चूंडी*

गीत पंखाळी

चंडराव प्रवाडी सुर चवीजै, दीजै यम लीजै यम देस ।
 पंडर वेस पाड गढ पैठी, पडियां पैठी पंडर वेस ॥१॥
 वारां वेहूं समोअम वीरम, कह केतां जम कहतां कहेस ।
 वह दुरवेस दुरंग कीधी वस, दीधी सो वेही दरवेस ॥२॥
 चहुँ चकै नव खंड चूंड-रज, परवाडांमल बहूँ पर ।
 मेछां कहा दुरंग मेछां रौ, मारै लीधी दीधी मर ॥३॥
 (दूदौ बारहठ)

शब्दार्थ—वीर — वीरमदेव । दाखव — कह । विढतां — युद्ध में भिड़ने पर ।
 ऊहवियौ — बचा, जिवंत रहा । रहंतै — रहने पर । विढण — युद्ध । वखांण —
 प्रशंसा । वाटाऊ — राहगीर । आवडियौ — (?) । महेवा — बाह्दमेर के आस
 पास का भू प्रदेश जिसे आजकल मालानी भी कहते हैं । पाडी — मार कर । माभी —
 मुखिया, प्रधान । पडियौ — वीरगति को प्राप्त हुआ ।

चंड-राव — राव चूंडा । प्रवाडी — युद्ध । सुर — देवता । चवीजै — कहा जाता
 है, वर्णन किया जाता है । पंडर-वेस — बादशाह, यवन । पैठी — प्रविष्ट हुआ ।
 पडियां — वीर गति प्राप्त होने पर । वारां — समय । वेहूं — दोनों । समोअम —
 पुत्र । दुरवेस — बादशाह, यवन । कीधी — किया । दीधी — दिया । चहुँचकै — चारों
 दिशाओं में । चूंडरज — राव चूंडा । परवाडां-मल — योद्धा । मेछां — मुसलमानों ।
 लीधी — लिया ।

*राव चूंडा ने नागौर के यवन शासक से युद्ध कर के नागौर को अपने अधिकार में कर
 लिया था परन्तु कुछ समय के बाद पुंगल के भाटियों और मुलतान के सेनानायक
 सलीम की सहायता प्राप्त कर यवन शासक ने पुनः राव चूंडा पर आक्रमण कर
 दिया । यहां पर पुंगल के भाटियों के घोड़े से राव चूंडा युद्ध में वीर गति को प्राप्त
 हुआ । कवि ने उक्त घटना के संबंध में उपयुक्त गीत की रचना की । यह घटना
 वि. सं. १४८० की है ।

१२ राव रिडमल*

गीत छोटी साँगोर १

अँ पूरव वात सांभळी अँही, रण चूकै अत दिन "रयण" ।
सूतै तै काढी जै सुजडी, जागियां काढै घणा जण ॥१॥

अत दिन चूक रचै मेवाडां, यम हल हुआ हुआ ऊखेळ ।
रिडमल तेथ कियो रायां-गुर, मन भुजवळां कटारी मेळ ॥२॥

चूक हुआं के नर चीतारै, वाहै कई पडंतां वाढ ।
पीडियां "रयण" ज्यं प्रतमाळी, केथी कोय न सकियो काढ ॥३॥

अँ अखियात "सलख" हर ओपम, अगै न कोधी सुर असुर ।
कर सूतै मेलिया कटारी, अणी ज फूटै प्रसण उर ॥४॥

ऊससै आभ लगां आवंतां, राव तणी रज देख रथ ।
रैवंत रोक न रहियो रांणी, पुळिया विमुहा पाट पत ॥५॥

(चानण खिडियो)

शब्दार्थ—सांभळी — सुनी । अँही — ऐसी । रयण — राव रिणमल । सुजडी — कटारी । चूक — घोखा, पडयंत्र । ऊखेळ — युद्ध । तेथ — वहाँ । रायां-गुर — महाराजा । चीतारै — स्मरण करते हैं । वाहै — प्रहार करते हैं । वाढ — धारदार शस्त्र । प्रतमाळी — कटारी । केथी — कहीं पर । अखियात — अद्भुत । ओपम — उपमा शोभा । कोधी — की । सुर — देवता, हिंदू । असुर — यवन, राक्षस । प्रसण — शत्रु । ऊससै — जोश में आकर । आभ — आकाश । रज — पराक्रम, शौर्य । रैवंत — घोड़ा । रांणी — सूर्य । पुळिया — चले गये । विमुहा — उलटे । पाट-पत — राजा ।

*राव रणमल को मारने हेतु वि. सं. १४६५ की कात्तिक वदि ३० को रात्रि में महाराणा कुंभा के व्यक्ति उसके शयनागार में पहुँचे । उस समय वह धोर निद्रा में था । उसे निद्रा में सोते हुए को उन्होंने पलंग से बाध दिया और बंधे हुए पर शस्त्र प्रहार करने लगे । वीर रणमल भी जिस पलंग से बंधा हुआ था उसको लेकर खड़ा हो गया और विपक्षियों पर अपनी कटार से प्रहार करने लगा । इस मारकाट के अंदर वीर रणमल ने अठारह व्यक्तियों को कटार से मार कर स्वयं भी वीर गति को प्राप्त हुआ ।

गीत संख्या (२) में आये हुए व्यक्तियों की ठीक संख्या (१८) दी गई है ।

गीत छोटी सांणोर २

मोकाळिया "कूँभ रांण" "राव" मारण, अठारै अमराव अचूक ।
लोह रडमाल अठारै लागां, भांज अठारै कीधा भूक ॥१॥

"चूंडा" सुतन लोहड़ां चवतां, यम उठियौ ढोलियौ उपाड ।
पिंड नव दूण घाव पूरविया, प्रसण नव दूण दिया पछाड ॥२॥

कमधज कळह अकाळ कोपियौ, सूतां सरस वजावै सार ।
"वीरम" हरै अकेले वडतै, चवदै अनै मारिया च्यार ॥३॥

घावां घाव आहाडां घायै, विजडां बाढे चाढ धज-बंध ।
लेगी सुरग वरै रंभ लारां, कमधज सारां करे कबंधे ॥४॥

रहसी अमर घणा जुग रिडमल, औ वातां जग सिर अणपार ।
अंत दीह घावां रिण अरि हण, लीधां गयी आपरी लार ॥५॥

(अमरी बारहठ)

गीत छोटी सांणोर ३*

सिर संपत संग्रहै निहसे नित प्रत, करिमर नीप सहीयै करि ।
रैवंत पूठि वसै ज इ रणमल, वास म गिण तई वरै हरि ॥१॥

शब्दार्थ—मोकाळिया — भेजे । लोह — शस्त्र प्रहार । कीधा — किये । भूक —
चूर चूर, नाश । लोहड़ां — शस्त्र प्रहारों । चवतां — श्रवते हुए । यम — इस प्रकार ।
पूरविया — पूरे हुए । प्रसण — शत्रु । सार — कटार । वडतै — कटने पर । आहाड़ां —
सीसोदियों । घायै — मार कर । विजडां — कटारियां । बाढ — शस्त्र की धार ।
धजबंध — वीर । रंभ — अप्सरा । लारां — पीछे । कबंध — बिना शिर का घड़
राठीड । अण-पार — असीम । दीह — दिवस । लार — पीछे ।

करिमरि — तलवार । नीप — (?) । सहीयै — धारण किए हुए । करि —
हाथ में । रैवंत — घोडा । पूठि — पीठ पर । वरै-हरि — शत्रु वंशज ।

*इस गीत में राव रणमल के शौर्य का वर्णन है ।

कीजै “रयण” तरौ नित कुल कृत, वैरां ऊपरी वत्र अवत्र ।
 जई अहोनि स दुहिला जंगम, सुहिला तइयां म गिणि सत्र ॥२॥
 “सळखा” हरौ समझी सवदी, सेना ऊलि मेले सधर ।
 घाए तइ ऊपाडै अरि घर, घोडै जइयां करै धर ॥३॥
 सुजड-हथा “चांड राउ” समोभ्रम, विधि वीरातन वैर विधि ।
 रोपै जई पवंगि आसण रिध, रिप तई भजै राज रिधि ॥४॥

(अज्ञात)

१३ राव जोधा*

गीत खुडद सांणोर

वह रांणा राव विवाद विवरजित, “जोध” कळह कथ जिका जुइ ।
 वैरायतां तो वाली भगवट, हव जांणै कुळवाट हुइ ॥१॥
 मारग “वीरम” हर कुळ मंडण, मुडिया तो सूं नूभै-मण ।
 मुडियां तणौ हमै जळ मांझळ, परियां वट जांणै प्रसण ॥२॥

शब्दार्थ—रयण — रणमल । दुहिला — कठिन, कष्टमय । जंगम — घोडा ।
 सुहिला — सुलभ, सुखप्रद । सत्र — शत्रु । सुजड हथा — खड्गधारी । समोभ्रम — पुत्र ।
 पवंगि — घोड़े पर । रिध — अटल । रिधि — ऋद्धि ।

विवाद — वाक्युद्ध, झगडा । विवरजित — निषिद्ध मना । कळह — युद्ध । कथ —
 कथा, वार्ता । जिका — वह । जुइ — पृथक, भिन्न । वैरायतां — शत्रुओं । तो-वाली —
 तेरी । भगवट — भगना क्रिया । हव — अब । जांणै — मानो । कुळवाट — वंश का
 मार्ग । नूभै-यण — निर्भय मन वाले । परियां — पूर्वज । वट — मार्ग । प्रसण —
 शत्रु ।

* राव रणमल के चित्तौड़ में सीसोदियों द्वारा धोखे से मारे जाने के कारण राव जोधा को मेवाड छोड़ कर मारवाड़ की ओर भागना पड़ा । राजपूत वीरों के लिये पलायन अशुभ तथा कायरता की निशानी समझा जाता है । इस पलायन का राव जोधा के हृदय में बड़ा क्षोभ बना रहता था । इस क्षोभ को मिटाने हेतु किसी समकालीन कवि ने उपर्युक्त गीत रच कर राव जोधा को सुनाया था ।

इसी भाव का गीत महाराणा सांगा को भी बारहठ जमणाजी ने सुनाया था ।

(देखो महाराणा यश प्रकाश पृ. ७०)

सुजड वहांतां “रयण” सभोभ्रम, अंतर किम दीसै अकळ ।
 कुळ छळ थायां हमै केवियां, छांडेवा संग्राम छळ ॥३॥
 प्रब प्रब “जोध” प्रसण पडियालग, निहसंतां रण भड निवड ।
 लगै जकां वापीकी लाधी, भू भांजेवा प्रसण भड ॥४॥
 जोयी आज तूभ वड जोधा, धीर अखाडै खडग धर ।
 न रहियो सत्र हर अण नमियो, नमिया चहरणहार नर ॥५॥
 (महम्मदजी बारहठ)

गीत पंखाळो २*

गह रांणा कसूमन दाखै गढी, थाट “कुंभकन” वाट थया ।
 “जोध” तरौ सांमहां जाता, गाडां भय हाथियां गया ॥१॥
 सांमो “जोध” तरौ सै जूतै, सांभी सलह सजतै सैण ।
 थय कुंजर विमुहां कुंभाथळ, कागमुहा दीठां “कुंभेण” ॥२॥
 घर खेहां छाई “धूहडियै”, खेडैचे अस खेडिया ।
 नर हैमर नागंद्र नरेसुर गैमर गाडा देख गया ॥३॥
 (गेहो खिडियो)

शब्दार्थ—सुजड — कटार, तलवार । रयण — राव रणमल । सभोभ्रम — पुत्र ।
 अकळ — वीर । छळ — कर्तव्य । हमै — अब । केवियां — शत्रुओं । छळ — कीर्ति,
 मर्यादा । प्रब — पर्व, अवसर, युद्ध । पडियालग — तलवार । निहसंतां — संहार करते
 हुए । निवड — जबरदस्त । वापीकी — बपीती । लाधी — प्राप्त हुई । धीर —
 धैर्यवान । अखाडै — युद्ध, युद्धस्थल । सत्र — शत्रु । हर — वंशज । अणनमियो —
 बिना झुका हुआ । चहरणहार — आलोचना करने वाला, निंदा करने वाला ।

दाखै — कहता है । थाट — सेना । सांभी — सम्मुख । सलह — सिलह । काग-
 मुहा — शकट, गाडा । धूहडियै — राव धूहड़ का वंशज । राव जोधा । हैमर — घोडा ।
 नागंद्र — नागदहा । गैमर — हाथी ।

*ख्यातों के अनुसार राव जोधा ने मेवाड़ पर आक्रमण करने हेतु एक बड़ी सेना तैयार
 कर ली थी । परन्तु उतने घोड़े तैयार नहीं हो सके जितनों की आवश्यकता थी ।
 अतः राव जोधा अपने सिपाहियों को गाड़ियों में बैठा कर ले गया । महाराणा के पास
 काफी बड़ी सेना थी जिसमें हाथी-घोड़े भी थे, परन्तु राव जोधा की गाड़ियों में भरे
 सिपाहियों की सेना देख कर महाराणा के योद्धा घबरा गये और राव जोधा से संधि
 करली । उक्त घटना से संबंधित उपर्युक्त गीत गेहा कवि ने रचा था ।

१४ राव सूजौ*

गीत प्रहास सांणोर

तुरक चालियौ वासदे विध मरणवा त्रियां, देस छळ जाग रिडमाल दूजा ।
 भाईयां सरसी वार "सातल" भणै, समर भर भाल राठीड "सूजा" ॥१॥

सुर नरां साह अवगाह सारां सरै, घाततौ घांण घमसांण घेरै ।
 रोद दळ भाडतौ पाड़तौ खाग रिम, डांण भर गयौ सुरतांण डेरै ॥२॥

सारसा "दूद" सत्रसाल परगह सहत, जोध रा जोध अणपाल जुडिया ।
 सूर पड ऊपडै सरै आन म सगत, मुग्गळां थाट दहवाट मुडिया ॥३॥
 (पाती बारहठ)

शब्दार्थ—वासदे — अग्नि आग । विध — प्रकार, तरह । त्रियां — वहां । छळ — लिए । दूजा — द्वितीय, वंशज । सरसी — समान । वार — वेला, समय । समर — युद्ध । भर — भार, उत्तरदायित्व । अवगाह — युद्ध । घाततौ — डालता हुआ । घांण — संहार । घमसांण — सेना । रोद — यवन । भाडतौ — काटता हुआ । पाड़तौ — मारता हुआ । रिम — शत्रु । डांण — कूदना, छलांग । सारसा — समान । दूद — राव दूदा राठीड़ । परगह — परिग्रह । जोध — राव जोधा । जोध — पुत्र । अणपाल — निशंक, निर्भय । जुडिया — भिड़े । थाट — सेना । दहवाट — दशों दिशाओं में, तितर-वितर ।

* राव सातल का छोटा भाई वरसिंह मेड़ते में शासक था । उसने वहां से चढ़ कर सांभर को लूटा । इस पर अजमेर का तत्कालीन सूबेदार मलिक युसुफ (मल्लु खां) सिरियां खां और मीर घडूला को साथ लेकर ससैन्य मेड़ते पर चढ़ आया । तब वरसिंह और दूदा दोनों भाग कर जोधपुर में राव सातल के पास पहुंचे । पीछे-पीछे यवन सेना भी आई और जोधपुर राज्य में लूट-खसोट करती हुई पीपाड़ से तीजणियों को पकड़ कर ले गई । राव सातल भी चुपचाप बैठा न रहा । वरसिंह दूदा सूजा वरजांग आदि को साथ लेकर ससैन्य कोसाणा में पहुंच कर रात्रि में यवन सेना पर आक्रमण बोल दिया । दूदा ने सिरियाखां का हाथी छीन लिया और राव सातल ने बड़ी वीरता से युद्ध कर मीर घडूला को मार डाला तथा तीजणियों को छुड़वा लिया । यवन सेना भाग छूटी ।

इस युद्ध में गीत नायक वीर सूजा भी अपने भाई के साथ था और युद्ध में बड़ी वहादुरी दिखाई जैसा की गीत में वर्णन है ।

(यह घटना वि. सं. १५४७, ४८ की है)

१५ कुंवर वाघी*

गीत पंखाळी १

निस महल नह पौढै प्रसण निचिता, विमरे गिरे बसाव किया ।
 वंस तणौ उंडाव वीडरै, सीसोदा बकरा संकिया ॥१॥
 सांके राव सकी सीरोही, पौहरा कुंभळमेर पडै ।
 सत्र तोसूं समहर "सूजावत", चाळ-बंध नह कोय चढै ॥२॥
 'जोधा' हरै खेडिया जंगम, यर खग भाल लियै न उसास ।
 आहडा पहाडां चढ ओद्रकै, विमरे गिरे मांडिया वास ॥३॥
 (मेपी-बारहठ)

गीत छोटी सांणोर २

नर दूजां दसो नयण नरखेवा, लोपै अन न मांडै लाग ।
 सुजडां तणौ खंस सूजावत, वसुधा जु तै करावी "वाग" ॥१॥
 ब्रां सी है अन पोहां दिस "वाघा" दीठा दयंता लागै दोस ।
 खांडा तणौ वसुधा बळ खंडां, कमधज जतै करावी कोस ॥२॥
 सूरजमल संभ्रम नव-सहसा, रावां बियां अकूप रहै ।
 घजवड तणौ देव चै धरती, "वाघा" सूं पाधरी वहै ॥३॥

शब्दार्थ—प्रसण — शत्रु । निचिता — निश्चित । विमरै — विवरै, गुफाएं । गिरै —
 पहाड़ों में । बसाव — निवास । सत्र-शत्रु । समहर — युद्ध । सूजावत — सूजा का पुत्र,
 कुमार-वाघा । चाळ-बंध — युद्ध । खेडिया — चलाये । जंगम — घोड़े । यर-अरि —
 शत्रु । उसास — स्वास । आहडा — सीसोदिया वंश का । ओद्रकै — भय भीत होते
 हैं । मांडिया — बनाये । वास — निवास स्थान ।

सुजडां — कटारों, शस्त्रों । सूस — शपथ । अन — अन्य । पोहां — राजाओं ।
 वसुधा — पृथ्वी । संभ्रम — पुत्र । नव-सहसा — राठीड़ । बियां — दूसरों ।

*यह राव सूजा का ज्येष्ठ कुमार था । वि. सं. १५६७ में महाराणा सांगा ने मारवाड़ में
 सोजत पर अधिकार करने के लिए सेना भेजी थी, उस समय कुमार वाघा ने अपने
 पिता की आज्ञा से महाराणा सांगा की सेना का मुकाबिला किया और उन्हें पराजित
 कर भगा दिया । उक्त घटना की ओर संकेत करते हुए कवि ने वाघा के शौर्य का
 वर्णन उपर्युक्त गीत में किया है ।

इस गीत में कुमार वाघा के शौर्य का ही वर्णन है ।

विलसणहार वींद तूं वाघां, मन तो सरस "सलख" हर मोड़ ।
 रैणा तै न ... में राखी, रावां अन हूँता राठौड़ ॥४॥
 जुडिया वीर तणी पूछै जग, दाख न पंथी वात दुई ।
 काळै मरतै सु केवीलां, हीमत की हतवाह हुई ॥५॥

१६ राव गांगी*

गीत छोटी सांगोर

घड हसत म जोड म बंध वीर घंट, दुल्लवायै म ... ढाल ।
 मांडू कटक नहीं मेवाडा, मंडोवर औ औ रिडमाल ॥१॥
 "रतना" म कर सनाह सिधुरां, डांफर मतो कर आडंबर ।
 बीहै तिकै जिकै घर बीजा, राणां औ राठौड़ हर ॥२॥

शब्दार्थ—विलसण-हार — उपभोग करने वाला । वींद — दुल्हा, पति । सलख
 हर — राव सलखा का वंशज । रैणा — पृथ्वी । दाख — कह । काळै — वीर

घड-घटा — सेना । हस्त — हस्ती, हाथी । जोड — तैयार कर । सनाह — कवच,
 पाखर । सिधुरां — हाथियों । डांफर — बाह्य ठाट-वाट, तैयारी । आडंबर — युद्ध
 घोषणा । बीहै — डरते हैं । हर — वंशज ।

*राव गांगा की सेना ने महाराणा रतनसिंह की सेना को परास्त कर दिया था । उक्त
 घटना से संबंधित उपर्युक्त गीत है । घटना का वृत्तांत इस प्रकार है ।

वीरमदेव राव गांगा का ज्येष्ठ भ्राता था । अतः राज्य का अधिकारी था परन्तु
 कारणवश सामंतों ने गांगा का पक्ष लिया और उसे जोधपुर के सिंहासन पर बैठा
 दिया । इस पर वीरम के पक्ष वालों ने वीरम का अधिकार सोजत पर करवा दिया,
 अतः वीरम सोजत का पृथक शासक बन गया । वि. सं. १५८७ में होली के अवसर
 पर जिस समय धौलेराव की चौकी के सरदारगण अपनी-अपनी जागीर के गांवों में
 गये हुए थे तब वीरम के पक्ष वालों ने आक्रमण कर उस चौकी को लूट लिया ।
 इसका संदेश प्राप्त होते ही वि. सं. १५८८ में स्वयं राव गांगा ने राजकुमार मालदेव
 को साथ लेकर सोजत पर आक्रमण बोल दिया और वीरम को सोजत से निकाल
 दिया । विवश होकर वीरम ने तत्कालीन महाराणा रतनसिंह से सहायतार्थ प्रार्थना
 की जो रिश्ते में वीरम के साले लगते थे । महाराणा ने वीरम की सहायतार्थ बड़ी
 सेना भेजी । इधर राव गांगा ने भी मुकाबले में बड़ी सेना भेजी । दोनों पक्षों में घमा-
 सान युद्ध हुआ । महाराणा की सेना पराजित हुई । राव गांगा ने इस पर मेवाड़ वालों
 से गोदवाड़ का प्रदेश भी छीन लिया ।

भिड़ते नयर “रयणतै” भिळिया, आहव अँ आगा असुर ।
 अँ बंगाळ नहीं बांगालख, अँ जोधा अँ जोधपुर ॥३॥
 “सांगा” “गांगा” राव सरीखी, रांगा अमळी वात म रोड़ ।
 लेय सज्कै लेहरी लहंती, लेसी अठै न बीजी लोड़ ॥४॥
 गढ जोधपुर गरजियौ ‘गांगौ’, ‘वाघ’ समोअम वाघ वर ।
 सांमू हुई समभे सीसोदी, घाटी लांगै गयो घर ॥५॥

(तेजसी बारहठ)

१७ राव मालदेव*

गीत प्रहास सांगोर १

मुडै माळवी आज चीतौड मचकोडतै, छात री छांह रिण-थंभ छायाँ ।
 ढेलडी ढगमगी कोट गढ धूजिया, आगरौ बियै अँ “माल” आयौ ॥१॥
 हैमरां गैमरां हुअँ हीसा-रवण, चासदू ऊपरा “माल” चडियौ ।
 गौड बंगाळ खुरसांग दळ गंजणौ, पालटै कोट भग-वाट पडियौ ॥२॥
 हसम है थट होय हेकटा हालिया, धोम अंधार मिळ वाजतै धाव ।
 सांकिया देस सुरताण सह सांकिया, रीत अण आवतां मारुव-राव ॥३॥
 धार उजैण चांपवतां धूणिया, सकज “गांगा” तणौ दीह साजै ।
 हैम सूं धरा हैकंप ऊली हुई, भोम पूरव गया गयालेर भाजै ॥४॥

(अज्ञात)

शब्दार्थ—आख — युद्ध । बंगाळ — यवन । बांगालख — मालवा प्रदेश ।
 जोधा — राव जोधा के वंशज । सरीखी — समान, सदृश । अवळी — बांकुरी, विकट ।
 लेसी — लेगा । लोड़ — लूट कर । समोअम — पुत्र । घाटी — अरावली पर्वत । लांगै —
 उलंघन कर के ।

मचकोडतै — भयभीत होने पर, दबने पर । छात — छात्र । छांह — छाया । रिण-
 थंभ — रण-थंभोर । छायाँ — आच्छादित हुआ । ढेलडी — दिल्ली । ढगमगी —
 विचलित हुई । बियै — डरता है । हैमरां-हयवरां — घोड़ों । गैमरां-गजवरां — हाथियों ।
 हीसा-रवण — हिनहिनाहट की ध्वनि । गंजणौ — पराजित करने वाला । भगवाट —
 भगदड़ । हसम — सेना । हैथाट — अश्व दल । हेकटा — एकत्रित । हालिया —
 चले । सांकिया — भयभीत हुए । मारुव-राव — मारवाड़ के राजा । दीह — दिवस ।
 साजै — कुशल । हैम — हिमाचल पर्वत, या सुमेरु पर्वत । हैकंप — भयभीत । ऊली —
 इस ओर की ।

*गीत में राव मालदेव के शौर्य का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन है ।

गीत छोटी सांणोर २*

कसा जतन कोट करी पमंग काय पाखरी, ढोव कर हिंदवा-कटक ढूका ।
 सुणै सुरतांण यम कहै साहजादियां, “माल” भय पूगडै पीर मूका ॥१॥
 पुणै जोगण-पुरी गुजरी पारखी, गूडर गोखै चढो गयण छायाँ ।
 बीवियां आंचळै छोडिया बाळकै, ईख सुरतांण गढ “माल” आयी ॥२॥
 आवियी ‘गंग’ ऊत कहै घरण ऊसरां, इसी दीवांण गहवात आई ।
 पीढ पैसै बचा दूध पीवै नहीं, पीड पहु ओहरै बोल पाई ॥३॥
 जळवटी थळवटी “माल” जीता जुडै, मेंछ यर मारिया देस मांही ।
 गोरियां डाभरू गात गाळिया गळण, नीसरै कांहां लै ठौड नांही ॥४॥

गीत छोटी सांणोर ३^८

त्रण वरसां सरीस विखी तुरकांणां, रहचै थांणा रुद्र***रज ।
 “माले” वळै आपरा मेहलां, गांगावत बांधिया गज ॥१॥
 करतै कळह इळाचै कारण, खेसे असुरां जोस खरे ।
 असपत प्रगट आपांणै....., हाथी बाधा जोध हरै ॥२॥

शब्दार्थ—कसा — कैसे । जतन — यत्न, रक्षा । पमंग — घोड़ा । पाखरी — घोड़ों पर कवच सजाते हो । ढोव — आक्रमण । ढूका — पहुँच गये । यम — इस प्रकार । पूगडै — साहजादे । मूका — छोड़ दिये । पुणै — कहती है । जोगण-पुरी — दिल्ली । पारखी — परीक्षा करो । गूडर — (?) । गयण — आकाश । आंचळै — आंचल से, स्तन से । ईख — देख । गंग-ऊत — राव गांगा का पुत्र । ऊसरां — असुरों, यवनों । घरण — स्त्री । इसी — ऐसी । दीवांण — स्वामी, अधिपति । गह — गंभीर । पहु — (?) । ओहरै — (?) । जळवटी — द्वीप । थळवटी — मरुस्थल, रेगिस्तान । मेंछ — स्लेच्छ, यवन । यर — अरि, शत्रु । डाभरू — डिम्ब, बच्चा । ठौड — स्थान ।

त्रण — तीन । विखी — संकट के दिन । रहचै — ब्यस्त किये । वळै — फिर, पुनः । गांगावत — गांगा का पुत्र । गज — हाथी । कळह — युद्ध । इळाचै — पृथ्वी, पृथ्वी के । खेसे — छीन लिये, पराजित किये । असपत — वादशाह ।

*इस गीत में भी मालदेव के आतंक और शौर्य का ही वर्णन है ।

इस गीत में वर्णित इतिहास ठीक प्राप्त नहीं हुआ । संभव है नागौर के शासक दीलतखा के हाथी छीन लिए हों, क्योंकि दीलतखा पराजित होकर भाग गया था ।

राव राठीड रैण थिर राखण, उथल्ल थांणा चढे उर ।

पतसाहां मालम जुध पूरै, पट-भर बाधा जोधपुर ॥३॥

किलमां घड़ा विधूस करंतै, धर कारण रचतै धकचाळ ।

“सलख” हरै सांकळ सांकळिया, सात खणा आगळ सूंडाळ ॥४॥

(द्वारकादास आसियौ)

गीत सावभडो ४*

भगे खांन नागौर अजमेर गौ भाखरां, ऊतरै मेछ खागां मुहि ऊंबरा ।

किलभणी गात काढै गढां कांगुरां, पसरदे ‘मालदे’ विरोळै पाखरां ॥१॥

भालते तेजियां पखर रिमभोलियां, गणण नलियार हद हवाई गोळियां ।

चढे गढ बीवडी हाथ कर चोळियां, पाडियौ मेछ नागौर री पौळियां ॥२॥

पहरियां जरद ताऊसर पाळियां, जूजवा गात देखाळती जाळियां ।

मारिया मेछ दळ आगळी माळियां, जोड्यौ माल राव बीबियां जाळियां ॥३॥

सिवा जंवक किया त्रपत पळ सावळां, वींट नागौर गढ फेरि चहुँवैवळां ।

आंवळै मीर घड़ वळै आलूमलां, पछटिया माल-राव मेछ दळ प्राघळां ॥४॥

(अज्ञात)

शब्दार्थ—रैण — पृथ्वी । थिर — स्थिर, अटल । उथल्ल — उलट पलट । थांणा — चौकियों । पट-भर — हाथी । किलमां — यवनों । घड़ा — सेना । विधूस — विध्वंस । धर — घरा, पृथ्वी । धकचाळ — युद्ध । सलख — राव सलखा । हरै — वंशज । सांकळ — शृंखला, जंजीर । सांकळिया — जंजीरों से बांध लिये । सात-खणा — सात मंजिल के भवन । आगळ — अगाड़ी । सूंडाळ — हाथी ।

किलमणी — यवन स्त्री । विरोळै — नष्ट करता है । पाखरां — कवचों (हाथी, या घोड़ा) भालते — पकड़ते, पकड़ते हुए । तेजियां — घोड़ों । रिमभोलियां — च्वनिमान होते हुए । नलियार — बंदूक, तोपादि । गणण — च्वनि । बीवडी — बीबी । पाडियौ — गिरा दिया । पौळियां — दरवाजों पर । पहरियां — धारण किए हुए । जरद — कवच । जूजवा — पृथक । देखाळती — दिखाती है । जाळियां — झरोखों । आगळी — अगाड़ी । माळियां — छोटे महल । सिवा — शृंगाली । जंवक — शृंगाल । पळ — मांस । वींट — घेर कर । चहुँवै वळां — चारों ओर । प्राघळां — पुशकल, बहुत, अपार ।

*राव मालदेव ने नागौर के खांनजादा के दीवान दीलतखां से वि. सं. १५६२ में युद्ध किया था । युद्ध में दीलतखां पराजित होकर भाग गया । उक्त युद्ध के वर्णन का उप-युक्त गीत ख्यात में मिला है ।

गीत छोटी सांणोर ५*

सांकै मत समंद सहस फण मम संक, गण मत जोखी लंक गिर ।
राव मालदे सबळ दळ रुठै, सभिया कुंभळमेर सिर ॥१॥

कांप म ऊवह डरप म काळी, कर न सोनगिर आकंप काय ।
मेद-पाट सर "माल" मछरियै, रचिया है थट-मारु राय ॥२॥

सिंध म भळभळ चळचळा मम सप, चळ त्रिकूट मम रह अचळ ।
कीधा नव-सहसै राय कोअण, दस सहंसा ऊपरै दळ ॥३॥

शब्दार्थ—सहस-फण - शेष नाग । संक - भयभीत हो । गण - समझ मान ।
जोखी - हानि, नुकसान । सोनगिर - लंका । आकंप - भययुक्त । मेद-पाट - मेवाड़ ।
मछरियै - कोप करने पर । है-थट - घुड़ सेना । मारु-राय - राठीड़ राजा । सिंध -
समुद्र । भळभळ - विलोडित होने की अवस्था । चळचळ - चलायमान होने की क्रिया ।
सप - सर्प, शेष नाग । त्रिकूट - लंका गढ़ । कीधा - किये । नव सहसै - राठीड़ ।
कोअण - (?) । दस सहंसा - सीसोदिया वंश का क्षत्रिय ।

*राव मालदेव का एक विवाह खैरवा के जागीरदार भाला राजपूत जैतसिंह (मतान्तर तेजसिंह) की कन्या स्वरूपदेवी के साथ हुआ था । यह भाली राणी अत्यन्त रूपवती और गुणवती थी । इसकी छोटी बहन इससे भी अधिक रूपवती थी । रावजी ने जैतसिंह से उसकी छोटी पुत्री से भी पाणिग्रहण करने की इच्छा प्रकट की ।

भाला जैतसिंह का विचार उस कन्या को महाराणा उदयसिंह को देने का था जिससे उसने दो मास की अवधि चाही । राव मालदेव ने उसकी प्रार्थना स्वीकार कर दो मास की अवधि दे दी । जैतसिंह के मन में कपट था ही, उसने खैरवा छोड़ दिया और कूपलमेरगढ़ के पास गुढ़ा नामक ग्राम में जाकर रह गया और अपनी दूसरी कन्या का विवाह महाराणा उदयसिंह के साथ कर दिया ।

जब यह संदेश राव मालदेव को मिला तो वे अत्यन्त कूपित हुए और महाराणा पर सेना भेज दी । महाराणा की सेना भी मुकाबले के लिए आई । गोढ-वाड़ में भयंकर युद्ध हुआ । महाराणा की सेना पराजित हो कर भाग गई और गोढवाड़ पर राव मालदेव का अधिकार हो गया । राव मालदेव ने गोढवाड़ में अपना थाना बैठा दिया । इस घटना से संबंधित उपर्युक्त गीत है जिसमें राव मालदेव के पराक्रम का वर्णन है ।

रे मथियल रे नथियल थिर रहि, थरक म कनक-कोट थिर थाव ।
गांगावत गांजियै न गांजै, गांजै राव अंगंजिया गाव ॥४॥

१८ राव चंद्रसेण*

गीत वेलियो सांणोर

अणदगिया तुरी ऊजळा असमर, चाकर रहण न डिगियो चित ।
सारै हिंदुस्थान तरौ सिर, "पातल" नै चंद्रसेण प्रवीत ॥१॥

पमंग अदग अदग पडियाळग, खरहंड तरौ न लागी खेह ।
रांण "उदैसी" तरौ अरेहण, राव "मालदे" तरौ अणरेह ॥२॥

तुरियै विगत खत्रीवट वजडे, असपत दळ रहिया अगिण ।
कळंक विना "कुंभेण" कळोधर, "वाघ" कळोधर कळंक विण ॥३॥

असत्रां लाड साह घर असमर, दियो न दुहुवै हीणौ दाव ।
रवि सिरखी मेवाडौ रांणौ, रवि सिरखी जोधपुरौ राव ॥४॥

(दुरसौ आढी)

शब्दार्थ—मथियल — जो मथा गया हो, समुद्र । नथियल — जिसके नाथ डाली गई हो । काली नाग — शेष नाग । थरक — डर । कनक-कोट — लंका । थिर — स्थिर । थाव — हो । गांगावत — गांगा का पुत्र । गांजियै — पराजित किए हुए । गांजै — पराजित करता है । अंगंजियां — जो पराजित नहीं हुए हैं ।

अणदगिया — बिना दाग वाले । तुरी — घोड़ा । असमर — तलवार । डिगियो — डिगा । चित — चित । प्रवीत — पवित्र । पमंग — घोड़ा । अदग — दाग रहित । पडियाळग — तलवार । खरहंड — सेना । खेह — धूलि, रुज । तरौ — तनय — पुत्र । तुरियै — घोड़ों ; विगत — (?) । खत्रीवट — क्षत्रियत्व । वजडे — तलवारों । असपत — बादशाह । अगिण — (?) । कुंभेण — महाराणा कुंभा । कळोधर — वंशज । असत्र — अस्त्र, शस्त्र । लाड — प्यार । साह — बादशाह । असमर — तलवार । दुहुवै — दोनों । हीणौ — कायर, कमजोर । दाव — वचन । रवि — सूर्य । सिरखी — समान ।

*इस गीत में चन्द्रसेन के साथ ही महाराणा प्रताप की भी प्रशंसा की गई है ।

१६ रायसिंह*

गीत पखाळी

धन धन सुत “चंद” वाहतां धजवड, हूवता अरि मीरे उर हूंत ।
 ऊकसता धसता ओल्हरता, कसता वणै विकसता कूंत ॥१॥

राउ वणाव वदै धन “रासा”, मारि मारि कहि करता मार ।
 लोह दुसर वड बडता चढता, पड़ चड़ करत सेलड़ा पार ॥२॥

रिम ऊकेल भेलता “रासा” थाट थिडंब ठेलता अठेल ।
 धन नर निडर निहसता धसता, सौसर कहर पहरता सेल ॥३॥

२० महाराजा सूरसिंह

गीत छोटी सांणोर १

कूर-खेत सिर कटक कळहलिया, निसांणै धुवतै निहंग ।
 अरजण अरथ चढै रथ ऊरर, राजा चढै कलाल रंग ॥१॥

शब्दार्थ—धन धन — धन्य-धन्य । चंद — राव चंद्रसेण । वाहता — प्रहार करते हुए । धजवड — तलवार । हूवता — युद्ध करता । अरि — शत्रु । मीरे — अगाडी । हूंत — से । ऊकसता — ऊंचा उठा हुआ । ओल्हरता — (?) । कसता — (?) । विकसा — चमकता हुआ । कूंत — भाला । वणाव — सजधज, तयारी । वदै — कहते हैं । धन — धन्य । रासा — रायसिंह । लोह — शस्त्र । दुसर — दो धार वाला । सेलड़ा — भाला । रिम — शत्रु । ऊकेल — प्रहार भेलता, सहन करता हुआ । थाट — सेना । थिडंब — समूह । ठेलता — धकेलता हुआ । अठेल — न धकेला जा सके ऐसा, जबरदस्त । निहसता — मारता हुआ । सौसर — (?) । कहर — भयंकर । सेल — भाला ।

कटक — सेना, दल । कळहलिया — (?) । नीसांणै — नगाडे । धुवतै — ध्वनिमान होते हुए । निहंग — आकाश । कलाल-रंग — (?) ।

*रायसिंह राव चंद्रसेण का ज्येष्ठ पुत्र था । वि. सं. १६३६ में यह सोजत में राव की पदवी धारण कर राज्य सिंहासन पर बैठा । वि. सं. १६४० में प्रसिद्ध “दतांणी” के युद्ध में महाराणा प्रताप के छोटे भाई जगमल के साथ सिरोही की सेना द्वारा अचानक रात्रि में निद्रावस्था में घिर जाने से युद्ध करते हुए वीर गति को प्राप्त हुआ । उपर्युक्त गीत में राव रायसिंह के युद्ध कौशल का वर्णन है ।

इस गीत का संदर्भपूर्वक इतिवृत्त प्राप्त नहीं हुआ ।

वणिया कर सिर सत्रां वळकता, पळका देव विच गढुता पाव ।
 दांमण जिहां भळकता दीठा, रेंवत नै जोधपुरी राव ॥२॥
 पांडवां जहीं किता पळ खंडिया, विहरै हाड विजू-जळ वाह ।
 सहुआं सिर महुआ सूरजमल, मेल्यो मेछ तणै दळ माह ॥३॥
 तै एकठा कीया "ऊदा" तण, रत मैगळा ... मद ।
 हरडां तणा पाव वणिया हद, हींदू धावां वाह विहद ॥४॥
 दस दैसोत भांज हेकण दिन, "माल" कुळोधर माभी मार ।
 अस लसकरां हूवो उप्रवट, आडे-आंक हुआ असवार ॥५॥

(अज्ञात)

गीत सांगोर २*

दिली "सूरसा" सेत-बंध डोहतै, वप वणै सार मे स्वेत वागे ।
 लाल ढालां मही भोकते लोहडा, लाल भाली कियो आभ लागै ॥१॥
 उजळै वंस छळ सिलह जड उजळी, उजळा विरद सोहै ज तू अंग ।
 चोळ साबळ कियो चोळ अस चकव तो, गयण छिबती वहै अभनमो "गंग" ॥२॥
 कांम पतसाह रै जरद भळहळ कियो, सेल सींदूरियो सजै जगीस ।
 पवंग सींदूर वन चाढता पट-हथा "सूरै" सूर-मंडळ नांमियो सीस ॥३॥

शब्दार्थ—पळका - चमक । दांमण - दामिनी, बिजली । भळकता - चमकते हुए ।
 दीठा - देखे । रेंवत - घोड़ा । जोधपुरी-राव - जोधपुर का राजा । विहरै - विदीर्ण
 किए । विजू-जळ - तलवार । वाह - प्रहार । सहुआं - सब । महुआ - ?
 हरडां - घोड़ों । अस - घोड़ा । उप्रवट - विशेष, अधिक ।

वप - वपु, शरीर । सार - अस्त्र शस्त्र । वागे - पोशाक । भोकते - भोंकते ।
 लोहडा - अस्त्र शस्त्रों । आभ - आकाश । छळ - युद्ध । सिलह - कवच । जड -
 धारण करके । विरद - विरुद्ध, यश । चोळ - लाल । अस - घोड़ा । चकव - राजा ।
 गयण - आकाश । छिबती - स्पर्श करता हुआ । अभनमो - वंशज । गंग - राव
 गांगा । जरद - कवच । भळहळ - चमक युक्त । सींदूरियो - लाल । जगीस -
 युद्ध । पवंग - घोड़ा । वन - रंग । पट हथा - योद्धाओं ?

जैत-हथ लडे दखणाध लीघी जरू, साह छळ सेल रंग वधै मन सोय ।

“ऊद” उत किया तै इता रंग एकठा, ढाल रंग ऊपरा लाल रंग ढोय ॥४॥

(माली सांदू)

गीत बडोसांणोर ३*

मनै सैज ऊतारिया महल सुख माळिया, मछर मछरीक मेले मछर-मांण ।

“सूर” भय ताहरै कमंध आखाड सिध, साथरै पाथरै सुये “सुरतांण” ॥१॥

भंगरै डूंगरै खोहळै भलंतौ, नवड कमधज जतू अनड नडिया ।

“ऊद” उत तूभ भय “भांण” उत अहोनिश, जोगियै पोढणै जंद जुडिया ॥२॥

“मालदे” दूसरा तूभ भय कांध मल, जीव हातळ हरण हियैज कियै ।

केवियां देवडै किया घर कंदरै, तन हरण अतीतां तणा तकियै ॥३॥

मार जुध सार भय सिवपुरी मनायै, ईखतां अवर कोई ठौड ओढै ।

सुख करै सोड पोढै नकूं सिवपुरी, पांण तज सोड सिव-ढांण पोढै ॥४॥

(दुरसौ आढी)

शब्दार्थ—दखणाद — दक्षिण । साह — बादशाह ।

माळिया — छोटा महल । मछर — कोप । मछरीक — चौहान । मेले — छोड़ कर । मछर — गर्व । मांण — मान, प्रतिष्ठा । ताहरै — तेरे । कमंध — राठीड़ । आखाड-सिध — वीर, योद्धा । साथरै पाथरै — घास के बिछोने पर । भंगरै — झाड़ी में, ढूंगरै — पर्वतों में । खोहळै — कंदरा में । नवड — नहीं भुक्ने वाला । अनड — वीर । नडियां — बंधन में ढाल दिये । ऊद — उदयसिंह । उत — पुत्र । अहोनिश — रात दिन । पोढणै — शयन करने के स्थान पर । कांधमल — वीर । केवियां — शत्रुओं । देवडै — देवड़ा शाखा का चौहान । कंदरै — गुफाओं में । तकियै — तकिया । सिव-पुरी — सिरोही । ईखतां — देखने पर । अवर — अपर, अन्य । ठौड — स्थान । ओढै — विकट । सोड ? । पांण — प्राण, बल, शक्ति । सिव-ढांण — शिव-स्थान, शिव के रहने का स्थान, श्मशान भूमि, या कंदरा । पोढै — शयन करते हैं ।

* पहले लिख आए हैं कि दत्ताणी के युद्ध में राव रायसिंह का वध सिरोही वालों ने किया था । वि. सं. १६६६ में बादशाह के बुलाने पर राजा सूरसिंह दक्षिण से लौटते हुए सिरोही के गांव पाढली में पहुँचे । यहां पर सूरसिंहजी को राव रायसिंह को सिरोही वालों द्वारा मारे जाने की घटना स्मरण आई । उन्होंने सिरोही के तत्कालीन राय राजसिंह से अपना पुराना बदला लेना चाहा । राव राजसिंह ने मयभीत होकर अपने छोटे भाई की कन्या का राजकुमार गजसिंह के साथ विवाह कर दिया । उक्त घटना संबंधी उपर्युक्त गीत है जिस में महाराजा सूरसिंह के पराक्रम तथा शौर्य का वर्णन है ।

२१ महाराजा गजसिंह*

गीत सोहणो १

गंगा तट कमल खळां गज-बंध, थाहर थाहर गंज थिया ।
देवळ देवळ हार दीपावै, कासी सिव सिणगार किया ॥१॥

भागीरथी तरौ तट भारथ, यर घड़ बेहड़ कीध अचंभ ।
महादेव हड़हड़ते माथै, थान थान रचिया दल - थंभ ॥२॥

“सूर” तणी सूरसरो तरौ सर, मानव विहंडिया वजावै मार ।
रण रेखग भेळा कर रचिया, सिव घर घर सिवपुरी सिणगार ॥३॥

मारे घणा चाढिया माथा, त्रिजड विकट तट गंग तरणी ।
राजा जिम भारथ महारुद्र, कासी न पूजियो किणी ॥४॥

(किसनौ आढौ)

गीत खुडद सांणोर २

वादळ दळ मेल खडग सभ वीजळ, कमंधां कांठळ फौज कर ।
घणा गांजै गजसींग विरद घण, आफळ भरै कंठीर यर ॥१॥

शब्दार्थ—कमळ — शिर, मस्तक । खळां — शत्रुओं । गज-बंधी — महाराजा गजसिंह ।
थाहर — स्थान । गंज — ढेर, समूह । थिया — हुए । देवळ — देवालय, मंदिर ।
दीपावै — शोभित करके । हार — मुंडमाळ । तरौ — के । यर — अरि, शत्रु ।
बेहड़ — एक के ऊपर एक रख कर जमाने या ढेर लगाने की क्रिया । कीध — की ।
अचंभ — आश्चर्य युक्त । हड़हड़ते — हंसते हुए । माथै — मस्तक, शिर । दळ-थंभ —
महाराजा गजसिंह का विरुद्ध या पदवी । सूर — महाराजा सूरसिंह । तरौ — तनय, पुत्र ।
सूरसरी — गंगा नदी । सर — ऊपर, पर । विहंडिया — मार डाले, संहार किया ।
वजावै — चला कर । मार — सार, तलवार । सिव-पुरी — काशी । माथा — मस्तक ।
त्रिजड — तलवार । विकट — जबरदस्त, भयंकर । तरणी — की । गंग — गंगा नदी ।
किणी — किसी ।

खडग — तलवार । वीजळ — विद्युत, बिजली । कमंधां — राठीड़ों । कांठळ — घन-
घटा । घणा — घन, मेघ । विरद — विरुद्ध, यश । घणा — अधिक । आफळ — दक्कर
खा कर । कंठीर — सिंह । यर — शत्रु ।

*भीम सीसोदिया से किए गये युद्ध संबंधी गीत है ।

कोरण सुभट घटा थट कटकां, त्रजडां हथ दांमणी तप ।
 “सूर” तणी घरहरै नरेसुर, वनपत यर खंगरै वप ॥२॥

मेघाडंबर छतर घर मसतक, मही लग गमै खळां चा मूळ ।
 जळहर गरज करै जोधपुरी, सत्र आफलै मरै सादूळ ॥३॥

मारू देस वंश री मंडण, काला सुपह जु ईढ करै ।
 गाजै गयंद अभनमौ, “गांगी”, मयंद प्रसण मांमलै मरै ॥४॥

(देवराज रतनू)

गीत षडौ सणोर* ३

मुहरि मांडिजै काजि दिग-विजय मंडोवरी, धुर धमळ सिरै परिगह घरीसै ।
 दिलीवै सोच “गजसाह” मुख देखिजै, दिलीवै हरख तोई “गजण” दीखै ॥१॥

करण भारथ महा महाराजा कमंध, मिलै.....भड तांम गयणि मेळै ।
 चींत सुरतांणी आगळि “चौंडरज”, चैन सुरितांण तिम न को चेलै ॥२॥

शब्दार्थ—कोरण — काले बादलों के किनारे किनारे श्वेत बादलों का भाग । सुभट —
 योद्धा । घटा — घन घटा । थट — समूह । कटकां — सेनाएं । त्रजडां — तलवारों ।
 हथ — हस्त, हाथ । दांमणी — विजली । तप — चमक, तेज । सूर — महाराजा
 सूरसिंह । घरहरै — गर्जना करता है । नरेसुर — नरेश्वर, राजा । वन-पत — सिंह ।
 यर — शत्रु । खंगरै — नाश करते हैं, कण्ट सहन करते हैं । वप — शरीर । गमै —
 नाश करता है । खळां चा — शत्रुओं के । मूळ — जड़ (वंश) । जळहर — बादल ।
 सत्र — शत्रु । सादूळ — सिंह । मारू — राठोड़ । मंडण — आभूषण । काला —
 पगला, पागल । सुपह — राजा । ईढ — समानता । गयंद — हाथी । अभनमौ —
 वंशज । मयंद — सिंह । प्रसण — शत्रु । मांमलै — युद्ध में ।

मुहरि — अग्र, हरावल । मांडिजै — रखा जाय । काजि — लिए । दिगविजय —
 दिग्विजय । मंडोवरी — मंडोवर का अधिपति गजसिंह । धुर — बैलों के कंधे पर रखा
 जाने वाला, जुआ । धमळ — बलिवर्द्ध, या वीर । सिरै — श्रेष्ठ । दरिगह — दरबार ।
 दिलीवै — दिल्लीपति, बादशाह । हरख — प्रसन्नता । तोई — तो भी । दीसै — दिखाई
 देता है । गयणि — आकाश । चींत — चिंता । सुरतांणी — बादशाह की । आगळि —
 अगाडी । चौंडरज — राव चूडा का वंशज, गजसिंह । चेळै — ? ।

*गीत नं. २ से गीत नं. १२ तक केवल महाराजा गजसिंह के प्रशस्ति के ही गीत हैं ।

आभ थोभै भुजै “माल” हर आभरण, वधै आघक छत्रां विसोवा-वीस ।
 दुचित दिल्लेस तद खळां माथै दुगम, सुचित तद परठिजै ऊमरां सीस ॥३॥
 भिडै पतसाह सै हाथि जिण भांजियां, वडिम विधि जास दरिगह विराजै ।
 इसै विरदे लियै औ जगत ऊपरां, “सूर” सुत तपै खत्रवाट साजै ॥४॥
 (केसोदास गाडण)

गीत षडौ सांणोर ४

हळा-बोळ चौरंग दळां बीच मूजै हरण, गजां कुळटचा कुळत हुअै धर गाह ।
 व्याकुळत भमंग रव वळत धूळी रवण, “सूर” री चडै तिणवार ‘गजसाह’ ॥१॥
 धमंख पखरांण नीसांण वज धूमरां, परी थाक थकत होय अग पडै पास ।
 तरां जड ऊपडै भरां सूकै तरंग, उरंग रस रंग चडै कुरंग अकळास ॥२॥
 गोम डमर हुअै वोम गाहीजियै, अंत रै वोम गर दोम आगा ।
 सोनरा ऊधडै धोमरा संकुडै, गयण गजगाह दळ राह लागा ॥३॥
 दूसरा “माल” संग लियां चतुरंग दळ, यर हरां मार सेणां ऊवारै ।
 रण-चडां सहल जूभा गहल राठवड, सहल रमतां पडै दहल सारै ॥४॥
 (कल्याणदास महडू)

शब्दार्थ—आभ — आकाश । थोभै — सम्हालता है, थामता है । माल — राव मालदेव ।
 हर — वंशज । आभरण — आभूषण । आघक — अधिक । छत्रां — राजाओं ।
 विसोवा-वीस — पूर्ण, पूरा । वडिम — वडप्पन । जास — जिसकी । इसै — ऐसे ।
 विरदे — बिस्द, कीर्ति, यश । औ — यह । सूर — महाराजा सूरसिंह । तपै — ऐश्वर्य
 का उपभोग करता है । खत्रवाट — क्षत्रियत्व । साजै — सम्पूर्ण, पूर्ण ।

हळा-बोळ — पूर्ण, पूरा । चौरंग — चतुरंगिनी । दळां — सेनाओं । कुळत — ? ।
 धर-गाह — संहार । व्याकुळत — व्याकुल होता है । भमंग — शेष नाग । रव — रवि,
 सूर्य । वळत — आच्छादित होता है । धूली-रवण — धूलि कण । सूर री — महाराजा
 सूरसिंह का पुत्र । गज-साह — महाराजा गजसिंह । धमंख — व्वनि । पखरांण —
 हाथी या घोड़ों के कवचों । नीसांण — नंगाड़ा । धूमरां — सेनाएं । परी — ? ।
 अग — भृग । पास — जाल ? । तरां — वृक्षों । भरां — जलाशय ? । उरंग —
 शेष नाग । रस — ? । कुरंग — हरिण । अकळास — व्याकुल । गोम — पृथ्वी ।
 डमर — धूलि समूह । वोम — आकाश । गाहीजियै — ? । सोनरा —
 संकुडै — संकुचित होते हैं । गयण — आकाश । गज-गाह — युद्ध । यर — अरि, शत्रु ।
 हरां — वंशजों । सैणी — हितेषियों । जूभा-गहल — युद्धोन्मत्त । सहल — क्रीड़ा, खेल ।
 दहल — आंतक, भय ।

गीत घडौ सांणोर ५

वडै-कांमि दळ-थंभ “गजसाह” दळ तोइ वदै, छात्रपति कमंघ अँ बील छाजै ।
 रुकि पतिसाह दळ लाजते राखियो, भिडे पतसाह रिणि तिहिज भांजे ॥१॥
 सेर-सुरतांण सुरतांण सम चाडि सवळ, अमर-मंडळ लगे अँह आगाज ।
 ऊवेलण परी-भव तणै छळ आवगी, ऊजळा खत्री थारै भुजां आज ॥२॥
 अभिनमा चौंडरज भुजां बळ अँरसी, छात्रपति ग्रहै ग्रहै हूंत छोडै ।
 असपति तणा दळ पूठि तो ऊवरै, मुहि चढै असपति तूहिज मोडै ॥३॥
 “सूर” सुत सुछळि दिल्लैस सक-बंध सह, तेज वधि दळांहुं पैज तांणी ।
 खाग-भल खूंद-वळ छांडि खिसाया खळ, वदै जैकार सुर अखिल वांणी ॥४॥
 (खेतसी लाळस)

गीत पंखाळी ६

गज-बाधा वहै उपगार खत्री-गुर, वदन वहै खग आंकविया ।
 तँ ऊवारिया वडफरां ओटां, कोटां पावण हार किया ॥१॥
 सत्र सर दाव वहै सूरावत, भिळतै लोह अभिनमा “माल” ।
 ढालां हेट राखिया ढांकै, ढळकै त्यां आगै गज ढाल ॥२॥

शब्दार्थ—दळ-थंभ — सेना को रोकने वाला । महाराजा गजसिंह की पदवी । दळ — सेना । तोइ — तुझ को । वदै — कहते हैं । छात्रपति — राजा । कमंघ — राठीड़ । अँ — ये । बोल — कीर्ति के शब्द । छाजै — शोभा देते हैं । रुकि — तलवार से । रिणि — युद्ध में । तिहिज — तूने ही । भांजै — भगा दिये । अमर-मंडळ — अंबर-मंडल, आकाश । अँह — यह । आगाज — गर्जना, ध्वनि । ऊवेलण — रक्षा करने को । परी-भव — पराजय । छळ — युद्ध । आवगी — सम्पूर्ण, पूर्ण । थारै — तेरे । अभिनमा — वंशज । चौंडराज — राव चूंडा । हूंत — को । असपति — बादशाह । पूठि — पीछे ऊवरै — बचते हैं, रक्षित रहते हैं । मुहि — अगाड़ी । सुछळि — लिए । दिल्लेस — बादशाह । सक-बंध — वीर, योद्धा । पैज — प्रण, प्रतिज्ञा । खाग-भल — खड्गधारी । खूंद-वळ — बादशाही सेना । खिसाया — हटायें । खळ — शत्रु ।

उपगार — उपकार । खत्री-गुर — राजा, वीर । वदन — शरीर, मुख । आंक-विया — चिन्हित । तँ — तूने । ऊवारिया — बचाये । वडफरां — ढालों । ओटां — आड, ओट । पावणहार — प्राप्त करने वाला । सत्र — शत्रु । सर-दाव — ? । सूरावत — सूरसिंह का पुत्र । लोह — शस्त्र, या शस्त्र प्रहार । अभिनमा — वंशज । माल — राव मालदेव । हेट — नीचे, ओट, आड । ढांकै — ढक कर । ढळकै — लुढ़कती है । त्यां — उन । गज-ढाल — हाथी के मस्तक में लगाया जाने वाला उपकरण ।

प्रसण वखाण करै जोधांपत, वडम तुहाळी साख वळै ।
 अँ जो जिकै वहै ऊबेडा, खंडां तळा राखिया खळै ॥३॥

(अज्ञात)

गीत छोटी सांणोर ७

छत्रपत 'गजबंध' गांजणी छत्रपत, बिया "मालदे" चमर-बंबाळ ।
 मो चीत्रिया न जावै मारु, तूं तेवडा करै रणताळ ॥१॥

हैदल पैदल प्रबळ हैडती, नीजोडती कितां नर नाह ।
 समरथ कही न सकूं सूर्रावत, गुण म्हारा थारा गजगाह ॥२॥

आळस न कूं कहै आतां-वर, "बाघ" कळोघर इळा वरीस ।
 कांकळ हक्क बणांणू कमधज, वळ सांभळूं जितै दस-वीस ॥३॥

सरस तणी पसाव सोधिया, बयण विना बाखांगण वग ।
 "चूंड" हरा आकास चित्रणी, खेडेचा ताहरी खग ॥४॥

(केसोदास गाडण)

शब्दार्थ—प्रसण — शत्रु । वखाण — प्रशंसा । जोधांपत — राठीडों का स्वामी,
 वीर । वडम — वडप्पन । तुहाळी — तेरी । साख — साक्षी । वळै — फिर । अँ —
 ये । वहै — चलते हैं । ऊबेडा । विरुद्ध । खंडां — ढालों । तळा — नीचे । खळै —
 युद्ध में ।

छत्रपत — राजा । गज-बंध — गजसिंह । गांजणी — पराजित करने वाला ।
 बिया — द्वितीय, वंशज, पुत्र । चमर-बंबाळ — महान शक्तिशाली, वीर, योद्धा । मो —
 मुझ से । चीत्रिया — चित्रित किया । मारु — राठीड वीर । तेवडा — तिगुना, तैसा ।
 रण-ताळ — युद्ध । हैदल — अश्व दल । पैदल — पदाति । हैडती — चलाता हुआ ।
 नीजोडती — प्रहार करता हुआ, मारता हुआ । नर — नाह, राजा । सूर्रावत — सूरसिंह
 का पुत्र । गुण — काव्य, कविता । म्हारा — मेरे । थारा — तेरे । गजगाह — वीर,
 योद्धा । बाघ — कुमार बाघा । कळोघर — वंशज । इळा — पृथ्वी, भूमि । वरीस —
 देने वाला । कांकळ — युद्ध । हक्क — अधिकार या कर्तव्य । बणांणू — वर्णन
 करता हूं । कमधज — राठीड । वळ — फिर, और । सांभळूं — सुनता हूं । पसाव —
 दान, प्रसाद । बयण — वचन । वग — वर्ग, शक्ति, बल । चूंड — राव चूंडा ।
 हरा — वंशज । खेडेचा — राठीड । ताहरी — तेरा । खग — तलवार ।

गीत छोटी-सांणोर-८

अनंकारां पहांतणा आवटसी, घणै जतन बांधिया घणा ।
 “गजन” तणा अविणसो गैवरा, ताजी गाजीसाह तणा ॥१॥

अदवां खै जाइस ज्यां अपजस, चक्रवत ब्रवै न जांगै चौज ।
 राजा अमर करै ले रूपग, मैगळ बेगागळ दे मौज ॥२॥

“गाजी साह” अमनमो “गांगो” महियळ “सूर” सुभ्रमकुळमोड ।
 वहता हसत कूदता बाजंद्र रहता करै बडा राठीड ॥३॥

रिध दातार पयंपै राजा, यां आपवा तणौ अधिकार ।
 असत दधी तणा ऊबरिया सिर जगदेव तणा भव सार ॥४॥

(किसनो-आढो)

गीत-छोटी-सांणोर-९

है थाटां बीच हींडलै हाथी, चक्रवत जिम चालिया चढै ।
 “गजबंध” तणा देखतां गढवा गढ-पत जडै किमाड-गढै ॥१॥

देखे हसम दियै दरवाजा, घर-पत अवर न धीर धरै ।
 “चूंडा” हरा तणा जे चारण, करै सुंस सुभराज करै ॥२॥

शब्दार्थ—अनंकारां — कृपणों । पहां — राजाओं । आवटसी — समाप्त हो जायेंगे, खतम हो जायेंगे । घणै — अधिक । जतन — उपाय, कोशिश । बांधिया — बांधे हुए रखे । घणा — बहुत । गजन — महाराजा गजसिंह । तणा — के । अविणसी — जो नाश न हो । गैवर — गजवर, हाथी । ताजी — घोड़ा । गाजी साह — महाराजा गजसिंह । अदवां — कृपणों । खै — क्षय, नाश । जाइस — जावेंगे । ज्यां — जिन । अपजस — अपयश । चक्रवत — राजा । ब्रवै — देते हैं । चौज — उमंग, उत्साह । मैगळ — हाथी । बेगागळ — घोड़ा । मौज — प्रसन्नता से दिया जाने वाला दान । अमनमो — वंशज । गांगो — राव गांगा । महियळ — महितल, भूमि । सूर — सूरसिंह । सुभ्रम — पुत्र । वहता — चलते हुए । हसत — हाथी । बाजंद्र — घोड़ा । रहता — अमर रहने वाले । रिध — ऋद्धि — लक्ष्मी । पयंपै कहते हैं । यां — इन । आपवा — देने को । असत — अस्थि, हड्डी । भव — संसार ।

है — घोड़ा । थाटां — सेनाओं । हींडलै — भूमता हुआ चलता है । चक्रवत — राजा । गढवा — चारण कवि । गढपत — राजा । जडै — बंद कर देते हैं । किमाड — कपाट, दरवाजा । हसम — दल, सेना । घरपत — राजा । अवर — अन्य । धीर — धैर्य । हरा — वंशज । सुंस — बापय ? ;

हैमर औराकी हीसंतां, हाथियां मद वहता हमल ।
देखे "गजन" तरणा दूहत्थी, दूजा दैसोतां पडै दहल ॥३॥

"जोधा" हरे किया अणजाची, जग देखै ओद्रके जिसी ।
दांन तरणी उनमांन देखतां, कीरत रौ पूछणी किसी ॥४॥

(किसनी-आढी)

गीत छोटी सांणोर १०

गरवा तन गात जोवतां "गजबंध", ताहरो ... सूरजमाल तण ।
अवडो सायर नहीं ऊंडवण, अवडो मेरु नह ऊंचपण ॥१॥

गहरा-पणी एह खत्रियां गुर, गरवा नमी अभिनमा "गंग" ।
माछ रहंतै थाय महोदध, देव रहंतै माघ - दुरंग ॥२॥

अथग अचळ धिन "जोध" अभिनमा, सावज कुळ पैतीस सिरै ।
हरि मेलियो मथै हीलोहळ, गांजियो रांवण मेर - गिरै ॥३॥

आहं कमंध तूभ पग ऊंडा, हाथां गयण छिवै हथवाह ।
मथियळ नै धुणियळ नह मीढी, समवड तूभ तरणी "गज साह" ॥४॥

(किसनी आढी)

शब्दार्थ—हैमर - घोड़ा । औराकी - घोड़ा । हमल - समूह । दूहत्थी - चारण
कवि । दैसोतां - राजाओं । दहल - आतंक, भय । जोधा - राव जोधा । हरे -
वंशज । अणजाची - अयाचक । ओद्रके - भयभीत होते हैं । उनमांन - अंदाज ।
किसी - कैसा ।

गरवा - गंभीर, गहरा । ताहरो - तेरा । तण - तनय, पुत्र । अवडो - इतना ।
सायर - सागर, समुद्र । ऊंडवण - गहरापन । मेरु - सुमेरु पर्वत । ऊंचपण -
ऊंचाई । खत्रियां - गुर, वीर, राजा । अभिनमा - वंशज । गगराव - राव गांगा ।
माछ - मत्स्य, मछली । महोदध - समुद्र । माघ - इंद्र । अथग - जिसकी थाह न
ले सके । धिन - धन्य । जोध - राव जोधा । सावज - सिंह, वीर । सिरै - श्रेष्ठ ।
हरि - विष्णु । मेलियो - रखा, छोड़ा । हीलोहळ - समुद्र । गांजियो - पराजित
किया । गयण - आकाश । छिवै - स्पर्श करता है । हथवाह - हाथों का प्रहार,
प्रहार । मथियळ - समुद्र । धुणियळ - मंदराचल पर्वत, यहां सुमेरु के लिये प्रयुक्त
किया गया है । मीढी - तुलना की । समवड - समानता ।

गीत छोटी सांणोर ११

आजूणी वार संसार इखतां, चौरंग अमिट अखूटत चाय ।
 तड-वड नह गजसींघ तुहाळी, नाकतरां आभूषण न्याय ॥१॥
 पग पग लगै सरीखी पायल, हाथ हाथ प्रत कांकण होय ।
 सरज्या नहीं अभनमा “सलखा”, दो पासा नासा नग दोय ॥२॥
 स्रवण स्रवण कुंडळ सारीखा, आंख आंख प्रत अंजन अेम ।
 सुभ्रम “सूर” तुहाळी समवड, जुडै नहीं नक-वेसर जेम ॥३॥
 अन अधपत अबळा आभूषण, इढवतां नर बीया अनेक ।
 नासा अग्र मोती नव सहंसा, हेकांणअै तपे तूं हेक ॥४॥
 राजा तूभ समी अन राजां, होड कियां नृप विया हसै ।
 पांणी-हंड पहरै दोहुं पासां, नासा नार जिहुँइ नकसै ॥५॥

(सांड्यो-भूली)

गीत मुडियळ अठताळी १२

धख-पंख धमळ घीर धारण, निहंग तो डर केळ वारण,
 दुखळ - पंखी गुरड दारण, सलह खाग सधीर ।
 यर केण छाजै खाग उछज, अणी भटां चंच आवाज,
 कळहियो “गजसाह” कळियज, वरळ वध वर वीर ॥१॥

शब्दार्थ—आजूणी — आधुनिक, आज की । वार — समय । इखतां — देखने पर ।
 चौरंग — युद्ध । अमिट — न मिटने वाला । अखूटत — अपार । चाय — ? ।
 तडवड — समान, तुल्य । तुहाळी — तेरी । सरीखी — समान । पायल — स्त्री के पैर
 का आभूषण । प्रत — प्रति । कांकण — हाथ का आभूषण, कंकन । सरज्या — रचे,
 बनाये । अभनमा — वंशज । पासा — पार्श्व । नासा — नाक । सुभ्रम — पुत्र ।
 सूर — सूरसिंह । समवड — समान । जुडै — मेल खाता है । नक-वेसर — लम्बोत्तरा या
 सुराहीनुमा मोती, स्त्री के नाक का आभूषण । अन — अन्य । अधपत — अधिपति, राजा ।
 अबळा — स्त्री । इढवतां — समानता करने पर । बीया — दूसरे । नवसहंसा — राठीड़ ।
 हेकांणअै — एक ओर । तपे — ऐश्वर्य का उपभोग करता है । हेक — एक । तूभ — तेरे ।
 समी — समान । होड — प्रतिस्पर्धा । पांणी-हंड — मोती ।

धख-पंख — गरुड़ । धमळ — धवल । निहंग — पक्षी, गरुड़ । वारण — हाथी ।
 दुखळपंखी — ? । यर — अरि, शत्रु । उछज — उठा कर । अणी — नौक,
 चार । आवज — आवध, आयुध, अस्त्र शस्त्र । कळहियो — युद्ध में लीन या डूबा हुआ ।
 गजसाह — महाराजा गजसिंह । कळियज — युद्ध । वरळ — ? ।

सादूळ अमंगळ सिंह सावज, ग्रीठ केहर मयंद रिपु गज,
 बाण बाध लंकाळ वनरज, दोख गम दाढाळ ।
 ऊपाड हथळ छरा असमर, सार साभे घडा सिंधुर,
 मयंद रूपी घणी मुरघर, खळां दळ खैंगाळ ॥२॥
 हुतासण मंगळ जळण हुबह, दावक-नळ पावक वन दह,
 घखण ऊसण दहण धोमह, वासदेव वज्राग ।
 जुडे अरियण खाग जाळ, प्रसण तर धाये प्रजाळ,
 वडे राजा अंक-वाळ, अरी बाळ आग ॥३॥
 सामंद हुबह सुजळ सायर, रैण सुत जळनध रैणायर,
 सुजळ गौडीरेव सायर, महण घण महारांण ।
 सुतन "सूरज" सुजळ सारै, अरि ओहाळे उतारै,
 मारका सत्र वोढ मारै, जुडे "गंजण" जुवांण ॥५॥
 (अज्ञात)

गीत बडो सांगोर* १३

खवां खेलती खान असहां कमळ खूंदती, रुक छिबती निहंग देईव-रायी ।
 साह दळ भांज गजसींग नव-साहसो, औ वळ साह दरगाह आयी ॥१॥

शब्दार्थ—सादूळ - सादूलसिंह । सावज - सिंह, सिंह का बच्चा । ग्रीठ - सिंह ।
 केहर - किसरीसिंह । मयंद - सिंह । रिपु-गज - सिंह । लंकाळ - सिंह । वनरज -
 वनराज, सिंह । दाढाळ - बड़ी दँढ़ा वाला सिंह । हथळ - सिंह के अगले पैर का अग्र-
 भाग । छरा - सिंह का पंजा । असमर - तलवार । सार - तलवार । घडा -
 सेना । सिंधुर - हाथी । खळां - शत्रुओं । खैंगाळ - संहार । हुतासण - अग्नि,
 आग । मंगळ - अग्नि, आग । जळण - आग । दावकनळ - दावाग्नि । पावक -
 अग्नि । वनदह - आग । घखण - अग्नि । ऊसण - उष्ण, आग । दहण -
 जलाने वाला आग । धोमह - आग । वासदेव - आग । वज्राग - वज्राग्नि । जुडे -
 भिड़ता है । अरियण - अरिजन, शत्रु । प्रसण - शत्रु । तर - तर, वृक्ष । धाये -
 प्रहारों से । प्रजाळ - जला देता है । अंक-वाळ - महान कार्य किये । सायर -
 सागर, समुद्र । रैण-सुत - समुद्र । जळनध - जलनिधि, समुद्र । रैणायर - रत्नाकर,
 समुद्र । गौडीरेव - तरंगों की ध्वनि वाला, समुद्र । महण - महाराज, समुद्र । महारांण -
 समुद्र । ओहाळ - तालाब, समुद्र, नदी आदि के तट पर जल-प्रवाह से फेंका हुआ कूड़ा-
 करकट । वोढ - काट कर । गजण - गजसिंह । जुवांण - जवान ।
 खवां - कंधों । असहां - शत्रुओं । कमळ - शिर, मस्तक । खूंदती -
 रौंदता हुआ । रुक - तलवार । छिबती - स्पर्श करता हुआ । निहंग - आकाश ।
 निहंग-देईव-रायी - सूर्य । साह - बादशाह । नव साहसी - राठीड़ । औ - यह ।
 वळ - फिर, पुनः । दरगाह - दरबार ।

*गीत नं. १३ महाराजा गजसिंह का बादशाह जहांगीर की मदद में तथा सुलतान
 खुर्रम के विरुद्ध युद्ध करने के आशय को प्रकट करता है ।

कमंघ देती चलण भडां क्यांहि कमळ, कहर भर खूंदती भडां क्यांही ।
 मारुवी-राव खुरसांण गांजै मछर, माल्हियी वळै खुरसांण मांही ॥२॥
 “सूर” री दिली दरगाह असहां सिरै, हियै चड प्रवाडा लियण हिळियी ।
 मूहां सैदां तणा मार हिंदू मुगळ, मछर सैंधां-मुहां आंण मिळियी ॥३॥
 दिलीवै कहर पतसाह रा भांज दळा, सोहियां दळां विच वीर साजा ।
 सदा जोरावरां तणा नव-साहसी, राह सिर ऊपरै हुअै राजा ॥४॥
 (देवराज रतनू)

गीत पालवणी १४*

(प्रथम दूही सोरठी)

तूं तोलै तरवार, सिर साहां गजसिंघ दे ।
 है तुरकाणै हार, हिंदवाणै उछव हुवै

शब्दार्थ—कमंघ — राठीड़ । चलण — पैर, कदम । भडां — योद्धाओं । क्यांहि — कई, कितने ही । कहर — आफत, विपत्ति । मारुव-रावी — मारवाड़ का राजा, राठीड़ राजा । खुरसांण — बादशाह । गांजै — भंजन करके, मिटा करके । मछर — गर्व । माल्हियी — मस्त चाल से चला । मांही — में । सूर — महाराजा सूरसिंह । सिरै — ऊपर, पर । प्रवाडा — युद्ध । लियण — लेने को । हिळियी — आदी हो गया । मूहां-सैदां तणा — परिचित व्यक्तियों का । मछर — रीव, प्रभाव, गर्व । सैंधा-मुहां — परिचितों । दिलीवै — दिल्लीपति, दिल्ली का । सोहियी — शोभित हुआ । साजा — कुशल, स्वस्थ, अखंड ।

*खुरम की ओर से राजा भीम सीसोदिया महाराजा गजसिंह से युद्ध करता हुआ वीर गति को प्राप्त हुआ । भीम ने युद्ध अत्यन्त कौशलता तथा वीरतापूर्वक किया था तथा बहुत से शत्रुओं को युद्ध में घराशायी कर दिये थे उपयुक्त घटना की सूचना जब महाराणा कर्णसिंह के पास पहुंची तो उन्होंने दरबार में राजा भीम के पराक्रम, शौर्यादि का वर्णन कवियों के मुख से सुनने की अभिलाषा प्रकट की । महाराणा के दरबारी कवि खेमराज सोदा चारहठ ने तुरंत ही एक गीत जिसका अन्तिम चरण “पांडव नांमी नीठ पाड़ियो लग ऊगमण आथमण लग” है, रचकर सुनाया । दरबारियों ने तथा महाराणा ने कवि को वाहवाही का पुरस्कार दिया, लेकिन दरबार में बैठे चतुरा मोतीसर को गीत में प्रयुक्त “पाड़ियो” शब्द उपयुक्त नहीं लगा । चतुरा के असंतोष प्रकट करने पर कवि खेमराज सोदा ने चतुरा को ही अन्य गीत रच कर सुनाने को कहा । चतुरा आशु कवि था, तुरन्त ही सुंदर गीत रच कर महाराणा के दरबार में सुनाया जिसमें राजा भीम सीसोदिया के शौर्य, पराक्रम, और युद्ध-कौशल का वर्णन महाराजा गजसिंह से अपेक्षाकृत विशेष था ।

गीत

चक्ख लागां धिक्खै चहुँ-दिस चोळै, हीलोहळ सातू हीलोळै ।
 अधपत सकी ताहरै ओळै, तूं खग आज किणी सिर तोलै ॥१॥
 खंड देवड़ा भरै डंड खंधी, सगपण कर भाटी सनबंधी ।
 सारां मिलै तूभ सूं संधी, बळ दाखै किण सिर "गजबंधी" ॥२॥
 पूरब पछम धरा दध - पारू, दिखण तणौ खूटौ बळ दारू ।
 सक उतराध धरा तो सारू, मछर धरै किण ऊपर मारू ॥३॥
 वाजै वळै चहुँ दिस बाजा, "सूर" तणा उत्तर दध साजा ।
 पूगी जस सातू दध पाजा, रोस धरै किण ऊपर राजा ॥४॥
 (चतुरौ मोतीसर)

शब्दार्थ—चक्ख — चक्षु, नेत्र । धिक्खै — प्रज्वलित होती है । चहुँ-दिस — चारों दिशाएँ । चोळै — कम्पायमान होती है । हीलोहळ — समुद्र । हीलोळै — तरंगयुक्त होते हैं । अधपत — अधिपति राजा । सकी — सब । ताहरै — तेरे । ओळै — ओट में, शरण में । खग — तलवार । किणी — किस । सिर — ऊपर । तोलै — प्रहार हेतु उठाता है । खंड — देश । देवड़ा — चौहानवंश की एक शाखा । खंधी — किशत । सगपण — विवाह सम्बन्ध, संबंध, रिश्ता । सनबंधी — रिश्तेदार । संधी — संधि, सुलह, मेल । दाखै — प्रकट करता है, बतलाता है । किण — किस । सिर — पर, ऊपर । गज-बंधी — महाराजा गजसिंह । दध — उदधि, समुद्र । पारू — पार तक । तणौ — का । खूटौ — समाप्त हो गया, मिट गया । बळ — शक्ति, सेना । दारू — बारूद । सक — सब, पूर्ण । उतराध — उत्तर दिशा । धरा तो सारू — तेरे अधिकार में है, तेरे वश में है । मछर — कोप । मारू — राठीड़ वीर । वाजै — बजते हैं । वळै — फिर, और । सूर — महाराजा सूरसिंह । तणा — तनय, पुत्र ।
 "सूर" तणा उत्तर दध साजा — हे सूरसिंह के पुत्र, उत्तर से (दक्षिण) समुद्र पर्यन्त सब अखण्ड रूप से तेरे अधिकार या वश में हैं ।

उक्त गीत संबधी वृत्तान्त जब महाराजा गजसिंह के कर्ण गोचर हुआ तो वे चतुरा पर बहुत कुपित ही नहीं हुए बल्कि मोतीसर जाति के लिए देश निष्कासन का आज्ञा-पत्र जारी कर दिया । इस पर चतुरा शीघ्र ही चंडावल ठाकुर गोवर्द्धनदास कूपावत के मारफत महाराजा गजसिंह के दरबार में पहुँचा, ज्योंही महाराजा की चतुरा पर दृष्टि पड़ी तो तुरन्त ही तलवार उठाकर उसे मारने हेतु तैयार हुए । ठीक इसी समय चतुरा ने अपनी काव्य-प्रतिभा द्वारा उपर्युक्त सोरठा और गीत रचकर महाराजा को सुनाएँ । महाराजा का कोप शांत हो गया—और चतुरा दण्ड के स्थान पर पुरस्कार से सम्मानित हुआ ।

गीत बेलिथी सांणोर १५*

तेतीसै सुरां हिंदवां तुरकां, कोय न यू जन मांडें कंध ।
 आराधियां बिना वह आयी, बीजी महादेव “गजबंध” ॥१॥
 चूका वयण मंदार चाढतां, सुर नर साही मान असत्त ।
 भौळै भाव आवियो भूरी, भौळा संभू तणी भत्त ॥२॥
 नरंद आजका गुणै नह रीभै, बूभै ताय ओगणां अबूभ ।
 मिळियां गुणां ओगणां मेटे, मंडोवरी महारुद्र मूभ ॥३॥
 मोटा पह सहज रावमारु, रुद्र दूहत्थी करै फिर रीभ ।
 अम लोगां ऊपरा न रावै, खूदाळमां हिलाई खीज ॥४॥
 (चतुरी-मोतीसर)

२२. महाराजा जसवंतसिंह

गीत प्रहास सांणोर १**

हुसंड हुकळै बांधळा प्रचंड गज हिडुळै, वळै दळ वाज व्रंबाळ वाजा ।
 गढपती पोकरण लीघ लागै गढ़ां, राज रौ ताप “जस राज” राजा ॥१॥

शब्दार्थ—आराधियां—आराधना करने पर । बीजी—दूसरा । वयण—बचन ।
 मंदार— (?) । भौळै-भाव—सहज में ही, बिना बिचारे । भूरी—वीर,
 योद्धा । भौळा—छल-कपट-रहित, सीधा सादा, सरल । भत्त—भांति, प्रकार । नरंद—
 नरेंद्र, राजा । गुणै—गुनों पर, काव्यों पर । बूभै—पूछते हैं । ओगणां—अवगुणों ।
 अबूभ—न पूछने योग्य । ओगणां—अपराधों । मंडोवरी—मंडोवर को अधिपति,
 महाराजा गजसिंह । मूभ—मेरे । मोटा—महान, बड़ा । पह—प्रभु, राजा । राव
 मारु—राठीड़ राजा । दूहत्थी—दो हाथ वाला । रीभ—पुरस्कार, दान । अम—
 हम । खूदाळमां—बादशाहीं । हिलाई—समान, प्रकार । खीज—कोप ।

हुसंड—घोड़ा । हुकळै—मस्ती में हिनहिनाहट की ध्वनि करते हैं ।
 बांधळा—जवरदस्त । हिडुळै—मस्ती में झूमते हैं । वळै—फिर, और । दळ—
 सेना । व्रंबाळ—नगाड़ा । वाजा—ध्वनिमान हुए । गढपती—राजा । राज रौ—
 श्रीमान का, आपका । ताप—प्रभाव, ऐश्वर्य ।

*गीत नं० १४ सुन कर महाराजा गजसिंह ने जब चतुरा के अपराध को क्षमा
 कर दिया तब चतुरा ने यह गीत फिर नवीन रचकर सुनाया ।

**वि.सं. १७०६ की कार्तिक मास की पूर्णिमा को जयसलमेर के रावल मनोहरदास
 का देहावसान हो गया । तब उसका पुत्र रामचंद्र राज्यासीन हुआ । यह रामचंद्र
 उत्पाती और उद्दण्ड था । इससे समस्त प्रजामंडल तथा सामन्त गण असंतुष्ट थे ।

हुंकाळे तुरां घैधिगरां हार हर, सहर पाघर करण काज साका ।
पाखरां घरर "गजबंध" रा पाटपत, थरर गढ पत गढां पांण थाका ॥२॥

चोसरै थरां नर कांगुरै चाढ़िया, ऊमरां भुजा - डंडां अड़ीया ।
प्रथी रा नाथ वांकी दुरंग पलटतां, प्रथी रा गिरवरां भंग पडीया ॥३॥

प्रघळ दळ मेल गढ भेल्लियो पोहकरण, छळ "सबळ" "माल" खळां छीजै ।
कमंघ अन कोट जळ-थाळ झळ-झळ करै, दूसरा "मालदे" धीर दीजै ॥४॥

(खेतसी लाळस)

शब्दार्थ—तुरां - घोड़ों । घैधिगरां - हाथियों । हार-हर - (?) ।
पाघर - सीधा । काज - लिए । साका - युद्ध । पाखरां - घोड़ों हाथियों
के कवचों । गज-बंध - महाराजा गजसिंह । पाट पत - पट्टाधिकारी ।
थरर - कंपायमान होते हैं । गढ-पत - राजा । पांण - प्राण-बल । थाका -
शक्ति हो गये, थक गये । चोसरे - चारों ओर । थरां - स्तरों, तहों । ऊमरां -
अमीरों, सरदारों । भुजा-डंडां - महान, जबरदस्त, शक्तिशाली । अड़ीया - छू गये,
स्पर्श किया । प्रथी रा नाथ - पृथ्वीनाथ, राजा । वांकी-दुरंग - जयसलमेर का गढ ।
गिरवरां - पर्वतों । भंग - भय, भगदड़ । प्रघळ - पुष्कल, बहुत । दल सेना । गढ
भेल्लियो - गढ में प्रवेश कर दिया, घुस गये, अधिकार कर लिया । छळ - लिए । सबळ -
सबलसिंह भाटी । माल - रावल मालदेव (जयसलमेर) । खळां - शत्रुओं । छीजै -
झींझोते हैं । कमंघ - राठीड़ । अन-कोट - अन्य गढ़ । जळ-थाळ - थाल के पानी
के समान । झळाझळ - कंपायमान, डोलायमान । दूसरा - द्वितीय, वंशज । मालदे -
राव मालदेव राठीड़ । धीर - धैर्य ।

अतः उन्होंने रावल मालदेव (जयसलमेर) के तृतीय पुत्र खेतसिंह के पौत्र सबलसिंह
को राज्याधिकारी बनाने का विचार किया । यह सबलसिंह बादशाह शाहजहाँ के
दरबार में उपस्थित हुआ । सामन्तगण इसके पक्ष में थे ही । यह भी पहिले पेशावर
की मुहिम पर नियुक्त होकर बादशाह की अच्छी नौकरी बजा चुका था । अतः
बादशाह इससे पूर्ण परिचित था । बादशाह ने महाराजा जसवंतसिंह को कहा कि
पोकरण नगर पहले से ही तुम्हारा ही है । राव चंद्रसेण ने जयसलमेर के रावल
हरराज के गिरवे रख दिया था । तब से पोकरण पर भाटी वंश का अधिकार है ।
अब हम पोकरण तुम्हें इनायत करते हैं । वहाँ जाकर पोकरण पर अपना अधिकार
कर लो और जयसलमेर के राज्यसिंहासन से रामचंद्र को हटा कर सबलसिंह को
रावल बना दो, यह कह कर बादशाह ने महाराजा जसवंतसिंह को पोकरण का
फरमान दे दिया और सबलसिंह को भी महाराजा के साथ भेज दिया ।

गीत प्रहास साणोर २

दळाकार चहुँअै वळा जोध वांका दिपै, आज जग-जेठ अचडां अवारु ।
 “जसी” वांका खळां वांक काढै जुडै, मार वांका-दुरंग लिए राव मारु ॥१॥

सुतन “गजसाह” गज-गाह बांधै समर, सगत वळ जळहळै तेग साथै ।
 गांजवा खळां जस करण वांका गढां, हींदवा - छात रै फतै हाथै ॥२॥

विभाड़ै जादवां - कोट घर कीध वस, सवळ व्रद खाटिया भवां सारु ।
 तप-बळी अभनमा “माल” “गंगेव” तो, ममारक पोकरण राव मारु ॥३॥

... .. ।
 ॥४॥

(अज्ञात)

शब्दार्थ—दळा-कार - सेना, फौज । चहुँअै-वळा - चारों ओर । जोध - योद्धा, वीर । वांका - बाँकुरे । दिपै - शोभायमान हैं । जग-जेठ - वीर, राजा । अचडां - कीर्ति, श्रेष्ठ बातें । अवारु - बचाने के लिए, बचाने वाला । जसी - महाराजा जयवंत सिंह । खळां - शत्रुओं । वांक - गर्व, ऐंठ । काढै - निकालता है, मिटाता है । जुडै- भिड़ कर, युद्ध कर । मार - लूट कर । बांका-दुरंग - जयसलमेर का गढ़, बाँकुरा गढ़ । राव-मारु - राठौड़ राजा । सुतन - पुत्र । गजसाह - महाराजा गजसिंह । गज-गाह - (?) । समर - युद्ध । सगत - शक्ति । जळहळै - देदीप्यमान होती है, चमकती है । तेग - तलवार । गांजवा - पराजित करने को । वांका गढां - जयसलमेर का किला । हींदवा-छात - हिंदू राजा, हिंदुओं का राजा । विभाड़ै - पराजित कर, लूट कर । जादवां-कोट - जयसलमेर का गढ़ । व्रद - विरुद्ध । खाटिया - प्राप्त किए । भवां - जन्मों । सारु - लिए । अभनमा - वंशज । माल - राव मालदेव (जोधपुर) । गंगेव - राव गांगा का पुत्र । ममारक - सुवारक, शुभ, मंगलप्रद ।

महाराजा वि. सं. १७०७ में जोधपुर आए और पोकरण का फरमान दे कर अपने विश्वस्त सामंतों को जयसलमेर भेजा । रावल रामचंद्र ने कहा कि इस प्रकार की याचना करने से पोकरण का गढ़ नहीं मिल सकेगा । हम मरेंगे तब गढ़ मिलेगा । यह वृत्तान्त सुनकर महाराजा ने अपनी सेना जयसलमेर पर भेजी । रामचंद्र को राज्य-सिंहासन से हटा कर सबलसिंह को जयसलमेर का रावल बना दिया और पोकरण पर भी अपना आधिपत्य जमा दिया । गीत नं० १, २, ३ उपर्युक्त घटना से संबंधित हैं ।

गीत घडी सांणोर ३

छिलै सेन साहण समंद कर्मध ऊपरि छात्रां, ऊजळी करै आरंभ अनिमंघ ।
 पोकरणि पलटि "गज-बंध" रा पाट पति, बांधियो जोधपुर गळै 'गजबंध' ॥१॥
 वाजतै नगारै कटक वाळै विखम, जैत-हथ सूत्रियो इसी रण - जंग ।
 गढां रा गरव गळिया "जसा" गढपती, गिरैद सिएगारियो अभिनमा "गंग" ॥२॥
 बाप जिम वडा ही वडा वणिया विरुद, "सूर" हर आभरण भवां सारु ।
 महाराजा जु तै माड कीधी विमह, मंडोवर अंजसै राव मारु ॥३॥
 खत्री-वट प्रगट करि जैत चाढी खवां, कुळ तिलक काढियो कोट लीयो ।
 सपूता - चार पतिसाह सनमानियो, वाळतै पोकरण अंक वळियो ॥४॥

गीत छोटी सांणोर ४

उजैणी^१ खेत घडा^२ वेहुँ आवडै, नाळ निहाव गजां^३ नीसांण ।
 "सूर" हरी माथे साहिजादां, राजा उलटियो महारांण ॥१॥

पाठान्तर

१. ख. उजैण । २. क. घड । ३. क. गाजे ।

शब्दार्थ—छिलै — उमड़ कर । साहण — घोड़ा । छात्रां — राजाओं । अनिमंघ —
 धीर । पाट-पति — पट्टाधिकारी । कटक — सेना । वाळै — मोड़ कर, मोड़ दिया ।
 विखम — भयंकर, विषम । जैत-हथ — विजय हस्त । सूत्रियो — (?) । इसी —
 ऐसा । रण-जंग — युद्ध । गरव — गर्व । गळिया — मिट गये, नष्ट हो गये । जसा —
 महाराजा जसवंतसिंह । गढ-पती — राजा । गिरैद — गिरौंद, पर्वत । सिएगारियो —
 सुसज्जित किया । अभिनमा — वंशज । गंग — राव गांगा । बाप — पिता । सूर —
 महाराजा सूरसिंह । हर — वंशज । सारु — लिए । माड — जयसलमेर राज्य ।
 कीधी — किया । विमह — मान या मद-रहित । अंजसै — गर्व करता है । राव-मारु —
 राठोड़ राजा । खत्रीवट — क्षत्रियत्व । प्रगट — प्रकट । जैत — विजय । खवां —
 कंधों । सपूताचार — सुपुत्र के आचरण या कर्त्तव्य । सनमानियो — प्रतिष्ठा दी, सम्मान
 किया । वाळतै — वापिस लेते हुए । अंक वळियो — मान बढ़ गया, अति श्रेष्ठ कार्य
 हो गया ।

घडा — सेना । आवडै — भिड़ती है ? नाळ — तोप । निहाव — ध्वनि, प्रहार ।
 गजां — हाथियों । नीसांण — नगाड़ा, या झंडा । सूर — महाराजा सूरसिंह । हरी —
 वंशज । माथे — ऊपर । उलटियो — उमड़ गया । महारांण — महाराज, समुद्र ।

अवडां गजां धजां^१ आरावां, जूह हूह जै जूह जुआ ।
 होद नवाव रोद हेकारुं, हीलोहळ गरकाव हुआ ॥२॥
 मुज छिलियी माथै साहजादां^२, असमर^३ लहर लगै असमांण ।
 "गजबंध" तणी अखंड^४ गळिया, खारै समंद छ खंड खुरसांण ॥३॥
 लोहां लोड बोड^५ जळ लागै, सूर आवरत्त संभ्रमिया^६ ।
 काळै थाट तणा कलमायण^७, काळै वार आहार किया ॥४॥
 जग कळपंत तणी "जसवंत", फेरा लहर कहर फिरियो ।
 लोह धार^८ गैणाग लागतां, "औरंग"^९ धु जिम ऊवरियो ॥५॥
 घडा विरोळ मार चौघारां, काळ वहंतां कमण^{१०} कळै ।
 रोळै दळ बोळै रुद्रायण^{११}, वळियो जैम समंद वळै ॥६॥
 (नाथी सांडू)

पाठान्तर

१. क. छोळ । २. सायजादां । ३. ख. आवव । ४. क. आठ मै गळिया ।
 ५. क. बोड । ६. क. संजमिया । ७. क. किलमाइण । ८. क. लहर । ९. ख
 अवरंग । १०. क. कवण । ११. क. रीद्रायण ।

शब्दार्थ—अवडां — इतने । धजां — घोड़ों । आरावां — तोपों ? । जूह —
 यूथ, समूह । हूह — ? जै-जूह — हाथियों का दल । जुआ — पृथक, ओर ।
 होद — हाथी की अम्मारी में बैठने का स्थान । रोद — यवन । हेकारुं — एक बार,
 एक दफे । हीलोहळ — समुद्र । गरकाव — निमग्न । सुज — वह । छिलियो —
 सीमा के बाहर हो गया । असमर — तलवार । असमांण — आसमान । गजबंध —
 महाराजा गजसिंह । तणी — तनय, पुत्र । गळिया — निमग्न कर दिए । खुरसांण —
 यवन । लोहां — शस्त्र, शस्त्र-प्रहारों । लोड — बड़ी लहर या तरंग । बोड — ?
 आवरत्त — युद्ध । संभ्रमिया — भ्रमित हो गये । काळै — वीर । थाट — सेना ।
 कलमायण — यवन । काळै — श्याम । वार — जल । जग कळपंत — जगत कल्पान्त
 के समान । कहर — भयंकर आपत्ति । गैणाग — आकाश । ऊवरियो — वच गया ।
 विरोळ — विध्वंस कर के । चौघारां — भालों । काळ — मौत, यमराज । वहंतां —
 चलने पर । कमण — कोन । कळै — ? रोळै — ध्वंस करके ।
 बोळै — डुबाकर । रुद्रायण — यवन । वळियो — लीटा, वापिस आया । वळै —
 लोटता है, वापिस आता है ।

गीत प्रहास सांणोर ५

सजै फौज कांठळ घरर घणा नीसांण घुर, अनळ धुँआ रवण रण ऊजायै ।
 वहण दळ दिलेसुर तणा फाटा वरस, मेर-गिर “गजण” रा तणै माथै ॥१॥
 भडज वादळ सबळ वीज साबळ भळक, खळक जळ रुधर घट नाळ खाळा ।
 वार सुरतांण दळ अकळ खूटा वरस, “माल” हर सीस सुर-गरंद-माळा ॥२॥
 कठठ कांठळ कटक रोस चांमास कर, जवनपत हिंदवां-छात जूटा ।
 अभंग जसराज सर कणैगिर ऊपरा, खँग वादळ वरस वार खूटा ॥३॥
 अनड सर कमँध वन थाक रहिया अनख, उभै पत-साह देखै अछायौ ।
 पखां जळ चाढ खळ पाड बांहां प्रळंब, असुर घण पाड खग भाड आयौ ॥४॥
 (अजबौ बारहठ)

गीत प्रहास सांणोर ६

दिली-साह छलि उजेणी वाह खग दाखतै, लडण ऊछाह अवसांण लाघै ।
 “जसा” चतरबा गजगाह रचि तू जुडै, बिहूँ पतसाह सूँ नेत-बांधै ॥१॥

शब्दार्थ—कांठळ - घन-घटा । घरर - ध्वनि । घणा - बहुत । नीसांण -
 नगाडा । घुर - बजकर । अनळ - अग्नि । रवण - ध्वनि । रण - युद्ध, युद्ध-
 स्थल । ऊजायै - ? वहण-दळो - सेना के चलने पर । दिलेसुर - बादशाह ।
 तणा-तनय - पुत्र । वरस=उरस - आकाश । गजण - महाराजा गजसिंह । तण -
 तनय, पुत्र । माथै - ऊपर, पर । भडज - घोड़ा । वीज - बिजली । साबळ -
 माला । भळक - चमक कर । खळक - प्रवहमान होकर । रुधर - रुधिर, रक्त ।
 घट - शरीर । नाळ-खाळा - नाले । वार - जल । सुरतांण - बादशाह । अकळ -
 अपार, बहुत । खूटा - समाप्त हो गये । माल - राव मालदेव । हर - वंशज ।
 सुर-गरंद-माळा - सुमेरु पर्वत रूपी श्रेणी । कठठ - सेना, रथ आदि के चलने की ध्वनि ।
 कटक - सेना, दल । चांमास - वर्षा काल । जवनपत - यवनपति, बादशाह । हिंदवां-
 छात - हिंदू राजा, हिंदुओं का राजा । जूटा - भिड़ गये । अभंग - वीर । कणैगिर -
 सुमेरु पर्वत । खँग - घोड़ा । वार - पानी, जल । अनड - वीर, पर्वत । कमँध -
 राठीड़ । वन - जल, वर्षा । थाक - थक कर । अनख - शत्रु । उभै - दोनों ।
 अछायौ.....? पखां - पक्षी । जळ - कांति, आभा, चमक । खळ - शत्रु ।
 पाड - मार कर । बाहां-प्रळंब - आजानु-वाह । असुर - यवन । घण - बहुत ।
 भाड - प्रहार करके ।

छलि - लिए । खग - तलवार । दाखतै - कहते हुए । उछाह - उत्साह ।
 अवसांण - अवसर । लाघै - प्राप्त होने पर । जसा - महाराजा जसवन्तसिंह ।
 चतरबा - चारों ओर ? गजगाह - युद्ध । जुडै - भिड़ कर । बिहूँ - दोनों ।
 नेत-बांधै - झंडा धारण किए हुए ।

बाजुवा कमंध रचि पहां बौळावतौ, अरि हरि गांजतौ भुजां अकारै ।
 सांफळै तुहिज 'गजसाह' रा सींघळी, साह आलम दुवै सरिस सारै ॥२॥
 ठेल्हती गजां है-थाट लागा अटळ, रीठ वागां खगां दुवै राहां ।
 जोध "जसराज" पूगी भली जूजवौ, सेल रोळै दुहुं पातिसाहां ॥३॥
 चखाडै कूंत चखतां घणी चापडै, रौद - घड़ पछाडै अचळ राखी ।
 जीवतां - सिभ महाराज वणियौ "जसौ", समर चा करे रवि चंद साखी ॥४॥

(अज्ञात)

गीत-प्रहास सांणोर ७

भुजा कूंत ऊपाड रण वार नांखै भिड़ज ,
 खसण चलियौ' दिली - थाट खांगै ।
 नांखियौ "जसै" "महबूब" लागां निहंग ,
 गै - घड़ा ऊपरै वियै "गांगै" ॥१॥

पाठान्तर—१. ख. छालियौ । २. ख. खांगै ।

शब्दार्थ—बाजुवां—एक ओर, तरफ । रचि—रचकर । पहां—राजाओं ।
 बौळावतौ—मिटता हुआ । अरि हरि—शत्रु वंशज । गांजतौ—पराजित करता हुआ ।
 अकारै—तेज, जबरदस्त । सांफळै—शस्त्र प्रहारों में, युद्ध में । गजसाह—महाराजा
 गजसिंह । सींघळी—वीर, वीर पुत्र । साह—बाहशाह । आलम—जन-समूह,
 दुनिया । दुवै—दोनों । सरिस—समन । सारै— ? ठेल्हती—बकेलता
 हुआ, पीछे हटाता हुआ । गजां—हाथियों । है-थाट—अश्व-दल । अटळ—अचल,
 स्थिर । रीठ—प्रहार । वागां—वजने पर । खगां—तलवारों । दुवै-राहां—
 (हिंदू और मुसलमान) दोनों धर्म । जोध—योद्धा, वीर । पूगी—पहुंच गया । भली—
 ठीक । जूजवौ—युद्ध करने को । सेल—भाला । रोळै—प्रहार किए । दुहुं—
 दोनों । कूंत—भाला । चखतां-घणी—मुगल-बादशाह । चापडै—युद्ध मैदान में ।
 रौद-घड़—यवन सेना । पछाडै—पराजित करके । अचळ—कीर्ति । जीवतां-सिभ—
 युद्ध में घायल होने वाला, युद्ध में घायल होकर जीवित रहने वाला । जसौ—जैसा या
 जसवंतसिंह । समर—युद्ध । चा—के । रवि—सूर्य । चंद—चांद । साखी—
 साक्षी ।

कूंत—भाला । वार—वेला, समय । नांखै—भौंकता है । भिड़ज—घोड़ा ।
 खसण—युद्ध । थाट—दल, सेना । खांगै—वीर, योद्धा, राठीड़ । नांखियौ—भौंक
 दिया । जसै—महाराजा जसवंत सिंह । महबूब—महाराजा जसवंतसिंह के घोड़े का
 नाम । निहंग—आकाश । गै-घड़ा—हाथी दल । वियै—द्वितीय, वंशज । गांगै—
 राव गांगा राठीड़ (जोधपुर) ।

सामँतां^१ मीर^२ चौधार यर^३ साजती ,
 समरं बागी बिनै पातसाही^४ ।
 मारवै - राव तोखार वद मेलियौ ,
 मार सारां गजां भार माही^५ ॥२॥

भलण^६ करतौ घड़ा सेल रंगिये "जसौ" ,
 जुध वट^७ खेलतौ "गजन" जायौ ।
 पमँग^८ पड़तालतौ^९ पछाड़ण पाड़तौ ,
 अफारै चकारै चाल आयौ ॥३॥

सायजादां^{१०} हुता सरस कर सैफळ ,
 मिटी राखी भुजां जाण माजा ।
 साज सकिया नहीं खळां दळां साजतां ,
 रण अकळ जीवतां - संभ राजा ॥४॥
 (नाथी सांदू)

गीत बडी सांणीर ८

सकज वाहती सेल अण-ठेल नव साहसी, खेलियै खेल खत्रवाट रौ खूब ।
 छोह लागै "जसै" ओरियौ छत्रपति, मोकळा लोहरै बोह "महबूब" ॥१॥

पाठान्तर—१. क. सेवतां । २. क. मोहर । ३. ख. अरि । ४. क. पातसाई ।
 ग. पातसाहै । ५. ख. माहै । ६. क. जलण । ७. ख. जोधवटे । ८. क. पमंग ।
 ९. क. परताल । १०. क. साहजादां ।

शब्दार्थ—मीर - हरावल । चौधार - भाला । यर - अरि, शत्रु । साजती -
 मारता हुआ । समर - युद्ध । बागी - हुआ । बिनै - दोनों । मारवै-राव - राठीड़
 राजा, मारवाड़ का राजा । तोखार - घोड़ा । वद - बढ़ कर । मेलियौ - झोंक
 दिया । सारां - तलवारों, अस्त्रशास्त्रों । गजां-भार - हाथी दल । भलण -?
 घड़ा - सेना । सेल - भाला । जसौ - महाराजा जसवंतसिंह । जुध-वट - युद्ध मार्ग ।
 गजन - महाराजा गजसिंह । जायौ - पुत्र । पमंग - घोड़ा । पड़तालतौ - तेज गति
 से चलता हुआ । पछाड़ण - पछाड़ने वाला । पाड़तौ - मारता हुआ, गिराता हुआ ।
 अफारै.....? माजा - मर्यादा । साज - मार । साजतां - मारने पर ।
 रण - युद्ध । अकळ - भयंकर, जवरदस्त । जीवतां-संभ - युद्ध में घायल होकर
 जीवित रहने वाला वीर ।

अण-ठेल - नहीं रुकने वाला वीर । नवसाहसी - राठीड़ वीर । खत्रवाट - क्षेत्रियत्व ।
 छोह - क्षोभ, जोश । जसै - महाराजा जसवंतसिंह । ओरियौ - झोंक दिया । छत्रपति -
 राजा । मोकळा - बहुत, अधिक । लोह - शस्त्र । बोह - प्रहार, बौछार ।

कूंत आहावतौ ढाहतौ केवियां, ब्रजड रांमत रमें कमंध तयारा ।
 “गजरा” रै नांखिया बाज मचती गहण, “सूर” हर आभरण पूर सारा ॥२॥
 धीबिया छडाळां किता लौटे घरा, प्रगट रजपूत वट दाख पूरै ।
 “माल” दूजै वधै महाजुध मेलियो, खाग अणिरां तणै प्रगट खूरै ॥३॥
 वाहि चौधार अरि ढाहिया पार विण, रूक साराहियो हिंदू राहां ।
 गवाडे प्रवाडा “जसी” धारियां गुमर, समर गांजै बिहू पातसाहां ॥४॥
 (महेसदास आढी)

गीत प्रहास सांगोर ६

वदन तेज कळपंत री वयळ वाडव वणै, ऊफणै क्रोध पोरस अमांमी ।
 मंडाणी हेक राजा घणै मछर सूं, साहजादां दुहुं तणै सांमहो ॥१॥
 भूप निधडक इसा रचै अणियां - भमर, त्रिलोकी नमै विध न्याय तोनूं ।
 दहलिया देख गजसिंघ री दीकरी, दीकरा साहजांह तणा दोनूं ॥२॥

शब्दार्थ—कूंत - भाला । आवाहतौ - प्रहार करता हुआ । ढाहतौ - गिराता हुआ । केवियां - शत्रुओं । ब्रजड - तलवार । रांमत - खेल । तयारा - तब । गजरा - महाराजा गजसिंह । नांखिया - झोंक दिये । बाज - घोड़ा । गहण - युद्ध । सूर - महाराजा सूरसिंह । पूर - पूर्ण, पूरा । धीबिया - संहार किए । छडाळां - भालों । किता - कितने ही । प्रगट - जाहिर । रजपूत-वट - क्षत्रियत्व, शौर्य । दाख - बता कर । पूरे - पूर्ण । माल - राव मालदेव । दूजै - वंशज । वधै - बढ कर । मेलियो - झोंक दिया । खाग - तलवार । अणियां - नौक, पैनी वाराण । बाज - घोड़ा । खूरै - समूह में । वाहि - प्रहार करके । चौधार - भाला । ढाहिया - मार डाले, गिरा दिए । पार-विण - अपार, बहुत । रूक - तलवार । साराहियो - प्रशंसा की । हिंदू-राहां - हिंदू धर्मावलंबियों । गवाडे - गायन करवा कर । प्रवाडा - युद्धों, शौर्य के कार्यों । जसी - महाराजा जसवंतसिंह । गुमर - गर्व । समर - युद्ध । गांजै - पराजित करके । बिहू - दोनों ।

वदन - मुख । कळपंत - कल्पान्त, प्रलयकाल, नाश । वयळ - सूर्य । वाडव - बडवानल । ऊफणै - उवाल खाता है, जोश खाकर ऊपर उठता है । अमांमी - अधिक, अपार । मंडाणी - मंड गया, डट गया । घणै - अधिक । मछर - गर्व, अभिमान । दुहुं - दोनों । तणै - के । सांमहो - सम्मुख, सामने । निधडक - निर्भय, निशंक । अणियां-भमर - सेना में अग्र रहने वाला । त्रिलोकी - तीन लोक, संसार । विध - विधि । तोनूं - तुम्हको । दहलिया - भयभीत हुए । दीकरा - पुत्र । तणा - के ।

उरड हड़वड़ मचै हूब-छड़ ओरियां, खूब "महबूब" अस भिड़ण खाथै ।
जंग जस बीजळां धार बूठी "जसौ", मुरादाबगस 'अवरंग' माथै ॥३॥
उजेणी-खेत सुण वात अखिआत आ, छातपत बिया अहमेव छांडै ।
दुरत गत दिखण गुजरात रा दळां सूं, मुरधरा नाथ भाराथ मंडै ॥४॥
(रुघी-मुहती वाळरवा वाळी)

गीत छोटी सांणोर १०

धुडहड़ियौ सुणै वाजतां ढोले, हव वागी कळपंत हुआ ।
धूहड़ उलटतां धमळा-गिर, खूंद पखै कुण धरै खवा ॥१॥
आयुसां तणा बरफ ऊपड़िया, बाहुड़िया गुड़िया बंगाळ ।
"जसौ" पहाड़ हेमचौ जाणै, तरफ तरफ तूटौ रिए ताळ ॥२॥
तूटे असण धसण तरवारां, भौक छडाळां दियै भळ ।
"गज-बंध" तणा हेम-गर गळिया, दुहै पतसाहां तणा दळ ॥३॥
"अवरंग" थाट भाट आछटियां, धड़ लूटिया भेळा घरण ।
वाळे हेम जिम बाहुड़ियौ, रुक रहलि दे भौक रण ॥४॥
(नाथी सांदू)

शब्दार्थ—उरड — घसान, या साहस । हड़वड़ -- घबराने से उत्पन्न जल्दबाजी, खलबली । हूब-छड़ — भालों के प्रहार । ओरियां — भोंकने पर । अस — अश्व, घोड़ा । भिड़ण — भिड़ने को । खाथै — तेजी से । बीजळां — तलवारों । बूठी — वर्षा की । जसौ — महाराजा जसवंतसिंह । मुरादा-बगस — शाहजहां का सबसे छोटा पुत्र मुरादबख्श । अवरंग — शाहजहां का तीसरा पुत्र औरंगजेब । माथै — पर, ऊपर । अखिआत — अभूतपूर्व । आ — यह । छातपत — छत्रपति, राजा । बिया — दूसरे । अहमेव — गर्व, अभिमान । दुरत — भयंकर, विकट । भाराथ — भारत । मंडै — रचा ।

धुडहड़ियौ — आवेगपूर्वक या जोश के साथ उलट पड़ा, ध्वनि करता हुआ उलट पड़ा । हव — अब । वागी — विद्रोही । कळपंत — भयभीत । धूहड़ — राव धूहड़ के वंशज, राठीड़ । धमळा-गिर — धवल गिरि, हिमालय पर्वत । खूंद — बादशाह । पखै — पक्ष में, अथवा बिना । खवा — कंधा । आयुसां — ? तणा — के । बाहुड़िया — लोट गये, विसर्जन हो गये । गुड़िया — गिर गये । बंगाळ — यवन । जसौ — महाराजा जसवंतसिंह । हेमचौ — हिम का । जाणै — मानो । तरफ तरफ — इधर-उधर, चारों ओर । रिए-ताळ — युद्धस्थल । असण — तीर, बाण । भौक — प्रहार । छडाळां — भालों । तणा = तनय — पुत्र । हेमगिर — हिमालय पर्वत । गळियां — पिघल जाने पर । दल — समूह । थाट — सेना । भाट — प्रहार । आछटियां — पछाड़े । धड़ — शरीर । भेळा — साथ । घरण — भूमि । वाळे — नाला ? हेम — हिमालय । बाहुड़ियौ — वापिस आया, वापिस मुड़ा । रुक — तलवार । रहलि — वायु का ठण्डा और महीन प्रवाह । भौक — प्रहार । रण — युद्ध ।

गीत बडो सांगोर ११

भडां पाडतां खूंदता घणा विपरीत भत, ऊपटै डोहतां थट्टै आरांण ।
 दुहूं दळ बहता खिमंता देखिया, पाव "महबूब" जसराज रा पांण ॥१॥
 आंठुआं चाढतां धकै सावळ अणी, खेलतां घसळ खत्रवाट आखेट ।
 विढंतां सेस मण-गयण लागा वधै, नग भिड़ज करग राजा तणा नेट ॥२॥
 चापडै सरदां तूसळां चाढतां, पाडता चकारै गजां जिम पाथ ।
 खळां करता जळण दळां दीठा खरा, है तणा चरण हिंदूपती हाथ ॥३॥
 चौगांन करता खुरी वाहता चरण, सोहिया साह थाटां सिघाळा ।
 जंग "महबूब" पै आंकवाळिया "जसा", वांक टळियो भुजां "गजन" वाळा ॥४॥
 (नाथी सांदूं)

गीत खुडद सांगोर १२*

पुडी चडियो "जसौ" सीस पत-साहां, सुभट जीत भेजवा सक ।
 रच कंदळ त्रिण पोहर राखियो, तरण-मंडळ नट कुंडळ तक ॥१॥

शब्दार्थ—भडां - योद्धाओं । पाडता - गिरता हुआ, मारता हुआ । खूंदता - रौंदता हुआ । भत - भांति, प्रकार । उपटै - ऊमड़ते हैं । डोहतां - ? । थट्टै - होता है । आरांण - युद्ध । दुहूं - दोनों । खिमंता - चमकता हुआ । पाव - पैर । जसराज - महाराजा जसवंतसिंह । पांण=पाणि - हाथ । आंठुआं - घोड़े के दोनों अगले पैरों और गर्दन के नीचे का भाग । आंठुआं चाढतां - घोड़े के अगाड़ी सेना को लेते हुए, घोड़े के वक्षस्थल का प्रहार दिलाते हुए । धकै - अगाड़ी । सावळ - भाला । अणी - नौक । घसळ - ? खत्रवाट - क्षत्रियत्व । आखेट - शिकार । विढंतां - युद्ध करते समय । सेस - शेष-भाग । मण-गयण=गगनमणि - सूर्य । वधै - बढते हैं । नग - पैर, चरण । भिड़ज - घोड़ा । करग - हाथ । नेट - ? चापडै - युद्धस्थल में । सरदां - ? तूसळां - ? चकारै - ? । पाथ - अर्जुन । खळां - शत्रुओं । दीठा - देखे । खरा - निश्चय । है-हय - घोड़ा । खुरी - ? । वाहता - प्रहार करते हुए । सोहियो-शोभित हुए । साह - बादशाह । थाटां - सेनाओं । सिघाळा - वीर । पै - पैर । आंकवाळिया - पराकाष्ठा पर पहुंच गया । जसा - महाराजा जसवंतसिंह । वांक - वक्रता, टेढ़ापन । टळियो - दूर हो गया, मिट गया । गजन - महाराजा गजसिंह । वाळा - के ।

पुडी - युद्ध । जसौ - महाराजा जसवंतसिंह । सीस - पर, ऊपर । कंदळ-युद्ध । त्रिण - तीन । पोहर - पहर । तरण-मंडळ - सूर्य मंडल । तक - प्रकार, तरह ।

*गीत नं० ४ से गीत नं० १२ तक इतिहास-प्रसिद्ध घरमत (उज्जैन) के युद्ध सम्बन्धी हैं जिसके विषय में विशेष जानकारी देने की आवश्यकता प्रतीत नहीं होती है ।

चौरंग भडां मोख चालवतै, थीयी तमासी तेण थिर ।
 वादी तणा कडा जिम वणियाँ, "सूर" तणी बिबंद सर ॥२॥
 समर उजैण रचै नव-सहसी, सूर सहस भेदे नव थांत ।
 ख्याली चकर जहीं खेडेचै, अरक रथां भेदे असमान ॥३॥
 जुध "जसराज" जि तूं जौधारां, धारां मुहै निजोड़ धड़ ।
 नट-कुंडळ जिम भेदे निसरै, भाण-मंडळ तिम छेद भड ॥४॥
 सपेखियो उभै सुरतांणां, सुरां नरां असुरां सारांह* ।
 हिंदू तुरक खिलाय हिलाया, गाजी रै बाजी गजसाह ॥५॥
 (जगन्नाथ सांदू)

गीत-प्रहास सांणोर १३*

उभै फाबिया विरद "जसराज" खगि ऊजळा,
 भुजां भारथ दिली भार भळियौ ।
 वाळियौ आंक "औरंग" सरिस वाजतै,
 वळै ही मुरडतै आंक-वळियौ ॥१॥

चौरंग-युद्ध । थीयी-हुआ । थिर-स्थिर । वादी-नट, बाजीगर । नव-सहसी-
 राठोड़ । ख्याली-बाजीगर । जहीं-जैसे । खेडेचै-राठोड़ । अरक-सूर्य ।
 धारां-तलवारों । मुहै-अगाड़ी । निजोड़-काट कर, पृथक कर । भाण-मंडळ-
 सूर्य-मंडल । सपेखियो-देखा । उभै-दोनों । सुरतांणां-बादशाहों ।

फाबिया-शोभित हुए । विरद-विरुद्ध, कीर्ति, यश । खगि-तलवार ।
 ऊजळा-उज्ज्वल । भार उत्तरदायित्व, जिम्मेदारी । भळियौ-स्वीकार किया,
 जिम्मे लिया । वाळियौ-आंक-महान कार्य किया, पराकाष्ठा का कार्य किया ।
 सरिस-समान । वाजतै-युद्ध करने पर । वळै-फिर, और । मुरडतै-क्रोध
 करने पर, क्रुद्ध होने पर । आंक-वळियौ-पराकाष्ठा का कार्य हो गया ।

*गीत का अन्तिम द्वाला छंद-शास्त्र के अनुसार अशुद्ध है ।

*गीत नं १६ और १४ का संबंधित इतिहास निम्न प्रकार है—“घरमत के युद्ध के पश्चात्
 औरंगजेब आगरे की तरफ चला । उस समय उसके पास ८०००० के लगभग सेना थी ।
 इस महती सेना को लिए औरंगजेब और मुराद समूह (फतेहबाद) पहुँचे जो आगरे से
 साठे सात कोस हैं । वहीं पर दारा और औरंगजेब में मुकाबला हुआ और महा घोर
 युद्ध हुआ । इस युद्ध में दारा के बाईं ओर की सेना का सेनापति राठोड़ रामसिंह ने बड़ा

ही वीरोचित कार्य किया। उसने शत्रु सेना की पंक्तियों को चीर कर मुरादवस्त्र को बड़ी वीरता और फुर्ती से घायल कर दिया। इतना ही नहीं बरन वह अम्बारी का रस्सा काट कर उसे हाथी से गिराने की कोशिश कर रहा था। मुराद घायल हो गया था और चारों ओर से राजपूत वीरों से घिर गया था। इस समय उस पर रामसिंह राठीड़ भूखे सिंह के समान टूट पड़ा। इतने में उसके एक तीर मर्म स्थान पर लगा जिससे वह अपने अभिष्ट कार्य में सफल नहीं हो सका और स्वर्ग को सिधारा।

इसी प्रकार उधर औरंगजेब पर महाराजा जसवंतसिंह का चचेरा भाई राठीड़ रूपसिंह चला। यह वीर आगे बढ़ा और औरंगजेब के हाथी के पास पहुंचा और वहां पर घोड़े से उतर ऐसा पराक्रम दिखाया कि औरंगजेब उसके रण-कीशल, फुर्ती और साहस को देख कर चकित हो गया। इस वीर को जीवित पकड़ने की आज्ञा दी परन्तु वह रूपसिंह को पकड़वा नहीं सका। वह वीर रणभूमि में कई शत्रुओं को घराशायी करता हुआ स्वयं भी टुकड़े-टुकड़े होकर वीर-गति को प्राप्त हुआ। इस स्थान पर दारा को खलील-उल्ला खां ने कुमंत्रणा दी—वह पराजित होकर आगरे की तरफ भाग गया और वहां पर खजाने के कीमती जवाहरात और आवश्यकीय सामान लिया और वहां से दिल्ली चला गया।

औरंगजेब भी वहां से सीधा आगरे गया और अपने पुत्र सुलतान मुहम्मद को भेज वहां के किले पर अधिकार कर बादशाह शाहजहां को कैद कर लिया। यहां पर औरंगजेब ने विचार किया कि मैंने मुरादवस्त्र को राज्य का प्रलोभन देकर अपने शामिल किया था। बादशाह को तो कैद कर लिया परन्तु एक कंटक अभी अवशेष है। इसकी सफाई कर लेनी चाहिए। इस बात को मन में रखा और दारा के पीछे चला, मार्ग में जाते हुए मथुरा पहुंचा, वहां मुराद को खूब शराब पिलाया और उसे पागल बना दिया तथा इस अवस्था में इसको भी कैद कर लिया। अब उसके लिए दारा ही एक कंटक था, उसे मिटाने के लिए वह दिल्ली आया। इतने में दारा दिल्ली छोड़ कर लाहोर की ओर चला गया। औरंगजेब उसके पीछे गया। मार्ग में जाते सं० १७१५ की श्रावण सुदि १ (ई० सन् १६५८ ता० २१ जुलाई), अज्जादाद में तख्त पर बैठा। इधर औरंगजेब ने वि० सं० १७१५ भाद्रपद वदि ११ (ई० सं० १६५८ ता० १४ अगस्त) आम्बेर के राजा जयसिंह के मारफत महाराजा जसवंतसिंह को अपने पास बुलाया। इस समझौते में राव अमरसिंह राठीड़ का पुत्र रायसिंह भी शामिल था। महाराजा जसवंतसिंह के पास बादशाह ने पत्र भेजा, उसमें लिखा था कि तुम स्वामिभक्त हो, मैं भी ऐसे स्वामिभक्तों को चाहता हूँ। हमारे हज़ूर में हाजिर हो जाओ और खर्च के लिए सांभर के खजाने से पांच लाख रुपये और पचास हजार की हुंडियां भेजो। महाराजा जसवंतसिंह ने भी समय की गति देख कर तदनुसार व्यवहार किया। जोधपुर से चल कर पंजाब में जहां औरंगजेब का पड़ाव था, वहां पहुंचे। औरंगजेब ने इनका इस समय भली भांति सत्कार किया। खासा खिलअत, जरदोजी भूल और चांदी के साज वाला एक हाथी और एक हथनी तथा एक बहुमूल्य जड़ाऊ तलवार दी। तत्पश्चात् औरंगजेब सतलज नदी पर पहुंचा तब उसने महाराजा को फिर खासा खिलअत, जड़ाऊ जमघर मोतियों का एक गुच्छा और एक परगना, जिस की आमदनी ढाई लाख रुपया

वार्षिक धी दिया, और महाराजा को कहा कि अब तुम दिल्ली जाओ और वहां की निगरानी रखो। महाराजा जसवंतसिंह औरंगजेब का आदेश पाकर वहां से वि० सं० १७१५ की आश्विन सुदि १ को दिल्ली पहुंच गये।

औरंगजेब दारा के पीछे चला। दारा ने लाहौर में किलेबंदी करने की चेष्टा की परंतु वह विफल रहा। अब वह पंजाब से मुलतान की तरफ चला। उस समय उसके हितैषियों ने उसको काबुल जाने की सलाह दी, परन्तु दुर्भाग्यवश दारा ने काबुल जाना स्वीकार नहीं किया और कच्छ में होता हुआ अहमदाबाद में पहुंचा। उस समय औरंगजेब का स्वसुर अहमद खां वहां सूबहदार था। उसने दारा के साथ बहुत अच्छा बरताव किया। तब यह खबर औरंगजेब को मिली कि दारा अहमदाबाद में है। उसने कई बार तो दारा के पीछे अहमदाबाद जाने का विचार किया परन्तु इतने में यह खबर उसको मिली कि शुजा दिल्ली पर आता है, सुनते ही उसने दारा के पीछे जाने का विचार छोड़ दिया और शुजा को रोकने के लिए तत्काल ही वि० सं० १७१५ के मार्गशीर्ष में मुलतान से खाना हो दिल्ली पहुंचा। महाराजा जसवंतसिंहजी दिल्ली से औरंगजेब का स्वागत करने को सामने गए। उस समय उसने फिर महाराजा को खासा खिलअत और एक सदरी दी और जशन के उत्सव पर मार्गशीर्ष सुदि ६ को एक जड़ाऊ तुरा और दिया।

शाह शुजा ने खजुआ नामक एक छोटे गांव के निकट पड़ाव डाला और औरंगजेब की राह देखने लगा, क्योंकि उसको सूचना मिल गई थी कि औरंगजेब ने अपने पुत्र मुलतान मुहम्मद को बड़ी सेना लेकर मुकाबले के लिए खाना कर दिया है। ज्यों ही मुलतान मुहम्मद सेना लिए वहां आया त्यों ही औरंगजेब स्वयं भी वहां पहुंच गया। शुजा इलाहाबाद के समीप कड़ा नामक नगर में है, जो इलाहाबाद से चार कोस के फासले पर था। वि० सं० १७१५ माघ सुदि ६ (ई० सं० १६५६ ता० ४ जनवरी) को खजुआ के पास लड़ाई के योग्य एक विशाल मैदान था उसको बीच में रख कर युद्ध की तैयारी हुई। उस समय महाराजा जसवंतसिंह औरंगजेब के दक्षिण भाग की सेना का संचालक था।

इसी समय शाह शुजा ने महाराजा जसवंतसिंह के पास पत्र भेजा। उसमें उसने लिखा था कि आप जैसे स्वामी-भक्त राठौड़ वीर के विद्यमान होते हुए भी औरंगजेब ने अपने वृद्ध पिता (शाहजहां) को बंदी कर दिया है तथा भाई-भतीजों का संहार करने के विचार में है। ऐसे महापापी कुटिल हत्यारे की सहायता न करके आप मेरी सहायता करें और बूढ़े शाहजहां को कारागार से मुक्त करें। महाराजा ने शुजा की प्रार्थना पर ध्यान दिया और संदेश भेजा कि आज रात्रि के पिछले प्रहर में मैं (महाराजा जसवंतसिंह) मुलतान मुहम्मद की सेना पर पीछे से आक्रमण बोल दूंगा। आप भी ठीक इसी समय सामने से आकर विपक्षी की सेना पर टूट पड़ें। रात्रि के आक्रमण से औरंगजेब का बल एकदम क्षीण हो जायगा और अपना मनोरथ सफल हो जायगा। महाराजा ने वैसा ही किया। उसी रात्रि में राठौड़ महेशदास, रामसिंह, हरदास और चोहान बलदेव आदि वीरों के साथ मुलतान मुहम्मद की सेना पर पीछे से आक्रमण बोल दिया। रात्रि का समय था एकाएक आक्रमण हुआ जिससे औरंगजेब की सेना घबरा कर इधर उधर भागने लगी। कहा जाता है कि आधी

कीध तैं तिका राव-रांण जांणै कमध, रहावण वात सिर दुवै राहां ।
“जसा” अखिआत अँ साहि सूं जूटतां, सार बळि लूटतां पातसाही ॥२॥

“गजन” रा नमी तो पराक्रम खत्री-गुर, समर दुहुँ तणा रवि-चंद साखी ।
 खागि दाखै अचळ खूंद वड खँगरे, दूंद करि खूंद सूं अचड़ दाखी ॥३॥

शब्दार्थ — कीध — किया । तैं — तुने । तिका — वह । राव-रांण — राजा महाराजा । जांणै — जानते हैं । कमध — राठीड़ । रहावण — रखने के लिए । सिर — ऊपर, पर । दुवै — दोनों । राहां — धर्मों । जसा — महाराजा जसवंतसिंह । अखि-आत — अद्भुत, अपूर्व । अँ — ये । साहि — बादशाह । जूटतां — युद्ध करने पर । सार — तलवार । बळि — बल, शक्ति । गजन — महाराजा गजसिंह । खत्री-गुर — महान् वीर, राजा । समर — युद्ध । दुहुँ — दोनों । तणा — के । रवि-चंद — चांद सूर्य । साखी — साक्षी । दाखै — कह कर, प्रकट कर । अचळ — अटल, कीर्ति । खूंद — यवन, बादशाह । वड — बड़ा, महान् । खँगरे — संहार कर के, मार कर के । दूंद — द्वन्द्व-युद्ध । करि — करके । अचड़ — कीर्ति । दाखी — प्रकट की, बताई ।

के करीब सेना तितर बितर हो गई । परन्तु शुजा वही नियत समय पर नहीं आ सका । यदि वह उस समय वहाँ पर पहुँच जाता तो विजय उसके हाथ ही थी । परन्तु बादशाही तख्त औरंगजेब के भाग्य में वदा था । महाराजा ने सेना तितर बितर हुई देख बादशाही खजाना और सामान लूट लिया और शुजा की प्रतीक्षा में कुछ दूर हट कर ठहर गए । जब शुजा को आता नहीं देखा तो प्रातः काल होते ही महाराजा ने मारवाड़ की ओर गमन कर दिया । शुजा देरी से पहुँचा ।

अब दारा से संबंधित वृत्तान्त भी पढ़िए । शुजा से निपट कर औरंगजेब ने एक बड़ी सेना अमीनखां मीरबख्शी को देकर जोधपुर पर भेजी तथा जोधपुर का राज्य राव अमरसिंह के पुत्र रायसिंह के नाम लिख दिया । औरंगजेब को महाराजा जसवंतसिंह का बड़ा भय था अतः वह स्वयं भी अजमेर जाने का बहाना कर वहाँ से रवाने हुआ । जब महाराजा को यह संदेश मिला कि जोधपुर राव रायसिंह को लिख दिया है और उसकी तामील करने के लिए अमीन खां एक बड़ी सेना लेकर आ रहा है तो महाराजा ने आसोप ठाकुर कूपावत नाहर खां राजसिंहोत और मुहणोत नैणसी को दस हजार सेना के साथ औरंगजेब की सेना से मुकाबला करने के लिए रवाने कर दी । उसने मेड़ता नगर में पड़ाव डाला । तत्पश्चात् महाराजा स्वयं एक बड़ी सेना लेकर जोधपुर से बीलाड़ा आए । इसी अंश में दारा शिकोह गुजरात में था । उसने अहमदाबाद के सूबेदार को निकाल दिया । गुजरात से दारा ने सहायता के लिए महाराजा के नाम पत्र लिख भेजा कि यह समय है, आप हमारी सहायता करें । महाराजा ने भी सहायता देना स्वीकार कर लिया । उपर्युक्त ऐतिहासिक विवरण का ही वर्णन इन गीतों में हुआ है । अतः गीतों के स्पष्टीकरण के लिए ही इतना विस्तार-पूर्वक यह नोट दिया गया है ।

साह कलि सेन लूटै तखत साह चा, वजाड़े "जोध" हर जैत-वाजा ।
दीपिया ऊजळा प्रवाडा दुवै दुहु, राज रा भुज सुजस महाराजा ॥४॥
(नरहरदास बारहठ)

गीत बडो सणोर १४

तरफ हुअौ "दारा" तणी हुअौ "सूजा" तरफ, पिढु लिया खजांना पार पखै ।
खून जिता करै "जसौ" बळ खाग रै, रोद इता राह मांही राखै ॥१॥
लूट मालू सहर खोस खेळू लियो, आवियो मिळण कर कटक आटोप ।
छत्र-धरण दिली बैठी भला छिपावै, कमध रा गुना अर आपरौ कोप ॥२॥
आगरै हवैली साहजां अटकियो, हुअौ कुळ कातल करण हेवा ।
इसौ चिकतौ जिकौ मन माहि आवटै, कमध सू सकै नहीं मांग केवा ॥३॥
उजैणी खेत "महबूब" आफाळियो, गजां कूतां भलां अभनमै "गंग" ।
जद लियो परख औगुण न कुं जतावै, आंख रै फरुकै साह "अवरंग" ॥४॥
हिये होळो हुअौ दीध दुख हजारां, विचारै नित मुख सू वाखाणै ।
सूरपण "जसा" महाराज रौ जगत सिर, जिसी है तिसी अवरंग जांगै ॥५॥
(नरहरदास बारहठ)

शब्दार्थ—साह — बादशाह । कलि — युद्ध । चा — का । वजाड़ै — ध्वनिमान कर के, बजा कर । जोध — राव जोधा । हर — वंशज । जैत — विजय, जीत । दीपिया — शोभित हुए । प्रवाडा — युद्ध, युद्ध के कार्य । दुवै — दोनों । राज — श्रीमान्, आप ।

पिढु — ? पार-पखै — पर-पक्ष, शत्रुपक्ष । खून — गुनाह, अपराध । जसौ — महाराजा जसवंतसिंह । रोद — यवन । इता — इतने । राह — मार्ग । मांही — में । खेळू — मुखिया, प्रधान । कटक — सेना, दल । आटोप — विस्तृत, बड़ी । छत्र-धरण — बादशाह, राजा । भला — ठीक । कमध — राठीड़ । अर — और । साहजां — बादशाह शाहजहां । अटकियो — रोक में दिया, बंदी बनाया । कातल — कातिल, हत्या करने वाला । हेवा — आदी । इसौ — ऐसा । चिकतौ — चकताई वंश का । आवटै — कुदता है, जलन करता है । केवा — गुनाह, अपराध । आफाळियो — टक्कर ली, भिड़ाया । कूतां भालो । भलां — ठीक । अभनमै — वंशज । गंग — राव गांगा । जद — जब । परख — परीक्षा कर के । औगुण — अवगुण, अपराध, गुनाह । न कुं — कुछ भी नहीं । जतावै — प्रकट करता है । आंख रै फरुकै — आंख के इशारे पर, संकेत पर । साह अवरंग — श्रीरंगजेव बादशाह । वाखाणै — प्रशंसा करता है । सूरपण — शौर्य, बहादुरी । जसा महाराज — महाराजा जसवंतसिंह । सिर — में, पर, ऊपर । जिसी — जैसा । तिसी — तैसा, वैसा ।

गीत प्रहास सांणोर १५

समर सगत-पुर मँडोवर छतर-घर समोसर,
 तकर कर बजर बर धजर तांजी ।
 उसर बगतर ऊअर वीर^१ सांसर अतर,
 “गंग” हर कळोघर कहर^२ गांजी ॥१॥

मेलियी “जसै” वळ दिली-दळ मचकतां,
 प्रबळ भुज बळ सरळ तरळ पूगी ।
 धुव्वै^३ मुगळ^४ अकळ^५ कांठळां सरल घर,
 अरळ साबळ भरळ करळ ऊगी ॥२॥

वार विकरार सिरदार विध वाहियी,
 समर भर भार^६ घर भार^७ सूरै ।
 सार सेलार ऊआर भंभार^८ सर,
 पार चौधार कर पार पूगी ॥३॥

काळ लंकाळ करठाळ जड़ियी कमंध,
 व्है विकराळ रगताळ^९ वाई ।

पाठान्तर

१. क. मगर । २. क. कहै । ३. क. ध्रुवै । ४. क. मैगल । ५. ख. सदळ ।
 ६. क. भीर । ७. क. धार घर । ८. ख. वंभार । ९. ख. रत खाल ।

शब्दार्थ—समर — युद्ध । सगत-पुर — दिल्ली । छतर-घर — राजा, बादशाह ।
 समोसर — बराबर । तकर — त्वरा । बजर — वज्र । धजर — भाला । तांजी —
 तेरा । उसर — असुर, यवन । बगतर — कवच । ऊअर — उर, वक्षस्थल । सांसर —
 ? गंग — राव गांगा । कहर — भयंकर, आपत्ति । गांजी — भाला ।
 जसै — महाराजा जसवंतसिंह । वळ — फिर । मचकतां — दबने पर । अकळ —
 ? कांठळां — घटाएँ । सरळ — ? । अरळ — ? ।
 साबळ — भाला । भरळ — चमक, चमकयुक्त । करळ — भयंकर । ऊगी — उदय
 हुआ । वार — समय । विकरार — भयंकर । वाहियी — चलाया । सार — शस्त्र ।
 सेलार — भाला । ऊआर — वक्षस्थल में । भंभार — बड़ा छेद । चौधार — भाला ।
 लंकाळ — वीर । करठाळ — भाला । जड़ियी — प्रहार किया । कमंध — राठीड़ ।
 रगताळ — खून ।

भेद छकड़ाळ चगताळ चूनाळ^१ भिद,
ताळ गी भाळ भर घरण ताई ॥४॥

खतम अवसाण खैपाण रहिया थकत^२,
रीभियो भाण दइवाण^३ राजी ।

सिव सगत सवाडा अखाडा सेल रा,
गवाडै प्रवाडा सुतन "गाजी" ॥५॥

(नाथी सांदू)

गीत षडौ सांणोर १६

कहर करांमत "जसा" हिंदवाण चा सहसकर,
भूभ कुण छात-घर अवर भालै ।
तेज सुजडां तणै ताप सत्र "गजण" तण,
हेम - अनडां ज्यूं ही गळै हालै ॥१॥

पिता जमराज खट-तीस करणाघपत,
ओपियो जगत कीधां उजाळी ।
घोम तो खाग वरियांम जोधां - धणी,
प्रसण पिघळै चलै ज्यूं हिज पाळी ॥२॥

पाठांतर

१. ख. चुगलाल । २. क. थरक । ३. क. हिंदवाण ।

शब्दार्थ—छकड़ाळ - कवच । चगताळ - यवन । चूनाळ - कलेजा । घरण - पृथ्वी । ताई - तक । खतम - पूरा । अवसाण - अवसर । खैपाण - यवन । रीभियो - प्रसन्न हुआ । सवाडा - सवाया, विशेष । अखाडा - युद्ध । सेल - भाला । गवाडै - गवाते हैं । प्रवाडा - युद्ध । सुतन - पुत्र । गाजी - महाराजा गजसिंह ।

कहर - आपत्ति, भयंकर । करांमत - चमत्कार । जसा - महाराजा जसवंतसिंह । हिंदवाण चा - हिन्दुस्तान का, या हिंदुओं का । सहसकर - सूर्य । भूभ - युद्ध । छात-घर - राजा । अवर - अन्य, और । भालै - सहन कर सके । सुजडां - तलवारों । तणै - के । ताप - तेज । सत्र - शत्रु । गजण - महाराजा गजसिंह । तण-तनय, पुत्र । हेम-अनडां - हिम पर्वतों, बर्फ के पर्वतों । हालै - चला जाता है । करणाघपत - सूर्य । ओपियो - शोभित हुआ । कीधां - किए हुए । उजाळी - प्रकाश । प्रसण - शत्रु । पिघळै - द्रवीभूत होते हैं । पाळी - बर्फ ।

कळकळां दळां - चहुंवळां फावै करण,
 धरै वार हेकल पाट - ऊधोर ।
 तूटतौ जाय वीजू - जळां तणी ताव,
 जळां बाधां ज्युंही खळां चौ जोर ॥३॥
 कहर लसकर डमर पसर घरहर कियां,
 "सूर" हर तेज खत्रवाट साजा ।
 हेम-गर ज्युं ही गळै यर हर हलै,
 रुक नद कर तणी ताप राजा ॥४॥

गीत पंखाळी १७

हळवळ दळ अकळ "जसा" हीलोहळ, भळहळ कूत हद बीज भत्त ।
 भळहळ खाग दोयण स भाडण, गढ अरियण घरां विसम गत्त ॥१॥
 विनै सबळ भुज अकळ सहंस बळ, खळ दळ खेरु करण खग ।
 'गजपत' सुतन सनढ गढ गाहण, कोय न तो सरखी करग ॥२॥
 फौजां लगस तेजियां फरहर, घर-हर त्रंवागळ दळ घेर ।
 कोटां मोटां कळह केवियां, "जोधा" हरी करै जुध जैर ॥३॥
 (सादळजी खिडियौ)

शब्दार्थ—कळकळां - चमचमाते हुए । चहुंवळां - चारों ओर । हेकल - एक ।
 पाट-ऊधोर - राजा । वीजूजळां - तलवार । तणी - का । खळां - शत्रुओं । चौ-
 का । डमर - समूह । सूर - महाराजा सूरसिंह । खत्रवाट - क्षत्रियत्व । साजा -
 पूर्ण, अखंड, कुशल । हेम-गर - हिमालय पर्वत । यर - अरि, शत्रु । हर - वंशज ।
 हलै - चलते हैं । रुक - तलवार । नद - नदी ।

हळवळ - चलने या गतिमान होने की ध्वनि, चाल, गति । दळ - सेना, फौज ।
 अकळ - महान, जबरदस्त । जसा - महाराजा जसवन्तसिंह । हीलोहळ - समुद्र, सागर ।
 भळहळ - चमकता है, दीपता है, चमक । कूत - भाला । हद - तेज, बहुत ।
 बीज - विजली । भत्त - भांति, प्रकार । भळहळ - देदीप्यमान, चमक-दमक-युक्त ।
 खाग - तलवार । दोयण - शत्रु । स-भाडण - संहार करने को, मारने को ।
 अरियण - शत्रु । विसम - विषम, भयंकर । गत्त - गति, हालत । विनै -
 दोनों । अकळ - बहुत ? । सहंस-बळ - अधिक शक्तिशाली । खळ - शत्रु ।
 खेरु - संहार, ध्वंस । खग - तलवार । गजपत - महाराजा गजसिंह । सुतन - पुत्र ।
 सनढ - वीर । गाहण - ध्वंस करने को । तो - तेरे । सरखी - समान, सदृश ।
 करग - तलवार । लगस - लम्बकायमान, पक्ति, समूह । तेजियां - घोड़ों । फरहर -
 ? । घर-हर - ध्वनि । त्रंवागळ - नक्कारा । घेर - आवेष्टन ।
 मोटां - बडों, महान । कळह - युद्ध । केवियां - शत्रुओं । जोधा - राव जोधा ।
 हरी - वंशज । जैर - तंग, परेशान ।

गीत वेळियो सांगोर १८

चीधारां लाल लाल खग चौरंग, वयंडां थंडां औरवै बाज ।
फौजां कहर तिमर भर फाड़ै, रिब जिम जळहळियो "जसराज" ॥१॥

अत महबूब तेज ऊफणतै, घण आसुर घड़ रौ घण घाव ।
"गजपत" तणी वहै खत्रियां-गुर, रज-पत ज्युं ही प्रथीपत राव ॥२॥

चीधारां लाखीक चाडती, किलम पंचाहर कीयां कर ।
राड़ विभाड़ सोहियो राजा, अरक्क ज्युंई दळ फाड यर ॥३॥

अस सपतास आलमां ऊपर, खळ दळ राकस वाहै खग ।
कमंधां घर ऊजळी कळहण, जग-चख जिम पेखीयो जग ॥४॥

(चांवडदांन बारहठ)

गीत छोटी सांगोर १९

दध पाजा टळी कना छिलियो दळ, ताजा भड़ साजा है तंत ।
राजा आज सवारा रुड़िया, बाजा कै ऊपर "जसवंत" ॥१॥

शब्दार्थ—चीधारां — भालों । खग — तलवार । चौरंग — युद्ध-स्थल, युद्ध । वयंडां — हाथियों । थंडां — सेनाओं । औरवै — भौंकता है । बाज — घोड़ा । कहर — भयंकर । तिमर — अंधेरा । भर — पूर्ण, घना । फाड़ै — विदीर्ण करता है । रिब — सूर्य । जळहळियो — प्रकाशमान हुआ, देदीप्यमान हुआ । जसराज — महाराजा जसवंत सिंह । अत — अति, अधिक । महबूब — घोड़े का नाम । ऊफणतै — जोश खाते हुए । घण — बहुत । आसुर — यवन । घड़ — सेना । गजपत — महाराजा गजसिंह । तणी — तनय, पुत्र । वहै — चलता है । खत्रियां-गुर — वीर, राजा । रज-पत — कांति, दीप्ति वाला (सूर्य) । ज्युंही — जैसे ही । प्रथीपत-राव — राजा । लाखीक — लाख रूपयों का, घोड़ा । किलम — यवन । पंचा-हर — ? । कीयां — किए हुए । राड़ — युद्ध, लड़ाई । विभाड़ — नाश कर, मिटा कर, संहार कर । सोहियो — शोभित हुआ । अरक्क — सूर्य । फाड — विदीर्ण करके । यर-अरि — शत्रु । अस सपतास — सप्ताश्व । आलमां — संसार । कळहण — युद्ध । जग-चख — सूर्य । पेखीयो — देखा । जग — संसार ।

दध — उदधि, समुद्र, सागर । पाजा — सीमा, मर्यादा । टळी — पृथक हुई, उल्लंघन हुई । कना — अथवा, या । साजा — सुसज्जित । है-हय — घोड़ा । तंत — तंत्र, सेना । सवारा — विशेष, सवैरा, प्रातःकाल । रुड़िया — बजे, प्रतिव्वनित हुए । बाजा — बाद्य । कै — किस । ऊपर — पर ।

थरहर सेस कोम कँध थरकै, जोध अडर कै माथै जोर ।
 फरहर चींध नवरै फारक, घरहर सिलह ब्रंबाळां घोर ॥२॥
 तरवर डहै ऊकसै ताजी, परवत जुअलै हुअै पण ।
 मद-भर वहै किणै सिर मारु, ब्रहै दमांमा "गजन" तरा ॥३॥
 वदै महल छतीस राज-वंस, कमध नगारा ब्रहळ कियै ।
 दहल पडै अवरां देसोतां, थारै सहल सिकार थियै ॥४॥
 (रुघौ मुहती)

गीत वेळियो सांणोर २०*

अरि सीस धरै ज्यां राख करे अंग, पूगै रण साची पारीख ।
 ॥१॥

वप असहथां प्राजळै विढतां, पूगो कीरत समैदां पाज ।
 जटी करग आभूखण जिसड़ी, जडळग तूभ तरा जसराज ॥२॥

शब्दार्थ—थरहर — कंपायमान । कोम — कूम्, कच्छपावतार । थरकै — कंपायमान होते हैं । जोध — वीर । अडर — निर्भय । माथै — पर, ऊपर । फरहर — लहलहाना । चींध — ध्वजा, झंडा । नवरै — ? फारक — शत्रु । घरहर — आवाज । सिलह — अस्त्र-शस्त्र । ब्रंबाळां — नगरों । घोर — ध्वनि । तरवर — वृक्ष । डहै — ? ऊकसै — छलांग भरते हैं । ताजी — घोड़ा । जुअलै — पैर । पण — भी । मद-भर — हाथी । किणै — किस । सिर — ऊपर, पर । मारु — राठीड़ । ब्रहै — बजते हैं । दमांमा — नगाड़ा, या ढोल । गजन — महाराजा गजसिंह । तरा — तनय, पुत्र । वदै — कहती है । महल — महिला, स्त्री । कमध — राठीड़ । ब्रहळ — ध्वनिमान । दहल — भय, आतंक । अवरां — अन्य । देसोतां — राजाओं । थारै — तेरें । सहल — सहज, साधारण । थियै — होती है ।

सांची — सत्य । पारीख — परीक्षा ।

वप — वपु, शरीर । असहथां — शत्रुओं । प्राजळै — जलता है । विढतां — युद्ध करते (समय) । पूगो — पहुंच गई । पाज — तट, सीमा । जटी — महादेव । करग — हाथ । जिसड़ी — जैसा । जडळग — तरवार । तूभतरां — तेरा ।

*गीत नं० १५ से गीत नं० २० तक की रचनाओं में महाराजा के भाले, तलवार, सेना आदि के वर्णन में कवियों ने भिन्न-भिन्न प्रकार के अनूठे भावों को प्रदर्शित किए हैं ।

जग सारी जाणै जोधपुरा, चौरंग तणी वार अण-चूक ।
जुडतां लाख दोयणां जाळै, रुद्र कड़ा सारीखी रुक ॥३॥

हाथै तूभ कमाळी हाथै, कळह समै चालती काळ ।
करणा भसम रिमां नवकोटा, कांकण भसम जिसी करमाळ ॥४॥

(जगन्नाथ सांदू)

गीत-प्रहास साणोर २१*

प्रबळ दुरंग "वधनोर" वस करंतै जगपति, दाह दावायतां सबळ दीघी ।
पहट थीया कटक कळै खैगां-पगै, केल-पुर धूधळी गिरंद कीघी ॥१॥

हैमरां हींस नर लसकरां कह हुई, वहै सिंधुर कहर समर वैंडा ।
आहाडा खंड रज-मंडळ ओछाइयो, पहाडां अगम सर सुगम पैंडा ॥२॥

हाक सुण गरद छायाी दुडै वर हर, वडम जस डाक जग सरै वाजी ।
लसकरां तणा राह वळोवळ लुंविया, गिरवरां ऊपरा सुतन "गाजी" ॥३॥

शब्दार्थ—चौरंग — युद्ध । वार — प्रहार । अणचूक — अमोघ । जुडतां — युद्ध करते समय । दोयणां — शत्रुओं । रुद्र — महादेव । सारीखी — समान, सदृश । रुक — तलवार । हाथै तूभ — तेरे हाथ में । कमाळी हाथै — महादेव के हाथ में । कळह — युद्ध । काळ — मृत्यु, यमराज । नवकोटा — नवकोट (मारवाड़) का अधिपति, राठौड़ । कांकण — कंकन, वलय । भसम — भस्मासुर । जिसी — जैसा । करमाळ — तलवार ।

दुरंग — दुर्ग, किला । जगपति — राजा दाह — जलन, कुहन । दावायतां — शत्रुओं । दीघी — दिया । पहट — छ्वस्त । थीया — हो गये । वळै — फिर, ओर । खैगां — घोड़ों । पगै — पैरों से । केल-पुर — सीसोदिया वंश का राजपूत । गिरंद — पर्वत । कीघी — किया । हैमरां-हयवरां — घोड़ों । हींस — हिनहिनाहट । कह — छ्वनि । सिंधुर — हाथी । कहर — भयंकर, जबरदस्त । समर-वैंडा — युद्धोन्मत्त । आहाडा — गहलोत वंश का क्षत्रिय । रजमंडळ — धूनि, समूह । ओछाइयो — आच्छादित हुआ । अगम — दुर्गम्य । सर — ऊपर, पर । पैंडा — यात्रा, गमन । हाक — आवाज, पुकार । गरद — धूलि । छायाी — आच्छादित हो गया । दुडै — भाग गये । वर-हर — शत्रु, वंशज । वडम — बड़प्पन, महानता । डाक — नगाड़ा । वळोवळ — चारों ओर । लुंविया — भूम गये । सुतन — पुत्र । गाजी — महाराज गजसिंह ।

*इस गीत का वास्तविक इतिहास उपलब्ध नहीं हुआ ।

अकळ खूमांण यर रजी अवछाड्यी, वाजै रस त्रंवागळ प्रबळ वाजा ।

फौज आगळ गजां बरंग घजां फव, राज पंथ सुरंगां सीस राजा ॥४॥

(अज्ञात)

गीत सीहणी २२

मन-भावै चलै खत्रीवट मारग, वीरत दावै घड़ा वरै ।

राजा-पती "जसो" महाराजा, कमध सुहावै जकूं करै ॥१॥

दोखियां तणी घणी घर दावै, फावै जुध जुध करै फतै ।

साह तूभ संक वहै "गजन" सुत, मैमत चित वहै आप मतै ॥२॥

पालै दळद सेवगां पांणां, दुरंग पालटै "खुरम" दुवै ।

"सूजा" हरी असहतां सालै, हालै मन मानियै हुवै ॥३॥

खत्रवट चलै "जसो" खेडेची, डिगियी ब्रहमंड भुजां डहै ।

रंग पारकै न रोभै राजा, राजा रंग आपरै रहै ॥४॥

(नाथी सांदू)

गीत घडी सांणोर २३

"जसै" पाडिया खेत भड नेत-बंधा जिकै, लगै परमळ सदळ लोह लागै ।

सबळ पत्र भरै रत्र पी न सकै सकति, अलिअळां तणा गुंजार आगै ॥१॥

शब्दार्थ—अकळ — सम्पूर्ण, पूरा । खूमांण — रावल खूमान के वंशजों का देश । रजी — धूलि । अवछाड्यी — आच्छादित हो गया । रस — ? । त्रंवागळ — नगाड़ा । आगळ — अगाड़ी । बरंग — ? ? घजां — ध्वजाएं । फव — शोभित होकर । सुरंगां — ? । सीस — ऊपर ।

खत्रीवट — क्षत्रियत्व । वीरत — शौर्य, बहादुरी । दावै — कारण, हेतु । घड़ां — सेना । वरै — वरण करता है, स्वीकार करता है । जसो — महाराजा जसवंतसिंह । दोखियां — शत्रुओं । तणी — की । घणी — अधिक । घर — भूमि, धरा । दावै — अधिकार में करता है । साह — बादशाह । संक — भय, डर । गजन — महाराजा गजसिंह । मैमत — मस्त, मदोन्मत्त । मतै — विचार । पालै — रोकता है, मिटाता है । दळद — कंगाली, निर्धनता । पांणां — भुजाओं । दुवै — पुत्र, वंशज । सूजा — राव सूजा । हरी — वंशज । असहतां — शत्रुओं । सालै — खटकता है । हालै — चलता है । खत्रवट — क्षत्रियत्व । खेडेची — राठीड़ । ब्रहमंड — आकाश । डहै — सम्हालता है, थामता है । रंग — स्वभाव, आनंद । पारकै — दूसरे के । रोभै — प्रसन्न होता है ।

पाडिया — मार डाले, वीर गति को पहुंचा दिये । खेत — युद्धस्थल । भड — योद्धा । नेत-बंधा — झंडा धारी । जिकै — वे । परमळ — महक, सुगंध । लोह — शस्त्र । रत्र — रक्त, खून । अलिअळां — भोरे । तणा — के । आगै — अगाड़ी ।

जोधपुर धरणी चा अणी लाग जीयां, लाख सत्र पोढिया अतर लाये ।
 कहर भरिया खपर पिय न सकै सकति, इसा मंडे डंमर भमर आयै ॥२॥
 पोवती साबळां खळां बाहां-प्रलंब, जोवती सूरमा जूझवी जाति ।
 जोगणी तरणा भरिया पत्तर जांभिया, भमै मधुकर भँवर अनोखी भांति ॥३॥
 अंजसिया "माल" सग्रांम "उदा" उभै, धमळ "गज-बंध" री आव धूरी ।
 कारणं भूतचा नाख चंपा कुसम, पियै रत दियै आसीस पूरी ॥४॥
 (नाथो रोहडियौ)

गीत घडौ सांगोर २४*

कुतब गौस अबदाळ सूफी अनै कळंदर, पीर-जादा मिळै सांभ परभात ।
 कांन पातसाह रा भरै एक राह कज, वरै नह पड़े "जसवंत" जितै वात ॥१॥
 मौलवी कराडै अरज काजी मुला, पाडजै देवहर दळां कर पेल ।
 मेच्छ वांचै जिकी हिंद इकलीम मज्भ, खडौ राजा जितै वणै नह खेल ॥२॥

शब्दार्थ—अणी — भाला । जीयां — जिनके । सत्र — शत्रु । अतर — इत्र ।
 कहर — भयंकर । मंडे — रचते हैं । डमर — समूह । पोवती — पिरोता हुआ, छेदता
 हुआ । साबळां — भालों । खळां — शत्रुओं । बाहां प्रलंब — आजानबाहु । सूरमा —
 वीर । जूझवी — युद्ध की ? पत्तर — पत्र, खप्पड़ा । जांभिया — जम गये । मधुकर—
 मधु को बनाने वाला भँवर, भौरा । अंजसिया — गर्व किया । माल — राव मालदेव ।
 उदा — राजा उदयसिंह । उभै — दोनों । धमळ — वीर । गजबंध — महाराजा
 गजसिंह । धूरी — ? रत — रक्त खून ।

कुतब — ? । गौस — मुसलमान फकीरों की एक उपाधि । अबदाळ —
 अब्दाल, एक प्रकार के मुसलमान वली या महात्मा, धार्मिक व्यक्ति । सूफी — बहुत उदार
 विचारों का मुसलमानों का एक सम्प्रदाय । अनै — और । कळंदर — एक प्रकार के
 मुसलमान साधु और त्यागी । पीरजादा — पीरों के पुत्र । सांभ — संघ्या । कांन
 पतसाह रा भरै — बादशाह को बहुत सी अंठ-संठ बातें सुनाते हैं, बादशाह को बहकाते हैं ।
 एक राह कज — एक ही सम्प्रदाय के लिए । वरै नह पड़े — वह बात उनकी नहीं चलती
 है । जितै — जब तक । कराडै — करवाते हैं । पाडजै — गिरा दिरावें । देवहर —
 देवालय । पेल — भेज कर । मेच्छ — म्लेच्छ, यवन । वांचै — चाहते हैं । जिकी — वह
 हिंद — हिंदुस्तान । इकलीम — अकलीम, देश, मुल्क । मज्भ — मध्य में ।

*कट्टर इस्लाम धर्मावलंबी कलंदर गौस, मुल्ला, मौलवी बादशाह को सदैव हिंदु धर्म के
 विरुद्ध आचरण करने हेतु कुरान शरीफ की प्रबल दलीलें देते हैं । बादशाह भी उन्हीं की
 इच्छानुसार हिंदुओं के साथ अन्याय, अत्याचार करना चाहता है परन्तु महाराजा जसवंत-
 सिंह की जीवितावस्था में वह ऐसा करने में असफल रहता है, गीत नं० २४ में उत्तम
 वर्णन है ।

अरथ कर नवा फुरमाण री आयतां, लिया कर सांहरै कांन लागै ।
 कहै मखदूम जुग हेक मजहब करी, “जसी” हिंदू-धरम मदत जागै ॥३॥
 देवळां मूरतां हूंत जी किणी दिन, खुरम री डीकरी कुबध खेलै ।
 दूठ तो तुरत गजसींध री दीकरी, मसीतां आभ रा धुंआ मेलै ॥४॥
 सुरह दुज देव तीरथ निगम सासतर, जनेऊ तिलक तुळसो निरंजण जाप ।
 राह हिंदू-धरम तणै सावत रहै, प्रगट मुरघर घणी तणी परताप ॥५॥
 (नरहरदास बारहठ)

गीत प्रहास सांणोर २५*

हियै धारियां खांन जुवान छिवती निहंग, अवर नर विसरै तणा अचंभा ।
 विखम गत देख “जसराज” खग वाहती, रही रथ साह गज-गाह रंभा ॥१॥

शब्दार्थ—फुरमाण - राजकीय आज्ञापत्र, फरमान । आयतां - कुरान के वाक्यों ।
 कर - हाथ । मखदूम - एक प्रकार के मुसलमान धर्माधिकारी । जसी - महाराजा
 जसवंतसिंह । देवळां - देवालयों । मूरतां - मूर्तियों । हूंत - से । किणी - किसी ।
 डीकरी - पुत्र । कुबध-खेले - शरारत करता है । दूठ - वीर । तो - तब । दीकरी -
 पुत्र । मसीतां - मसजिदों । सुरह-सुरभि - गाय । दुज-द्विज - ब्राह्मण । निगम -
 वेद । सासतर - शास्त्र । प्रगट - प्रकट । घणी - राजा । तणी - का । परताप -
 प्रभाव, बदौलत ।

छिवती - स्पर्श करता हुआ । निहंग - आकाश । विसरै - विस्मरण होते हैं ।
 अचंभा - आश्चर्य । गज-गाह - गजगामिनी । रंभा - अप्सरा ।

*गीत नं० २५ और २६ में कवियों ने बड़ी अतूठी युक्ति से महाराजा जसवंतसिंह के धरमत के युद्ध से पलायन करने पर व्यंग्य कसा है । प्रथम गीत में महाराजा ने बड़े दल-वल के साथ मुगल साहजादों (औरंगजेब और मुराद) से बड़ा विकट युद्ध किया । इस युद्ध को आकाश स्थित दो अप्सराएं देख रही थीं । उन दोनों अप्सराओं ने दोनों ही साहजादों को वरण करने का दृढ़ निश्चय मन में ठान लिया परन्तु दुर्भाग्यवश महाराजा उक्त साहजादों को बिना वीर गति प्राप्त कराए ही युद्ध भूमि से लौट गये । अतः वे अप्सराएं निराश होकर बिना पतियों के ही स्वर्ग लोक में इन्द्र के दरबार में लौट गईं । इसी प्रकार दूसरे गीत में उनके अग्रज राव अमरसिंह के वीर कृत्य का स्मरण कर अप्सरा महाराजा जसवंतसिंह को वरण करने हेतु आईं परन्तु महाराजा के युद्ध से भाग जाने पर वह अप्सरा उबड़न लगाई हुई ही रुदन करती हुई रह गई ।

दुरत गत डांण उसरांण सिर दियंतौ, लियंतौ फुरलबी थाट लाही ।
 सुतन "गज-बंध" सुर कांमणी संपेखै, विवांणां ठांभियौ खाग-वाही ॥२॥
 वाहतां तेग अनमंध कंध वीछड़ै, हसत-बंध हसत दोय टूक होवै ।
 सायजादा दळ हिंदवा-पातसाह, "जसा" अवसर अचछर तूभ जोवै ॥३॥
 हिंदवा राव हथवाह अचरज हुई, न सारी सुरीति चीत नरंदां ।
 गई स्रुग विवांणां बैस इंद्र आगळी, वुही वारंगना विना वीदां ॥४॥
 (अज्ञात)

गीत-प्रहास सांणोर २६

महा मांडियो जाग उज्जैण खागां मधै, रुदन विलखावती रही रोती ।
 हेळवी "अमर" री हीय करती हरख, "जसा" अपछर रही वाट जोती ॥१॥
 किया काचा समर "सूर" हर कळोघर, डरत गत न पीधी फूल दारू ।
 वडा री भौळवी हूर आवी वरण, मेलती गई नीसास मारू ॥२॥
 पाटवी हेळवी वेगमै पैलकै, तें समै अलकै लीध टाळा ।
 पागती "दली" नै "रतन" परणीजतां, वाट जोती रही "गजन" वाळा ॥३॥

शब्दार्थ—दुरत — भयंकर । डांण — कदम, डग, चाल । उसरांण — असुर, यवन ।
 दियंतौ — देता हुआ । लियंतौ — लेता हुआ । थाट — सेना । लाही — लाभ, आनंद
 सुर-कांमणी — अप्सरा । संपेखै — देखती है । विवांणां — विमानों । ठांभियो —
 रोका । खाग-वाही — योद्धा । अनमंध — वीर । कंध — कंधा । वीछड़ै — पृथक
 होते हैं । हसत-बंध — सामन्त, योद्धा । हसत — हाथी । टूक — खंड । जसा —
 महाराजा जसवंतसिंह । अचछर — अप्सरा । तूभ — तेरा । जोवै — देखती है ।
 हिंदवा राव — हिंदू राजा । हथवाह — प्रहार, वार । अचरज — आश्चर्य । नरंदा —
 नरेंद्रों, राजाओं । स्रुग — स्वर्ग । बैस — बैठ कर । आगळी — अगाड़ी । वुही —
 चली गई । वारंगना — अप्सरा । वीदां — पतियों ।

मांडियो — रचा गया, बना । जाग — यज्ञ, विवाह । विलखावती — विलाप करती
 हुई । हेळवी — आदी की हुई । अमर — राव अमरसिंह । हीय — हृदय में ।
 हरख — प्रसन्नता । जसा — महाराजा जसवंतसिंह । वाट जोती — प्रतीक्षा करती हुई ।
 काचा — कायर । समर — युद्ध । सूर — महाराजा सूरसिंह । हर — वंशज ।
 कळोघर — कुल को धारण करने वाला । पीधी — पिया । फूल-दारू — हलका मद्य ।
 वडा — अग्रज । भौळवी — अमित की हुई । हूर — अप्सरा । नीसास — निःश्वास ।
 मारू — राठीड़ । पाटवी — पटाधिकारी, अग्रज । हेळवी — आदी किया । पैलके —
 पहिले । तें — तुने । अलकै — इस समय । लीध टाळा — किनारा ले लिया, दूर हो
 गया । पागती — पार्श्व में, पास में । गजन वाळा — महाराजा गजसिंह के पुत्र ।

जे तो वीमाहू री वाट जोती जगत, रूक बल त्रासियो गयी राजा ।
मराडी जान घर आवियो मांडवै, तेल चढी रही अच्छर ताजा ॥४॥

(अज्ञात)

गीत छोटी सांणीर २७*

भूपाळ बीया सेवाळ तणी भत, कळिया सह संसार कहै ।
माया जळ कळजुग छै माही, राजा कमळ सरूप रहै ॥१॥
जळ जंजाळ जाल अंवु ज्युंही, अनळ पठांण भूप अनमंघ ।
“गजन” तणी नैडी न्यारी गत, कमळा जळ पंकज कमंघ ॥२॥
चित नेम लियै बिया चकवतियां, कमधज वार मही महकंत ।
जस रस लियै मही-पुड जसवंत, भेळां थकां निराळी भंत ॥३॥
ध्यान ग्यान अदभुत धारणा, वध कर जोतां ईस वर ।
सिध रूपी गजसिध समोभ्रम, सिध ती वांदै दिले-सुर ॥४॥

(जगन्नाथ सांदू)



शब्दार्थ—त्रासियो — भयभीत हुआ । मराडी — मरवा कर । जान — वरात ।
मांडवै — विवाह में कन्या के पिता पक्ष का स्थान । अच्छर — अप्सरा ।

बीया — दूसरे । सेवाळ — काई । तणी — की । भत — भांति, प्रकार ।
कळिया — फसे हुए है । जाल-अंवु — पानी का बुदबुदा । अनळ — ?
अनमंघ — वीर । तणी — तनय, पुत्र । नैडी — निकट । न्यारी — पृथक् । भेळां —
शामिल, साथ । थकां — होते हुए । निराळी — अदभुत । भंत — भांति, प्रकार ।
समोभ्रम — पुत्र ।

*यह गीत महाराजा का वेदान्त ज्ञान-सम्बन्धी है ।

परिशिष्ट २

अन्य राठौड़ वीरों के गीत

राव - अमरसिंह नागौर

गीत बड़ी सांणोर १*

दलां-नाथ आगळ दिली वंस री दीपयण,

रूप - राई तणा राउ राठौड़ ।

“अमर वणियाँ सघर धारियै आत-पत्र,

“माल” री तिलक ‘रिणमाल’ हर मोड़ ॥१॥

बडा ही बडा आचार दीपै विसवि,

बहै सबळां खळां खेति बागै ।

जग हथै बंधियै “गजरा” री जैत-हथ,

जग हथां बंधपण विरद जागै ॥२॥

“सूर” हर सूर सक-बंध साहण समंद,

ताधि सांमंद्र असमांण तोलै ।

अतग अण रैण अण-मंग ऊंचासिरी,

बहळ खळ सार में चोळ-बोळ ॥३॥

शब्दार्थ—आगळ - अगाड़ी । दीपयण - शोभा बढ़ाने वाला । रूप-राई - राजाओं की शोभा । तणा - के । राउ - राव । सघर - दृढ़ । धारियै - धारण करने पर । आत-पत्र - छत्र । माल - राव मालदेव । आचार - कर्त्तव्य, दान । दीप - शोभित होते हैं । विसवि - संसार में । बहै - मारता है । सबळां - बलवानों । खळां - शत्रुओं । खेति - युद्ध-स्थल, युद्ध । बागै - होने पर । जैत-हथ - विजयहस्त । सूर - महाराजा सूरसिंह । सक-बंध - बड़े-बड़े युद्ध करने वाला । साहण - धोड़ा । समंद - समुद्र । साहण-समंद - बड़ी सेना वाला । ताधि - थाह लेकर । असमांण - आसमान । अतग - अपार । अण-रैण - निष्कलंक । अण-मंग - वीर । ऊंचासिरी - उदार, श्रेष्ठ । बहळ - बहुत । सार - तलवार । चोळ-बोळ - रक्त-रंजित ।

*राव अमरसिंह के राज्याभिषेक के समय का यह गीत है ।

घोख मद-घोख जस तणा वादित्र घुरै,
 जोध सांमंत में थाट जोपै ।
 चमर ढळतै निपति अभिनमौ “चौंडरज”,
 “अमर” मेघाडंबर सीस ओपै ॥४॥
 (केसोदास गाडण)

गीत छोटो सांगोर २

गढपतिअ घण किया गढ-रोहा, परगह ले जूझिया पह ।
 जिम किधौ “अमरेस” जड़ाळी, किणीहि न कीधौ एम कळह ॥१॥
 कोटां ओट घणा जुध कीया, फौजां घणा किया पग-फेर ।
 राउ राठोड जिही सूं रौद्रां, अध-पत विडियो न की अनेर ॥२॥
 कोटां प्राण प्राण के कटकां, सूं पहरिया दिली पतिसांह ।
 अक कटारी कियो न अकेण, गजसिघोत जिसी गजगाह ॥३॥
 दाणव बि त्री पगां-तळ दीधा, वणियै-मरण दिखाळियो बाढ ।
 वाही अकेण “गंग” कळोघर, जम-दाढां मांही जमदाढ ॥४॥
 (केसोदास गाडण)

शब्दार्थ—वादित्र — वाद्य । घुरै — बजते हैं । जोध — थोड़ा । थाट — सेना ।
 जोपै — जोश में आता है । अभिनमौ — वंशज । चौंडरज — राव चूंडा ।

गढ-रोहा — गढों पर आक्रमण, युद्ध । परगह — परिग्रह, सेना । जूझिया — युद्ध
 किया । पह — प्रभु, राजा । जिम — जैसा । कीधौ — किया । अमरेस — राव अमर-
 सिंह । जड़ाळी — कटार । किणीहि — किसी ने । एम — इस प्रकार । कळह — युद्ध ।
 ओट — आड़, पनाह । कीया — किए । पग-फेर — आवागमन । राउ — राव ।
 रौद्रां — यवनों, मुसलमानों । जिहीं — जिस । अध-पत — राजा । विडियो — युद्ध
 किया, वीर गति प्राप्त हुआ । की — कोई । अनेर — अन्य । प्राण — बल, शक्ति ।
 कै — कई । कटकां — सेनाओं । पहरिया — ? अकेण — एक ।
 गजसिघोत — गजसिंह का पुत्र । जिसी — जैसा । गज-गाह — युद्ध । दाणव — असुर,
 यवन, मुसलमान । बि — दो । त्री — तीन । पगांतळ दीधा — पैंरों के नीचे दबा
 दिये, मार डाले । वणियै — होने पर । मरण — अवसान । दिखाळियो — दिखा
 दिया । बाढ — शस्त्र, शस्त्रबल । वाही — प्रहार किया । अकेण — अकेले ने, एक ने ।
 गंग — राव गांगा । कळोघर — वंशज । जम-दाढां — यवनों, मुसलमानों । मांही — में ।
 जमदाढ — कटार ।

असुर बोलियो कुबोल पतसाह मुह आगळी,
 राज विण खत्री धरम कमण राखै ।
 दूसरा "माल" वरदांन तोनूं दिवूं,
 "अमर" मो काढ जम-दाढ आखै ॥१॥

आछटी कमर सूं हाथ चाढी "अमरा",
 जोर जमदाढ में खुधा जागी ।
 ऊमरा साह रा साह मुह आगळी,
 लोह छीपाविया गळण लागी ॥२॥

उजळै भुजां-डंड चढे "अमरेस" रे,
 देव बळ लियण वरदांन देवा ।
 कठहडै कटारी खाय गळी कीयी,
 लचर कै वधे पतसाह लेवा ॥३॥

भाळ वन हुई अंब-खास विच भळहळै,
 मार हेकां बियां हियै मिळती ।
 "अमर" ची भगवती खुरम मुह आगळी,
 गळ अजै ऊग्रजै मीर गळती ॥४॥

चरच केसर अगर धूप हूं चंदणां,
 पाट-पत तैं ध्रवी सुधार पूजा ।
 "अमर" जुगां लग नरां नांम रहसी अमर,
 दाखियो कटारी "सूर" दूजा ॥५॥
 (केसोदास गाडण)

शब्दार्थ—आगळी — अगाडी, सम्मुख । राज — श्रीमान्, आप । कमण — कौन ।
 दूसरा — वंशज । माल — राव मालदेव । अमर — राव अमरसिंह । मो — मुझको ।
 काढ — निकाल दे । जम-दाढ — कटारी । आखै — कहती है । आछटी — झटका देकर
 निकाली । अमरा — राव अमरसिंह । खुधा — क्षुधा । जागी — प्रज्वलित हुई । लोह—
 अस्त्र-शस्त्र । छीपाविया — छिपा दिये । बळ — बलि । कठहडै — बादशाह के बैठने
 के सिंहासन के चारों ओर काठ का बना घेरा । लचर — कायर । भाळ — आग की
 लपट । वन — वस्त्र, रंग । अंब-खास — आम खास । विच — मध्य में । भळहळै —
 चमकती है, प्रदीप्त होती है । अमर — राव अमरसिंह । ची — की । गळग्रजै —
 निगलती है । ऊग्रजै — गर्जना करती है । गळती — भक्षण करती है । पाट-पत —
 पटाधिकारी । तैं — तुने । ध्रवी — प्रहार किया । जुगां-लग — युगों-पर्यन्त । दाखियो —
 कहा । सूर — महाराजा सूरसिंह । दूजा — वंशज ।

गीत वेलियो-सांणोर ४

अतुली-बळ "अमर" न सहियो ओकर, साहि आलम आगळै सनाढ ।
 मुगळ कुबोल बोलियो मौडी, जड़ियो तै वेगी जम - दाढ ॥१॥
 गजसिंघोत कमंध नर गाढिम, ततखिण माचवियो रणताळ ।
 दु-वयण वयण काढियो दुआ-सुं, प्रिसण परां काढी प्रतमाळ ॥२॥
 कांनां लगे हेक गी कु - वयण, कमध भला बांधतो कडि ।
 पूंचा लगे भुजा - डंड पैली, धाराळी अरी तरौ ज घडि ॥३॥
 असपत राव सनमुख अणियाळी, "अमर" जु तै वाही अवसांण ।
 कु-वयण कमळ वाय हंस केवी, अ क्रम नीसरिया आरांण ॥४॥
 सूरत छोह निमो नव - सहसा, खमियो कु-बोल नह खत्री गुर ।
 मरण तरौ प्रब भला ज मरिया, अकण कटारी वहु ज असुर ॥५॥
 (केसोदास गाडण)

गीत वेलियो सांणोर ५

देखो तो "अमर" करामत अंत-दिन, साह घडक्क असुर मन सोह ।
 दुजडी हेकज वहंती दीसै, पड़ता दीसै ज घणा पोह ॥१॥

शब्दार्थ—अतुली बळ — अतिबल, बलशाली । ओकर — कटु वचन । साहि —
 वादशाह । आलम — संसार । आगलै — अगाडी । सनाढ — वीर । कु-बोल —
 कुवचन । मौडी — विलंब से, देरी से । जड़ियो — प्रहार किया । तै — तूने । वेगी —
 शीघ्र, जल्दी । गाढिम — वीर । ततखिण — तत्क्षण, तुरन्त । माचवियो — मचा
 दिया । रिण-ताल — युद्ध । दु-वयण — दुर्वचन । वयण — वचन । दुआसु — ?
 प्रिसण — शत्रु । परां — ऊपर । काढी — निकाली । प्रतमाळ — कटारी ।
 कुवयण — दुर्वचन । कमंध — राठीड़ । भलां — ठीक । बांधतो — धारण
 करता था । कडि — कटि, कमर । भुजाडंड — वीर । पैली — प्रथम । धाराळी —
 कटार । अरि — शत्रु । तरौ — के । घडि — छातीर में, घड़ में । असपत — वादशाह ।
 अणियाळी — कटार । अमर — अमरसिंह । वाही — चलाई, प्रहार किया । अवसांण —
 अवसर — मौका । कु-वयण — कुवचन, दुर्वचन । कमळ — मुख । वाय-हंस — प्राण-
 वायु । केवी — शत्रु । अकण — एक ही साथ । नीसरिया — निकल गये । आरांण —
 युद्ध । छोह — क्षोभ, कोप । निमो — नमस्कार है । नव-सहसा — राठीड़ । खमियो —
 सहन किया । खत्री-गुर — वीर । तरौ — के । प्रब — पर्व, उत्तम, अवसर । भला —
 ठीक । असुर — यवन ।

करामत — चमत्कार । घडक्क — भय, डर । सोह — क्षोभ । दुजडी — कटार ।
 हेकज — एक ही । वहंती — चलती हुई । दीसै — दिखाई देती है । पोह — प्रभु, वीर ।

सुत गज-बंध आदि तो सुजड़ी, मोहियौ-वसु सबै मुर-लोक ।
 असपत इण अजमति इचरजियौ, एक देह अरि पाडै अनेक ॥२॥
 भुजां भार "जोधा" त्रिद भळिया, "अमरा" ऊकळियौ ओगाढ ।
 छत्रपत दिली तणा सह छळिया, जोगण छत्र-धारी जम-दाढ ॥३॥
 उधम होय इचरज धर असुरां, घम घम तखत जडाळी धार ।
 घम घम विखम अरि तणा घाटा, वारंगना भमभम जुध-वार ॥४॥
 भांजै असुर भख दे भगवती, संकर लीयै मुंड कर सीस ।
 असमर हंस समापै "अमरा", समर कीयी करतब सु-जगीस ॥५॥

(लूणकरणा)

गीत प्रहास सांणोर ६

वडै ठीड राठीड अखिआत राखी बडी, जोरवर जोध जम-दाढ जमरा ।
 सलावत दिली-पत देखतां साभियौ, अयी तिण वार रा रूप "अमरा" ॥१॥
 "गजन" रा केहरी-सिध जूभार-गुर, मांण तजि जगत्र सह हुकम मानै ।
 पाडिया तैं ज पतिसाह री पाखती, खानं सुरतांण दीवांण खानै ॥२॥
 हाकती दिली दरीयाव हीळोती, ठूकडै साह अमराव ढाहै ।
 आगरै सहर हट-नाळ पाड़ी "अमर", मारुआ-राव दरबार माहै ॥३॥

शब्दार्थ—गज-बंध — महाराजा गजसिंह । सुजड़ी — कटारी । मोहियौ — मोहित
 कर लिया । मुर-लोक — तीन लोक । असपत — बादशाह । इण — इस । अजमति—
 महत्ता । इचरजियौ — आश्चर्य किया । भार — उत्तरदायित्व । जोधां — राव जोधा ।
 त्रिद — विरुद्ध । भळिया — धारण किए, स्वीकार किए । अमरा — अमरसिंह । ऊकळियौ—
 उवाल खाया । ओगाढ — वीर, बल । जोगण — देवी, रणचंडी । छत्र-धारी — राजा ।
 जम-दाढ — कटार । उधम — उत्पात । इचरज — आश्चर्य । असुरां — यवनों ।
 जडाळी — कटार । वारंगना — अप्सरा । भम भम — । वार — समय ।
 भख — भक्ष । असमर — तलवार । हंस — प्राण । समापै — देकर । अमरा —
 अमरसिंह । समर — युद्ध । करतब — कर्तव्य । जगीस — इच्छा ?

वडै — महान, बड़ा । अखिआत — न क्षय होन वाली, अमर । जोर-वर — शक्ति-
 शाली । जोध — योद्धा । दिली-पत — बादशाह । साभियौ — मार डाला । अयी —
 अरे, हे, ओ ! । तिण — उस । वार — समय । अमरा — अमरसिंह । जूभार-गुर —
 महान योद्धा । मांण — गर्व । तजि — छोड़ कर । जगत्र — संसार । सह — सब ।
 पाडिया — मार डाले । तैं ज — तूने ही । पाखती — पार्श्व में । हाकती — चलाता
 हुआ । हीळोती — विलोडित करता हुआ । ठूकडै — पास, निकट । अमराव — अमीर ।
 ढाहै — मार डाले । हट-नाळ — ? मारुआ-राव — राठीड राजा । माहै—में, अंदर ।

पगै पहरै जठै हाथ सूं परहरै, लोह सक्ति न कौ असमांन लागै ।
तो "जिसी" जूझियौ न कौ हिंदू तुरक, "अमर" अकबर तणा तखत आगै ॥४॥

(किसनो आढी)

गीत वेळियौ सांणोर ७

मुगळां राव तणै जवाब मरोडै, घर घातिया निबाबां घाव ।
चालियौ काळ जडाळ चुअंती, रूपा तणै कटहडै राव ॥१॥

अड़िया सुजि पड़िया मुँह ऊँघै, सहज कोय देखे सुर-असुर ।
आखतौ वेह कोय नह आयौ, "अमरा" जम राव तणै ज उर ॥२॥

पहली मुखे चमर - बँध पड़िया, गौडै गज-बँधां ओगाढ ।
जवन तणी दरगा जोधपुरी, जड़िया सह हेकण जम-दाढ ॥३॥

बहतारि सतरि अनेक बहादर, खळ खूटा तूटा खुरसांण ।
पड़ियौ ले आधी-पतसाही, राजा "गजन" तणी जम-रांण ॥४॥

(जोगीदास कंवारियौ)

गीत छोटी-सांणोर ८

"अमर" आगरै अखिआत उबारी, भड़ जीपण ब्रद भारी ।
पंच हजारी मुगळ पाड़ियौ, कमधज तणी कटारी ॥१॥

शब्दार्थ—पगै — पंगों से । लोह — अस्त्र-शस्त्र । सक्ति — धारण करके । जूझियौ—
युद्ध किया । आगै — अगाड़ी ।

मुगळां-राव — मुगल सुल्तान । तणै — के । मरोडै — कुपित होकर । जडाळ —
कटारी । चुअंती — सवती हुई, टपकती हुई । रूपा — रोप्य, चांदी । राव — राव
अमरसिंह । अड़िया — अकड़ गये, भिड़ गये । सुजि — वे । मुँह-ऊँघै — आँधे-मुह ।
सुर — हिंदू । असुर — यवन । आखतौ — शीघ्रता करता हुआ । वेह — होकर ।
चमर-बँध — चमरधारी । गौडै — गिरा दिये । गज-बँधां — गजधारियों । ओगाढ —
वीर । तणी — की । दरगा — दरबार । हेकण — एक ही । खळ — शत्रु । खूटा—
समाप्त हो गये । तूटा — निर्बल हो गए । खुरसांण — बादशाह । गजन — महाराजा
गज सिंह । तणी — तनय, पुत्र । जम-रांण — वीर, योद्धा ।

अखिआत — अद्भुत, विचित्र । ब्रद — विरुद्ध, कीर्ति । भारी — महान, बड़ा ।
पाड़ियौ — मार डाला ।

भूरै रे अग-नैणी भूलर, मेह तणी परि मोरां ।
जोगण-पीठ दियां सायजादी, घूमरि ऊपरि घोरां ॥२॥
दस दस पास खवासी दासी, चंपक वरण ओढियां चोर ।
सिस-वदनी नाखै सिसकारा, मोरां कहां हमारा मोर ॥३॥
आस अलूभ गोखडै ऊभी, कोयां -काजळ कीबी ।
गळती रात पुकारै गोरी, बावहिया जिम बीबी ॥४॥

(रुघौ मुहती)

गीत छोटी-सांणोर ६

सुरतांण हुवौ भै-भीत संपेखे, गुडिया खान सु पड़ियौ गाढ ।
“अमर” तणा भुज हूँता अंबर, जाणै वजर पड़ी जम-दाढ ॥१॥
वाही गजसिंघोत विसरिअै, असुरां फुटा अफर अणी ।
मुगळां तणै पड़ी किर माथै, त्रिजड़ी तडित अकाळ तणी ॥२॥
हुय हैकंप कांपियौ हजरति, लागुआं परै नीसरी लाग ।
वहमंड “अमर” भुजा-डंड वहती, वाढाली जळहळी व्रजाग ॥३॥
असपति राव चमकि ओद्रकियौ, खेडैचै वाही करि खीज ।
सुकरि आकास हूँत सेलारां, वीजुल विढण क वुही वीज ॥४॥
जवनां सूं “अमरेस” जूटवा, कटारी दामणी करग ।
खाना घणां तणौ खण खानी, सोण रंगी भवकी सारंग ॥५॥

(केसोदास गाडण)

शब्दार्थ—भूरै — रुदन करती है । अग-नैणी — मृगाक्षी । भूलर — समूह । मेह-वर्षा । जोगण-पीठ — दिल्ली । सिसवरदनी — चंद्रमुखी । नाखै — डालती है । सिस-कारा — निःश्वास । आस — आशा । उलूभ — उलभ कर । बावहिया — चातक ।

सुरतांण — बादशाह । भै-भीत — भयभीत । संपेखै — देखकर । गाढ — बल । हूँता — से । अंबर — आकाश । जाणै — मानो । वाही — चलाई, प्रहार किया । विसरिअै — कुपित होकर । अफर — वीर । किर — मानों । त्रिजड़ी — कटार । तडित — बिजली । अकाळ — असामयिक । तणी — की । हैकंप — भयभीत । हजरति — बादशाह । लागुआं — शत्रुओं । वहमंड — आकाश । वाढाली — कटार । जळहळी — चमकी । व्रजाग — वज्राग्नि । असपति-राव — बादशाह । ओद्रकियो — भयभीत हुआ । खेडैचै — राठोड़ । खीज — कोप । वीजळ — कटार । दामणी — बिजली । करग — हाथ । सोण — रक्त, खून । भवकी — चमकी । सारंग — कटार ।

गीत बडौ सांणोर १०

कियौ प्रथम साकी बडौ दिली कणियागरै, दळां-थंभ कमध चीतौड खत्र दाव ।
 "अमर" अवगाढ जमडाढ जम आछटे, "राण" "रिडमाल" उजवाळिया राव ॥१॥
 प्रथी-पत बै पखां पदू मोटा प्रगट, औछबै धके जुध भार आयै ।
 तोल अणियाळ जळ-बोल चखतां तणा, रोद हीलोळिया दईव रायै ॥२॥
 साभियौ भली "वणवीर" उत सांकड़ै, अभंग "चूंडा" तणै तोल असमान ।
 दुरत-गत "गजण" रै दिली-पत देखतां, खेड-पत मारियौ सलावत खांन ॥३॥
 अकलै भुजां दहूं छ खंड घाते अवर, दस दिसां वजै जस तणौ डाकी ।
 "माल" हर "वीर" हर पछै वेढीमणै, "सूर" हर तीसरी कियौ साकी ॥४॥
 मारियौ घणा मिळ सीह मंडोत्ररी, लाज सांकळ सबळ पाय लागा ।
 हाल सो(ह) दिली उमराव आंकल हुआ, ऊवरै राव जम राव आगा ॥५॥
 (नरहरदास बारहठ)

गीत प्रहास सांणोर ११*

प्रथम मारियौ सलावत खांन किताई पछै, सांकड़ै सूर रुधै सबांही ।
 "अमरसी" तखत पतसाह मुंह आगळी, वीर-रस गाढ जमदाढ वाही ॥१॥

शब्दार्थ—साकी — युद्ध । बडौ — महान । कणियागरै — सोनगरा चौहान ।
 दळां-थंभ — योद्धा । कमध — राठीड़ । खत्र — क्षत्रियत्व । अमर — अमरसिंह ।
 अवगाढ — वीर । आछटे — प्रहार करके । राण — महाराणा । रिडमाल — राव
 रिडमल का वंश, राठीड़ । उजवाळिया — उज्ज्वल किये । प्रथी-पत — राजा । बै —
 दोनों । पखां — पक्षों, वंशों । पदू — साक्षी । औछबै — ? । धके — अगाड़ी ।
 अणियाळ — कटार, भाला । जळ-बोल — भयंकर, विकट । चखतां — मुगल वंश के ।
 रोद — यवन । हीलोळिया — विलोडित किये । दईव रायै — राजा । साभियौ — मार
 डाला । उत — पुत्र । सांकड़ै — विकट, तंग । अभंग — वीर । तणै — तनय-पुत्र ।
 खेडपत — राठीड़ । डाकी — नगाड़ी । पछै — पश्चात् । माल — मालदेव सोनगरा ।
 वेढीमणै — वीर ।

सांकड़ै — तंग स्थान में । रुधौ — रोका गया । आगळी — अगाड़ी । वाही —
 चलाई ।

*गीत नं० ३ से गीत नं० १२ तक के गीत बरूशी सलावत खां की बादशाह के दरबार में ही मारने के संबंध में हैं । ये गीत भिन्न भिन्न कवियों के रचे हुए हैं । घटना का सार इस प्रकार है—वि० सं० १७०१ के श्रावण सुदि द्वितीया को राव अमरसिंह बादशाह के दरबार में मुजरा करने को गये । संध्या का समय था । अमरसिंह ने बरूशी सलावत खां से कहा कि हमारा मुजरा मालूम करा दीजिए । ठहर जाओ यह कह

छात्र साह रा "गाजी" तण छावडै, जपे जण जण वयण जुआ-जूआ ।
 उपरां असुर दळ कटारी उभारी, हजारी हजारी गरद हुआ ॥२॥
 ऊठ गो खूंद जड ताक ग्रहि अंतरै, दाख आतस अवर सेन दुडिया ।
 "सूर" हर आभरण तणी प्रत-माळ सूं, प्रगट उलट पालट मेछ पडिया ॥३॥
 कैसरी सिध राव "मालदे" कळोघर, चाइआ-गुर सदा लग वडा चेळी ।
 विचित्र साह आलमी जालमी विजुळा, मरण मिळिये कियो ताळ-मेळी ॥४॥

(माघोदास गाडण)

शब्दार्थ—छात्र-छत्र - अमीर, सरदार । गाजी - महाराजा गजसिंह । छावडै -
 पुत्र । वयण - बचन । जुआ-जूआ - पृथक-पृथक । हजारी - पंच हजारी । गरद -
 ध्वस्त, संहार । खूंद - बादशाह । दाख - कह कर । आतस - जोश । दुडिया -
 छिप गये । सूर - सूरसिंह । प्रतमाळ - कटार । मेछ - यवन । चाइआ गुर -
 । सदा-लग - सदैव । चेळी - पलड़ा । ताळ-मेळी - अवसर, मौका, संयोग ।

कर वह भीतर चला गया परन्तु उसे अवसर नहीं मिला जिससे विलम्ब हो गया । जब राव अमरसिंह ने उसे वापिस बाहर आते नहीं देखा तब स्वयं भीतर चले गये और ६ मुहरें नजर करके अपने स्थान पर खड़े हो गये । सलावत खां बीकानेर के राजा करणसिंह के कारण पहले ही से शत्रुता रखता था । उसने करणसिंह का पक्ष लेकर नागौर पर अपनी सेना भेजने की व्यवस्था जमा ली थी । क्योंकि वह इन पर जलता ही रहता था । उसको इनका अपमान करने का उपयुक्त अवसर मिल गया । एकदम अपने मुंह से गँवार शब्द का उच्चारण कर दिया । राव अमर जैसे वीर पुरुष को भला यह कब सहन हो सकता था । इस प्रकार के तुच्छ शब्द मुख से निकलते ही राव अमरसिंह ने उसके कलेजे में कटार भोंक दी, सलावत खां वहीं पर ढेर हो गया । बादशाह भाग कर अन्दर चला गया और आदेश दिया कि अमरसिंह जाने न पाये । परन्तु भूखे सिंह के सदृश उस वीर के सामने जाने का साहस किसी का भी नहीं हुआ । राव अमरसिंह दरबार से निकल कर अपने डेरे जाने लगा । उसके पीछे पठान खलीलुल्लाह खां ने तलवार का वार किया परन्तु वह कारगर नहीं हुआ । फिर गोड विठ्ठलदास का पुत्र अर्जुन गोड राव अमरसिंह के पीछे आया । राव ने पीछे फिर कर देखा तो गोड अर्जुन ने निवेदन किया कि मैं तो आप ही का हूँ । राव ने उसका विशेष ध्यान नहीं रखा । गोड ने अवसर देखकर तलवार का प्रहार किया, वह सफल हो गया । उस समय भी राव (अमरसिंह) ने कटार से तीन व्यक्तियों को मारा और अर्जुन गोड के भी कान के पास कटार का घाव लगा जिससे उसका कान कट गया । इस समय में गुर्जरदारों का दल आ पहुँचा, राव इन सबसे युद्ध करता हुआ वीर गति को प्राप्त हुआ । अन्तिम गीत में कविवर किसना आढा ने अनूठी उक्ति से चांद को तो युद्ध देखने का आनन्द प्राप्त कराया है और भगवान भास्कर (सूर्यदेव) को इस युद्ध के न देखने से बड़ा रंज होने का भाव प्रकट किया है क्योंकि युद्ध संध्याकाल में ही हुआ था ।

गीत बडो सांणोर १२

निसा-पड़तां भूँवीयी जुत-अनडां नडण, जवन दळ सिर सबळ दाखि जमरा ।
 सिसि करै जेण उदमाद नव-साहंसा, अरक घोखी करै जेण "अमरा" ॥१॥
 दुधारां वाहती ढाहती दुज्जणां, नरां सिणगार वंघ चौगाणै नूर ।
 मोहियौ मयंक कर देख अखाडमल, "सूर" हर छोहियौ आभरण सूर ॥२॥
 राति विढियौ इसी भांति नरवै रयण, सम-समी मार देती सवांही ।
 तेण उदमादियौ चंद कमघां तिलक, मांत मांदी थियौ सूर मांही ॥३॥
 भिड़तै "अमर" अखीआत कीधी भुयण, सुत "गजण" वात संसार कहसी ।
 देखसी अदेखां तेण वातां दहू, रात दिन हरख मन मांहि रहसी ॥४॥
 (किसनी आढौ)

२. बलू गोपालदासोत चांपावत

गीत छोटी-सांणोर १*

घड़ लाकड़ हुवै बळ हंस धुआ, भाळ हुयो रणताळ भलू ।
 बळगौ खाग अभाग वैरियां, बळती आग वज्राग "बलू" ॥१॥
 ऊपर सत्रां पड़तां ईंधण, घत रत दरडे पूर घणी ।
 पौरस भाळ काळ पँडवेसां, तगस भटकियो "पाल" तणौ ॥२॥

शब्दार्थ—निसा—रात्रि । पड़तां—होने पर । भूँवीयी—छापा मारा । अनडां—नडण—वीरों को बंधन में डालने वाला । सिसि—शशि, चंद्रमा । उदमाद—हर्ष, प्रसन्नता । नव साहंसा—राठौड़ । अरक—सूर्य । घोखी—पश्चात्ताप । दुधारी—भाली । ढाहती—मारता हुआ । दुज्जणां—दुजनों, शत्रुओं । मोहियौ—मोहित कर दिया । मयंक—चंद्रमा । अखाड-मल—योद्धा, वीर । सूर—महाराजा सूरसिंह । छोहियौ—खिन्न हुआ । विढियौ—युद्ध किया । नरवै—नरपति, राजा । रयण—रत्न । सम-समी—समान, बराबर । उदमादियौ—प्रसन्न हुआ, हर्षित हुआ । कमघां—राठौड़ों । मांदी—रुण, धिमी हो गया । भुयण—संसार । गजण—गजसिंह ।

घड़—सेना । लाकड़—काष्ठ । हुवै—प्रज्वलित होते हैं । हंस—प्राण । भाळ—ज्वाला । रणताळ—युद्ध । भलू—उत्तरदायित्व लेने वाला ।

*बलू गोपालदासोत चांपावत राव अमरसिंह राठौड़ के वीर गति प्राप्त होने पर उनकी सहधर्मिणी की सती होने के निमित्त राव अमरसिंह का शव लाने हेतु यवन सेना के साथ भयंकर मार-काट करता हुआ वीरगति को प्राप्त हुआ । इस घटना संबंधी गजगुण रूपक ग्रंथ के रचयिता कविवर केसोदास गाडण ने बलू गोपालदास की प्रशंसा में कई डिगल गीत रचे थे, उन गीतों में से तीन गीत यहां पर दिये गये हैं ।

मेछां घड़ा अभनमी "मांडण", सांफळगी पुळगी सबळ ।
 बटका हुय कटका बांणसां, भटकां भटके घोम भळ ॥३॥
 हाथां मछरं केवांण हुबिया, सुरतांणां माथै यर सूळ ।
 असुरां थाट काट आवटियी, मंगळ जुध ठरियी कळ-सूळ ॥४॥

(केसोदास गाडण)

गीत वडो सांणोर २

अमर राव वाळ दिवसि दाव जाणं अभंग, सूर वर साथि लीधां समेळा ।
 पटै जो हुंतौ "बलू" पतिसाह रै, "बलू" भेलौ हुअी मरण वेळा ॥१॥
 तण "गजण" साथि भाराथ चित तेवडै, त्यार भड़ मुहरि आगळी खत्री ताइ ।
 असुर रौ वित खावतौ खत्री अंत रै, अंत रै तंत सुज मेळियी आइ ॥२॥
 जोघपुर सुपह री चाड मांडे जुडण, आपरां लियां परिग्रह उजासै ।
 "पाल" रौ खूंद वरतणि जुदी पांमती, पूजियो विघन ची वार पासै ॥३॥
 मारियो सुणै पतिसाह राव अमरसी, साह सूं मांनि जुध भवां सारू ।
 मरण दिन पटो परहरि नवो मौड बांधि, मुअी जूना पटा साथि मारू ॥४॥
 (केसोदास गाडण)

गीत प्रहास सांणोर ३

विजड़ ऊठियो घूण गिर-मेर रौ बहादुर, पछै म्हे कदे अवसांण पावां ।
 "अमर" ने सुरग दिस मेल नै अकेलौ, आगरै लड़ेवा कदे आंवां ॥१॥

शब्दार्थ—वाळ - के । अभंग - वीर । लीधां - लिए हुए । समेळा - अनुकूल । भेलौ - शामिल, साथ । तण - तनय, पुत्र । गजण - महाराजा गजसिंह । भाराथ - भारत, युद्ध । तेवडै - विचार करके । त्यार - तब । मुहरि - मुह के । आगळी - हरावल, अगाड़ी । असुर - यवन । वित - वेतन । सुपह - राजा, वीर । चाड - सहायता । मांडे - रच कर । जुडण - युद्ध । परिग्रह - परिग्रह । पाल रौ - गोपालदास चांपावत का । खूंद - बादशाह । वरतणि - वेतन । जुदी - पृथक । पांमती - प्राप्त करता था । पूजियो - ? । विघन - युद्ध । वार - वेला । भवां - जन्मों । सारू - लिए । परहरि - छोड़ कर । मारू - राठीड़ ।

विजड़ - तलवार । घूण - घुमा कर । पावां - प्राप्त करें ।

अम्हे तो “अमर” राजा तणा ऊमरा, जूड़ेवा पारकी छठी जागां ।
 बोलियो “बलू” पतसाह रे बरावर, मारवे - राव री वर मांगां ॥२॥
 केसरचा मांह गरकाव वागा करे, सेहरी बांध हलकार साथे ।
 “अमर” री भतीजी तोल खग आखवं, “बलू” अर अगरी हुआ बाथे ॥३॥
 पटा नै नांखि भिड साह सूं चटापड, कांम नव-कोट साची कमायो ।
 वाद कर साहसूं वर नूप वोढियो, “अमर” नै मुहर करि सरग आयो ॥४॥

(केसोदास गाडण)

३. महाराजा सूरसिंह बीकानेर

गीत-प्रहास सांणोर १*

गिरंद गाहटण नूभे-मण सभे रिण विसम गत, दोयण घण दावटण ‘जैत’ दूजी ।
 जपै मन सहू जन ‘सिघ’ तणा विजै जस, साह मोखण ग्रहण भूप ‘सूजी’ ॥१॥

शब्दार्थ—जूड़ेवा - युद्ध करने को । पारकी - दूसरे की । मारवे - राव राठीड़ राजा । गरकाव - तरवतर । वागा - पहनावा । सेहरी - मीर । हलकार - ? । आखवं - कहता है । हुआ-बाथे - भिड़ गये । पटा - जागीर के गांवों की सनद । नांखि - डाल कर, फेंक कर । चटा-पड - लड़ाई । नव-कोट - मारवाड़ । साची - बढिया । वाद - युद्ध । वोढियो - वसूल किया । मुहर - हरावल ।

गिरंद - गिरीन्द्र, पर्वत । गाहटण - ध्वस्त करने को, ध्वस्त करने वाला । नूभे-मण - निर्भय मन वाला । सभे - कटिबद्ध होता है । विसम-गत - विषम गति से । दोयण - शत्रु । घण - अधिक । दावटण - दवाने को । जैत - राव जैतसिंह (बीकानेर) । दूजी - द्वितीय, वंशज । सिघ - रायसिंह तण - तनय, पुत्र । साह-वादशाह । मोखण - छोड़ने को, छोड़ने वाला । ग्रहण - पकड़ने को, पकड़ने वाला । सूजी - महाराजा सूरसिंह (बीकानेर) ।

*वि० सं० १६७६ में शाहजादा खुर्रम विद्रोही बन गया । वह दक्षिण में उत्प्रात करने लगा, तब बादशाह जहांगीर ने महाराजा सूरसिंह (बीकानेर) को शाहजादा के विरुद्ध दक्षिण में दांति-व्यवस्था स्थापित करने के लिए भेजा । महाराजा अपने दल-बल सहित दक्षिण में गये । खुर्रम के उपद्रवों को दबा दिया । उसी की साक्षी का उपयुक्त गीत है ।

उभै विध खाग गयणाग लग ऊछजै, जिता जुध ताकवै तिता जीपे ।
 सितर नै वोहतर घणी नवसाहसी, दिली भांजण घड़ण "सूर" दीपे ॥२॥
 बाळ गजराज सिरताज वहता विसर, लाख दळ लियै असमाण लागे ।
 प्रवळ-पातसाह री हुकम कर "जंगळ-पत", "खुरम" घर घर कियी मार खागे ॥३॥
 परै जोधांण वीकांण मोटा पढूं, आज री लाज तोसूं अनाजा ।
 राज जहांगीर री करां थिर राखियो, राव रांणी सिरै 'सूर' राजा ॥४॥
 (किसनी सिंढायच)

गीत प्रोढ २*

पूगळ पालटी धरकियी विकंपुर, कहै छूटां कांहि ।
 उदधि राजा सूर उलटी, जादवां गढ जाहि ॥१॥
 वैरसळपुर छाडियो वळ, आज नहीं का ओट ।
 समंद जिम रायनिघ संभ्रम, कमघ वोढै कोट ॥२॥
 देवराववरं अत घड़ दीठी, भाटियां भंगांण ।
 उलट ढाहण वडा अनडां, मिली छंडे मांण ॥३॥
 गुहिर दुरंग अजीत गांजै, जादमां क्यू जेर ।
 सकै नह जुधि सूर सांमुही, मांडि जैसळ - मेर ॥४॥
 (हरखी बारहठ)

शब्दार्थ—विध — प्रकार । खाग — तलवार । गयणाग लग — आकाश तक ।
 ऊछजै — ऊंची उठाता है । जिता — जितने । ताकवै — तकता है । तिता — उतने
 ही । जीपे — विजय प्राप्त करता है । घणी — स्वामी । नवसाहसी — राठौड़ ।
 भांजण — तोड़ने को । घड़ण — बनाने को । सूर — महाराजा सूरसिंह (बीकानेर) ।
 दीपे — शोभित होता है । जंगळपत — बीकानेर का राजा । खागे — तलवारों से ।
 जोधांण — जोधपुर । वीकांण — बीकानेर ।

*महाराजा सूरसिंह (बीकानेर) पूगल, वरसलपुर तथा बीकानेर के भाटी सामन्तों
 पर कुपित हो गये थे । उस आशय का उपर्युक्त गीत बारहठ हरखा का रचा हुआ है ।

गीत प्रहास सांणोर ३*

अजा सिंघ चालै बिन्है बाट हुइ अकठा, अक छति देव गत हाथ आंणी ।
 मार कै सार कै पांणी गह मेदनी, मान-धाता पछै “सूर” मांणी ॥१॥
 बाघ छाळी बिन्है बाट सूधा वहै, कोई मारै नहीं जोर कांहीं ।
 मान-धाता तणै राज माल्हावियौ, मारवै-राव बीकांण मांही ॥२॥
 ग्रासिया गया मेवासिया छोडे ग्रहि, रुक प्राभी लगै साह रांणै ।
 अजा पंच-मुख बिन्है अकठा उछरै, जंगळ पतिसाह समभाय जांणै ॥३॥
 चमर माथै ठुलै पलै सेवग चलण, पाट उधोर पखै बिन्है पूरी ।
 सोहियौ भली रायसिंघ रौ सिंघळी, साजि मेवास अवास सूरौ ॥४॥
 (संकर बारहठ)

गीत छोटी सांणोर ४

“सूजा” महाराज नमौ सूरतन, दाखै धिन धिन राह दुवै ।
 हुवै सदाय घाव तो हाथां, हाथां तो दत्त बडा हुवै ॥१॥
 अं दोय वात अथग***; सारी भय दाखै संसार ।
 आचां तूझ वहै रिण-असमर, आचां तूझ हुवै आचार ॥२॥

शब्दार्थ—अजा - बकरी । बिन्है - दोनों । अकठा - एक साथ । छति - पृथ्वी । सार - तलवार । मेदनी - पृथ्वी । सूर - महाराजा सूरसिंह (बीकानेर) । छाळी - बकरी । सूधा - सीधे । कांही - कुछ । माल्हावियौ - चलाया । मारु-राव - राठौड़ राजा । बीकांण - बीकानेर । मांही - मैं । ग्रासिया - ? । मेवासिया - लुटेरे, चोर । सहि - घर । प्राभी - प्रबल । पंचमुख - सिंह । उछरै - जंगल में विचरण करते हैं । जंगळपति साह - बीकानेर का राजा । पखै - पक्षों, वंशों । पूरी - पूर्ण । सोहियौ - शोभित हुआ । भली - ठीक, श्रेष्ठ । साजि - सजा देकर । मेवास - लुटेरों । अवास - स्थान ।

सूजा - महाराजा सूरसिंह (बीकानेर) । सूरतन - शौर्य, वीरता । दाखै - कहता है । धिन धिन - धन्य धन्य । राह दुवै - दोनों पथ, या धर्म (हिन्दू और मुसलमान) । सदाय - सदैव । दत्त - दान । अथग - असीम, अपार । आचां - हाथों । तूझ - तेरे । वहै - चलती हैं । असमर - तलवार । आचार-दान ।

*इस गीत में महाराजा सूरसिंह (बीकानेर) के न्याय-संगत राज्य का काव्यात्मक वर्णन है जिसकी तुलना मानधाता से की गई है ।

**प्रस्तुत गीत में कवि ने महाराजा सूरसिंह (बीकानेर) की वदान्यता और शौर्य का वर्णन किया है ।

पीही सिरताज आज वीक पुरा, सूर-वीर दाता सुभियांन ।
करगां ज तूं वडा रिण करणी, दियणी ज तूं करां वड दांन ॥३॥

दळ-विभाड रायसिंग दूजां, रिमां-पछाड कहै दोय राह ।

दत खग तरणा अै विरद दीढा, वणिया तूभ खवां सिरवाह ॥४॥

(केसोदास गाढण)

४. कूपावत गोरधनदास राठौड़ चंडावल*

गीत छोटी साणोर १

गज-बंध सुछलि अण भंग "गोवरधन, घण दळसां बाधियो घणी ।

कमलि घाव वणियो नव कोटा, टीकौ जुध मेलिया तरणी ॥१॥

शब्दार्थ—पीही - राजा । सुभियांन - श्रेष्ठ । करगां - हाथों । करणी - करने वाला । दियणी - देने वाला । करां - हाथों । वड दांन - बड़े दान । दळ-विभाड - सेना को ध्वंस करने वाला । रिमां - शत्रुओं । दत - दान । खग - तलवार ।

सुछलि - युद्ध । अण-भंग - वीर । घण - बहुत । बाधियो - बड़ा । घणी - विशेष । कमलि - शिर, भाल, ललाट । वणियो - बन गया । नवकोटा - राठौड़ । तरणी - का ।

*यह मारवाड़ राज्यान्तर्गत चंडावल ग्राम का ठाकुर था । महाराजा गजसिंह का पूर्ण विश्वास-पात्र था । इसने महाराजा गजसिंह के साथ दक्षिण के कई युद्धों में बड़े वीरतापूर्ण कार्य किये थे । वि.सं. १६८१ में शाहजादे खुर्रम के विद्रोह के फलस्वरूप बादशाह जहांगीर की सेना और शाहजादे खुर्रम की सेना के बीच युद्ध ठन गया । इस युद्ध में बादशाह की ओर से महाराजा गजसिंह भी अपनी सेना सहित शाही सेना के साथ थे । युद्धारम्भ में शाहजादा पर्वेज ने मिर्जा राजा जयसिंह को हरावल में रखा था परन्तु भीम के भयंकर आक्रमण में पर्वेज और मिर्जा राजा जयसिंह विह्वल हो गये—ऐसे समय में महाराजा गजसिंह व चंडावल ठाकुर गोरधनदास ने खुर्रम की सेना में भयंकर मार-काट मचाई । भीम वीर गति को प्राप्त हुआ । ठाकुर गोरधनदास भी इस युद्ध में घावों से क्षतविक्षत हो गया परन्तु जीवित रह गया । कालान्तर में (वि.सं. १७१५ में) बादशाह शाहजहाँ के पुत्रों ने राज्य-सिंहासन प्राप्त करने के लिए युद्ध छेड़ दिया—इन शाहजादों (औरंगजेब और मुराद) का मुकाबला करने हेतु महाराजा जसवंतसिंह को भेजा गया । इस समय वीर गोरधनदास कूपावत महाराजा के साथ था । उज्जैन के पास घरमत नामक स्थान में भयंकर युद्ध हुआ । इस युद्ध में यह वीर ठाकुर वीरगति को प्राप्त हुआ । इन्हीं युद्धों-संबंधी गीतों में से कुछ गीत ठाकुर गोरधनदास कूपावत के शीर्ष व पराक्रम के यहाँ दिये गये हैं ।

मुह विहंडियो भुजै राव मारु, दुजड़ै भड़ा दाखत देख ।
 चौरंगि चहुँ दळां 'चांदावत', आगलि हुआ तणी अविरख ॥२॥
 असहां रिख अणिया में आखित, होई वेदो-धुनि वीर हक ।
 असिमर अंक कळोघर "ईसर", तो सिरि खत्रवाट ची तिलक ॥३॥
 मुह भांजिया तणा मीहेला, मिळी ते साखी गयण-मिणि ।
 कुळ आभरण अभिनमा "कूपा", भू-मंडळि चाढियो भरणि ॥४॥

गीत छोटी सांगीर २

दहुँवे पतिसाह तणा दळ देखे, खत्री न भाजै मेछ खळ ।
 "गाजीसाह" कहै गौरधन, मेळ लोह जिम लोय मिले ॥१॥
 असपत दहुँ कडच्छिया ऊभा, खळ दळ हिंदू तुरक खहे ।
 राव कहै चांदावत रावत, दाव घाव तिम घाव बहे ॥२॥
 मोहर तलाड गजोड़ माझियां, भला भवाड चंद भाराथ ।
 हाथ उपाड पछाड़ हाथियां, हय उपाड़ सपेखे हाथ ॥३॥
 डसण गजां फौजां रिण डोहण, बाघ भेख भख बिलकुलियो ।
 घणी वयण अणियां 'गोरधन', मुंह भाखतां समी मिलियो ॥४॥

शब्दार्थ—विहंडियो—क्षत-विक्षित हुआ, या किया । राव-मारु—राठोड़ वीर ।
 दुजड़ै—तलवारों से । भड़ा—योद्धाओं । दाखत—बतलाते हुए, वर्णन करते हुए ।
 चौरंगि—युद्ध । चहुँदळां—चारों ओर की फौज । चांदावत—चांदसिंह का पुत्र ।
 आगलि—हरावल । अविरख—निशान, चिन्ह । असहां—शत्रुओं । रिख—ऋषि,
 ब्राह्मण, पंडित । अणियां—शस्त्रों की नोकें । आखत=अखत=अक्षत—पूजा के
 चावल । वीर हक—वीर हाक—वीर ध्वनि । वेदो-धुनि—वेद-ध्वनि । असिमर—
 तलवार । अंक—चिन्ह । कळोघर—वशज । ईसर—ईसरदास कूम्पावत जो गोरधन-
 दास कूपावत का पितामह था । खत्रवाट—क्षत्रियत्व । मीहेला—महोला—कोरनिस ।
 साखी—साक्षी । गयणमिणी—सूर्य । भू-मंडळि-चाढियो भरणि—संसार को भ्रमित
 कर दिया, कपायमान कर दिया ।

खळ—युद्धस्थल । कडच्छिया—सन्नद्ध हुए । खहे—युद्ध करते हैं । राव—
 महाराजा गजसिंह । भला—उत्तम । भवाड़—बना कर । चंद—चांदसिंह का
 पुत्र । भाराथ—युद्ध । डसण—दशन, दांत । बिलकुलियो—लालायित हुआ,
 उतावला हुआ । घणी—स्वामी । वयण—वचन । भाखतां—कहने पर ।
 समी—ही, पर ।

जुध अरि मार जीवै जोवियौ, कमधज करता हूकम कियौ ।

..... , , , , ॥१॥

(अज्ञात)

गीत छोटी सांणोर ३*

(प्रथम - दूहो)

आडी छड़ी न दीजियै, वह आवां खट - व्रत्र ।

चौडै बंधी 'चंद' तण, धज तै गोवरधन ॥

गीत

खूदाळम खूरम वाजिया खागै, करणानुज ऊकळी कळ ।

"गज - बंधी" आगै गोवरधन, दीधी चोट अबोट दळ ॥१॥

पिंड वाजिया बेहूं पतसाहां, मोहर मंडोवर नूभै मण ।

मारू ताती अणी मेलिया, तातै रावत "चांद" व तण ॥२॥

पाडण खळ मैंगळां पछाडण, 'जोध' हरै चाढण जळ जैत ।

नव सहसै तुरांट नांखिया, बानैतां ऊपर बानैत ॥३॥

छिनतै मछर संसार छेतरे, आगै वध मिलीयौ अणी ।

धिन जीतै गोवरधन धिन, धिन गोवरधन तणा धणी ॥४॥

(चतुरी मोतीसर)

शब्दार्थ—खूदाळम - बादशाह । वाजिया खागै - युद्ध किया । करणानुज - भीम सीसोदिया । दीधी - दे दी । चोट - प्रहार । अबोट दळ - बिना युद्ध किया हुआ दल-या-सेना । पिंड - युद्ध । वाजिया - भिड़े, युद्ध किया । मोहर - हरावल । नूभै मण - निर्भय मन वाला । मैंगळां - हाथियों । जोध-हरै - राव-जोधा के वंशज । जळ - कांति, आभा । जैत - विजय । नवसहसै - राठीड़ । तुरांट - घोड़ा । नांखिया - झोंक दिये । बानैतां - वीरों । मछर-मत्सर - कोप । छेतरे - (?) । अणी - सेना ।

*यह गीत चतुरा मोतीसर कृत है । चतुरा मोतीसर पर महाराजा गजसिंहजी नाराज हो गये थे । अतः चतुरा प्रथम चंडावल ठाकुर गोवरधनदास के पास गया और उपर्युक्त गीत व दोहा सुनाया जिस पर ठा० गोवरधनदास ने चतुरा को महाराज गजसिंह के दरबार में उपस्थित किया ।

वि० वि० के लिए देखो पृ० २७६-२७७ के फुटनोट ।

(उज्जैन रं जुध रा गीत)

गीत छोटी सांणोर ४

आयी जुध जेम “मुराद” ऊपडै, फौजां घण बारा फिरिया ।
 गढपतियां गिरवर गोवरधन, आडी दियां सह उबरिया ॥१॥
 मूसळ धारां तूसळ मैंगळ, धडां दरड पडतां चौधार ।
 वडा पहाड गोवरधन वांसै, सारा ऊबरिया सरदार ॥२॥
 खाल नाळ रुधरां खलकतां, जाभा कण वरसतां जाल ।
 ओळै कमधज तणै ऊबरिया, गढपत वाला बाल, गोपाल ॥३॥
 अवडौ भार सहै सिर ऊपर, बेहूं खग भाटां बीछाड ।
 ब्रज जिम राख लियो दळा वांसै, पडियो “चांद” तणी पहाड ॥४॥

(अज्ञात)

गीत छोटी सांणोर ५

नारद पूछियो गिरवर रिख नायक, वर ऊबरियो रुद्र वहै ।
 रांगी दोय परणी रुद्रांगी, किसी सुहागण साच कहै ॥१॥
 चांदावत ब्रह्मावत चबियो, मांड ऊहीज बेहूं जुध मांह ।
 पुरब घडा जीप सुख पाया, चाहियो वळै दखण तरा चाह ॥२॥
 राजा करूप रिख रिख राजा, गौदै कहीस सुणै गुर ।
 रीभै फौज खुरम री रहियो, औरंग री गौ छोड उर ॥३॥

शब्दार्थ—आडी — ओट, आड । उबरिया — बच गये । तूसळ — दांत (?) ।
 मैंगळ — हाथी । दरड — द्रव पदार्थ को प्रवाह या प्रवाह की ध्वनि । चौधार — चारों
 ओर । वांसै — ओट में, आड में, पीछे । ऊबरिया — रक्षित रहे । रुधरां — रुधिर ।
 खलकतां — ध्वनियुक्त बहने पर । जाभा — घना । अवडौ — इतना । चांद — गोवरधन
 कूपावत का पिता चांदसिंह । तणी — तनय, पुत्र ।

गिरवर—गोवरधन कूपावत के लिए प्रयोग किया गया शब्द । वर—पति । ऊबरियो —
 रक्षित रहा । रुद्र — यवन । वहै — मारे गये । रुद्रांगी — यवन स्त्री । (यहाँ यवन
 सेना के लिए प्रयोग किया गया है) । सुहागण — सौभाग्यवती । चांदावत — चांदसिंह
 कूपावत का पुत्र गोवरधनदास कूपावत । ब्रह्मावत — नारद मुनि । चबियो — कहा ।
 पुरब घडा जीप सुख पाया — खुरम की सेना में विजय प्राप्त कर हर्ष मनाया । वळै —
 फिर । दखण — दक्षिण की सेना (औरंगजेब और मुराद की सेना) । गौदै — ?
 रीभै — प्रसन्न होकर ।

सरखी कमंध वरी सायजादी, सार नार पडजनां सगार ।
विसव ऊपरै हेक बखाणै, माणै वीजी सुरग मभार ॥४॥

(भहेसदास आढी)

गीत छोटी साणोर ६

ग्रहसी अगनी भखै की ग्रीधण, परम किसूं बांधै गळ पोय ।
घड-धारां सारां गोवरधन, लागै गयी तुहाळी लोय ॥१॥

चरै अगन की पंखण आचरै, सिव कंठ किसूं करै सिणगार ।
करमाळां "चांदोत" कलेवर, बाढ चढेगौ भारत वार ॥२॥

आतस विहंग किसी आचरै, ईसर की ठाळै उतबंग ।
अरि आवधां अभनभी "ईसर", ऊबरियो धारां लग अंग ॥३॥

चरियां अगन न को चांचाळी, भव में काम न आयी भाळ ।
मारू-राव असमरां मुहडै, तिल तिल हुय पडियो रिण ताळ ॥४॥

(अज्ञात)

शब्दार्थ—वरी — वरण की । पडजन — विवाह की एक रस्म जिसमें कन्या पक्ष वाले बरात का स्वागत करने हेतु बरात के सामने जाते हैं, सीमान्त पूजा । विसव — विश्व, संसार । माणै — उपभोग करता है ।

परम — महादेव । किसूं — क्या । गळ — कंठ, गर्दन । तुहाळी — तेरी । चरै — भस्म करे । पंखण — पक्षी (मांसाहारी) । आचरै — भक्षण करे । करमाळा — तलवारों । चांदोत — चांदसिंह का पुत्र । कलेवर — शरीर । बाढ — शस्त्र का पैना भाग, शस्त्र की धार । भारत — युद्ध । वार — समय । आतस — अग्नि । विहंग — पक्षी । ईसर — महादेव । ठाळै — तलाश करता है । की — क्या । उतबंग — उत्तमाङ्ग । आवधां — आयुधों, अस्त्र-शस्त्रों । अभनभी — वंशज । ईसर — ईसरदास कूपावत जो गोवरधनदास कूपावत का पितामह था । चांचाळी — गिद्ध, चिल्ह । भव — महादेव । चै — के । भाळ — देख । मारू राव — राठीड़ । असमरां — तलवारों । मुहडै — अगाड़ी । रिणताळ — युद्धस्थल ।

५. कूपावत राजसिंह

गीत प्रहास सांणोर १*

प्रगट स्याम ध्रम पुरस हद मांटी परणै, पुन बड भाग म्है धणीज पायी ।
 स्याम रै काज जिण लुण री सरीगत, आज त्रिद उजाळण समी आयी ॥१॥
 जोग सू वात वण भूप "जसवंत" पर, प्रेत री आय बड चक्र पड़ियी ।
 पुत्र पर-धान विन प्राण जावै परी, अचाणक भयंकर स्वाल अडियी ॥२॥
 कहै कर जोड़ तिण समै "राजड" कमंध, पती कज पियाली मनै पावौ ।
 आज मो मरत "जसवंत" नूप ऊवरै, जाय छै जीव ती परी जावौ ॥३॥
 आपरौ प्राण दे धणी नै ऊवारियौ, "राजसी" अवेढी बात राखी ।
 स्याम ध्रमपणा मै "कूप" हर सिधाळा, सदा इण बात री जगत साखी ॥४॥

(अज्ञात)

गीत-प्रहास सांणोर २

हसी करोजै चाकरी भूपे इळ ऊपरा, बापरै नांम पर सुजळ बाढे ।
 इळा पर नांम ऊण अमर आदू कियौ, कोई नह चूक फिर मुवां काढे ॥१॥
 करीजै चाकरी जैडो "राजड" करी, गीत जिण क्रीत रा दुनि गाया ।
 आवतां आपदा भूपरै ऊपरा, "कूप" रै छोकरै तजी काया ॥२॥

शब्दार्थ—पुन — पुण्य, सुकृत । त्रिद — विरुद । समी — समय । चक्र — वाघा ?
 स्वाल — प्रश्न, सवाल । राजड — राजसिंह कूपावत । अवेढी — विकट ।

इळ — इला, पृथ्वी । चूक — गलती, दोष ।

*यह आसोप का ठाकुर था । महाराजा गजसिंह का पूर्ण विश्वासपात्र था । वीर क्षीरो-
 मणि भीम सीसोदिया के दूस नदी के युद्ध में यह महाराजा गजसिंह के साथ था । इस युद्ध
 में राजसिंह ने बड़ी बहादुरी दिखाई थी । वि० सं० १६६५ में महाराजा गजसिंह का देहाव-
 सान हो गया । उस समय महाराजा जसवंतसिंह की आयु १२ वर्ष की थी । जसवंतसिंह
 का राज्यतिलक बादशाह शाहजहाँ ने आगरे में ही किया और ठाकुर राजसिंह को महाराजा
 का प्रधान नियुक्त किया । वि० सं० १६६७ में महाराजा जसवंतसिंह के शरीर में प्रेत-बाधा
 उत्पन्न हो गई । इस समय मन्त्रीपचारक द्वारा मंत्रित जल पान कर इस वीर ने महाराजा
 जसवंत सिंह के लिए अपना नद्वर शरीर त्याग दिया । इस घटना सम्बन्धी दो गीत ऊपर
 दिये गये हैं । कुछ लोगों का ऐसा विश्वास है कि महाराजा ने राजसिंह का वध करने हेतु
 यह पद्य रचा था ।

प्रेत जद पैसियो “जसारा” पिंड में, कोइ नह जीव री जतन कीघी ।
“खींव” सुत आपरै पिंड खेद ले, पियाळी मंत्र री आप पीघी ॥३॥

जीवतौ बचाड़ै भूप जीधाण नै, कमंघ सुरगा बिचै वास कीघी ।
अमर जस राख आपरो इला में, लाख-मुख हूंत स्याबास लीघी ॥४॥

(अज्ञात)

६. कूपावत भीम*

गीत सोहणो

अजमेरे डेरैज अरी आणै, गोविंद भाटी चूक गह्यौ ।
पायै हुकम “सूर” नरपत री, लड “कूपै” वंड वैर लियौ ॥१॥

पतसाहां सेना बिच पीचै, हणियौ सजन हरांमां ।
मुरघर रै राजा मोकळियौ, लीन्ही वैर ... ॥२॥

सूर सिंघ सेना बिच संचर, कपटां ‘गोविंद’ चूक कियौ ।
मांन हुकम महपत री मारु, बाहरु चढै ‘तिलीक’ वियौ ॥३॥

आंण पोथै जिसणां दळ ऊपर, कटक बाढ निज खाग कियौ ।
सांम कांम सत्र घट भांजै, रण भूमी “भीमेण” रह्यौ ॥४॥

(अज्ञात)

शब्दार्थ—पैसियो — प्रविष्ट हो गया । खेद — कष्ट । पीघी — पीलिया । कीघी—
किया । लीघी — लिया ।

मोकळियौ — भेजा । महपत — महिपति, राजा । मारु — राठौड़ । बाहर —
रक्षक । तिलोक — तिलोकसिंह कूपावत । वियौ — वंशज । पोथै — पहुँच कर ।
पिसणां — शत्रुओं ।

*यह वीर “भाटी गोविंददास” की हत्या के पश्चात तुरन्त ही शत्रु-दल के पीछे महा-
राजकुमार गजसिंह के साथ गया और विपक्षियों से युद्ध करता हुआ वीर गति को प्राप्त
हुआ ।

७. कूपावत कचरी राठौड़*

गीत छोटी-सांणोर

परणीजण पतसाह जांन पतसाही, चहुंअ दिस ढुळतां चंमर ।
गावं अचछर वेद-धुनि गह-मह, "कचरी" परणीजै कवर ॥१॥

पेखण कळह कमंध परणावणा, लिखिया रुद्र नारद लगन ।
जोगण - पुरा मांडही जांनी, जोगणपुरां रचियौ जगन ॥२॥

तीर अखत डालां-गज तोरण, चहुं दिस कळस मंगळा-चार ।
चौरी वडी पेखियौ चिगथै, "कूप" कळोधर राज कैवार ॥३॥

पौढियौ पिलंग चाव सत्र पाथर, रहै महलां बीच घणो रस ।
तो नू दियो हिदवै तुरकै, "जसवंत" रा डायजी जस ॥४॥

(किसनी आढी)

शब्दार्थ—परणीजण - विवाह करने को । जांन - बरात । अचछर - अप्सरा । गह-मह - ? । पेखण - देखने को । कळह - युद्ध । परणावण - विवाह करने को । लगन - लगन, मुहूर्त । जोगणपुरा - मुसलमान, बादशाह । मांडही - विवाह में कन्या पक्ष वालों का स्थान । जगन - यज्ञ-विवाह । अखत - बिना टूटा चावल, अक्षत । डालां-गज - गज ढाला, हाथी के शिर पर धारण कराया जाने वाला उपकरण । तोरण - विवाह के अवसर पर कन्या के पिता के भवन के मुख्य द्वार पर लगाया जाने वाला काष्ठ की खपच्चियों का बना हुआ मांगलिक उपकरण । मंगळाचार-मांगलिक गायन । चौरी - विवाह मंडप का यज्ञ-कुण्ड । पेखियौ - देखा । चिगथै - चगताई वेश का, मुगल । पौढियौ - शयन किया । चाव-उमंग । सत्र - शत्रु । पाथर-विछा कर । रस - आनन्द । डायजी - दहेज ।

*कूपावत कचरा राव कूपा राठौड़ के पुत्र महेशदान का प्रपौत्र तथा जसवंत सादू-लोत का पुत्र था । यह खुर्रम की ओर से दूंस नदी पर युद्ध करने वाले प्रसिद्ध वीर भीम सीसोदिया की सेना का प्रमुख योद्धा था । इसी युद्ध में बड़ी बहादुरी के साथ युद्ध करता हुआ वीर-गति को प्राप्त हुआ । प्रस्तुत गीत में कविवर किसना आढा ने दोनों बादशाहों में एक को दूल्हे के पक्ष का और दूसरे कन्या पक्ष के व्यक्ति की तुलना करते हुए कचरा को दूल्हा बनाया है । सेना रूपी दुलहिन का वर्णन करके युद्धस्थल रूपी पर्यङ्क पर कचरा सदैव के लिए शयन कर गया ।

८. राव जैतौ*

गीत पंखाळी. १

नवलाख कटक नवलाख नेजाइत, गढ थरहरै वडा गजगाह ।
 “जैता” तणा भुजा-डंड जोवा, “सूर” पधारे पहर सनाह ॥१॥

मुर-खट लाख मेळ दळ मौडै, सत्र हर चढत मंडोवर सीम ।
 जोगिणि-पुरौ आइ इम जोवै, भुज राडोड तणा जुध-भीम ॥२॥

रिण-मल” हरौ मुवौ पग रीपै, धाइ विहंड असुराण घणा ।
 ऊभौ करै जोहयौ असपति, तांह भुजा-डंड “जैत” तणा ॥३॥

(अज्ञात)

शब्दार्थ—नेजाइत — भालाधारी, भंडाधारी । थरहरै — कंपायमान होता है । गज-गाह — युद्ध, योद्धा, वीर । सूर — बादशाह शेरशाह । सनाह — कवच । मुर — तीन । जोगिणिपुरी — बादशाह, यवन । आइ — आकर । इम — इस प्रकार । भीम — जबरदस्त । हरौ — वंशज । धाइ — प्रहार । विहंड — मार कर । असुराण — बादशाह । ऊभौ — खड़ा । जोइयौ — देखा । असपति — बादशाह । तणा — के ।

*राव जैता प्रसिद्ध महावीर मंडोवर के अधिपति राव रिणमल के पुत्र अखैराज का पौत्र तथा पंचायण का पुत्र था । राव मालदेव के गिरी समेल के युद्ध में यह वीर बड़ी बहादुरी के साथ बादशाह शेरशाह सूर की सेना से युद्ध करता हुआ राव कूपा के साथ ही वीर-गति को प्राप्त हुआ । बादशाह शेरशाह इन वीरों से युद्ध करता हुआ विह्वल हो गया था । युद्ध से निवृत्त होने के पश्चात् बादशाह ने इनकी लाशें देखनी चाहीं, जिनको बादशाह के सेनापति ने तलाश करके ला कर हाथियों के सहारे खड़ी कर दी । बादशाह इन को देखकर चकित हो गया और इनकी खूब प्रशंसा कर के कहा “खुदा का शुक्र है कि राव मालदेव इन वीरों के साथ नहीं था वरना जान से हाथ धोने पड़ते ।

ग्रंथ के मूलपाठ पृ० २२५ में राव जैता का नामोल्लेख है । गीत में वर्णित इतिहास ठीक है, परन्तु सेना की संख्या में कवि ने अतिशयोक्ति का सहारा लिया है ।”

गीत छोटी सांणोर २

डाळा अनि सुहड घणा डोलांणा, सार लहरी वाजती साह ।
जड वह लाज महा-घू "जैता", निभै-स थुड थरहरियी नाह ॥१॥

भूवै अवर नर कपै भांबली, वाढाळा खमि सकै न वाड ।
घु-वळा सरिखी अचळ रहियी, धूरि, खंख वडी रिणमल हर राड ॥२॥

भड-अनि साख भळभळै भारथि, घाउ मै कोरण पेखि घणी ।
मूळ सुं नह डिगियी राव मारू, तर "जैती" "पंचायण" तणी ॥३॥

मुर-खंड नाइक सुछळि मुरधरा, घाइ असुर दळ साजि घणा ।
सु ब्रख सुहाइ "जैत" अण संकित, तुड यी कुटकै आप तणा ॥४॥

(अज्ञात)

६. जैतावत प्रथीराज राठौड़*

गीत छोटी सांणोर १

सिव आगै सगत पर्यपै साचो, सार चढावीया घणा सत्र ।
पत्र पांडवां न भरिया पूरा, "पीथळ" ताय पूरिया पत्र ॥१॥

शब्दार्थ—डाळा — वड़ी टहनी, वृक्ष की शाखा । सुहड — सुभट । अनि — अन्य, दूसरे । डोलांणा — हिल गये, दोलायमान हो गये । सार — तलवार । लहरी — वायु, भोंका, हवा । साह — बादशाह । महा-घू — महान घुव, अटल । जैता — राव जंतसिंह । निभै — निभंय । थुड — तना । थरहरियी — कंपायमान हुआ । नाह — नहीं । भूवै — पकड़ते हैं । भांबली — टहनी । वाढाळा — खड्गधारी, वीर । खमि — सहन कर । वाउ — वायु । घुवळा — घुव । सरिखी — समान । धुरि — अगुआ । रिणमल हर — राव रिणमल का वंशज । साख — शाखा, टहनी । भळभळै — कांपते हैं । भारथि — युद्ध में । पेखि — देख कर । राव मारू — राठौड़ वीर । तर — तर, वृक्ष । जैती — राव जैता । तणी — तनय, पुत्र । सुछळि — लिए । घाइ — प्रहार । तुड — तना ।

पर्यपै — कहती है । पत्र — खप्पर । पीथळ — पृथ्वीराज । पूरिया — पूर्ण किए ।

*यह पूर्वोल्लिखित राव जैता का प्रथम पुत्र था । वि० सं० १६१० में राव वीरमदेव के पुत्र राव जयमल को राव माल देव ने जोधपुर बुलाया, परन्तु वह उपस्थित नहीं हुआ,

माहाभारथ "पीथल" मेड़तै, घट घट वाहै लोह घणै ।
 "अरजण" हूंत रह्या था आधा, ताय (पत्र) भरीया "जैत"-तणै ॥२॥
 खपीया जठै अठारै खोयण, आधी रहीया तेण अवाह ।
 चौसठ खपर पूरिया चळुअळ, हेकण कमध तणै हथवाह ॥३॥
 सुरां नरां पतगरियो समहर, हिंदू नमी तुहाळा हाथ ।
 "सलखा" हरा तणै अत सहलां, सगत तणै सो धायी साथ ॥४॥
 (अज्ञात)

गीत पंखाळो २*

रांणी म म रोय "प्रथै" रण रीघल, रण भाजे स तिके भड़ रोय ।
 घण-जूभा रिडमाल तणै घर, हुअै मरण जद मंगळ होय ॥१॥
 "पीथल" तणै म कर दुख पचियत, दढ तज गया तीयां कर दुख ।
 आद-जुगाद "अखा" हर आगै, सार-मरण घण-घणौ सुख ॥२॥
 म कर अदोह "जैतवत" मरते, आया भाज-स रोय अयार ।
 आ कुळवाट सदा "अखै-राजां", चडतां कूतां मंगळ-चार ॥३॥
 (अज्ञात)

शब्दार्थ—जैत - राव जैता । खपीया - समाप्त होगये । अवाह - देवी का खप्पर ।
 चळुअळ - रक्त, खून । हेकण - एक ही । हथवाह - प्रहार । पतगरियो - प्रशंसा
 की । समहर - युद्ध । तुहाळा - तेरे । सगत - शक्ति, रणचंडी । तणै - का । सो -
 सब । धायी - तुप्त हुआ ।

प्रथै - पृथ्वीराज । रण - युद्ध । रीघल - वीरगति प्राप्त होने पर । भाजे -
 भग जाते हैं । घण-जूभा - बहुत युद्ध करने वाले । तणै - के । घर - वंश ।
 मंगळ - आनंद । पीथल - पृथ्वीराज जैतावत । पचियत - (?) । दढ -
 साहस, दृढता । तीयां - उनका । आद-जुगाद - परम्परा से । सार - तलवार ।
 अदोह - दुख, संताप । जैतवत - राव जैता का पुत्र । अयार - शत्रु ।

जिससे कुपित होकर राव मालदेव ने मेड़ते पर चढ़ाई कर दी । इसका मुकाबला करने को
 राव जेमल के प्रतिष्ठित और विश्वासपात्र वीर युद्धार्थ कटिबद्ध हुए । कुछ समय के बाद ही
 भयंकर युद्ध हुआ । इस युद्ध में राव मालदेव की ओर से जैमल की सेना से लड़ता हुआ इन
 तीन गीतों का चरित्र-नायक जैतावत पृथ्वीराज राठौड़ वीरगति को प्राप्त हुआ । प्रस्तुत
 गीतों में गीत नायक पृथ्वीराज के वीरतापूर्ण कार्यों का अनूठा वर्णन है ।

* प्रस्तुत गीत में पृथ्वीराज जैतावत के वीरगति प्राप्त होने के पश्चात् उसके कुटुम्बियों
 को सान्त्वना देने तथा वीरगति प्राप्त होने के महत्व का दिग्दर्शन मात्र है ।

१०. जैतावत भगवानदास राठीड़*

गीत-प्रहास सांणोर

भिड़णि जेम “भगवानं” असमानं अड़ियै भ्रिगुट,
 भार धरि भुजै गढ सनढ भेळै ।
 दळां रा तिके रखपाळ न्याइ दाखिजे,
 मुहरि वधि भडांहूं सार मेळै ॥१॥

अभनमा “प्रथीमल” जिही धरियै अधणि,
 आवळां - दळां वधि खळ ऊयाळै ।
 मुजै बीड़ी तिकै बहसि मांगै भलां,
 भूभ भर आवगो सीस भालै ॥२॥

जंगि जूपै धवळ जोध लागां जिही,
 जिकै अरि लाख तिल मात जोवै ।
 दळां सिरदार ताइ भलां कीजै दुभल,
 हुबंतां दळां दळ - थंभ होवै ॥३॥

हैडवै थाट अविआट “जैता” हरै,
 सारीखं मरण संसार सीधी ।

शब्दार्थ—भिड़णि - युद्ध । अड़ियै - स्पर्श किए हुए । भ्रिगुट - भृकुट, शिर । भार - उत्तरदायित्व । सनढ - वीर । भेळै - लूट लेता है ? रखपाळ - रक्षक । दाखिजे - दूकहे जाते हैं । मुहरि - हरावल । भडांहूं - योद्धाओं से । सार-मेळै - युद्ध करते हैं । आवळा-दळां - सुसज्जित सेनाएं । खळ - शत्रु । ऊयाळै - गिरा देता है । बहसि - जोश में आकर । भलां - ठीक । भूभ - युद्ध । भर - उत्तरदायित्व । आवगो - पूर्ण, पूरा । दुभल - वीर । हुबंतां - भिड़ने पर । दळ-थंभ - सेना को रोकनेवाला वीर । हैडवै - ढकेलता है । थाट - सेना । अविआट - वीर । जैता-राव जैता राठीड़ । हरै - वंशज ।

*भगवानदास जैतावत राठीड़ बाघसिंह का पुत्र बगड़ी का ठाकुर था । मूल ग्रंथ पृ० २२५ में इस वीर का नाम महाराजा गजसिंह के प्रमुख योद्धाओं की नामावली में आया है । गीत में प्रदर्शित वीरता का संबंध वि० सं० १६८५ में होने वाले युद्ध से है, जो सीसोदरी (फतपुर सीकरी के निकट) के किले पर अधिकार करने के लिए हुआ था । इस युद्ध में यह वीर बड़ी बहादुरी के साथ युद्ध करता हुआ वीरगति को प्राप्त हुआ था ।

“बाध” रै रांम रा भीच त्युही वधै,

कमधि जुधि रमायण बियौ कीधी ॥४॥

(अज्ञात)

११. राठीड़ रामसिंह*

गीत बड़ी सांणोर

चढै धार अणियां अड़ै काज चकतां तरौ, सूर सूरं तणी वणै भुज सीम ।

पीढणै समर बिच पांतरौ पड़तां, “भीम” “रांमौ” हुआ आंतरौ “भीम” ॥१॥

गुडै पाखर गजां नौबतां गड-गड़ी, चौवड़ी भांज गज लोह चड़ियौ ।

लाख सूं अड़ै सीसोद पड़ियौ लड़ै, पाखती भड़ै राठीड़ पड़ियौ ॥२॥

खाग दहुंवै दळां आग लागी खिवण, लाग अंबर मरण बाग लीधी ।

“अमर” रै घमजगर समर बिच औरतां, “कमा”-रै वरोबर भली कीधी ॥३॥

अभंग तिल तिल हुआ छात आहुटतै, प्रथी असपत बखत कमध पोयौ ।

चढै रथ रंभ इक सरग दिस चालियौ, एक आधा सरग हूंत आयौ ॥४॥

(चतुरौ मोतीसर)

शब्दार्थ—भीच — योद्धा । कीधी — किया ।

चकतां तरौ — चगताई वंश के । अड़ै — भिड़ गये । पीढणै — शयन ।
पांतरौ — विछौना ? आंतरौ — दूर, दूरी । पाखर — घोड़ा (कवचधारी) । चौवड़ी —
चतुरंगिनी । अड़ै — युद्ध करके । पड़ियौ — वीरगति को प्राप्त हुआ । पाखती—पाश्वं
में । भड़ै — युद्ध में कट कर । पड़ियौ — घराशायी हुआ । खिवण — चमकने लगी ।
अंबर — आकाश । लीधी — ली । अमर — महाराणा अमरसिंह । घमजगर — भयंकर,
घमासान । समर — युद्ध । औरतां — झोंकने पर । कमा-रै — कर्मसेन के पुत्र ।
कीधी — की । अभंग — वीर । छात — राजा । आहुटतै — युद्ध करते हुए । असपत—
बादशाह । रंभ — अप्सरा । हूंत — से ।

*राठीड़ रामसिंह जोधपुर के राव चन्द्रसेण के पुत्र उग्रसेण का पौत्र और कर्मसेन का पुत्र था । राव कर्मसेन और महाराजा गजसिंह के अनवन रही अतः राव कर्मसेन को मारवाड़ से खदेड़ कर बूंदी की ओर निकाल दिया था । राव कर्मसेन का विवाह मेवाड़ में महाराणा के कुटुम्ब में हुआ था । अतः उपर्युक्त वीर रामसिंह महाराणा का रिश्ते में भानजा लगता था । इसलिए यह भी कई वर्षों तक उदयपुर में रहा और उसने राजा भीम सीसोदिया के साथ कई युद्धों में भाग लिया । हाजीपुर पट्टन (टाँस नदी) में होने वाले युद्ध में भी वह भीम सीसोदिया की सेना में महाराजा गजसिंह के विरुद्ध घमासान युद्ध करता हुआ घायल हो गया । वीर भीम वीरगति को प्राप्त हुआ ।

१२. ऊहड अरजुनसिंह गोपालदासोत*

गीत छोटी सांणीर

पह चढ देस छळ मीर पलटतां, कुळवट तें पूछियी किसी ।
इहती जिसी जनम लग “ऊहड”, “अरजुन” अत सांपनी इसी ॥१॥

धरियै अघरिण आप तन “धूहड”, मिळियी सारै निभै मन ।
निहसै खसै ऊससै निग्रहै, वंछती ताइ जुड़ियी विघन ॥२॥

“पाल” तणी उजवाळण परियां, घट तूटै आवाहै घाव ।
मिळियी दिनि घवळै राव-मारु, पह प्रीणती तिसी परिजाव ॥३॥

शब्दार्थ—पह — राजा । छळ — लिए । मीर — शाहजादा । पूछियी — पूछा । किसी — कैसा । इहती — इच्छा करता हुआ । लग — पर्यन्त, भर । सांपनी — प्राप्त किया । इसी — ऐसा । धूहड — राव धूहड का वंशज । सारै — तलवारों । निभै-मन — निभंय वीर । निहसै — जोश करता है । खसै — युद्ध करता है । निग्रहै — युद्ध में । वंछती — चाहता था । ताइ — वह, उस । जुड़ियी — प्राप्त हुआ । विघन-युद्ध । पाल — गोपालदास । तणी — पुत्र । उजवाळण — उज्ज्वल करने को । परियां—पूर्वजों । घट — शरीर । आवाहै — आवह में, युद्ध में । दिनि घवळै — दिन दहाड़े । राव-मारु — राठौड़ वीर । प्रीणती — चाहता था । परिजाव — अवसर, मौका ।

उपयुक्त गीत में कवि चतुरा मोतीसर ने राजा भीम सीसोदिया एवं राठौड़ रामसिंह की तुलना करते हुए भीमसिंह को स्वर्ग प्राप्ति का श्रेय दिया है और रामसिंह को स्वर्ग प्राप्ति से वंचित होने का वर्णन किया है। परन्तु, यहीं वीर घरमत के युद्ध में दारा शुकोह के पक्ष में रहता हुआ औरंगजेब और मुराद के विरुद्ध युद्ध करता हुआ वीरगति को प्राप्त हुआ था ।

*अर्जुनसिंह ऊहड शाखा का राठौड़ वीर कोढने का ठाकुर था । वह महाराजा गज-सिंह का पूर्ण विश्वासपात्र व्यक्ति था । महाराजा गजसिंह ने जब भीम सीसोदिया से युद्ध करने के निमित्त प्रस्थान किया तब अपने सामंतों का एक बड़ा सम्मेलन किया था । उक्त सम्मेलन में मूल पुस्तक के पृ. १५१ पर भी इस वीर का उल्लेख है । भीम से युद्ध करने के समय महाराजा गजसिंह ने इस वीर को महाराजकुमार अमरसिंह व जसवंतसिंह का अभि-भावक नियुक्त किया था । अतः यह उस समय जोधपुर में ही रहा । गीत में वर्णित इति-हास का ठीक-ठीक पता नहीं चल सका ।

जिमई "माल" अभितमै "जैमल", हालियो दिलि दळ-बंध हुअी ।

"कोठणै" जळ चाढे तवकोटै, मोटे प्रवि सांपनी मुअी ॥४॥

(अज्ञात)



भावार्थ—मान — जैमल नामक लड़क, जो सब बंदोबस्त में पैदा था एक समुद्र में था ।
 वह विष्णु १५१६ मरवाह के कारवाही वाले सब अधिकाय वाले समस्त कारवाही केवा के
 मुखिया बनना हुआ औरपति की भाव हुआ । अभितमै — पुनः । जैमल — लड़क जैमल
 का पुन लड़क जैमल का पिता था । यह भीर भी लड़क पुन जैमल के साथ ही
 कारवाही केवा के कुछ करवा हुआ जिसमें १५१२ में कारवाही को बंद कर दिया । इतिहास—
 मजरी का । मरवाह — केवा की पीर के भाग्य और । तवकोटै — लड़क । कोठे —
 लड़क । कोठे — लड़क, लड़क । लड़क — लड़क ।

परिशिष्ट ३

सीसोदियों के गीत

१ भीम सीसोदिया*

दूही

अमर गरज्ज अमर-पुर, घर लज्ज जहांगीर ।

“भीमाजळ” भज्ज नहीं, भज्ज खुरम अधीर ॥

गीत छोटी सांणोर १*

खित लागा बाद बिन्है खूदाळम, सूता अणी सनाहै साथ ।

थापै खुरम जेहडा थांगा, “भीम” करै तिहडा भाराथ ॥१॥

हूआ प्रवाडा हाथ हिंदुआं, असुर सिघार हुअै आरांण ।

साह आलम मुकै साहिजादौ, राइजादौ थापलियो रांण ॥२॥

मंडियो बाद दिली मेवाडां, समहर तिकी दिहाइ सीव ।

भवस न पैठा किसान भाखरां, भाखर किसै न विडियो “भींव” ॥३॥

आरंभ-रांम “अमर” घर ऊपर, लई “अमर” छलतां अलंग ।

आवटियो घटियो - असुरायण, खूमाणै मांजियो खग ॥४॥

(अज्ञात)

शब्दार्थ—खित — पृथ्वी । बाद — युद्ध । बिन्है — दोनों । खूदाळम — बादशाह । थापै — स्थापित करता है । जेहडा — जैसे । तेहडा — वैसे । भाराथ — युद्ध । प्रवाडा — युद्ध, कीर्ति के कार्य । असुर — यवन । सिघार — संहार । आरांण — युद्ध । आलम — दुनिया । मुकै — भेजता है । राइजादौ — राजपुत्र, (भीम) । थापलियो — पीठ ठोकी, उत्साहित किया । रांण — महाराणा । मंडियो — रचा गया । समहर — युद्ध । दिहाइ — दिन में । सीव — सीमा । भवस — यवन । विडियो — युद्ध किया । भींव — भीम सीसोदिया । आरंभ-रांम — राम के समान ही कार्य प्रारम्भ करने वाला । अमर — महाराणा अमरसिंह । आवटियो — कुढ़ कर या जल कर कम हो गया । असुरायण — बादशाह । खूमाणै — रावल खुमान का वंशज भीम सीसोदिया । मांजियो — मार्जन किया । खग — तेलवार ।

*भीम सीसोदिया महाराणा अमरसिंह का छोटा पुत्र था ।

*वि०सं० १६७० में बादशाह जहांगीर के आदेश से खुरम और अब्दुल्ला खां ने बड़ी भारी सेना से मेवाड़ राज्य पर आक्रमण किया । खुरम विजय प्राप्त करता हुआ जहां-तहां मेवाड़ में बादशाही चौकियां स्थापित करता था, वीर भीम सीसोदिया खुरम की सेना का पीछा करता हुआ बादशाही थानों को उठा देता था । प्रस्तुत गीत में भीम का बादशाही चौकियों को नष्ट करने तथा उठा देने का किसी समसामयिक कवि ने उपयुक्त गीत में बड़ा सुन्दर वर्णन किया है ।

गीत बडो सांणोर २

इसा रूप सूं भीम खग वाहतो आवियौ,
 विखम भारत तणी वणी वेळा ।
 भांज दळ सैद जैसींघ सू भेळिया,
 भांज गजसींघ जैसींघ भेळा ॥१॥

खत्री-वट प्रगट "अमरेस" रौ खेलती,
 ठेलती थाट रहिया न कूं ठाह ।
 मार तुरकां दिया सार कमधां मही,
 मार कमधां दिया कुरमां माह ॥२॥

असंख दळ दिली रा भुजां उछांडती,
 सबळ भड़ "भीम" दीठी सबांही ।
 घेच बछ बारही मंडोवर घातिया,
 मंडोवर घेच आवेर मांही ॥३॥

"भीम" "सांगा" हरी विखंड करती भडां,
 आवरत सावरत खगां उभाळी ।
 पछै असुरै सुरै घणू माथी पटक,
 कटक मर मारियौ नीठ काळी ॥४॥

(चतुरी मोतीसर)

शब्दार्थ—वाहती — चलाता हुआ, वार करता हुआ । आवियौ — आया । विखम—
 विषम, भयंकर । भारत — युद्ध । तणी — की । वणी — हुई । वेळा — समय ।
 सैद — सैयद, यवन, मुसलमान । भेळियां — मिला दिये । भेळा — साथ । ठेलती—
 धकेलता हुआ । थाट — सेना । ठाह — ज्ञान । कमधां — राठीड़ों । मही — में ।
 कुरमां — कछवाहों । माह — में । उछांडती — पराजित करता हुआ । दीठी — देखा ।
 घेच — खदेड़ कर । घातिया — मिला दिये । मांही — में । सांगा — महाराणा संग्राम-
 सिंह । हरी — वंशज । विखंड — संहार, मार-काट । भडां — योद्धाओं । आवरत —
 संहार, ध्वंस । सावरत — लाल । उभाळी — (?) । पछै — बाद में ।
 असुरै — यवनों । सुरै — हिंदुओं । माथी-पटक — बहुत प्रयत्न करके । नीठ—कठिनता
 से । मारियौ — मार डाला । काळी — वीर ।

गीत पंखाळी ३

भाखै धिन मरण तुहाळी "भीमा", मुडि संचरता भाग मिठै ।
 जळ भूलियां मिठै ग्रभ जेथी, तूं धारा भीलियो तठै ॥१॥
 अंत अखिआत वात "अमरा" सुत, अवरै नरे न होय आंन ।
 वार सनांन जठै जगि वांछै, सार तठै तै कियो सनांन ॥२॥
 सीसोदिया सुम्रित क्रीत सारीख, घण दळ हुआ व्हंतै धाय ।
 तातै लोह छोह गंगा तट, मंजन कियो महा-रिण माय ॥३॥
 (चतरौ मोतीसर)

गीत छोटी-सांणोर ४

जुग चार हुआ मो भारत जोतां, अरक कहै आ वात अथाह ।
 "भीम" तणै घड़ भांजै भवसां, माथी साबै रण मांह ॥१॥
 सीसोदिया तणौ सुरापण, भांण गयण-पत साख भरै ।
 दळ अफडै दळां दहुं दुजड़ी, कमळ कळह वाखांण करै ॥२॥
 विढती "भीम" साथियां वधती, साखी सूर उडंतै सास ।
 घड़ वढियो घड़च्छै अरि धारां, सिर पड़ियो आखै साबास ॥३॥
 अ बातां अखिआत "अमरावत", कैरवां पांडवां जेम कर ।
 पड़ती घड़ पाड़ती पंचाहर, सिव बींधियो बोलतौ सर ॥४॥
 (कल्याणदास महडू)

शब्दार्थ—धिन — धन्य । तुहाळी — तेरा । मुडि — मोड़ खाने पर । संचरता — गमन करने पर । भाग — दुष्कर्म । मिठै — नाश होते हैं । भूलियां — स्नान करने पर । भीलियो — स्नान किया । धारा — तलवार । तठै — वहां । अखिआत — अद्भुत । वार— वारि, जल । सनांन — स्नान । जठै — जहां पर । जगि — संसार में । वांछै — इच्छा करते हैं । सार — तलवार । तै — तुने । मंजन — स्नान ।

अरक — सूर्य । अथाह — अद्भुत, विचित्र । भवसां — यवनों । माथी — मस्तक । साबासै — धन्य धन्य करता है । गयण-पत — गगनपति, सूर्य । साख भरै — साक्षी देता है । दळ — शरीर । अफडै — युद्ध करता है । दळां — सेनाओं । दुहुं — दोनों । दुजड़ी — तलवार । कमळ — मुख । कळह — युद्ध । वाखांण — प्रशंसा । विढती — युद्ध करता हुआ । साथियां — साथ वालों । वधती — विशेष । घड़ — शरीर । वढियो — कटा हुआ । घड़च्छै — काटता है, मारता है । अरि — शत्रु । धारां — तलवारों । आखै — कहता है । साबास — वाह वाह । पाड़ती — मारता हुआ । पंचाहर — ? बींधियो — बींधा ।

गीत घडौ साणोर ५*

प्रल होवै भड़ भिड़ज रिण-ताळ लेखा पखै,
खत्रीपत भीम आवाहतै खाग ।
गिरंद वत राखियां तणी परियड़ी गज,
नीजूड़े सूंड पांखवा-नाग ॥१॥

अरि चंचळ घणा लाखां गण आवटै,
“अमर” रै खाग आवाहतै एम ।
ढालिया सिखर जेम हसती ढहै,
तूंड तूटै वहै परी रह तेम ॥२॥

पिसण हैमर कचर कीघा केलपुरै,
निबह खग पछटतै बलव-नांमी ।
गिरंद वत राखिया पांखिया-भुयंग पत,
गज-घड़ां पोगरां गयण-गांमी ॥३॥

मिटतै “खुरम” “भीमेण” अत दिन मछर,
वीढे वीछोड़िया खाग बाहै ।
पड़े गज सबळ - घड मंडळ ऊपरा,
मिळै गज-कमळ वाउ-मंडळ मांहे ॥४॥

(चतरौं मोतीसर)

शब्दार्थ—भिड़ज - घोड़ा । रिण-ताळ - युद्ध, युद्ध-स्थल । पखै - बिना ।
गिरंद - पर्वत । वत - समान । नीजूड़े - कटकर दूर होती है । पांखवा-नाग -
पंखों वाले सर्प । चंचळ - घोड़ा । ढालिया - गिराए । ढहै - गिर गये, गिर पड़ते
हैं । पिसण - शत्रु । हैमर - घोड़ा । कचर - बवंस । केलपुरै - सोसोदिए भीम ।
पछटतै - प्रहार करते हुए । बलव-नांमी - भीम । पोगरां - सूंडों । गज-कमळ -
हाथियों के मुख । वाउ-मंडळ - वायु-मंडल ।

*गीत नं० २ से गीत नं० ५ तक में टीस नदी के तट पर पटना के पास हाजीपुर के मैदान में होने वाले शाहजादा परवेज तथा खुरम के युद्ध के संबंध में भीम सोसोदिया के विषय का विस्तृत तथा काव्यात्मक बड़ा सुन्दर वर्णन है ।

२. मानसिंह शक्तावत

गीत छोटी सांणोर १*

मेवाड़ थकां पूरब गढ मालहै, अइयो "सगत-हरा" उनमान ।
 जग परदेस जीववा जावै, मरवा गया करारी 'मान' ॥१॥
 मांटीपणौ तुहाळी "मांन", रहियो घणूं घणां दिन रोस ।
 कोस हेक मरवा जावै कुण, कवळी गयो हजारां कोस ॥२॥
 मानसींघ धन धन मेवाड़ा, अत प्रब "भीम" तणौ अवसांण ।
 जोळा हुअै घणा नर जीवा, भेळौ हुअौ समो-भ्रम "भांण" ॥३॥
 पोह वदियो "जांगीर पातसा", कहीयो धिन्न रांणै "करण" ।
 ऊगतां सूरज जिम ऊगौ, मानसींग वाळी मरण ॥४॥
 (दुरसौ आढी)

गीत सोरठियो २.

सूरा बहसिया कारिमा सूसिया, नहसिया नीसांण ।
 "मांनड़ा" तो जस मेलियो, आज री अवसांण ॥१॥
 जाळ खाधौ साहिजादे, ढाल गज तूं ढाहि ।
 "मांनड़ा" दळ तणा मंडण, मांडि पग रिण मांही ॥२॥

शब्दार्थ—थकां — होते हुए । मालहै — गया । अइयो — अरे, हे । सगत — महाराणा प्रतापसिंह का छोटा भाई शक्तिसिंह । हरा — वंशज । उनमान — अनुमान । करारी — वीर । मान — मानसिंह शक्तावत । मांटीपणौ — बहादुरी, पशुक्रम । तुहाळी — तेरा । घणू — बहुत । कवळी — वीर । मेवाड़ा — मेवाड़ का, सीसोदिया वंश का । अत — अति, महान । प्रब — पूर्व, महोत्सव । जोळा — पृथक् दूर । भेळी — साथ, शामिल । समो-भ्रम — पुत्र । भांण — मानसिंह शक्तावत का पिता । पोह-वीर । वदियो — कहा । जांगीर पातसा — बादशाह जहांगीर । करण — महाराणा करणसिंह ।

सूरा — वीर । बहसिया — जोश में आये । कारिमा — कायर । सूसिया — मयभीत हुए । नहसिया — वजे । नीसांण — नगाड़ा । मांनड़ा — हे मानसिंह । मेलियो — भेजा । जाळ — कपट । दळ — सेना । तणा — का । मंडण — आभूषण ।

*गीत नं० १ से गीत नं० ३ का नायक मानसिंह शक्तावत महाराणा उदयसिंह के पुत्र शक्तिसिंह का पोत्र तथा भाण शक्तावत का पुत्र था । प्रसिद्ध वीर भीम सीसोदिया का घनिष्ठ मित्र था तथा भीम सीसोदिया के साथ ही हाजीपुर पट्टन के युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुआ । विशेष विवरण के लिए ग्रंथसार देखें ।

खुरम खां दराव खीसिया, त्रहसिया त्रांवाट ।
अवियाट दूजा अचळा, थोभियो गज-थाट ॥३॥

फिरे मुहडे गजां फीजां, घजां नेजां ढाहि ।
“भांण-रो” गो गयण भेदे, “मान” हरी-पुर मांहि ॥४॥

(जैती महियारियो)

गीत प्रहास सांणोर ३.

समंद पूछियो गंग सूं रूप पैखे सुजळ, वहै जमना किसूं नवल वानै ।
ऊजळी घार पतसाह घड़ आछटै, भेलियो रातड़ी नीर “मानै” ॥१॥

महोदध पूछियो कहो मो सहसमुख, जमन की नवी सणगार जुड़ियो ।
“भांण”-रै लोह सुरतांण घड़ भेलियो, चळोवळ पंड मो पूर चडियो ॥२॥

यागियळ पूछियो भणो भागीरथी, सांवळी नीरज किसी समोहां ।
साहरी फीज “सगता” हरै सींघळी, लाल रंग चडियो मार लोहां ॥३॥

जोय जमना जुगत-रीभियो समंद जळ, विगत हेकण बडी गंग वाती ।
हिंदवै-राव ओताळियो लोह हद, रगत मेछां तणी नदी राती ॥४॥

(चतरी मोतीसर)

शब्दार्थ—त्रहसिया — वजे । त्रांवाट — नगाड़ा । अवियाट — वीर । थोभियो — रोका । गज-थाट — हाथियों की सेना । भांण — मानसिंह के पिता का नाम । हरी-पुर — विष्णुलोक ।

पैखे — देखकर । नवल — नवीन, नया । वानै — पहनावा, पोशाक । घड़-सेना । आछटै — मार कर । भेलियो — मिला दिया । रातड़ी — लाल, रक्त । मानै — मानसिंह सीसोदिया । महोदध-महोदधि, समुद्र । भणो — कहो । सांवळी-श्याम । समोहां-मोहित करने वाला । साहरी — बादशाह की । सगता — शक्तिसिंह । हरै — वंशज । घळी — वीर । जोय — देख कर, समझ कर । जुगत — युक्ति । रीभियो — प्रसन्न हुआ । विगत — वृत्तान्त । हेकण — एक । हिंदवै-राव-हिंदू राजा । ओताळियो — प्रहार किया । लोह — अस्त्र-शस्त्र । हद — बहुत । रगत — रक्त, खून । मेछां — यवनों, म्लेच्छों । तणी — के ।

३. गोकुलदास सकतावत*

गीत छोटी सांणोर १

“भीमाजळ” मोहोर भेलिया भारत, घणें पेसि गज-बोह घणें ।
लागा “मोकळ”-तणें जे लोहड़, ताह दूखे भागिली तरणें ॥१॥

बीजू - भूळां खळां बीहरती, मेलिया घाव पडंतां मार ।
भंजिया अंग तरा भांणावत, साले पहां तजिया त्यां सार ॥२॥

“सगतां”-हरा तरणें समरांगणें, वणिया तने ह्वे खंड विहंड ।
रुक न लागां तियां रावतां, पीडा मिटे नह तियां पिंड ॥३॥

कूंत बांण केवांण कटारी, केलपुरे खमिया कंठीर ।
राजा मेलहे गया तिके रण, साजा नह ह्वे तियां सरीर ॥४॥

(चतुरी मोतीसर)



शब्दार्थ—भीमाजळ — भीम सीसोदिया । मोहोर — हरावल, पूर्व । भेलिया —
सम्हाला, सहन किया । गज-बोह — गज-व्यूह, हाथी-दल । लोहड़ — शस्त्र प्रहार ।
ताह — वे । भागिली — भग जाने वाला, कायर । बीजू-भूळां — तलवारों । खळां —
शत्रुओं । बीहरती — मारता हुआ । मेलिया — लगाये । हरा — वंशज । समरांगण —
युद्ध-स्थल । रुक — तलवार । रावतां — योद्धाओं । तियां — उन । कूंत — भाला ।
केवांण — तलवार । केलपुरे — सीसोदिये । खमिया — सहन किये । कंठीर — वीर ।
मेलहे — छोड़कर । रण — युद्ध । साजा — स्वस्थ ।

*यह वीर गोकुलदास महाराणा प्रताप के छोटे भाई शक्तिसिंह का पौत्र, भाण का पुत्र
तथा पूर्वोल्लिखित मानसिंह का छोटा भाई था । जोधपुर के मोटे राजा उदयसिंह का दोहिता
था । भीम सीसोदिया के साथ यह युद्ध में घायल हो गया था । महाराजा गजसिंह युद्ध-
स्थल से इसे उठा कर अपनी सेना में ले आये और उन्होंने इसकी चिकित्सा का प्रबन्ध किया ।
इसके पूर्ण स्वस्थ होने पर इसे जागीर भी प्रदान की ।

परिशिष्ट ४

ग्रंथ में वर्णित अन्य वीरों के गीत

१. राव रतनसिंह हाडौ (बूंदी)

गीत छुड़द सांणीर*

असिमर आचार भार आवरियै, मेर प्रमाणै कीयै मन ।
हींदूकार तणी धम हाडा, रहीयो पै आवै “रतन” ॥१॥

पिडि पतसाह भांजिजै पाघरि, सरणै पिडि गाहिजै सुज ।
तो सुजाउ वेद मै भाखित, भुजै विराजै इसा भुज ॥२॥

दळां सनाह सगाह दिलीवै, वाह वाह वाधै वयण ।
रज छाडियो बियै राई-तनि, रज ताइ वपि छाजै “रयण” ॥३॥

कळिया असुर तापि अनिकारां, नहंगि विलागै वडिम नित ।
सबदो वधै कळोघर “सुरिजन”, कमळ जिही चह्वाण कत ॥४॥

शब्दार्थ—असिमर — तलवार । आचार — दान, वदान्यता । पिडि — युद्ध ।
पाघरि — खुला मैदान । भाखित — कहा गया है । दिलीवै — बादशाह । वाह वाह —
घन्य-घन्य; शाबाश । वाधै — बढते हैं । वयण — वचन । रज — क्षत्रियत्व, शौर्य ।
छाडियो — छोड़ दिया । बियै — दूसरे । राई-तनि — राजाओं । ताइ-तेरे । वपि—
शरीर में । छाजै — शोभित होता है । रयण — रतनसिंह । कळिया — फँस गये ।
असुर — यवन । तापि — भय, आतंक । अनिकारां — वीरों । नहंगि — आकाश में ।
विलागै — लगता है । वडिम — बड़ा । कळोघर — वंशज, कुल को धारण करने
वाला ।

*प्रस्तुत गीत में राव रतन हाडा के शौर्य और पराक्रम का वर्णन मात्र है ।

२. मिर्जा राजा जयसिंह सहासिघोत कछवाह

गीत बढी सांणोर*

लड़े मुड़ी पतिसाह, विमुहा खडी लसकरां,
 रिण पड़ी घणी धारां तणी रीठ ।
 किम फिरै पीठ जैसिघ कूरम तणी,
 प्रिथी ची भार कूरम तणी पीठ ॥१॥

लोप हिदवाण पाताळ अणलोपियां,
 कोप असुरां सुरां घणी करतां ।
 निज विन्है मोर फेरै नहीं परम-अंस,
 फुरै पुड घरा ची मोर फिरतां ॥२॥

तदि हुवौ "मांन" हर अडिग "माहव" तणी,
 साह सेनाह जदि पड़े सांसै ।
 कछव कछवाह वांसी पलट करै किम,
 वसुह ची मांड विहुं भडां वांसै ॥३॥

अडग हिदवाण परसाद तीरथ अनंत,
 सहू आलम कलम हुआ साखी ।
 कूरमां विहु रण पूठ अण - फेर करि,
 रैण ऊथल - पथल हुती राखी ॥४॥

(पूरी महियारियौ)

शब्दार्थ—विमुहा — उलटा, विमुख । खडी — चलाओ । लसकरां — सेनाओं ।
 तणी — की । रीठ — प्रहार । हिदवाण — हिन्दुस्तान । विन्है — दोनों । मोर —
 पीठ । परम-अंस — कच्छपावतार । फुरै — डोल जाता है । पुड — तह, प्रत । तदि-
 तब । तणी — पुत्र । जदि — जब । सांसै — संशय में । कछव — कच्छपावतार ।
 वांसी — पीठ । वसुह — पृथ्वी, संसार । मांड — रचना । विहुं — दोनों । भडां —
 योद्धाओं । वांसै — पीठ पर । परसाद — देवमंदिर । सहू — सब । साखी — साक्षी ।
 रैण — पृथ्वी ।

*इस गीत में भी मिर्जा राजा जयसिंह प्रथम के शौर्य पराक्रम का ही बड़ा सुन्दर वर्णन है ।

३. जोगीदास भाटी

गीत वेलियौ सांगोर*

गजदंतां परै फूटै गज केसरि, गज चै कमळ पडंतै गाढ ।
जादव मांहि थकै जमदाढां, “जोगे” आ वाही जमदाढ ॥१॥

गोइंद - उत दाखवै गाढिम, दंत दूवा सूं थकै दळ ।
काळ तणै वसि थियै कटारी, काळ तणै वाही कमळ ॥२॥

भांगै डील भली राय भाटी, कुंजर घकै भयंकर काळ ।
आयै मुख रांगा मुख अंतर, मुख जम तणै जड़ी प्रत माळ ॥३॥

आधंतर काढै अणियाळी, कुंभाथळ वाही कर क्रोध ।
अंतक सूं “जोगे” जिम आगै, जुध करि मूवौ नहीं कोई जोध ॥४॥

(केसोदास गाडण)

शब्दार्थ—कमळ - मस्तक । मांहि - भीतर, में । थकै - होते हुए । जमदाढां-
यमराज के दांत । जमदाढ - कटार । दाखवै - प्रकट करता है, बताता है । गाढिम-
बल, शक्ति । दूवा - दो । दळ - शरीर । भांगै - तोड़ कर । डील - शरीर ।
प्रत माळ - कटार । आधंतर - आकाश के मध्य । अणियाळी - कटार । अंतक -
यमराज । जोध - वीर, योद्धा ।

* १. जोगीदास भाटी गोइंददास भाटी का पुत्र था । इसको महाराजा सूरसिंहजी ने
बीजवाड़िया ग्राम जागीर में दिया था । वि०सं० १६६८ में आंवेर के राजा मानसिंह कछ-
वाह के नौकरों ने किसी कारणवश मस्त हाथी को जोगीदास पर छोड़ दिया । उस समय
जोगीदास घोड़े पर सवार था । मस्त हाथी ने जोगीदास को घोड़े पर से सूंड में पकड़ कर
अपने मुख में ले लिया । वीर जोगीदास के पास कटार थी, उसने भी कटार के कई वार
हाथी के कुंभस्थल पर किये, जिससे हाथी मर गया; परन्तु हाथी ने इसको इस प्रकार से
अपने दांतों में दबोच लिया था कि उस के मुख से छूटने पर भी यह वीर जीवित नहीं
रहा । उक्त घटना संबंधी गीत में ग्रंथ-रचयिता महाकवि केसोदास गाडण ने जोगीदास
को बहादुरी का वर्णन किया है ।

४. सादूल पंवार

गीत पंखाळी*

करि लेखणि कूंत पुडि करि कागद, मस करि मांस रुधर करि मूळ ।
 मांडै मंडोवर मेड़ता माथै, सबळा खत लिखिया “सादूल” ॥१॥

कलम छड़ियाळ समर करि पाठी, घण खळ सुद्रव आखरां घाव ।
 साखां तेरह सम्है समरि करि, सल्है वैर घरि “माल” सुजाव ॥२॥

लेख घणी साबळां लिखांणी, अंग असि मसि करि दैत अरि ।
 धार पुरा लगि कटि घूहड़, कळिनांमी राखियो करि ॥३॥



शब्दार्थ—मस — मसि, स्याही । मांडै — लिखकर । खत — पत्र । छड़ियाळ — भाला । समर — युद्धस्थल । पाठी — कागज । साखां तेरह — राठीडों की तेरह शाखाएं । सुजाव — पुत्र । असि — तलवार । मसि — स्याही । घूहड़ — राव घूहड़ के वंशज । कळिनांमी — युद्ध का लेख ।

*सादूल-पंवार संबंधी विवरण—भूमिका में देखें ।

